राहुल वाङ्मय

राहुल-वाङ्मय

परामर्श

डॉ. विद्यानिवास मिश्र

डॉ. नामवर सिंह

डॉ. निर्मला जेन

सम्पादन

कमला सांकृत्यायन

सम्पादन सहयोग

बसन्तकुमार कपूर

रामकुमार कृपक

संयोजन

जया पडहाक

जेता सांकृत्यायन



राधाकृष्ण

राहुल

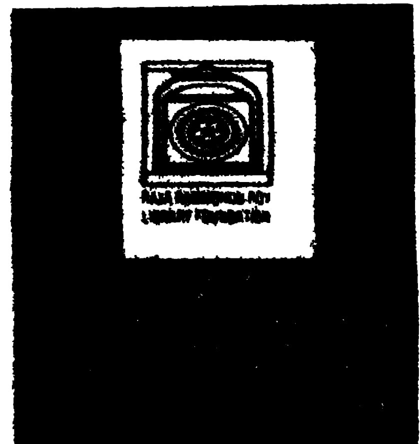
जीवनी और संस्मरण

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
2/38, असारी रोड, दरियागज
नयी दिल्ली-110002

साज-सज्जा : प्रशान्त

लेजर कम्पोजिंग
कम्प्यूटेक सिस्टम
मानसरोवर पार्क, दिल्ली-110032

मुद्रक
हिन्दुस्तान ऑफसेट प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110032



RĀHUL VĀNGMAYA
Part-2 Jeevani aur Sansmaran 4 Volumes



हापण्डित राहुल साकृत्यायन चीन जाते समय रगून (बर्मा) प्रवास–1958

प्रकाशकीय

महापण्डित राहुल साकृत्यायन हिन्दी के युगान्तरकारी लेखक है। उनके ऐसा क्रातिचेता लेखक पहले नही हुआ और बाद मे भी, अभी तक तो नही ही हुआ है। वे एक व्यक्ति ही नही, एक सस्था थे। उनका सम्पूर्ण जीवन और समग्र लेखन, अपने देश और देशवासियो के लिए था। उन्होने सदैव भारत के हित मे ही सोचा और लिखा। अपनी आत्मकथा–जीवन-यात्रा–मे भी उन्होने अपने बारे मे कम, भारत और भारत के बाहर युग-परिवर्तन की ऐतिहासिक स्थितियो को निर्मित करनेवालो के सम्बन्ध मे ही अधिक लिखा है।

अपने जीवनी और सस्मरण-साहित्य मे भी इसी प्रकार उन्होने जीवन के सामाजिक, राजनीतिक सघर्ष और आत्म-बलिदान प्रेरित घटनाओ का प्रामाणिक एव विशद विवरण प्रस्तुत किया है। उन्होने भारत के उन देशभक्तो और क्रातिकारियो की जीवनियाँ लिखी, जिन्होने देश की आजादी और उस के मूलगामी विकास के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर दिया।

ऐसे अप्रतिम लेखक राहुल साकृत्यायन के रचना-लोक–'राहुल-वाड्मय' के विभिन्न खण्डो–को विषयवार उनकी पुस्तको के आधार पर नियोजित किया गया है।

'राहुल वाड्मय' के इस द्वितीय खण्ड की चौथी जिल्द मे हैं–'स्तालिन' और 'माओ चे-तुग'। यह प्रख्यात पुरुषो के जीवनचरित्र तो है ही, इनके साथ ही रूस और चीन की सामाजिक-राजनीतिक विकास यात्रा को समझने-समझाने के प्रयास के बीच, वहाँ के राजनीतिक सघर्ष, कम्युनिस्ट पार्टी की गतिविधियाँ, समाजवादी उद्योगीकरण की योजनाओ आदि विभिन्न पक्षो के विविध पहलुओ की परख भी है।

प्रकाशन मे रह गयी किसी भी त्रुटि के लिए हम क्षमा-प्रार्थी है।

विषयानुक्रम



महापण्डित राहुल सांकृत्यायन कलकत्ता–1947

स्तालिन

साथी श्रीपाद अमृत डांगे को

[7 नवम्बर, 1953, महान अक्तूबर क्रांति की 36वीं वर्षगाँठ के अवसर पर]

भूमिका

दुनिया की अनेकों भाषाओं में स्तालिन की जीवनी या जीवनियों का अभाव नहीं, यद्यपि उनमें कितनी ही बातों की कमियाँ देखी जाती है। पर, हिंदी में तो प्राय. उनका अभाव ही है। वैसे स्तालिन के ऐतिहासिक जीवन ही नहीं, बल्कि भावी ससार के पथ प्रदर्शक के रूप के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करना भी एक उद्देश्य हो सकता था, जिसके कारण मुझे लेखनी उठानी पडती। मैं यह मानता हूँ कि इस जीवनी में भी एक त्रुटि दिखाई पडेगी, जो त्रुटि दूसरी भाषाओ की जीवनियों में भी देखी जाती है। वह है—वैयक्तिक जीवन की घटनाओ की कमी। मैं उनकी खोज में हूँ, लेकिन उनके प्राप्त करने तक पुस्तक लिखने या उसे प्रकाशित करने से रोके रखना, इसे अनिश्चित काल के लिए स्थगित करना होता। दूसरे सस्करण में, मुझे आशा है, उस दिशा में भी मैं कुछ और चीजें पाठकों को दे सकूँगा। स्तालिन का जीवन केवल ज्ञानवर्द्धन का साधन ही नहीं, है, बल्कि वह पग-पग पर गहन कर्म-पथ पर प्रकाश डालता है।

स्तालिन की जीवनी लिखते समय, मेरे मन में ख्याल आया कि जैसे नये ससार के इस महान् निर्माता की जीवनी को हिंदी के पाठकों के सामने रख रहा हूँ, वैसे ही अच्छा होगा, यदि इसी तरह की मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और माओ की चारों जीवनियाँ भी लिख डालूँ। इन पाँचों महापुरुषों की जीवनियाँ लिखने का सकल्प करके, मैने मार्क्स की जीवनी में हाथ लगा भी दिया है। आशा, है बाकी तीन जीवनियों को भी सन् 1953 में ही लिखकर समाप्त कर सकूँगा। वैसे तो यह भी सोच रहा हूँ कि 'नये ससार के निर्माता' के नाम से नई दुनिया के बनानेवाले बीस पुरुषों की जीवनियाँ लिखूँ जिनमें एशिया और यूरोप के बहुत-से देशों के नेता होंगे; लेकिन, बहुतों के बारे में अंग्रेजी और रूसी भाषा में भी सामग्री उपलब्ध नहीं है। इसलिए, नहीं कह सकता, कब तक वह सकल्प पूरा हो सकेगा।

मसूरी, 1 नवम्बर '53 —राहुल सांकृत्यायन

1
बालपन (सन् 1879-85)

1. जन्मभूमि

कोहकाफ का नाम हम बचपन से सुनते आये है। यह अद्भुत पहाड़ परियो का देश माना जाता था। उर्दू और फारसी की पुस्तकों में यहाँ की अनिंद्य सुन्दर परियों की न जाने कितनी कहानियाँ हम पढ़ते-सुनते आये हैं। लेकिन, परियों और देवताओं का जमाना अब बीत चुका है, उन पर कोई विश्वास करने के लिए तैयार नहीं। इसी कोहकाफ को रूसी में 'कफ़काश' और अंग्रेजी में 'काकेशस' कहते हैं। किसी समय सभी ने पाठशाला के भूगोल में पढ़ा होगा कि यहाँ के स्त्री-पुरुष दुनिया में सबसे सुन्दर होते हैं। लेकिन, इसकी सच्चाई के बारे मे कुछ कहना मुश्किल है, तो भी यह मान लेने में कोई हर्ज नहीं कि काकेशस के लोग अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर होते हैं। और, सुन्दरता के साथ वीर भी अधिक होते हैं, यह इतिहास बतलाता है।

काकेशस पर्वतमाला वस्तुतः उसी विशाल पर्वत-श्रेणी का एक अंग है, जो पश्चिमी चीन से स्विट्जरलैंड और स्पेन तक, अर्थात् लगभग प्रशान्त महासागर से अटलान्टिक महासागर तक यूरेशिया महाद्वीप की कटि-मेखला बनी हुई है। चीन के पर्वतों के बाद, आसाम से कश्मीर तक हमारा हिमालय उसी का एक अंग है; फिर पामीर, हिन्दूकुश और ईरान की उत्तरी पर्वत-श्रेणी (कोपेतदाग) को लेते हुए वह कास्पियन समुद्र के दक्षिणी पूर्वी कोने पर पहुँचती है। इसी स्थल पर, समुद्र के पश्चिमी तट से काला सागर के पूर्वी तट तक काकेशस पर्वत-श्रेणी फैली हुई है। यह पूर्व-पश्चिम जितनी चौड़ी है, उत्तर-दक्षिण में भी इसका विस्तार प्रायः उतना ही है। हिमालय की तरह, यहाँ भी सनातन हिम से आच्छादित बहुत-से पर्वत-शिखर हैं और सचमुच ही कास्पियन में सामुद्रिक यात्रा करनेवाले उन्हे देख, भूलकर कह सकते हैं कि हम हिमालय के पास आ गये हैं। हिमालय की भाँति, इस भूमि में भी प्रकृति की अद्भुत शोभा चारों तरफ बिखरी हुई है। कहीं देवदारों के घने जंगल हैं, नीचे बंज और दूसरे हिमालीय वृक्षों की हरियाली दिखलाई पड़ती है। हिमालय की तरह, काकेशस पर्वतमाला में भी भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी जातियों का अद्भुत जमावड़ा है। यहाँ की लड़ाकू जातियों ने अपने पहाड़ों को किला बनाकर हमेशा अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की है–विदेशियों से भी, और पड़ोसियों से भी। कुर्द, ओसेत् (प्राचीन अलान) जैसी इंदो-ईरानी भाषाएँ बोलनेवाली जातियाँ जहाँ काकेशस की गोद में आज भी मिलती हैं, वहाँ आजुर्बाइजानी जैसे तुर्की-भाषी लोग भी यहाँ के बहुत-से भागों में रहते हैं। आज आजुर्बाइजान की राजधानी बाकू दुनिया का प्रसिद्ध तेल-क्षेत्र है। दागिस्तान के तुर्की भाषा-भाषी लोगों से मिलकर, कास्पियन के पश्चिमी तट के काफी भाग में तुर्कवंशी जातियाँ रहती हैं। ओसेती और अबखाजी काकेशस के सबसे ऊँचे भागों में रहते हैं। इनके अतिरिक्त, काकेशस के पश्चिमी भाग में इन्दो-यूरोपीय भाषा की पुरानी शाखाओं–अर्मनी और गुर्जी (जार्जियन) बोलनेवाले रहते हैं। विद्वानों का मत है कि ये दोनों जातियाँ अपनी भाषा के रूप में एक बहुत पुरानी भाषा के अवशेष को कायम रखे हुए हैं। इस प्रकार, मालूम होगा कि क्षेत्र में छोटा होने पर भी,

इस भू-भाग मे अनेको जातियाँ एकत्रित हैं। तुर्की और तद्भाषा-भाषी जातियों की तरह यद्यपि ऐतिहासिक काल में बहुत-सी भाषाएँ और जातियाँ यहाँ आपस मे मिलकर एक हो गईं, लेकिन दुर्गम पर्वतों और लोगों की वीरता के कारण अब भी बहुत-सी जातियाँ और भाषाएँ मिलती हैं।

काकेशस यूरोप का नही, बल्कि हमेशा से एशिया का अभिन्न अग रहा है। एशिया और यूरोप की वर्तमान सीमा काला सागर से शुरू हो, काकेशस के उत्तर-उत्तर कास्पियन पहुँच, फिर उसमे गिरने वाली उराल नदी से होती हुई, उराल पर्वत-श्रेणी से मिल जाती है। गुर्जी (जार्जी) और अर्मनी लोग बहुत पहले ईसाई हो गए थे, जिसमे उनकी वीरता से फायदा उठाते हुए उन्हे अपने प्रतिद्वद्वी ईरानियो के विरुद्ध खडा करने का, रोमन साम्राज्य का प्रयत्न भी एक कारण था। सासानी ईरानियो के शासन को जब अरबो ने खतम किया, तब भी कितने ही समय तक अर्मनी और गुर्जी बहादुर वही काम करते रहे, जो कि भारत के पश्चिमोत्तर मे अरबो और तुर्कों के विरुद्ध पटान करते रहे। उन्होने कितनी सफलता के साथ मुकाबला किया, यह इसी से मालूम होगा कि इस्लामी विजेताओ ने गुर्जियों और अर्मनियो को मुसलमान बनाने मे सफलता नही पाई। अर्मनी और गुर्जी जहाँ ईसाई होने मे पश्चिम की शक्तियो की ओर आशा लगाये रहते थे, वहाँ कुर्द और तुर्क आदि मुसलमान हो जाने के बाद इस्लामी जगत से अपनी घनिष्टता मानते थे। शायद आज जैसा भाव उनमे कभी भी पैदा नही हुआ, जब कि सभी काकेशस का पुत्र मानते हुए, अपने को भाई भाई समझते हो। आज काकेशस की भिन्न-भिन्न जातियो का आपसी सघर्ष अतीत की बात हो गई है, सभी जातियो की भाषा और सस्कृति के अनुसार अपने स्वतत्र या स्वायत्त गणराज्य हे, जहाँ वह अपनी जातीय इकाई को अक्षुण्ण बनाये, अपने को सोवियत की विशाल महाजाति का अग मानती है। उनके ऐसे परिवर्तन तथा सुख-समृद्धिपूर्ण सास्कृतिक जीवन के निर्माण मे जिस पुरुष का सबसे बडा हाथ है, वह इसी काकेशस भूमि मे पैदा हुआ था।

2 जन्म

काला सागर के नातिदूर काकेशस के पश्चिमी भाग मे गुर्जी लोगों का प्राचीन नगर तिफलिस (त्विलिसी) है, जिसके पास गोरी कस्बा है। इसी कस्बे के पास दिदिलियो नामक छोटा-सा गाँव है, जहाँ पिछली शताब्दी के मध्य मे बिसारियोन नामक एक गरीब चमार रहता था। उसके वंश का नाम जुगशविली था। बिसारियोन जूते बनाने के साथ-साथ कुछ खेती भी कर लिया करता था, लेकिन दोनों से भी उसका गुजारा मुश्किल से होता था। बि.सारियोन ने गम्बरयोली गाँव के अर्धदास, गुर्जी गेलादजे की लडकी एकातेरिना (केथरिन) से ब्याह किया, जिसके बारे मे मालूम है कि वह बडी सुन्दर, काली बडी आँखो तथा गम्भीर मुखमुद्रा वाली स्त्री थी। बिसारियोन को अपना काम दिदिलियो मे ठीक चलता नही दिखाई पडा; क्योंकि अब कुटीर-उद्योग की तरह जूते बनानेवालो की भी प्रतिद्वद्विता जूते के कारखानो से थी। अब दूसरे देशो के सहकर्मियो की तरह, बिसारियोन ने भी पराजय स्वीकार करते हुए गाँव छोडकर, पहिले गोरी फिर तिफलिस की अदिल-खानोफ फैक्टरी मे जाकर काम किया।

एशिया की एक इतनी उत्पीडित श्रेणी मे पैदा हुए बालक के लिए कोई ज्योतिषी भी कब ऐसे पद की, जिस पर इस बालक को पहुँचना था, भविष्यवाणी कर सकता था ? एक एशियाई चमार का लडका दुनिया का अद्वितीय नेता और अमर पूज्यनीय शिक्षक होगा, इसकी आशा एकातेरिना और बिसारियोन भी कब कर सकते थे ? बिसारियोन जार्जिया की तत्कालीन राजधानी तिफलिस की बूट-फेक्टरी मे काम करता था। गोरी कस्बे के उपनगर मे, वही छोटा-सा पैतृक घर था, जिसके बारे मे स्तालिन के सहपाठशालीय द. गोगोखिया ने अपने सस्मरण मे लिखा है · "जिस घर मे परिवार रहता था, वह पाँच वर्ग गज से ज्यादा बडा नही था। घर के साथ रसोई की कोठरी भी थी। दरवाजे से सीधे आँगन मे पहुँचते थे, वहाँ कोई दहलीज नही थी। फर्श ईंटो का था। एक छोटा-सा झरोखा था, जिससे छनकर रोशनी आती थी। घर मे सारा फर्नीचर यह था : एक छोटी-सी मेज, एक स्टूल, एक लम्बा सोफा, जो पुआल भरकर मामूली कपडे से ढाँककर बनाया गया था।" बिसारियोन जुगशविली के काम के हथियार थे–एक पुराना सडा-सा गोढा, हथौडा और चमडा सीने की सुई, जो सग्रहालय मे आज भी मौजूद है। इसी घर मे 18 दिसम्बर, 1879 को बिसारियोन और एकातेरिना

के घर मे एक पुत्र पैदा हुआ। रात-दिन घर का काम करके भी गुजारा होना मुश्किल देख, एकातेरिना दूसरो के कपड़े धोने का काम भी करती थी। इस प्रकार स्तालिन को अपने शैशव से ही अनुभव था कि गरीबी क्या चीज है।

माँ-बाप ने लडके का नाम सोसो रखा, जो रूसी योसेफ और अग्रेजी जोजफ का रूपान्तर है। बिसारियोन ने सात वर्ष की उमर में ही सोसो का अक्षरारभ कराया। एक वर्ष मे ही वह पहले गुर्जी और फिर रूसी पढने लग गया। लेकिन, पिता बहुत दिनों तक न जी सका, इसलिए सोसो के पालन-पोषण का भार एकातेरिना के ऊपर पडा (एकातेरिना जून सन् 1937 मे मरी)। सोसो के बाल्य जीवन पर किसी ने प्रकाश डालने की कोशिश नही की। उसका बाद का जीवन इतनी बहुलता और भारी सफलताओ से भरा है कि इस ओर किसी का ध्यान ही नही गया।

2
विद्यार्थी जीवन (सन् 1885-98)

1 गोरी में

सोसो का जन्म गोरी में हुआ था और उसका अक्षरारम्भ भी वही हुआ। यद्यपि माता-पिता शिक्षा से वंचित थे, लेकिन वह उसके महत्त्व को भली प्रकार जानते थे। कुछ दिनो तक सोसो साधारण पाठशाला मे पढता रहा। उनकी स्थिति के माता-पिता अपने लडके को अधिक खर्चीली शिक्षा नही दे सकते थे। उस समय सारा काकेशस रूसी जार के अधीन था, जिसका धर्म ईसाई था, और ईसाई पादरियो का बहुत सम्मान था। माता-पिता ने सोचा कि पादरी बनाने मे पुत्र का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है, इसीलिए सन् 1888 में, जब कि सोसो अभी नौ वर्ष का ही था, उसे गोरी के पुरोहित स्कूल मे दाखिल करा दिया। छह वर्ष तक सोसो वही पढता रहा।

गोरी के पुरोहित स्कूल मे सोसो बडा ही मेहनती और बुद्धिमान विद्यार्थी था। उसे सबसे अधिक अक मिला करते थे। वह पढने मे जितना तेज था, उतना ही खेल-कूद मे भी, इसीलिए सभी खेलो मे वह अपने सहपाठियो का नेता बना करता था। अपने सहपाठियो के साथ उसका बडा प्रेम था। पढ़ने के अलावा उसे ड्राइंग तथा गाने का भी शौक था।

वह साधारण लोगों के साथ कितना मिलनसार था, यह उसके सहपाठी ग. एलिजाबेदशविली द्वारा उल्लिखित निम्न घटना मे मालूम होगा

" एक दिन गाँव मे गये। एक खेत मे हमने हलवाहो को विश्राम करते देखा। उनमे से एक को आनदविभोर हो रोटी और दाल खाते देख, साथी स्तालिन (सोसो) ने उससे पूछा : 'तुम क्यो ऐसा खराब खाना खाते हो ?'

" 'तुम जोतते हो, बोते हो और स्वय फसल काटकर जमा करते हो। तुम्हे तो अच्छी तरह रहना चाहिए।'

'हाँ, यह बिलकुल ठीक है। हम स्वय फसल काटते है,' किसान ने कहा, 'लेकिन पुलिस इन्सपेक्टर को उसका भाग मिलना चाहिए, और पुरोहित को उसका। इस प्रकार तुम देखते हो, हमारे लिए बहुत कम बच रहता है।'

" इस भूमिका से बातचीत शुरू हो गई। उसके दौरान मे साथी सोसो ने समझाना शुरू किया कि किसान क्यों इतनी गरीबी का जीवन बिताते है, कौन उनका शोषण करता है, कौन उनके मित्र है और

कौन शत्रु। वह इतने सीधे-सादे शब्दों में और दिलचस्प ढंग से बातें करता रहा कि किसानों ने उससे फिर आकर बातें करने के लिए प्रार्थना की। "

सोसो के दूसरे लँगोटिया यार ग. ग्लुरजिद्जे की निम्न बातें बतलाती हैं कि गोरी के जीवन में ही सोसो धर्म के बारे में कहाँ तक पहुँच गया था :

" मैं भगवान के बारे में कहने लगा। सोसो मेरी बात सुनता रहा और फिर जरा-सा चुप रहकर, उसने कहा : 'तुम जानते हो, वह (पादरी) हमें बेवकूफ बना रहे हैं, कोई भगवान नहीं है।...'

" इन शब्दों को सुनकर, मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। पहले मैंने उसके मुँह से कभी ऐसी बात नहीं सुनी थी।

" 'तुम कैसे ऐसी बातें करते हो सोसो ?'–मैंने आश्चर्य से पूछा।

" 'मैं तुम्हे पढ़ने के लिए किताब दूँगा, जो बतलायेगी कि दुनिया और सभी सजीव चीजें उससे बिलकुल दूसरी हैं. जैसा कि तुम मान रहे हो, और ईश्वर के बारे में कही जानेवाली सारी बातें केवल बेवकूफी हैं।'–सोसो ने कहा।

" 'कौन-सी किताब ?'–मैंने पूछा।–'डारविन की। तुम उसे जरूर पढ़ना'–सोसो ने बहुत जोर देकर मुझसे कहा। "

गोरी के सहपाठी वानो केच्खोवेली ने अपने संस्मरण में लिखा है :

"वसत और शरद में इतवार के दिन, हम अक्सर देहात मे घूमने जाया करते थे। गोरी के ज्वरी पर्वत की ढलान में एक छोटी-सी खुली जगह थी, जो हमें बहुत पसन्द थी। दिन बीतते गए और अपने साथ हमारे शैशव की आशाओं और स्वप्नो को भी लेते गए। गोरी स्कूल के ऊपर के दर्जा में हमने गुर्जी साहित्य से परिचय प्राप्त किया, लेकिन वहाँ हमें रास्ता बतानेवाला, और हमारे विचारों को एक निश्चित दिशा देनेवाला कोई भी नहीं था। चोचवाद्जे की कविता 'डाकू काको' से हम बहुत प्रभावित थे। कज्बेगी की कविता के नायकों ने हमारे तरुण हृदय को जगाकर, अपने देश के प्रति प्रेम पैदा कर दिया, और स्कूल छोडते समय हमें उससे अपने देश की सेवा के लिए प्रेरणा मिली थी। लेकिन हममें से कोई नही जानता था कि यह सेवा किस रूप में होगी।"

2. तिफलिस सेमिनरी

पादरी बनने की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए, सोसो पन्द्रह वर्ष की उमर में गोरी से जाकर तिफलिस की सेमिनरी में दाखिल हो गया। सेमिनरी में दाखिल होने के साथ ही साथ, सोसो अपने ही शब्दों में :

"मैं क्रांतिकारी आन्दोलन मे पन्द्रह वर्ष की उमर मे शामिल हो गया, जब कि उस समय काकेशिया में रहनेवाले कुछ फरार (अण्डरग्राउण्ड) रूसी मार्क्सवादी समुदायों के साथ मैंने सम्बन्ध स्थापित किया। इन टुकडियों ने मेरे ऊपर भारी प्रभाव डाला और मुझमें गैरकानूनी मार्क्सीय साहित्य की चाट पैदा कर दी।"

जब सोसो को वर्जित फल खाने की चाट लग गई, तो कहने की आवश्यकता नही कि तिफलिस की इस सेमिनरी मे दाखिल होने के बाद, उसका जीवन वह नहीं रह गया, जो एक भावी पादरी का होना चाहिए था। सोसो अपनी शिक्षा को अपनी पाठ्य-पुस्तकों तक ही सीमित नहीं रख सकता था। सन् 1894 से 1899 तक पाँच वर्षों का जीवन, जब सोसो पन्द्रह वर्ष से बीस वर्ष का हो गया, उसके गंभीर अध्ययन का समय था।

3. राजनीतिक अवस्था

उस समय अर्मीनिया और अजुर्बाइजान के साथ, गुर्जी, (जार्जिया) काकेशिया या 'काकेशस-पार' नामक रूसी सूबे का एक भाग था। तुर्की जैसे शक्तिशाली शत्रु से लड़ते-लड़ते अन्त में 19वीं सदी के आरम्भ में गुर्जी ने

रूसी साम्राज्य का अंग बनना स्वीकार कर लिया। रूस के शासकों की इच्छा रहती थी कि अपनी प्रजा को रूसी साँचे में ढाला जाय, जिसके लिए गुर्जी सामन्त पहले से ही तैयार थे। साम्राज्यवादी अंग्रेजों की तरह, जारशाही भी फूट डालकर शासन करने की नीति का खूब पालन करती, और जरा भी सिर उठाते देख गुर्जियों, अर्मनियों, तुर्कों, कुर्दों को आपस में लड़ा देती। वह इस बात की पूरी कोशिश करती थी कि इन पहाडी जातियों के छुरे हमेशा एक-दूसरे की गर्दन पर तने रहें। सन् 1854-56 में रूस को क्रिमिया के युद्ध में पड़ना पड़ा, जिसमें तुर्की की पीठ ठोकते हुए अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने स्वयं युद्ध में उतरकर जार को भयंकर हार दी। पश्चिमी यूरोप के सम्पर्क के कारण, रूस में इससे तीस साल पहले ही, उच्च वर्ग ने जौर की निरंकुशता को हटाने का प्रयास किया था। उस समय कितने ही 'दिसम्बरियों' को प्राणों से हाथ धोना पडा था। क्रिमिया पराजय के बाद, फिर जारशाही के विरुद्ध रूसियों की भावना जाग उठी। जार ने छोटे-मोटे सुधारों के द्वारा बहलाना चाहा। सन् 1860 और 1869 के कुछ सुधारों द्वारा किसानों के खून की एक-एक बूँद निचोड़ कर, जमींदारों को भारी रकम दे, किसानी अर्ध-दासता को खतम किया गया। जेम्स्त्वो (म्युनिस्पैलिटी, जिला बोर्ड जैसी संस्थाओं) तथा न्यायालयों में कुछ सुधार करके क्रांति की लहर को दबाने की कोशिश की गई। अब नरोदनिकी ('जनतावादी') क्रांतिकारी बमो और पिस्तौलों को लेकर, उसी तरह जार के खिलाफ हो गए थे, जिस तरह कि उससे चालीस वर्ष बाद भारत मे अंग्रेजो के खिलाफ हमारे क्रांतिकारी। सन् 1870 से 1881 तक 'जनतावादी' क्रातिकारियों का युग रहा। ये स्वतंत्रता के दीवाने समझते थे कि जार या उसके बडे कर्मचारियों की इक्की-दुक्की हत्या करके, जनता की सहायता के बिना ही मुट्ठी भर वीर नया युग लाने में सफल हो सकते है। सन् 1881 मे, उन्होने जार अलेक्सान्द्र द्वितीय को मार डाला, जिसके 'अपराध' मे ही लेनिन के बड़े भाई अलेक्सान्द्र को फॉसी पर चढ़ना पड़ा था। लेकिन, धीरे-धीरे मालूम हो गया कि यह मुक्ति का रास्ता नहीं है; जैसा कि अपने बडे भाई के फॉसी पर चढ़ने की खबर सुनकर तरुण ब्लादिमिर इलिच (लेनिन) ने कहा था : "नही, हमे दूसरा रास्ता अपनाना है। यह वह रास्ता नहीं है, जिसे हमे अपनाना होगा।"

और, यह दूसरा रास्ता था—कार्ल मार्क्स का कम्युनिज़्म, जिसका अनुसधान इस महान मनीषी ने 19वी सदी के पूर्वार्ध मे करके, उसे सन् 1848 में प्रकाशित 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के नाम से दुनिया के सामने रखा था।

जारशाही साम्राज्य मे भी रूस और उसके अधीन दो प्रकार के देश और दो प्रकार की प्रजाएँ उसी तरह थी, जैसे कि इंग्लैंड में। लेकिन, दोनों मे एक भेद था : जार का राज्य स्थल द्वारा एक-दूसरे से सम्बद्ध था; और बड़ी भारी संख्या में रूसी किसान और मजदूर भी परतंत्र एशियाई जातियो के बीच रहते थे। जारशाही ने अपने शासन को मजबूत करने के लिए ही इन किसानों और मजदूरों को दूसरी जातियों में ले जाकर बसाया था, लेकिन उनके कारण परतत्र जातियो को रूस के घनिष्ठ सम्पर्क में आने तथा वहाँ की सब तरह की हलचलो को जानने का सुभीता था; जब कि सात समुन्दर पार के इंग्लैंड को परतंत्र भारतीय किसी दूर के स्वप्नलोक जैसा समझते थे। 'जनतावादियो' के बाद अब रूस में मार्क्सवादी क्रांतिकारियों का युग आरम्भ हुआ। लोगों मे मार्क्सवाद का प्रचार होने लगा। लेनिन कार्य-क्षेत्र में उतर चुके थे। जारशाही इस नए खतरे को और भयकर समझकर उसे दबाने की कोशिश करती थी। उन्हें पकडकर जेल या निर्वासन की कठोर सजाएँ दी जाती। निर्वासित हुए लोग, रूसी लोगो से अलग रखने के लिए, दूर-दूर भेजे जाते; लेकिन वे वहाँ जाकर भी लोगों मे मार्क्सवाद का सदेश पहुँचाते।

19वीं शताब्दी के अन्त में, अब रूस के अधीन दूसरे देशो मे भी पूँजीवाद का प्रसार होने लगा था। काकेशस मे बाकू का महान तेल-क्षेत्र था, जहाँ पर तेल निकालने और साफ करने के कई कारखाने खुल गए थे। इन कारखानों में विदेशी पूँजी लगी हुई थी। अक्तूबर क्रांति के पहले रूसी पूँजीवाद बराबर इंग्लैंड और फ्रांस की पूँजी और सहायता के बल पर जीता रहा। तेल के अलावा तम्बाकू और धातु के कारखाने भी काकेशस में जहाँ-तहाँ खुल गए। इन कारखानों ने नए तरह के सर्वहारा मजदूरों को पैदा किया। मजदूर श्रेणी के अस्तित्व में आने के साथ-साथ, मार्क्सवाद भी वहाँ पहुँचा।

सन् 1896 में, सत्रह वर्ष की उमर में सोसो ने अपनी सेमिनरी में मार्क्सवादी अध्ययन-कक्षा चलानी शुरू कर दी। उस समय तक रूस में 'रूसी समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टी' के नाम से मार्क्सवादियों का दल कायम हो चुका था, जिसकी शाखा 'मेस्सामेह दास्सी' के नाम से गुर्जी में भी स्थापित हो गई थी। अगस्त सन् 1898 में सोसो तिफलिस के इस दल का सदस्य बन गया। इस दल ने सन् 1893-98 में मार्क्सवाद का प्रचार करने में बहुत काम किया था। 'मेस्सामेह दास्सी' वस्तुतः एक एकताबद्ध दल नहीं था, बल्कि उसमें मतभेद रखनेवाले बहुत-से दल शामिल थे। 'मेस्सामेह दास्सी' का अर्थ है–तृतीय दल। एक गुर्जी लेखक ग. चैरैतेली ने साहित्यकार नेनोश्विली की श्मशान-यात्रा के समय गुरिया में, अपने व्याख्यान में इस दल को यह नाम दिया था; जब कि मार्क्सवादी तरुणों का प्रोग्राम सार्वजनिक तौर से लोगों के सामने रखा गया था। तृतीय दल होने का मतलब ही है कि इससे पहले दो और राजनीतिक दल गुर्जी मे पैदा हो चुके थे। 'मेस्सामेह दास्सी' में भी कई दल थे, जिनमें नोआ यारदानिया के दल (सन् 1893-98) का स्थान प्रमुख था। उसकी ओर से 'क्वाली' और 'मोअम्बेह' नाम के पत्र भी निकलते थे। यारदानिया के विचार कैसे थे, यह उसके निम्न वाक्यों से मालूम होगा :

"गुर्जी संस्कृति के आधार पर गुर्जी भूमि में यूरोपी-करण आगे बढ़ रहा है। हमारा देश और दूसरे देश–गुर्जी और यूरोप है, लेकिन हमारे सामने नया लक्ष्य है, गुर्जी और यूरोपीय दोनो ही बनना। इस समय का यह ऐतिहासिक कर्तव्य है कि हम इस तत्त्व को समझें और लोगो को इसके प्रति सचेत बनाये।"

यारदानिया का मार्क्सवाद अभी यूरोपी-करण और यूरोप के उदारवाद से बहुत आगे नही गया था। ब्रिटिश साम्राज्य उसके लिए एक आदर्श राज्य था, इसीलिए उसने लिखा था :

"बोअर (दक्षिणी अफ्रीका के गोरो) के साथ हमारी सहानुभूति का यह मतलब नही कि हम अंग्रेजो के प्रति घृणा करें। हम बोअरो के साथ इसलिए सहानुभूति रखते है कि वह एक छोटी-सी जाति है, जो अपने देश और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए लड रही है। और, इंगलैंड ? हमें इंग्लैड के साथ प्रेम करना होगा और बहुत बातो मे उसके साथ सहानुभूति दिखलानी होगी। इंग्लैड ऐसी सभी चीजो का गहवारा है, जिन पर आज की सभ्य मानव जाति अभिमान करती है। बोअरो को अपने छोटे राष्ट्र की रक्षा के लिए लडने दो।' लेकिन, साथ ही ब्रिटेन, नव-जीवन का अग्रदूत, नई ध्वजा का वाहक, एक महान ब्रिटेन बना रहे, वह सभ्यता का नेता और झंडाबरदार बना रहे।"

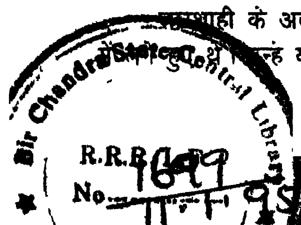
'मेस्सामेह दास्सी' (तृतीय दल) मे सोसो 1898 में शामिल हुआ, जब कि शाशा चुलुकिद्जे 1895 मे, और लादो केच्खोवेली 1897 में उसके सदस्य हुए थे।

मेस्सामेह दास्सी में चाहे कितनी ही त्रुटियाँ रही हों, लेकिन मार्क्स और एंगेल्स की रचनाओ को गुर्जी में फैलाने का आरंभिक काम इसी ने किया था। सोसो के सदस्य होते ही उसी साल इस दल में एक क्रांतिकारी मार्क्सवादी दल तैयार हो गया, जिसमें सोसो के अतिरिक्त, अ चुलूकिद्जे और लादो केच्खोवेली भी शामिल थे। मतभेद का पहला कारण तब पैदा हुआ, जब सोसो और उसके साथियों ने कानूनी अखबारों पर संतोष न कर, मार्क्सवाद की क्रांतिकारी विचारधारा का स्पष्ट रूप से प्रचार करने के लिए गैरकानूनी प्रेस तैयार करने का प्रस्ताव रखा।

एक क्रांतिकारी के लिए सेमिनरी का जीवन असह्य हुए बिना कैसे रह सकता था ? वहाँ के शिक्षक और प्रबंधक जारशाही के कठपुतले और खुफियां से कुछ कम नही थे। स्तालिन (सोसो) ने स्वयं लिखा था :

"एक अत्यन्त अपमानजनक शासन तथा भारी स्वेच्छाचारी व्यवस्था से हमारा पाला पड़ा था। वहाँ बड़े जोर की खुफियागीरी चल रही थी। 9 बजे नाश्ते की घंटी बजी। हम भोजनशाला में गए। और लौटकर आने पर देखा कि जब हम भोजन कर रहे थे, उसी समय हमारी सभी आलमारियाँ और सन्दूकें एक-एक कर खोलकर देख ली गईं और सब चीजो को उलट-पलट दिया गया।"

जारशाही के अत्याचारों को चिरस्थायित्व देने के लिए, सेमिनरी के कर्ता-धर्ता तरुणों को तैयार करने में लगे थे। उन्हें यह कब पसन्द हो सकता था कि वहाँ जारशाही को उखाड़ फेंकने वाले क्रांतिकारी पैदा



हों। लेकिन, दुनिया विरोधी समागमों से भरी पड़ी है। पादरियां के इस विद्यालय के विद्यार्थियों में कई राजनीतिक विचार वालों के अपने-अपने दल थे। राष्ट्रवादी तरुण स्वतत्र गुर्जी देश का स्वप्न देख रहे थे, जनतंत्रवादी 'स्वेच्छाचार, क्रूरता–मुर्दाबाद' का नारा लगा रहे थे। इनके साथ, तीसरा दल सोसो जैसे मार्क्सीय अन्तर्राष्ट्रीयतावादियो का था।

सोसो बालपन में दुबला-पतला-सा लड़का था। लेकिन, उस वक्त भी उसके चेहरे पर सदा निर्भयता की छाप देखी जाती थी और वह हमेशा सिर ऊपर उठाकर चलता था। बढ़कर जब वह और लम्बा हुआ, तब वह देखने मे बहुत पतला-दुबला मालूम होता था। उसके रूप-रग में आवश्यकता से अधिक कोमलता थी, यद्यपि उनके चेहरे से प्रतिभा साफ झलकती थी। उस वक्त भी कोयले जैसे काले, घने केश सोसो के सिर पर थे। उसके वर्तुलाकार चेहरे ओर बादामी काली काली आँखो मे गुर्जी लोगो की जातीय आकृति का पूरा आभास मिलता था। उसके एक सहपाठी एर्नोकिद्ज़े के कथनानुसार, अपने आरभिक क्रातिकारी जीवन मे तरुण सोसो बुद्धिजीवी और मजदूर दोनो के गुणों का एक अद्भुत सम्मिश्रण था। वह बहुत लम्बा नही था। उसके कंधे कुछ अधिक पतले, चेहरा कुछ अधिक लम्बा, दाढी अभी छोटी-छोटी निकल रही थी, आँखे भारी और नाक लम्बी तथा सीधी। वह अपनी चौरस टोपी जरा एक ओर तिरछी लगाता था, जिससे एक ओर बहुत सारे घने काले केश दिखलाई पड़ते थे।

काकेशस मे एनूकिद्ज़े क्राति का सबसे पुराना कार्यकर्ता था, जो बाद मे वहाँ का एक बड़ा नेता बना। उस समय सोसो जुगशविली के साथ उसका बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। एनूकिद्ज़े के अनुसार, मजदूरो से बातचीत करने मे सोसो बहुत दक्ष था। हर वक्त मजदूर उसके पास आसानी से पहुँच, दिल खोलकर बात कर सकते थे, उसी प्रकार जैसे कि उस समय सोसो से दस साल बड़े लेनिन के पास रूसी समाजवादी आन्दोलन के मुख्य केन्द्रों के कमकर। सोसो मे एक स्वाभाविक ढग की सादगी थी। वह अपने शरीर के बारे मे बिलकुल उपेक्षा रखता था। अपने ज्ञान ओर नैतिक बल के कारण, वह तब भी लोगो पर अपना भारी प्रभाव रखता था। लोग खिंचकर उसके साथ हो जाते थे। तिफलिस के कमकर उसे 'हमारा सोसो' कहते थे।

सोसो मे एक और भी चमत्कारिक गुण था, जिसके कारण वह कमकरो को मोह लेता था। वह बात करते वक्त, क्लास लेते वक्त या व्याख्यान देते वक्त, अपने को उसी स्तर पर लाकर रखता था, जो कि उसके श्रोताओ का होता था। इस कारण, वह जो भी कहता, श्रोता उसकी एक-एक बात को हृदयगत कर सकते थे। सोसो के उस समय के साथी ओरखेलशिवली का कहना था : "न वह पंडितमन्य था, और न गँवार।" वह समाजवाद और राजनीति के गम्भीर सिद्धान्तों और विचारों को लोगों के सामने रखता, लेकिन उनकी व्याख्या इतने सरल और सीधे तौर से करता कि उसके श्रोताओं को समझने मे जरा भी दिक्कत न होती। इसे दिखलाते हुए ओरखेलशिवली ने कहा है :

"उसके साथ प्रचारकों के एक दल मे हम भी थे। लेकिन, हम कुछ परिभाषाओं को नही छोड़ पाते थे। वाद, प्रतिवाद तथा सवाद इसी तरह के दूसरे तर्कशास्त्रीय शब्द हमारे पीछे पड़े रहते थे। जब हम मजूरों ओर किसानों के सामने बोलते, तब भी यह परिभाषाएँ हमारे मुँह से निकलती रहती। लेकिन, सोसो के भाषणों मे ऐसा नही होता। वह विषय को एक दूसरे ही ढग से–जीवन के दृष्टिकोण से–उठाता। उदाहरणार्थ, यदि मध्यवर्गीय जनतत्रता के विचार को लेता, तो वह उस दिन की तरह स्पष्ट करके दिखला देता। जारशाही की अपेक्षा यह क्यों अच्छा है, क्यों समाजवाद की अपेक्षा अच्छा नही। फिर तो सभी समझ जाते कि जनतत्रता यद्यपि साम्राज्य को उखाड़ फेंकने मे बिलकुल समर्थ है, लेकिन एक दिन वह समाजवाद के विरुद्ध बाधा के रूप मे उपस्थित होगी, और उसे तोड़ फेंकना ही पड़ेगा।..."

सोसो बड़ा खुशमिजाज और मिलनसार था। ओरखेलशिवली ने लिखा है :

"एक दिन हम लोग एक काकेशीय मुखिया साथी के घर मे जमा हुए। हम सदा किसी एक के घर मे जमा होते थे, क्योंकि दूसरी जगह मिलना प्रायः असम्भव-सा था। भोजन के समय घर के मालिक का बच्चा आकर अपने बाप की जाँघ पर बैठ कर ठमकने लगा। बाप पीठ ठोककर उसे चुप करने

की कोशिश कर रहा था। जो गम्भीर बातचीत वहाँ चल रही थी, लड़का उसे समझने की आयु का नहीं था। बाप को असफल होते देख, सोसो अपनी जगह से उठा, बड़ी नरमी के साथ लड़के को हाथ से पकड़ उसे दरवाजे के पास ले जाकर बोला : 'मेरे छोटे दोस्त, आज के प्रोग्राम में तुम्हें शामिल नहीं किया गया है।' "

ओरेखेलश्विली ने सोसो के स्वभाव के बारे में यह भी लिखा है :

"वह अपने विरोधियों को कभी बुरा-भला नहीं कहता था। मेन्शेविक हमें उस समय इतना सता रहे थे कि जब कभी हम अपने भाषण में उन्हें बैठे देखते, तो अपने को उनके ऊपर तीक्ष्ण वाक्-बाण चलाने से नही रोक सकते थे। सोसो इस तरह के आक्रमण को कभी पसन्द नहीं करता, कटु वाणी उसके लिए वर्जित हथियार थी। जब वह अपने तर्कों और युक्तियो से अपने विरोधी को चुप करा देता, विरोधी मौन हो बच निकलने की कोशिश करता, तो उस समय वह चुटकी लेते हुए इतना-भर कहता : 'आप इतने भद्र पुरुष है, यह देखकर मुझे आश्चर्य होता है कि आप हमारे जैसे नगण्य आदमी से भय खाते है।' "

गोरी स्कूल के अन्तिम दिनो में ही, सोसो डारविन की पुस्तको और मार्क्स के विचारो से परिचित हो चुका था। सन 1894 मे, वह बहुत अधिक अको के साथ वहाँ की परीक्षा मे उत्तीर्ण हुआ। तिफलिस की सेमिनरी में, दाखिल होने पर वहाँ का जीवन उसे बडा गलाघोटू मालूम हुआ। यह बडा ही दकियानूसी स्कूल था। लडके दुनिया से अलग थलग करके कोठरियो में रखे गये थे। सब अध्यापक ईसाई साधू थे, जो विद्यार्थियो मे ईश्वर, जार और ईसाई चर्च के प्रति सम्मान के भाव को जबर्दस्ती भरने की कोशिश करते थे। मठों की तरह, विद्यार्थियो को प्रार्थना मे आने के लिए, गिरजे का घटा निश्चित समय पर बजाया जाता। पाठ्य-विषयो में ईसाई धर्मशास्त्र का विशेष स्थान था। विद्यार्थियों पर खुफियावालो की हर वक्त निगाह रहती थी। इस तरह की धार्मिक शिक्षा और खुफियावालों की निगरानी लडकों पर बडा बुरा प्रभाव डालती थी। लेकिन उससे क्या ? सेमनरी का तो काम ही था—जार के भक्त-अनुचर, ओर धर्मान्ध प्रतिगामियो को पैदा करना। पर, सेमिनरी अपने उद्देश्य मे सफल हुई नही दीख पडती थी, क्योंकि हम देखते है कि उसी में निकोलाई चेर्नीशेव्स्की, लादो केच्खोवेली, मिखा छकाया और सोसो जुगशविली जैसे क्रातिकारी पैदा हुए।

सेमिनरी के सकीर्ण वातावरण के बारे में स्तालिन ने स्वय जर्मन लेखक एमिल लुडविग से कहा था :

"सेमिनरी में जिस प्रकार का अपमानजनक शासन और धर्मान्धतापूर्ण व्यवहार सर्वत्र फैला हुआ था, उसके विरोध के लिए मै तैयार था और वैसा ही हुआ भी, जब कि मै एक क्रातिकारी और मार्क्सवाद—जो कि एकमात्र असली क्रातिकारी सिद्धात है—का अनुयायी बना।"

तिफलिस में उन दिनो मार्क्सवादी साहित्य प्राप्त करना आसान नही था। सन 1938 मे स्तालिन ने अपने पुराने जीवन की बाते बतलाते हुए कहा था कि कैसे तिफलिस के तरुण मार्क्सवादी पुस्तको के लिए एक-एक पैसा जमा करते, और मार्क्स की 'कैपिटल' (पूँजी) की एक ही कापी होने से हाथ से लिखकर उसकी कापियाँ तैयार करते, इसी हस्तलिखित पुस्तक से अपने गुप्त अध्ययन-केन्द्रों मे मार्क्स के ग्रथ का अध्ययन करते। इन्ही केन्द्रो मे, पुस्तको को बडी मुश्किल से प्राप्त करके उन्होने मार्क्स, प्लेखानोफ, चेर्नीशेव्स्की, पिसारेफ, बेलिन्स्की, दोब्रोल्युबोफ और हर्जेन की कृतियाँ पढी। सोसो के लिए रूसी पढना-लिखना अब आसान हो गया था, इसलिए गुर्जी भाषा मे न रहने पर भी रूसी लेखकों को उसने ध्यान से पढा। उसके कारण उसके ज्ञान का क्षेत्र बहुत बढ गया और वह ज्ञान की भिन्न-भिन्न शाखाओं में खुलकर विचरने लगा। सेमिनरी के विद्यार्थियों के लिए वर्जित होने पर भी, वह तिफलिस के एक घुमन्तू पुस्तकालय का सदस्य हो गया था। उसे वहाँ से सस्ते मे बहुत तरह की पुस्तके पढने को मिल जाया करती थी। शेक्सपियर, शिलर, ताल्सताय, सल्तीकोफ-श्चेदूरिन, गोगल और चेखोफ जैसे महान् लेखको के प्रति उसका बहुत प्रेम था। साथ ही, वह अपनी मातृभाषा के लेखकों का भी प्रेमी था। शोता रुस्थवेली, एरिस्तावी, चौचवाद्जे आदि के काव्यों और ग्रंथों को उसने बड़े ध्यान से पढा था। केवल साहित्य ही उसका प्रिय विषय नहीं था। इतिहास और समाजशास्त्र के अतिरिक्त, उसे रसायन और

भूगर्भशास्त्र जैसे विषयों में भी बड़ी दिलचस्पी थी। कविता के साथ तो अधिक प्रेम होना जरूरी ही था, क्योंकि तरुणाई में सोसो ने कविताएँ भी की थीं, जो मामूली नहीं थीं। यह इसी से मालूम होगा कि राफेल एरिस्तवी की जुबली को समर्पित किये गये एक कविता-संग्रह में तरुण सोसो जुगशविली की एक कविता भी सम्मिलित की गई थी। सोलह वर्ष की उमर (सन् 1895) में सोसो ने 'सोसेलो' के नाम से 'इबेरिया' में अपनी एक कविता छपवाई थी ('इबेरिया' गुर्जी देश का पुराना नाम है) जो इस प्रकार है :

"जिसकी कमर अन्तहीन मेहनत से टेढ़ी हो गई,
जो अभी कल तक दासता के सामने नताशिर था,
मैं कहता हूँ, वह उठेगा पर्वतों का ईर्ष्यापात्र हो,
आशा के पखो पर, सबसे ऊँचे, ऊपर।"

ग. परकाद्जे ने अपने सहपाठी तरुण सोसो के विद्यार्थी जीवन के बारे में लिखा है :

" हम तरुणो को ज्ञान की हद से अधिक पिपासा थी; इसीलिए सेमिनरी के विद्यार्थियों के दिमाग से छः दिन मे दुनिया पैदा करने की पौराणिक गप्प को हटाने के लिए, हमने भूगोलशास्त्रीय सृष्टि-संबंधी विचार, तथा पृथिवी की आयु के बारे में पढ़ा। इसीलिए, हमने डारविन की शिक्षाओं से परिचय प्राप्त किया। हमारे इस काम मे गलीलियो, कोपर्निकस तथा कामिल फ्लामोरियोन की दिलचस्प पुस्तको ने मदद की। हमने लायल की 'मनुष्य की प्राचीनता' और डारविन की 'मनुष्य की उत्पत्ति' भी पढ़ी। डारविन की इस पुस्तक का अनुवाद शेचेनोफ ने किया था। साथी स्तालिन शेचेनोफ की वैज्ञानिक कृतियों को बडे चाव से पढते थे।

" क्रमशः हम वर्ग-समाज के अध्ययन की ओर बढ़े, और मार्क्स, एगेल्स और लेनिन के ग्रंथों पर पहुँचे। उन दिनो मार्क्सीय साहित्य पढने को क्रातिकारी काम कहकर दडनीय अपराध माना जाता था। सेमिनरी मे तो वह और भी निषिद्ध था। वहाँ डारविन का नाम हमेशा गालियों के साथ लिया जाता था।

" सामाजिक शास्त्र और अर्थशास्त्र सबधी साहित्य के परिचय के साथ हम तरुणों की दिलचस्पी ज्योतिष, भौतिकशास्त्र, और रसायनशास्त्र की ओर बढी। लुदविग फ्वारबाख की पुस्तक 'ईसाइयत-सार' पढने से हमे बडा फायदा हुआ।

" इन सब पुस्तको से हमारा परिचय साथी स्तालिन (सोसो) ने कराया। वह कहा करते थे कि जो सबसे पहले करना है, वह है अनीश्वरवादी बनना। इसका फल यह हुआ कि हममे से बहुत-से बाइबल के विचारो की उपेक्षा करके, भौतिकवादी दृष्टिकोण स्वीकार करने लगे।

" विज्ञान की भिन्न-भिन्न शाखाओ के अध्ययन ने हम तरुणो को सेमिनरी के धर्मान्ध और कूपमडूकतापूर्ण वातावरण से मुक्त होने मे सहायता ही नही दी, बल्कि उसके कारण, मार्क्सीय विचारों को स्वीकार करने के लिए भी हमारे दिमाग तैयार हो गये। पुरातत्त्व, भूगर्भशास्त्र, ज्योतिष या आदिम सभ्यता के बारे मे हम जो भी पुस्तक पढते, वह मार्क्सवाद की सत्यता को हमारे हृदय में और दृढ कर देती।

" आज की तरुण पीढी के लिए यह समझना भी मुश्किल है, कि उन दिनो किताबो का प्राप्त करना ही नही, बल्कि उन्हें पढ़ना भी बहुत मुश्किल था। उदाहरणार्थ, सेमिनरी के अधिकारियों ने सहायक-निरीक्षक की सूचना पर विक्टर ह्यूगो की पुस्तक 'समुद्र के मेहनतकश' को साथी स्तालिन से लेकर जब्त कर लिया था। वही बात ह्यूगो की दूसरी पुस्तक 'तिरानवे' के साथ हुई।

" तिफलिस की किरोचनया स्ट्रीट के एक घुमन्तू पुस्तकालय से हम पुस्तकें लिया करते थे। इस पुस्तकालय में अध्यापक और दूसरे बुद्धिजीवी अक्सर जाया करते थे। सन् 1920 के आस-पास मैक्सिम गोर्की ने भी इससे फायदा उठाया था। पुस्तकालय की स्थापना साधारण शिक्षण के उपयोग के लिए की गई थी, लेकिन किसी को क्या पता था कि बिलकुल साधारण-सी पुस्तकों के रूप में वहाँ कितनी

बारूद जमा की जा रही है।

" साथी स्तालिन हमें बतलाते थे कि कैसे किताबो के अर्थ को हृदयंगत करना चाहिए, और कैसे किसी विशेष विषय पर पुस्तकों के न होने पर मासिक पत्रिकाओ के लेखो, आलोचनाओ, यहाँ तक कि जब-तब की टिप्पणियों का इस्तेमाल करना चाहिए। इस कारण, हम जो कुछ पढते उसे सक्षिप्त करके उतार लेने की हम आदत पड गई। पढ़न के लिए किसी विषय का सुझाव रखते समय, स्तालिन पहले आसान पुस्तका का चुनते फिर कुछ अधिक कठिन। साहित्य को पढने-समझने मे जहाँ भी कठिनाई आती, उसे स्तालिन (सोसो) हम बडी मेहनत से समझाते।

" एक दिन मुझे मेन्देलयेफ का 'रसायन' हाथ लगा। यह पुस्तक मुझे अब भी अच्छी तरह याद है। स्तालिन उसमे बहुत दिलचस्पी रखते थे।

' समिनरी के कागज पत्रो से हम आज मालूम है कि उसके सुपरवाइजर साधू गेरमोगेन ने रिपोर्ट दी थी 'जुगशविली (स्तालिन) एक सस्त पुस्तकालय का सदस्य है, जिसमे वह पुस्तके लेता है।'

" साथी स्तालिन की इतिहास के साहित्य के प्रति भारी आसक्ति थी। हमें अक्सर अचरज होता था कि वह इन पुस्तको को कहाँ से पाते हैं। मुझे याद है, उनके पास महान फ्रेंच-क्राति, सन 1848 की क्रान्ति, पेरिस, कम्यून, रूसी इतिहास आदि पर पुस्तकें थीं।

' साथी स्तालिन सत्रह वर्ष के थे, जब कि सन 1896 मे सेमिनरी के भीतर प्रथम गैरकानूनी मार्क्सीय अध्ययन-चक्र कायम कर, वह मार्क्सवाद के प्रचारक बन गये। उसके बाद, एक दूसरा चक्र कायम हुआ। मेरा सम्बन्ध प्रथम चक्र से था। इन दिनो जिन पुस्तको को स्तालिन और उनके साथी पढते थे, उनमे थी—'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' एंगेल्स की 'इग्लेड के मजूरों की स्थिति', लेनिन की 'जनता के मित्र कौन हैं और वह कैसे समाजवादी जनतंत्रियो से लड़ते हैं।' ऐडम स्मिथ और रिकार्डो की राजनीतिक अर्थशास्त्र की पुस्तक स्पिनोजा का 'आचारशास्त्र' बर्कले का 'इग्लैड मे सभ्यता का इतिहास' ल तूर्नो का 'सपत्ति का विकास' जीवर का डेविड रिकार्डो और कार्ल मार्क्स की सामाजिक और आर्थिक शोध और दर्शन पर भी पुस्तक थी।

साथी स्तालिन का उपन्यास साहित्य मे भी प्रेम था। उन्होंने सल्तिकोफश्चेदरिन के 'गोलाव्ल्योफ परिवार' गोगल की 'मृत आत्माएं' चर्कासोव की 'मानचरित्र'... ...यान की 'एक किसान की कहानी', थेकरे की 'वैनिटी फेअर' और दूसरी पुस्तकें पढ़ डाली थी। बचपन में ही वह गुर्जी साहित्यकारों से परिचित थे, और रुस्तावेली, इलिया चावचावाद्ज और राजा एरिस्तावली का बडे चाव से पढते थे। साहित्य के प्रति उनका बहुत अनुराग था। तिफ्लिस सेमिनरी मे रहते वक्त, उन्होंने कितनी ही कविताएँ लिखी थी, जिनकी प्रशंसा इलिया चावचावाद्ज ने की थी। चावचावाद्ज ने अपने सम्पादित पत्र मे विशेष स्थान देते हुए, इन कविताओ को मुखपृष्ठ पर छापा था यद्यपि सेमिनरी के विद्यार्थियो के लिए पत्र-पत्रिकाओ में लेख लिखने की सख्त मनाही थी। "

तिफ्लिस सेमिनरी के जीवन के बारे में सोसो के दूसरे सहपाठी ग. ग्लुरजिद्जे ने अपने सस्मरण मे लिखा

" कभी कभी गिरजाघर मे हम उपासना के समय बेंचों के पीछे छिपाकर पुस्तके पढते। हमे बहुत सावधानी रखनी पड़ती थी कि मास्टर देख न ले। पुस्तके सोसो की अभिन्न मित्र थी, भोजन के समय भी वह उनको नही छोडता था।

" सेमिनरी के असह्य ग्लानोत्पादक वातावरण मे हमारे आनन्द की एक सबसे बडी चीज थी—गाना। हम फूले नहीं समाते, जब सोसो हमारे लिए जैसे-तैसे एक संगीत-मडली जमा करता, और अपने स्पष्ट और मधुर कठ से हमारे किसी प्रिय लोकगीत का गाने लगता था। "

स्तालिन को सेमिनरी में रहते समय ही पहले-पहल लेनिन की सबसे पहली लिखी कृतियाँ पढने को मिली। सेमिनरी में स्तालिन के साथी पपानाद्जे ने लिखा है

"मुझे सन् 1898 की एक दिलचस्प बात विशेष तौर से याद आती है। एक दिन पूर्वाह्न में नाश्ते के बाद, मैं पुश्किन-चौरस्ते पर टहलने गया। वहाँ मैंने अपने विद्यार्थियों के एक झुंड से सोसो को भिड़े देखा। वह उनके साथ गर्मागर्म बहस करते हुए यारदानिया के विचारों की आलोचना कर रहा था। सभी बहस में भाग ले रहे थे। यहीं पर मैंने सबसे पहले लेनिन के बारे में सुना। इसी समय घटी बजी और हम सभी जल्दी-जल्दी अपनी क्लासों में दौड गए। मुझे यारदानिया के विचारो की सोसो द्वारा इतनी सख्त आलोचना सुनकर आश्चर्य हुआ। मैंने उससे इसके बारे में कहा। उसने बतलाया कि उसने अभी-अभी तूलिन (लेनिन) का लेख पढा है, जो उसे बहुत पसन्द आया। उसने यह भी कहा : चाहे जैसे भी हो, मुझे इस (लेनिन) से मिलना है।"

X X X

सेमिनरी के अधिकारियो को यह पता लगते देर नही लगी कि उनके कुछ अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि विद्यार्थी सोसो को अगुवा मानते और उसकी बातो पर चलते है। यह जानकर, वह सोसो पर सावधानी से निगाह रखने और उसके बारे मे रिपोर्ट देने लगे। 29 सितम्बर, 1898 को सेमिनरी के रेक्टर को यह रिपोर्ट दी गई :

"9 बजे शाम को भोजनशाला मे विद्यार्थियो का एक समूह सोसो जुगशविली के पास बैठा था। सोसो उन्हे ऐसी पुस्तके पढकर सुना रहा था जिनकी सेमिनरी के अधिकारियो ने स्वीकृति नही दी थी। इसके लिए विद्यार्थिया की तलाशी ली गई।"

सेमिनरी के चाल-चालन सम्बन्धी रजिस्टर मे सोसो के बारे मे कुछ बडी ही दिलचस्प बाते लिखी हुई मिलीः

"मालूम होता है कि जुगशविली के पास सस्ते पुस्तकालय की सदस्यता का टिकट है। वह वहाँ से किताबे लिया करता है। आज मैंने विक्तर ह्यूगो की पुस्तक 'समुद्र के मेहनतकश' को छीन लिया, जिसमे उक्त पुस्तकालय का टिकट पाया।–म. मुराखोव्स्की, सहायक-सुपरवाइजर, फादर गेरमोगेन, सुपरवाइजर।"

रिपोर्ट मे दड के तौर पर निम्न पक्तियाँ लिखी है : "दंड वाली कोठरी में उसे लम्बे अर्से के लिए बन्द कर दो। मै उसे एक बार पहले भी एक असम्मत पुस्तक–विक्तर ह्यूगो की 'तिरानवे'–के बारे में सावधान कर चुका हूँ। (नवम्बर, 1896)"

"11 बजे रात को मैंने सोसो जुगशविली से ल-तूरनो की पुस्तक 'राष्ट्रो का साहित्यिक विकास' छीन ली, जिसे वह सस्ते पुस्तकालय से लाया था। पुस्तकालय का टिकट किताब के भीतर मिला। जुगशविली इस पुस्तक को गिरजे की सीढियो पर बैठा पढ रहा था। यह तेरहवीं बार है, जब इस विद्यार्थी को सस्ते पुस्तकालय से उधार ली गई पुस्तको को पढते पाया गया। मैंने पुस्तक फादर सुपरवाइजर के हाथ मे दे दी।–स. मुराखोव्स्की, सहायक-सुपरवाइजर।"

इस पर दड के लिए निम्न नोट लिखा गया : "फादर रेक्टर की आज्ञानुसार कडी चेतावनी देकर, उसे कालकोठरी मे लम्बे अर्से के लिए बन्द कर दो–(मार्च, सन् 1897)।"

"निरीक्षण बोर्ड के सदस्य जब पॉचवी श्रेणी के विद्यार्थियों की तलाशी ले रहे थे, तो सोसो जुगशविली ने कई बार उनके साथ बहस करनी चाही, और विद्यार्थियो की बार-बार तलाशी लेने के बारे मे असंतोष प्रकट करते हुए घोषित किया कि दूसरी सेमिनरियो मे इस तरह की तलाशियाँ कभी नहीं ली गईं। जुगशविली आम तौर से अधिकारस्थ व्यक्तियो के प्रति बडा ही असम्मानपूर्ण और रूखा वर्ताव करता है। एक मास्टर स. अ. मुराखोव्स्की को प्रणाम करने से बराबर इन्कार करता है, क्योंकि उसने बार-बार उसके बारे मे निरीक्षण बोर्ड के पास शिकायत की है।–अ. र. जावेन्स्की, सहायक-सुपरवाइजर।"

इस पर नोट हैं : "उसे फटकारा गया। फादर रेक्टर की आज्ञानुसार उसे पॉच घटे के लिए काल कोठरी मे बन्द कर दिया गया।–फादर (साधु) दिमित्रि-(16 दिसम्बर, 1898)।"

ऐसी ही एक तलाशी के समय सेमिनरी सुपरवाइजर फादर दिमित्रि सोसो के कमरे में दाखिल हुआ। उस समय वह अपनी किताब पढता रहा, मानो उसने फादर को देखा ही नही। इस पर फादर ने पूछा : "देखते

नहीं हो, तुम्हारे सामने कौन खड़ा है ?" सोसो अपनी आँखें मलते हुए खड़ा हो बोला : "मुझे कुछ नहीं दिखाई पड़ता, सिवाय इसके कि मेरी आँखों के सामने एक काला दाग है।"

27 मई, 1899 को इसी 'काले दाग' ने सेमिनरी परिषद् के सामने प्रस्ताव किया : "सोसो जुगशविली को राजनीतिक तौर से अविश्वसनीय समझकर सेमिनरी से निकाल दिया जाय।"

यद्यपि बाहर से यह लिखा गया कि सोसो को फीस न दे सकने तथा 'अज्ञात कारणों से' परीक्षा में उपस्थित न होने के लिए निकाला गया, लेकिन असली कारण था—सोसो का राजनीतिक कार्य।

स्तालिन ने सन् 1931 मे एक प्रश्न के उत्तर मे लिखा था : "(मैं) मार्क्सवाद का प्रचार करने के कारण सेमिनरी से निकाला गया।"

जिस वक्त सोसो ने सेमिनरी छोडी, उस समय तक उसका मार्क्सवादी दृष्टिकोण पक्का और पूरा हो चुका था।

3
क्रांतिकारी जीवन (सन् 1899-1905)

सेमिनरी ने सोसो जुगशविली को अपने कैदखाने से मुक्त करके बाहर खुलकर काम करने का मौका दे दिया, इसलिए उन्हे उसका जरा भी अफसोस नही हुआ। 19वी सदी का अन्त होते-होते काकेशस के पिछडे प्रदेश मे भी पूँजीवाद अपने पैर फैलाने लगा था। अब वहाँ भी रूसी पूँजीपति अपने कल-कारखाने बढा रहे थे। तिफलिस और बातूम पूँजीवाद के केन्द्र बनते जा रहे थे। हमें इस नई प्रगति का पता नगरो की जन-वृद्धि से भी मालूम होता है। सन् 1863 मे जहाँ काकेशस के नगरो मे साढे तीन लाख आदमी बसते थे, वहाँ सन् 1897 में उनकी सख्या नौ लाख हो गई थी। काकेशस का और भी महत्त्वूपर्ण स्थान इसलिए था कि दुनिया का एक सबसे बडा तेल-क्षेत्र बाकू भी वही था, जहाँ नोबेल और राथचाइल्ड जैसे विदेशी पूँजीपतियों ने भी करोडों की पूँजी लगाकर, एक विशाल उद्योग खडा कर दिया था। एक ओर रूसी और विदेशी पूँजीपति काकेशस के लोगो के शोषण मे लगे थे, दूसरी ओर जारशाही इन पहाडी जातियो का घोर उत्पीडन कर रही थी। वह पद-पद पर उनकी राष्ट्रीय भावना को कुचलने का प्रयत्न करती थी। अगर स्कूल के विद्यार्थियो मे कोई अपनी भाषा बोलता, तो उसकी गर्दन में जीभ निकाले हुए एक कुत्ते के सिर की तसवीर लटका दी जाती थी।

सोसो जुगशविली, लादो केच्खोवेली, और सासा चुलुकिद्जे जैसे तरुण इस तरह के अपमान और शोषण अपमान को कैसे बर्दाश्त कर सकते थे ? उन्होने अपने जीवन को जन-मुक्ति के लिए अर्पित कर दिया, लेकिन सोसो के दोनों तरुण साथी बहुत दिनो तक इस काम को नही चला पाये। लादो सोसो और सासा के साथ, काकेशस मे क्रातिकारियों के काम और गुप्त प्रेस के सगठन मे दिलोजान से लग गया था। लेनिन ने गुप्त सगठन सम्बन्धी कई जिम्मेवारियाँ सौपी थी, जिन्हे उसने बडी योग्यता से पूरा किया। जारशाही ने उसे पकड़कर जेल में ही बन्द नही कर दिया, बल्कि पहरेदार सैनिक ने 17 अगस्त, 1903 को उसे कालकोठरी मे गोली भी मार दी। सोसो के दूसरे साथी, सासा चुलुकिद्जे का स्वास्थ्य पहले से ही बहुत कमजोर था, लेकिन वह अपने आदर्श और लक्ष्य के सामने उनकी परवाह नही करता था। तरुण सोसो अपने प्रतिद्वंद्वियों के साथ बहस-मुबाहिसा करने मे बहुत भाग लिया करते थे। मार्क्सवादी विचारधारा के प्रचार के लिए यह शास्त्रार्थ अच्छे साधन थे। उनमें कमकर जनता देखती थी कि मार्क्सवादी विचारधारा कितनी दृढ़ और सत्य है। सासा भी इस काम मे सोसो का सहायक होता था। उसने गैरकानूनी पत्रो मे बहुत-से लेख लिखे थे। अन्त मे तपेदिक ने सन् 1905 मे उसके तरुण जीवन को खतम कर दिया।

उक्रइनी बोल्शेविक ज़ूबेनली मेल्नीकोफ ने कहा था : "जनता को एक इच ऊपर उठाना उससे कहीं अधिक

अच्छा है कि एक आदमी को पूरे एक मंजिले तक उठाया जाये।" सोसो जुगशविली की भी यही धारणा थी। गम्भीर विचारक और अध्ययनशील होते हुए भी, वह दूसरे प्रचारकों की तरह, लोगों के सामने अपनी पंडिताई दिखाना बिलकुल पसंद नहीं करते थे। हम यह बतला चुके हैं कि वह कैसे गम्भीर तत्त्वों को श्रोताओं के तल पर उतरकर, बहुत सरल करके, उनकी ही भाषा में रख देते थे। फिजूल की बातें बघारने के लिए उनके पास फुर्सत नहीं थी। उनके एक पुराने साथी तोद्रिया ने लिखा है :

"मैंने सोसो से कहा–'वह हमें बतलाते हैं, सूर्य कैसे घूमता है।' इस पर उन्होने मुस्कुराते हुए, जवाब दिया–'सुनो दोस्त, सूर्य के बारे में तुम चिन्ता मत करो, वह अपनी कक्षा से नहीं हटेगा। तुम्हारे लिए यह सीखना बेहतर है कि क्रांतिकारी कैसे आगे बढ़ता है और इसके लिए एक छोटा-सा गैरकानूनी प्रेस स्थापित करने में मेरी सहायता करो।"

ज्यार्जी निनुवा नामक कमकर ने सोसो के आरम्भिक प्रचार-कार्यों के बारे में बतलाया :

" साथी सोसो ने दो वर्षों से अधिक समय तक हमारी क्लास चलायी। जिस विषय पर भी उन्हें बोलना होता, वह उसे पहले भिन्न-भिन्न प्रकरणो में बाँट लेते। उन्हें पश्चिम के मजदूर आन्दोलन के इतिहास और क्रांतिकारी समाजवादी जनतांत्रिक सिद्धातों का अद्भुत ज्ञान था। मजदूरों का ध्यान तुरन्त उनकी बातो की ओर खिच जाता। वह अपने भाषणों मे उपन्यासो और कहानियो से लेकर वैज्ञानिक ग्रंथो तक के उद्धरण देते। कहावतें तो उनकी जीभ पर नाचती रहती थीं। हमारे सामने बोलते समय, उनके सामने एक नोटबुक या बारीक अक्षरो मे लिखा हुआ कोई कागज का टुकड़ा होता। वह पहले से तैयारी करके बोलते, इससे यह स्पष्ट है। हम अधिकतर शाम को, गोधूलि के समय इकट्ठे होते और इतवार की छुटी के दिन पाँच-दस आदमियों के गिरोह में देहात चले जाते, जहाँ समय का बिलकुल ख्याल किए बिना वार्तालाप और बहस करते रहते।

" साथी स्तालिन के उस समय के भाषण अधिकतर मामूली बातचीत के ढंग पर होते थे। उनका नियम था कि जब तक एक विषय को अच्छी तरह न समझा लें, तब तक दूसरे विषय को हाथ न लगायें। उनके प्रश्नों का जवाब देते वक्त, हम मजदूरों के जीवन की घटनाएँ पेश करते और बतलाते कि फैक्टरियो मे क्या हो रहा है, प्रबन्ध-विभाग, ठेकेदार और फोरमैन किस तरह हमारा शोषण कर रहे है। जब कभी इस विषय पर बात होती, तो साथी स्तालिन उसे बड़े ध्यान से सुनते। वह हममे बहुत-से प्रश्न करते और अन्त मे निष्कर्ष निकालते।" साथी स्तालिन हमारे अध्यापक थे, लेकिन वह अक्सर कहते कि मै स्वय मजूरो मे सीख रहा हूँ। स्तालिन की यह धारणा बराबर बनी रही और वह हमेशा इस बात की हिदायत करते थे कि आदमी को जनता से सीखना चाहिए : 'सबसे बड़ी बीमारी जो एक नेता पर आक्रमण कर सकती है, वह है–जनता का भय।'

" नेता की जनता को जितनी आवश्यकता है, उससे कही अधिक नेता को जनता की आवश्यकता है। जनता उससे जितना सीखेगी, नेता उसकी अपेक्षा जनता से कहीं अधिक सीख सकता है। जैसे ही कोई नेता जनता पर विश्वास किए बिना अपनी योजनाएँ बनाना शुरू करता है, वह अपनी विजय और उद्देश्य दोनों की सफलता को बरबाद कर देता है। "

सेमिनरी से निकलकर, कार्यक्षेत्र में प्रवेश करना फूलों की शय्या नहीं, बल्कि बड़ी ही कटकाकीर्ण राह थी। सोसो ने उसे अपनाया। अपने क्रांतिकारी जीवन मे जारशाही पुलिस से बचने के लिए सोसो को बहुत-से नाम बदलने पड़े, कभी वह 'दाविट' थे, कभी 'कोबा' (कोबी), कभी 'नियेरादूजे' तो कभी 'श्चिडकोफ', 'इवानोविच' और कभी 'स्तालिन'।

सोसो मजदूरो की हडतालों में सबसे पहले तिफलिस मे पड़े, जब सन् 1898 में रेलवे मिस्तरीखाने और कुछ दूसरे कारखानों के मजदूरों ने हड़ताल की। सोसो और लादो ने इन हड़तालों के संगठन में बहुत काम किया था। पहले-पहल सन् 1899 मे तिफलिस के मजदूरों ने मई दिवस को क्रांतिकारी तरीके से मनाया। इस महोत्सव के उपलक्ष्य में पाँच सौ मजदूरों की एक सभा हुई, जिसमें सोसो ने भाषण दिया था। उसी साल के अन्त में,

तिफलिस में ट्रामवाले मजदूरों ने हड़ताल की, जिसमें उनकी विजय हुई।

विद्यार्थी जीवन ही मे सोसो का पिता बिसारियोन मर चुका था। विधवा मजूरिन माँ अपने क्रांतिकारी बेटे की क्या सहायता कर सकती थी ? इसलिए, सोसो को अपनी रोटी का भी कोई प्रबन्ध करना जरूरी था। काम ढूँढ़ने पर, उन्हे तिफलिस की वेधशाला मे नौकरी मिल गई। सोसो के पीछे पुलिस इतनी हाथ धोकर पड़ी थी कि रोटी कमाने के अतिरिक्त, छिपने की भी कोई जगह चाहिए थे। वानो केच्खोवेली वेधशाला की नौकरी के बारे में लिखता है :

> "दिसम्बर सन् 1899 के अन्त मे, वेधशाला मे, एक वेधक की जगह खाली थी। लादो के कहने पर, सोसो ने उसके लिए अर्जी भेज दी। वेधशाला मे सारी रात जागकर, निश्चित समय के अन्तर से बारीक यत्रों द्वारा वेध लेना पडता था। काम में बडे धैर्य और दिमाग थकानेवाली एकाग्रता की आवश्यकता थी, इसीलिए वेधक की जगह सदा खाली हो जाया करती थी। यही कारण था, जो सेमिनरी छोडने के बाद पहले मैंने, फिर साथी स्तालिन ने, फिर म दवितशविली और अन्त मे वासो बेर्दजेनिशविली ने वेधशाला में बहुत आसानी से काम पाया।"

बातूम मे (सन् 1901-2)

सोसो बहुत दिनों तक तिफलिस मे नही रह सके। इसमे गिरफ्तार होने का डर ही एक कारण नही था, बातूम अब कालासागर का एक बहुत महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह बन चुका था, जिसके कारण वहाँ मजदूरो की सख्या बहुत बढ गई थी। 11 नवम्बर, 1901 को तिफलिस के समाजवादी-क्रातिकारी सगठन की पहली कान्फ्रेंस हुई। इसमे 25 प्रतिनिधि शामिल हुए थे। इसी मे एक कमिटी का चुनाव किया गया, जिसके एक सदस्य सोसो भी बनाये गए। कमिटी ने नवम्बर के अन्त में ही सोसो को बातूम भेज दिया। बाकू और तिफलिस के बाद, काकेशस में यह तीसरा सबसे बडा मजदूरों का केन्द्र था। वहाँ पहुँचते ही, सोसो ने बड़े जोरो से अपना काम शुरू किया। सजग मजदूरों से सम्बन्ध स्थापित करने मे देर नही लगी, और जल्दी ही उन्होने वहाँ भी अपने अध्ययन-चक्र स्थापित कर लिए, जिनमे से कुछ में वह स्वय भाग लेते थे। बातूम से तिफलिस नजदीक ही है, इसलिए सोसो का सम्बन्ध दोनों जगहो के सगठनो से था, इसे कहने की आवश्यकता नही। साथ ही, सोसो का ध्यान बाकू पर भी था। सोसो की प्रेरणा से, लादो केच्खोवेली ने एक गैरकानूनी प्रेस कायम किया, और सितम्बर सन् 1901 मे तिफलिस से गुर्जी भाषा का प्रथम गैरकानूनी पत्र बरदजोला (सघर्ष) क्रांतिकारी समाजवादी-जनतत्रियो की ओर से निकलना शुरू हुआ। पत्र का लक्ष्य था–कमकरो को जार, जमीदारो और पूँजीपतियो के खिलाफ सघर्ष करने के लिए तैयार करना। बरदजोला सारे रूस के मजूरो की अटूट एकता का पक्षपाती था। वह उत्पीडितो को समाजवाद के लिए लडने को प्रेरित करता था। बरदजोला ने अपने पहले ही अक मे घोषित किया था : "गुर्जी समाजवादी जनतांत्रिक आन्दोलन··· सम्पूर्ण रूसी आन्दोलन के साथ हाथ मे हाथ मिलाये चलेगा, इसलिए वह अपने को रूसी समाजवादी जनतांत्रिक दल के अधीन मानता है।" पत्र खुल्लमखुल्ला कमकरो की अधिनायकता का समर्थन करता था और जारशाही से डरनेवाले 'कानूनी मार्क्सवादियो' और गैरकानूनी सगठनो से अलग रहनेवाले 'अर्थशास्त्रियों' के विचारों की धज्जियाँ उडाता था। वह कमकर वर्ग के खुलकर क्रांतिकारी सघर्ष करने पर जोर देता था।

सेमिनरी से निकलने के साथ ही अब, पुलिस हाथ धोकर सोसो के पीछे पड गई। सोसो उस समय बेर्दजेनिशविली के साथ जिस मकान मे रहते थे, पुलिस ने 21 मार्च, 1901 को उसकी तलाशी ली। सोसो उस वक्त वहाँ नही थे। बेर्दजेनिशविली ने इस तलाशी के बारे मे लिखा है :

> "पुलिस ने एकाएक कमरे के भीतर घुसकर पूछा कि मैं कौन हूँ और उस घर में दूसरा कौन रहता है। इसके बाद तलाशी शुरू की। उन्होने पहले मेरी कोठरी को एक-एक करके ढूँढ मारा और मार्क्सवादी विचारधारा के कुछ कानूनी प्रकाशनो को मुहरबन्द कर, सूची बनाकर मुझसे उस पर हस्ताक्षर कराया। फिर, वह साथी स्तालिन (सोसो) की कोठरी मे गए। वहाँ की एक-एक चीज को उन्होंने उलट-पलट

दिया, कोने-कोने को देख डाला, बिस्तरे को झाड़ा;--लेकिन कोई भी चीज उनके हाथ नहीं आई। साथी स्तालिन की आदत थी कि पढ़कर समाप्त करते ही वह पुस्तक को लौटा देते, उसे कभी घर में नहीं रखते थे। जहाँ तक गैरकानूनी पुस्तकों का सम्बन्ध था, वह उन्हें कुरा नदी के किनारे एक ईंटों के ढेर के भीतर छिपाकर रखते थे। इन बातों में साथी स्तालिन बहुत सावधान रहते थे। दूसरी कोठरी की तलाशी के बाद, पुलिसवाले एक सूची बनाकर खाली हाथ लौट गए।"

सोसो के बातूम जाने से पहले, कार्लो, चूखेइद्ज़े और दूसरे कानूनी मार्क्सवादी बातूम में काम कर रहे थे। चूखेइद्ज़े ने सोसो को यह कहकर मना करने की कोशिश की कि बातूम में किसी काम का भी संगठन करना बिलकुल असम्भव है। उसने बहुत चाहा कि सोसो बातूम से निराश होकर चले जायें, लेकिन जहाँ तक साधारण जनता और विशेषतः मजदूरों का सम्बन्ध था, सोसो उन्हें कहीं अधिक जानते थे। सोसो ने चौबा मुहल्ले में जाकर अपना डेरा डाला और बड़े जोर-शोर के साथ अपना काम शुरू किया। बातूम में मजदूरों की बहुत भारी संख्या थी, जो मन्ताशेफ सीदेरिंदी, राथचाइल्ड और नोबेल की बड़ी-बड़ी तेल-शोधनियों में काम करते थे। राजनीतिक क्लासों के अतिरिक्त सोसो ने गुप्त छापाखाने की भी व्यवस्था की। वह स्वयं पुस्तिकाएँ लिखते और उनके छापने में मजदूर उनकी सहायता करते। बातूम की खुफिया पुलिस ने उस वक्त रिपोर्ट दी थी कि वहाँ के कमकर सोसो जुगशविली का बड़ा सम्मान करते तथा उसे अपना गुरु समझते हैं :

"... समाजवादी जनतांत्रिक आंदोलन ने सन् 1901 की शरद से बहुत प्रगति की है, जब से रूसी समाजवादी जनतांत्रिक दल ने सोसो जुगशविली नामक अपने सदस्य को यहाँ भेजा है। सोसो तिफलिस धर्मशास्त्रीय सेमिनरी के छठे दर्जे का विद्यार्थी था... जुगशविली की तत्परताओं के कारण, बातूम के सभी कारखानों में समाजवादी जनतांत्रिक संगठन बनने लगे हैं।..."

31 दिसम्बर, 1901 की रात को सोसो ने नव वर्ष के उत्सव के बहाने कमकरों के अध्ययन-चक्रो की एक कान्फ्रेंस बुलाई, जिसमें करीब तीस आदमी शामिल हुए। इसी कान्फ्रेंस में रूसी समाजवादी जनतांत्रिक दल की बातूम कमिटी का संगठन हुआ। बातूम में स्थापित होने वाला यह पहला लेनिनवादी संगठन था, इस कान्फ्रेंस के बारे में सोसो के सहकारी रोदियोन कोर्किया ने लिखा है :

"सोसो ने अपना भाषण समाप्त करते हुए कहा--'देखो, प्रभात हो चुका है। जल्दी ही सूर्य उगेगा। सूर्य हमारे लिए प्रकाशित होगा। मेरी बातो पर विश्वास करो, साथियो !' "

बातूम की कमिटी ने सन् 1902 के आरम्भ में वहाँ कई बडी हड़तालें कराईं। कारखानों की हड़ताल-कमेटियों का सचालन सोसो स्वय करते थे। जारशाही के अधिकारी इतने घबड़ा गए कि उन्होने बातूम के लिए एक सैनिक राज्यपाल नियुक्त किया। राज्यपाल ने धमकाकर हड़ताल खतम करने का प्रयत्न किया, लेकिन उसका कोई भी फल नहीं हुआ। 7 मार्च की रात में लोगों को भारी संख्या मे गिरफ्तार किया, तो भी कोई फायदा नहीं हुआ। गिरफ्तारी के विरुद्ध 8 मार्च, 1902 को सोसो ने मजूरों का एक सामूहिक प्रदर्शन संगठित किया, जिसने गिरफ्तार साथियों को छोड़ने की माँग की। पुलिस ने इसका जवाब तीन सौ प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार करके दिया। अगले दिन सोसो ने एक और भी जबर्दस्त प्रदर्शन संगठित किया, जिसमें राथचाइल्ड और मन्ताशेफ के कारखाने के मजदूर ही नहीं, बल्कि जहाजघाट, रेलवे और दूसरे स्थानों के मजदूर भी शामिल हुए। प्रदर्शन बड़ी ही सुव्यवस्थित रीति से सड़को पर घूमा। हाथों में लाल झंडे लिये, लोग क्रांतिकारी गीत गा रहे थे। वह उस बैरिक तक गए, जिसमें उनके गिरफ्तार साथी बंद थे। छोड़ने की माँग करने पर, अबकी बार पुलिस ने गोली चलाई। पन्द्रह मजदूर वहीं मर गए और चौवन घायल हुए। उस दिन के प्रदर्शन के बारे में ई. दरख्वेलिदूजे नामक कमकर कहता है :

"साथी सोसो कमकरों के तूफानी समुद्र के बीच खड़े, स्वयं प्रदर्शन का संचालन कर रहे थे। कलन्दादूजे नामक मजूर जब बाँह में घायल हो गया, तो साथी सोसो ने उसे भीड़ से बाहर निकालकर स्वयं घर तक पहुँचाया।"

12 मार्च को, साथी सोसो ने 9 मार्च के दिन मारे गये मजदरू शहीदों की क्रांतिकारी श्मशान-यात्रा का

प्रबन्ध किया। लोग पुलिस की गोलियों और खून के अभिषेक से भयभीत नहीं हुए और वह भारी संख्या में शहीदों की श्मशान-यात्रा में शामिल हुए। इस अवसर पर सोसो ने एक क्रांतिकारी भावों से ओत-प्रोत पुस्तिका छपाकर बातूम और दूसरे नगरों में बँटवाई थी, जिसके कुछ वाक्य थे :

"हम सम्पूर्ण हृदय से तुम्हारा सम्मान करते हैं, जिन्होंने सत्य के लिए अपने् प्राणों को अर्पण किया। जिस स्तन ने तुम्हें दूध पिलाया, हम उसकी पूरी इज्जत करते हैं ! जिनकी पेशानी शहीदी मुकुट से शोभित हुई और जिन्होंने मृत्यु के अन्तिम घंटे में अपने पीले और काँपते ओठों से संघर्ष के नारों को दोहराया, उनके लिए पूरा सम्मान ! उस छाया (आत्मा) के लिए पूरा सम्मान जो हमारे कानों में आशा का संदेश संचार करती हुई कहती है—हमारे खून का बदला लो !"

सोसो पहले मते रुसिद्जे के घर में रहे। वहाँ से कासिम स्मिरबा नामक एक किसान के घर में चले गए। स्तालिन के इस समय के जीवन के बारे में निनुस्सा मोदेबाद्जे ने 'जार्या वस्तोका' में प्रकाशित अपने लेख मे कहा है :

" साथी स्तालिन मते रुसिद्जे के घर में रहते थे, जिसकी दो कोठरियों में दख्वेलिद्जे माई और कोत्सिया कन्देलाकी रहते थे। पास की एक छोटी कोठरी में साथी स्तालिन रहते थे। इस कोठरी में कोई खिड़की या रोशनदान नहीं था। इसका बाहर का दरवाजा हमेशा बन्द रहता, जिसके कारण किसी का भी ध्यान उधर नहीं जा सकता था। बाहरी और भीतरी दरवाजों के बीच की जगह में कपड़े लटकते थे, जिनके देखने से मालूम होता था कि द्वार में कोई आलमारी है।

" घर के दूसरे आधे भाग में इविलियान और देस्पिने श्फ्तवा रहते थे। सोसो की कोठरी में छापे का प्रेस रखा था, यहीं वह काम करते थे और यहीं उनके पैम्फलेट छपते थे। काफी रात बीतने पर, यहीं अग्रगामी कमकरों की बैठकें होतीं।

" मेरी बहन देस्पिने अक्सर इन पुस्तिकाओं को विश्वसनीय साथियों के पास ले जाती थी। साथी स्तालिन स्त्रियों को क्रांतिकारी कामों की ओर खींचते और उन्हें क्रांति के सम्बन्ध में बातें बतलाते थे।"

सोसो जब अपनी जगह बदल कर कासिम के घर चले गए, तो गुप्त छापखाना अब वहीं काम करने लगा। यह अबखासी मुसलमान किसान बिलकुल सीधा-सादा, अनपढ़ था, लेकिन सोसो के सम्पर्क ने उसके दिल में भी क्रांति की आग जला दी थी। वह अपने सोसो की लिखी और छापी पुस्तिकाओं को फलों की टोकरी में छिपा कर बाहर ले जाता। कासिम की तरह ही, सैकड़ों सीधे-सादे किसान और मजदूर सोसो के काम में सहायता कर रहे थे। भावी स्तालिन के साथ उनकी इतनी आत्मीयता और विश्वास था कि वह उनके लिए सब कुछ करने को तैयार थे। बातूम के कमकर उन्हें 'कमकरों का गुरु' कहते थे। इन कमकरों में स्तालिन के अपने जाति के गुर्जी ही नहीं थे, बल्कि कासिम की तरह के अबखासी, आजुर्बाइजानी, कुर्द, अर्मनी और रूसी भी थे। स्तालिन को इस प्रकार अपने क्रांतिकारी जीवन के आरम्भ में ही अन्तर्राष्ट्रीय मजदूरों और किसानों के घनिष्ठ सम्पर्क में आने का मौका मिला। राष्ट्रीय समस्याओ के अध्ययन का इससे अच्छा मौका और कहाँ मिल सकता था ?

2. प्रथम गिरफ्तारी

5 अप्रैल, 1902 को पार्टी के मुख्य सदस्यो की एक बैठक हो रही थी। उसी समय पुलिस ने छापा मार, सोसो को पकड़कर बातूम जेल में बन्द कर दिया, फिर कुछ समय बाद कुतैस के जेल में भेज दिया। लेकिन, जेल में बन्द करके सोसो को अपने क्रान्तिकारी कामों से नहीं रोका जा सकता था। आखिर सभी जगह मनुष्य रहते थे, जिनमें अधिकांश शोषित और पीड़ित ही थे, जिनके लिए ही सोसो ने अपना जीवन अर्पण किया था और जिनके प्रति उनके हृदय में अगाध प्रेम था। जेल के इन आदमियों द्वारा सोसो ने अपने बाहर के साथियों से सम्बन्ध स्थापित किया। साथ ही, जेल में बन्द राजनीतिक बंदियों में तत्परता से काम करना शुरू किया। उन्हें मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन के विचारों को समझने में मदद दी। जारशाही ने सोसो जुगशविली पर बातूम के

मजदूरों के क्रान्तिकारी आन्दोलन का मुख्य नेता और शिक्षक, एवं तिफलिस समाजवादी जनतांत्रिक संगठन का सदस्य होने के अपराध लगाये थे। फरवरी, सन् 1903 में काकेशीय समाजवादी जनतांत्रिक संगठन की प्रथम कांग्रेस हुई, जिसमें काकेशीय फेडरल कमिटी का संगठन हुआ था। सोसो यद्यपि 5 अप्रैल, 1902 से ही जेल में बन्द थे, लेकिन उनकी अनुपस्थिति में ही उन्हें कमिटी का सदस्य चुना गया। प्रायः सवा वर्ष जेल में बन्द रखने के बाद, 5 जुलाई, 1903 को परममहाभट्टारक (जार) का निर्णय घोषित करते हुए, सोसो को तीन वर्ष के लिए पुलिस की खुली देख-रेख में पूर्वी साइबेरिया में निर्वासित करने की सजा दी गई। साइबेरिया भेजने से पहले ही, नवम्बर सन् 1903 के अन्त में सोसो को बातूम के जेल में लाया गया, जहाँ से उन्हें इर्कुत्स्क प्रदेश के बलगान्स्क जिले के नोवयाउदा नामक गाँव में भेज दिया गया।

इस प्रथम निर्वासन के समय तक सोसो एक प्रमुख संगठनकर्ता और जनता के बड़े नेता हो चुके थे। काकेशस की भूमि में उनका नाम सभी जगह बड़े सम्मान के साथ लिया जाने लगा था। यही नहीं, सन् 1903 तक, अब रूस के क्रांतिकारी भी इस गुर्जी तरुण को सम्मान की दृष्टि से देखने लगे थे। सोसो आतंकवाद के माननेवाले नहीं थे, मार्क्सवाद ने उन्हे सिखाया था कि क्रांति के लिए काम आनेवाली सारी शक्तियों का स्रोत जनता ही है। उसी जनता को जगाना सबसे जरूरी काम है, जिसके लिए छापेखाने की सबसे अधिक आवश्यकता थी। सोसो ने अपने मित्रों लादो केच्खावेली, साशा चुलुकिद्जे, मिखा चूखाकया और दूसरे साथियों से मिलकर, गुप्त प्रेस स्थापित करने की व्यवस्था की थी, जिनके बारे में हम आगे देखेंगे कि वह कुछ ही वर्षों में कितना विशाल रूप ले चुका था।

इसी प्रथम निर्वासन के समय से सोसो का लेनिन से पत्र-व्यवहार होने लगा। 28 जनवरी, 1904 को क्रैमलिन सैनिक स्कूल की लेनिन संस्मरण सभा में बोलते हुए, स्तालिन ने इसके बारे में कहा था :

> "पहले-पहल सन् 1903 में मैंने लेनिन का परिचय प्राप्त किया। यह सच है कि वह परिचय अभी साक्षात्कार के रूप में नहीं था। तो भी पत्र-व्यवहार द्वारा, यह परिचय लगातार जारी रहा। उन्होंने मेरे हृदय पर एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी, जो मेरे पार्टी के सारे कामों पर अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रही। उस समय मैं साइबेरिया में निर्वासित था। लेनिन के क्रांतिकारी कामों के बारे में 1890 वाली दशाब्दी के बाद, विशेषकर 1901 से, जब कि 'इस्का' (चिनगारी) का प्रकाशन शुरू हुआ, जो बातें मुझे मालूम हुई उन्होंने मेरे मन में पक्की तरह से बैठा दिया कि लेनिन एक असाधारण प्रतिभा के धनी पुरुष हैं। मैं उन्हें दल के केवल एक नेता ही नही, बल्कि उसके वास्तविक संस्थापक समझता था; क्योंकि केवल वही ऐसे पुरुष थे जो हमारी पार्टी की अत्यावश्यक जरूरतों और [illegible]क तत्त्वों को समझते थे। जब मैं पार्टी के दूसरे नेताओं से उनकी तुलना करता, तो मुझे सदा मालूम होता कि प्लेखानोफ, मर्तोफ, अखेलरोद् और दूसरे नेता उनके कन्धों तक भी नहीं पहुँचते थे। लेनिन बहुत-से नेताओं में से केवल एक नहीं थे, बल्कि वह सर्वोच्च नेता, एक शाहबाज थे; जो संघर्ष में भय क्या चीज है इसे नहीं जानते थे। उन्होंने बडी हिम्मत और निर्भीकता के साथ, क्रांतिकारी आन्दोलन के अपरिचित मार्ग से पार्टी को आगे बढ़ाया। यह प्रभाव मेरे ऊपर इतना जबर्दस्त था कि मैं इसके बारे में उस समय विदेश में निर्वासित अपने एक घनिष्ट मित्र को लिखे बिना नहीं रहा; और उससे इसके बारे में पूछा भी। कुछ समय बाद सन् 1903 के अन्त में, जब मैं साइबेरिया में निर्वासित हो चुका था, मुझे अपने मित्र का एक बड़ा ही उत्साहवर्धक पत्र मिला, जिसके साथ एक सीधा-सादा, लेकिन बहुत ही भावूपर्ण पत्र लेनिन का भी था, जिससे मालूम हुआ कि मेरे मित्र ने मेरे पत्र को उन्हें दिखा दिया था। लेनिन का पत्र अपेक्षाकृत बहुत छोटा था। ... इस सीधे-सादे, किन्तु निर्भीक पत्र ने लेनिन के बारे में मेरी राय को और भी दृढ़ कर दिया कि वह हमारी पार्टी के शाहबाज हैं। मैं इसके लिए अपने को क्षमा नहीं कर सकता, कि मैंने पुराने गुप्त कार्यकर्ताओं की आदत के अनुसार, और बहुत-से पत्रों की तरह लेनिन के इस पत्र को भी आग में डाल दिया। लेनिन से मेरा परिचय उसी समय से शुरू होता है।"

नोवायउदा में सोसो 27 नवम्बर, 1903 को पहुँचे और 1904 की वसंत तक, साइबेरिया का यही ग्राम

उनका निवास-स्थान रहा। क्रान्तिकारियों को साइबेरिया के इन सुदूरस्थ स्थानों में भेजकर जारशाही चाहती थी कि क्रान्ति के कीटाणु जनता के भीतर न पड़ने पायें, लेकिन उसमें उसे सफलता कहाँ मिल सकती थी, जब कि इन कीटाणुओं से सारा वातावरण ही भरा हुआ था और जो जारशाही के अपने शोषण और उत्पीड़न से पैदा होते थे। जारशाही के दुर्भाग्य से, सोसो का यह निर्वासित जीवन डेढ़ महीने से भी कम का रहा। 5 जनवरी, 1904 को एक दिन आँख बचाकर, वह गुर्जी तरुण नोवयाउदा से गायब हो, छिपते-बचते अपने केन्द्र बातूम में पहुँच गया ! अपने संस्मरण में नतालिया किरतार्द्जे बतलाती है कि स्तालिन उसके घर कैसे पहुँचे :

"सन् 1904 के आरंभिक भाग में, एक रात मेरे दरवाजे पर खटखट की आवाज हुई। आधी रात बीत चुकी थी। मैंने पूछा : 'कौन है ?'

" 'मैं हूँ, भीतर आने दो।'

" 'तुम कौन हो ?'

" 'मैं हूँ, सोसो।'

" मेरे लिए यह विश्वास करनेवाली बात नहीं थी; और मैंने तब तक दरवाजा नहीं खोला जब तक कि उन्होंने अपना संकेत-वाक्य–'हजार बार दीर्घजीवी'–नहीं बता दिया। मैंने पूछा : 'तुम बातूम में कैसे चले आये ?' सोसो ने जवाब दिया : 'मैं निकल भागा।' इसके बाद ही वह तिफलिस के लिए रवाना हो गए, जहाँ से उन्होंने कई बार हमें चिट्ठियाँ लिखीं। साथी सोसो उस समय काकेशीय फेडरल कमिटी के कामों का संचालन कर रहे थे। सन् 1904 की वसंत में, एक बार फिर सोसो बातूम आये। अबकी बार उन्होंने बर्तजखाना में इलिको शराशिद्जे के घर में मेन्शेविकों के साथ कई शास्त्रार्थ किए।"

अब सोसो का नाम 'कोबा' था। साथी कोबा का न कोई घर था, न परिवार। उनका सारा समय मजदूरों के संगठन और क्रांति के काम में बीतता था। उनके पास एक भी पैसा नहीं था। निनुवा और दूसरे साथी जैसे चार वर्ष पहले उनके लिए भोजन आदि का प्रबन्ध करते थे, उनकी वही हालत अब भी थी। जलावतन से भागकर आये आदमी के पीछे जारशाही पुलिस का पड़ा रहना स्वाभाविक था, इसलिए साथी कोबा को बहुत सावधानी से रहने की जरूरत थी। सभाओं में वह एकाएक पहुँचते, चुपचाप कहीं बैठ जाते और सिर्फ बोलने के समय ही प्रकट होते। दो-तीन साथी हमेशा उनके साथ रहकर दरवाजे पर रखवाली किया करते। कोबा लम्बे भाषण कैसे दे सकते थे ? उनका काम था भाषण दिया और लुप्त हुए। कोबा को बराबर एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहना पड़ता था, क्योंकि उनके लिए अपने को छिपाना नहीं, बल्कि असली काम प्रचार और संगठन था। रेलवे लाइन सन् 1883 में ही काकेशस पार करके, बाकू से तिफलिस और बातूम जा चुकी थी। सन् 1900 में बाकू का तेल पाइप द्वारा बातूम पहुँचने लगा था, जिसके कारण वहाँ कई बड़ी-बड़ी तेल-शोधनियाँ स्थापित हुई थीं, जहाँ से जहाजों द्वारा तेल काला सागर से दरे दानियाल होते हुए दुनिया के दूसरे देशों में जाता था। कोबा को यात्रा में ट्रेन का भी सहारा लेना पड़ता, लेकिन उन्हें इस बात का बहुत ही ध्यान रखना पड़ता कि खुफिया पुलिस वाले पीछा न कर सकें। कोबा की सावधानी का एक उदाहरण लीजिये : एक गुप्त बैठक हो रही थी। स्थान नाट्यशाला का एक ऐसा भाग चुना गया था कि यदि पुलिस इमारत को घेर ले, तो एक दरवाजा तोड़कर प्रेक्षणशाला के लोगों में मिलकर अपने को छिपाया जा सकता था। एक बार वह विशाल पपोफ पुस्तकालय में गए। वहाँ रूसी लेखक बेलिन्स्की की पुस्तक माँगकर उसे ध्यान से पढ़ने लगे, लेकिन साथ ही वह हमेशा कनखियों से पुस्तकालय के एक सहायक की ओर देखते रहे, जिसको उन्होंने बिना दूसरे के देखे-जाने दो झूठे पासपोर्ट दे दिये थे। यह पासपोर्ट दो साथियों को देश से बाहर निकालने के लिए बनाये गए थे, जिन्हें पुलिस थोड़ी ही देर बार गिरफ्तार करनेवाली थी। पपोफ एक राजवादी पुस्तकाध्यक्ष था, इसीलिए स्तुरोना रुइकोफ, तोंदरिया, एनोकिद्जे जैसे क्रांतिकारी वहाँ आपस में मिला करते थे।

पुलिस बड़े ध्यान से कोबा की हुलिया लिये फिरती थी : "जुगशविली योसेफ बिसारियोनोविच, मोटा-तगड़ा ··· गम्भीर स्वर··· बायें कान पर छोटा-सा चिह्न··· सिर की आकृति साधारण··· देखने में एक साधारण-सा आदमी।"

बाकू की ओखराना (पुलिस) खुफिया-विभाग के मुखिया को रिपोर्ट देती थी : "किसान योसेफ जुगशविली यहाँ की (गुप्त) सभाओं का प्रधान सचालक है, जिनका उद्देश्य है–एक गुप्त छापाखाना स्थापित करना।" दूसरे समय एक खुफिया पुलिस का आदमी खबर देता है कि इस समय जेल भेजा जानेवाला केसोम नीयेरादजे नाम वाला आदमी और कोई नही, किसान जुगशविली ही है।

किसान जुगशविली या कोबा गुप्त प्रेस को पहले भी सगठित कर चुके थे; क्योकि वह जानते थे कि सबसे बडा हथियार ज्ञान का प्रसार ही है–राजनीतिक ज्ञान, वर्ग चेतना और वर्ग सघर्ष के ज्ञान का प्रसार ही है। इसीलिए, जिस तरह आतकवादियो का ध्यान बमो और रिवाल्वरो की तरफ जाता, उसी तरह कोबा का ध्यान प्रेस की तरफ था। अपने साथियो से मिलकर, उन्होने अबलाबार मे एक गुप्त प्रेस सगठित किया, जिससे बहुत-सी पुस्तिकाएँ और गैरकानूनी पत्र-पत्रिकाएँ निकलती थी। इस प्रेस के बारे मे हम आगे लिखनेवाले है।

कोबा और उसके बोल्शेविक साथी काकेशस के नगरो और कस्बो मे बराबर घूमा करते थे। यह वह समय था जब कि कोबा शास्त्रार्थ के मैदान मे अपने प्रतिद्वद्वी मेनूशेविको, समाजवादी क्रातिकारियो, और क्रोपात्किन के अनुयायी अराजकतावादियो से बराबर लोहा लेते रहते थे। तरुण कोबा की प्रतिभा का चमत्कार इस समय इन बहस की सभाओ मे अच्छी तरह दिखाई पडता था। कभी वह तिफलिस मे जाते, कभी बाकू मे, कभी कुतैस, गोरी, चियातुगी, खांनी, बांर्चालो, बातूम या अन्य जगहो मे। इन जगहो मे जाकर कोबा ने शास्त्रार्थ ही नही किए, बल्कि पार्टी के सगठनो को बनाकर मजबूत करना भी उनका काम था। चियातुरी मे उन्होंने एक बोल्शेविक इलाका कमिटी स्थापित की। उसी की प्रेरणा से कुतैस मे भी भूतपूर्व कुतैस प्रदेश के लिए पार्टी की कमिटी बनी। खांनी मे मेन्शेविको के साथ जो शास्त्रार्थ हुआ था, उसके बाद ही वहाँ भी एक बोल्शेविक कमिटी स्थापित हो गई। इन शास्त्रार्थो मे तर्को और युक्तियो के द्वारा क्रान्तिकारी मार्क्सवाद के पक्ष का समर्थन करते हुए, कोबा ने श्रोताओ को मुग्ध कर दिया था। सन् 1905 मे दो हजार कमकरो की सभा मे अराजकतावादी गोर्गेलिया, चेरेतली और दूसरो से एक बडा शास्त्रार्थ हुआ। उसके एक प्रत्यक्षदर्शी ककेलिदजे ने इस सभा के बारे मे बतलाया है .

> "सभा आरम्भ हुई। कोबा पहले बोले। इस पर बहस शुरू हुई। विरोधियो ने बहुत जोर लगाकर उनके पक्ष का खडन किया। साथी कोबा ने जरा भी घबराहट या उतावलापन न दिखलाते हुए, विरोधियो के एक-एक तर्क के चिथड चिथडे उडा दिये। इस प्रकार यहाँ भी बोल्शेविक विजयी हुए। मजूर एक राय से साथी कोबा के समर्थक हो गए।"

शास्त्रार्थो के अतिरिक्त, कमकरो मे जाग्रति पैदा करने के लिए उनके कष्टो को दूर करने का रास्ता हडताल का था। दिसम्बर, 1904 मे बाकू तेल-क्षेत्र मे एक जबर्दस्त हडताल हुई, जिसके लिए कहा जा सकता है कि अगले साल होने वाली रूसी क्रान्ति की वह पूर्व-सूचना थी। हडताल मे बाकू के मजदूरो की जीत हुई और रूसी कमकर-आन्दोलन के इतिहास मे पहली बार यहाँ मालिको ने मजदूरो के सामूहिक बातचीत के अधिकार को स्वीकार किया। इसका फल यह हुआ कि मेन्शेविको, समाजवादी क्रातिकारियो, अराजकतावादियो, कादेतो और दशनको (आर्मेनियन राष्ट्रीयतावादियो) की बाकू से टिकूकी उड गई। सर्वत्र बोल्शेविको की जय-जय होने लगी।

कोबा इस समय प्रतिवादी-भयकर के रूप मे शास्त्रार्थ-सभाओ मे दिखाई पडते थे। सुधारवादी राजनीतिक दलो के मतव्यो का भडाफोड करने के लिए इससे अच्छा साधन और क्या हो सकता था। तिफलिस बूट फैक्टरी में भी कोबा ने शास्त्रार्थ किया था। यह वही फैक्टरी थी, जिसमे उनका पिता जूते बनाया करता था। नोवा योरदानिया, ई. चेरेतेली, न. रामेशविली जैसे मेनशेविक नेताओ को तरुण कोबा ने शास्त्रार्थो मे परास्त कर दिया। बातूम के एक बडे शास्त्रार्थ मे वह न. रामेशविली और र. अर्सेनिदजे आदि मेनूशेविक नेताओ के सामने बोले थे। पेरेविस्सी और शुकुर्ती आदि की मैंगानीज की खानो मे भी जाकर कोबा ने शास्त्रार्थ किया। उनके विरोधी मेनूशेविक नेता न. लोर्टकीपानिदजे, ग. खोमेरिकी, क. नीनेदजे, ज. गुरुली आदि थे। कुतेस के शास्त्रार्थ ने वहाँ

मेनूशेविकों का प्रभाव कम किया। खोनी जिले के खानी और कुखी आदि स्थानों में कोबा, मिला चूखाकन्या, फ. मखरादूजे आदि ने मेनूशेविकों के साथ शास्त्रार्थ जीता। पोती में भी साथी कोबा ने सफलतापूर्वक शास्त्रार्थ करके, वहाँ बोलूशेविक संगठन स्थापित किया। खिसियाकर योरदानिया, न. रामेशविली आदि मेनूशेविक नेताओं ने बोलूशेविकों पर झूटे लाछन लगाने शुरू किए; खास कर कोबा और उनके गुरु लेनिन को तानाशाह, खूनी ब्लांकवादी आदि के नाम देकर बदनाम करने लगे।

भाषण-शैली–साथी कोबा के बोलने का ढंग बड़ा सरल और आकर्षक था। कोबा जानते थे कि वह उन मजदूरो के सामने है, जो क्रांति के सबसे बड़े सैनिक है। इसलिए, उनका सारा ध्यान इस ओर रहता था कि मार्क्सवाद के क्रातिकारी विचारो को किस तरह उनके हृदयो में बैठाया जाय। एक भाषण मे वह इस सिद्धांत को समझाने लगे कि जीवन की भौतिक स्थितियो के बदल जाने पर भी विचारधाराएँ उसी गति से नही बदलती। इसे उन्होंने इस तरह पेश किया–जैसे एक मोची को ले लो (यह मोची शायद कोबा का अपना पिता विसारियोन ही उनके ध्यान में रहा होगा)। वह पहले अपनी छोटी-सी झोपडी मे काम करता था। उसके अपने छोटे-छोटे हथियार थे और किसी से कुछ लेना-देना नही था। लेकिन, एक बडा आदमी अदिलखानोफ जूते के बाजार में आया। वह सस्ते जूते बेचने लगा। मोची बेचारा उसके सामने कैसे टहर सकता था ? उसने अपनी झोंपडी और दुकान छोड़ी और वह अदिलखानोफ की फैक्टरी मे भर्ती हो गया। भर्ती होते वक्त, उसका यह ख्याल नही था कि मैं हमेशा के लिए मजूरी करनेवाला मोची बन जाऊँगा। उसका ध्यान था कि कौड़ी-कौड़ी करके कुछ पैसा जमा कर, मै अपना एक छोटा-सा कारखाना खोल लूँगा। मोची कारखाने मे भर्ती होकर, अब सर्वहारा हो चुका है। इस जीवन से बचने का उसके पास कोई उपाय नही है, लेकिन अब भी वह अपने सर्वहारापन को स्वीकार करने के लिए तैयार नही है और स्वतत्र कारीगर होने का स्वप्न देख रहा है। स्वतत्र कारीगरी या असर्वहारापन उसके लिए अब बीती कहानी है, लेकिन तब भी वह उसी मनोभाव को पकडे हुए है। अपनी नई सामाजिक स्थिति को स्वीकार करने के लिए वह तैयार नही है। इस तरह साफ है कि मनुष्य के जीवन की बाहरी स्थितियाँ पहले ही बदल जाती है, लेकिन उसके मनोभावो के बदलने में देर लगती है। इसे बतलाते हुए, साथी कोबा ने अपने श्रोताओं के मन मे यह भी बैठा दिया कि भौतिक स्थिति जब पहले ही बदल जाती है, तो इसी बदली हुई स्थिति के सहारे हमे अपने मनोभावो को बदलकर आगे बढ़ना चाहिए। हवाई विचारधाराएँ कोई क्रांति नही कर सकती, न उनसे कोई सफलता प्राप्त हो सकती है। आर्थिक स्थितियो पर निर्भर विचारधारा ही सफलता की ओर ले जाती है। इसके साथ ही, साथी कोबा ने यह भी समझाया कि मनुष्य के मनोभाव, आचार-विचार या आदते उसकी बाहरी भौतिक स्थिति से ही पैदा होती हैं। अगर कानूनी और राजनीतिक रूप अपनी बाहरी आर्थिक या भौतिक स्थितियो के प्रतिकूल हैं, तो इसका प्रभाव लोगो के सदाचार, आदतो आदि पर भी पड़े बिना नही रहेगा। भोतिक स्थिति या आर्थिक स्थिति ने जो अवसर दिया है, उससे लाभ उठाकर हमे लोगों के आर्थिक सम्बन्धों में मौलिक परिवर्तन करने का प्रयत्न करना चाहिए, और मोची को बतलाना चाहिए कि तुम्हारी बीती हुई स्थिति फिर नही लौट सकती, अब तुम सर्वहारा हो; अब तो सर्वहारों की विजय अर्थात् पूँजीपतियो की समाप्ति पर ही तुम्हारे लिए भले दिनो की आशा है।

एक भाषण में कोबा अर्थशास्त्रीय भोतिकवाद की आलोचना कर रहे थे। अपने सिद्धात के लिए मार्क्स की दुहाई देनेवाले, इस फूहड भौतिकवाद के समर्थको से कोबा ने पूछा : "किस ग्रह में, कौन से मार्क्स ने कहा है कि आदमी की विचारधारा उस रोटी पर निर्भर है, जिसे वह खाता है ?" उन्होने विरोधियों को चुनौती दी कि अपनी बातो के समर्थन मे मार्क्स की किताबों मे से एक भी वाक्य निकाल कर दिखलाएँ, "यह सच है कि मार्क्स कहते थे कि मनुष्य के मनोभाव–उसकी विचारधारा–की निर्णायक उसकी आर्थिक स्थितियों हैं। लेकिन, उन्होंने यह कहाँ कहा है कि आर्थिक स्थितियाँ और रोटी एक ही चीज है ? क्या यह स्पष्ट नहीं है कि रोटी जैसा एक शरीरोपयोगी पदार्थ समाज-शास्त्रीय पदार्थ से बिलकुल भिन्न है ?"

उस वक्त का उनका फरारी जीवन ही इसका कारण नहीं था, बल्कि वैसे भी वह छोटे-छोटे भाषण दिया करते थे, लेकिन वह होता था गागर मे सागर। ओरखेलशविली कहता है **स्तालिन के भाषणों में पानी की एक**

बूँद भी नहीं रहती ? पानी की बूँद से यहाँ मतलब बेकार की बातो से है। वह उतने ही शब्द बोलते थे जिनकी आवश्यकता श्रोताओं के मन मे किसी बात के बैठाने के लिए जरूरी होती थी। भाषण मे वक्तृत्वकला के लिए आवश्यक स्वर का आरोह-अवरोह और नाटकीय ढग, लेनिन की तरह ही, कोबा मे भी नहीं था। उनका ध्यान अपने सारे तर्कों और युक्तियो से उसी एक बात के समझाने की ओर होता, जिस पर कि वह उस समय बोलते थे, मानो वह सुन्दर इमारत की एक-एक ईटे चुनकर अपने तर्को और युक्तियो द्वारा रख रहे है। सीधी-सादी भाषा अपनी एक अलग ही कला रखती है। इस प्रकार हम नही कह सकते कि कोबा अर्थात् भावी स्तालिन के भाषण मे कला का अभाव था।

कोबा को मालूम हो रहा था कि सशस्त्र सघर्ष का समय दूर नही है। वह आतकवाद के पक्षपाती नही थे कि दो-चार तरुणो को बम और रिवाल्वर चलाने के लिए तैयार करके सफलता की आशा रखते। उन्हे कमकरो को हथियारबद कर, सघर्ष के लिए तैयार करना था। उन्होने इसके लिए काकेशीय वीर कामो पेत्रोस्यान की सहायता से हथियार इकट्ठे करने का काम शुरू किया। तृतीय पार्टी काग्रेस इसी साल, सन् 1904 मे हुई थी, जिसमे साथी कोबा नही जा सके और काकेशीय बोल्शेविको की ओर से मिखा चूखाकया प्रतिनिधि बनकर गए। काकेशस की घटनाओ पर काग्रेस ने यह विशेष प्रस्ताव पास किया था :

" जबकि,

" 1. काकेशस की आज की विशेष सामाजिक और राजनीतिक स्थितियाँ इसके अनुकूल हैं कि वहाँ हमारी पार्टी के अत्यन्त लडाकू सगठन कायम किए जा सके;

" 2 काकेशस के नगर और देहात–दोनो के अधिकाश लोगो मे क्रातिकारी आन्दोलन उस अवस्था तक पहुँच गया है जब कि स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध सारे देश मे विद्रोह किया जा सके;

" 3 निरकुश सरकार अपनी सेनाओ और तोपखानो को इसीलिए गुरिया मे भेज रही है कि विद्रोह के सभी महत्त्वपूर्ण केन्द्रों को बड़ी निष्ठुरतापूर्वक दवा दिया जाय;

" 4 अगर निरकुश शासन काकेशस के लोगो के विद्रोह को दबाने मे सफल हुआ, जिसमे वहाँ की गैर जातिया के अधिक होने से सुभीता भी है, तो यह रूस मे विद्रोह की सफलता के लिए आम तौर से हानिकारक होगा।

" इसलिए, रूसी समाजवादी जनतांत्रिक दल की तृतीय काग्रेस रूस के वर्ग चेतना वाले सर्वहारो के नाम से बोलते हुए काकेशस के बहादुर सर्वहारो और किसानो के पास अपना हार्दिक अभिनन्दन भेजती है, और केन्द्रीय समिति तथा पार्टी की स्थानीय समितियो को हिदायत करती है कि काकेशस की स्थिति के सबध की सूचनाएँ पुस्तिकाओ, सभाओं, कमकरो की बैठको और सामूहिक वाद-विवादो आदि के द्वारा, बड़े व्यापक पैमाने पर सब जगह फैलाएँ, और अपने पास जितने भी साधन है उनसे ठीक समय पर काकेशस की मदद करे। "

इसी समय काकेशस मे आन्दोलन और आगे बढ़ाने के लिए कोबा ने 'पोलेतारियातिस् बरदजोला' (सर्वहारा-सघर्ष) की स्थापना की, जो आवलाबार के गुप्त प्रेस से निकलता था। लेनिन द्वारा सम्पादित 'प्रोलेतारी' (सर्वहारा) के भी कितने ही लेख इसमे उद्धृत किए जाते थे।

'बरदजोला' का सातवाँ अक 1 सितम्बर, 1904 को निकला था, जिसमे साथी कोबा ने सबसे पहले जातिया की समस्या का प्रश्न छेड़ा था। लेख का नाम था–'जातीय प्रश्न के बारे मे समाजवादी जनतांत्रिक दृष्टिकोण'। इस समस्या को समय-समय पर और भी विकसित करके, अन्त मे व्यावहारिक रूप से उसका हल निकालने का काम कोबा ने ही स्तालिन के रूप मे किया। अपने इस लेख मे कोबा ने मध्यवर्ग के राष्ट्रीयतावादी तथा मेन्शेविको के इस विचार का खडन किया कि मजदूरो के सगठन जातीयता पर निर्भर होने चाहिए और ऊपर से उनका फैडरेशन (सघ) भर होना चाहिए। कोबा ने कहा कि सर्वहारा की विजय के लिए, जातीयता का कोई भी ख्याल किए विना सभी कमकरो की एकता आवश्यक है, और जहाँ तक कमकरो के सगठन का सवाल है–रूसी, गुर्जी, अर्मनी, पोल, यहूदी आदि का कोई भी भेद न रख, सबका एक ही सगठन होना चाहिए। इसके

बिना, सारे रूस मे सर्वहारों की जीत नही हो सकती। काकेशस इस विचार की परीक्षा का सबसे उपयुक्त स्थान था, जहाँ बाकू, तिफलिस, बातूम आदि में सभी जातियों के कमकर इकट्ठे काम करते थे। लेकिन साथ ही, सन् 1905 में कोबा ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि जातियो को आत्म-निर्णय का अधिकार होना चाहिए। गुर्जी पत्र 'सकरत्वेलो' में जो वाद-विवाद चल रहा था, उसमे भाग लेते हुए कोबा ने अपने ये विचार रखे थे।

कोबा के सम्पादकत्व मे निकलनेवाला 'प्रोलेतारियातिस बरदूजोला' उस समय लेनिन के 'प्रोलेतारी' के बाद, बोल्शेविको का सबमे प्रभावशाली पत्र था।

इसी गुप्त जीवन मे 4 जनवरी, 1904 को कोबा की शादी एकातेरिना स्वानिद्ज नामक एक गुर्जी तरुणी से हुई, जिससे सन 1906 मे याकोब नामक पुत्र हुआ। क्रान्तिकारी कोबा को परिवार सँभालने की फुर्सत कहाँ थी ? बीवी कुछ समय बाद तपेदिक से मर गई और याकोब के पालन-पोषण का भार नाना-नानी ने अपने ऊपर ले लिया।

सन 1905 में, कोबा का घनिष्ठ मित्र सहकारी शाशा चुलुकिद्जे 29 वर्ष की छोटी उमर मे मर गया। कोबा ने अपने मृत साथी की अन्त्येष्टि-क्रिया के समय बड़ा मार्मिक व्याख्यान दिया था। शाशा को खोनी में दफनाया गया।

3. विद्रोह की तैयारी

सन 1904 से 1907 तक, काकेशस मे बोल्शेविक आन्दोलन का सचालन कोबा के हाथ मे था। इस सारे समय मे उन्होंने जहाँ कमकरो मे वर्ग चेतना फैलाने, उनके सगठन को मजबूत करके उनकी रोज-रोज की शिकायतो के लिए लड़ने का प्रबन्ध किया था, वहाँ अब सशस्त्र विद्रोह के लिए तैयारी करना भी जरूरी समझा। काकेशस की अवस्था के बारे मे लेनिन ने उसी समय लिखा था : "इस बारे मे हम (रूसी) काकेशस, पोलैड और बाल्तिक प्रदेशो म पीछे रह गए है। यही वह केन्द्र है, जहाँ हमारा आन्दोलन पुराने आतकवादी ढग से बहुत ही आगे बढ़ चुका है, जहाँ पर विद्रोह की सबसे अच्छी तैयारी हुई है, जहाँ सर्वहारा सघर्ष का सामूहिक रूप अत्यत स्पष्ट और शक्तिशाली दिखाई पड़ता है।"–'बरदूजोला' के 15 जुलाई, 1905 वाले अक मे 'हथियारबन्द विद्रोह और हमारे दाव-पेच' नाम से एक लेख प्रकाशित हुआ, जिसमे यह घोषित किया गया था कि क्राति दूर-दूर तक फैलती जा रही है। और वह समय दूर नही जब कि सारे रूस मे वह एक ऐसे विशाल तूफान के तौर पर फूट पड़ेगी और सामने जारशाही स्वेच्छाचारिता की सारी गदगी बह जायेगी। 'बरदूजोला' ने इस बात पर भी जोर दिया कि प्रत्येक जिले मे विद्रोह की एक योजना बननी चाहिए और शत्रु के रक्षा-कवच के उस सबसे निर्बल स्थान का पता लगाना चाहिए, जहाँ से विद्रोह आरम्भ करना है। पहले से ही उस स्थान का निश्चय कर लेना चाहिए। अपनी सेनाओ को ठीक अनुपात से सारे जिले मे बाँटकर रखना चाहिए और जिले की भूमि के नक्शे का सैनिक दृष्टि से अध्ययन करना चाहिए। ऐसा होने पर ही विजय निश्चित हो सकती है। 'बरदूजोला' के प्रथम अक मे ही इस तरह का लेख निकला था। उस समय काकेशस के मेन्शेविक 'सोत्सियल-देमोक्रात' (समाजवादी जनतत्री) नाम से अपना एक पत्र निकालते थे। 'बरदूजोला' उससे लोहा लेकर मेन्शेविकों के विचारो की धज्जियाँ उड़ाता था।

अभी रूस मे प्रथम क्राति का सूत्रपात नही हुआ था। इसी समय 5 अक्तूबर, 1905 के अंक मे 'बरदूजोला' मे 'प्रतिगामिता फैल रही है' के नाम से एक लेख निकला, जिसमे बतलाया गया कि जनता की क्राति को दबा देने के लिए जारशाही सरकार हर तरह के प्रयत्न कर रही है। सर्वहारा के लिए गोलियाँ, किसानों के लिए झूठे वादे, बड़े बुर्जुवाओ को अधिकार–यह वे हथियार है, जिनसे कि प्रतिगामिता अपने को हथियारबन्द कर रही है।

जार ने 17 अक्तूबर, 1905 को जो सुधारो की घोषणा प्रकाशित की थी, उसे मेन्शेविक एक भारी विजय समझते थे। कोबा ने तिफलिस मे नदूजलादेवी की सभा मे उसका मुँहतोड जवाब दिया था। सभा में उपस्थित एक लेखक ने सन् 1929 के 'कम्युनिस्ट' मे, अपने सस्मरण के तौर पर इसका वर्णन किया है :

"साथी कोबा भाषण-मच पर आये और उन्होने लोगों से कहा—'तुम्हारी एक बुरी आदत है, जिसे मै तुम्हारे सामने साफ-साफ कहना चाहता हूँ। चाहे कोई भी सामने आये और चाहे कुछ भी कहे, तुम बराबर दिल खोलकर ताली बजाकर उसका अभिनन्द करते हो। अगर वह कहता है—स्वतत्रता चिरजीव, तो तुम ताली पीटते हो, अगर वह कहता है—क्राति चिरजीव, तो भी तुम ताली पीटते हो, और यह बिलकुल ठीक है। लेकिन, अगर जब कोई आकर कहता है—हथियार मुर्दाबाद, तब भी तुम ताली पीट देते हो ! बिना हथियारो के क्राति को सफल होने का अवसर कब मिल सकता है ? वह किस तरह का क्रातिकारी है, जो चिल्लाता है—हथियार मुर्दाबाद ? जो वक्ता ऐसा कहता है, वह शायद तालस्ताय का अनुयायी हो सकता है, किन्तु क्रातिकारी हरगिज नही। चाहे वह जो भी हो, वह क्राति का शत्रु है, लोगो की स्वतत्रता का शत्रु है !' —सभा के लोगो मे खलबली सी मच गई। लोग एक-दूसरे से पूछने लगे—'कौन है यह ? कितना कड़ा बोल रहा है ! जैसे किसी याकोबीय (पेरिस के क्रातिकारी) की जबान हो !' कोबा आगे बोल रहे थे—'विजय प्राप्त करने के लिए, वस्तुत हमे किस चीज की जरूरत है ? हमे तीन चीजो की जरूरत है। अच्छी तरह गाँठ बाँध लो। पहली चीज है—हथियार, दूसरी चीज है—हथियार, और तीसरी हथियार और फिर हथियार "—चारो ओर से तालियो की गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी, लेकिन तब तक वक्ता भाषण मच से जा चुका था।"

नवम्बर 1905 मे काकेशीय पार्टी सगठन का चतुर्थ बोल्शेविक सम्मेलन साथी कोबा के नेतृत्व मे हुआ। उसमे बाकू, तिफलिस, गुरिया आदि के प्रतिनिधि आये थे। सम्मेलन ने हथियारबन्द विद्रोह की जबर्दस्त तैयारी का प्रस्ताव पास किया और उसके लिए सगठन की कई बाते निश्चित की।

दिसम्बर, 1905 मे प्रथम रूसी इन्कलाब हुआ। यह महीनो से चलनेवाले सर्वहारा के सघर्षो का ही चरम रूप था। कोबा पहले से ही उसके लिए तैयारी कर रहे थे, यह हम बतला आये है। मेन्शेविक जगह-जगह होनेवाले कमकरो के सघर्ष को स्वत स्फूर्त सघर्ष बतलाते थे। इसका जवाब कोबा ने 9 जनवरी, 1905 के अपने एक लेख द्वारा इस प्रकार दिया था

"नही, भद्रपुरुषो तुम्हारा यह सारा प्रयत्न व्यर्थ है ! रूसी क्राति अनिवार्य है, इतनी ही अनिवार्य है, जैसे सूर्य का उगना। क्या तुम सूर्य को उगने से रोक सकते हो ? इस क्राति की मुख्य सेना है—शहर और देहात के सर्वहारा, इसका झडाबरदार समाजवादी जनतात्रिक मजदूर दल है, तुम नही ! "

सन 1905 मे ही, जारशाही के विरुद्ध दो तरह के सघर्षो को लोगो ने देखा। एक था—जनवरी के आरभ वाले खूनी इतवार का वह जुलूस, जिसमे लोग ईसा मसीह और सतो की मूर्तियाँ तथा जार की तसवीरे लिये हुए, धार्मिक भजन गाते, 'भगवान जार की रक्षा करे' कहते हुए पादरी गेपन के नेतृत्व मे, जार के पास अपने दुखो की गाथा लिखकर पेश करने जा रहे थे, जिनका स्वागत जार ने गोली चलवाकर सैकड़ो निहत्थे स्त्री-पुरुषो, बाल-बच्चो का खून करके दिया। लेकिन, दिसम्बर मे जारशाही के सामने दूसरी तरह के लोग आये, इनके हाथो मे न मूर्तियाँ थी और न जार के चित्र। इनके हाथो मे लाल झडे और मार्क्स तथा एगेल्स की तसवीरे थी। भजन और जार की मगल कामना की जगह, वह—'मार्सेइयेज'—वीरतापूर्ण गान तथा दूसरे क्रातिकारी गीत गा रहे थे। वह निहत्थे नही थे। उनके हाथो मे हथियार थे, यद्यपि अभी उनकी सख्या बहुत नही थी। पादरी गेपन नही, बल्कि बोल्शेविक इस सघर्ष का सचालन कर रहे थे। मॉस्को की इस प्रथम क्राति के असफल होने का एक कारण था—कमकरो मे पूर्ण एकता का अभाव, और दूसरा कारण था—आक्रमण की नीति छोड़कर, रक्षात्मक दाव-पेंच स्वीकार करना। साथी कोबा ने भविष्य के लिए सजग करते हुए, कहा था : "विद्रोह की विजय के लिए, यह जरूरी है कि दल एकताबद्ध हो, उसके द्वारा विद्रोह का हथियारबन्द सगठन किया जाय और लड़ने मे आक्रमण की नीति को अपनाया जाय।"

दिसम्बर की क्रांति को मेन्शेविक तटस्थ होकर देखते ही नही रहे, बल्कि उन्होने उसे असफल करने की भी कोशिश की थी। क्राति के विफल होने पर, वह हँसी उड़ा रहे थे। कोबा ने इस पर लिखा था : "नही साथियो ! सर्वहारा पराजित नही हुए, बल्कि कुछ समय के लिए पीछे हट आये है। अब वह एक नए और

यशस्वी आक्रमण के लिए तैयार हो रहे हैं। रूसी सर्वहारा अपने खून से रगे झडे को गिरने नहीं देंगे। वही महान् रूसी क्राति के नेता है, और वही योग्य नेता बनेगे।"

4 तमरफोर्स (दिसम्बर, सन् 1905)

क्राति विफल होने के बाद, फिनलैड क तमरफोर्स नामक स्थान पर दिसम्बर मे अखिल रूसी बोलूशेविक कान्फरेस हुई, जिसमे साथी कोबा काकेशस के प्रतिनिधि बनकर गए थे। यही पर, उनकी लेनिन से पहले-पहल मुलाकात हुई। पहले ही दोनो एक-दूसरे से काफी परिचित हो चुके थे, इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नही यदि कोबा को पार्टी के एक प्रमुख नेता क तौर पर लेनिन के साथ विषय-निर्धारिणी मे काम करने का मौका मिला। लेनिन के साथ इस पहली मुलाकात के बारे मे, बाद मे स्तालिन ने अपने एक भाषण मे कहा था :

' सन् 1905 क दिसम्बर म तमरफोर्स (फिनलैड) की बोल्शेविक कान्फ्रेस मे, मै पहले-पहल लेनिन स मिला। मैं आशा करता था कि हमारी पार्टी के पहाडी गरुड, महान् पुरुष को राजनीतिक तौर से ही महान नही, बल्कि शारीरिक तौर से भी मै महान् देखूँगा। मैने अपनी कल्पना मे लेनिन को एक विशालकाय, प्रभावशाली, भव्य रूप म चित्रित किया था, लेकिन मुझे निराशा हुई जब देखा कि वह एक साधारण सा दिखाई देनवाला आदमी है, जो कद मे भी औसत से कम है, और मामूली आदमियो से किसी बात म भिन्नता नही रखता।

" एक महान् पुरुष के बारे मे यह सामान्य धारणा है कि वह सभा मे देर से आये, जिसमे लोग साँस रोक उसक प्रकट होने की प्रतीक्षा करे। फिर महान् पुरुष के प्रवेश करने से पहले तुरन्त सजग कर दिया जाय . 'हुश ! चुप ! वह आ रहा है।' मुझे यह प्रक्रिया बकार सी नही जान पडती थी; क्योकि इससे प्रभाव पडता है, लोगो मे सम्मान का भाव आता है। लेकिन, मुझे उस वक्त यह जानकर निराश होना पड़ा कि लेनिन प्रतिनिधियो के आने से पहले ही कान्फरेस म पहुँचकर, किसी एक कोने मे बैठ, बिना किसी दिखावे क बातचीत कर रह थे। बिलकुल मामूली सी बातचीत थी, और सो भी कान्फरेस क अत्यन्त मामूली प्रतिनिधियो क साथ। मै आप लोगो से छिपाना नही चाहता कि उस समय लेनिन की यह बात मुझे कुछ आवश्यक नियमो क उल्लघन जैसी मालूम हुई थी।

" कुछ समय बाद ही, मुझे पता लगा कि लेनिन की यह सादगी, यह शालीनता, दिखावा न करने का प्रयत्न या कम से कम अपने को विशेषता न देना, अपने ऊँचे पद का प्रकाशन न करना नई जनता, सीधी-सादी और साधारण जनता, बिलकुल मामूली मानवो के नये नेता के लिए सबसे महत्त्व की चीज थी।

" लेनिन ने कान्फरेस मे जो भाषण दिये थे, वह भी उल्लेखनीय थे। उनमे से एक राजनीतिक परिस्थिति के बारे मे था, दूसरा किसानो की समस्या के बारे मे। दुर्भाग्य से उनको लिखकर सुरक्षित नही रखा गया। सारी कान्फरेस म उन्होने भारी उत्साह का सचार कर दिया था। "

दिसम्बर की क्रान्ति के असफल होने से, लेनिन और बोल्शेविको के निश्चय मे कोई कमजोरी नही आई। कोबा ने भी इसको उसी रूप मे लिया। फिर, आगे की तैयारी होने लगी।

4
बोल्शेविक क्रान्ति से पहिले

1 गुप्त प्रेस (सन् 1906-17)

हम यह बतला चुके है कि क्रातिकारी प्रचार के लिए साथी कोबा ने तिफलिस के अवलाबार मुहल्ले मे एक

गुप्त प्रेस स्थापित किया था। तीन वर्ष से अधिक समय तक इससे तरह तरह का क्रातिकारी साहित्य रूसी, गुर्जी, अर्मनी, आजुर्बाइजानी आदि भाषाओ मे निकलकर काकेशस मे ही नही, बल्कि रूस के और स्थानो मे भी फैलता रहा। पुलिस बराबर खोज करती रही, लेकिन उसका पता न पा सकी। भारतीय क्रातिकारियो के बारे मे, यशपाल ने अपने सस्मरण मे एक जगह लिखा है कि पहले पूर्ण एकाग्रता और उत्साह के साथ किसी बड काम को करने के लिए क्रातिकारियो का उत्साह दो हफ्ते से ज्यादा नही रहता था पीछे भगतसिह और उनके साथी जब केवल आतकवाद को अपर्याप्त समझ उसमे कुछ समाजवादी भावनाओ को भी लाने लगे, तो भी उसकी आयु दो महीने से ज्यादा नही हुई। लेकिन, बोल्शेविको को केवल विचारो के आधार पर क्राति नही लानी थी, उनका आधार था—सब तरह से शोषित उत्पीडित सर्वहारा वर्ग • जो नए आर्थिक सम्बन्धो के साथ कल कारखानो मे सगठित हो रहा था। वहाँ दिन दिन के सघर्ष उनमे स्फूर्ति और साहस पैदा कर रहे थे। कासिम जैसा अनपढ किसान भी बोल्शेविको के प्रभाव मे आकर, खतरे की कोई परवाह न कर उनकी सहायता के लिए तैयार था। कासिम अपने सोसो पर कितना विश्वास करता था, यह हम देख आये है। एक दिन उसने सोसो से कहा था मै बहुत ही अकिचन और बहुत ही सताया हुआ आदमी हूँ। मै कभी किसी मरजिया के सामने नही बोला लेकिन मै तुम्हे पहचानता हूँ मै अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम कौन हो तुम नपि अफिर कात्जा (एक अबखामी वीर) हो। मालूम होता है कि तुम कडक और बिजली से पैदा हुए हो, तुम बडे सूक्ष्म हो तुम्हारे पास एक महान् हृदय और एक महान् आत्मा है।'

कासिम और उसके बेटे स्वय सोसो और उसके गुप्त प्रेस को अपने घर मे लिवा ले गए थे और पीछे लम्बा बुर्का ओढकर कई भारी भरकम औरतो को भी वह अपने गाँव मे ले गये। यह सोसो के साथी थे, जो छापने का काम करने आये थे। गाव के लोग प्रेस चलने की आवाज सुनकर तरह तरह की कल्पनाएँ करते। बेचारे प्रेस और क्रान्तिकारी साहित्य के बारे मे क्या समझे? एक शाम को उनमे से कुछ ने सोसो से आकर कहा तुम जाली सिक्का बना रहे हो न? और यह शायद हमारे लिए कोई उतना बुरा पेशा भी नही है क्योकि हम गरीब है। तुम अपने सिक्को को कब चलाओगे? सोसो ने इसका जवाब देते हुए कहा "मै जाली सिक्का नही बना रहा हूँ बल्कि तुम्हारी तकलीफो को छापकर दुनिया को बतला रहा हूँ।" इस पर गॉव के किसान सतुष्ट हो सहायता करने का वचन देकर चले गये। सोसो के इस प्रेस को जमीन मे गाडे कई साल हो गए थे जब सन् 1917 मे कासिम के उसी बगीचे मे क्रातिकारी सैनिक आकर ठहरे तब कासिम ने खोदकर प्रेस के अलग अलग पुर्जो को निकाल उन्हे जोड दिया। फिर उसने अपने लडके से कहा "देख यह वही चीज है जिससे इन्कलाब बनाया गया था।

लेकिन, अवलाबार का प्रेस अधिक छोटा और खिलौना जैसा प्रेस नही था। जारशाही को बडी प्रसन्नता हुई जब अवलाबार के प्रेस का पता लग गया। पुलिस ने छापा मारकर, उसे अपने हाथ मे कर लिया। उसी समय, 16 अप्रेल 1906 को काकेशस के पूजीवादी पत्र कफकाज' ने लिखा था

> **गुप्त छापाखाना**—15 अप्रैल शनिवार को अवलाबार मुहल्ले मे द राश्तोमशविली के एक अलग थलग निर्जन घर के हाते मे मृत की बीमारियो के नगर अस्पताल से डेढ दो सौ कदम पर एक सत्तर फुट गहरे कुएँ का पता लगा, जिसके भीतर रस्सी और गराडी की सहायता से उतरा जा सकता था। पचास फुट नीचे उतर एक गलियारा दूसरे कुएँ की ओर जाता था, जिसमे पतीस फुट ऊँची एक सीढी लगी हुई थी जिसके द्वारा घर के तहखाने के नीचे एक मकान मे पहुँचा जा सकता था। इस मकान मे सब सामान सहित एक पूरा छापाखाना निकला, जिसमे रूसी गुर्जी, अर्मनी अक्षरो के बीस केस थे हैड प्रेस था, जिसका मूल्य डेढ दो हजार रूबल हो सकता है। साथ ही, वहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के एसिडें, भडकनेवाले गैलातिन तथा बम बनाने की दूसरी चीजे भी थी। गैरकानूनी साहित्य भिन्न भिन्न पलटनो और सरकारी सस्थाओ की मुहरे तो भारी मात्रा मे थी ही साथ ही साढे सात सेर डायनामाइट वाली एक भयकर मशीन भी थी। वहाँ रोशनी एसिटिलेन वाली लालटेनो मे होती थी और बिजली के सिगनल का भी प्रबन्ध था। घर के हाते के एक झोपडे मे तीन सजीव बम, कितने ही बमो के खोल और उसी तरह की दूसरी चीजे

पाई गईं। 'एलवा' (बिजली) पत्र के सम्पादकीय आफिस में मीटिंग करते हुए चौबीस आदमियों को पकड़कर, उन पर इस कांड में शामिल होने का दोष लगाया गया। 'एलवा' के आफिस की तलाशी लेने पर गैरकानूनी साहित्य और पुस्तिकाओं के भारी परिमाण में प्राप्त होने के अतिरिक्त बीस के करीब सादे पासपोर्ट के फार्म भी मिले। संपादकीय आफिस को बन्द करके, मुहर लगा दी गई। गुप्त छापाखाने से भिन्न-भिन्न दिशाओ में जानेवाले बिजली के तार प्राप्त हुए है, इसलिए घर के नीचे की भूमि से और चीजो का पता लगाने के लिए खुदाई की गई। छापाखाने से निकली चीजो को पाँच गाडियो पर लादकर हटाया गया। इसी कांड के सम्बन्ध मे, उसी शाम को तीन और आदमी गिरफ्तार हुए। गिरफ्तार किए हुए आदमी जब जेल की ओर ले जाये जा रहे थे, तो वह मार्सेइयेज गा रहे थे।"

अवलाबार प्रेस का यह रूप वतलाता है कि सोसो या कोबा जारशाही पुलिस से ऑख बचाकर काम करने मे कितने चतुर और सफल थे।

2 चौथी पार्टी कान्फरेस (सन् 1906)

सन् 1906 के अप्रैल महीने मे, स्टॉकहोम (स्वीडन) मे पार्टी की चौथी कान्फरेस हुई, जिसमे कोबा, इवानोविच के नाम से काकेशीय प्रतिनिधि के तौर पर शामिल हुए। लेनिन ने इस कान्फरेस मे मेनूशेविको के खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया था। इवानोविच ने अपने भाषण मे मेनूशेविको को लक्ष्य कर कहा : "चाहे तो सर्वहारा का नायकत्व स्वीकार करो, या जनतात्रिक पूँजीवादियो का—पार्टी के सामने यह सीधा प्रश्न है, जिसके सम्बन्ध मे हमारा मतभेद है।" इस काग्रेस मे प्लेखानोफ, अखेलरोद्, मर्तोफ जैसे चोटी के मेनूशेविक नेता भाग ले रहे थे। लेनिन ने उनकी युक्तियो म से एक-एक की धज्जी उडाई थी। लेनिन भी नाटकीय ढग की भाषण-कला पसन्द नही करते थे। वह भाषण नही दे रहे थे, बल्कि बोल रहे थे। वह लोगो की भावुकता को अपील नही करते थे, बल्कि अपनी बातो की सच्चाई को हृदयगत कराते थे। स्टॉकहोम कान्फरेस मे बोलशेविको को सफलता नही मिली और बहुमत मेनूशेविको के पक्ष मे रहा। इस समय के लेनिन के मनोभाव के बारे मे, स्तालिन ने बाद मे एक बार कहा था :

> "...इस समय पहली बार, मैने लेनिन को पराजित के रूप मे देखा था। लेकिन, वह हताश नही थे। वह भविष्य की विजय की बात सोच रहे थे। दूसरे बोलूशेविक कुछ हतोत्साहित से हो गए थे। लेनिन ने उन्हे प्रोत्साहन देते हुए कहा : 'साथियो, मत घबराओ, हम अवश्य विजयी होगे; क्योकि हम ही ठीक रास्ते पर है।' लेनिन ने उस समय कुडबुडाते हुए बुद्धिवादियो के प्रति घृणा, अपनी शक्ति और विजय मे हमारे अन्दर विश्वास पैदा किया। हम सोच रहे थे, बोलूशेविको की पराजय केवल क्षणिक है। अन्त मे हम अवश्य विजयी रहेगे।"

चौथी कान्फरेस एकता की कान्फरेस कही जाती थी, क्योकि स्टॉकहोम मे बोलशेविक और मेनूशेविक दोनो ही उसमे सम्मिलित हुए थे और दोनो पक्षो को एक करने का प्रयत्न भी किया गया था। एकता की कान्फरेस कही जाने पर भी, वह एकता लाने मे सफल नही हुई। मेनूशेविक क्रान्तिकारी नही, बल्कि सुधारवादी थे। वह अपने विचारो पर दृढ थे। उन्होने अपने स्वतत्र सगठनो को भी बरकरार रखा। अवसरवादी मेनूशेविको से क्रान्तिकारी बोलूशेविको की कैसे पट सकती थी ? इसलिए, रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजदूर दल की एकता केवल कागजी ही रह गई।

कोबा कान्फरेस से काकेशस लौट आये। वहाँ बोल्शेविको के सगठन को मजबूत करने के लिए उन्होने एक बोल्शेविक क्षेत्रीय ब्यूरो की स्थापना की। इस ब्यूरो के द्वारा इस बात के लिए जबर्दस्त आंदोलन शुरू किया गया कि पार्टी की एक नई काग्रेस बुलाई जाय, जिसमे क्रान्तिकारी मार्क्सवाद के आधार पर वास्तविक एकता कायम की जाय। इसका फल जहाँ काकेशस मे पार्टी का प्रचार और सगठन मजबूत करने के रूप मे हुआ, वही पाँचवी काग्रेस का आयोजन भी निश्चित हुआ।

3 पाँचवीं (लंदन) कांग्रेस (सन् 1907)

सन् 1907 की अप्रैल और मई मे होनेवाली इस काग्रेस मे, साथी कोबा ने काकेशस के प्रतिनिधि के तोर पर भाग लिया। कोबा के अनुसार, इस काग्रेस का सबसे महत्त्वपूर्ण काम यह हुआ कि इसने फूट नही बल्कि पार्टी की अटूट एकता का काम किया। सारे रूस के प्रमुख कार्यकर्ताओ को एक अटूट पार्टी मे लाकर एक कर दिया। यह सच्चे अर्थो मे अखिल रूस की एकता काग्रेस थी। लदन काग्रेस उस समय हुई थी, जबकि जारशाही जनता के अधिकारो पर भारी प्रहार करने के लिए तैयार हो रही थी। इसके बाद ही, 3 जून को जारशाही ने द्वितीय राज्य-दूमा (ससद) को तोड दिया और अब वह बोल्शेविक सगठनो को चूर्ण-विचूर्ण करने मे लगी हुई थी। सन् 1905 की क्राति विफल होने के बाद, जो निर्बलता और निराशा कमकरो मे आई थी, उससे फायदा उठाकर जारशाही अपने विरोधियो का नामोनिशान मिटा देना चाहती थी। चारो तरफ आतक का राज्य था। लेकिन यही समय था, जब साथी कोबा ने लदन से लौटकर बाकू को अड्डा बना, मजदूरो मे जोर-शोर से काम करना शुरू किया।

इस कठिन परिस्थिति मे, बाकू मे सफलतापूर्वक काम करना कोबा जैसे योग्य सगठक और प्रचारक का ही काम था। कोबा ने अपने कामो से बाकू के कमकरो को बोल्शेविको की ओर करने मे सफलता पाई। बाकू का तेल क्षेत्र बहुत दूर तक फैला हुआ था और दुनिया का एक सबसे बड़ा तेल-क्षेत्र होने से, उसका औद्योगिक महत्त्व भी बहुत था। बालाखानी, बीबीएवत, चोर्नीगोरद और बेलीगोरद के तेल क्षेत्रो मे यहाँ के मजदूर बिखरे हुए थे। मेन्शेविको का उन पर काफी प्रभाव था। लेकिन, उन्हे कोबा जैसे विरोधी का सामना करना पड रहा था, जो हर तरह से मेन्शेविको के रास्ते को गलत साबित कर मजूरो को अपनी ओर खीच रहे थे। कोबा ने 'बाकिन्स्की प्रोलतारी', 'गुदाक' और 'बाकिन्स्की रबोची' नाम के गैरकानूनी पत्र निकाले। इसी समय, तृतीय राज्य दूमा (पार्लामेन्ट) का निर्वाचन हो रहा था। निर्वाचन मे भाग लेते हुए कोबा ने 'तृतीय राज्य दूमा के समाजवादी जनतांत्रिक डेपुटियो का कर्तव्य-पत्र' के नाम से एक लेख लिखा, जिसे 22 सितम्बर को बाकू मे मजदूर प्रतिनिधियो की सभा ने स्वीकार किया। कोबा के सहायक उस समय सेर्गो ओर्जोनीकिद्जे, क्लिमेन्त वोरोशिलाफ (वर्तमान राष्ट्रप्रति), अल्योशा जापरिद्जे, स्वोपानौ, सुरेन स्पन्दरयान, रतपन शौम्यान, वान्या फयालताफ, व प नागिन (मकर), वत्सक, अलीलयेफ, ग्वचलाद्जे अपोगतोल, रादुस जैकोविच (ईगर) जैसे लगन वाले कर्मी थे। वोरोशिलोफ उस समय बीबीएबत जिले के तेल-मजदूर-सघ का मत्री था और ओलियम कंपनी मे ब्वाइलर बनाने का काम करता था। बाकू मे मताशेफ, लियानोजाफ जैसे रूसी और राथचाइल्ड तथा नोबल जैसे विदेशी करोडपति पूँजीपतियो से मुकाबला था। बाकू के अलग-अलग तेल क्षेत्रो की अलग-अलग कमिटियाँ थीं, जिनके ऊपर बाकू कमटी तथा उसके कार्यकारिणी ब्यूरो को कोबा की अध्यक्षता मे कायम किया गया था। बाकू के मुसलमान मजदूर सबसे पिछडे हुए थे, जिनको बहकाने के लिए पूँजीपति और जारशाही मुल्लो और प्रतिगामी शक्तियों की सहायता लेती थी। उनमे काम करने के लिए, उम्मत (गुम्मेत) के नाम से एक नया सगठन कायम किया गया, जिसका काम था मुसलमान कमकरो मे तत्परता के साथ काम करना, उन्हे मुल्लो और सामन्तो के पजे से निकालना। बीबीऐवत जिले को मेन्शेविको का गढ समझा जाता था, इसलिए कोबा ने उसकी ओर विशेष तौर से ध्यान दिया। उन्होने अपने एक लेख 'कान्फ्रेस और कमकर' मे बाकू के काम के बारे मे लिखा था

> "सन 1903 की वसत मे, बाकू की पहली साधारण हडताल ने जुलाई की हडतालो के आरभ और रूस के दक्षिणी नगरो के प्रदर्शनो की सूचना दी। सन् 1904 के नवम्बर-दिसम्बर की आम हडताल ने सारे रूस मे होनेवाले जनवरी-फरवरी के यशस्वी सघर्षो का सिगनल दिया। सन् 1905 मे, बाकू के सर्वहारा अर्मनी-तुर्क-हत्याकाड के प्रभाव से जल्दी मुक्त हो, अब सघर्ष मे भाग लेने लगे, जिसका प्रभाव सारे काकेशस मे एक भारी जोश के रूप मे देखा जा रहा था। 1905 की क्राति असफल होने के बाद भी, सन् 1906 मे बाकू का जोश कम नही हुआ, मई-दिवस का उत्सव यहाँ रूस की और सभी जगहो से अच्छी तरह प्रति वर्ष मनाया जाता था, जिसे देखकर दूसरे नगरो को डाह ही सकती थी।"

लदन काग्रेस के बाद ही, मेन्शेविक जारशाही के अत्याचार से घबराकर बाकू के कमकरों के सभी लड़ाकू संगटनो को ठप्प करने लगे, जिसका बोल्शेविको ने जबर्दस्त विरोध किया और उन सगठनो को फिर से स्थापित किया। अगस्त सन् 1907 में, कोवा ने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिस पर सगठन-कमीशन का हस्ताक्षर था। इस सगठन-कमीशन मे बालाखान, वीबीऐंवत, चोन्नीगोरद, बेलीगोरद, मॉस्कोइ जिलो के सगठन ही नही, बल्कि रूसी ममाजवादी जनतात्रिक मजदूर पाटी के बाकू सगठनो वाला मुस्लिम उम्मत गुट भी शामिल था। इस लेख मे मजदूरां से मेन्शेविक कंन्द्र के नेतृत्व को छोड देने की अपील की गई थी, जिसका जनता से कोई सम्बन्ध नही था और जो अवसरवादी नीति का अनुसरण करता था और बाकू के सर्वहारा के विचारो और भावों का प्रतिनिधित्व नही करता था। मेन्शेविको का यह केन्द्र सचमुच ही बाकू के सर्वहारो का विश्वासपात्र नही हो सकता था; क्योंकि वह उनके सघर्षो मे नेतृत्व करने के लिए तैयार न हो, उन्हे पीछे खीचना चाहता था। जार ने राज्य दूमा को तोड दिया, तो उसके विरुद्ध भी बाकू मे कुछ करना जरूरी समझा गया। वहाँ के रेलवे कमकरा तथा वाकू के चार तेल-क्षेत्रो के मजदूरो का सम्मेलन किया गया। आपस मे विचार-विनिमय के लिए भिन्न-भिन्न पार्टियो के प्रतिनिधियो का एक और भी सम्मेलन हुआ। तृतीय राज्य दूमा के चुनावो का प्रश्न था। अतः इसके लिए आजुर्बाइजानी (तुर्की) और अर्मनी भाषाओ मे भी पुस्तिकाएँ निकाली गई, जिनमे दशनको (अर्मनी राष्ट्रवादियो), बद (यहूदी मजदूर सभा) और मेन्शेविको की अवमरवादिता की पोल खोली गई। इसी समय, मॉस्को और पीतरबुर्ग की तरह, वाकू में भी एक बोल्शेविक केन्द्र स्थापित करने का सवाल उठा, जिसका सभी जगह से समर्थन हुआ; और वह बोल्शेविक केन्द्र स्थापित हो गया। इस केन्द्र ने बाकू के मजदूर-आन्दोलन को बढाने मे बडा काम किया।

अगस्त सन् 1907 में, दूमा के निर्वाचन के सम्बन्ध मे कई जिला-कमेटियो की तरफ से एक पुस्तिका प्रकाशित की गई, जिसमें वतलाया गया—यद्यपि जारशाही दूमा मे सच्चे जनप्रतिनिधियो का पहुँचना असम्भव है, लेकिन तो भी कमकरो को वोट की पंटियो से फायदा उठा, जारशाही सरकार की चालाकियो का भडाफोड करना चाहिए, जिसमे वह मजदूरो को धोखा देने के अपने लक्ष्य मे सफल न हो सके। निर्वाचन मे बोल्शेविक इसलिए भाग ले रहे हैं कि जारशाही सरकार को हटाकर, जनतात्रिक गणराज्य स्थापित करने के लिए, एक नए सघर्ष का आरम्भ किया जाय। यद्यपि प्रथम क्राति के बाद, दूसरे स्थानों मे आन्दोलन का जोर बहुत घट गया था, लेकिन जहाँ तक बाकू का सम्बन्ध था, वहाँ के कमकर अक्तूबर की महान् क्राति तक बोल्शेविको के पथ-प्रदर्शन मे उसी तरह डटे रहे।

22 अगस्त, 1907 को 'गुदाक' मे साथी कोबा का एक लेख 'ममाजवादी जनतत्रियो में' छपा। अवसाद और निराशा के समय अराजकतावाद बुद्धिजीवियां पर काफी प्रभाव डालने लगा था और यह बीमारी घटने की जगह वढती ही जा रही थी। चोर-डाकू भी इससे लाभ उठाने के लिए तैयार थे। कोबा ने अपने लेख के कमकरों और किसानों मे कहा कि अपने आदर्श के लिए, श्रमिक जनता की मुक्ति के लिए अपने को सगठित करो और अराजकतावाद के दलदल में मत फँसो।

कोबा जाति के गुर्जी थे, जो धर्मतः ईसाई होते थे; और बाकू आजुर्बाइजान के मुसलिम इलाके मे है। भारतीय पाठको को यह बतलाने की आवश्यकता नही कि निरक्षर और पिछडी जनता कितनी आसानी से उन मुल्लो के हाथ मे फँस जाती है, जो हाकिमो के इशारो पर नाचते है। यह साथी कोबा के अनुकरणीय कार्य का चमत्कार ही था कि एशियाई और रूसी, मुसलमान और ईसाई, सब एक ही तरह से उन्हे अपना नेता मानते थे। बीबीऐबत जिले मे, नैफ्थलन कपनी के तेल के कुएँ थे। वहाँ खानलार नामक एक आजुर्बाइजानी मजदूर कर्मठ कार्यकर्ता था। उमके कारण मुसलमानो मे प्रतिगामियो की नही चलती थी। मालिक भयभीत थे। इसलिए उनके इशारे पर, जाफर और अबजरबेक दो गुडो ने खानलार को मार डाला। कोबा ने सितम्बर, सन् 1907 में 'खानलार पर जो बीती, वह हम पर बीती' के नाम से एक पर्चा निकाला, जिसमे लिखा था :

> "हत्यारो ने खानलार के ऊपर गोली नही चलाई, बल्कि हमारे ऊपर, आगे बढे हुए कार्यकर्ताओ के ऊपर चलाई है। हमारे ऊपर गोली चलाकर, पूँजीपतियो के गुर्गे हमारे अग्रगामी साथियों की पाँति

को छिन्न-भिन्न करना चाहते है, जिसमे आगे चलकर वह बाकू के सर्वहारा की गर्दने और कडाई के साथ रस्सी से कस सके।"

पर्चे मे हडताल करने तथा खानलार के हत्यारों को काम से निकाल देने की माँग पेश की गई थी। दो हफ्ते की हड़ताल घोषित कर दी गई, और उसके बारे मे एक पर्चा निकालकर कहा गया : 'हम सारी दुनिया को दिखला देगे कि खानलार अकेला नही था, और हर एक आगे बढ़े हुए कार्यकर्ता के पीछे हजारो की सेना तैयार है, जो अपने साथियो और नेताओं की रक्षा करने के लिए मजबूती से खडी है।'

'गुदाक' के पाँचवे अक (14 अक्तूबर, 1907) मे साथी कोबा ने खानलार की शहादत पर एक टिप्पणी लिखी थी, जिसमे शहीद के प्रति श्रद्धाजलि देते हुए कहा था : 'उसके हृदय मे सर्वहारा की आत्मा की आग और भाव-प्रवणता थी: उसके दिल मे किसानो का दुख और कष्ट भरा हुआ था।' खानलार के अतिरिक्त, दुश्मनो ने रेलवे और दूसरे कारखानो मे काम करनेवाले तुछकिन, लीसैनिन और दूसरे कितने ही मजग मजदूरो की हत्या करवाई थी। इस पर बोल्शेविक बाकू कमेटी ने कमकरो को आत्म-रक्षा के लिए सगठित होने तथा जरूरी सामान जमा करने के लिए आदेश दिया।

तीसरी राज्य दूमा तोड देने के बाद, चौथी राज्य दूमा निर्वाचित हुई, जिसके पथ-प्रदर्शन के लिए भी साथी कोबा ने एक निर्देश-पत्र तैयार किया। इस पत्र मे लदन काग्रेस की कार्रवाइयो के बारे मे भी बतलाया गया था। 22 सितम्बर, 1907 को बाकू मे कमकर प्रतिनिधियो ने इस पत्र का समर्थन किया। इसमे कहा गया था कि राज्य दूमा मे समाजवादी जनतात्रिक डेपुटियो को अपना अलग गुट कायम करना चाहिए, और एक खास पार्टी के प्रतिनिधि होने के कारण उन्हे अपनी पार्टी और उसके नेतृत्व के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखना चाहिए। इस गुट का सर्वहारा वर्ग के हित के लिए एक विशेष कार्यक्रम पर चलना; पार्लामेण्ट का उपयोग कादेतो (राजवादियो) और मेन्शेविको से भिन्न तौर पर करना है। कमकरो के प्रतिनिधि दूमा मे विधान बनाने के अभिप्राय मे नही जा रहे है, बल्कि अपने विचारो के प्रचार और क्रातिकारी शक्तियो को मजबूत करने के लिए, उसे मच के तौर पर इस्तमाल करने जा रहे है। यह बाते तृतीय दूमा के डेपुटियो के पथ-प्रदर्शन के लिए कही गई थी। तृतीय राज्य दूमा के उद्घाटन के समय, नवम्बर सन् 1907 मे एक पर्चा निकालकर कहा गया कि कमकरो का गुट दूमा मे तभी सफलतापूर्वक काम कर सकता है, जब कि वह लोगो को यह सूचित करता रहे कि दूमा मे क्या हो रहा है और साथ-साथ, पार्टी-सगठन लोगो को समझाते रहे कि शातिपूर्ण, अहिसात्मक ढग और पार्लामिण्टी तरीके से अपनी मॉग पूरी कराने की आशा केवल दुराशा मात्र है।

सन् 1908 के आरभ मे, मिस्तरीखाना के फोरमैनो की परिषद् और तेल-उद्योग के कमकरो तथा आफिस के नोकरो की परिषद् के प्रतिनिधियो की प्रथम मीटिग, मालिको के साथ होनेवाली कान्फरेस मे अपने प्रतिनिधि चुनने के लिए हुई। इस कान्फरेस ने बतला दिया कि बाकू के कमकरो मे बोल्शेविक पार्टी का कितना अधिक प्रभाव है। जब मालिको ने देखा कि ऐसे प्रतिनिधियो के साथ बातचीत करके वह अपना मतलब पूरा नही कर सकते, तो उन्होने दूसरा रुख लिया और मजदूरो पर आक्रमण करने एव कारखानो के फोरमैनो को—जो कमकरो पर बहुत प्रभाव रखते थे—नौकरी से निकालना शुरू किया; और कमकरो मे जातीय वैमनस्य पैदा करने के लिए भी अपने गुर्गो को भेजा। इस पर 'गुदाक' के 22वे अक, (9 मार्च, 1908) मे साथी कोबा ने 'तेल के मालिक पैतरा बदल रहे हे' के नाम से एक लेख लिखा, जिसमे कमकरो को तेल-कमकर-सघ के साथ जुट जाने और छुट-पुट हडताल करके अपनी शक्ति को व्यर्थ ही बरबाद न करने के लिए कहा गया। बाकू कमेटी ने पहले पूँजीपतियो द्वारा प्रस्तावित कान्फरेस मे सम्मिलित होने का विरोध किया और इसके लिए 29 सितम्बर, 1907 के 'गुदाक' मे कोबा के नाम से एक लेख 'कान्फरेस का बायकाट करो' निकाला, जिसमे साथी कोबा ने कहा था :

"कान्फरेस मे शामिल होने या बायकाट करने का प्रश्न, हमारे लिए कोई सिद्धान्त का प्रश्न नही है, बल्कि यह व्यावहारिक उपयोगिता की बात है। हम एक ही बार, सदा के लिए सभी कान्फरेसो के बायकाट का निश्चय नही कर सकते···और, न हम एक बार ही सदा के लिए कान्फरेस मे सम्मिलित

होने का निर्णय ही कर सकते है, जैसा कि कादेत-मनोभाव रखनेवाले लोग कर लेते हैं। हमें सम्मिलित होने या बायकाट करने पर, यथार्थ घटनाओ और केवल घटनाओ की दृष्टि से ही विचार करना होगा।"

मार्क्सवाद का अत्यत शीघ्रता से दुनिया, उसकी चीजो और घटनाओ के क्षण-क्षण बदलते रहने का सिद्धान्त केवल दार्शनिक उडान भरने के लिए नही है, बल्कि हर क्षण सजग रहकर, घटनाओ के अनुसार व्यवहार के परिवर्तन के लिए नये रास्ते ढूँढ निकालने में उसकी मदद लेनी जरूरी है। लेनिन और स्तालिन हवाई विचारक नही थे। वह दार्शनिको और वदातियों की तरह, दुनिया की व्याख्या नही करते फिरे, बल्कि दुखो और अन्याचारो की मारी दुनिया को बदलने के लिए, उन्होने उसका इस्तेमाल किया। इसी पर आरूढ रहकर, स्तालिन ने अपने जीवन के अन्त तक भिन्न भिन्न क्षेत्रा मे सफलता पाई। प्रतिभा के माथ, क्रातिकारी दर्शन का व्यवहार मे ठीक से उपयाग कग्ना उनकी मफलता का गुर था।

मालिकों ने कमकरों पर हल्ला वोल दिया। उनके आक्रमणों को मेन्शेविक और अराजकतावादी ही अनदेखा कर सकते थे। बोल्शेविको ने सन् 1908 की जनवरी और फरवरी में कितनी ही हडतालो मे इसका मुँहतोड जवाब दिया, जिनमे से कई बहुत सफल रही। इनके कारण, बोल्शेविकों का प्रभाव और भी बढा। इससे पहले सन 1907 की शरद में, कान्फरेस मे सम्मिलित होने के लिए बोल्शेविकों ने निम्न शर्ते पेश की थी :

(1) अपनी माँगों पर वहस करने का अधिकार हो,

(2) अपनी भावी फोरमैन-परिषद् की मीटिंगे करने का अधिकार हो,

(3) अपनी मजदूर सभाओं की सेवाओ से लाभ उठाने का अधिकार हो,

(4) कान्फरेस की तारीख चुनने का अधिकार हो।

'समाजवादी क्रातिकारी', मेन्शेविक और 'दशनक' (अर्मनी राष्ट्रवादी) बोल्शेविको के प्रस्ताव का विरोध करते थे। मेन्शेविको ने तो यह भी कहा था कि बिना किसी गारटी या शर्त के कान्फरस म शामिल होना चाहिए। उनका नारा था—'चाहे जिस मूल्य पर भी—कान्फरेस !' । समाजवादी क्रातिकारियो और दशनको का मजदूरों से कोई आशा नही थी, इसलिए उन्होंने नारा लगाया—'चाहे जिस मूल्य पर भी—बायकाट !' । इसके लिए कमकरों में प्रचार और मत सग्रह किया गया, जिसका परिणाम निम्न प्रकार का हुआ : "पैंतीस हजार कमकरो के पास कनवैसिंग की गई, जिनमे से आठ हजार ने समाजवादी क्रातिकारियों और दशनको (बिना शर्त बायकाट) के पक्ष मे वोट दिया, आठ हजार ने मेन्शेविको (बिना शर्त कान्फरेस) का समर्थन किया, जब कि उन्नीस हजार कमकरों ने बोल्शेविको की माँग (गारटी के साथ कान्फरेस) का समर्थन किया।"

साथी कोबा के नेतृत्व मे, सन 1907 के अन्त में ये सब घटनाएँ बाकू मे उस वक्त घटित हो रही थी, जब राजनीतिक अवसाद से लाभ उठाकर, जारशाह कसाई स्तोलिपिन सारे देश मे आतक फैलाये हुए था और लोग सहमे-सहमे-से मालूम होते थे।

बाकू के कमकर और उनके नेता देशव्यापी क्रूर अत्याचारों से आँखें नही मूँद सकते थे। इसीलिए, 15 अप्रैल, 1908 के 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी' (बाकू सर्वहारा) में 'वर्तमान प्रतिगामिता और हमारा कर्तव्य' के नाम से एक लेख निकला जिसमे स्तोलिपिनीय अत्याचारो की काली छाया के सिर पर मँडराने से सजग करते हुए कहा गया कि मजूरो ने भारी विजय प्राप्त की है, लेकिन वह उसके फल को अपने हाथो मे नही रख सके। इसका कारण यही था कि किसान अपने सर्वहारा भाइयो की सहायता के लिए आगे नही बढ़े। जालिम सरकार ने इससे फायदा उठाकर, सर्वहारा के ऊपर आक्रमण कर दिया। पिछले अक्तूबर मे जो अधिकार मजूरों ने प्राप्त किए थे, उन्हे वह एक-एक करके छीन रही थी। छापे की स्वतत्रता और सगठन की स्वतत्रता को छीनती जा रही थी। साथी कोबा ने बतलाया कि यह स्थिति अधिक समय तक नही रह सकती। जागरूक शक्तियाँ जारशाही को मनमानी करने के लिए बहुत दिनो तक नही रह सकती। पुराने और नए रूस का निर्णायक संघर्ष अवश्य होके रहेगा। क्राति अनिवार्य है। इससे मालूम होगा कि बोल्शेविक सर्वहारा वर्ग के अतिम सघर्ष मे, किसानो के सहयोग की कितनी आवश्यकता समझते थे। 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी' ने इसीलिए गाँवो के सर्वहारो तथा अर्ध-सर्वहारो, गरीब किसानो मे भी आन्दोलन और सगठन करने पर जोर दिया।

कमकरो का यह रुख देखकर, कान्फरेंस को रोक दिया गया। इस पर, जुलाई सन् 1908 मे 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी' के पाँचवे अंक के परिशिष्ट के रूप में, कोबा के नाम से 'कान्फरेस और कमकर' लेख निकला। इस लेख मे कहा गया था : "मिस्टर जुनूकोव्स्की, तिफलिस का पुराना भाड घोषित कर रहा है कि तमाशा खतम हो गया। पूँजीपतियो का खुशामदी कुत्ता, मिस्टर करामुर्जा उस पर ताली पीट रहा है। पर्दा गिरता है और हम पुराना परिचित दृश्य देखते हैं—तेल-मालिक और कमकर नए सघर्ष के लिए, नए तूफान के लिए, अपनी पुरानी जगह पर खडे प्रतीक्षा कर रहे है।" लेख मे कान्फरेस के इतिहास का वर्णन करते हुए बतलाया गया, कि मालिक इसीलिए कान्फरेंस नही करना चाहते क्योकि वह जानते हैं कि मजूर उनकी बात नही मानेगे, बल्कि बोल्शेविको के कहने पर चलेगे।

हम देख चुके है कि सन् 1907 के बाद, कोबा और उसके बाल्शेविक साथी बाकू के कमकरो को कितना सगठित किए हुए थे और किस तरह पूँजीपतियो और जारशाही की एक भी नही चलने देते थे। जारशाही परेशान थी और वह साथी कोबा को पकडने के लिए बेकरार थी। साथी कोबा को जिस तरह अपने बाकू के काम मे वरोशिलोफ, ओर्योनिकिद्जे जैसे बोल्शेविक क्रातिकारियो का सहयोग मिला था, उसी तरह खानलार, महमदंफ, अजीजबेक्रोफ, क्याजीमामेत और दूसरे वर्गचेतन कमकरो का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त था। इसी कारण, बाकू बोल्शेविको का गढ बन गया। अपने इस जीवन पर दृष्टिपात करते हुए, स्तालिन ने बाद मे कहा था :

> "तेल-उद्योग के कमकरो मे तीन वर्ष के क्रान्तिकारी काम ने मुझे व्यावहारिक योद्धा, व्यावहारिक स्थानीय नेता के रूप मे फौलादी (दृढ) बना दिया। बाकू के वत्सैक, सरातो वेतसक और फयेलंतोफ जैसे आगे बढे हुए मजूरो तथा तेल-स्वामियो और कमकरो के बीच चलनेवाले कठोर सघर्ष के तूफान ने मुझे पहले-पहल सिखलाया कि मजूरो के एक भारी समूह के नेतृत्व करने का क्या मतलब होता है। यह बाकू ही था, जहाँ इस प्रकार मैने द्वितीय क्रातिकारी अग्नि-अभिषेक प्राप्त किया।"

4 द्वितीय गिरफ्तारी (सन् 1908)

अन्त मे, 25 मार्च, 1908 को पुलिस साथी कोबा को गिरफ्तार करने में सफल हुई। वह उन्हे बेलोफ जेल ले गई। वहाँ भी बोल्शेविक कोबा विश्राम करने नही गए थे। उन्होने बाहर के साथियो से सम्बन्ध स्थापित किया। उनके लेख बराबर जेल से बाहर जाकर, कमकरो के पत्रो मे छपते रहे। 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी' के द्वितीय अक की प्रायः सारी लेख-सामग्री उन्होने जेल से तैयार करके भेजी थी। राजनीतिक बदी इस तरुण बोल्शेविक का बडा सम्मान करते थे। उन्होने वहाँ पर भी समाजवादी क्रातिकारियो और मनशेविको के साथ क्रातिकारी सघर्ष के सिद्धात और व्यवहार पर कई शास्त्रार्थ किए। स्तोलिपिन काल-रात्रि की काली छाया जेलो पर भी पूरी तरह पड रही थी। जेल के अधिकारी राजबदियो के साथ और भी कठोरता का व्यवहार करते थे। जेल मे कोबा की कलम ही नही चल रही थी, न वह केवल बहस-मुबाहिसो मे ही भाग लेते थे, बल्कि वहाँ भी वह जारशाही के साथ सघर्ष कर रहे थे। जेल के अधिकारियो ने राजनीतिक बन्दियो को पाठ पढाने का निश्चय कर लिया था। उन्होने दबाने के लिए 'साल्यान्स्क' पलटन बुलाई गई। दो पाँति मे सैनिक खडे कर दिए गये और, राजनीतिक बदियो को उनके बीच से जाने के लिए मजबूर किया गया। बीच से गुजरते समय सैनिक बदूको के कुदो से उनको खूब पीटते थे। कोबा कुदो की वर्षा के बीच से सिर को सीधा किए हुए निकले। उनके सिर पर मार्क्स की पोथी थी। मार्क्स की पोथी के साथ सिर का सीधा रखना भी कोबा की दृढता और मार्क्सवाद की अतिम विजय पर उनके विश्वास को प्रकट कर रहा था।

आठ महीने जेल मे रखने के बाद, मुकदमे का फैसला हुआ और कोबा को सोल्वीचेगोद्स्क (वोलोग्दा) मे दो वर्ष निर्वासन का दड मिला। लेकिन, तरुण गुर्जी बोल्शेविक कोबा अपनी सारी मियाद पूरी करने के लिए कब तैयार थे। उन्हे चुपचाप निर्वासित जीवन बिताने के लिए फुर्सत कहाँ थी ? 24 जून, 1909 को वह सोल्वीचेगोद्स्क से गायब हो, बाकू पहुँच गए। अपने निर्भीक और निःस्वार्थ नेता को छिपाने के लिए, बाकू

के सारे कमकर तैयार थे। नरमदली मेन्शेविक और दूसरे भी जारशाही के अत्याचार से परास्त हो, अपना सब काम छोड़कर मुँह छिपाते थे और लेनिन का कडा विरोध कर रहे थे। इसी समय, लेनिन के समर्थन में ओगनेस तोतोम्यान्स ने 'काकेशस के पत्र' के नाम से कई महत्त्वपूर्ण पत्र बोल्शेविक पार्टी के केन्द्रीय पत्रों में, साथ ही कई लेख 'बाकिन्स्की प्रोलेतारी' मे भी लिखे। लौटकर, ओगनेस के नाम से कोबा ने फिर गुप्त छापाखाने को संगठित किया। छापाखना उनका तोपखाना था। यद्यपि इस समय तक जारशाही के अत्याचारों के कारण शिथिलता आ गई थी, लेकिन ओगनेस ने बाकू कमिटी को फिर कर्मशील बनाया, फिर प्रचारकों की टुकड़ियाँ तैयार हुईं। इसी टुकडी मे ओगनेस भी सम्मिलित थे। वह बाकू से बाहर भी जाते रहते थे। बाकू के तेल-मजूरो के अतिरिक्त रेलवे मजदूरो, चेरनीगोरद और वेलीगोरद के कमकरों में ही नही, बल्कि जहाजी मजदूरों मे भी उन्होंने काम शुरू कर दिया।–बाकू कास्पियन समुद्र के किनारे एक महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह है, जहाँ काम करनेवाले मल्लाहों और दूसरे कमकरो को ओगनेस कैसे छोड सकते थे ? ओगनेस, कोबा या सोसो ने जिस क्षेत्र में भी कदम रखा, उसी में अपना कमाल दिखाया।

ओगनेस के कामों ने फिर जागृति पैदा कर दी। जनवरी सन् 1910 मे, फिर जागृति के लक्षण दिखलाई पडने लगे। इसी समय, 'तिफलिसिकी प्रोलेतारी' पत्र के प्रथम अक मे ओगनेस ने 'हम नये सघर्ष के आरंभ मे हैं' आदि लेख लिखे। ओगनेस बुद्धिजीवियों के मुरझाये चेहरो से भविष्य की परख नही किया करते थे, इसके लिए वह कमकरों और साधारण जनता को, उनकी दिन पर दिन खराब होती भौतिक-आर्थिक परिस्थिति का, जो उग्र होकर सर्वहारो को कभी चुप नही रहने दे सकती थी–देखते थे। ओगनेस के 'काकेशस के पत्र', केन्द्रीय पत्र 'सोतिसियल देमोक्रात' (समाजवादी जनतत्री) के 26 फरवरी, 1910 के अक तथा 'बहस का पर्चा' के 24 जून, 1910 के अक मे निकले; जिनमे काकेशस मे क्या हो रहा है, इसका सजीव वर्णन किया गया था। इनमे मेन्शेविकों और दूसरे अवसरवादियों का भी पर्दाफाश किया गया था, जिसके कारण वह बहुत चिढ गए थे। इस समय, पत्र-व्यवहार द्वारा ओगनेस का लेनिन के साथ बराबर सम्बन्ध था।

5. तृतीय गिरफ्तारी (सन् 1910)

इस बार बाहर आकर, उन्हे बहुत समय तक काम करने का मौका नही मिला। आठ महीने के बाद बाकू मे ही, 23 मार्च, 1910 को ओगनेस को फिर गिरफ्तार कर लिया गया। 23 सितम्बर, 1910 तक जेल मे रखकर उन्हें फिर सोलविचेगोद्स्क मे निर्वासित कर दिया गया, जहाँ 6 जुलाई, 1911 तक रहना पडा।

इस निर्वासित जीवन को ओगनेस जिस घर मे बिता रहे थे, वहाँ दूसरे राजनीतिक निर्वासित बराबर आया करते थे। पुलिस ने रिपोर्ट दी थी कि यहाँ बराबर क्रातिकारी प्रचार और व्याख्यान होते रहते है। पुलिस की आँख बचाकर यहाँ से भी ओगनेस लेनिन के पास पत्र लिखते रहे, जिसमे प्लेखानोफ के समर्थको के रवैये का खडन करते हुए, वह त्रोत्स्की के सिद्धातहीन गुट पर भी छीटे कसते थे। इसी समय, उन्होने राय दी कि एक कानूनी समाचार-पत्र निकालने की बडी आवश्यकता है। थोडे ही दिनो बाद, 'ज्येज्दा' (तारा) के नाम से ऐसा पत्र निकलने भी लगा। उन्होंने रूस मे प्रमुख सदस्यो की एक केन्द्रीय समिति तथा उसके ब्यूरो के स्थापित करने के लिए कहा, जिसमे देश म पार्टी का काम ठीक से सचालित किया जा सके। अपने बारे में लिखते हुए, उन्होंने कहा था : "अभी मुझे छः महीने और बिताने है। इस मियाद के खतम होते ही, मैं आपकी सेवा के लिए बिलकुल तैयार हूँ। अगर लोगो ने बहुत जरूरत समझी, तो मैं तुरन्त केचुल छोड सकता हूँ।"–स्तालिन केचुल छोडने मे कितने उस्ताद थे, हम यह देख चुके है।

जून, सन् 1911 मे बोल्शेविक केन्द्रीय समिति की जो कान्फरेस हुई थी, उसमे स्तालिन को अखिल रूसी कान्फरेस के बुलाने के लिए बनाई गई सगठन-कमिटी का सदस्य चुना गया था।

यह हम बतला चुके है कि योरदानिया जैसे तरुण एक समय मार्क्सवाद के वाहक रह चुके थे। उनके द्वारा काकेशस मे नए विचारो का काफी प्रचार हुआ था। लेकिन, बाद मे वह फिसल गए। योरदानिया जैसे आदमियो की किसी देश मे भी कमी नही है। हमारे देश मे भी ऐसे चेहरे दिखाई पडते हैं, जो समाजवाद के

नाम की रटन इसीलिए लगाया करते हैं कि देश में समाजवाद न आने पाये, जिसमे पूँजीवादी जोकें अपने काम को निर्द्वन्द्वतापूर्वक करती रहे। यदि कुछ पूँजीपति इन योरदानियो को हाथो पर उठाये फिरे, उनके पत्र उनकी तारीफ करते न थके, तो आश्चर्य की क्या बात है ! पजाबी कहावत के अनुमार, वह जानते ही हैं कि यह 'साइडा बन्दा' है। एक बडा गुर्जी पूँजीपति द. सर्जिशविली मर गया। उसको दफन करने के दिन 26 जून, 1911 को मेन्शेविक नेता उसके गुणो का बखान करते नही अघाते थे। गुर्जी मेन्शेविकों के जयप्रकाश–योरदानिया ने इस यूरोपीय कारखाने के शिक्षित मालिक के भव्य संस्मरण मे एक लेख लिखा था :

"हाल ही मे, निष्ठुर मृत्यु ने हमे दुर्लभ गुर्जी–द. ज सरजिशविली से वचित कर दिया।·· स्वर्गीय पुरुष एक उद्योगपति के नाम से विख्यात था, लेकिन यह बहुत कम लोग जानते है कि यूरोपीय ढंग का वह प्रथम उद्योगपति था। उसने एक बार मुझसे कहा था : 'हमारे देश में भौतिक तौर पर अपने पैरो पर खड़ा होना, आर्थिक सफलता प्राप्त करना मुश्किल है, जैसे ही कोई आदमी कुछ जखीरा जमा कर पाता है, वैसे ही सैकडो भूखे नग उसके पीछे पड जाते हैं और तब तक चैन नही लेने देते, जब तक कि उसका सफाया नही कर देते।' ऐसी स्थिति में भूखों की पलटन से अपने को बचाये रख, अपनी सम्पत्ति का ठीक तौर से इस्तमाल वही कर सकता है, जिसमें दुर्लभ प्रतिभा और बड़ी व्यावहारिक बुद्धि हो। अगर स्वर्गीय दाविद सच्चा गुर्जी उद्योगपति होता, तो गुर्जी तरीके से वह कभी का अपने को खतम कर चुका होता और उसकी सम्पत्ति का कुछ भी बाकी न रहता। एक यूरोपियन ही इस तरह की व्यवस्था कर सकता है, जिससे वह हर एक को सतुष्ट भी रखे, और साथ ही अपने धन को बरबाद न करे।··एक बार हम ठडी सडक पर एक दूसरे के सामने से गुजर रहे थे। उसने मुझे दूर से पुकारकर कहा : 'देखो तो तुम्हारा बर्न्स्टाइन (एक अवसरवादी समाजवादी) क्या लिख रहा है ? घर चलो और इसे लेकर पढ़ो'–पुस्तक अभी-अभी जर्मनी मे प्रकाशित हुई थी और तिफलिस मे नही मिल सकती थी। दूसरे दिन, मैंने दाविद के पास जाकर उस पुस्तक को लिया। 'इसके बारे में तुम्हारी क्या राय है ?'–मैंने उससे पूछा।–'मेरी क्या राय है ? जर्मनी से यह भयकर बम है। सारी किताब मे, मै एक स्थन को पसन्द करता हूँ, जिसमें वह कहता है कि आन्दोलन सब कुछ है, अन्तिम लक्ष्य कुछ भी नही है।'

" एक बार मेंने स्वर्गीय पुरुष को उसके आफिस मे बहुत ही चिंतित देखा। वह निराशावादी नही था। मैंने पूछा–'क्या बात है ?' –उसने कहना शुरू किया : 'हमारा कोई भविष्य नही है। तुम दावा करते हो, और कहते हो कि निम्न मध्य वर्ग बड़े मध्य वर्ग को पैदा करेगा, लेकिन मै उसे नही देख पा रहा हूँ। ऐसा होने के लिए भी, हम नागरिक भावों और सस्कृति की आवश्यकता है, किन्तु हम मामूली योकेल हैं। स्वर्गीय दाविद चकाचौंध में पड़े बच्चे की तरह, क्राति में बह नही गया था, लेकिन साथ ही वह प्रतिगामिता का दास भी नही बना था। आज हम इस अद्वितीय पुरुष को कब्र मे रख रहे है। वह उसी खुले दिल और दिमाग के साथ मरा, जिस तरह कि जीता रहा। विदा प्रिय दाविद ! तुम्हारी महान स्मृति सदा हमारे साथ रहेगी। "

यह एक समाजवादी द्वारा गुर्जी के एक बड़े सेठ की स्तुति थी, एक करुणापूर्ण मर्सिया था। सेठ सर्जिशविली के पास तिफलिस, किजलयर, एरिवान (अर्मनी), कलाराश (बेसराबिया) और ग्योकचे मे शराब के अच्छे अच्छे कारखाने थे, जहाँ अगूरी तथा दूसरी मदिराएं बनती थी। जारशाही सरकार ने अपने परम भक्त सेठ को 1 जनवरी, 1902 को 'व्यापार कॉन्सलर' की उपाधि दी थी, जो हमारे यहाँ के 'सर' के आसपास की थी; क्योकि वह देश के उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में उपयोगी काम कर रहा था। यह कोई आश्चर्य नही था कि योरदानिया बोल्शेविक क्राति के बाद भी, पश्चिमी साम्राज्यवादियों का परम विश्वासपात्र बना रहा और जब गुर्जी में मेनूशेविको की सरकार नहीं टिक सकी, तो उसे बड़े सम्मान के साथ उन्होंने अपने यहाँ बुलाकर रखा।

पार्टी की कान्फरेस प्राग मे होने जा रही थी। ऐसे समय मे, स्तालिन बलोगदा मे रहना कैसे पसन्द करते ! उन्होने 6 सितम्बर, 1911 को चुपचाप वहाँ से निकलकर, रूस की राजधानी पुतरबुर्ग का रास्ता लिया और वहाँ पहुँचकर, वह पार्टी के संगठन को मजबूत करने के काम मे लग गये। अब काकेशस नही, रूस की

राजधानी में उनका काम करना यही बतलाता है कि स्तालिन प्रादेशिक नेता न रहकर, सारे देश के नेताओं में से थे, और उसी के अनुरूप उन्हे अपनी प्रतिभा और अनुभव का प्रयोग करना था। इसी समय से, स्तालिन के जीवन का पीतरबुर्ग वाला अध्याय शुरू हुआ। लेकिन, जान पड़ता है पीतरबुर्ग मे अभी उनके लिए काकेशस जैसे सुरक्षित स्थान तैयार नही हो पाये थे। साथ ही, वह मेन्शेविकों की अकर्मण्यता फैलानेवाली नीति के जबर्दस्त आलोचक थे, जिसमे वह भी पुलिस की तरह ही, उनके पीछे पडे हुए थे।

6. चतुर्थ गिरफ्तारी (सन् 1911)

9 सितम्बर, 1911 को पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार कर, फिर बलोगदा भेज दिया, लेकिन फरवरी सन् 1912 में स्तालिन ने फिर केचुल छाड दी।

पुलिस स्तालिन के बारे में कैसे विचार रखती थी, इसके कुछ उदाहरण उसके रेकार्डो से लीजिए :

क. "30 सितम्बर की पुलिस-विभाग की मॉग के अनुसार, काकेशीय जिला-खुफिया पुलिस-विभाग के अध्यक्ष की सूचना के अनुसार, साइबेरिया से भागनेवाला सोसो वही है, जो कोबा के नाम से सगठन कर रहा है, और ओगनेम वर्तानोफ, तोतोम्यन्तस भी उसी का नाम है। वह तिफलिस नगर का निवासी है, जिसके नाम मे इस साल 12 मई को तिफलिस पुलिस सुपरिटेडेंट द्वारा एक साल के लिए दिया गया 982 नम्बर का पासपोर्ट उसके पास है।" तोतोम्यन्तस, कोबा तथा भलोच्नी नाम का आदमी रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजूर पार्टी के बाकू-सगठन का मुखिया है, बीबी ऐबत जिले के दो दूसरे सदस्य भी उसी सगठन से सम्बन्धित है। उन पर गुप्त रूप से लगातार, और कभी-कभी खुले तौर से भी, निगाह रखी जाती है। सगठन तोडने के लिए जो कदम उठाया जाये, उसमे यह भी आयेगे।"

ख. "जुगशविली रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजूर पार्टी की बाकू कमेटी का एक मेम्बर है। उसे पार्टी सगठन मे कोबा के नाम से पुकारा जाता है। शासकीय दडो के होते हुए भी, वह अपने कामो मे बडी दृढता से लगा हुआ है और क्रातिकारी सगठनो मे सदा उसका प्रमुख स्थान रहा है। वह अपने निर्वासन-स्थान से दो बार भाग चुका है और उसे राज्य की ओर से जो दड दिए गए थे, उनमे से उसने एक को भी पूरा नही किया। इसलिए, मै और कडा दण्ड देने की सिफारिश करूँगा। उसे पाँच वर्ष के लिए साइबेरिया के सबसे दूर वाले जिले मे निर्वासित कर देना चाहिए।—24 मार्च, 1910 कप्तान गलिम्तोव्स्की।"

ग. "24 मार्च, 1910 को कप्तान मर्तिनोफ रिपोर्ट देता है कि रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजदूर पार्टी की बाकू कमिटी के सगठन मे कोबा के नाम से ज्ञात तथा पार्टी का अत्यन्त कर्मठ नेता गिरफ्तार कर लिया गया।"

घ. "17 मई 1912 को काकेशीय जिला खुफिया पुलिस-विभाग ने पीतरबुर्ग के पुलिस विभाग के डाइरेक्टर को लिखा था 'सोसो बिसारियोनोविच जुगशविली नाम के, तिफलिस प्रदेश के दीदीलियो गॉव के एक किसान का नकली नाम हे, जिसे पार्टी मे कोबा कहा जाता है, सन् 1902 से ही, एक समाजवादी जनतात्रिक कर्मठ कार्यकर्ता के नाम से प्रसिद्ध है। सन् 1902 मे, तिफलिस के रू स. ज. म. पार्टी के गुप्त चक्र के मुकदमे मे अभियुक्त के तौर पर पूछताछ के लिए, उसे तिफलिस प्रदेश के पुलिस विभाग के सामने लाया गया। इस अपराध मे उसे पुलिस की खुली निगरानी मे तीन वर्ष के लिए पूर्वी साइबेरिया मे निर्वासित कर दिया गया जहाँ से वह भाग निकला। पुलिस-विभाग ने उसकी गिरफ्तारी के लिए विज्ञापन निकाला। बाद मे, जुगशविली भिन्न-भिन्न समयो मे बातूम, तिफलिस और बाकू के समाजवादी जनतात्रिक सगठनो का नेता होकर, काम करता रहा। कई बार उसकी तलाशी और गिरफ्तारी हुई, लेकिन वह हवालात से निकलकर निर्वासन से बचता-छिपता फिरा। इस समय, पुलिस-विभाग के 15 अप्रैल, 1922 के सर्कुलर के अनुसार, गिरफ्तारी के लिए उसकी माँग है। 6 तारीख को जिले के अफसर ने जो सूचना दी है, उससे पता लगता है कि जुगशविली हाल ही मे तिफलिस नगर मे था। इसी समय, बाकू के गुप्त

खुफिया-विभाग के मुखिया ने गुप्त रूप से सूचना दी है कि कोबा रूसी केन्द्रीय समिति में नियुक्त किया गया है··· और, 30 मार्च को पीतरबुर्ग के लिए रवाना हो गया है। इसके बारे मे लेफ्टिनेट कर्नल मर्तिनोफ ने 6 अप्रैल को तत्रभवान् राज्यपाल तथा पीतरबुर्ग-खुफिया पुलिस-विभाग के मुखिया को भी उसी दिन सूचित किया।"

जारशाही पुलिस की इन रिपोर्टो से भी स्तालिन का एक विशेष रूप प्रकट होता है।

जनवरी, सन् 1912 में बोल्शेविक पार्टी की एक बडी कान्फरेंस प्राग मे होनेवाली थी। स्तालिन उसके महत्त्व को अच्छी तरह समझते थे। मेन्शेविको और दूसरे अवसरवादियो से सम्बन्ध रखने से अब कोई फायदा नही था। पीछे स्तालिन ने अपने एक व्याख्यान मे इस काग्रेस के बारे मे कहा था :

"सबको पता है कि यह कान्फरेस हमारी पार्टी के इतिहास मे भारी महत्त्व रखती है, क्योकि इसी ने बोल्शेविको और मेन्शेविको के बीच सीमा-रेखा खीची, और सारे देश के बोलशेविक सगठनो को एक सयुक्त बोल्शेविक पार्टी के रूप मे परिणत कर दिया था।"

लेनिन को यह देखकर बडी प्रसन्नता हुई कि पार्टी से मेन्शेविक निकाल दिए गए। उन्होंने गोर्की को लिखा था :

"आखिर दिवालियों, कमीनो की सारी कोशिशो पर भी हमे पार्टी और उसकी केन्द्रीय समिति को फिर से मजबूत करने मे सफलता मिली। मुझे आशा है कि तुम इस पर हमारी ही तरह प्रसन्न होगे।"

इस कान्फरेंस मे स्तालिन उपस्थित नही हो सके, लेकिन तब भी उन्हे पार्टी के रूसी ब्यूरो का सदस्य बनाया गया। केन्द्रीय कमेटी मे निर्वाचित हो जाने के बाद, अब निर्वासित की स्थिति मे और रहना उनके लिए ठीक नही था, और स्तालिन को तुरन्त 'केचुल छोड़ने' की आवश्यकता थी। वह सेर्गो ओर्योनिछीदूज के साथ बलोगदा से 26 फरवरी, 1912 को भाग निकले। कितने ही जिलों मे पार्टी सगठन को मजबूत करते हुए, अन्त मे वह पीतरबुर्ग मे उसी समय लौटे जब कि साइबेरिया की लेना सुवर्ण-खान मे जारशाही ने मजदूरों के साथ खून की होली खेली थी। 'ज्वेज्दा' ने इसी समय लेना-काड पर स्तालिन का एक लेख छापा था, जिसकी कुछ पंक्तियाँ थी :

"लेना-हत्याकाड ने अकर्मण्यता की बर्फ को तोड दिया और जन-आन्दोलन की भागीरथी बह निकली; बर्फ टूट गई। वर्तमान शासन के सारे पाप, दुराचार तथा चिरकाल से उत्पीडित रूस के सारे दुर्भाग्य जिस एक बात पर केन्द्रित हो गए है, वह है लेना-काड। इसीलिए यह लेना-गोलीकाड ही था, जिसने हडतालों और प्रदर्शनो के एक सकेत का काम किया।"

7. पाँचवी गिरफ्तारी (अप्रैल सन् 1912)

स्तालिन और लेनिन काफी समय से पार्टी के एक केन्द्रीय मुख-पत्र की बडी आवश्यकता अनुभव कर रहे थे। बोल्शेविक देपुती जहाँ दूमा को अपने विचारो के प्रचार के लिए एक भाषण-मच के तौर पर इस्तेमाल कर रहे थे, वहाँ एक ऐसे शक्तिशाली दैनिक पत्र की भी आवश्यकता थी। यह काम 'ज्वेज्दा' नही कर सकता था। स्तालिन ने अब केंचुल बदलकर, ऐसे पत्र के निकालने की तैयारी मे अपनी पूरी शक्ति का उपयोग किया। 22 अप्रैल, 1912 को 'प्राव्दा' (सत्य) का प्रथम अक निकला। लेकिन, उसी दिन किसी भेदिये ने पुलिस को खबर कर दी और फिर जारशाही स्तालिन को गिरफ्तार करने मे सफल हो गई। 'प्राव्दा' का प्रकाशन क्रातिकारी आन्दोलन के नए उत्थान के साथ-साथ हुआ। पुराने पचाग के अनुसार यद्यपि प्रकाशन का दिन 22 अप्रैल था, लेकिन जब क्राति के बाद, दुनिया के और भागो मे प्रचलित पचाग को सोवियत सरकार ने स्वीकार कर लिया, तो 'प्राव्दा' का प्रकाशन-दिवस 5 मई हो गया। आज भी, 5 मई को कमकर-प्रेस-दिवस के नाम से उसे मनाया जाता है। साथी स्तालिन ने 'प्राव्दा' की दसवी वर्षगाँठ के समय लिखा था : "सन् 1912 मे 'प्राव्दा' का निकालना, सन् 1917 मे बोल्शेविक विजय की आधारशिला का रखना था।"

अबकी बार उन्हे गिरफ्तार कर, जारशाही ने कई महीनो तक जेल मे बन्द रखकर तीन वर्ष के लिए

एक बहुत दूर के स्थान नरिम में निर्वासित कर दिया। नरिम पश्चिमी साइबेरिया मे बहुत ठंडे स्थान पर अवस्थित था। लेकिन ठंडा हो या गरम, स्तालिन को इतनी फुर्सत कहाँ थी कि वहाँ पड़े रहते। लेना-गोलीकाड ने बर्फ तोड दी थी, क्रांति-धारा बह निकली थी, और उस धारा को गम्भीर और शक्तिशाली बनाने में इस गुर्जी तरुण को योग देना था। इसीलिए, 2 जुलाई, 1912 को तीन वर्ष का निर्वासन-दड पाकर भी वह नरिम मे दो ही महीने रहे। 1 सितम्बर, 1912 को नरिम से लुप्त हो वह फिर अपने कार्यक्षेत्र मे पहुँच गए। लेनिन विदेश में थे, पर मानो बेतार के सम्बन्ध द्वारा वह रूस के भीतर होनेवाली हर एक घटना को जानते हुए वहाँ की क्राति की धारा का सचालन कर रहे थे, स्तालिन को लेनिन की ओर से रूस के भीतर रहकर काम करना था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, और इसे ठकुरसुहाती कहना सिर्फ अपने को धोखा देना है कि स्तालिन का लेनिन से कभी भी मतभेद नही हुआ। वस्तुतः मतभेद वहाँ होता है, जहाँ पुस्तकी ज्ञान और केवल दिमागी कसरत काम करती है, लेकिन जहाँ घटना और वास्तविकता की व्यावहारिक कसौटी पर कसकर एक-एक कदम आगे रखना हो, वहाँ मतभेद उसी तरह आवश्यक नही होते, जैसे कि सच्चे वैज्ञानिक आविष्कारो मे। एक प्रयागशाला मे एक वैज्ञानिक जो कोई नई खोज करता है, उसी को जब दूसरे वैज्ञानिक अपनी-अपनी प्रयोगशालाओ मे भी पाते हैं, तभी तो उसे वैज्ञानिक सत्य कहा जाता है। मार्क्स, एंगल्स, लेनिन और स्तालिन ने साम्यवादी विचारधारा और क्रातिकारी सिद्धातो को कोरे दिमाग से नही निकाला था, बल्कि यथार्थ की कसौटी पर कसा जाकर ही, उनका वाद वैज्ञानिक सत्य बना।

ध्रुवकक्षीय रेखा के बहुत भीतर सुदूर साइबेरिया के वादाइबो (लेना) स्थान मे जारशाही ने गोलियाँ चलाई, जिसने सारे रूस को हिला दिया। इसके विरोध मे देश मे हडतालों की बाढ आ गई। पीतरबुर्ग के सर्वहारा अपने क्षोभ-प्रदर्शन के लिए सडको पर निकल आये। 'ज्वेज्दा' ने इस समय की स्थिति के बारे मे लिखा था : "हम सजीव है, अटूट शक्ति भरी आग हमारे लाल खून को खौला रही है।"

ऐसी परिस्थिति मे, स्तालिन का साइबेरिया से भागकर पीतरबुर्ग पहुँचना बड़े काम की बात थी। बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के एक मेम्बर तथा केन्द्रीय मुख-पत्र 'प्राव्दा' के सम्पादक के तौर पर, अब वह बडी लगन के साथ काम करने लगे। इसी समय तीसरी राज्य दूमा का चुनाव होनेवाला था, जिसमे स्तालिन ने पीतरबुर्ग के कमकरों के सघर्षो का सचालन करते हुए पूरी तौर से भाग लिया। लेनिन इस समय रूस से बाहर क्राकोओ मे रहते थे, जहाँ उस समय बोल्शेविक पार्टी का केन्द्रीय कार्यालय था। वह गुप्त रीति से अपने सदेश और पथ-निर्देश भेजते रहते थे; और मौके पर स्तालिन के होने से निश्चिंत थे कि सब काम ठीक से होगा।

स्तालिन 'प्राव्दा' के लिए लेख लिखते थे और उसके चलाने मे उन्ही का सबसे बडा हाथ था। कुछ ही समय बाद, बोल्शेविक पत्रिका 'प्रोस्वेश्चेनिए' (उद्‌बोधन) निकली। प्रथम अक से ही स्तालिन उसमे हाथ बॅटाने लगे। सन् 1913 के उसके तीसरे, चौथे और पाँचवे अकों मे स्तालिन का एक महत्त्वपूर्ण लेख 'जातीय समस्या और समाजवादी जनतत्रता' के नाम से प्रकाशित हुआ, जो पीछे 'मार्क्सवाद और जातीय प्रश्न' के रूप मे अलग प्रकाशित हुआ। इसी पत्रिका मे स्तालिन ने यह भी बताया कि क्यो राजकीय दूमा का बायकाट नही करना चाहिए। पुलिस जिस तरह से इस 'खतरनाक क्रातिकारी' के पीछे हाथ धोकर पडी थी, उसमे कमकरो की भक्ति और दृढता ही ऐसी चीज थी, जिसने स्तालिन को पुलिस के हाथो मे पड़ने से बचाये रखा। अक्तूबर में, दूमा-निर्वाचन के सम्बन्ध मे निर्वाचक-प्रतिनिधियो की एक कान्फरेस हुई, जिसमे अपने कमकर देपुतियो के लिए पीतरबुर्ग के कमरो का 'आदेशपत्र' (मेंडेट) पास किया गया। आज भी मॉस्को के केन्द्रीय लेनिन म्यूजियम में लेनिन के हाथो के नोट के साथ, इस पत्र को देखा जा सकता है। आदेशपत्र को स्तालिन ने लिखा था, लेकिन लेनिन ने उसे इतना महत्त्वपूर्ण समझा कि उसके हाशिये पर नोट लिखा-'इसे अत्यन्त सावधानी से सुरक्षित रखो।' अभी बोल्शेविक क्राति के होने मे चार वर्षो की देर थी। आदेशपत्र मे मजदूरों और किसानों की शोचनीय स्थिति का वर्णन करते हुए बतलाया गया था

"क्राति की हराबल सेना मजदूर वर्ग है और किसान क्राति मे उसके सहायक हैं। जो सघर्ष हमारे सामने आनेवाला है, उसमे दोनो मोर्चो पर लड़ाई लड़नी होगी-सामन्तवादी नौकरशाही व्यवस्था से भी

और पुराणपंथी शासन की सहायता चाहनेवाले उदार पूँजीवाद से भी।··· हम चाहते हैं कि दूमा के मंच से समाजवादी जनतांत्रिक मंडली के सदस्यों की आवाज जोर से सुनाई दे, जो सर्वहारा के अन्तिम लक्ष्य की घोषणा करे, सन् 1905 की सारी माँगें पूर्ण करने की घोषणा करे, रूसी मजदूर वर्ग को जन आन्दोलन का नेता घोषित करे, किसानों को मजदूर वर्ग का अत्यन्त विश्वसनीय सहायक घोषित करे और उदार मध्यवर्ग को जन-स्वतंत्रता के विश्वासघाती के तौर पर घोषित करे।

" चतुर्थ दूमा में समाजवादी जनतांत्रिक गुट ऊपर के नारों के आधार पर अपने कामों में एकताबद्ध और घनिष्ठता से सम्बद्ध हो।

" विशाल जनता के साथ लगातार सम्बन्ध रखकर. शक्ति प्राप्त करे।

" वह रूस के मजदूर वर्ग के राजनीतिक संगठन के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ता चले। "

निस्सन्देह, आदेशपत्र ने भारी काम किया। निर्वाचन के परिणाम और आदेशपत्र के महत्त्व के बारे में 19 अक्तूबर, 1912 के 'प्राव्दा' में 'क. स्त.' के हस्ताक्षर से स्तालिन ने लिखा था : "आदेशपत्र देपुतियों के लिए हिदायत है। आदेशपत्र देपुती को बनाता है। आदेशपत्र के गुणों पर देपुतियों के गुण निर्भर करते हैं।"

15 नवम्बर, 1912 को चतुर्थ दूमा का उद्घाटन हुआ। राजधानी की बोल्शेविक कमिटी ने इस समय जारशाही और उसके पिट्ठुओं के बातें बनाने और उत्सव मनाने के मुकाबिले में, राजनीतिक प्रदर्शन संगठित किया। यह स्तालिन की सूझ का परिणाम था। पता लगने पर लेनिन ने लिखा : "प्रदर्शन के लिए बहुत ही अनुकूल समय चुना गया ! काली दूमा (पार्लामेण्ट) के उद्घाटन के मुकाबले मे राजधानी की सड़कों पर लाल झंडों के प्रदर्शन करके सर्वहारा की एक अद्भुत सूझ का परिचय दिया गया !"

इस समय (सन् 1912 में) स्तालिन का लेनिन के साथ पत्र-व्यवहार द्वारा लगातार सम्बन्ध था, लेकिन लेनिन उनसे मिलना चाहते थे। उन्होंने बाहर आने के लिए जोर दिया। स्तालिन जैसे क्रांतिकारी के लिए जारशाही पुलिस से बचकर विदेश जाना आसान काम नहीं था। लेकिन, खुफियों की पाँत को चीरकर नवम्बर सन् 1912 में वासिली (स्तालिन) ने क्राकाओं में जाकर, लेनिन से मुलाकात की। भावी कार्यक्रम के बारे में इतनी बातें और इतने निर्णय करने थे कि वह सभी पत्र-व्यवहार से नहीं हो सकते थे। सब काम कर लेने के बाद, जब दिसम्बर में स्तालिन रूस की ओर लौटने लगे, तो अपने अद्भुत शिष्य के जीवन को हर वक्त खतरे में देखकर लेनिन ने कोशिश की कि वह कुछ दिन और बाहर रहें। लेकिन वासिली को काम पुकार रहा था, उन्हें खतरे का भय कब रोक सकता था ! भय क्या है इसे उन्होंने कभी जाना ही नहीं। लेनिन ने दूमा के छः बोल्शेविक देपुतियों को भी लेकर आने के लिए 23 दिसम्बर, 1912 के पत्र में वासिली को लिखा था : "आओ··· हमें बड़ी चिन्ता हो रही है।" कुछ ही समय बाद, वासिली फिर क्राकाओ पहुँचे और रू. स. म. दल की केन्द्रीय कमेटी तथा पार्टी कार्यकर्ताओं की एक कान्फरेंस में भाग लिया। कान्फरेंस ने वासिली को रूस की केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरो का मेम्बर चुना। यद्यपि यह कान्फरेंस सन् 1912 में हुई थी, लेकिन इसे छिपाने के लिए फरवरी सन् 1913 की कान्फरेंस कहा गया।

जनवरी और फरवरी सन् 1913 में वासिली रूस से बाहर रहे। इसी समय, उन्होंने जातीय प्रश्न पर बहुत सामग्री जमा करके लेख लिखना शुरू किया। लेनिन ने उनके इस काम के बारे में, एक पत्र में गोर्की को लिखा था : "एक अद्भुत गुर्जी जो यहाँ बैठा एक 'प्रोस्वेश्चेनिए' के लिए लेख लिख रहा है, उसने आस्ट्रियन तथा दूसरी सभी सामग्रियों को इकट्ठा कर लिया है।"

इसी अध्ययन और परिश्रम का परिणाम था–स्तालिन की पुस्तक 'मार्क्सवाद और जातीय समस्या', जो सदा सामन्तवाद और पूँजीवाद के लिए भयंकर सिरदर्द रही है। पिछले हजारों वर्षों के अपने इतिहास में, वे कोई हल नहीं निकाल पाये। उसी असम्भव काम को अब मार्क्सवाद संभव करने जा रहा था। मार्क्सवाद ने दिशा-निर्देशन किया। स्तालिन ने अपनी प्रतिभा और उनके जातियों के सम्मिलन-स्थान काकेशस की अपनी मातृभूमि के लम्बे तजर्बे से समस्या की रग को पहचाना, और उसका हल निकाला। दुनिया में कहीं भी यदि जातीय समस्या का हल करना होगा, तो स्तालिन के बतलाये हुए रास्ते से ही करना पड़ेगा। साठ-साठ, सत्तर-सत्तर

जातियो का रूस क्यो एक ठोस पत्थर की चट्टान जैसा देश बन गया, जिससे टकराकर हिटलर और दूसरे साम्राज्यवादियो ने सिर्फ अपना सर भर फोडा ? इस हल का आधार था जातीय शोषण का अत, पिछडी हुई जातियो को आर्थिक, सास्कृतिक और राजनीतिक तौर से अपने बराबर लाकर खडा करना, और उन पर पूर्ण विश्वास करते हुए, उनके अलग होने तक के अधिकार को स्वीकार करना।

अपने इस ग्रथ को समाप्त करने के बाद, वासिली पीतरबुर्ग लौट आये। कितने ही दिनो तक लेनिन को जब उनका कुछ पता नही लगा, तो 8 मार्च, 1913 के अपने एक पत्र मे उन्होंने पूछा : "वासिली की क्यो कोई खबर नही मिल रही है ? उसे क्या हुआ है ? हमे बडी चिता हो रही है।" दो ही दिन बाद, फिर लेनिन ने लिखा "उसका बहुत ध्यान रखना। वह बहुत बीमार है।"

8 छठी गिरफ्तारी (फरवरी 1913)

मालीनोव्स्की पार्टी की केन्द्रीय समिति का सदस्य और दूमा मे बोल्शेविक देपुती था, जो पुलिस से मिल गया था। दूसरी पार्टियो के लिए यह उतनी आश्चर्य की बात नही थी, लोभ के कारण खुफिया पुलिस और विदेशी शक्तियो के हाथ मे खेलनेवाले पाये ही जाते है। लेकिन बोल्शेविक पार्टी उन पार्टियो की तरह नही थी। उसमे कडा अनुशासन था। तो भी, जारशाही मालीनोव्स्की को कुछ चॉदी के टुकडो पर विश्वासघाती बनाने मे सफल हुई। 'प्राव्दा' मे स्तालिन के अतिरिक्त, याकोफ (स्वेर्दलोफ) और मोता (मोलोतोफ) भी सम्पादन का काम करते थे। मालीनोव्स्की ने पहले भेद बतलाकर स्वेर्दलोफ को गिरफ्तार करवा दिया–यही स्वेर्दलोफ पीछे बोल्शेविक रूस का प्रथम राष्ट्रपति बना। मालीनोव्स्की ने थोडे ही दिनो बाद, उस गुप्त स्थान का भी पता बतला दिया जहॉ वासिली छिपकर काम करते थे। इस प्रकार 23 फरवरी, 1913 को पुलिस पीतरबुर्ग मे उन्हे गिरफ्तार करने मे सफल हुई। इस गिरफ्तारी के बारे मे बदूयेफ ने लिखा है :

> "पुलिस बडी व्यग्रता के साथ गिरफ्तारी के लिए प्रतीक्षा कर रही थी कि कब वह सडक पर आये। जल्दी ही उसे ऐसा मौका मिल गया। 'प्राव्दा' और दूसरे क्रातिकारी कामो की सहायता के लिए, क्लशनिकोफ-हाल मे एक सगीत मडली का अनुष्ठान किया गया था। ऐसी सगीत मडलियो मे बडी सख्या मे मजदूर और सहानुभूति रखनेवाले बुद्धिजीवी उपस्थित हुआ करते थे। उनमे गुप्त रीति से काम करनेवाले, पार्टी मेम्बर भी आते थे, क्योकि ऐसी भीड मे उन लोगो से मिलकर बातचीत की जा सकती थी, जिनके साथ खुले मे मिलना खतरे से खाली नही था। स्तालिन ने क्लशनिकोफ-हाल की सगीत मडली मे ऐसे ही काम के लिए आने का निश्चय कर लिया था, जिसका पता मालीनोव्स्की को था। उस विश्वासघाती ने पुलिस-विभाग को इसकी सूचना दे दी। हमारी ऑखो के सामने ही, उसी सॉझ को हाल के कमरे मे स्तालिन गिरफ्तार कर लिये गए।"

इस प्रकार, छठी बार पुलिस ने स्तालिन को गिरफ्तार कर चार साल के लिए साइबेरिया के सुदूर स्थान तुरुखान्स्क मे निर्वासित कर दिया। पहले उन्हे कोस्तिने की छोटी-सी बस्ती मे रखा गया। लेकिन, फिर डर लगा कि वह कही केचुल न बदल दे, इसलिए उन्हे वहॉ से हटा कर और उत्तर मे कूरेइका बस्ती मे रख दिया गया, जो कि ध्रुवकक्षीय रेखा के बिलकुल किनारे पर थी। इस समय पुलिस की कडाई बहुत अधिक थी। जारशाही और दूसरी साम्राज्यवादी शक्तियॉ प्रथम महायुद्ध की तैयारियॉ कर रही थी। इसके कारण, पुलिस ऐसा मौका नही देना चाहती थी कि स्तालिन फिर ऐसे मौके से लाभ उठाकर क्राति की आग भडकाने के लिए मुक्त हो जाये।

साथी स्तालिन 2 जुलाई, 1913 को निर्वासित हुए थे, और तब से 8 मार्च, 1917 तक उन्हे तुर्खन के इलाके मे ही निर्वासित बन्दी का जीवन बिताना पडा। लेकिन, ध्रुवकक्षा के इस सुदूर स्थान में रहते हुए भी, स्तालिन चुपचाप नही रह सकते थे। अगले ही साल सितम्बर सन् 1914 मे, प्रथम महायुद्ध घोषित हो गया और घमासान लडाई शुरू हो गई। *द्वितीय इन्टर्नेशनल (सुधारवादी समाजवादियो की अन्तर्राष्ट्रीय सस्था)* के धनी-धोरियो ने तुरन्त अपने देश के पूँजीवादियो का साथ देते हुए युद्ध का समर्थन किया, लेकिन लेनिन

साम्राज्यवादियों के बाजारों और उपनिवेशों की नोच-खसोट के लिए होनेवाली इस लड़ाई में शामिल होना, सर्वहारा वर्ग के साथ विश्वासघात समझते थे। उन्होने तुरन्त बिना कुछ आगा-पीछा सोचे, साम्राज्यवादी युद्ध के विरुद्ध सघर्ष करने की घोषणा की। अभी स्तालिन का लेनिन के साथ पत्र-व्यवहार द्वारा सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाया था, और न पार्टी केन्द्र से ही कोई सम्बन्ध था, लेकिन सच्ची मार्क्सवादी अतर्राष्ट्रीय दृष्टि होने के कारण कूरेइका में रहते हुए भी स्तालिन को अपना कर्तव्य वही सूझा, जिसे कि लेनिन ने दुनिया के सर्वहारा के सामने रखा था। उनका मार्क्सवाद का ज्ञान उथला होता, तो द्वितीय इन्टर्नेशनल वालो की तरह पथ-भ्रष्ट होने की सम्भावना होती।

कूरेइका में भी आखिर मनुष्य रहते ही थे और सभी बन्दी या निर्वासित नही थे। उनमे भी गरीबों और सर्वहारों की सख्या अधिक थी, जिनकी श्रद्धा और सहानुभूति स्तालिन को हमेशा मिला करती थी। उन्होने बाहरी दुनिया से फिर सम्बन्ध स्थापित कर लिया। लेनिन के साथ चिट्ठी-पत्री होने लगी। सन् 1915 मे मोनास्तिर्स्कोये गॉव मे बोल्शेविको की एक सभा मे उन्होने व्याख्यान दिया। गुप्तचर मालीनोव्स्की के अतिरिक्त, पॉच और बोल्शेविक देपुती चतुर्थ राज्य दूमा के सदस्य थे, जिन पर जारशाही ने राजद्रोह का मुकदमा चलाया था। कामेनेफ ने उस समय उनके साथ विश्वासघात किया, जिसकी स्तालिन ने इस मीटिंग मे बडी कड़ी आलोचना की थी।

बोल्शेविकों ने इसी समय 'वोप्रोसिस्त्रखोवानिया' (बीमा के प्रश्न) के नाम से एक पत्रिका निकाली, जो वैधानिक तौर से खुलेआम प्रकाशित होती थी। बोल्शेविक वैधानिक और अवैधानिक दोनो ही तरह के पत्रो का होना उसी तरह आवश्यक समझते थे, जिस तरह कि गुप्त क्रातिकारी सस्थाओ को रखते हुए वह साथ-साथ पार्लामेंट में भी अपने प्रतिनिधि भेजते थे। वह अपने कार्य और प्रचार के सुभीते के किसी भी साधन को हाथ से जाने देने के लिए तैयार नही थे। इस पत्रिका का उद्देश्य था : 'पेतरेस्सोफ, लेवेच्की और प्लेखानोफ जैसे 'भद्रपुरुषों के अन्तर्राष्ट्रीयतावादी सिद्धातों' के विरुद्ध विचारो को फैलाना, देश के मजदूर वर्ग के खिलाफ भ्रष्टाचारपूर्ण वक्तव्यो और अन्तर्राष्ट्रीयतावादी सिद्धातो के विरुद्ध कही जानेवाली बातो के खिलाफ देश के मजदूर वर्ग के विचार-सम्बन्धी बीमा को सुरक्षित रखने के लिए अपने सारे प्रयत्नों और शक्तियो को लगाना।

अपने सम्पादकों की गिरफ्तारी के बाद, फरवरी सन् 1915 में यह पत्रिका कुछ दिनों बन्द रहकर फिर से निकलने लगी। पत्रिका जहाँ अपने को कानूनी प्रहार से बचाते हुए बोल्शेविको की विचारधारा और कार्यनीति का प्रचार करती थी तथा विरोधियों का मुँहतोड जवाब देती थी, वहाँ इसके सम्पादकीय विभाग ने मोलोतोफ के नेतृत्व मे पार्टी के एक खुले केन्द्र का काम करना शुरू किया था। सरकारी सेसर पत्रिका की एक-एक लाइन को देखता, लेकिन जितने अश को वह काट देता था, उसे पत्रिका मे सादा ही छोड दिया जाता था। जब स्तालिन को इसका पहला अक मिला तो उन्होंने तुरन्त निर्वासितों से चन्दा करके छह रूबल पचासी कोपेक सम्पादक के पास भेजते हुए, तुरखान्स्क के बोल्शेविको की तरफ से एक पत्र लिखा था, जिस पर स्तालिन, अ. मस्लेन्निकोफ (जिसे पीछे कालचक ने गोली मरवा दी), स्पन्दर्यान बेरा, श्वाइजैर आदि के हस्ताक्षर थे। उसकी कुछ पक्तियाँ थी :

> "प्रिय साथियो, तुरखान्स्क के निर्वासितों की एक टुकडी 'वोप्रोसिस्त्रखोवानिया' के फिर से प्रकाशन का बडी प्रसन्नता के साथ स्वागत करती है। आज के समय में जब कि रूस मे कमकर समूह की सार्वजनिक राय को इस तरह जान-बूझ कर गलत समझाया जाता है, और जब कि अ. गुच्कोफ और प. रयाबुशिन्स्की की सक्रिय सहायता से सच्चे कमकर प्रतिनिधियों को सामने नही आने दिया जाता, इस तरह की एक सच्ची मजूर पत्रिका को देखना और पढना आनन्द की बात है।"

स्तालिन इसको बडा आवश्यक समझते थे कि मदान खाली देखकर मेन्शेविक अपने झूठे समाजवाद की आड में कमकरों को बहकाने में सफल न हो सकें।

स्तालिन का कूरेइका का जीवन किस तरह का था, यह एक दूसरी निर्वासिता वेरा श्वाइजेर के संस्मरणो से मालूम होता है। वेरा ने लिखा था*:

" *जाड़ों (सन् 1913) के दिनों में, पुलिस को जानने का मौका दिये बिना सूरेन स्पन्दयोन के साथ*

मैंने कूरेइका गाँव मे स्तालिन से मिलने के लिए यात्रा की। दूमा के बोल्शेविक सदस्यों पर उस समय मुकदमा चल रहा था और कई दूसरी भी पार्टी-सम्बन्धी बातें थीं, जिनके बारे में फैसला करने के लिए हमने स्तालिन से मिलना आवश्यक समझा था। जाडे के दिनों मे यहाँ कितने ही हफ्तों तक रात और दिन एक हो जाते थे, और हद दर्जे की जाड़े-पाले वाली रात में यह सफर करना था। हम विना पहियेवाली, कुत्ते की गाड़ी लेकर रास्ते में विना रुके, जमी हुई येनिसेइ नदी के नीचे की ओर चलते हुए मोनास्तिर्स्कोये और कूरेइका के बीच के दो सौ किलोमीटर की हिमाच्छादित निर्जन भूमि को ऐसे समय पार कर रहे थे, जबकि भेड़ियों की गुर्राहट बराबर हमारा पीछा कर रही थी।

" हम कूरेइका मे पहुँचे और उस झोंपडी को खोजने लगे, जिसमें साथी स्तालिन रहते थे। गाँव में पन्द्रह झोंपडे थे, जिनमे वह सबसे अधिक गरीबी का था—एक बाहरी कोठरी, एक रसोईघर, जिसमें अपने परिवार के साथ घर का मालिक रहता था।—इन दोनों के अतिरिक्त एक और कोठरी थी, जिसमें साथी स्तालिन थे। और बस !

" हमारे अप्रत्याशित आगमन से साथी स्तालिन बहुत प्रसन्न हुए और ध्रुवकक्षीय यात्रियो को आराम देने के लिए जो कुछ हो सकता था, वह उन्होंने किया। पहला काम जो उन्होंने किया, वह था येनिसेइ की ओर दौड़ जाना, जहाँ पर कि उन्होंने बर्फ में छेद करके मछलियो के लिए बंसी लगा रखी थी। कुछ ही मिनटों के बाद, अपने कन्धे पर एक विशाल मछली उठाए हुए वह लौट आये। उस 'सिद्धहस्त मछुए' की देख रेख मे, हमने बहुत जल्दी मछली काट-कूटकर तैयार की और उसके कुछ भाग को निकालकर शोरवा तैयार किया। जिस वक्त यह पाकशास्त्र का चमत्कार दिखलाया जा रहा था, उसी समय हम पार्टी के कामों के बारे म गम्भीरतापूर्वक वार्तालाप करते रहे। स्तालिन के कर्मठ दिमाग की गन्ध उस कोठरी के सारे वातावरण से आ रही थी। साथ ही, अपने चारों ओर की वास्तविकता से उस दिमाग को क्षण-भर के लिए भी अलग नहीं किया जा सकता था। उनकी मेज पर पुस्तकों और अखवारों के बडे-बड़े बडलों का ढेर लगा हुआ था। एक कोने मे मछुवे और शिकारी के सामान रखे थे, जिन्हे स्तालिन ने स्वय वनाया था। "

महायुद्ध के समय लेनिन और स्तालिन एक-दूसरे से हजारो मील दूर थे और दुनिया के एक छोर पर बसे, इस गाँव में अखवार मुश्किल से पहुँचते थे। डाक कभी-कभी दो-तीन महीनो की एक ही साथ आती थी। लेनिन के पास पत्रों के जाने मे इतना पेचीदा रास्ता और साधन इस्तेमाल करना पडता था कि स्तालिन के वहुत कम पत्र पहुँच पाते थे। सन् 1914 के अन्त में ही, स्तालिन को महायुद्ध के बारे में लेनिन के निवध के पहले मसौदे से परिचय प्राप्त करने का मौका मिल सका। वेरा ने अपने सस्मरण में लिखा है :

"हमारे निर्वासित जीवन मे यह वड़ा ही उत्तेजक क्षण था, जब कि लेनिन की हिदायते हमारे पास पहुँची। तुरखान्स्क के लिए निर्वासित होकर जाते समय कास्नायार्स्क मे, युद्ध पर लेनिन के निबंध का पहला मसौदा मुझे मिला। वह एक गुप्त पते पर पहुँचकर मेरे पास आया था, जिस पते पर कि नादेजदा कान्स्तन्तिनोवा (क्रुप्सकाया) लेनिन के पत्रों को भेजा करती थी। मैंने इन निबधो को साथी स्तालिन को दिया, जो उस समय सूरेन स्पन्दर्यान के साथ मोनास्तिर्स्कोये गाँव मे रहते थे। लेनिन के युद्ध पर लिखे सात निवधो ने हमे बतलाया कि साथी स्तालिन इस जटिल ऐतिहासिक स्थिति के मूल्यांकन में ठीक लेनिनीय निर्णय पर पहुँचे थे। साथी स्तालिन लेनिन के निबंधों को पढते समय जिस आनन्द, दृढ विश्वास और सफलता की भावना का अनुभव कर रहे थे, उसका वर्णन करना मुश्किल है।"

स्तालिन और स्पन्दर्यान ने उस समय जो पत्र लेनिन के पास भेजे थे, उनमे से एक अब भी सुरक्षित है। इस पत्र मे उन्होंने प्लेखानोफ, क्रोपोत्किन और फ्रेंच समाजवादी मत्री सर्वत को उनके रवैये पर बहुत फटकारा है। तुरुखान्स्क इलाके मे ही याकोब स्वेर्दलोफ को भी निर्वासित किया गया था और वहाँ के सभी बोल्शेविक निर्वासित बहुधा आपस मे मिला करते थे। यहाँ स्तालिन का जीवन अधिकतर पुस्तकों के अध्ययन तथा पार्टी

के कामों पर विचार-विनिमय करने आदि में ही बीतता था। इसके अतिरिक्त, जीविका को थोड़ा और बहुविध बनाने के लिए वह मछली मारने और शिकार करने भी जाया करते थे।

लड़ाई चलते दो साल से अधिक हो गए थे। सन् 1916 के दिसम्बर में, जारशाही ने अनिवार्य सैनिक सेवा का नियम सैनिक आयु के निर्वासितों पर भी लागू किया और उसके लिए स्तालिन को क्रास्नोयार्स्क भेज दिया गया। लेकिन, ऊपर के अधिकारियों को अपनी गलती तुरन्त मालूम हो गई कि ऐसे खतरनाक क्रांतिकारियो को सेना मे भेजना भारी मूढ़ता होगी। इसीलिए, उन्होने स्तालिन को सेना में न भेजकर अपने बाकी निर्वासन के समय को काटने के लिए अचिन्स्क में भेज दिया।

जब युद्ध घोषित हुआ उस समय लेनिन गलीसिया मे थे। पकड़े जाने के डर से, वह वहाँ से तटस्थ देश स्विट्जरलैंड में चले गए, जहाँ उन्होने 'सोत्सियल देमोक्रात' (समाजवादी जनतत्रों) के नाम से रूसी बोल्शेविक पार्टी का मुख-पत्र निकालना शुरू किया। इसी पत्र में लेनिन ने 'धारा के विरुद्ध' नाम से कई लेख लिखे, जिनमे युद्ध के बारे में अपने विचार रखे थे और हागे, कॉत्स्की, प्लेखानोफ जैसे युद्ध-समर्थक नामधारी समाजवादियो की खूब खबर ली थी। आस्ट्रिया और जर्मनी मे भी प्रथम विश्वयुद्ध के समय समाजवादी क्रांति के लिए वैसा ही अवसर मिला था, जैसा रूस में, लेकिन नकली समाजवादी क्राति लाने के लिए थोड़े ही हैं, उनका काम तो क्रांति के साथ विश्वासघात करके गाढ़े वक्त में पूँजीवाद के लिए ढाल बनना ही है। कगानोविच ने स्तालिन के बारे में कहा था :

> "वह पुराने बाल्शेविको में एक विशेष धातु के बने है। स्तालिन के सभी राजनीतिक कार्यकलापों मे एक अत्यन्त उल्लेखनीय तथा बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात जो पाई जाती है, वह यही है कि वह कभी लेनिन से दूर नही गए—न दक्षिण और न चरम वाम पथ की ओर।"

5

क्रांति और प्रतिक्रांति (सन् 1917-21)

1. फरवरी-क्रांति

सन 1917 मे क्राति का आरम्भ हुआ। औद्योगिक तौर से बहुत ही पिछड़े तथा जर्मन आक्रमणों के मुख्य लक्ष्य बने हुए रूस की हालत तीन वर्षो में ज्यादा लगातार लडते-लडते बहुत बुरी हो गई थी। युद्ध-क्षेत्र में हार पर हार हो रही थी। इस्तेमाल के लिए काफी हथियार न पाने और अपने नालायक अफसरो के कारण सैनिक दुर्गति में पड़े हुए थे। उनमे जारशाही के प्रति भारी असतोष पैदा होना स्वाभाविक था। दूसरी ओर, देश में चारो ओर अभाव ही अभाव दिखाई पडता था। जनवरी से ही, इसके विरोध मे हड़ताले होने लगी। 6 जनवरी, 1905 को जारशाही ने गोलियों की वर्षा करके इतवार के दिन खून की होली खेली थी। उसी की स्मृति में जनवरी के प्रथम हफ्ते में जबर्दस्त हड़ताले हुईं; जो कम होने की जगह बढ़ती और फैलती गईं। मजदूरों के प्रदर्शनों में अब सैनिक और नौसैनिक भी भाग लेने लगे। 27 फरवरी को जब जारशाही ने गोली चलाने का हुक्म दिया, तो सैनिकों ने मजदूरो पर गोली छोडने से इन्कार कर दिया और वह सरकार का साथ छोड़कर जनता की ओर जाने लगे। आखिर बन्दूकें ही तो शासको की रक्षा करती हैं। जब वही विरोधियों का साथ देने लगीं, तो जारशाही के भले दिनों की क्या आशा हो सकती थी ? जारशाही के हाथ से एक-एक करके रक्षा के सभी साधन निकलने लगे। फिर धोखेधड़ी से काम लेते हुए, जार और उसके पिट्ठुओं ने अपने को बचाने की कोशिश की, लेकिन अब तो चिड़ियाँ खेत चुग चुकी थी ! मजदूर जारशाही को उखाड़ फेंकने में सबसे आगे थे। वर्दीधारी किसान सैनिक तथा दूसरे शोषित-उत्पीड़ित उनका साथ देने के लिए तैयार थे। जार

[illegible] फरवरी में जार को इस्तीफा देकर, रोमनोफ [illegible] भागना पड़ा। सरकार की बागडोर पहले राजुल लवोफ और फिर वकील [illegible] ने सँभाली। नई सरकार भी समाजवादी क्रांति के लिए तैयार नहीं थी, लेकिन उसे जार की जगह पर बैठानेवाली तो साधारण मजूर-किसान जनता ही थी, इसलिए जारशाही की तरह, हर बात में वह मनमानी कैसे कर सकती थी ? मध्यमवर्गीय जनतांत्रिक क्रांति के होने का फल यह हुआ कि राजबन्दियों के लिए कैदखानों के दरवाजे खुल गये। राजनीतिक निर्वासित मुक्त हो गये। अब तक गुप्त रहकर काम करनेवाली बोल्शेविक पार्टी खुलेआम काम करने लगी। चारों तरफ अखबारों और भाषण की स्वतंत्रता की बाढ़ आ गई।

मध्यवर्ग ने शासन की बागडोर हाथ में सँभालते हुए निश्चय किया था कि पीतर के अनुवांशिक शासन को हटाकर, उसकी जगह जनतांत्रिकता का दम भरनेवाले मध्यमवर्ग की सरकार स्थापित कर दी जाय; और दूसरे पूँजीवादी देशों की तरह, रूस में भी उनके ही वर्ग के दो-तीन दल हों, जो मतदाताओं को बारी-बारी से बेवकूफ बनाकर, जनतत्रता के नाम पर जनता-विरोधी कामों के लिए शासन सँभालते रहें। सम्राट कैसर या जार की जगह एक प्रेसीडेंट और सिंहासन की जगह एक आरामकुर्सी रख दी जाय। राज-लांछनों को कहीं-कहीं इमारतों, वर्दियों और तमगों से मिटा देने, झंडे और डाकखाने के टिकटों में हलके से परिवर्तन करने; कुछ थोड़े से व्यक्तियों की अदला-बदली के सिवाय, वह उसी पुराने आर्थिक-सामाजिक ढाँचे को बनाये रखना चाहते थे। स्तालिन के शब्दों में :'

> "संक्षेप में मध्यवर्गीय क्रांति का मुख्य काम शक्ति को हथियाना और उसे विद्यमान मध्यवर्गीय आर्थिक व्यवस्था के अनुसार बनाना था; जबकि सर्वहारा क्रांति का मुख्य काम अधिकार हाथ में करने के बाद, एक नयी समाजवादी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करना है।"

और जगहों की तरह, रूस में भी मध्यवर्गीय क्रांति ने चाहा था कि सर्वहारा की सभी कुर्बानियों और आशाओं पर पानी फेर दे।

अचिन्स्क में स्तालिन को भेजनेवाले खतम हो चुके थे, इसलिए उन्हें साइबेरिया में रोक रखनेवाला कौन था ? 12 मार्च, 1917 को स्तालिन चुपचाप पेत्रोग्राद पहुँच गये। जर्मनों के आक्रमण के कारण, उनके प्रति अपनी घृणा को व्यक्त करने के लिए इसी लड़ाई के दौरान में पीतरबुर्ग का नाम जर्मन शब्द बुर्ग हटाकर, रूसी शब्द ग्राद जोड़कर पेत्रोग्राद कर दिया गया था। स्तालिन को स्वागत और प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें सदा से चुपचाप ठोस काम करने की आदत रही है। पेत्रोग्राद पहुँचते ही, वह पार्टी के काम में लग गये। उस समय की असाधारण स्थिति में क्षण-क्षण जो नई समस्याएँ सामने आती थीं, उनका हल ढूँढ़ निकालना स्तालिन के ही जिम्मे था। रोमनोफ वंश के खतम होने के बाद, जो शासन उसका स्थान लेनेवाला था उसका क्या रूप होना चाहिए, यह सबसे अहम् बात थी। कौन-सा वर्ग अपने हाथ में सरकार की बागडोर ले ? समाजवादी क्रांतिकारियों और मेन्शेविकों ने मध्यवर्ग का साथ दिया था, इसलिए अस्थायी सरकार में पूँजीवादियों का बोलबाला था। लेकिन, दूसरी ओर जारशाही के खिलाफ जो असतोष के जबर्दस्त प्रदर्शन हो रहे थे और जिनमें देश के सर्वहारा तथा पीडित जनता विद्रोह के लिए खड़ी हो गई थी, वह कोई असंगठित अव्यवस्थित भीड़ नहीं थी। सन् 1905 की क्रांति के तर्जबे से फायदा उठाकर, मजदूरों और कमकरों के देपुतियों की सोवियतें जगह-जगह संगठित होकर, सभी कामों को सुव्यवस्थित रूप से कर रही थीं। यह बोल्शेविकों की ही दूरदर्शिता का परिणाम था कि उन्हें बारह वर्ष पहले ही पुराने शासन-यंत्र का स्थान लेनेवाले एक नये शासन-यंत्र का आविष्कार कर लिया था। यह सोवियतें अब हर जगह तुरन्त संगठित हो रही थीं। दाल-भात में मूसरचन्द की कहावत के अनुसार, सर्वहारा और जारशाही के संघर्ष के भीतर घुसकर, मध्यवर्गीय क्रांति-विरोधियों को लाभ उठाने का मौका बोल्शेविक कैसे दे सकते थे ? स्तालिन ने 14 मार्च, 1917 के 'प्राव्दा' में 'मजूर-सैनिक देपुतियों की सोवियतें' के नाम से एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने फौरी कामों के बारे में बतलाया था : "पुरानी शक्तियों को खतम कर डालने के लिए, जीते हुए अधिकारों को हाथ में रखना तथा प्रदेशों से मिलकर रूसी क्रांति को और आगे बढ़ाना...।" स्तालिन ने क्रांति की आधारभूत शक्ति के बारे में भी यह बतलाया था : "रूसी क्रांति का बल

मजदूरों और वर्दी पहने सैनिकों के रूप में किसानों की मैत्री पर निर्भर करता है।" स्तालिन ने मजदूरों और सैनिकों की सोवियतों (पंचायतों) को और भी व्यापक बनाने तथा मजदूर और सैनिक देपुतियों की केन्द्रीय सोवियत के तत्त्वावधान में जनता की क्रांतिकारी शक्ति के स्वरूप को बनाने के लिए कहा; और यह भी कि "क्रांतिकारी समाजवादी जनतंत्रियों को इसी दिशा में काम करना होगा।"

इस समय, जनता के सामने सबसे बड़ा प्रश्न था–युद्ध के सम्बन्ध में दो टूक फैसला करना, उसे बंद करना। 16 मार्च, 1917 के 'प्राव्दा' में 'युद्ध' के नाम से एक लेख में स्तालिन ने कहा :

> **"हमारे लिए यह जरूरी है कि साम्राज्यवादियों का नकाब फाड़ दिया जाय। जनता को बतलाया** जाय कि इस युद्ध के पीछे असल बात क्या है। इसका अर्थ है–युद्ध के खिलाफ वास्तविक युद्ध घोषित करना; इसका अर्थ है–वर्तमान युद्ध के और आगे चलाने को असम्भव कर देना।"

रूस बहुजातीय राज्य था। क्रांति की देहरी पर पहुँचकर, स्तालिन सभी जातियों को एकताबद्ध रखने का ख्याल कैसे छोड़ सकते थे ? इसीलिए 25 मार्च, 1917 के 'प्राव्दा' में उन्होंने 'जातीय अयोग्यताओं को खत्म करना' लेख लिखते हुए कहा कि यह अत्यावश्यक है कि आज उत्पीड़न से मुक्त हुई जातियों के अधिकारों को तुरन्त स्थापित किया जाय; इस अधिकार को कानून की शक्ति प्रदान की जाय। उन्होंने इस लेख में जोर देकर कहा कि जातियों को आत्म-निर्णय का अधिकार मिलना चाहिए, जिसमें उनको अपने अलग राज्य बनाने का हक भी होना चाहिए।

स्तालिन के नेतृत्व में जिस वक्त बोल्शेविक इस तरह क्रांति को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे, उसी समय मेंनूशेविक और समाजवादी क्रांतिकारी पूँजीपतियों और जमींदारों के पुराने शोषण को अक्षुण्ण रखने की कोशिश कर रहे थे। सर्वहारा को धोखा देने के लिए दुनिया के सभी प्रतिगामियों का बड़ा हथियार है–सुधारों की भूलभुलैया में डालकर समय गुजारना। रूसी मेनूशेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी भी किसानों को समझाने-बुझाने की कोशिश कर रहे थे कि तुम अपनी समस्याओं को तुरन्त हल करने की माँग न करो, संविधान-सभा के बनने की प्रतीक्षा करो। वह जानते ही थे कि संविधान-सभा को कब बुलाना चाहिए, या नहीं ही बुलाना चाहिए, यह उन्हीं के हाथ है; जब प्रतीक्षा करते-करते जनता का जोश धीमा पड़ जायेगा, तो फिर वह जैसा चाहेंगे वैसा करने लगेंगे। लेकिन, जनता के हित-समर्थक बोलूशेविक इतने भोले नहीं थे। वह जनता के अधिकार की माँग को खटाई में पड़ने देने के लिए तैयार नहीं थे। लेनिन ने पेत्रोग्राद पहुँचने के ग्यारह दिन बाद, 14 अप्रैल, 1917 के 'प्राव्दा' में 'जमीन किसानों को' के नाम से स्तालिन ने एक लेख लिखा कि इस धोखे में नहीं पड़ना चाहिए। उन्होंने समाजवादी, क्रांतिकारी, मेनूशेविक और कादेत (प्रतिगामी सुधारवादियों) का भंडाफोड़ करते हुए बतलाया :

> " उन्हें तब तक किसानों की क्या परवाह है, जब तक कि जमींदार मौज उड़ा रहे हैं। इसीलिए, हम रूस के किसानों, सभी गरीब किसानों को पुकारकर कहते हैं कि लक्ष्य को अपने हाथ में लो; उसे आगे बढ़ाओ।
>
> " हम उनसे पुकारकर कहते हैं कि जिलों, देहाती इलाकों आदि की क्रांतिकारी किसान-कमेटियाँ संगठित करो। इन कमेटियों द्वारा जमींदारियों पर अधिकार करो और किसी हुक्म का इन्तजार किए बिना, संगठित ढंग से उन्हें जोतना-बोना शुरू करो।
>
> " हम उनसे पुकारकर कहते हैं कि जरा भी देर किए बिना, संविधान-सभा की प्रतीक्षा किए बिना, और प्रतिगामी मैत्रियों की मंसूखी की आज्ञा की ओर बिलकुल ध्यान दिए बिना, देर किए बिना इस काम को करें, क्योंकि यह चीजें क्रांति के चक्के के रास्ते में बाधाओं के सिवा और कुछ नही हैं। "

लेनिन के रूस में आने के पहले, किसानों और मजदूरों के सामने जो सबसे जबर्दस्त समस्याएँ खड़ी हुई, **स्तालिन ने ठीक समय पर उनका हल सामने रख दिया था। मेनूशेविकों, समाजवादी क्रांतिकारियों और कादेतों की छीछालेदर हो रही थी। अपनी लीडरी को हाथ से जाते देखकर, वह दाँत पीस रहे थे। पार्टी में भी कामेनेफ जैसे कुछ बुजदिल थे। लेकिन, स्तालिन के सामने उनकी क्या चल सकती थी ?**

2. लेनिन की वापसी

अन्त में, 3 अप्रैल का दिन आया। पश्चिमी साम्राज्यवादियो ने लेनिन के स्विट्जरलैंड से लौटने में हर तरह की रुकावटें डाली। फ्रास और इग्लैड लेनिन की शक्ति और प्रभाव को जानते थे और यह भी जानते थे कि वह साम्राज्यवादी युद्ध के बिलकुल विरुद्ध हैं। अब तक उन्हे लाखों की संख्या में बहुत आसानी से रूसी किसान, युद्ध की बलि के बकरे मिल जाते थे। और, जार की जगह पर जो सरकार आई थी उसने भी पूरा विश्वास दिया था कि जार का सिहासन च्युत होना तो एक घरू काम था, जहाँ तक लडाई का सवाल है, उसमें वह तब भी पश्चिमी मित्रो के साथ थे। जर्मनी भी लेनिन के क्रातिकारी विचारों के साथ सहानुभूति नही रख सकता था, लेकिन वह जानता था कि लेनिन के रूस मे पहुँच जाने पर उनके दुश्मनो को रूसी मदद नही मिलेगी। रूस और दूसर देशो मे लडाई के कारण जो असतोष फैला हुआ था, उसका प्रभाव जर्मनी मे भी मौजूद था, इसलिए जर्मन यह पसन्द नही करते थे कि लेनिन उनके देश से खुल्लमखुल्ला गुजरते हुए रूस जाये, इसलिए उन्होने लेनिन के सामने यह शर्त रखी कि एक बन्द डिब्बे मे बिना किसी से मिले-जुले या उतरे, रूस जाने के लिए तैयार हो, तभी जर्मनी मे जाने की इजाजत दे सकते हैं। लेनिन कोई हवाई क्रातिकारी नहीं थे। उन्हे क्राति के लिए पैर रखने की एक उपयुक्त जगह चाहिए थी, और वह था—अपना देश रूस। उन्हे वहाँ पहुँचने की जल्दी थी, इसलिए जर्मनो की शर्त मानकर, वह ट्रेन मे बैठ रूस के लिए रवाना हो गये।

एक लम्बे अर्से के निर्वासन के बाद, 3 अप्रैल, 1917 को लेनिन रूस पहुँचे। लेनिन के आने की खबर पेत्रोग्राद के अग्रगामी कमकरो को तुरन्त मिल गई और स्तालिन के साथ, उनके नेता लेनिन का स्वागत करने के लिए राजधानी से बाहर बेलो ओस्ट्राफ पहुँचे। क्राति के दो महान् नेता, गुरु और शिष्य, आज एक-दूसरे से ऐसे समय मिल रहे थे, जब उनके जीवन का ध्येय पूरा होनेवाला था। पेत्रोग्राद के रास्ते मे, ट्रेन पर बैठे बैठे स्तालिन ने लेनिन को देश और पार्टी की सारी अवस्था तथा क्राति की प्रगति बतलाई। लेनिन अद्‌भुत प्रतिभा के धनी पुरुष थे। स्विट्जरलैड मे रहते हुए भी, वह रूस की खबरो से अपने को वचित नही रखते थे, और थोडी-थोडी बातो मे भी असली तत्त्व को पकड लेना उनके बाये हाथ का खेल था। मॉस्को के फिनलैण्ड स्टेशन पर, जनता की अपार भीड ने अपने प्रिय नेता का स्वागत किया और उनके व्याख्यान के एक-एक शब्द को ध्यान से सुना। अगले ही दिन (4 अप्रैल) को एक कान्फरेंस हुई, जिसमे उन्होने अपने प्रसिद्ध 'अप्रैल-निबध' को रखा, जिसका भाव था—सोवियतो द्वारा राज-शक्ति पर अधिकार करने की योजना। बुजदिल, ढुलमुलयकीन, नामनिहादी क्रातिकारी इससे घबरा उठे। वह कब क्राति के लिए सर्वस्व की बाजी लगाने को लिए तैयार हो सकते थे ? लेकिन, लेनिन वह लक्ष्य-वेधी धनुर्धर थे, जो अच्छी तरह समझते थे कि समय का महत्त्व भी भारी होता है। एक बार चूक जाने पर फिर मौका बार-बार हाथ नही आता। स्तालिन और दूसरे बोल्शेविक लेनिन के साथ थे। स्तालिन ने बाद मे 8 जून, 1926 को तिफलिस मे रेलवे कमकरो की सभा मे इसके बारे मे बतलाया था :

> "अन्त मे, मुझे सन् 1917 याद आता है, जब कि पार्टी की इच्छानुसार एक जेल से दूसरे जेल मे बन्दी होते हुए, एक जगह से दूसरी जगह निर्वासित होकर घूमते हुए, मै लेनिनग्राद भेजा गया। वहाँ रूसी कमकरो के बीच, सभी देशो के सर्वहारा के महान् गुरु, साथी लेनिन की समीपता मे सर्वहारों और बूर्ज्वा वर्ग के बीच होते भयकर सघर्ष के बीच, साम्राज्यवादी युद्ध के मध्य, मैने पहली बार यह सीखा कि मजूर वर्ग की एक महान् पार्टी का नेता होना क्या अर्थ रखता है। वहाँ उत्पीडित जनता के मुक्तिदाता और सभी जातियो के सर्वहारो के सघर्ष की हरावल सेना—रूसी कमकरो—के बीच मुझे तीसरा क्रातिकारी अग्नि-अभिषेक मिला। वहाँ लेनिन के पथ-प्रदर्शन में मैं क्रांति की कला मे सिद्धहस्त हुआ।"

लेनिन के साथ, स्तालिन ने पेत्रोग्राद सोवियत की कार्यकारिणी कमिटी की बैठक में भाग लिया। अखिल रूसी मजूर-सैनिक-डेपुटी-सोवियत कान्फरेंस के सचालन मे स्तालिन ने लेनिन का हाथ बँटाया। केन्द्रीय कमिटी के सदस्य के तौर पर, लेनिन के दाहिने हाथ की तरह, स्तालिन ने पार्टी के केन्द्रीय मुख-पत्र 'प्राव्दा' का संचालन

किया। अब से 'प्राव्दा' में बारी-बारी से लेनिन और स्तालिन के लेख निकलने लगे, जिन्होंने क्रांति के मार्ग को प्रशस्त किया। बोलूशेविकों की अप्रैल कान्फरेस में, स्तालिन ने जातीय समस्या पर अपनी रिपोर्ट दी और जातियों के आत्म-निर्णय के अधिकार को स्वीकार करने पर जोर दिया। इस कान्फरेस मे जातियो को अधिकार देने के विरोधी सदस्यो को मुँहतोड जवाब देते हुए, स्तालिन ने यह भी कहा था :

> "इस प्रकार, जातीय प्रश्न के बारे मे हमारे विचारो को निम्न रूपो मे रखा जा सकता है—1. जातियो के राज्य से अलग होने के अधिकार को स्वीकार करना। 2. किसी राज्य के भीतर रहने के लिए तैयार जातियो को स्थानीय स्वायत-शासन देना। 3. अल्पसख्यक जातियो के विकास को उन्मुक्त रखने की गारंटी देते हुए, विशेष कानून बनाना। 4 किसी राज्य की सभी जातियो के सर्वहारो के लिए एक अकेली, अविभाज्य सर्वहारा जमात, एक अकेली पार्टी का होना।"

मई, सन् 1917 मे, केन्द्रीय कमिटी का एक राजनीतिक ब्यूरो सगठित किया गया। स्तालिन इसके सदस्य निर्वाचित हुए। स्तालिन सन् 1917 से 1953, अपने निधन के समय, छियालीस वर्षो तक पोलिट (राजनीतिक) ब्यूरो के सदस्य बने रहे।

अब दोनो महान् गुरु और शिष्य बोल्शेविक पार्टी का नेतृत्व और सर्वहारो की अपार शक्ति का सचालन करते हुए, सर्वहारा क्राति की तैयारी करने लगे। उस समय जरूरी था कि बूर्ज्वा सरकार यह न समझे कि वह जारो की तरह ही मनमानी करने के लिए स्वतत्र है। इसीलिए, हर अवसर पर कमकरो के विराट प्रदर्शन किए जाने लगे, जिनकी अपार शक्ति देखकर प्रतिगामियो का दिल दहल जाता था। अप्रैल मे कई प्रदर्शन हुए। मई दिवस का जुलूस भी अपूर्व रहा, पर 18 जून के ऐतिहासिक प्रदर्शन ने तो कमाल कर दिया। इस प्रदर्शन के लिए स्तालिन ने एक घोषणा—'पेत्रोग्राद के सभी मेहनतकशो, सभी कमकरो और सैनिको के लिए'—लिखी, जिसमे उनसे कहा गया था कि इस दिन को उत्पीडन और अत्याचार के फिर से चालू करने के विरुद्ध क्रातिकारी पेत्रोग्राद द्वारा एक जबर्दस्त विरोध-प्रदर्शन करने के दिवस मे परिणत कर दो। घोषणा मे आगे कहा गया था :

" स्वतत्रता और समाजवाद के शत्रुओ मे बौखलाहट पैदा करने के लिए, कल हमारी विजयी ध्वजाएँ लहराये !

" तुम्हारी पुकार, क्राति के योद्धाओ की पुकार, सभी उत्पीडितो और बन्धुओ के आनन्द के लिए सारी दुनिया मे गूँज उठे !

" कमकरो ! सैनिको ! अपने हाथो को बधुता से एक दूसरे से मिलाये, समाजवाद के झडे के नीचे आगे बढो !

" साथियो, सभी सडको पर आ जाओ !

" अपने झडो के चारो ओर, घनिष्टता के साथ घेरा बाँधकर इकट्ठे हो जाओ !

" राजधानी की सडको पर अटूट पक्तियो के रूप मे मार्च करो ! "

18 जून के प्रदर्शन मे बोलूशेविक दल के झडे के नीचे पाँच लाख मजूर और किसानों ने भाग लिया था। बोलूशेविको की शक्ति को इस तरह बढते देखकर अस्थायी सरकार कैसे चुपचाप रह सकती थी ? उसने बोलूशेविक पार्टी पर प्रहार कर, उसे फिर भूमिगत बनाने का निश्चय किया। लेकिन, राजधानी के उद्बुद्ध कमकर और सैनिक बनियो की बदरघुडकी मानने के लिए कब तैयार थे ? उनके इस प्रयत्न का फल यही हुआ कि 3 और 4 जुलाई को फिर जबर्दस्त प्रदर्शन हुए। सडको पर मजदूरो और सैनिको पर गोली चलवाकर 'प्राव्दा' के कार्यालय को नष्ट-भ्रष्ट करने के बाद, अस्थायी सरकार ने लेनिन पर झूठा आरोप लगाकर उन्हे गिरफ्तार करने के लिए वारण्ट निकाला। पार्टी के भीतर अभी भी ऐसे विश्वासघाती थे, जो अदालत में प्रतिगामी सरकार के न्याय का झडा फाडने के बहाने लेनिन का बलिदान देने के लिए तैयार थे। लेनिन उस वक्त क्रांति की एक सबसे बडी शक्ति थे, उसे अस्थायी सरकार खूब जानती थी। यह निश्चय ही था कि लेनिन पर बाकायदा मुकदमा चलाने की जगह, वह अपने किसी गुंडे से उन पर गोली चलवाकर क्रांति के एक शक्तिशाली ज्वालामुखी को दबा सकती थी। लेकिन, स्तालिन और दूसरे बोलूशेविक ऐसी कच्ची गोली नही खेले थे, और न लेनिन

ही उनकी बात के महत्त्व से इन्कार कर सकते थे। इसलिए, यही निश्चय किया गया कि लेनिन को छिपा दिया जाय। यदि उस दिन कामनेफ, रुइकोफ और त्रॉत्स्की की बातो को माना गया होता, तो कौन जानता है कि लेनिन को खो देने पर क्राति का रास्ता किस ओर जाता। यह बुजदिल, नेतृत्व के लिए अन्धे क्या उस समय क्राति की धारा को ठीक रास्ते पर चला सकते थे ? लेनिन अब पेत्रोग्राद से कुछ दूर रजलिफ के जगल की एक कुटिया मे शिकारी बनकर रहते थे। स्तालिन उस गुप्त स्थान मे दो बार गये। पत्र-व्यवहार द्वारा तो वह उनसे बराबर सम्बन्ध रखते थे। दोनो की राय एक ही थी–हथियारबन्द विद्रोह द्वारा अस्थायी सरकार को उलटकर, सर्वहारो की सरकार स्थापित करना। त्रॉत्स्की और दूसरे ढुलमुलयकीन सदस्य दलीले देते हुए कहते थे कि सर्वहारा क्राति पश्चिम के देशो मे ही हो सकती है। इस पर स्तालिन का जवाब था

'यह सम्भावना भी हो सकती है कि रूस ही ऐसा देश बने, जो समाजवाद का रास्ता बनाने मे सफल हो। हम इस पुराने, सड़े विचार को छोड देना चाहिए कि केवल यूरोप ही हमको रास्ता दिखा सकता है। मार्क्सवाद रूढ्यात्मक और सृजनात्मक दोनो तरह का होता है। मैं सृजनात्मक मार्क्सवाद का समर्थक हूँ।

इस कहने की आवश्यकता नही कि त्रॉत्स्की, कामनेफ जैसे आदमियो को पुस्तकी ज्ञान का अजीर्ण हो गया था। उनकी आँखो पर उसका ऐसा पर्दा पड गया था कि तत्कालीन परिस्थिति को देखकर, उनके पास पुस्तक की पक्तियाँ उद्धृत करने के सिवा कोई रास्ता ही नही था। हर परिस्थिति मे जो घटनाएँ घटित होती है, वह चाहे किसी पुरानी परिस्थिति मे घटी घटनाओ से समानता रखती हो लेकिन वह सामूहिक रूप से अपना बिलकुल ही नया स्वरूप प्राप्त कर लेती है। ऐसे समय, ठीक रास्ता खोज निकालना लेनिन और स्तालिन जैसी प्रतिभाओ का ही काम था। सौभाग्य से लेनिन के फरार होने के बाद, स्तालिन सभी कामो को सँभालने के लिए तैयार थे। हथियारबन्द विद्रोह के लिए शक्ति सचय का काम निर्बाध रूप से चलता रहा। 10 जुलाई, 1917 को 'रबोची सोलूदात' (कमकर और सिपाही) का प्रथम अक निकला। अस्थायी सरकार ने 'प्राव्दा' को बन्द कर दिया था, इसीलिए वह इस नये रूप मे निकला था। इसमे स्तालिन ने 'क्राति विरोध की विजय' के नाम से एक लेख लिखते हुए कहा था

" कमकर इसे कभी नही भूलेगे कि जुलाई के भीषण अवसर पर जबकि गुस्से से पागल क्राति विरोधियो ने क्राति के ऊपर गोली वर्षा आरम्भ की तो बोल्शेविक पार्टी ही एकमात्र ऐसी पार्टी थी, जिसने मजूरवर्गीय मुहल्लो को नही छोडा।

कमकर इसे कभी नहीं भूलेगे कि उन भयकर क्षणो मे समाजवादी क्रातिकारी और मेन्शेविक जैसी 'शासनारूढ' पार्टियाँ उस कैम्प मे थी जो कि कमकरो, सैनिको और नौसैनिको पर आक्रमण करने तथा उनसे हथियार छीनने मे लगा हुआ था।

' कमकर इस सबको याद रखेगे और उसका ठीक निष्कर्ष निकालेगे। "

इसमे क्या सन्देह है कि क्राति की तैयारी के इन स्मरणीय दिनो मे स्तालिन का एक एक शब्द, एक-एक भयकर बम का काम दे रहा था।

क्राति विरोधी अपनी क्षणिक सफलता पर फूले नही समाते थे। उन्होने लेनिन को फरार करवा दिया था। इसी समय 26 जुलाई 1917 को छठी पार्टी काग्रेस हुई। लेनिन का अभाव खटकता था। लेकिन, वहाँ उप लेनिन मौजूद थे। स्तालिन ने काग्रेस मे रिपार्ट पेश की जिसमे उन्होने बतलाया कि उनके सामने मुख्य काम है–बूर्ज्वा सरकार को हथियारो द्वारा पदच्युत करने और सर्वहारा तथा गरीब किसानो का राज्य स्थापित करने की आवश्यकता को जनता को समझाना। बस एक ही बात बाकी रहती है, अर्थात् बलपूर्वक अस्थायी सरकार को हटाकर शासन अपने हाथो मे लेना। और गरीब किसानो की सहायता से, केवल सर्वहारा ही मे वह शक्ति है, जिससे कि वह बलपूर्वक शासन को अपने हाथो मे ले सकता है। त्रॉत्स्की और दूसरे किताबी पडित और अदूरदर्शी यही राग अलापते रहे कि रूस जैसा पिछडा देश हथियार के सहारे समाजवादी क्राति नही कर सकता, यह काम उद्योग-धधो मे बढे हुए पश्चिमी राष्ट्रो मे ही हो सकता है। हमे तो जनतात्रिक तरीके से आगे बढना

चाहिए। इसमें शक नही कि जनतात्रिकता की पुकार कायर और धोखेबाज समाजवादियो के लिए हमेशा से एक ढाल का काम करती आ रही है।

इस सारे समय, लेनिन जगल मे अपनी पर्णकुटी के भीतर छिपे हुए सो नही रहे थे। वह बडी सतर्कता के साथ, क्षण-क्षण की घटनाओ की देख-भाल करते रहते थे। सेर्गो ओरयोनिकिद्जे गुरु और शिष्य के बीच बातो और सूचनाओ के लाने-ले जाने का काम करता था। इस समय, साथी स्तालिन बाकू मे ही अपने घनिष्ठ सहकारी तथा मित्र स. अलीलुयैफ के घर मे छिपकर रहते थे, जिसने अपने सम्मरणो मे लिखा है :

> " जुलाई के दिनो मे, गुस्से से पागल बूर्ज्वा वर्ग के प्रहार के कारण फरार होने मे पहले, लेनिन 6 से 11 जुलाई तक मेरे साथ रहे। साथी स्तालिन लेनिन से मिलने मेरे घर आया करते थे। जब साथी लेनिन 11 जुलाई की रात को सेस्त्रोरेच्क मे छिपने के लिए रवाना हुए, तो मै और साथी स्तालिन सेस्त्रोरेच्क स्टेशन तक उनके साथ गये। उस समय, यह स्टेशन बोलशयानेव्वा बॉध पर नोवयादेरेव्न्या मे अवस्थित था। हम दशम रोज्देसवेन्स्कया मडक से उक्त स्टेशन तक पैदल ही गये।
>
> " रजलिफ और बाद मे फिनलैड की झोपडी मे रहते समय, साथी लेनिन समय-समय पर स्तालिन को देने के लिए मेरे पास पत्र भेजा करते थे। चिट्ठियॉ मेरे घर आती थी। चूँकि उनका जवाब तुरन्त देना होता था, इसलिए अगस्त मे साथी स्तालिन रोजथ रोज्देस्तेन्स्कया मडक वाले मेरे घर मे चले आये और उसी कमरे मे रहने लगे, जिसमे जुलाई के दिनो मे साथी लेनिन छिपकर रहते थे।"

पुराने क्रातिकारी साथी और बहुत दिनो तक सोवियत सघ के राष्ट्रपति, कालिनिन ने इस समय के बारे म लिखा था . "अक्तूबर के तुरन्त ही पहले स्तालिन उन चन्द आदमियो मे से थे, जिनको साथ लेकर लेनिन ने विद्रोह का निश्चय किया था। जिनोवियेफ और कामेनेफ भी उस समय केन्द्रीय कमिटी के मेम्बर थे, लेकिन लेनिन ने उन्हे इसका पता भी नही दिया था।" यह दोनो अपने को दूरदर्शी समझनेवाले कायर बराबर सशस्त्र विद्रोह का विरोध करते रहे, और सविधान सभा के ऊपर सब-कुछ छोडकर बैठे रहना चाहते थे। लेकिन, जब विद्रोह शुरू ही हो गया, तो कोई दूसरा चारा नही रहा था। इसलिए, लेनिन ने मानो लाठी के हाथो उन्हे भी क्राति के भीतर ढकेल दिया। त्रॉत्स्की यद्यपि स्वेच्छापूर्वक शामिल हो गया था, लेकिन पूरे मन से नही; क्योंकि उसके मत के अनुसार सर्वहारा क्राति का स्थान पश्चिम यूरोप के उद्योग-प्रधान देश थे, न कि पिछडा हुआ कृषि प्रधान रूस। इन तीनो को छोड, बाकी सभी बोल्शेविक सर्वस्व की बाजी लगाने के लिए तैयार थे। लेनिन ने क्राति आरम्भ करने के समय को बिलकुल गुपचुप रखना चाहा था, लेकिन जिनोवियेफ ने इस निर्णय के विरोध मे पत्र म लिखना शुरू किया, जिससे केरेन्स्की की सरकार को सजग होने का मौका मिल गया।

अगस्त सन् 1917 मे जनरल कोर्निलोफ ने अस्थायी सरकार से विद्रोह करके, फिर से जारशाही स्थापित करना चाही। केरेन्स्की उस समय किकर्तव्यविमूढ हो गया था, लेकिन क्राति केरेन्स्की के बल पर नही हुई। जिन सर्वहारा और सैनिको ने जार का तख्ता उलट दिया था, वह अब भी अपने नव-प्राप्त अधिकारो की रक्षा के लिए तैयार थे। सचमुच ही, 'जो शालिग्राम को भूनकर खा गया, उसे बेगन भूनकर खाने मे क्या देर लगेगी ?' की कहावत को चरितार्थ किया। और, जारशाही तीसमार खॉ के मनसूबे को उन्होने बिलकुल विफल कर दिया। सारे कमकर हथियारबन्द हो, क्रातिकारी सैनिको के साथ लडने के लिए आगे बढे और इनके शौर्य के सामने कोर्निलोफ की सेना धुन्ध की तरह विलीन हो गई।

'रबोची सोलूदात' को भी जब केरेन्स्की की सरकार ने बन्द कर दिया, तो बोल्शेविको ने 'प्रोलेतारी' के नाम से अपना पत्र निकालना शुरू किया। अगस्त सन् 1917 के पहले अक म स्तालिन ने क्राति को स्थगित करने के विचार से मॉस्को मे की गई कौन्सिल की बैठक के खिलाफ लिखते हुए, मॉस्को-कौन्सिल की इस कार्रवाई के विरोध में सगठित हुई कमकरो की हडताल का स्वागत किया।

कोर्निलोफ को करारी हार देकर, बोल्शेविक पार्टी ने कमकर जनता मे अपने प्रति पूरा विश्वास स्थापित कर लिया था। जनता अब इसी पार्टी को अपनी रक्षक और अजेय वाहिनी समझती थी। इसलिए जब सोवियतो का नया चुनाव हुआ, तो उनमे बोलशेविक सबसे अधिक सख्या मे आये और अब फिर से 'सभी शक्ति—सोवियतो

को'—का नारा चारों ओर गूँज उठा। लेनिन सारी परिस्थिति को अपने गुप्त स्थान से देख और सभी शक्तियों को आँक रहे थे। वह समझ गये कि यही वह दुर्लभ क्षण है, जिसकी वर्षों से प्रतीक्षा करते रहे हैं। उन्होंने अपने एक पत्र मे विद्रोह की तैयारी करने पर जोर देते हुए लिखा था, "अब बोलशेविको को अपने हाथ में शक्ति लेनी होगी।" स्तालिन अपने गुरु के एक-एक आदेश और परामर्श को कार्यरूप में परिणत करने में लगे थे। अब उनका सारा समय सशस्त्र विद्रोह की तैयारी, लाल गारद और कमकरो की सेना के सगठन मे लग रहा था। 10 अक्तूबर, 1917 को केन्द्रीय कमिटी ने स्तालिन को विद्रोह का सचालक नियुक्त किया। यह बैठक 10 से 16 अक्तूबर तक चलती रही, जिसमे जिनोवियेफ आदि बराबर सविधान-सभा की प्रतीक्षा करने की बात करके, सघर्ष को रोकना चाहते थे। 16 अक्तूबर को बोलशेविक केन्द्रीय कमिटी की एक परिवर्द्धित मीटिंग हुई, जिसमे विद्रोह का सचालन करने के लिए स्तालिन को पार्टी-केन्द्र का नेता बनाया गया। इसी पार्टी-केन्द्र को महान् क्राति का सचालन करना था।

3. महान् क्रांति

आखिर २4 अक्तूबर का दिन आया, जो कि नये पचाग के अनुसार 6 नवम्बर का था। उस दिन, 11 बजे सेवरे 'रबोची पुत' (कमकर पथ) पत्र अस्थायी सरकार को हटा फेकने के नारे के साथ निकला। पत्र के बाहर निकलते ही, पार्टी-केन्द्र ने विद्रोह के बारे मे हिदायत देते हुए हुक्म निकाला और उसके सुनते ही क्रातिकारी सैनिकों और लाल गारदो की टुकडियाँ जल्दी-जल्दी आकर स्मोलूनी मे जमा होने लगी। यही पार्टी-केन्द्र था। विद्रोह शुरू हो गया। उसी दिन लेनिन ने 'केन्द्रीय कमिटी के मेम्बरों को पत्र' मे लिखा था :

" चाहे जो भी हो, आज ही इसी रात को सरकार को गिरफ्तार करना होगा, पहले युकरो (जारशाही के अफसरो) को निःशस्त्र करना होगा। अगर वह प्रतिरोध करे, तो हराकर, इत्यादि।

" हमे इन्तजार नही करना होगा। नही तो हम सब कुछ खो देंगे।

" इस बात का बिना चूके, आज ही शाम को या आज ही रात को निश्चय करना होगा; निर्णय करना होगा।"

" सरकार आगा-पीछा कर रही है, चाहे जो भी हो उसे नष्ट करना होगा।

" कार्रवाई मे देर करना खतरनाक होगा। "

ये वाक्य कैसे दृढ निश्चयी और पारदर्शी पुरुष की लेखनी से निकले थे ? वस्तुतः यदि किसी को अन्तर्प्रत्यक्ष (इन्ट्यूशन) वाला कहा जा सकता है, तो वह लेनिन ही थे। उस समय जो शक्तियाँ एक-दूसरे के मुकाबले मे खडी थी, लेनिन उनके बलाबल को गणित के किसी प्रश्न के तौर पर साफ-साफ देख रहे थे। वह अन्तर्दृष्टि कामेनेफ, जिनोवियेफ और त्रॉत्स्की के पास नही थी, न वह तत्त्वदर्शी थे, और न दाव मे सर्वस्व की बाजी लगाने की हिम्मत रखते थे। यशपाल ने अपने क्रातिकारी जीवन के सस्मरणो मे एक साथी को इसीलिए अयोग्य बतलाया है कि वह प्राण जाने की 99 प्रतिशत सभावना वाले काम के लिए तैयार होते समय, सबसे पहले जान बचाने की फिक्र करता था। लेनिन अपनी गुप्त झोपडी मे कितने तडफडा रहे होगे, लेकिन उनको स्तालिन जैसा सहायक मिला था, जो सभी बातो को अपने गुरु की दृष्टि से देख सकता था। उसी दिन स्तालिन ने 'रबोची पुत' मे 'हमे क्या चाहिए ?' के नाम से एक लेख लिखा :

" वह समय आ गया है, जबकि और भी देर करना क्राति के सारे उद्देश्य के लिए खतरनाक होगा।

" जमीदारो और पूँजीपतियो की वर्तमान सरकार की जगह, मजदूरो और किसानो की एक नई सरकार स्थापित करनी होगी। "

24 अक्तूबर (6 नवम्बर) की रात को लेनिन ने अपनी झोपडी छोडकर, सचालक-केन्द्र के स्थान स्मोलनी में आकर क्राति-युद्ध की बागडोर अपने हाथो मे सँभाल ली। सामन्ती-पूँजीपतियो की अन्तिम सरकार सचमुच ही सड़ी ही लाश साबित हुई। उसको जनसाधारण का न कोई विश्वास और न कुछ सहायता प्राप्त थी। 24 अक्तूबर के सवेरे केरेन्स्की ने शक्ति-परीक्षा करनी चाही, जब कि हथियारबन्द मोटरो के साथ उसने 'रबोची

पुत' को दबाना तथा पत्र के सम्पादन कार्यालय एव छापाखाने को नष्ट कर डालना चाहा था। लेकिन, स्तालिन पक्के खिलाडी थे, वह दुश्मन की एक-एक हरकत से पहले ही वाकिफ हो जाते थे। इसलिए, उस दिन 10 बजे सवेरे ही लाल गारद और क्रातिकारी सैनिक अपने मुख-पत्र की रक्षा के लिए वहाँ मौजूद थे। उन्होने हथियारबन्द गाडी को वहाँ से भगाकर, आफिसो की रक्षा के लिए जबर्दस्त सैनिक गारद बैठा दी। उसी दिन, 11 बजे अखबार मे स्तालिन का मशहूर लेख 'हमे क्या चाहिए ?' छपकर निकला। उसी दिन सशस्त्र क्राति आरम्भ हो गई। यह वह नकली क्राति नही थी, जिसमे एक सामन्त वश दूसरे का स्थान लेता है, अथवा एक बूर्ज्वा दल दूसरे की जगह सरकार का सचालन करने लगता है, जिसका मतलब है–सिर्फ ऊपरी, मामूली-सा परिवर्तन तथा शोषण-उत्पीडन का पूर्ववत् ही जारी रहना। यह वह क्राति थी, जिसके द्वारा दुनिया के छठे भाग पर शोषको की शासन-व्यवस्था समाप्त हुई और उसकी जगह समाजवादी शासन आरम्भ हुआ। अब तक निठल्ली जोके भाग्य का निपटारा करती थी। अब मजूर-किसान रूस के ही नही, विश्व के भाग्य-विधाता बननेवाले थे।

जिस असानी से और सबसे पहले नगर के शक्ति-केन्द्रो–तारघर, बिजली-कारखाना, बैंक आदि पर कब्जा किया गया, उससे मालूम होता है कि लेनिन ने सन् 1905 के एक-एक तजर्बे से फायदा उठाया था। राजनीतिक और सेना सम्बन्धी दाव-पेच का सारा नतृत्व लेनिन ने किया था। इसमे सन्देह नही कि लेग्नि के दिमाग के बिना अक्तूबर की क्राति सफल न होती।

क्राति की बल-परीक्षा 7 नवम्बर को हुई। पुराने रूसी पचाग के अनुसार उस दिन 25 अक्तूबर था, इसीलिए 'लाल क्राति' को अक्तूबर-क्राति भी कहते हैं। (3 महीने के बाद, 1 फरवरी, 1918 से पुराने पचाग को छोडकर, यूरोप मे सर्वत्र प्रचलित पचाग को स्वीकार किया गया, उस दिन पेत्रोग्राद के चौरस्ते और सडके युद्ध-क्षेत्र बन गई थी। कही बाल्तिक के नौसैनिक लड रहे थे और कही कारखानो के मजदूर–जिनमे औरते भी थी–अपने रोजमर्रा के कपडो मे रायफिले लेकर दुश्मनो पर धावा बोल रहे थे। उसी दिन शाम को सोवियत की दूसरी काग्रेस के उद्घाटन के समय, नयी सरकार के शासनारूढ होने की घोषणा की गई। काग्रेस मे बोल्शेविको का बहुत बहुमत था। घोषणा के समय तक शरद् प्रासाद को छोडकर सारी राजधानी सैनिक-क्रातिकारिणी-समिति के हाथ मे आ गई थी। केरेन्स्की सयुक्त राष्ट्र अमरीका के दूतावास की मोटर मे बैठकर भाग गया। उस समय हेमन्त प्रासाद मे अस्थायी सरकार के मत्रिमडल की बैठक हो रही थी। कुछ ही घटो मे हेमन्त प्रासाद बोल्शेविको के हाथो मे था और अस्थायी सरकार के सदस्य बन्दी थे। लेनिन ने खुद काग्रेस मे आकर इस विजय की घोषणा की थी। पिछली जुलाई से यह पहला अवसर था, जबकि वह जनता के सामने आये थे। उत्साह और आनद के साथ, लोगो ने उनका स्वागत किया।

दूसरे दिन, नई सरकार स्थापित हुई। लेनिन अध्यक्ष हुए। सरकार का नाम रखा गया–सोवियत-जनता-कमीसार (सोवेत नरोदूनिक कामिसरोफ), सक्षेप मे सोव्-नर्-कोम्। अस्थायी मत्रिमडल के सदस्यो को मन्त्री कहा जाता था, उनसे भेद करने के लिए 'कमीसार' नाम रखा गया। प्रथम सोव् नर-कोम् के सभी सदस्य बोल्शेविक थे। कामेनेफ, जिनावियेफ, सिकोफ, लूनाचार्स्की, रियाजनोफ जैसे सर्वोच्च शिक्षित बोल्शेविको ने लेनिन को धमकी दी कि यदि वह दूसरी समाजवादी पार्टियो को नही लेंगे, तो वे सहयोग नही देंगे। लेकिन, लेनिन जानते थे कि गगा-जमुनी मत्रिमडल हानिकारक सिद्ध होगा। उन्होने उनकी बात मानने से इन्कार कर दिया और कहा–"जो हमारी योजना नही मानते, हम उन्हे नही ले सकते।" उनका प्रोग्राम था–सभी शक्ति सोवियतो के हाथ मे देना, लडाई को तुरन्त बन्द करना, रूस मे बसनेवाली सभी जातियो को आत्म-निर्णय का अधिकार देना, भूमि और उद्योग-धधो को व्यक्तियो के हाथ से छीनकर राष्ट्र के हाथ मे दे देना।

अधिकार सँभालने के बाद लेनिन ने जो पहला काम किया, वह भूमि-सम्बन्धी घोषणा का था। काग्रेस की दूसरे दिन (8 नवम्बर) की बैठक मे प्रस्ताव पास हुआ कि "सभी जमीदारियाँ तथा उनके साथ के पशु और कृषि सम्बन्धी यत्र आदि जब्त किए जाते हैं और उनको सँभालने का भार किसानो द्वारा निर्वाचित स्थानीय भूमि-समितियो के हाथ मे दिया जाता है।"

इस प्रस्ताव ने किसान-सोवियतो की काग्रेस–जो कि कुछ ही दिन बाद बैठी–को लेनिन के पक्ष मे कर

दिया और इस प्रकार उन समाजवादियों को निराश होना पडा, जो किसान-सोवियतों से बोल्शेविकों के कड़े विरोध की आशा रखते थे।

सोव-नर-कोम ने अपने बोलूशेविक-प्रोग्राम को बडी ईमानदारी से पूरा किया। एक सप्ताह के भीतर ही उसने बैंक और उद्योग-धधो को राष्ट्रीय बना दिया। काफी समय तक, नई सरकार ने पूँजीवादियों के साथ नरमी का बर्ताव किया। इस नरमी का उन्होने फायदा उठाना चाहा। कलम-जीवी श्रेणी बडी कायर साबित हुई, वह देर तक विरोध पर न टिक सकी। हर पूँजीवादी को दिल में सोवयित-शासन से घृणा थी, लेकिन सामने आने की हिम्मत न थी। विरोध करनेवाले थे–सेना के बड़े-बड़े अफसर तथा शासन–विभाग के कुछ अफसर। उनके साथ सैनिक स्कूल के तरुण विद्यार्थी थे, जो कि प्रायः सभी धनिको के लड़के थे। पत्रोग्राद् से बाहर भी सोवियत-शासन के फैलने मे उतनी दिक्कत नही हुई।

इतनी आमानी मे क्राति को सफल बनाना लेनिन का ही काम था। इसके बारे में स्तालिन ने कहा है : "लेनिन सचमुच ही क्रातिकारी विस्फोटों की एक अद्‌भुत प्रतिभा थे। बेढगे से कोनों मे भी वह आगे ही से उस दिशा को जान लेते थे, जिसकी ओर भिन्न-भिन्न वर्ग चलेंगे और जिन रास्तो पर जाने से क्रांति सफल होगी। इन सब बातां को मानो वह अपनी हथेली पर रखकर देख रहे हों। क्राति में घटों का नही, बल्कि मिनटो का भी बहुत मूल्य है, और लेनिन की प्रतिभा सेकिडो का भी उपयोग करती थी।" राज्य की बागडोर सँभालते ही, नई सरकार के लिए यह जरूरी था कि युद्ध बन्द किया जाय। उन्होने मित्र–शक्तियो को भी इसके लिए कहा कि बिना किसी भूभाग को दबाये 'सुलह कर लेनी चाहिए', लेकिन वे मानने के लिए तैयार नही थी। अब जर्मनी के साथ इसके लिए बात करनी जरूरी थी। सोवियत सरकार ने प्रधान सेनापति दुखोनिन को आदेश दिया कि युद्ध की कार्रवाई बन्द करो। लेकिन जारशाही जेनरल दुखोनिन यह मानने के लिए कब तैयार था ? उस समय की घटना स्तालिन के शब्दो मे सुनिये :

> "··· मुझे वह दिन याद है, जब लेनिन, किलेको (भावी मुख्य सेनापति) और मैं पेत्रोग्राद मे जनरल स्टाफ के हेडक्वार्टर मे एक खास तार पर दुखोनिन से बाते करने गये थे।··· दुखोनिन और हेडक्वार्टर के स्टाफ ने लोक कमीसार-परिषद् (मत्रिमडल) के आदेशो को मानने से साफ इन्कार कर दिया। सेना के कमांडर पूरी तौर से हेडक्वार्टर स्टाफ के हाथ मे थे। और, सैनिक ?–कोई नही जानता था कि सेना क्या कहेगी; क्योकि वह ऐसे संगठनों के अधीन थी, जो बिलकुल सोवियत सरकार के विरुद्ध थे। हम जानते थे कि पेत्रोग्राद मे युकर विद्रोह करने के लिए तैयार हो रहे हैं और केरेन्स्की राजधानी पर आक्रमण करने के लिए प्रयाण कर रहा है।··· मुझे याद है, किस तरह टेलीफोन के सामने एक क्षण तक चुप रहने के बाद, एकाएक लेनिन का चेहरा अत्यन्त असाधारण रूप से चमक उठा। देखनेवाला समझ सकता था कि वह किसी निर्णय पर पहुँचे हैं। उन्होने कहा–'हम बेतार के स्टेशन पर चलेगे, वह हमारे मतलब को अच्छी तरह पूरा कर देगा। हम एक विशेष आदेश से जेनरल दुखोनिन को उसके पद से हटाकर, उसके स्थान पर साथी किलेको को मुख्य सेनापति (कमाडर-इन-चीफ) नियुक्त करेंगे, और अफसरों को छोडकर सीधे सिपाहियो से अपील करेगे कि अपने जनरलों को गिरफ्तार कर लें, सभी सैनिक कार्रवाइयों को बन्द कर दे, आस्ट्रिया और जर्मनी के सैनिको के साथ मेल-जोल करें और सुलह-शांति के काम को आगे बढ़ाना अपने हाथो मे ले ले।"

लेनिन परिणाम समझते थे और वही हुआ भी।

4. ब्रेस्त-लितोव्स्क संधि

पश्चिमी शक्तियाँ बोल्शेविको की सधि की बातो को मानने के लिए तैयार नही थी। वह चाहती थीं कि युद्ध तब तक चलता रहे, जब तक कि जर्मनी चारो खाने चित न हो जाये और उसके उपनिवेशों तथा कितने ही भागो को इग्लैंड और फ्रान्स अपने हाथो मे न कर ले। इसीलिए, बोलूशेविकों को जर्मनी के साथ सुलह करके काम को आगे बढाना था। जर्मनी के साथ सुलह की बात चलने लगी। जर्मन रूस की सैनिक अवस्था से फायदा

उठाना चाहते थे। वह कड़ी से कहीं शर्तें रख रहे थे। बातचीत के लिए त्रॉत्स्की को भेजा गया था। जर्मनी की कड़ी शर्तों को देख कर त्रॉत्स्की ने लेनिन के पास एक तार भेजा। जवाब में, लेनिन ने 15 फरवरी, 1918 को निम्न तार दिया : 'त्रॉत्स्की को जवाब। उसके प्रश्न का जवाब देने से पहले मुझे स्तालिन से सलाह लेनी होगी।' और, 18 फरवरी को लेनिन ने त्रॉत्स्की को तार दिया : 'स्तालिन अभी-अभी यहाँ पहुँचा। हम दोनो मिलकर स्थिति का अध्ययन करेंगे, फिर जितनी जल्दी हो सकेगा तुम्हारे पास सयुक्त उत्तर भेजेंगे। लेनिन।' जर्मनों की शर्तों को देखकर, त्रॉत्स्की इस संधि के खिलाफ था और हर गम्भीर बात मे कोई भी निश्चय करने मे असमर्थ, वह 'न शाति, न युद्ध' का मत्र जप रहा था। लेकिन, लेनिन और स्तालिन को मालूम था कि वे इस समय ऐसा करने की स्थिति मे नहीं थे। स्तालिन का समर्थन पाकर, लेनिन ने जर्मनो की सर्वथा अन्यायोचित शर्तो के साथ ब्रेस्त-लितोव्स्क सधि कर ली। क्राति के बाद, घर के शत्रुओं और बाहर के सबल दुश्मनो–दोनो ही से लडना शक्ति से बाहर था, इसीलिए इस समय बाहर के शत्रु से अपने को बचाकर क्राति की रक्षा करना सबसे पहला काम था। लेनिन जानते थे कि बाद मे वे ऐसी स्थिति मे होंगे, जब बाहरी शत्रुओ के मनसूबे विफल कर सकेगे। इस सधि को लेकर, पार्टी के भीतर भयकर झगडा पैदा हो गया। वामपक्षी उसका जबर्दस्त विरोध कर रहे थे। 23 फरवरी, 1918 को केन्द्रीय कमिटी की मीटिग मे वामपक्षियो को मुँहतोड़ जवाब देते हुए, लेनिन ने कहा था :

"कुछ विश्राम मिलना चाहिए, नही तो, क्राति का अन्त हो जायेगा। हमारे सामने प्रश्न है–या तो हमारे देश मे क्राति पराजित होती है, और यूरोप मे भी क्राति के मार्ग मे बाधाएं होती है, नही तो हमे कुछ समय मिले जिसमे हम अपनी स्थिति को मजबूत कर सके।"

स्तालिन, स्वेर्दलोफ और दूसरे बोल्शेविको के साथ, लेनिन अपनी बात पर दृढ रहे और कमिटी के बहुमत ने उनकी बात को स्वीकार किया। लेनिन ने इस सधि को 'शोकजनक सधि' कहा था और अगले दिन लिखा था "सधि की शर्ते असह्य है। तो भी, इतिहास का निर्णय दूसरा ही होगा।' आओ, हम काम मे लगे, सगठन करे, सगठन करे और सगठन करे; चाहे कितनी ही परीक्षाओ मे पडना पडे, भविष्य हमारा है।"

5. उक्रइनी रादा

उक्रइन मे, वहाँ के राष्ट्रवादियो ने इस नाम से अपनी सरकार स्थापित कर ली थी, जिसमे विदेशी सेनाओ, मेन्शेविकों और समाजवादी क्रातिकारियो ने उनकी सहायता की थी। इसका फल सोवियत सरकार और उक्रइनी रादा के बीच सघर्ष के रूप मे हुआ था। ऐसे पेचीदा काम के लिए, लेनिन की नजर स्तालिन को छोडकर और किस पर पडती ? स्तालिन ही भेजे गये। वहाँ उन्होंने रादा के राजनीतिक रूप को देखा–वह दावपंच चलाकर सर्वहारो और किसानो को अधिकार से वचित कर सामन्तो-पूँजीपतियो का शोषण जारी रखना चाहते थे। अक्तूबर-क्राति ने मजदूरों और किसानो को भी सजग कर दिया था। इस प्रकार, वहाँ रादा और सर्वहारा–दो शक्तियो का मुकाबला था। स्तालिन की नीति के आगे रादा कैसे ठहरता ? उन्होंने उक्रइन की जनता का नेतृत्व किया और रादा को मुँह की खानी पडी। बेलोरुसिया मे भी सोवियत-प्रभाव को बढाने मे स्तालिन का जबर्दस्त हाथ था। जातियों की समस्या और उसका हल स्तालिन का अपना विषय था, जिस पर वह पिछले बारह वर्षों से मनन कर रहे थे। स्वय भी एशियाई जाति के होने के कारण, वह उनकी मनोवृत्ति से पूरी तौर से वाकिफ थे। रूसियों की तरह, दूसरे लोगों मे भी सर्वहारा, गरीब किसान और शोषक सामन्त, पूंजीपति दो वर्ग थे। जातीय शक्ति को क्रांति के विरुद्ध न जाने देने के लिए, दोनो वर्गो के इस रूप को सर्वहारा के सामने स्पष्टता से रखना जरूरी था। कोई भी स्तालिन को कल की प्रभु जाति का, रूसी कहकर सन्देह नही कर सकता था।

काकेशस में वर्षों क्रांति का काम करते हुए, स्तालिन ने अपने प्रति रूस की भिन्न-भिन्न जातियो का पूरा विश्वास पैदा कर लिया था। स्तालिन तातार-बाश्किर गणराज्य की सविधान काग्रस के अध्यक्ष हुए थे। यह भी स्तालिन के प्रति गैर-रूसी जातियों के विश्वास को प्रकट करता था। उन्होंने इस काग्रस मे अध्यक्ष-पद से जो भाषण दिया था, वह 10 मई, 1918 के 'प्राव्दा' मे छपा था। उन्होने इस भाषण द्वारा तातार-बाश्किर

के मुसलमानो से ही नहीं, बल्कि पूर्व की सभी मुसलमान जातियो से अपील की थी। आगे हम देखते हैं कि पूर्व की इन मुसलमान जातियो ने युगों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने वाले संघर्षों में बहुत महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। काकेशस के गरीबो को मेनूशेविको, दशनको (अर्मनी राष्ट्रवादियों) और मोसावातियों (काकेशीय मुस्लिम राष्ट्रवादियो) के फन्दे से निकालने मे, स्तालिन का बहुत बड़ा हाथ था। एशियाई जातियों मे भी, सोवियत शासन ने इस तरह आसानी से जो विजय-यात्रा की, उसमे स्तालिन के प्रयत्नों और दूरदर्शिता ने भारी काम किया है।

रूस मे क्राति हो जाने के बाद, यह जरूरी था कि विश्व के सर्वहारा वर्ग की सहानुभूति को भी एक सगठित रूप दिया जाय, जिससे और देशों मे भी क्राति होने में आसानी हो। केन्द्रीय कमिटी के आदेश के अनुसार, जनवरी सन् 1918 में यूरोप और अमरीका की समाजवादी पार्टियो के क्रांतिकारी तत्त्वों के प्रतिनिधियो की एक कान्फरेस बुलाई गई। यह कान्फरेस तृतीय कम्युनिस्ट इन्टर्नेशनल की स्थापना मे बडी सहायक हुई।

6 आहार समस्या (सन् 1918)

जिस समय बोल्शेविको ने राज्य-शासन अपने हाथो मे लिया था, उस समय पेत्रोग्राद (आधुनिक लेनिनग्राद)–राजधानी मे केवल दो दिन का खाद्य मौजूद था। स्तालिन ने सभी गोदामो और अनाज के ढेरो की खोज-पडताल करके, किसी तरह दस दिन की रोटी का प्रबन्ध किया। रयाबुशिन्स्की और दूसरे क्राति-विरोधियो की यह धमकी कवल बन्दरघुडकी नही थी कि वे अकाल के हाथो क्राति का गला घुटवा देगे। यदि लडाई के कारण चारो ओर फैली हुई भुखमरी ने क्रातिकारियो की शक्ति को बढाया था, तो भुखमरी से बचाने के लिए कोई रास्ता न निकालने पर क्राति का भी खतरा पैदा हो सकता था। आहार की समस्या का हल त्रॉत्स्की जैसे हवाई नेता क्या कर सकते थे ? इसलिए, इस समस्या का भार सौंपते हुए, 29 मई, 1918 को लोक कमीसार-परिषद् ने निश्चय किया

> "लोक-कमीसार-परिषद् (मत्रिमडल) लोक-कमीसार-परिषद् के सदस्य, लोक कमीसार–योसेफ बिसारियोनोविच स्तालिन को दक्षिणी रूस मे खाद्य-विभाग का डाइरेक्टर जनरल (प्रधान सचालक) नियुक्त करती है।"

लेकिन, रोटी प्राप्त करना आसान नही था। देश मे अन्न के भडार–दक्षिणी रूस–को सफेद गारदो (क्राति विरोधियों) ने अलग काट दिया था। इस काम मे हाथ लगाते ही, स्तालिन ने समझ लिया कि वह हथियार के बल पर ही अन्न पा सकते है। मत्रिमडल के निश्चय से पहले ही, स्तालिन ने लेनिन की राय से दक्षिण की ओर प्रस्थान कर दिया था। स्तालिन ने लेनिन से बात करते हुए, वहाँ से टेलीफोन पर कहा था :

> "उत्तरी काकेशस मे अनाज का बहुत भारी जखीरा मौजूद है। लेकिन, रेलवे लाइनो के कट जाने से उसे उत्तर की ओर नही भेजा जा सकता। जब तक कि लाइन को ठीक न कर दिया जाता, तब तक अनाज के यातायात की बात ही नही उठ सकती। समारा और सरातोफ के प्रदेशों मे अभियान भेजा गया है। लेकिन, अगले कुछ दिनो तक अनाज भेजना सम्भव नही होगा। हम आशा करते हैं कि करीब दस दिनो मे रेलवे लाइन ठीक हो जायेगी। सारी शक्ति लगाकर डटे रहिये। मछली और मास का राशन चलवाइये। हम उसे खूब अच्छे परिमाण मे भेज सकते है। एक सप्ताह के भीतर अवस्था अनुकूल हो जायेगी।"

स्तालिन ने इस नये क्षेत्र मे कितनी जल्दी सफलता पाई, यह चन्द दिनो बाद ही लेनिन के पास भेजे हुए उनके इस तार से मालूम होता है .

> "इस रास्ते से आपको 160 गाडी अनाज और 64 गाडी मछली पहुँच जायेगी। बाकी चीजे सरातोफ के रास्ते से भेजी जायेंगी।"

7. जारित्सीन

स्तालिन को दक्षिण मे अन्न बटोरकर भेजने के लिए रवाना किया गया था। स्तालिन ने देखा कि अन्न पाने

का रास्ता भी लडाई के द्वारा ही है। उस समय, दोन-क्षेत्र मे क्रांति-विरोधी बड़े जोर-शोर से काम कर रहे थे, जिनके कारण वोल्गा के किनारे का नगर जारित्सीन (वर्तमान स्तालिनग्राद) एक सैनिक महत्त्व का स्थान बन चुका था। जमीदारो को हटा कर, जमीन पर किसानों का अधिकार स्थापित किया गया। इसे कुलक (धनी किसान) बर्दाश्त करने के लिए तैयार नही थे। सर्वहारो के ये क्रूर शत्रु हर जगह सोवियत सरकार के खिलाफ विद्रोह करवा रहे थे। अन्न का रास्ता रोककर, वह सचमुच ही क्राति का गला घोटना चाहते थे।

क्राति और गृह-युद्ध के समय, हम अनेक बार देखेगे कि लेनिन सबसे खतरनाक मोर्चे और दुष्कर कार्य पर स्तालिन ही को भेजते थे। वह जानते थे कि वही ऐसी कठिनाइयो मे रास्ता ढूंढ सकते है। स्तालिन को आहार के सचय के लिए उधर भेजकर, मत्रिमडल (द्वितीय महायुद्ध के बाद तक सोवियत सरकार के मत्रिमडल को लोक-कमीसार-परिषद् कहा जाता था, जिसे हम आसानी से समझने के लिए मत्रिमडल कहेगे। मत्रियो को उस समय लोक कमीसार के नाम से पुकारा जाता था) ने उसी समय 'सभी मेहनतकश लोगो को' के नाम से एक घोषणा निकालकर कहा :

> "साइबेरियन रेलवे के कुछ केन्द्रो पर क्राति-विरोधियो का अधिकार हो जाने से कुछ समय के लिए भूखा मरते हुए देश के लिए अन्न की प्राप्ति कठिन हो जायेगी। लेकिन, रूसी, फ्रेंच, अग्रेज और चैकोस्लोवाकी साम्राज्यवादी क्राति को भूखों मारकर मजबूर करने मे, नत-मस्तक करने मे सफल नही हो सकेगे। भूखे उत्तर की सहायता के लिए, दक्षिण-पूर्व आगे आ रहा है। लोक कमीसार स्तालिन इस समय जारित्सीन मे है, जहाँ वह दोन तथा कूबान के इलाको से खाद्य-सचय के काम का सचालन कर रहे है। वह तार द्वारा हम सूचित कर रहे हैं कि वहाँ पर अन्न का भारी जखीरा है, जिसे वह एक सप्ताह के भीतर ही उत्तर की ओर भेजने की आशा करते है।"

नई सरकार मे सेना-मत्री का पद त्रौत्स्की को दिया गया था। त्रौत्स्की कभी भी लेनिन का विश्वासपात्र नही रहा था। क्राति के पहले, बहुत वर्षो तक तो वह लेनिन-विरोधियो का अगुवा था। पर, क्राति के पहले दिनो मे यह जरूरी था कि जितना को भी क्राति के विरुद्ध न जाने दिया जाय, उतना ही अच्छा हो। लेकिन, अब उसके कारण सैनिक मोर्चो मे तत्परता और अनुशासन की कमी दिखाई पडती थी। जारित्सीन वोल्गा के किनारे ऐसे मुकाम पर था, जहा से दक्षिण मे काकेशस और उक्रइन की सैनिक परिस्थिति को भी देखा जा सकता था और साइबेरिया के क्राति-विरोधी क्या कर रहे है इसका पता भी वहीं से पाया जा सकता था। स्तालिन को अन्न जमा करने के लिए भेजा गया था, लेकिन उनके अपने शब्दों मे ही : "मै युद्ध-विभाग के गन्दे तवेला को साफ करने का विशेषज्ञ बन गया।" सचमुच ही, त्रौत्स्की ने युद्ध-विभाग को गन्दा तवेला बना रखा था। स्तालिन को वहाँ दो वर्ष रहकर तबेले को साफ करके, शत्रुओ के मनसूबों को चूर-चूर करना पड़ा। इसमे उन्हे वोरोशिलोफ और मीनिन जैसे योग्य सहायक मिले थे। देश मे हर जगह क्राति का खतरा पैदा हो गया था। मॉस्का मे यदि समाजवादी क्रातिकारी विद्रोह करने पर उतारू थे, तो पश्चिम मे मुरावियेफ शत्रुओ के सामने क्राति के पक्ष को कमजोर बना रहा था। युद्ध के समय बन्दी बनाकर साइबेरिया भेजे गये, चेक क्राति-विरोधी उराल प्रदेश मे सोवियत के खिलाफ अपनी शक्ति मजबूत कर रहे थे। बाकू के तेल-क्षेत्र को देख कर, अग्रेजो के मुँह मे पानी क्यो न भर आता? इसलिए, वह अपने दाव-पेच चला रहे थे। यह क्राति का सौभाग्य था कि स्तालिन ऐसे ही समय मे जारित्सीन पहुँचे। वह जानते थे कि दोन प्रदेश के विद्रोह की सफलता और जारित्सीन के हाथ से निकल जाने पर, सारे उत्तरी काकेशस के गेहूँ का प्रदेश हाथ से निकल जायेगा। जारित्सीन मे रहते समय, स्तालिन का लेनिन के साथ लगातार पत्र-व्यवहार और तार द्वारा विचार-विमर्श होता रहता था। जारित्सीन मे पहुँचने के साथ ही, स्तालिन के शब्दो मे :

> "मैं उन सभी को धमकाता और बुरा-भला कहता हूँ, जिनको इसकी जरूरत है। साथी लेनिन, आप निश्चिंत रहे, मै किसी को भी दम नहीं लेने दूँगा, न खुद दम लूंगा। चाहे कुछ भी हो, हम आपके पास गेहूँ भेजेगे। अगर हमारे सैनिक विशेषज्ञ—जिनके दिमागो मे गोबर भरा हुआ है-सोये न रहते तो हमारी लाइन कभी न कटी होती; और अगर हम उसे फिर से-ठीक कर लेते है, तो यह उनकी सहायता

से नहीं, बल्कि उनकी कार्रवाइयों के बावजूद ही।"

स्तालिन ने इस सारे प्रदेश को भयंकर अस्त-व्यस्त रूप में पाया। कम्युनिस्ट मजदूर सभा ही नहीं, सैनिक संगठन भी बिलकुल टूटे-फूटे थे। ऊपर से क्रांति-विरोधी कसाकों के साथ टक्कर का भारी डर पैदा हो गया था, जिन्हे उक्रइन पर दखल जमाये बैठी जर्मन सेना पूरी मदद दे रही थी। एक के बाद एक, जारित्सीन के सभी इलाकों को सफेद गारदों ने अपने अधिकार मे कर लिया था; मॉस्को तथा पेत्रोग्राद की ओर भेजे जानेवाले अन्न के यातयात को बिलकुल रोक दिया था। अब स्वयं जारित्सीन भी खतरे में पड़ गया था।

ऐसी अवस्था मे, स्तालिन के लिए सिवाय इसके और कोई चारा नहीं था कि सैनिक कमांड को भी अपने हाथ में ले ले। 11 जुलाई के तार मे उन्होने लेनिन को लिखा :

"अवस्था इसलिए और भीषण हो गई है कि उत्तरी काकेशस का हेडक्वार्टर-स्टाफ क्रांति-विरोधियो से लडने में बिलकुल असमर्थ है। जनरल हेडक्वार्टर के अधीन रहना तथा अभियाब की योजनाएँ तैयार करना ही अपना काम समझकर, और बातो से बिलकुल अलग-थलग, वह अपने को केवल तमाशा देखनेवाले ही समझते हैं। और इसीलिए, कार्रवाइयो मे कुछ भी दिलचस्पी नहीं लेते।"

स्तालिन ने बीमारी पहचान ली, लेकिन वह इतने ही से चुप रहनेवाले नही थे। उन्होने आवश्यक कार्रवाई भी शुरू की :

"जब मै देख रहा हूँ कि उत्तरी काकेशस के मोर्चे की रसद का रास्ता कट गया है और सारे उत्तरी रूम का सम्बन्ध अपने गेहूँ-क्षेत्र से टूट चुका है, तो मैं कैसे चुपचाप रह सकता हूँ ? मैं इस कमजोरी को, और दूसरी भी कितनी ही स्थानीय कमजोरियो को दूर करूँगा। मैं इसके लिए ठीक से उपाय कर रहा हूँ। हमारे काम को बिगाडनेवाली रेजीमेण्ट तथा स्टाफ के अफसरो को अगर हटाना पडेगा, तो भी किसी तरह की कायदे आदि की कठिनाइयो की परवाह न कर, जरूरत पडने पर उनकी उपेक्षा भी करते हुए, इस काम को करूँगा। इसके लिए स्वभावतः ऊपर की सारी जिम्मेवारी मैं अपने ही ऊपर लेता हूँ।"

सारे लाल सगठन को ठीक से अपने पैरों पर खडा करने के लिए, मॉस्को से जवाब आया : "फिर से व्यवस्था कायम करो। सैनिक टुकडियों को बाकायदे सेना के रूप मे बनाओ। एक ठीक कमाड की नियुक्ति करो। जो आज्ञा-पालन के लिए तैयार नही है, उन्हे हटा दो।"—यह आदेश क्रातिकारी युद्ध-परिषद् की ओर से आया था, जिसमे लिखा हुआ था : 'यह तार लेनिन की सम्मति से भेजा जा रहा है।'

जारित्सीन मे भयकर स्थिति थी। वहाँ व्यवस्था कायम करना असम्भव-सा मालूम होता था : "लेकिन स्तालिन झूठे ही फौलादी नही कहे जाते थे। उन्होने उसी अव्यवस्था मे, छूमतर की तरह, सुव्यवस्था स्थापित की। एक क्रातिकारी युद्ध-परिषद् कायम हो गई, जिसने उसी वक्त बाकायदा एक सेना का सगठन कर डाला। जल्दी-जल्दी सेनिक कोरें बनाई गई, और उनको डिवीजनो, ब्रिगेडो और रेजीमेटो मे विभक्त कर दिया गया। सैनिक स्टाफ, रसद-व्यवस्था और मोर्चे से पीछे स्तालिन के हाथो के सैनिक सगठनो से सभी क्राति-विरोधी आदमियो को निकाल बाहर किया गया। वही बात सोवियत तथा कम्युनिस्ट पार्टी के सगठनो की हुई। वहाँ पक्के के बोल्शेविको की कमी नही थी, जब ऊपर से लादे गये अविश्वसनीय आदमियो को हटाकर उन्हे रखा गया, तो क्राति एक दूसरे ही रूप मे दिखलाई देने लगी। दोन का क्षेत्र जारित्सीन से बहुत दूर नही है, जहाँ पर क्राति-विरोधी अपने को बडा शक्तिशाली समझते थे; लेकिन स्तालिन ने उन्ही की नाक के नीचे एक जबर्दस्त मोर्चा कायम कर लिया।

पार्टी और सैनिक सगठनो मे ही विश्वासघाती नही घुस गये थे, बल्कि सारे जारित्सीन नगर में क्रांति-विरोधी अपना जाल बिछाये हुए थे। समाजवादी क्रांतिकारी, आतंकवादी और राजवादी—सभी मिलकर क्रांति को विफल करने के लिए तैयार थे। लेकिन, स्तालिन ने बहुत मजबूत हाथो से झाड़ू फेरनी शुरू की। मध्यवर्गीय शरणार्थियों का समूह यहाँ आकर डेरा डाले हुए था, और वह खुलकर सफेद अफसरो के साथ मिले हुए थे। फुटपाथो, सडको, सार्वजनिक उद्यानो और विनोद-शालाओ मे, जहाँ भी देखो, वही जारित्सीन खुले षड्यंत्र के केन्द्र का रूप धारण किए हुए था। स्तालिन जानते थे कि यह सब बाहरी दिखावा है, और इसको तभी तक शक्ति प्राप्त

है, जब तक कि शासन का सूत्र अयोग्य कर्मचारियों के हाथो मे है। स्तालिन ने वहाँ बात की बात मे एक नया वातावरण पैदा कर दिया। स्तालिन के संचालन मे, स्थानीय क्रातिकारी युद्ध-परिषद् ने एक विशेष कार्यकारिणी कमिटी कायम करके, उस पर इन आदमियो का ध्यान से परीक्षण करने का काम सौंपा। इसमे शत्रुओ की हर एक खतरनाक योजना और दुरभिसधि का पता लगाया। नासोविच सैनिक कार्रवाई का मुख्य अफसर था, जो विरोधी बनकर क्रास्नोफ की सफेद सेना मे चला गया था। उसने बाद मे जारित्सीन की स्थिति का विवरण एक सफेद अखबार 'दोन-संघर्ष' (3 फरवरी, 1919) मे दिया था। उसने इस बात को कबूल किया कि स्तालिन किसी काम को हाथ मे लेकर अधूरा नहीं छोडते। उन्होने सैनिक और असैनिक–सारे शासन-प्रबन्ध को अपने हाथ मे लेकर, क्राति के शत्रुओ के सारे प्रयत्नो और चालो को एक-एक करके व्यर्थ कर दिया। उस समय स्थानीय क्राति-विरोधी सगठन बहुत शक्तिशाली हो गये थे। मॉस्को से आये हुए पैसे की सहायता से, वह सैनिक दखलदाजी की तैयारी करते और दोने के कसाको की मदद से, जारित्सीन को बोल्शेविको से मुक्त करना चाहते थे। उनके दुर्भाग्य से इन सगठनो के मुखिया–जिनमे इजीनियर अलेक्सियेफ और उसके दो पुत्र भी थे–को वास्तविक स्थिति का बहुत कम पता था। उनके एक गलत कदम उठाने के कारण सगठन का पता लग गया। अलेक्सियेफ अपने दो पुत्रो तथा काफी सख्या मे सहयोगियो के साथ गोली से मार दिया गया।

जुलाई सन् 1918 मे मॉस्को मे विद्रोह करके, वाम पक्षीय समाजवादी क्रातिकारी अब जारित्सीन पर भी आक्रमण करनेवाले थे। लेनिन को भी इस खतरे का पता लग गया था, जिसके लिए स्तालिन को टेलीफोन करने पर, उन्हे जवाब मिला · "जहाँ तक इन खप्तियो का सवाल है, आपको निश्चित रहना चाहिए। हम दृढता के साथ तैयार हैं। शत्रुओ के साथ, हम शत्रुओ जैसा ही बर्ताव करेगे।"

स्तालिन ने लोगो मे एक नई स्फूर्ति, एक नया उत्साह पैदा कर दिया। सैनिक और राजनीतिक नेता तथा पलटन के साधारण सिपाही भी अनुभव करने लगे कि एक सच्चे और मजबूत नेता से काम पडा है, जो उन लोगो के साथ जरा भी दया दिखाने के लिए तैयार नही है जो फिर से पुरानी दासता मे ले जाना चाहते है। नसोविच ने त्रॉत्स्की की बौखलाहट को भी अपने उसी लेख मे बतलाते हुए कहा है "इतनी मेहनत से तैयार किए हुए सैनिक कमाड को नष्ट होते देखकर, त्रॉत्स्की घबडा गया और उसने तार भेजकर कहा कि हेडक्वार्टर-स्टाफ और कमीसारो को फिर से उनके पदो पर स्थापित करके उन्हे अपना काम करने देना चाहिए। स्तालिन ने उस तार पर लिख दिया 'इसकी ओर कोई ध्यान नही देना चाहिए।' और, उस तार की ओर बिलकुल ध्यान नही दिया गया। जारित्सीन मे सारा तोपखाना-कमाड और हेडक्वार्टर स्टाफ का भी एक भाग एक स्टीमर के ऊपर वैसे ही बेकार बैठा रहा।

स्तालिन किसी काम को आधे मन से करना नही जानते थे। वह नया सगठन करने मे ही अपने काम को समाप्त नही समझते थे। जारित्सीन के चार सौ मील के मोर्चे पर, उन्होने स्वय जगह-जगह जाकर बोल्शेविक-शासन को मजबूत किया। स्तालिन ने कभी सेना मे काम नही किया था। युद्ध ने जबर्दस्ती भरती होने का एक मौका दिया था, लेकिन जारशाही डर गई थी। अब यहाँ जारित्सीन मे आकर, उन्होने पहले-पहल अपनी सैनिक प्रतिभा का परिचय दिया। उस समय भी, नजदीक से जानकारी रखनेवाले नही कह सकते थे कि स्तालिन मे इस काम के करने की कोई अपनी मौलिकता नही है। दूसरे महायुद्ध मे तो दोस्त और दुश्मन–दोनो को ही मानना पडा है कि सैनिक दाव-पेच मे भी यह पुरुष उतना ही निष्णात था, जितना राजनीतिक और अर्थनीतिक क्षेत्रो मे। कगानोविच ने इस बारे मे लिखा है :

> "मुझे जैसे वह बात कल की ही मालूम होती है। सन् 1918 के आरम्भ मे, क्रास्नोफ की कसाक सेना ने जारित्सीन पर आक्रमण किया और उसे चारो ओर से घेरकर, लाल सेना को वोल्गा पर ढकेलने की कोशिश की। एक कम्युनिस्ट डिवीजन के अधीन, दौनेत्स्क के कमकरो से बनी हुई इस लाल सेना ने कई दिनो तक, पूरी तौर से शिक्षित और सगठित कसाको के आक्रमण को अद्भुत दृढता के साथ रोका, वह सचमुच ही भयकर दिन थे। तुम उस समय स्तालिन को देख सकते थे। वह हमेशा की तरह शान्त और अपने विचारो मे लीन रहते थे। वस्तुतः, वह बिलकुल नीद न लेते थे। वह अपने अनथक

काम को युद्ध-पंक्ति और सैनिक हेडक्वार्टर मे बाँटे हुए थे। मोर्चे पर हालत प्रायः निराशाजनक थी। फिजखलोरोफ, मामोन्तोफ और दूसरे अफसरो के नेतृत्व में, आस्नोफ की सेनाएँ हमारी थकी-माँदी पलटनो का भीषण सहार कर रही थी। शत्रु का व्यूह अर्धगोलाकार था, जिसके दोनो छोर वोल्गा पर थे। वह दिन-प्रतिदिन और अधिक भूमि घेरता जा रहा था, निकलने का कोई रास्ता नही था। लेकिन, स्तालिन ने इसकी चिंता नही की। उनके दिमाग मे सिर्फ एक ही विचार था—हमें जीतना है। स्तालिन की यह अदम्य इच्छाशक्ति ही थी, जिसने उनके नजदीकी सहायको में जान फूँक दी। यद्यपि हम ऐसी स्थिति में थे, जहाँ बचाव का कोई रास्ता नहीं रह गया था, तो भी किसी को एक क्षण के लिए विजय मे सन्देह नही था; और हम विजयी हुए ! पराजित शत्रु-सेना को दोन नदी के उस पार भगा दिया गया।"

जारित्सीन के वे दिन कितने भयकर थे, कितने निराशापूर्ण थे, और स्तालिन ने उनमें किस तरह सफलता प्राप्त की, यह बतलाता है कि बाद मे, स्तालिनग्राद के नाम से मशहूर इसी जारित्सीन मे हिटलर की विजयोन्मत्त सेना को क्यों भयकर हार खानी पडी।

जारित्सीन को बचाकर और क्राति-विरोधियों की शक्ति को छिन्न-भिन्न करके, स्तालिन ने सोवियत जनता को अकाल और भुखमरी से बचा लिया, साथ ही वहाँ सैनिक महत्त्व का एक ऐसा जबर्दस्त गढ़ तैयार किया, जिसने उत्तरी काकेशस, दक्षिणी उक्रइन और साइबेरिया से आनेवाले क्राति-विरोधियों के तूफान को बेकार बना दिया।

स्तालिन ने जिस समय जारित्सीन मे यह सफलता प्राप्त की थी, उसी समय उक्रइन में जर्मनो ने भयकर स्थिति पैदा कर दी थी।

8. उक्रइनी मोर्चा

जारित्सीन के विजेता को अब केन्द्रीय कमिटी ने उक्रइन के मोर्चे पर भेजा। उनके साथ बोरोशिलोफ आदि, बारह पार्टी कार्यकर्ता भेजे गये। नवम्बर के अन्त मे, क्राति की सेनाएँ पेतलुरा और जर्मनो के विरुद्ध आगे बढ़ी और उन्होंने उक्रइन के महान नगर खार्कोफ को मुक्त कर लिया। उक्रइन ही नही, पश्चिम मे मिन्स्क को भी लाल सैनिको ने दुश्मनो के हाथ से आजाद किया।

30 नवम्बर 1918 को लेनिन की अध्यक्षता में कमकर किसान परिषद् कायम की गई, जिसका काम था—मोर्चे और युद्ध-पंक्तियों के पीछे भी प्रतिरक्षा के सारे काम का सचालन करना, तथा उद्योग-धंधो, यातयात व्यवस्था या देश के सभी सम्पत्ति स्रोतो को इसी काम मे लगाना।

9 गृह-युद्ध

बोल्शेविक अच्छी तरह से जानते थे कि गृह-युद्ध को खतम किये बिना समाजवादी राज्य ढग से कायम नही किया जा सकता। जिन जोको को उन्होंने पदच्युत किया था; पीढ़ियों और सहस्राब्दियो से जो 'परमुडे फलाहार' करते थे, दुख और चिन्ता के दिन नही देखे थे, वह अपने पैरों के नीचे से धरती खिसकती देखकर शान्त नही बैठे रह सकते थे। सामत और पूँजीपति अपनी पशुता और बर्बरता को चरम रूप मे दिखाये बिना, ऐसे ही हथियार नही डाल देगे। इसलिए, रूस के साम्राज्यवादी युद्ध से छुट्टी पाने का मतलब यह नही था कि वह गृह-युद्ध से बच जायेगा। पूजीवादी राष्ट्र इसीलिए तो उस महायुद्ध को चला रहे थे कि विश्व मे अपनी-अपनी शक्ति को मजबूत करते हुए, देशो को परतन्त्र बनाते हुए, जनसाधारण का शोषण और दोहन करें। समाजवाद रूपके से दुनिया के छठे हिस्से को अपने हाथ मे कर ले, यह भला वह कैसे पसन्द कर सकते थे ? जर्मनी से छुट्टी पाते ही, उनका ध्यान इस तरफ गया। इग्लैड और फ्रास के साम्राज्यवादियो ने चैकोस्लोवाकी सेनाओ को बड़े यत्नपूर्वक विद्रोह के लिए उकसाया; रूसी क्राति-विरोधी—कादेतो, मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारियों—की पीठ पर हाथ रखा। सन् 1918 के पूर्वार्ध में ही, दो निश्चित शक्तियाँ सोवियत शासन को उठा फेंकने के लिए तैयार हो रही थी। वह थीं—विदेशी साम्राज्यवादी मित्र शक्तियाँ और घर मे क्रांति-विरोधी।

सोवियत के विरुद्ध संघर्ष शुरू कर लेने पर, यह दोनों विरोधी शक्तियाँ एक होने के लिए मजबूर हुई। यह एकता सन् 1918 के पूर्वार्ध में स्थापित हो गई थी। इस प्रकार, जर्मनी से फुर्सत पाने पर, क्रांति के बाद के कुछ महीनों का जो विश्राम मिला था, उसे साम्राज्यवादियों ने खतम कर दिया और गृह युद्ध शुरू हो गया। रूस के कमकरों-किसानों का यह युद्ध विदेशी-स्वदेशी शत्रुओं के विरुद्ध हुआ। शत्रुओं ने पांच मुख्य मोर्चे स्थापित किए थे, जहाँ से वह रूस के भिन्न-भिन्न भागो पर भयंकर प्रहार कर रहे थे। ये मोर्चे थे : (1) पूर्वी मोर्चा, जिसका नेता कोलचक था; (2) दक्षिणी (काकेशस) मोर्चा, जिसका नेता देनीकिन था, (3) उत्तर पश्चिमी मोर्चा, जिसका नेतृत्व रोदजेंको और यूदेनिच के हाथो मे था; (4) पोल मोर्चा और (5) तुर्किस्तान मोर्चा। गृह युद्ध के समय, सोवियत सरकार की प्रायः सारी शक्ति इन भीषण शत्रुओ का मुकाबला करने में लगी हुई थी। कम्युनिस्ट पार्टी और तरुण कम्युनिस्ट लीग के 57 प्रतिशत सदस्य हथियार लेकर लड़ रहे थे, और शत-प्रतिशत को शत्रुओं से लड़ने के लिए सेना में भरती होना पड़ा था। इस युद्ध में स्तालिन ने बड़ा भाग अदा किया, इसे वर्तमान सोवियत-राष्ट्रपति वोरशिलोफ के शब्दों में सुनिए :

> "सन् 1918 से 1920 के समय में, सम्भवतः साथी स्तालिन अकेले ही ऐसे आदमी थे, जिसे केन्द्रीय कमिटी एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे पर भेजती रही। क्रांति के लिए जिस जगह सबसे ज्यादा खतरा होता, वह उन्हें ही भेजती थी।"

4 अगस्त, 1918 मे जारित्सीन से स्तालिन ने लेनिन को लिखा था "अब फिर उन्हीं बातों का आरम्भ करना पड़ा है। हमने रसद का इन्तजाम किया, सैनिक-कार्रवाई के विभाग को कायम किया, मोर्चे के सभी भागो के साथ संचार-सम्बन्ध स्थापित किया, पुरानी व्यवस्था—जो कि अपराधपूर्ण व्यवस्था थी—को हटाया, और यह सब करने के बाद ही, तिखोरेच्क के दक्षिण तथा कलाच पर आक्रमण किया है।"

10. पेर्म का मोर्चा

वस्तुतः, क्रांति अभी तक अपना कोई सुव्यवस्थित सैनिक संगठन नही कर सकी थी। पुरानी सेना जारशाही के खतम होने के साथ ही विलीन हो गई थी। नई सेना का अभी-अभी निर्माण किया गया था। सेना-संचालन का काम त्रॉत्स्की जैसे को दिया गया था, जिसे न सेना का ज्ञान था, और न जिसमें सैनिक संगठन की प्रतिभा ही थी। इस पद पर त्रॉत्स्की का होना सैनिक संगठन के लिए एक बहुत भारी बाधा थी; हम यह जारित्सीन के पहले संघर्ष मे ही देख चुके है। जहाँ तक सैनिकों की संख्या का सवाल था, कोई कमी नही थी। गोरिल्ला ढंग की लड़ाई सफलतापूर्वक की जा सकती थी। लेकिन, कायदे नियम की पाबन्द एक संगठित और अनुशासित सेना तैयार करने में बड़ी बाधाएँ थी। क्रांति की रक्षा के लिए, ऐसी सेना का निर्माण करना अत्यन्त जरूरी था। यह सौभाग्य की बात थी कि पार्टी हर एक खतरनाक मोर्चे पर स्तालिन को ही भेजती थी। सन् 1918 के अन्त मे, पूर्वी मोर्चे की अवस्था बड़ी भयंकर हो गई, कोलचक ने पेर्म पर अधिकार कर लिया था। उत्तर की ओर से साम्राज्यवादियो की सेनाएँ बढ़ रही थी। कोलचक ने चाहा था कि उनसे सम्बन्ध स्थापित करके, नई सरकार को खतरे में डाल दे। बोल्शेविक तृतीय सेना हारकर, भारी नुकसान के साथ पीछे हट रही थी जिसका एक बड़ा कारण था—कमाण्डरों की अयोग्यता। केन्द्रीय कमिटी ने इस हार के कारण की जाँच करने के लिए, स्तालिन और जेर्जिन्स्की की एक जाँच-समिति 'पेर्म के आत्म-समर्पण और उराल के मोर्चे पर हाल की पराजय के कारणों की पूरी तौर से जाँच करने के लिए, और सभी परिस्थितियों का पता लगाने के लिए, नियुक्त की। नवम्बर के अन्त में, इस मोर्चे पर स्थिति सचमुच ही बड़ी निराशापूर्ण हो गयी थी। न सेना में अनुशासन था, न उसके राशन का कोई प्रबन्ध था। 29वीं डिवीजन को पाँच दिनों तक एक रोटी का टुकड़ा भी नही मिल पाया था; इस पर हिमबिन्दु से भी 35 डिग्री नीचे की भयंकर सर्दी पड रही थी। इस ढाई सौ मील लम्बे मोर्चे के सारे रास्ते दुर्गम हो गये थे। ऊपर से, जार के जिन अफसरो को त्रॉत्स्की ने अपने पदों पर बहाल रखा था, वह पूरी तौर से विश्वासघात करके दुश्मन से मिल गये थे। बीस दिनों के अन्दर करीब दो सौ मील पीछे हटना, अठारह हजार आदमियों को खोना, दर्जनों तोपों और सैकड़ों मशीनगनो से हाथ

[illegible] भयंकर बात थी। शत्रु इतने नजदीक आ गया था कि व्यात्का और सारे पूर्वी मोर्चे को खतरा [illegible] गया था। लेनिन ने क्रांतिकारी युद्ध-परिषद् को तार दिया :

"पेर्म के आस-पास से हमे कई रिपोर्टें मिली हैं, जिनमे तृतीय सेना के शराब पीकर मतवाले होने और खतरनाक स्थिति की बाते बतलाई गई हैं। मैं स्तालिन को भेजने की सोच रहा हूँ।"

जैसाकि ऊपर कहा गया है, केन्द्रीय कमिटी ने पेर्म की पराजय के कारणो का पता लगाने के लिए, स्तालिन को जेर्जिन्स्की को भेजा था। सचमुच, वहाँ की स्थिति प्राप्त हुई सूचना से भी कही अधिक भयकर थी। स्तालिन ने वहाँ पहुँचकर राष्ट्रीय प्रतिरक्षा-परिषद् के अध्यक्ष (लेनिन) को तार देकर, तुरन्त कुमुक भेजने के लिए लिखा। फिर एक सप्ताह बाद, पेर्म की पराजय के भिन्न-भिन्न कारणो को लिख भेजा और लडने की क्षमता बढाने के लिए कुछ उपायो का काम मे लाने का प्रस्ताव रखा। जारित्सीन की तरह, यहाँ भी स्तालिन ने सैनिक और राजनीतिक सगठन के लिए ऐसे असाधारण कदम उठाए कि उसी महीने (जनवरी, सन् 1919) मे पूर्वी मोर्चे पर शत्रु की प्रगति रोक दी गई। यही नही बल्कि सेना के दाहिने पक्ष ने आगे बढकर, आक्रमण करके उराल्स्क पर अधिकार कर लिया। दखल देने के लिए आई हुई चैक सेनाओ से कोलचक की सेना के मिलन की सम्भावना खतम हो गई। दक्षिण और उत्तर–दोनो ओर से इतने जबर्दस्त प्रहार किए गये कि कोलचक के पैर उखड गये।

पूर्वी मोर्चे मे लौटने के बाद, स्तालिन पर राज्य नियत्रण के सगठन का काम पडा। मार्च सन् 1919 मे लेनिन के कहने पर उन्हे राज्य नियत्रण का जन कमीसार नियुक्त किया गया। स्तालिन ने अपनी स्वाभाविक तत्परता के साथ मजूर किसान निरीक्षण जन कमीसारियत का सगठन किया। उन्हे इस काम मे अप्रैल सन 1922 तक लगा रहना पडा। सेना के लिए इस कमीसारियत की कितनी जरूरत थी, इसे कहने की आवश्यकता नही।

स्तालिन की पहली शादी उनके फरारी क्रातिकारी जीवन के समय एकातेरीना से हुई थी। उससे एक लडका हुआ था। एकातरिना सन 1917 मे निमोनिया से मर गई थी। बाकू मे काम करते समय, स्तालिन के सहकारियो मे अलीलुयेफ भी था। एक बार स्तालिन पीतरबुर्ग मे इन्ही के घर मे गिरफ्तार हुए थे। क्राति के समय लेनिन और स्तालिन अलीलुयेफ परिवार मे छिपकर रहे थे। यही रहते समय, अलीलुयेफ की छोटी लडकी नादेज्दा से स्तालिन का परिचय हुआ था। उसकी बडी बहिन ओल्गा प्रधान कार्यालय मे काम करती थी। नादेज्दा सन 1901 मे बाकू मे पैदा हुई थी और घर के कामो मे निपुण होने के साथ पार्टी के काम मे भी बडे उत्साह से योग देती थी। सन 1918 मे स्तालिन ने नादेज्दा से शादी की। स्तालिन के लिए वैयक्तिक जीवन का बहुत कम महत्त्व था इसीलिए उनके बारे मे बहुत कम लिखा गया है। स्तालिन के जीवन की महत्ता और बहुमूल्यता जिस काम के लिए थी लोगो का ध्यान उसी तरफ ज्यादा गया।

11 पेत्रोग्राद पर खतरा (सन् 1919)

कोलचक को मार भगाने मे बोल्शेविको ने सफलता पाई। लेकिन, पश्चिमी साम्राज्यवाद और उसके सैनिक नेता–चार्चिल को अपने सहकारियो को नष्ट होने देना कब पसन्द आ सकता था ? उन्होने पूर्वी मोर्चे से बोल्शेविको का ध्यान हटाने के लिए उत्तर मे पेत्रोग्राद पर आक्रमण करना चाहा। इसके लिए, एस्तोनिया मे जनरल यूदेनिच के नेतृत्व मे सफेद गारदो की सेना तैयार की गयी, जो बडी तेजी से पेत्रोग्राद की ओर बढने लगी। स्वय राजधानी के नासेनिक अड्डे क्रान्स्तात के बाल्तिक बेडे मे पुराने अफसरो के रूप मे दुश्मन के आदमी मौजूद थे, जिसके कारण कास्नयागोर्का और सेरयालोशद् जैसे कुछ महत्त्वपूर्ण सैनिक दुर्ग बोल्शविको के हाथ से निकल गये। उधर पश्चिम मे जनरल बुलक बलखोविच की सेनाएँ प्स्कोफ के सैनिक महत्त्व के स्थान तथा पेत्रोग्राद के पश्चिमी दरवाजे की ओर बढने लगी। इस आक्रमण मे अग्रेजी नौसैनिक बेडा भी भाग ले रहा था। इसी समय, पेत्रोग्राद मे षड्यत्र का पता लगा और मालूम हुआ कि इसमे सेना और नौसेना के सैनिक अफसरो का भारी हाथ है। यूदेनिच के पेत्रोग्राद के नजदीक पहुँचने पर प्स्कोफ को खतरा हो जाने और साथ ही भीतरी शत्रुओ के बिछे हुए जाल को देखकर ऐसा मालूम होने लगा कि क्राति खतम होने जा रही है। कम-से-कम चर्चिल और उसके

सहायक ऐसी ही आशा करने लगे थे। सफेद सेनाओं और पेत्रोग्राद के बीच का फासला क्षण-क्षण कम होता जा रहा था; लाल सैनिक पीछे हट रहे थे। लेकिन, लेनिन के पास एक ऐसा आदमो था जो ऐसे भयकर खतरों का दो बार सफलातपूर्वक मुकाबला कर चुका था। केन्द्रीय कमिटी ने तुरत स्तालिन को इस काम पर नियुक्त किया। तीन सप्ताहो मे ही, स्तालिन ने पासा पलट दिया। बीस दिन बीतते-बीतते सेना की भीतरी खराबियाँ, झिझक और किकर्तव्यविमूढता दूर हो गई। पेत्रोग्राद के कमकर और कम्युनिस्ट भारी सख्या मे युद्ध मे भाग लेनें लगे। भीतरी शत्रुओ को पकडकर, उनका सफाया कर दिया गया। दुश्मन के कदम रुक गये। इस लडाई में स्तालिन ने युद्ध सैनिक कार्रवाइयो मे भी भाग लिया था। उन्होने लेनिन को एक तार मे लिखा था :

"· क्रास्नयागोर्का और सेरेयालोशद् का काम ठीक कर देने के बाद, सभी किलो और किलेबदियो मे बडी तेजी से व्यवस्था कायम कर दी गई है। नौसैनिक विशेषज्ञ मुझे विश्वास दिला रहे हैं कि क्रास्नयागोर्का (लाल गिरि) पर अधिकार करने मे मैने नौसैनिक-विज्ञान के सभी सिद्धातो को उलट-पुलट दिया है।, मुझे सिर्फ इसका अफसोस है कि वह विज्ञान न जाने किसको कहते हैं। गोर्का पर इतनी जल्दी अधिकार करने का कारण था—मेरी ओर से बडी जबर्दस्त दखलदाजी और सैनिक कार्रवाइयो मे नागरिको का भी आम तौर स तत्परता स भाग लेना। इस कार्रवाई को करन के लिए जल और स्थल पर निकाली हुई दूसरी आज्ञाओ को रोककर, उनकी जगह हमारी अपनी आज्ञाओं को कार्यरूप मे परिणत किया गया था। मै आपको यह सूचित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ कि विज्ञान के लिए मेरे दिल मे भारी सम्मान रहते हुए भी, मै आगे भी इसी तरह करूँगा।"

किताबी ज्ञान-विज्ञान और स्तालिन जैसे प्रतिभा के धनी तथा व्यवहार मे निपुण व्यक्ति के ज्ञान मे कितना अन्तर हे, यह स्तालिन की इम कार्रवाई मे मालूम होता है। यह काई आकस्मिक घटना नही थी। द्वितीय महायुद्ध मे भी हिटलर और उसके सेनिक पडितो को स्तालिन के सामने मुँह की खानी पडी। मॉस्को और स्तालिनग्राद की भावी विजयो की तेयारी स्तालिन ने इसी समय, पेत्रोग्राद को बचाकर की थी। 6 दिन बाद के तार मे, इम युद्ध के बारे म स्तालिन ने फिर लिखा था

"हमारी सेनाओं का कायाकल्प होना शुरू हो गया है। इस सारे सप्ताह मे वैयक्तिक या सामूहिक पलायन या आत्म-समर्पण की एक भी घटना नही घटी। हजारो की सख्या म भगोडे सेना मे लौट आये। दुश्मन की सेना से भागकर, हमारी ओर आ मिलनेवालो को और अधिक सख्या मे देखा गया। एक सप्ताह मे अपने सारे हथियारो के लिए करीब करीब चार सौ आदमी हमारी सेना मे आकर शामिल हो गये है। कल स हमने अपना आक्रमण शुरू किया है। यद्यपि ऊपर से जिस कुमक का वचन दिया गया था, वह अभी तक हमारे पास नही आई है, लेकिन तब भी हम आगे बढने मे सफल हुए हैं। हमारे लिए अपनी पुरानी पॉत मे रहना असम्भव था, क्योकि वह पेत्रोग्राद के बहुत नजदीक थी। इस बार का हमारा आक्रमण सफल रहा। शत्रु सिर पर पैर रखकर भाग रहा है। आज हमारी पाँत क्रेनीवो, वरानिनो, स्लेपिवो और कस्कोवो पर है। हमने बहुत-से बन्दियो, तोपो, मशीनगनो और गोला-बारूद पर अधिकार कर लिया है। शत्रु—अग्रेजो के युद्ध-पोतों ने मुँह नही दिखाया। यह साफ है कि वह क्रास्नयागोर्का से डरते है, जो अब पूर्णतया हमारे हाथ मे हैं।"

इस प्रकार, स्तालिन न चर्चिल के मसूबो को विफल कर दिया। यूदेनिच को भाग कर एस्तोनिया मे शरण लेनी पडी थी। लेकिन, सबसे बडा ख़तरा सन् 1919 की शरद मे दिखाई पडा, जिसके बारे मे मानूइलूस्की ने लिखा है : "यह सारे गृह-युद्ध का निर्णायक और बहुत ही खतरनाक समय था।"

12 दक्षिणी मोर्चा (सन् 1919-20)

जिस तरह पूर्व से कोलचक ने और उत्तर से युदेनिच ने बोल्शेविको के लिए खतरा पैदा कर दिया था, अब वही काम दक्षिण से देनीकिन करने लगा। अब तक जर्मनी हथियार डाल चुका था। इग्लैड तथा फ्रास को युद्ध से छुट्टी मिल चुकी थी। अब विश्व पूँजीवाद को काल-स्वरूप दिखाई देने वाले, बोल्शेविको को पीछे पडना

जरूरी मालूम हुआ। देनीकिन को रुपयों और हथियारों से ही मदद नहीं मिल रही थी, बल्कि अंग्रेज और फ्रेंच जनरल स्टाफ उसकी पूरी तौर से सहायता कर रहा था। सफेद सेना ओरेल की ओर बढ रही थी; और सारी दक्षिणी युद्ध-पंक्ति खतरे में पड गई थी। एक ओर लाल सैनिक पीछे हट रहे थे और दूसरी ओर युद्ध-पंक्ति के पीछे स्थिति भयंकर हो गई थी। एक-एक क्षण मे अवस्था सगीन होती जा रही थी। ऐसी समस्याएँ सामने आ रही थीं, जिनके हल करने का एकाएक कोई उपाय नही सूझता था। युद्ध और गृह-युद्ध के कारण, रूस के तीन-चौथाई उद्योग-धधे नष्ट हो चुके थे। न कच्चा माल था, न ईंधन, न काम करने वाले। इसके कारण, बचे-खुचे कल-कारखाने भी बन्द थे। सारे देश मे, यहाँ तक कि मॉस्को मे भी—जो कि अब सोवियत की राजधानी बन चुका था—क्राति विरोधी अपने कामो मे बडे जोर-शोर से लगे हुए थे। हथियारो और लोहे के कारखानो वाला नगर तुला ख़तरे मे पड गया था। उसके निकल जाने पर, राजधानी मॉस्को को भी बचाना मुश्किल होता। एक बार फिर केन्द्रीय कमिटी की नजर स्तालिन की ओर गई और उसने उन्हे दक्षिण मोर्चे पर जाने के लिए कहा। सितम्बर सन् 1919 में क्रातिकारी युद्ध-परिषद् के सदस्य—स्तालिन ने दक्षिण का रास्ता लिया। मानूइलस्की मे लिखा है :

"आज इस बात का छिपाने की काई जरूरत नही है कि स्तालिन ने प्रस्थान करने से पहले (पार्टी) केन्द्रीय कमिटी पर तीन शर्तो को मानने के लिए जोर दिया था—(1) त्रॉत्स्की को दक्षिणी मोर्चे मे कोई दखल नही देना हागा और उसे अपनी जगह पर ही रहना पडेगा; (2) उन सैनिक नेताओ को, जिन्हे स्तालिन सैनिक स्थिति ठीक करने के लिए अयोग्य समझते हो, तुरन्त वापिस बुला लेना होगा; और, (3) इस काम के करने मे स्तालिन द्वारा चुने गये सक्षम नेताओं को तुरन्त ही दक्षिणी मोर्चे पर भेज देना होगा। कमिटी ने इन शर्तो को पूरी तोर से मान लिया था।"

सैकडो मील लम्बा दक्षिणी मोर्चा वोल्गा से पोलेड-उक्रइन की सीमा तक फैला हुआ था, जहाँ लाखो की सख्या में सैनिक जमा थे। अस्त व्यस्तता और शिथिलता को दूर करके, इतनी भारी सेना का सुव्यवस्थित रूप से सचालन करना आसान काम नही था। इसके लिए एक निश्चित योजना बनाकर चलना जरूरी था, जिससे कि सेना के हर एक भाग का मुस्तैदी के साथ अपने सामने के काम के लिए आगे बढाया जा सके। स्तालिन ने मोर्चे पर जाकर देखा कि सभी जगह भयकर विशृंखलता और अनुत्साह फैला हुआ है। कुर्स्क-ओरेल तुला की मुख्य रक्षा-पक्ति पर लाल सेना को हार खानी पडी थी। उसका पूर्वी पक्ष भी किसी ही तरह कायम था। दक्षिणी मोर्चे के लिए उच्चतर युद्ध कमिटी ने पिछले सितम्बर मे एक योजना बनाई थी, जिसके द्वारा लाल सेना के वामपक्ष को जारित्सीन से और दोन के मैदानो से नवोरोसिस्क तक की शत्रु-सेना पर आक्रमण करना था। स्तालिन को यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि सितम्बर की बनाई हुई योजना आज भी जरा परिवर्तन किए बिना उसी तरह बनी हुई थी। 'कोरिन की सैनिक टुकडी को आक्रमण करना है। उसका काम है—दोन और कूबान नदिया पर जाकर, शत्रु को नष्ट करना।'—स्तालिन ने इस योजना को बडे ध्यान से देखा, फिर निश्चय किया कि वह ठीक नही थी। कम-से-कम उस समय के लिए तो बिलकुल उपयुक्त नही थी। दो महीने पहले के लिए भले ही अच्छी रही हो; लेकिन तब से परिस्थितियाँ बदल चुकी थी। उस योजना से काम नही चलेगा, यह सोचकर स्तालिन ने लेनिन के पास नये सुझाव लिख भेजे। इस भाग्य-निर्णायक अवसर पर, लेनिन के पास भेजे हुए इस पत्र की कुछ पक्तियाँ थीं :

"दो महीने पहले उच्चतर कमिटी ने सिद्धात के रूप मे स्वीकार किया था कि मुख्य आक्रमण पश्चिम से पूर्व की ओर दोनेत्स्क की घाटी के भीतर से होना चाहिए। यह कार्रवाई नही की गई, क्योंकि गर्मियो मे दक्षिण से सेना के पीछे हटने के कारण पैदा हुई स्थिति उसके अनुकूल नही थी—अर्थात् दक्षिण-पूर्वी मोर्चे पर सेना के पुनर्विभाजन मे जो समय लगा, उससे देनीकिन ने फायदा उठाया। लेकिन, सेनाओं के पुनर्विभाजन के साथ मिलकर अब स्थिति बिलकुल बदल गई है। पूर्वी अष्टम सेना (पुराने दक्षिणी मोर्चे की एक प्रधान सेना) आगे बढी है, और दोनेत्स्क की घाटी उसके सामने है। बुदयन्नी-रिसाला जैसी दूसरी महत्त्वपूर्ण सेना भी आगे बढी है। लेत डिवीजन नामक एक नयी सेना की हमारी सेना में और

वृद्धि हुई है। एक महीने के भीतर, जब वह पुनः सगठित हो जायगी, तो वह देनीकिन को खतरा पैदा कर देगी।''' ऐसी स्थिति मे उच्चतर कमिटी को पुरानी योजना को कायम रखने के लिए क्या मजबूरी है ? इसका कारण स्पष्ट ही ऐसी हठधर्मी है जो कि हमारे गणराज्य के लिए बहुत ही खतरनाक और अदूरदर्शितापूर्ण हो सकती है, और जिसे सैनिक दावपेच के महान् विशेषज्ञ (त्रॉत्स्की) उच्चतर कमिटी द्वारा लालित-पालित कर रहे है।"

"कुछ समय पहले उच्चतर कमिटी ने कोरिन को दोन के कान्तार को पार करके, नवोरोसिस्क पर आगे बढने का आदेश दिया था। यह ऐसा रास्ता है, जो कि हमारे वैमानिको के लिए ही व्यवहार्य हो सकता है। हमारी सेना और तोपखाने का दोन कान्तार होते हुए आगे बढना असभव है। यह निपट लडकपन है। यह बतलाना बिलकुल आसान है कि शत्रु देश मे एक असम्भव पॉत के ऊपर होते हुए बढाव की यह योजना बिलकुल निर्बुद्धितापूर्ण है, और सत्यानाश का कारण बन जायेगी। यह बतलाना बिलकुल आसान है कि इस प्रकार कसाक गॉवो के ऊपर से बढने का एक ही फल होगा–जो कि कुछ ही समय पहले हो भी चुका है--अपने गॉवो की प्रतिरक्षा के लिए कसाको का देनीकिन के साथ मिल जाना, और देनीकिन को दोन का त्राता बनने का मौका देना अर्थात् देनीकिन को इस प्रकार अपने हाथो को मजबूत करने मे सफल होने देना। इसलिए, पुरानी योजना एक क्षण की भी देर किये बिना बदलनी होगी और उसकी जगह खरकोफ और दोनेत्स-घाटी के बीच से रस्तोफ के ऊपर केन्द्रीय आक्रमणवाली योजना स्वीकार करनी पडेगी। इस प्रकार, (1) शत्रु-देश के बीच से नही, बल्कि हमे मित्रतापूर्ण इलाको से गुजरना पडेगा जिसमे आगे बढने मे आसानी होगी, (2) हम दोनेत्स जैसी एक महत्त्वपूर्ण रेलवे लाइन–देनीकिन की सेना के सचार की मुख्य लाइन–वोरोनेज-रस्तोफ-लाइन पर अधिकार कर सकेगे, (3) हम देनीकिन की सेना को दो भागो मे काट देगे जिनमे से एक भाग (स्वय सेवको) को मखनो ठीक कर देगा, और हम कसाक सेना को पीछे मे खतरा पैदा कर देगे, (4) यह भी हो सकता है कि हम देनीकिन मे कसाको को नाराज करा दे, क्योकि यदि हमारा बढाव कामयाब रहा तो देनीकिन कसाको को पश्चिम की ओर हटाने की कोशिश करेगा, जिसे अधिकाश कसाक मानने से इन्कार कर देगे, और (5) हमे कोयला मिल जायेगा, जबकि देनीकिन को कुछ भी कोयला नही मिल सकेगा। अभियान की इस योजना को स्वीकार करने मे जरा भी देर नही करनी चाहिए। सक्षेपतः, हाल की घटनाओ के कारण अब समय से पिछडी हुई पुरानी योजना किसी भी हालत मे काम मे नही लानी चाहिए, क्योकि यह गणराज्य के लिए खतरा पैदा करते हुए, देनीकिन की स्थिति को बेहतर बनाने का कारण अवश्य होगी। उसकी जगह एक नई योजना स्वीकार करनी होगी। उसके लिए परिस्थितियॉ और अनुकूलताएँ भी पूरी मात्रा मे मौजूद है, बल्कि इस तरह के परिवर्तन की भारी आवश्यकता है। अन्यथा, दक्षिणी मोर्चे पर मेरा काम व्यर्थ, अपराधपूर्ण और बेकार हो जायेगा, जो मुझे अधिकार देता या मजबूर करता है कि मै यहॉ न रहकर चाहे जहॉ, शैतान के पास भी, चला जाऊँ।-आपका, स्तालिन।"

केन्द्रीय कमिटी ने स्तालिन की योजना मानने मे जरा भी आनाकानी नही की। लेनिन ने अपने हाथो दक्षिणी मोर्चे के जनरल स्टाफ को लिखकर, उन्हे अपनी आज्ञाओ को बदलने का हुक्म दिया। लाल सेना ने दोनेत्स-रस्तोफ घाटी मे खरकोफ के ऊपर मुख्य आक्रमण किया और इसका फल हुआ–सन् 1920 के आरभ मे देनीकिन की सेना को कालासागर के किनारे तक ढकेल देना। उक्रइन और उत्तरी काकेशस सफेद गारदो के हाथ से छीन लिये गये और गृह-युद्ध की निर्णायक विजय बोल्शेविको के ही हाथ रही। इस युद्ध मे स्तालिन के सहायक थे–वारोशिलोफ, ओर्योनिकिद्जे, किरोफ, बुदयोन्नी, श्वादेको और मेखली।

सितम्बर सन् 1919 मे केन्द्रीय कमिटी ने स्तालिन को दक्षिणी मोर्चे की ओर भेज, 'देनीकिन के विरुद्ध लडने के लिए सभी चलो'–का नारा दिया था। इसी समय बुदयोन्नी के नेतृत्व मे प्रथम सवार-सेना सगठित हुई।

देनीकिन की पराजय के बाद, सोवियत गणराज्य को जो थोडा-सा समय मिला, उसी मे लेनिन ने स्तालिन को युद्ध से नष्टप्राय उक्रइन की अवस्था सुधारने के लिए भेजा। सन् 1920 की फरवरी और मार्च मे स्तालिन

इस काम पर जुट पड़े। उद्योगो को फिर से चालू करने के लिए कोयला बहुत जरूरी था। कल-कारखानों को चालू किए बिना, देश को न सैनिक और न आर्थिक तौर से ही सबल बनाया जा सकता था। स्तालिन ने 'रूस के लिए कोयला उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितनी की देनीकिन पर विजय थी'—कहते हुए, मार्च सन् 1920 में कमकर सेना को उत्साहित किया और थोडे ही दिनो मे कोयले की पैदावार तथा रेलों का काम बहुत कुछ सुधर गया।

12. रेंगल की पराजय (1920)

देनीकिन के हारने के बाद, चर्चिल और उसके साथियो ने अब बैरन रेगल की पीठ ठोकी और अगस्त सन् 1920 मे फिर उसी जगह भयकर लडाई छिड गई, जहाँ से देनीकिन को भागना पड़ा था। 2 अगस्त, 1920 को केन्द्रीय कमिटी ने निश्चय किया

"रेगल की सफलताओ और कूबान के खतरे को देखते हुए, रेंगल-मोर्चे को जबर्दस्त महत्त्व वाला एक बिलकुल स्वतत्र मोर्चा मानकर, उसकी अलग व्यवस्था करनी होगी। साथी स्तालिन को आदेश दिया जाता है कि वह एक क्रातिकारी सैनिक-परिषद् बनाकर, अपना सारा प्रयत्न रेगल-केन्द्र पर लगाये।"

जिस समय (अप्रैल सन् 1920 मे) रेगल ने दक्षिण मे आक्रमण शुरू किया, उसी समय साम्राज्यवादियो की शह पर पोल सरकार ने भी सोवियत-भूमि पर आक्रमण करके, उक्रइन की राजधानी कियेफ पर अधिकार कर लिया। स्तालिन ने जाकर रेगल के विरुद्ध प्रतिरक्षा की तैयारी की और लडाई की योजना बनाई। 3 अगस्त, 1920 को केन्द्रीय कमिटी ने निम्न प्रस्ताव पास किया .

"स्तालिन को क्रातिकारी सैनिक-परिषद् बनाने का काम देना होगा। सभी उपलब्ध सेनाओ को इसी मोर्चे पर लगाना होगा। इगोरोफ या फ्रुजे को इसी मोर्चे की कमाड देनी होगी, जैसा कि स्तालिन के साथ सलाह करके उच्चतर परिषद् ने तय किया है।"

स्तालिन ने नये मोर्चे का सगठन किया, लेकिन इसी समय बीमार पड जाने से उन्हे वहाँ से हटना पड़ा। तो भी, उन्ही की बनाई हुई योजना के अनुसार फ्रुजे ने रेगल को भगाने मे सफलता पाई।

13 पोलिश मोर्चा (सन् 1920)

रेगल के खिलाफ लडाई होते समय, बीमारी के कारण स्तालिन को वहाँ से चला आना पड़ा था, लेकिन पोलैड के क्राति-विरोधियो से लोहा लेने के समय वह फिर मैदान मे आ गये थे। स्तालिन का अर्थ ही अब विजय हो गया था और, पुराने श्लोक को जरा-सा बदलकर, हम कह सकते हैं : 'यत्र युक्तीश्वरो लेनिन, यत्र स्तालिन धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।' पोलिश सेना पछाडी गई। कियेफ और उक्रइन मुक्त कर लिये गये। लाल सेना गलीसिया के बहुत भीतर तक घुस गई। कियेफ, बेदीचेफ और जितोमिर मे तृतीय पोलिश सेना के प्रायः पूर्णतया नष्ट हो जाने के बाद, पोलिश-मोर्चा खतम हो गया। एक ओर लाल रिसाला लूवोफसर पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था, और दूसरी ओर लाल सेना पोलैण्ड की राजधानी वारसा के पास पहुँच गई थी। इस पर पोलो ने सर्वस्व की बाजी लगाकर, बोल्शेविक सेना को हराया। इसका कारण था, कुछ सफलता दिखलाने के लिए लालायित युद्ध-मत्री त्रॉत्स्की को अपनी बेवकूफी दिखलाने का मौका मिल जाना। विजय की सफलता से फूले न समाते हुए, गोला-बारूद और सर्दी का इन्तजाम किए बिना ही, त्रॉत्स्की ने एक सेना को वारसा पर अधिकार करने के लिए भेज दिया था, जिसके कारण ही यह पराजय हुई और जिसका परिणाम यह हुआ—पश्चिमी उक्रइन और पश्चिमी बेलोरुसिया का सन् 1919 से बीस वर्षों के लिए पोलों के हाथ मे चला जाना।

लेनिन की प्रेरणा से 27 नवम्बर, 1919 को अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति ने गृह-युद्ध की विजयो के उपलक्ष्य मे, स्तालिन को लाल झडे का तमगा प्रदान किया। इग्लैंड, फ्रास तथा दूसरे साम्राज्यवादी देशो ने गृह-युद्ध मे क्राति-विरोधियो को धन और सामान से सहायता देकर ही सतोष नहीं किया, बल्कि हार

के बाद जब जर्मनी की सेनाएँ रूस से हटी तो फ्रेच और अग्रेजी सेनाएँ जल और स्थल–दोनों मार्गों से रूस के भीतर घुसकर लूट-मार करने तथा वहाँ के निवासियो के खून से हाथ रँगने लगी। जो भी हाथ आये, कल-कारखाने आदि सबको उन्होने बेदर्दी से नष्ट कर दिया। जर्मन सेना ने रूस से बाल्तिक तक के प्रदेश (लिथुवानिया, लेत्विया और एस्तोनियाँ) और फिनलैंड छीन लिये थे। फ्रैंच-ब्रिटिश साम्राज्यवादियो ने पश्चिमी उक्रइन और बेलोरुसिया के कितने ही भाग को देकर, पोलैंड मे एक नया राज्य कायम कर दिया; उन्होने कालासागर के तटवर्ती बेसराबिया को छीनकर रूमानिया को दे दिया। यह स्मरण रखने की बात है कि जिस समय यह काम किया जा रहा था, उस समय फ्रास या इग्लैंड की रूस से कोई लडाई नही थी। फ्रास के एक बडे नेता रेने पिनो के अनुसार : "यह दखल देना, एक विदेशी राज्य के भीतरी कामो मे दखल देना भर नही था, बल्कि साथ ही एक देश तथा उसके साथ सारी दुनिया को, एक (खतरनाक) सामाजिक और सामान्य व्यवस्था (बोल्शेविज्म) के खतरे से मुक्ति दिलाने का प्रयन्न था (1)" सारी दुनिया के प्रतिगामियो की पीठ ठोकने और हर तरह की मदद देने के लिए, जिस तरह द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमरीका तैयार हुआ है, वही काम प्रथम विश्वयुद्ध के बाद इग्लैंड और फ्रास ने किया था। इस काम मे उस समय इग्लैड का अगुवा वही चर्चिल था, जिसने द्वितीय युद्ध की समाप्ति के समय अमरीका को शह देकर, हिरोशिमा और नागासाकी पर अणुबम गिरवाकर नृशस नरसहार कराया है।

गृह युद्ध की इन घटनाओ से मालूम होगा कि स्तालिन एक तिकडमी आदमी या केवल लेनिन की रबड-मुहर नही थे। उनके पास मौलिक प्रतिभा थी, जिसका चमत्कार उन्होने पद-पद पर दिखलाया है।

पूँजीवादी अखबार ओर उनके भरमाये हुए दूसरे आदमी, स्तालिन और बोल्शेविको पर यह दोष लगाते है कि उन्होने अपने शत्रुआं के साथ हद से अधिक कठोरता का बर्ताव किया है। स्तालिन ने इसके बारे मे सन् 1931 के अन्त मे, एक वार्तालाप के दौरान मे कहा था :

> "जिस समय बोल्शेविको ने अधिकार सँभाला, उस समय उन्होने अपने शत्रुओ के प्रति बडी नर्मी दिखानी चाही थी। मन्शेविक काफी समय तक कानूनी तौर से रहते और अपना पत्र भी निकालते थे। यही बात समाजवादी क्रातिकारियो की थी। यहाँ तक कि कादेत भी अपना पत्र निकालते थे। जनरल क्रस्नोफन क्राति-विरोधी सेना लेकर पेत्रोग्राद पर कूच करते हुए, हमारे हाथ मे पड गया था। युद्ध के नियमो के अनुसार, उसके साथ हम चाहे कुछ भी कर सकते थे या कम-से-कम कैदी बनाकर तो रख सकते थे, उसे गोली से भी मरवा सकते थे, लेकिन हमने उसे पैरोल (वचन बदी) पर छोड दिया था। लेकिन, उसका फल क्या हुआ ? हमने जल्दी ही देख लिया कि इस तरह की नर्मी सोवियत शक्ति की स्थिरता को कमजोर बनाती है और कमकर वर्ग के शत्रुओ के प्रति इस तरह की सहिष्णुता का परिचय देकर हम गलती कर रहे हैं। अगर हम आगे भी इस तरह की नर्मी जारी रखते, तो यह कमकर वर्ग के प्रति हमारा अपराध होता, उनके हितो के प्रति विश्वासघात होता। जल्दी ही हमारे सामने यह बात स्पष्ट हो गई। हमने जल्दी ही मालूम कर लिया कि अपने शत्रुओ के प्रति हम जितनी ही अधिक उदारता दिखलाते हैं, वह उतनी ही अधिक मजबूती के साथ हमारा प्रतिरोध करते हैं। थाडे ही समय बाद, समाजवादी क्रातिकारी गोत्ज आदि और दक्षिण पथी मेन्शेविको ने पेत्रोग्राद के सैनिक-स्कूल मे विद्रोह सगठित किया, जिसके कारण हमारे बहुत-से क्रातिकारी नौ-सैनिको की जाने गई। जिस क्रास्नोफ को हमने पैरोल पर छोड दिया था, उसने हमारे विरुद्ध सफेद कसाको को सगठित किया, ममन्तोफ से मिलकर दो साल तक सोवियत सरकार के विरुद्ध हथियारबन्द लडाई की।··· यह आसानी से समझा और देखा जा सकता है कि अधिक नर्मी दिखलाकर हमने गलती की थी।"

प्रसिद्ध फ्रैंच लेखक औंरी बारबुस ने उक्त उद्धरण देते हुए, यह भी कहा था :

"इसके अतिरिक्त, मैं स्तालिन की उस बात को भी जोडता हूँ, जो कि उन्होने मुझसे सात वर्ष पहले (सन् 1927 मे) प्रसिद्ध 'लाल-आतक' के सम्बन्ध मे कही थी। वह मृत्यु-दड के बारे मे बाते कर रहे थे : 'हम सभी मृत्यु-दड बन्द करने के पक्ष मे हैं। सचमुच हमारा विश्वास है कि सोवियन सघ के

शासन-प्रबन्ध में इसको रखने की आवश्यकता नही है। हमने मृत्यु-दंड को कभी का खतम कर दिया होता, यदि बाहरी दुनिया, बड़े साम्राज्यवादी राज्य, हमे अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए, उसे कायम रखने पर मजबूर न किए होते।"

उपनेता (सन् 1921-23)

गृह युद्ध मे भीतरी और बाहरी शत्रुओ को करारी हार देने के बाद, यद्यपि लडाई से छुट्टी मिल गई थी, लेकिन सोवियत नेताओ के सामने पुनर्निर्माण का भारी काम था। सन् 1914 के महायुद्ध ने रूस के चालीस अरब सुवर्ण रूबल की सम्पत्ति का नुकसान पहुँचाया था। कमकर जनता के एक-तिहाई का खून हो चुका था। सन् 1913 की अपेक्षा, सन् 1921 मे उद्योग-धधो, उपज और यातायात का पाँचवाँ या छठवाँ हिस्सा ही शेष रह गया था। गृह-युद्ध के समय पचास अरब रूबल की सम्पत्ति और भी नष्ट हो गई थी। सभी कारखाने ध्वस्त हो गये थे। सारे देश मे युद्ध की आग भडकने के कारण, आधे खेत परती पड गये थे। शासन-व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, सभी अस्त-व्यस्त थी। लाल सेना के पास राइफलो और बूटो की ही नही बल्कि रोटियो की भी कमी थी। ऊपर से बडे बडे साम्राजी राज्य देश पर कहर ढा रहे थे। फ्रास के क्लेमेन्सो और प्वानकारे तथा इग्लैड के लायड जार्ज और चर्चिल, चौदह राष्ट्रो को लेकर सोवियत शक्ति को नेस्तानाबूद करने पर तुले हुए थे। कोलचक की सेना को 'फ्रैच सरकार ने सत्रह सौ मशीनगनें, तीस टैक और दर्जनो बडी-बडी तोपे दी थी। कोलचक के साथ मिलकर, आक्रमण करनेवालो मे हजारो अग्रेज और अमरीकन सिपाही, सत्तर हजार जापानी और करीब साठ हजार चकोस्लावाकी सिपाही भी थे। देनीकिन की सेना के साठ हजार आदमियो को इग्लैंड ने अपने हथियारो और गोला बारूद से लैस करते हुए, उसे दो लाख राइफिले, दो हजार बन्दूके और तीस टैक दिए थे, साथ ही सेना को सलाह और शिक्षा देने के लिए सैकडो अग्रेज ऑफसर भेजे थे। साइबेरिया को रूस से छीनने के लिए, साम्राज्यवादियो ने ब्लादीवास्तोक पर अपनी सेना उतारी, जिसमे दो जापानी डिवीजन, दो अग्रेजी बटालियने, 6 हजार अमरीकी और तीन हजार फ्रेच तथा इटालियन थे। रूस के गृह-युद्ध मे इग्लेड ने चौदह करोड पौड ओर पचास हजार सिपाहियो की जाने होमी थी। पश्चिमी साम्राज्यवादियो ने खूनी दखलदाजी करके, रूस मे जो सत्यानाश मचाया, उसमे चौवालीस अरब सुवर्ण रूबल की सम्पत्ति का सत्यानाश हुआ था। सन् 1921 मे रूस मे एक फ्रैच एडमिरल अपनी सरकार का प्रतिनिधि बनकर भी, सोवियत सरकार के शत्रुओ को खुले आम सरक्षण दे रहा था। फ्रास ने बहुत बाद तक वह काम किया, जिसे करने की हिम्मत तब इग्लैंड और तुर्की भी नही करते थे। गुर्जी से भागे हुए क्राति-विरोधी योरदानिया ओर चकेली को फ्रैंच सरकार गुर्जी के मुखिया और राजदूत के तौर पर स्वीकार करती थी। उसने कोलचक को शासक स्वीकार किया था, और रेंगल के बारे मे भी वही करने जा रही थी।

गृह-युद्ध के बाद, एक और भारी खतरा पार्टी के भीतर पैदा हो गया था। बोल्शेविको ने त्रॉत्स्की जैसे बहुत-से छोटे-बडे ढुलमुलयकीनो को खुल्लमखुल्ला विरोधी न होने देने के लिए अपने भीतर ले लिया था। उन्होने अपनी बेवकूफी से गृह-युद्ध के समय भारी हानि पहुँचाई ही थी। अब पुनर्निर्माण के समय, वह उससे भी ज्यादा विरोध करने के लिए तैयार थे। सन् 1920 मे लेनिन की सिफारिश पर, राज्य बिजलीकरण-कमीशन (गो-एल-रो) स्थापित किया गया था, जिसने देश के बिजलीकरण के लिए दस वर्षो की एक योजना का काम पहले-पहल यही से शुरू हुआ। त्रॉत्स्की ओर रुइकोफ ने इस योजना का विरोध करना शुरू किया; जब कि योजना की एक कापी के साथ लेनिन का पत्र पाकर स्तालिन ने तुरन्त जवाब दिया था कि यह एक सच्ची आर्थिक योजना है, और उनके विचार में 'आज के समय मे आर्थिक तौर से पिछडे हुए रूस के सोवियत वाले ऊपरी ढाँचे

को वस्तुतः व्यावहारिक टेकनीक तथा उत्पादन के आधार पर आधारित करने का एक मात्र मार्क्सवादी प्रयत्न है।'—स्तालिन ने जोर देकर कहा कि उसे काम मे लाने मे देर नही करनी चाहिए और सारे काम का कम-से-कम एक-तिहाई इसी योजना में लगना चाहिए। लेकिन, त्रॉत्स्की और उसके अनुयायियो का कहना था कि युद्धकालीन साम्यवादी नीति को, अब भी शातिकालीन आर्थिक क्षेत्र और पार्टी के काम मे बर्ता जाय तथा फदे को ढीला करने की जगह और भी कस दिया जाय।

1. दशम कांग्रेस (मार्च सन् 1921)

यह बोल्शेविक पार्टी की वही काग्रेस थी, जिसमे युद्धकालीन साम्यवाद नीति की जगह लेनिन द्वारा प्रस्तावित नवीन आर्थिक नीति के प्रोग्राम को स्वीकार किया गया था। इसी काग्रस मे स्तालिन ने जातीय समस्या के सम्बन्ध मे पार्टी के सामने फ़ौरी विषयों पर अपनी रिपोर्ट दी थी, जिसमे काग्रेस ने स्पष्ट माना था कि गो जातीय उत्पीडन मिटा दिया गया है लेकिन वह काफी नही है। उन्हे अतीत के बुरे दाय भाग को भी खतम करना है, जिसका अर्थ है—भूतपूर्व दलित जातियों के आर्थिक, राजनीतिक और सास्कृतिक पिछड़ेपन को खतम करना, इन सभी बातो मे उन्हे रूस के लोगो के बराबर लाना। नवीन आर्थिक नीति का जबर्दस्त समर्थन करते हुए, स्तालिन ने उसकी व्याख्या की थी : "नवीन आर्थिक नीति सर्वहारा राज्य की एक विशेष नीति है, जो पूँजीवाद को सहन करते हुए, लेकिन अहम् स्थानो को सर्वहारा राज्य के हाथों मे रखते हुए, पूँजीवादी और समाजवादी तत्त्वो के सघर्ष मे समाजवादी तत्त्वो के महत्त्वपूर्ण विकास के लिए पूँजीवादी तत्त्वो के मत्थे, पूँजीवादी तत्त्वों के ऊपर समाजवादी तत्त्वो की विजय और वर्गो के खतम करने तथा समाजवादी आर्थिक व्यवस्था की नीव रखने के उद्देश्य से बनाई गई है।" स्तालिन ने जातीय प्रश्न पर कहा था : "उन जातियो को आर्थिक और सास्कृतिक सहायता देने की ओर बहुत ध्यान देना चाहिए, जो कि जारशाही शासन मे उपेक्षित और पद-दलित रही थीं, जिससे क्राति-विरोधियो को उन्हे भडकाने का मौका न मिले। स्तालिन ने सबसे पहले जातीय समस्या को हल करने के महत्त्व को समझा, उसकी तरफ बोल्शेविकों का ध्यान आकृष्ट किया था। प्रथम युद्ध से एक साल पहले, उन्होंने अपने विचारो को एक पुस्तक के रूप मे पेश किया था, लेनिन ने भी जिसकी दूरदर्शिता की दाद दी थी। इसमे शक नहीं कि शाति, किसानों को खेत और मजदूरो को कारखानों पर अधिकार देने के साथ-साथ जातियो की स्वतत्रता की अभिलाषा को प्रोत्साहन देना भी अक्तूबर-क्राति की सफलता का एक कारण था। स्तालिन ने लिखा था : "कालचक और देनीकिन को मार भगाने मे हम इसीलिए सफल हुए कि दलित जातियो की सहानुभूति हमारे साथ थी।" सन् 1917 मे राज्य के सभी मुसलिम कमकरो को सम्बोधित करते हुए, लेनिन और स्तालिन ने अपने हस्ताक्षरो से एक घोषणा निकाली थी, जिसमे कहा गया था :

> "तुर्किस्तान, साइबरिया, काकेशिया और वोल्गा के प्रदेशों मे जगह-जगह बिखरे हुए करोडो लोगो को दूसरो के बराबर लाना हमारा पहला कर्तव्य होगा।"

और, यह कर्तव्य उन्होने जनता को मुगालते मे रखने के लिए पेश नही किया था। सोवियत के भाग्य-विधाताओ ने उस पर सच्चे दिल से अमल करने का निश्चय किया था। जातियो की अपनी विशेषताओं—समष्टिगत नैतिक और बौद्धिक राष्ट्रीय सस्कृति, राष्ट्रीय परम्परा, जनकथाओ मे प्रकट होनेवाली प्रत्येक वस्तु, कला और कला-सम्बन्धी सृजन, मानसिक उत्पादन तथा पारिवारिक भावना और पूर्वजों के अभिमान, मातृभाषा द्वारा किये जानेवाले हर एक काम—इन सभी चीजो को सिर्फ सुरक्षित ही नही रखने, बल्कि बोल्शेविकों ने उन्हें और भी समृद्ध करने का भार अपने ऊपर लिया। उन्होंने जातीय समस्याओं को केवल राष्ट्रीय दृष्टिकोण से ही नही, बल्कि प्रादेशिक दृष्टिकोण से भी सुलझाने का प्रयत्न किया। जहाँ तक जातीय धर्मों का सम्बन्ध था, वह कही भी स्थानीय उपज नही थे। ईसाई धर्म जारो के साथ बाहर से आया था; इसलाम को अरब गाजियो ने बडी खून-खराबी के बाद मध्य एशिया मे फैलाया था; —तो भी, सोवियत-अधिकारियो ने उनको छेडा नही, और सिर्फ बहुपत्नी-विवाह तथा मठो की सम्पत्ति जैसे सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रो मे ही उनके अनुचित दखल को बन्द किया। जातियो के सम्बन्ध मे स्तालिन का नुस्खा बहुत ठीक साबित हुआ। द्वितीय

विश्व-युद्ध ने भी उसकी पुष्टि की। इस सम्बन्ध मे स्तालिन ने एक बार कहा था :

"सोवियत देश-भक्ति की शक्ति इस बात पर आधारित है कि वह नस्ली या राष्ट्रीय पक्षपातों पर आधारित न होकर, सोवियत-मातृभूमि के प्रति जनता की पूर्ण भक्ति और विश्वास पर, हमारे देश मे रहनेवाली सभी जातियो के कमकरो के भाईचारे वाले सहयोग पर निर्भर है। लोगो की राष्ट्रीय परम्पराओ तथा सोवियत सघ की सभी कमकर जनता के मुख्य एकसमान हितो के साथ सोवियत देश-भक्ति का बडा ही सुन्दर सम्मिश्रण है। यह देश-भक्ति बिना भेद-भाव के, बिना बिलगाव के सभी जातियो को एक भ्रातृभावपूर्ण परिवार मे एकताबद्ध करती है।"

सन् 1921 की गर्मियो मे स्तालिन बीमार पड गये थे। लेनिन को अपने इस इकलौते बेटे जैसे शिष्य के लिए बडी चिन्ता हुई। उन्होंने सर्गो ऑर्योनिकिद्जे को तुरन्त तार दिया .

"कृपया मुझे बतलाओ कि स्तालिन का स्वास्थ्य कैसा है और डाक्टरो की क्या राय है ?"

जवाब पाकर, लेनिन ने फिर तार दिया

"स्तालिन की चिकित्सा करनेवाले डाक्टर का नाम और पता भेजो। वह कितने समय से बीमार है ?"

सन् 1921 की शरद मे, लेनिन ने क्रैमलिन के अधिकारी को लिखा था · "रसोईघर के पास सोने मे बाधा होती है, इसलिए स्तालिन को किसी और आरामदेह मकान मे ले जाना चाहिए।" लेनिन ने इस काम को तुरन्त करने के लिए हुक्म देते हुए, यह भी पूछा था . "मुझे सूचित करो कि तुम इसे कर सकते हो या नही और कर सकते हो, तो कब ?" लेनिन ने दिसम्बर मे अपने सेक्रेटरी के पास नोट लिखा रखा था कि वह रोज सवेरे इस बात को याद दिलाया करे कि स्तालिन को देखना है, और उससे पहले स्तालिन के डाक्टर के साथ टेलीफोन का सम्बन्ध भी जोड दे। यह समझना बिलकुल आसान है कि अप्रतिम स्तालिन मे लेनिन ने अपनी भविष्य की सारी आशाओ को केन्द्रित देखा था। उनकी अपनी कोई सतान नही थी। स्तालिन मे उनका अपने पुत्र जैसा ही वात्सल्य निहित था।

बीमार पडने से पहले 6 जुलाई, 1921 को स्तालिन ने तिफलिस के पार्टी सगठनो की एक सभा मे भाषण दिया था। वहाँ पर भी राष्ट्रवादी मध्यवर्ग अपना दूसरा ही रास्ता पकडना चाहता था और सारे काकेशिया का फैडरल सोवियत गणराज्य बनाने मे सहमत नही था। लेनिन ने इस बात को पसन्द किया और स्तालिन ने वहाँ फैडरल गणराज्य कायम कर दिया था।

2. ग्यारहवी काग्रेस (सन् 1922)

नवीन अर्थनीति का एक साल बीत गया था, जब कि सन् 1922 की मार्च-अप्रैल मे पार्टी ने इस काग्रेस मे नई नीति के परिणामो पर विचार किया। इसी समय, लेनिन ने घोषित किया था .

"एक साल तक हम पीछे हटते रहे, लेकिन अब पार्टी के नाम पर हमे, 'ठहरो' कहना है। पीछे हटने का जो उद्देश्य था, वह पूरा हो गया है। वह काल खतम हो रहा है, या हो चुका है। अब हमारा उद्देश्य दूसरा है, वह है–अपनी शक्तियो को एकत्रित करना।" इसी काग्रेस मे 3 अप्रैल को लेनिन के प्रस्ताव पर, केन्द्रीय कमिटी के प्लेनम (बडी बैठक) मे केन्द्रीय कमिटी ने स्तालिन को महामत्री निर्वाचित किया। पार्टी मे यह नया और बडा महत्त्वपूर्ण पद था, जो अतिम समय तक स्तालिन के हाथ मे रहा। भविष्य ने लेनिन के इस काम को सर्वथा उचित सिद्ध किया। स्तालिन विरोधी प्रेओब्रजेन्स्की ने इसकी आलोचना करते हुए कहा था कि स्तालिन पहले ही से दो विभागो–जातीय विभाग और कमकर-किसान-निरीक्षण-विभाग के जन-कमीसार हैं। इस तरह, उनके हाथ मे और शक्तियो को देना अच्छा नही है। इस पर लेनिन ने कडा जवाब देते हुए कहा था :

"प्रेओब्रजेन्स्की ने हल्कापन दिखलाते हुए शिकायत की है कि स्तालिन के हाथ मे दो विभाग दे दिए गये हे।' लेकिन, जातीय विभाग के जन-कमीसार के पद की वर्तमान स्थिति को कायम रखने और तुर्किस्तान, काकेशिया तथा दूसरे सभी प्रश्नो की गहराई तक पहुँचने के लिए हम और क्या कर सकते हैं ? आखिर यह राजनीतिक समस्याएँ हैं, और इन समस्याओ को हल करना होगा। यह ऐसी समस्याएँ हैं जो कि यूरोपीय राज्यो

को सैकड़ो वर्षों से परेशान किये हुए हैं; और जो जनतात्रिक गणराज्यों मे भी बहुत थोडे ही परिणामों के साथ हल की गई हैं। हम इन समस्याओ को हल कर रहे हैं, जिसके लिए हमारे पास एक ऐसा आदमी होना चाहिए जिसके पास जातियो का कोई भी प्रतिनिधि आकर सम्बन्धित विषयो पर सविस्तार बातचीत कर सके। हम ऐसा आदमी कहाँ से पायेंगे ? मै समझता हूँ कि इस काम के लिए प्रेओब्रजेन्स्की भी साथी स्तालिन को छोडकर किसी दूसरे आदमी का नाम नही दे सकते। यही बात कमकर-किसान निरीक्षणालय के बारे मे भी है। यह बहुत जबर्दस्त काम है। लेकिन, जॉच-पडताल के काम को ठीक मे करने के लिए, हमे एक अधिकारयुक्त आदमी की आवश्यकता है, नही तो हम छोटी-छोटी तिकडमो मे ही डूब जायेगे।"

3 लेनिन का निधन (सन् 1924)

सन् 1918 मे क्राति-विरोधियो द्वारा बहकाई हुई, एक स्त्री ने लेनिन पर मरणान्तक आक्रमण किया था। यद्यपि उससे उसी वक्त उनकी जान नही गई, लेकिन छाती मे मर्मस्थान पर गोली लगने से लेनिन का स्वास्थ्य हमेशा के लिए बिगड गया था; और सन् 1921 के अन्त से ही उन्हे काम से अक्सर अलग रहना पडता था। तभी से पार्टी की सारी जिम्मेवारी स्तालिन के कन्धो पर थी। इसी समय, स्तालिन ने जातीय सोवियत गणराज्यो का निर्माण तथा सारे सोवियत गणराज्यो को मिलाकर एक सघ-राज्य--सोवियत समाजवादी गणसघ--का निर्माण किया। सन् 1922 की गर्मियो मे लेनिन की बीमारी भयकर हो उठी। उस समय स्तालिन बराबर अपने गुरु को देखने जाया करते थे और डाक्टरो की आज्ञा होने पर राजकाज की बातो को भी बतलाते थे। जैसे ही लेनिन का स्वास्थ्य कुछ ठीक हुआ, वैसे ही उन्होने स्तालिन को मिलने के लिए बुलाया। स्तालिन ने अपने सस्मरणो मे बतलाया है कि लेनिन सभी राजनीतिक परिस्थितियो मे कितनी दिलचस्पी लेते थे।

अक्तूबर सन् 1922 मे लेनिन का स्वास्थ्य इतना अच्छा हो गया था कि उनके डाक्टरो ने काम पर जाने के लिए इजाजत दे दी थी। वह जन-कमीसार-परिषद् (मत्रिमडल) की बैठको मे जाने लगे। उसी महीने मे, केन्द्रीय कमिटी की एक प्लेनरी (बडी) मीटिग मे भी शामिल हुए। वह सोवियतो की अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी कमिटी की चतुर्थ काग्रेस मे भी बोले, और उन्होने कम्युनिस्ट इण्टर्नेशनल की चतुर्थ काग्रेस मे नवीन आर्थिक नीति और विश्व-क्राति की सम्भावना के बारे मे एक रिपोर्ट भी दी। 20 नवम्बर सन् 1922 को मॉस्को सोवियत (नगर पालिका) की एक प्लेनरी बैठक मे, गृह और विदेश सम्बन्धी नीति पर भाषण देते हुए लेनिन ने अपना दृढ विश्वास प्रकट किया था कि नवीन अर्थनीति पर चलनेवाला रूस एक दिन अवश्य ही समाजवादी रूस बनेगा। लेनिन का यह अतिम सार्वजनिक भाषण था। वह अखिल रूसी सोवियत काग्रेस मे भाषण देने की तैयारी कर रहे थे। उन्होने उसकी योजना भी बना ली थी, लेकिन उनका स्वास्थ्य तेजी से खराब होने लगा। उन्होने स्तालिन को एक चिट्ठी भी पार्टी की केन्द्रीय कमिटी की विस्तारित मीटिग मे पढने के लिए लिखी, जिसमे राज्य इजारेदारी के विरोधियो बुखारिन आदि की कडी आलोचना करते हुए, उन पर कुलक-नीति के समर्थन करने का दोष लगाया था।

दिसम्बर सन् 1922 को सोवियत समाजवादी गणसघ की स्थापना हुई। लेनिन बीमार थे। यह कहने की आवश्यकता नही कि इस काम मे स्तालिन का ही सबसे अधिक हाथ था। सघ के सधि पत्र को उन्होने ही तैयार किया और उन्ही की रिपोर्ट पर सोवियत सघ की प्रथम काग्रेस ने 30 दिसम्बर, 1922 को उस सधि-पत्र को स्वीकार किया था। स्तालिन ने ही सोवियत समाजवादी गणसघ के सविधान को तैयार किया, जिसे सघ की द्वितीय काग्रेस ने सन 1924 मे पास किया था। स्तालिन ने इस समय प्रथम काग्रेस के सामने भाषण देते हुए कहा था :

> "आज का दिन सोवियत सरकार के इतिहास मे एक नये युग का परिचायक है। यह पुराने युग और नये युग की विभाजन-सीमा को बनाता है। पुराना युग, जो अतीत हो गया है--जबकि सभी सोवियत गणराज्य यद्यपि एक होकर काम करते थे, लेकिन तो भी उनमे से हरएक अपने-अपने रास्ते जाता और अपनी ही रक्षा के साथ अपना मुख्य सम्बन्ध रखता था। नया युग, जो अब आरम्भ हो रहा है--इसमे

भिन्न-भिन्न सोवियत गणराज्यों के अलग-थलग अस्तित्व को खतम किया जा रहा है और आर्थिक अस्त-व्यस्तता को सफलतापूर्वक हटाने के लिए, उसे एक अकेले फैडरल राज्य के रूप मे परिणत किया जा रहा है। अब से सोवियत सरकार सिर्फ अपने ही अस्तित्व को कायम रखने का ध्यान न रखकर, अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर प्रभाव डालने और मेहनतकशो के हितों में सुधार करने मे सक्षम होने के लिए एक महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति के रूप में विकसित हो रही है।"

बोल्शेविको की, विशेषकर स्तालिन की, जबर्दस्त सूझ का ही फल था कि जातीय गणराज्यो ने मिलकर एक राज्य हो जाने मे कोई हिचकिचाहट महसूस नही की। उन्होंने क्राति के बाद के पाँच वर्षो में देख लिया था कि बोल्शेविको के हृदय म किसी तरह का जातीय पक्षपात नही है और रूसी जैसी सबसे आगे बढी हुई जाति भी पिछडी जातियों के साथ सच्चा भाई-चारा दिखाती हुई, उन्हे हर तरह से अपने बराबर लाने की कोशिश कर रही है। इसीलिए, जब तातार और बाशकिर बुर्ज्वा राष्ट्रवादियो ने सुलतान हलीयैफ (गलीयैफ) के नेतृत्व मे कुछ गडबडी मचानी चाही, तो उन्हे अपनी जनता की सहायता न पाकर विफल-मनोरथ होना पडा।

सन 1922 के बाद, बीमारी के कारण लेनिन मॉस्को के पास गार्की गॉव मे रहते थे। वह अब इस स्थिति में नही रह गये थे कि राजकाज म भाग लेते। एक वर्ष से ऊपर का उनका जीवन अपने पुराने कर्मठ जीवन मे बिलकुल भिन्न था। वस्तुत, इस सारे समय वह जीवन और मृत्यु के बीच में लटके हुए थे, लेकिन उनको इस बात का सतोष था कि सोवियत राज्य का भार बड़े ही योग्य कधों पर पड़ा है। सन् 1923 का पूरा साल सारे देश, लेनिन और उनकी पार्टी के लिए भारी परीक्षा का समय था। लेनिन की बीमारी से फायदा उठा कर, त्रॉत्स्की और उसके अनुयायी हर तरह से पार्टी और सरकार पर आक्रमण करके उसे कमजोर करने की कोशिशें करते रहे। उनके प्रहार के मुख्य लक्ष्य थे—केन्द्रीय कमिटी के महामत्री स्तालिन। उन्होंने पार्टी के सम्बन्ध म वाद-विवाद खडा कर दिया और एक दूसरी पार्टी बनाने का भी मनसूबा बाँधा, लेकिन स्तालिन कई क्षत्रो में अपनी अद्भुत प्रतिभा दिखला चुके थे। वह राजनीतिक शतरज में भी कच्चे गाइयाँ नही निकले। पार्टी के लोग उन पर अपार विश्वास रखते थे। वह पिछडी जातियों के हिमायती और श्रद्धेय बन चुके थे। 2 दिसम्बर, 1923 को क्रास्नयाप्रेस्न्या (मॉस्को) जिला कमिटी की एक बैठक मे स्तालिन ने पार्टी को मजबूत करने और बोल्शेविक सगठन तथा बोल्शेविक नीति के शत्रुओं के मनसूबों को विफल करने के लिए केन्द्रीय कमिटी ने क्या काम किया था, इस बतलाया। 15 दिसम्बर, 1923 को स्तालिन के हस्ताक्षर से केन्द्रीय कमिटी की एक घोषणा 'प्राव्दा' म प्रकाशित हुई, जिसम अवसरवादियो के विरुद्ध एक होकर सघर्ष करने के लिए कहा गया था। जनवरी सन 1924 म पार्टी की एक कान्फरेस हुई, जिसम स्तालिन ने रिपोर्ट दी। कान्फरेंस म त्रॉत्स्की और उसके अनुयायियो का निम्न बुर्ज्वा पथभ्रष्ट कहते हुए, उनकी निदा की गई।

अन्त मे 21 जनवरी 1924 का वह मनहूस दिन आया, जब मॉस्को के पास गोर्की गॉव मे महान् लेनिन ने ससार से अतिम विदाई ली। साम्यवाद और सोवियत राष्ट्र के लिए यह भयकर क्षति थी, इसमे शक नही; लेकिन, पिछले एक साल के तूफानों का मुकाबला करते हुए, स्तालिन ने किस तरह राष्ट्रनोका को आगे बढाया था, इसे देखकर लोगो को आगे के लिए किसी भय की सम्भावना नही थी।

स्तालिन की अपने गुरु मे अपार श्रद्धा थी, लेकिन उस श्रद्धा का कारण मूढ भक्ति नही थी, बल्कि लेनिन की चमत्कारपूर्ण प्रतिभा और अद्वितीय सूझ की करामात को बार-बार देखकर सच्चाई के सामने सिर झुकाने जैसी भावना थी। स्तालिन को इस बात का बहुत अभिमान और सतोष था कि वह ऐसे गुरु के शिष्य हैं। जब स्तालिन का स्वरूप आगे की सफलताओं के कारण विराट हो गया, तब भी वह अपने को लेनिन का विनम्र शिष्य समझने म गौरव का अनुभव करते थे। लेनिन के शव को 26 जनवरी को अतिम विश्राम के लिए ले गये थे। उसी दिन, स्तालिन ने अपने गुरु की अर्थी के सामने पार्टी तथा राष्ट्र की ओर से शपथ ली थी।

4. स्तालिन की शपथ (26 जनवरी, 1924)

" हम कम्युनिस्ट एक विशेष साँचे मे ढले हुए आदमी है; हम एक विशेष धातु के बने है। हम सर्वहारा युद्ध-विद्या-विशारद, महान् साथी लेनिन की सेना के सिपाही हैं। दुनिया मे इस सेना के अग होने से बढकर और कोई सम्मान नही है। उस पार्टी के सदस्य की उपाधि से बढकर कोई बड़ी चीज नही हो सकती, जिसके सस्थापक और नेता साथी लेनिन है।

" हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि पार्टी के सदस्य की महान् उपाधि को ऊँचा, शुद्ध और सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्न करे। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ लेते है कि हम तुम्हारी इच्छा को भली भाँति पूरा करेगे।

" हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि हम अपनी पार्टी की एकता को अपनी आँखो की पुतली की तरह जोगा कर रखे। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ लेते है कि हम तुम्हारी इच्छा को भली भाँति पूरा करेगे।

" हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि हम सर्वहारा के नेतृत्व को सुरक्षित और मजबूत करे। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ लेते है कि हम तुम्हारी इच्छा को भली भाँति पूरा करेगे।

" हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि हम कमकरो और किसानो की दोस्ती को अपनी सारी शक्ति से मजबूत करे। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ लेते है कि हम तुम्हारी इच्छा को भली भाँति पूरा करेगे।

" साथी लेनिन बराबर हम अपने देश की जातियों के स्वेच्छापूर्वक सघ को कायम रखने की आवश्यकता, गणसघ के ढाँचे के भीतर उनमे भाईचारे के सहयोग की आवश्यकता पर जोर देते थे।

" हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि हम गणो के सघ को मजबूत और विस्तृत करे। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ लेते है कि हम तुम्हारी इच्छा को भली भाँति पूरा करेगे।

" अनेक बार लेनिन ने हमको बतलाया था कि हम लाल सेना को मजबूत करें, और उसकी स्थिति मे सुधार करना हमारी पार्टी का एक महत्त्वपूर्ण काम है। साथियो, आओ हम शपथ ले कि अपनी लाल सेना और लाल नौसेना को मजबूत करने मे किसी भी बात को उठा नहीं रखेगे।

" हमसे विदा होते हुए, साथी लेनिन ने हमारे ऊपर जिम्मेवारी रखी है कि हम कम्युनिस्ट इन्टर्नेशनल के सिद्धांतों के विश्वासपात्र रहे। साथी लेनिन, हम तुम्हारे सामने शपथ लेते है कि सारी दुनिया के मेहनतकशो के सघ–कम्युनिस्ट इन्टर्नेशनल–को मजबूत और विस्तृत करने में हम अपने प्राणों की भी परवाह नही करेगे। "

इस शपथ के बाद, स्तालिन उन्तीस वर्ष तक जिये और उन्होने लेनिन के सामने ली हुई अपनी शपथ की एक-एक बात को किस तरह पूरा किया है, इसे सारी दुनिया जानती है।

लेनिन की अन्त्येष्टि क्रिया के दो दिन बाद 28 जनवरी, 1924 को उस महान् नेता के प्रति श्रद्धांजलि भेट करते हुए, उनके योग्य उत्तराधिकारी ने एक महत्त्वपूर्ण भाषण दिया था।

प्रथम बरसी के समय 'रबोचया गजेता (मजदूर अखबार)' मे स्तालिन ने एक पत्र लिखा था, जिसके कुछ अश है :

" अपने गुरु और नेता–लेनिन–का स्मरण रखो, उनसे प्रेम करो और उनका अध्ययन करो।

" हमे लेनिन ने जैसे सिखलाया है, वैसे ही भीतरी-घरेलू और विदेशी शत्रुओ के साथ लडो और उनको मार भगाओ।

" हमे लेनिन ने जैसे सिखलाया है, उसी तरह एक नये जीवन और अस्तित्व के एक नये रास्ते

और नई सस्कृति का निर्माण करा।

" छोटी-छोटी चीजो के करन म इन्कार न करा, क्योकि छोटी छोटी चीजो स ही मिलकर बडी चीजें बनती हैं–यह लेनिन की एक महत्त्वपूर्ण वसीयत है। "

त्रॉत्स्की व्यावहारिक राजनीति या अर्थनीति मे चाहे कितना ही कच्चा हा, लेकिन उसकी महत्त्वाकाक्षाएँ बहुत बडी-चढी थी। लेनिन जानत थे कि वह कितना क्षुद्र अविश्वमनीय और निकम्मा आदमी है, इसीलिए उन्होंने त्रॉत्स्की को आग नही बढाया और पार्टी तथा सरकार की सारी जिम्मेवारी स्तालिन ही के ऊपर रखो। लेनिन के मरने के बाद, अब त्रॉत्स्की और उसक साथिया न फिर सिर उठाया। स्तालिन अपन गुरु की बीज रूप मे छोडी हुई योजनाओ का एक बड आकार म पूरा करन क लिए बहुत सी कल्पनाएँ कर रहे थ, लेकिन वह देख रह थे कि मुट्ठीभर त्रात्स्कीवादिया के विरोध के कारण एक मन म, दृढ सकल्प क साथ दश क लिए कुछ भी करना मुश्किल होगा। इसीलिए उन्हान घोषित किया 'जब तक त्रॉत्स्कीवाद को हराया नही जाता, तब तक नई अर्थनीति की स्थितिया म विजय प्राप्त करना और आज क रूस का एक समाजवादी रूस क रूप मे परिवर्तित करना भी असम्भव होगा।'-त्रॉत्स्कीवादिया क कुतर्को का जवाब देते हुए उन्हान पार्टी क मुख पत्र 'प्राव्दा म पहल कई लेख लिखे थ। इसी साल (अप्रैल सन 1926) उन्हान स्वर्दलाफ युनिवर्सिटी मे 'लेनिनग्राद की आधारशिलाए' क नाम से कई व्याख्यान दिए थ। यह भाषण तथा इस सम्बन्ध म लिखे हुए उनक दूसरे लेख लेनिनवाद की समस्याए क नाम स प्रकाशित हुए थ। लेनिनवाद की व्याख्या करत हुए स्तालिन ने कहा

> 'लेनिनवाद साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्राति क युग का मार्क्सवाद है। ठीक तौर स कहना होगा कि लेनिनवाद साधारण तौर स सर्वहारा क्राति का सिद्धात और दाव पच विशेष तौर स वह सर्वहारा अधिनायकत्व का सिद्धात और दाव पच है।

पुनर्निर्माण (सन 1924 27)

मार्क्स और एगेल्स न सन 1848 म कम्युनिस्ट घोषणा प्रकाशित करते हुए बतलाया था कि सर्वहारा अपनी विजय क बाद किस प्रकार पूँजीवादी समाज का समाजवादी समाज के रूप म परिणत कर सकता है। 'कम्युनिस्ट घोषणा के बाद सन् 1873 म फ्रास के मजूरो ने पेरिस कम्यून के रूप म सर्वहारा राज्य स्थापित करके उसे थोड स समय क लिए चलाया था। लेकिन उस गृह युद्ध क बीच ही खतम हो जाना पडा था। जिसम वह थोड से ही मौलिक परिवर्तन सो भी कुछ ही समय के लिए कर पाय थे। इसम शक नही कि बोल्शेविको ने पेरिस कम्यून के तजर्बा स काफी फायदा उठाया था और उन्होने क्राति के सफल हाते ही कई कार्यक्रम कार्यरूप मे परिणत कर दिए थे। भूमि का राष्ट्रीयकरण कर, जमीदार वर्ग का खतम कर–खेत किसानो के हाथो मे द दिए पूँजीपतियो को खतम कर–मिलो फेक्टरिया रेलो तथा दूसरे यातायात के साधनो और खानो के साथ, बैको का भी राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। उन्हान यह कदम उठाकर, पूजीवाद की दाढा और विषदतो को निकाल फेका और देश के किसानो का सर्वहारा के साथ एक कर दिया। यदि गृह युद्ध मे न फँसना पडता, तो पुनर्निर्माण और नव निर्माण का काम बहुत पहल से ही शुरू हो गया होता। बीमारी क समय ही, सन् 1923 की जनवरी और मार्च मे लेनिन का दिमाग देश के पुनर्निर्माण और उद्योगीकरण पर ही केन्द्रित रहता था। चाहे अनुशासन का मानते हुए, उन्हे अखबार पढने की इच्छा न होती हो, लेकिन उनका दिमाग (लेनिन का) कैसे मूर्छित रह सकता था। तीन महीनो म उन्होने कई महत्त्वपूर्ण लेख लिखवाये थ, जिनम उन्होने सहयोगी-योजना, समाजवादी पुनर्निर्माण, देश के उद्योगीकरण तथा कृषि के सामूहीकरण के बारे मे लिखा था। उन्होने यह दिखलाया

था कि सर्वहारा के अधिनायकत्व के साथ, जब उत्पादन के सभी बडे पैमाने के साधन सोवियत-राज्य के हाथ मे हैं जब सर्वहारा किसानो का पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं, तब एक पूर्ण समाजवादी समाज के निर्माण करने के लिए सभी आवश्यक चीजे मौजूद है। उन्होने लिखा था

"हमे एक ऐसा राज्य बनाने की कोशिश करनी है, जिसमे किसानो का नेतृत्व कमकर अपने हाथ मे रखे,, अपने मे किसानो का विश्वास कायम रखते हुए, अत्यत मितव्ययिता का परिचय दे और हमारे सामाजिक सम्बन्धो से हरएक तरह की फिजूलखर्ची के चिह्नो को भी मिटा दे। दुनिया मे कही कोई एमा स्थान नही है, जहाँ से हमे मदद मिल मकेगी। देश के उद्योगीकरण और बिजलीकरण के लिए, सभी साधना को देश के भीतर से ही बडी मितव्ययिता और खर्च की कमी करक जुटाना हागा। दखना हागा कि एक एक पैसा जो हम बचाते है, वह हमारे बडे पैमाने के मशीन उद्याग बिजलीकरण आदि के विकास बाल्खोफ पन बिजली स्टेशन आदि के निर्माण मे ही लग। इसी और केवल इसी मे हमारी आशा निहित है।'

ऊपर के उद्धरणो से मालूम होगा कि लेनिन ने उन मभी बातो पर मक्षेप मे प्रकाश डाल दिया था, जिन पर न जाकर दश का एक शक्तिशाली राष्ट्र म परिणत करना था। लेनिन की मृत्यु के समय तक, यह एक परिवर्तन अवश्य हुआ था कि अब सामाज्यवादी मब कुछ करक हार चुके थ और उनमे से एक एक करक कितना ही ने बाल्शविका की मरकार का स्वीकार भी कर लिया था।

1 चोदहवी पार्टी काग्रेस (सन 1925)

त्रॉत्स्की ओर उसके अनुयायी पहल ही लनिन क मामने म ही, हल्ला मचा रह थ कि दश मे तब तक समाजवादी ममाज की स्थापना नही हा मकती जब तक कि समाजवाद दूसर देशा मे भी विजयी न हो जाये। त्रॉत्स्की क अनुमार मार विश्व म क्राति हो जान पर ही ममाजवाद कायम किया जा मकता था। वह एक देश मे समाजवाद के विजयी हान की सम्भावना न समझकर उसका विरोध करता था। स्तालिन ने त्रॉत्स्की की बडी-बडी बाता का कारा गाल बजाना बतलाते हुए कहा कि एक देश मे भी समाजवाद का निर्माण हो मकता है, एक दश म वैमा प्रयत्न न करन का मतलब केवल हवाई किले बनाना है। उन्हान साफ कहा कि ममाजवाद की अतिम विजय साम्राज्यवादिया के सावियत सघ मे दखल देने तथा पूँजीवाद की पुनःस्थापना के प्रयत्नो का मर्वदा के लिए खातम करन के लिए, यह जरूरी है कि दूमरे दशा म भी पूंजीवाद का खात्मा हा, अर्थात पूँजीवादी घरा टूट जाये। लेकिन जहाँ तक भीतरी बाता का सवाल है ममाजवाद की विजय और वर्गहीन ममाजवादी ममाज के निर्माण के लिए आवश्यक मारी चीज सावियत समाजवादी गणसघ म मोजूद है।

चादहवी पार्टी काग्रस (अप्रल मन 1925) न स्तालिन क इन विचारा का ममर्थन किया। इस कान्फरेम न सभी पार्टी मदम्या क लिए अनिवार्य कर दिया कि वह मावियत सघ म समाजवाद की विजय क लिए काम कर। फोरी काम की व्याख्या करते हुए स्तालिन ने इमी कान्फरेस मे कहा था

"आज हमारे सामने मुख्य काम है–मझाले किसाना का सर्वहारा के माथ करके, उन्हे अपने पक्ष मे लाना। आज मुख्य काम है–किसाना के मुख्य ममूह क साथ सम्बन्ध स्थापित करना, उनके भातिक और मास्कृतिक तल को ऊँचा करना और इन मुख्य ममूहो के माथ मिलकर, समाजवाद के पथ पर आगे बढना। मुख्य काम है–किसानो के साथ, ओर मजूर वर्ग के पूर्ण नेतृत्व म समाजवाद का निर्माण करना। मजूर वर्ग का नेतृत्व इम बात की मोलिक गारटी है कि हमारा निर्माण का काम समाजवाद के पथ पर हाते हुए आगे बढेगा।

दिसम्बर सन् 1925 म पार्टी की यह काग्रेस हुई, जिसके मामने स्तालिन ने केन्द्रीय कमिटी की ओर से राजनीतिक रिपोर्ट दी थी। तेरहवी काग्रेस के बाद देश मे जो कुछ हुआ था उसके बारे मे बतलाते हुए उन्होने कहा कि जो कुछ भी हम कर पाये हैं, वह एक पिछडे हुए कृषि प्रधान देश के लिए सतोषजनक नही है। साथ ही, यह भी बतलाया कि हमारा लक्ष्य है

"अपने देश को एक किसानी देश से औद्योगिक देश के रूप में परिवर्तित करना, जिसमे वह अपने प्रयत्नों से सभी आवश्यक साधनों को पैदा कर सके।"

जिनोवियेफ और कामनेफ ने स्तालिन की योजना का विरोध किया और उसकी जगह ऐसी योजना रखी, जिसका मतलब था—देश को कृषि-प्रधान बनाये रखना। स्तालिन भारतीय नेताओ की तरह दुर्बल-बुद्धि, अदूरदर्शी या लोगों को धोखे में रखनेवाले नही थे, उन्हें जल्द से जल्द देश को स्वावलम्बी बनाकर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सैनिक दृष्टि से मजबूत बना डालना था; जो उद्योगीकरण के बिना हो ही नही सकता था। भारत में जो तथाकथित पचवर्षीय योजना बनायी गयी है, उसमे उद्योगीकरण के लिए समुद्र में बूँद जितनी पूँजी भी सरकार ने नही रखी है। वह चाहती है, पूंजीपति थैलियों के बल पर देश का उद्योगीकरण करना। लेनिन की मृत्यु के बाद, अब सारे ही ढुलमुल यकीन अवसरवादी एक होकर, विरोध पर तुले हुए थे। त्रॉत्स्की, जिनोवियेफ, बुखारिन, कामनेफ और उनके अनुयायी मिलकर, स्तालिन की योजना के विरुद्ध सारी शक्ति लगा रहे थे; लेकिन उनके अनुयायियों की संख्या बहुत कम थी। और, दूसरी ओर क्राति तथा गृह-युद्ध की आग मे तपे हुए मोलोतोफ, कालिनिन, वोरोशिलोफ, कुइबिशफ, फ्रुंजे, जैर्जिन्स्की, ओर्योनिकिद्जे, किरोफ, यारोस्लाव्स्की, मिकोयान, अन्द्रेयेफ, श्वेर्निक, ज्दानोफ, शकिर्यातोफ आदि स्तालिन के साथ थे। लेनिन ने पहले ही कह दिया था :

> "अगर हम अपने देश में उद्योग-धंधे खड़े करके उसे मजबूत नहीं कर सकते, तो इसका मतलब होगा अपने देश का एक सभ्य देश, एक समाजवादी देश के रूप मे खतम करना।"

लेनिन के इस वाक्य की सत्यता को स्तालिन अच्छी तरह से जानते थे। वह समझते थे कि देश की सुरक्षा उद्योग धंधों पर ही निर्भर है। उद्योग धन्धों की मजबूत नीव रखने के लिए, किसानो और मजदूरों के सहयोग की बड़ी जरूरत है। किसानों को शिक्षित करके समाजवाद के निर्माण में हाथ बँटाने के लिए, यह जरूरी है कि खेतो का सामूहीकरण हो बड़े पैमाने पर उत्पादन का सगठन किया जाय। इन सबके लिए, नये उपायो और नये साधनो की आवश्यकता होगी जिन्हें हम कल कारखानों से ही पा सकते है।

स्तालिन के नेतृत्व मे फिर बोल्शेविको की विजय हुई और अवसरवादियो को हराकर, उन्होंने उद्योगीकरण के लिए पहला कदम उठाया।

2 समाजवादी उद्योगीकरण

देश का उद्योगीकरण अनिवार्यतया आवश्यक था। बाहर से पूँजी मिलने की कोई संभावना नही थी और न इग्लैड की तरह, अपनी अधीन जातियो को लूट खसोट कर ही पूंजी जमा की जा सकती थी। पूँजी के अतिरिक्त, आवश्यक विशेषज्ञो की भी बहुत कमी थी। जारशाही के समय मे जो इजीनियर, टेक्नीशियन आदि थे भी, उनमे से कितने ही क्राति विरोधियो के पक्ष में होकर बाद में देश से बाहर चले गये थे। लेकिन, स्तालिन ने अच्छी तरह समझ लिया था कि अपने ही बूते पर उद्योगीकरण करना असम्भव नही है। उन्होंने इस विषय पर अपने विचारो को प्रकट करते हुए, समाजवादी उद्योगीकरण के ये सिद्धात बताए थे :

(1) उद्योगीकरण का अर्थ केवल औद्योगिक उपज को बढ़ाना ही नही है, बल्कि भारी उद्योग, और सबसे बढ़कर उसके मूल-स्रोत—मशीन निर्माण का विकास करना है, क्योंकि मशीन-निर्माण-उद्योग के साथ स्वदेशी भारी उद्योग ही केवल वह चीज है, जो समाजवाद के लिए भौतिक आधार बन सकता है।

(2) अक्तूबर समाजवादी क्राति के परिणामस्वरूप, हमारे देश मे जमीदारो और पूँजीपतियो का उच्छेद, भूमि, कारखानो, बैको आदि मे वैयक्तिक सम्पत्ति का खात्मा और इन सबका सारी जनता की सम्मिलित सम्पत्ति के रूप मे परिणत होना—इन सबने उद्योगो के विकास के लिए, समाजवादी पूँजी-सचय के लिए एक बहुत जबर्दस्त स्रोत पैदा कर दिया है।

(3) समाजवादी उद्योगीकरण पूँजीवादी उद्योगीकरण से मौलिक भेद रखता है। पूँजीवादी उद्योगीकरण का आधार है—अधीन देशो की लूट-खसोट, सैनिक विजय और सूद पर लगाये भारी-भारी कर्ज तथा आधीनस्थ लोगो का निष्ठुर शोषण। समाजवादी उद्योगीकरण का आधार है—उत्पादन के साधनों का सामाजिक स्वामित्व, मजूरों

और किसानो के जागर से उत्पादित धन का सचयन और प्रबन्ध, जिसके साथ कमकर-वर्ग के जीवन-तल का ऊपर उठना आवश्यक रूप से लगातार होता जाता है।

(4) इसलिए, उद्योगीकरण के सघर्ष के लिए मुख्य काम है—श्रम की उत्पादकता को बढाना, उत्पादन के खर्च को कम करना, कमकरी अनुशासन तथा कडी मितव्ययिता आदि को आगे बढाना।

(5) सोवियत सघ मे समाजवाद के निर्माण के लिए जो स्थितियाँ मौजूद है और कमकर वर्ग मे काम के लिए जो उत्साह है, उसके कारण उद्योगीकरण मे तीव्र गति से सफलता प्राप्त करना बिलकुल सम्भव है।

(6) समाजवादी ढग पर कृषि के पुनर्निर्माण करने के पहले, देश का उद्योगीकरण जरूरी है, जिसमे कृषि के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक यात्रिक साधन तैयार हो जाये।

स्तालिन की सूझ के सुपरिणाम को हम पहले देख चुके है। स्तालिन के तिकडम से नेता बन जाने की बात कहनेवाले केवल अपने को ही धोखा देते है, अथवा कम्युनिज्म के खिलाफ हर तरह की झूठ को पुण्य समझकर, वह दुनिया के मस्तिष्क सीधे-सादे आदमियो को सच्चाई के पास पहुँचने से रोकना चाहते है। सचमुच, अगर कोई समझदार आदमी भी इस तरह की ऊल-जलूल बाते करे, तो हमे समझ लेना चाहिए कि उस आदमी मे कोई नैतिक बल नही है, वह गदगी का कीडा है ओर वह अवसर मिलते ही, जघन्य मे जघन्य काम कर सकता है। साथ ही, यह निश्चय है कि ऐसे पामर आदमी मे इतिहास के प्रवाह को बदलने की क्षमता बिलकुल नही हो सकती। वस्तुत: क्लोरिन के अनुसार :

> "केवल सिद्धातवादी और व्यावहारिक आदमी के तौर पर, अपनी श्रेष्ठता से ही स्तालिन हमारे नेता बन गये है।"

और, इन्ही गुणो के न रहने के कारण त्रॉत्स्की सबसे निचले गड्ढे मे गिरकर, अत मे क्राति विरोधी और आदर्श द्रोही बन गया। उसके काले हृदय को परखने के बाद, उसे अपने चेले द्वारा ही प्राण गँवाने पडे। स्तालिन ने नेता बनने की योग्यता के बारे मे लिखा है

> "बागडोर हाथ मे लेकर आँख बन्द करके तब तक आगे ताकना, जब तक कि दुर्घटना न घट जाये, यह नेतृत्व का अर्थ नही है। बोल्शेविक नेतृत्व के काम को इस तरह नही समझते। नेतृत्व करने के लिए, आदमी को दूरदर्शी होना चाहिए। तुम अगर अलग थलग हो, चाहे दूसरे उन साथियो से भी जो कि नेतृत्व कर रहे है, तो तुम हरएक चीज को केवल ऐसे रूप मे देखोगे, मानो एक ही समय लाखो करोडो कमकर कमजोरियो को ढूँढ रहे है, गलतियो का पता लगा रहे है और सम्मिलित काम को पूरा करने मे अपने को खपा रहे है।"

कल-कारखानो और बिजली—स्टेशनो के निर्माण का काम बडे जोर-शोर से होने लगा। इसमे जो सफलता प्राप्त हुई, उसके कारण स्तालिन को विश्वासपूर्वक यह कहते हुए हिचकिचाहट नही हुई कि "हमे अत्यत आगे बढे हुए पूँजीवादी देशो के स्तर तक पहुँचना और कम-से कम समय मे, उनसे आगे बढना है।" लेकिन, हम दिसम्बर सन् 1925 की चौदहवी काग्रेस मे देख चुके है कि जिनोवियेफ और कामनेफ के गुट ने एडी-चोटी का जोर लगाकर, किस तरह विरोध किया था। उन्होने 'नवीन विरोधी दल' के नाम से अपना एक गुट कायम किया, जिसका अगुवा जिनोवियेफ था। इस गुट ने सन 1926-27 मे बडी तत्परता से काम किया। इस प्रकार समाजवादी निर्माण का काम, साथ ही इस गुट की साजिशो और तोड-फोड की कार्रवाइयो के खिलाफ निर्मम सघर्ष चलाने का काम भी था। सन 1926 की फरवरी मे कम्युनिस्ट इन्टर्नेशनल की कार्यकारिणी कमिटी के छठे परिवर्धित प्लेनम मे, स्तालिन ने 'दक्षिण पथी' और 'चरम वामपथी' विरोधियो की कडी आलोचना की और विरोध के कारण देश की प्रगति ही नही, उसके अस्तित्व के लिए भी जो खतरा पैदा हो गया था, उसको साफ शब्दो मे बतलाया। उसके कारण, विरोधियो का प्रभाव और भी कम हो गया।

इसी साल (30 नवम्बर, 1928 मे), स्तालिन ने 'चीनी क्राति की समस्याएँ' नामक एक अत्यत महत्त्वपूर्ण निबन्ध लिखा था, जिसने आगे चलकर चीनी क्राति की सफलता मे भारी पथ-प्रदर्शन किया। अगले साल 13 मई, 1927 को उन्होने सनयात-सेन युनिवर्सिटी के विद्यार्थियो के सामने भाषण दिया और 24 मई, 1917

को चीनी क्रांति के सम्बन्ध में कम्युनिस्ट इन्टर्नेशनल के कर्तव्य का निर्देश किया। यह सब देखने से मालूम होता है कि देश के पुनर्निर्माण मे लगे रहते हुए भी, दुनिया के दूसरे भागो के पथ प्रदर्शन में स्तालिन ने आँखे नही मूँद ली थी। उनकी नजर बराबर दूसरे देशो पर भी रहती थी। सन् 1926 में इग्लैड के मजदूरो ने जब सार्वजनिक हड़ताल की, तो उसी साल जून मे तिफलिस के रेलवे कमकरो के सामने स्तालिन ने उसके महत्त्व पर भाषण दिया था।

नवम्बर सन 1926 म पार्टी की पद्रहवी कान्फरेस हुई। स्तालिन ने पुनर्निर्माण के तजर्बो के आधार पर बडी योजना की ओर बढने की आवश्यकता समझकर इसके बारे मे कहा

> "यह बिना जाने कि हम किस दिशा म जाना चाहिए, बिना जाने कि हमारी गति का लक्ष्य क्या है हम आगे नही बढ सकते। हम तब तक निर्माण नही कर सकते, जब तक कि इस बात की सम्भावना और निश्चय न हो कि हम समाजवादी आर्थिक व्यवस्था के निर्माण का आरम्भ करके उसे पूरा कर सकेगे। पार्टी बिना स्पष्ट सम्भावना बिना स्पष्ट लक्ष्य के निर्माण के काम का पथ प्रदर्शन नही कर सकती। हम बर्नस्टाइन के विचारो के अनुसार नही कह सकते कि 'गति सब कुछ है और लक्ष्य कुछ नही।' इसके विरुद्ध क्रातिकारियो की तरह हम अपनी प्रगति अपने व्यावहारिक काम को सर्वहारा निर्माण के मौलिक वर्ग लक्ष्य के अधीन करना होगा। नही तो निस्सन्देह और अवश्य ही हम अवसरवाद के दल दल मे जा गिरेगे। इसी कान्फरेस ने बडे पैमाने पर समाजवादी उद्योग के निर्माण करने के लिए देशव्यापी योजना को कार्यरूप म परिणत करने का निश्चय किया।

सन् 1927 के दिसम्बर मे जब पन्द्रहवी पार्टी काग्रेस हुई तब तक पुनर्निर्माण का काम पूरा हो चुका था। प्रथम महायुद्ध और गृह युद्ध के बाद सपत्ति का भीषण ध्वस हुआ था और कृषि तथा उद्योग के हर एक क्षेत्र मे उपज बहुत घट गई थी। सन 1927 के खतम होते होते अब सोवियत रूस के उत्पादन के ऑकडे हर साल म सन् 1913 के रूस की अपेक्षा बहुत आगे बढ चुके थे। जारशाही रूस के उत्पादन का चरम विकास सन 1913 म हुआ था यह ध्यान रखना चाहिए। सन 1927 मे 1913 की अपेक्षा कृषि की उपज 8 फी सैकडा अथवा एक अरब रूबल अधिक हुई। उद्योग धधा मे यह वृद्धि 12 फी सैकडा या बीस करोड रूबल अधिक थी। जारशाही रूस म जहा उतने ही भूभाग म सन 1913 मे मात्र पचीस हजार मील रेले थी, अब वह बढकर अन्तातीस हजार दो सौ मील हो गई थी कमकरो के वेतन मे भी 16 फी सैकडा की वृद्धि हुई थी। शिक्षा क्षेत्र म तो यह वृद्धि और भी आश्चर्यजनक हुई थी। सन् 1913 म जितने विद्यार्थी प्राइमरी स्कूलो म पढते थे उनकी सख्या बढकर सन 1925 म साढे बारह लाख हो गई थी। टक्नीकल स्कूलो म तो उनकी सख्या दूनी हो गई थी शिक्षा पर दूना पैसा खर्च किया जा रहा था और वैज्ञानिक प्रतिष्ठानो पर तो वह दस गुना हो रहा था। राष्ट्रीय आय अब बढकर साढे बाईस रूबल हो गई थी और सोवियत सघ का नम्बर अब इस क्षेत्र म कनाडा इग्लैड जर्मनी और फ्रास के बराबर और केवल युक्त राष्ट्र अमरीका के पीछे था। अब 77 फी सैकडा उद्योग धधे सार्वजनिक थे केवल 14 फी सैकडा निजी और एक सहकारी प्रबन्ध म थे। कृषि-उत्पादन म समाजवादी भाग अभी केवल 27 फी सैकडा था और निजी खेती 97 3 फी सैकडा। व्यापार मे समाजवादी कारबार 81 9 फी सैकडा और निजी 18 1 फी सैकडा रह गया था।

2 त्रॉत्स्की का पतन

इस प्रकार इन सफलताओ के बाद अगला बडा कदम उठाना स्वाभाविक ही था। लेकिन, अब विरोधी अपने पैर के नीचे से धरती खिसकती देखकर जबर्दस्त सघर्ष के लिए तैयार थे। त्रॉत्स्की और उसके अनुयायी सन् 1927 की शरद म अब खुले आम प्रहार करके पूजीवाद की पुन स्थापना मे हाथ बॅटाने के लिए एक स्वतत्र दल बनाने का प्रयत्न करने लगे। सोवियत रूस की इस हालत को देखकर, पूँजीवादी देश बडे प्रसन्न थे और वह इस दल को हर तरह की मदद देने के लिए तैयार थे। पद्रहवी काग्रेस के बाद, त्रात्स्कीवादियो का विरोध अब पुराने मेन्शेविको के रास्ते पर चलने लगा। विश्व के ओर बहुत-से देशो मे क्राति के हुए बिना किसी देश

मे समाजवाद प्रतिष्ठापित नहीं किया जा सकता—वह इन बातों की आड मे, देश में पूँजीवाद के लिए रास्ता साफ करना चाहते थे। त्रॉत्स्की और उसके अनुयायी पुनर्निर्माण के समय से ही जिस तरह का सक्रिय विरोध कर रहे थे, यदि उसमें सफलता होती, तो क्या सोवियत रूस कभी सबल हो सकता था ? और, उसे निर्बल रखना क्या शक्तिशाली साम्राज्यवादियो को फिर से आक्रमण के लिए निमत्रण देना नही था ? पंद्रहवीं कांग्रेस के निश्चय के अनुसार प्रथम पचवार्षिक योजना तैयार की गई। और, इसी काग्रेस ने त्रॉत्स्की और उसके अनुयायियों को पार्टी से निकाल बाहर किया। त्रॉत्स्की के निकलने के बाद, अब वही हथियार इकोफ, बुखारिन, तोम्स्की आदि ने उठाया और अब वामपक्ष के स्थान पर दक्षिणपक्ष की ओर से प्रहार होने लगा। मई सन् 1928 में, इन अवसरवादियो की ओर ध्यान देना जरूरी हो गया। प्रथम पचवार्षिक योजना का मुख्य उद्देश्य था—भारी उद्योग धधो को दृढ नीव पर स्थापित कर, देश को आर्थिक तौर से स्वावलम्बी और सामरिक तौर से मजबूत बनाना। लेकिन, दक्षिणपक्षी विरोधी यह कहकर उसका विरोध कर रहे थे कि इसके कारण जो भारी पूँजी की आवश्यकता होगी, उसे लगाने पर लोगो का जीवन-तल बहुत गिर जायेगा। इसमे शक नही कि अपने परिश्रम से ही बचाकर भारी परिमाण म पूंजी लगाने का प्रभाव लोगो के लिए कष्टदायक होता, लेकिन और क्या रास्ता था ? पूँजीवादी देश फिर सोवियत के विरुद्ध कडा रुख करने लगे थे और वह किसी वक्त भी आक्रमण कर सकते थे। इसीलिए, स्तालिन ने अपने भाषण मे कहा कि "भारी उद्योगो के विकास को रोकने का मतलब हमारे देश के लिए आत्महत्या होगी"; और, "इसका मतलब होगा—देश के उद्योगीकरण के नारे को त्यागना तथा अपने देश को पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था की पूँछ बना देना।"

त्रॉत्स्की के निकाल बाहर किए जाने पर, वह दुनिया के पूँजीवादियों का एक बडा पैगम्बर बन गया। पूँजीवादी उसको क्राति का अप्रतिम योद्धा और पारदर्शी राजनीतिक नेता कहकर, स्तालिन और सोवियत रूस के खिलाफ आग उगलने लगे। मालूम होता था कि यही थैलीशाह बोल्शेविक क्राति के सबसे बडे पक्षपाती है। त्रॉत्स्की के बारे में लेनिन पहले ही लिख चुके थे—"वह कभी अपनी महत्त्वाकाक्षा पर होने वाले किसी आक्रमण को क्षमा नही कर सकता।" और, वही महत्त्वाकाक्षा उसे डुबोने का कारण बनी। लेकिन, बाल्शेविकों को बदनाम करने के लिए उनके शत्रुओ को कोई बात तो मिलनी चाहिए थी। उन्होंने त्रॉत्स्की-काड को खूब बढा-चढाकर फैलाया, और इसको लेकर तटस्थ लोगो मे नवीन रूस के प्रति घृणा पैदा करने की पूरी कोशिश की। पूँजीवादियो ने वास्तविक स्थिति के साथ परिचय प्राप्त करने के सभी रास्ते भी बन्द कर दिये थे और सब जगह एकतरफा प्रचार हो रहा था। त्रॉत्स्की वर्षो से लेनिन का जबर्दस्त विरोधी रह चुका था; गृह-युद्ध मे भी हम उसके रवैये को देख चुके है; सन् 1921 मे लेनिन के समय भी उसने पार्टी का जबर्दस्त विरोध किया था; सन् 1922-23 मे भी वह वैसी ही कोशिशें कर रहा था। लेनिन ने कहा था : "त्रॉत्स्की एक मानव गद है।" त्रॉत्स्की कभी किसी व्यावहारिक कार्य के लिए निर्णय करने की शक्ति नही रखता था; लेकिन शायद उसमें बातें बघारने का रोग भारत के हमारे महान् नेता जितना ही दिखाई देता था। अपनी आवाज को सुनकर, वह मस्त हो जाता था। उसके एक पुराने साथी ने लिखा है : "किसी अकले आदमी से गुप्त रीति से बाते करते समय भी, वह वक्ता बन जाता था।"

फ्रेच लेखक बारबूस के अनुसार : "त्रॉत्स्की के पास वकीलवादी कला—आलोचक और पत्रकार— के लिए आवश्यक बहुत ऊँचे दर्जे के गुण मौजूद थे, लेकिन उसमे नई भूमि तैयार करने के लिए एक राजनीतिज्ञ की योग्यता नही थी। उसमे वास्तविकता और जीवन के परखने-समझने की क्षमता बिलकुल नही थी। कर्मठ आदमी के लिए जो बड़ी लगन और निष्ठुरता की आवश्यकता होती है, उसमे उसका नितात अभाव था। वस्तुतः, उसमे मार्क्सीय धारणाओ के प्रति दृढ विश्वास नही था। वह हमेशा से डरता आया था। वह इसी भय के कारण, मेन्शेविक रहा था और इस समय भय के कारण उसके भीतर सतुलन नही रह गया था। कोई भी आदमी तब तक त्रॉत्स्की को नही समझ सकता था, जब तक कि उसके क्रोध मे पागल होते समय भीतर से उसकी कमजोरी को न पहचान ले। 'दूसरे देशो मे क्रांति का विकास और समर्थन अपनी विजयी क्राति के लिए अत्यन्त आवश्यक है'—यह रटन लगाते हुए, वह चाहता था कि रूस की नवीन जनता को अनिश्चित काल तक अकर्मण्यता

की मरुभूमि में घुमाता रहे। यदि उसमे इतना धैर्य नही था, तो यह अच्छी ही बात थी।"

स्तालिन का जवाब बिल्कुल साफ था :

"क्रांति की विजय को सिर्फ एक देश मे, एक शुद्ध राजनीतिक घटना नही समझना चाहिए। साथ ही, यह भी नही समझना चाहिए कि रूसी-क्रांति एक निष्क्रिय वस्तु है, जिसे बाहरी सहायता ही आगे बढ़ा सकती है।"

स्तालिन ने कहा था :

"साथी त्रॉत्स्की ने अपने व्याख्यान के दौरान मे कहा था : 'हम वस्तुतः अपने को लगातार विश्व-अर्थनीति के नियंत्रण में पाते हैं।' लेकिन, क्या यह ठीक है ? नही। यह पूँजीवादी घड़ियालों का स्वप्न है, लेकिन सच नही है।"

वारबूस के अनुसार : "स्तालिन और त्रॉत्स्की एक दूसरे के बिलकुल विपरीत हैं, मानवता के दो परस्पर विरोधी बिंदुओं पर विद्यमान, दो प्रकार के आदमी है। स्तालिन व्यावहारिक तर्क और व्यावहारिक बुद्धि पर विश्वास रखते है। पर निश्चल, अडिग और व्यवस्थित कार्य-प्रणाली का मानने वाले है। वह लेनिनवाद को अच्छी तरह समझते और जानते है और कमकर वर्ग तथा पार्टी को सरकार मे जो पार्ट अदा करना है, उसे भली भाँति जानते है। वह दिखावा पसन्द नही करते, न मौलिक होने की इच्छा उन्हे परेशान करती है। जो कुछ वह कर सकते हैं, उस सभी को करने की कोशिश करते है। वक्तृत्व कला पर, अथवा सनसनी पैदा करने पर उनका विश्वास नही है। जब वह बोलते हैं, तो उसमें सादगी के साथ स्पष्टता का समावेश करने की कोशिश करते है। लेनिन की तरह, सदा उन्ही विषयों को हृदयगत कराने की कोशिश करते हैं। वह बहुत प्रश्नो को उठाना चाहते है, क्योंकि उन प्रश्नों से सुननेवाली जनता के भावो का पता लगता है और पुराने युग के किसी बड़े उपदेशक की तरह, एक-से ही शब्दों मे जवाब देते हैं। वह आपके सामने बिना भूल किए, सारे सबल और निर्बल पहलुओं को रखने का ढंग जानते है।"

पार्टी ने त्रॉत्स्की को बिना मौका दिए हुए ही निकाल बाहर नही किया था। दिसम्बर सन् 1927 मे कांग्रेस के अधिवेशन से एक महीना पहले ही, केन्द्रीय कमिटी ने पोलित ब्यूरो से अपने पक्ष के कुछ समर्थन में वक्तव्य दिलवाया था। इस प्रकार विरोधियो को जवाब देने के लिए, एक महीने का समय दिया गया था। विरोधी पक्ष ने 3 सितम्बर, 1927 को ही 120 पृष्ठो का अपना वक्तव्य निकालकर जोर दिया था कि इसको तुरन्त छापा जाये और सभी स्थानीय कमिटियो और संगठनों के पास भेजा जाये। चार महीने पहले से दंगल खड़ा करने के लिए पार्टी तैयार नही थी, लेकिन एक महीने का समय उन्हे दिया गया था। पार्टी के लोगो ने बहुत कोशिश की कि त्रॉन्स्की और जिनोवियेफ अपने अड़गो को छोड़ दे और फिर साथ काम करने लगे। लेकिन, वह तो लड़ने के लिए तैयार थे। लेनिनग्राद मे जिनोवियेफ का उस समय काफी प्रभाव था, वह वहाँ की सोवियतो की परिषद् का अध्यक्ष था। दोनो ने पार्टी के खिलाफ तरुण कम्युनिस्टो को भड़काने की कोशिश की; खूब उनकी गुप्त बैठकें होती रही, उन्होने गुप्त छापखाना भी कायम कर लिया था। सभा-स्थानो पर भी जबर्दस्ती अधिकार किया था। उन्होने 7 नवम्बर, 1927 को सड़को पर प्रदर्शन कराया। केन्द्रीय कमिटी के मेम्बरो को मीटिंग मे आने से जबर्दस्ती रोका। यारोस्लाव्स्की तथा दूसरो को मॉस्को की एक मीटिंग से जबर्दस्ती निकाल दिया। बोल्शेविको के लिए, अब और बर्दाश्त करना असंभव था।

पन्द्रहवी कांग्रेस ने कड़ा रुख अख्तियार किया और त्रॉत्स्की से कहा कि वह अपने संगठनों को बन्द करे, और मॉस्को मे हुई हाल की हरकतो को छोड़े तथा पार्टी के बहुमत को स्वीकार करे। त्रॉत्स्की ने 121 आदमियो के हस्ताक्षरो से एक दूसरा प्रस्ताव रखा और किसी भी तरह अपने को समझौते के लिए तैयार नहीं किया। अब पंचवार्षिक योजनाओ का काल शुरू हो रहा था, इसलिए और अधिक सहन करने का मतलब था—लोगो मे दुविधा पैदा करके, योजनाओ को कार्यरूप मे परिणत करने मे शिथिलता लाना। स्तालिन ने घोषित किया :

"यह विरोध हटाओ, क्रांतिकारी शब्दाडंबरो को दूर फेकने पर देखोगे कि इन सबके नीचे आत्मसमर्पण की भावना काम कर रही है। ·"

त्रॉत्स्कीवाद क्रांति की शक्तियो मे अविश्वास पैदा करना चाहता था।

ओर्जोनिकिद्जे ने ठीक ही लिखा था :

"त्रात्स्कीवाद की विजय का अर्थ होता–सोवियत की सारी सृजनात्मक योजनाओ का विध्वंस। त्रॉत्स्की और दक्षिणपक्षियो पर स्तालिन की विजय, क्रांति की एक नई सफलता थी।"

3. कृषि की समस्या

काग्रेस मे स्तालिन ने औद्योगिक पुनर्निर्माण की सफलता का विवरण देते हुए, यह भी बतलाया कि खेती पिछड रही है; और :

"इससे निकलने का एक ही रास्ता है–छोटी-छोटी तथा बिखरी हुई किसान-खेतियों को विशाल सयुक्त फार्मो के रूप मे साझे की खेती करते हुए, आधुनिक और उच्च टेक्नीक के अनुसार भूमि का सामूहीकरण। रास्ता यही है कि छोटे-छोटे बोने किसान फार्मो को धीरे-धीरे किंतु पर दबाव से नही, बल्कि उदाहरण देकर और समझा कर सम्मिलित, सहयोगी, सामूहिक खेती के आधार पर खेती की मशीना, ट्रेक्टरो और वेज्ञानिक ढग की खेती करने पर सहमत किया जाय। इसे छाडकर और कोई रास्ता नही है।"

यद्यपि इस समय तक खेती की उपज महायुद्ध से पहले की स्थिति मे पहुँच रही थी। लेकिन, जो अन्न बाजार के लिए प्राप्य था, वह युद्ध के पहले से एक तिहाई (37 फी सैकडा) ही था। देश मे ढाई करोड के करीब छोटे-छोटे किसान थे। इन छोटे किसानों की स्थिति ऐसी नही थी, कि वह किसी भी आधुनिक खेती के तरीके का इस्तेमाल कर सके। उनके छोटे-छोटे खेतो मे ट्रैक्टर और खेती की दूसरी मशीने नही चल सकती थी। यह खेत और भी टुकडो मे बँटते जा रहे थे। इसमे कोई सन्देह नही कि अगर अनाज पैदा करने की यह अवस्था जारी रहती, तो सेना और नगर की जनता को बराबर अकाल का सामना करना पडता।

पूँजीवादी फार्मो के सगठित करने से भी उपज मे वृद्धि की जा सकती थी, किन्तु उस समय भारी सख्या म बेकार हुए किसानो की क्या हालत होती ? पहले तो उनको समझा-बुझाकर नही, बल्कि उनसे जबर्दस्ती खेतो का छीनकर एेसे फार्मो के रूप म परिणत करना पडता, फिर मशीनो के इस्तेमाल के कारण भारी सख्या मे किसान बेकार हो जाते और कमकरो और किसानो की मैत्री, जो क्राति की सफलता के लिए एक मात्र गारटी थी, वह खतम हो जाती। कुलकों (धनी किसानों) को भी इससे सहायता मिलती। इन सबका नतीजा होता–देहात मे समाजवाद की पूर्ण पराजय। यही योजना थी, जिसे दक्षिण पथी सामने रख रहे थे। स्तालिन के सुझाव पर, पार्टी ने दूसरे ही तरीके–समाजवादी खेती अर्थात् कोलखोजी (सामूहिक) खेती को अपनाया। इसमे बिखरे हुए खेतो को बडे-बडे फार्मो के रूप मे परिणत करने की गुजाइश थी और साथ ही हर एक गॉव के किसान अपनी खेती और उपज के मालिक तथा काम के साझीदार थे, इसलिए उनके बेकार होकर क्राति-विरोधी बनने की सम्भावना नही थी। वैज्ञानिक ढग की मशीनो से खेती करने के कारण उपज बढनी निश्चित थी, जिसका अर्थ था–किसानो के पास अधिक धन का आना और उसका मतलब समाजवाद और सर्वहारा के नेतृत्व मे उनके विश्वास का अधिक बढना था। लेनिन ने छोटे छोटे किसानो की जगह, मशीनो द्वारा सामूहिक विशाल खेती का सुझाव रखते हुए कहा था : "छोटी-छोटी खेती करने पर, गरीबी से बचने का कोई उपाय नही है।"

पद्रहवी काग्रेस ने सामूहिक (कोलखोजी) खेती के पूर्ण विकास के लिए प्रस्ताव पास किया था। इसी काग्रेस ने प्रथम पचवार्षिक योजना तैयार करने के लिए भी आदेश दिया था, यह हम बतला चुके हैं। इस प्रकार, हम यह भी देखते हैं कि स्तालिन अच्छी तरह समझते थे कि केवल उद्योग-धधो के विकास पर जोर देना और खेती को छोड़ रखना ठीक नही है; भारतीय पचवार्षिक योजना की तरह, केवल खेती की टुटपुँजिया योजना बनाना भी आगे बढने का रास्ता नही है। योजना को कार्यरूप मे परिणत करने के लिए जिन भौतिक और मानवी साधनो की आवश्यकता थी, उनके जुटाने की भी तैयारी की गई। पार्टी के सबसे योग्य सदस्यो और उत्साही कमकरो को सामूहिक खेती को बढ़ावा देने के लिए नियुक्त किया गया, जो कोलखोज पहले से

ही मौजूद थे, उन्हें मशीन, बीज और वैज्ञानिक परामर्शदाता जुटाकर मजबूत किया गया। मशीनों से सहायता देने के लिए मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन स्थापित किए गये। सारे देश मे एक उत्साह आ गया, क्योकि वहाँ जनता न चोर बाजारी पूँजीपति घडियालो को देखती थी, न घूस से नाक तक डूबे छोटे से बडे तक सरकारी कर्मचारियों और उनके आकाओं को। वहाँ कामचोरी की कोई गुंजाइश नही थी। सभी कमकर कमर कसकर शारीरिक और बौद्धिक सभी तरह का श्रम करने को तैयार थे। अमरीकी सचालन मे भारत की सामूहिक ग्राम-योजनाओ की तरह, बाबुओं की पलटन तयार करके देश के रुपये का बरबाद करना और किसानो को भडकाना उनका ध्येय नहीं था और न कम्यूनिस्ट वहाँ के गाँवो मे कुर्सी पर बैठकर, कलम घिसाई करने गये थे। किसी हलवाहे को पीछे रहते देखकर, वह स्वय हल की मुठिया अपने हाथ मे पकड लेते, किसानो की तरह ही ऐडी से चोटी तक का पसीना एक करते। ऐसी अवस्था मे, बोल्शेविको की पचवार्षिक याजना और उसके प्रणेता के प्रति लोगो की भारी आस्था क्या न होती और वह सामने के प्रोग्राम को दिलोजान से पूरा करने के लिए तैयार क्यो न होते ?

सन् 1927 मे, अमरीकी मजदूरों का एक प्रतिनिधि-मडल रूस गया था। उन्होने स्तालिन से मुलाकात की थी। पिछले दस वर्षो मे अमरीकी पूँजीवादी पत्रो ने जिस झूठ का प्रचार किया था, यद्यपि उसका प्रभाव इन मजदूरो पर कम ही हो सकता था, तो भी उन्होंने स्तालिन से चार घटे तक तरह तरह के प्रश्न किये। स्तालिन ने सभी का जवाब मुँहजबानी दिया था, जो 11,800 शब्दो मे समाप्त हुआ। सभी जवाब परस्पर सबद्ध थे। जब प्रतिनिधि मडल प्रश्न करते करते थक गया, तो स्तालिन ने उनसे पूछा—"क्या मै भी अमरीका के बारे मे कुछ प्रश्न कर सकता हूँ ?" फिर, उन्होने दो घटे तक और वार्तालाप किया, जिसमे पता लगा कि वह अमरीकी जीवन के हर एक पहलू का कितना ज्ञान रखते थे। स्तालिन ने अकेले ही जितनी खूबी के साथ चार घटे तक जवाब दिए, प्रतिनिधि मडल वैसा करने मे असमर्थ रहा। इस पूरे 6 घटे की बातचीत मे न कोई टेलीफोन की घटी बजी और न बीच मे कोई सक्रेटरी आया। इससे मालूम होता है कि स्तालिन सामने आये काम पर कितनी एकाग्रता से जुट जाते थे।

8

पंचवार्षिक योजनाएँ (सन् 1927-41)

पचवार्षिक योजनाओं के बारे मे बारबूस ने लिखा है :

"योजनीकरण (की प्रकाण्ड प्रक्रिया, जिसका जाल सारे देश मे एक लम्बे समय से बिछा हुआ है, सोवियत की बिलकुल अपनी कल्पना है। लेकिन, इसकी छाप सारी दुनिया पर भी पडी है। इसने सोवियत सघ मे ठोस प्रगति की है। दूसरी जगहो मे भी विचार और कल्पना के रूप मे यह आगे बढी है। सोवियत सघ बडे राष्ट्रो से पैसा उधार लेने मे कभी सफल नही हुआ, लेकिन बडे राष्ट्रो ने सोवियत सघ से कुछ महत्त्वपूर्ण चीजे अवश्य उधार ली है। उन्होने सोवियत से नियत्रित आर्थिक व्यवस्था उधार ली है। 'नियत्रित अर्थनीति' के रूप मे, पूँजीवाद ने समाजवाद का झिझकते हुए अभिनदन किया है।

" नियत्रित अर्थनीति,—हाँ, कठिनाइयों से बाहर निकलने के लिए मानव जाति के सामने इसके अलावा दूसरा रास्ता नही है। सचमुच, हमारे सामने एक रामबाण औषधि मौजूद है। लेकिन, नियत्रण का अर्थ है—एकीकरण; और पूँजीवाद का अर्थ है—अराजकता, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनो ही दृष्टिकोणों से। अगर 'नियत्रित' शब्द का अर्थ पूरा राष्ट्रीय नही है, और न वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ ही है, तो देश में हो या बाहर, इसका कोई अर्थ नही, कोई भी मूल्य नही है।"

" आर्थिक योजना की कल्पना, यह केवल सोवियत-कल्पना इसलिए नही है कि इसमें किसी से बाजी

मारने का विचार नहीं था; सोवियत के लिए तो यह प्रकृत वस्तु थी। पूँजीवादी देशो में, जहाँ पर निजी व्यवसाय के कारण आर्थिक प्रश्नों मे विशेष सुविधा, स्वार्थों की विभिन्नता और बहुतायत काम करती है, तत्परता के साथ कोई एक सामान्य आर्थिक योजना को कार्यरूप में परिणत करना असम्भव है··। लेकिन, यह बात समाजवादी राज्य के लिए नहीं है, समाजवादी राज्य के लिए एक निश्चित, तर्कसम्मत, निर्माणात्मक योजना को जनता के हितो के लिए, गणित की तरह, बिलकुल नपे-तुले रूप में पूरा करना कठिन नहीं है; क्योंकि वहाँ सचालन-सस्था ही विधान-निर्मात्री, कार्यकारिणी, स्वामिनी और व्यय करने वाली सस्था भी है। "

पहिली पचवार्षिक योजना (1928-32)

1. उद्योग-क्षेत्र : यह योजना 1 अक्तूबर, 1928 को शुरू हुई थी। 31 दिसम्बर, 1931 तक अर्थात् पाँच वर्षो का काम इसने चार वर्षो मे पूरा कर लिया था। इसके कारण कितनी औद्योगिक उन्नति हुई, यह इसी से मालूम होगा कि जहाँ सन् 1928 मे राष्ट्रीय आय 15 66 अरब रूबल थी, वहाँ सन् 1931 मे 41 90 अरब हो गई। उससे पहले, रूस मे न ट्रैक्टर बनते थे, न विमान। जारशाही रूस अपनी अधिकाश मशीने यूरोप और अमरीका से मँगाता था, लेकिन प्रथम पचवार्षिक योजना ने ही सोवियत को इन चीजो में स्वावलम्बी बना दिया। इसी समय, पेट्रोल और कोयले की उपज मे सोवियत रूस दुनिया के दूसरे देशो को पीछे छोडकर, प्रथम हो गया। मध्य एशिया और काकेशस मे पहले कल-कारखाने नाम को थे, अब वहाँ उनकी दृढ नीव पड गई। कपास की उपज इन चार वर्षो मे दूनी हो गई और कपडे की बडी बडी तेरह नई मीलें खुलीं। पहले, कारखानों मे कुल मिलाकर 4 60 अरब रूबल पूँजी लगी हुई थी, किन्तु इन चार वर्षो के भीतर ही, अब 24 अरब रूबल की नई पूँजी लगाई गई। सन् 1928 मे जहाँ 7.23 लाख आदमी कारखानो में काम करते थे, वहाँ सन् 1932 में उनकी सख्या सवा 31 लाख, अर्थात् चौगुने से भी अधिक हो गई। 1500 नये कल-कारखाने बने। इसी समय दो-तिहाई खेती पचायती बन गई।

ये सफलताएँ वैसे ही आश्चर्यजनक थी; तब भी पूँजीवादी दुनिया समाजवाद की किसी भी सफलता को स्वीकार करने के लिए तैयार ही नही थी। इसलिए, वह क्यो मानती ? जब सारे आँकडो और विवरणो के साथ प्रथम पचवार्षिक योजना घोषित की गई, तो पश्चिमी साम्राज्यवादी देशो ने उसे देखकर मुसकरा दिया। वह तरह तरह की भीषण भविष्यवाणियाँ करने लगे और योजना को बोल्शेविको का स्वप्न या झूठा प्रोपेगेंडा कहने से भी वाज नही आये। किसी ने कहा–"इन आँकडो को मानने के लिए आदमी का अन्धविश्वासी होना चाहिए।"–दूसरे ने कहा : "पचवार्षिक योजना के आँकडे निश्चय ही गलत है, क्योंकि वह बहुत बडे है। राष्ट्रीय सम्पत्ति-स्रोतो का इतने बडे परिमाण मे स्थानातरित करना केवल युद्ध के समय, गोलो के डर के मारे ही सम्भव है।"

सन् 1928 मे ही, बारबूस ने लिखा था :

"जो पचवार्षिक योजना इस वक्त चल रही है, वह कोई नौकरशाहो और साहित्यिको के आँकडो और शब्दो की कल्पनाओ का रूप नही है, बल्कि एक नपा-तुला कार्यक्रम है। राज्य-योजना के आँकडो को सूचनाओं के रूप मे नही, बल्कि प्राप्त-विजयो के रूप में देखना चाहिए। हमसे जब बोल्शेविक कहते है कि सन् 1931 तक सोवियत-उद्योग में 8 फी सैकडा की वृद्धि होगी, आर्थिक पुनरुज्जीवन के काम में 7 अरब रुपया लगाया जायेगा और पन-बिजली स्टेशनो की शक्ति 35 लाख किलोवाट तक पहुँच जायेगी।··· तो हमें मानना चाहिए कि वस्तुतः वे चीजे अस्तित्व मे भी आ चुकी है।"

"सोवियत योजना 109 फी सैकड़ा सफल हुई। पूँजीवादी दुनिया केवल पचवार्षिक योजनाओ के आँकड़ो पर ही अविश्वास नही करती थी, बल्कि वह चाहती थी कि वह किसी भी तरह से सफल न हो। 'न्यूयार्क टाइम्स' (नवम्बर सन् 1932) ने लिखा था : "यह योजना नहीं है, मन के लड्डू हैं। घोर पराजय है !"–अंग्रेजी 'डेली टेलीग्राफ' ने घोषित किया था : "यह पूरा दिवालियापन है !"–पोलैण्ड का पूँजीवादी पत्र 'गजेता पोलस्का' कह रहा था : "गतिरोध, भारी गतिरोध !"–इटालियन 'पोलितिचा' का फतवा था : "सर्वनाश स्पष्ट है !"–लंदन

का बूढ़ा 'फाइनैन्शियल टाइम्स' गम्भीरतापूर्वक आगाही दे रहा था : "सारी व्यवस्था का विशृंखलन, खंड-खंड होना !"–अमरीकन 'करंट हिस्ट्री' ने लिखा था : "अपने उद्देश्य में खंड-खंड अपने सिद्धांतों में खंड-खंड !"–पार्टी से निकाले गए एक रूसी ने लिखा था : "सोवियत समाजवादी गणसंघ में पंचवार्षिक योजना केवल कागज पर होती है, वह कभी सफल नहीं होती।" इसी लेखक ने सन् 1931 में अपनी पुस्तक में लिखा था : "सोवियत समाजवादी गणसघ मे जेल ही ऐसी जगह है, जहाँ पर आदमी भूख से नहीं मरता !··· हर एक सोवियत नागरिक के जूतों में छेद हैं और उसके चेहरे पर निराशा।"–एक ने तो यहाँ तक भी लिख दिया था : "मॉस्को के होटलों में वह बच्चों को पकाकर खाते है !"

लेकिन, प्रथम पचवार्षिक योजना कितनी सफल रही, इसके आँकड़े हम बतला चुके हैं। न भीषण गतिरोध हुआ, न सर्वनाश; न दिवाला पिटा, न खड-खंड हुआ। उपज और उद्योग-धंधों की वृद्धि के साथ-साथ, सोवियत में साक्षरो की संख्या जो सन् 1930 में 67 फी सैकडा थी, 1933 में 90 फी सैकडा हो गई। योजना की समाप्ति के समय, बारबूस ने रूस मे जाकर देखा था : "एक विशाल हवाई जहाज–जिसके भीतर जाने पर आदमी समझता था, मानो वह किसी कारखाने के मशीन-रूम में हो–जिसके निर्माण में कोई भी चीज बाहर से लाकर नहीं लगाई गई थी, सिवाय पहियों की रबर के टायरों के। द्रियेप्रोज, मग्नितोगोर्स्क, चेलियाबिन्स्क, बांगरिती, उरालूमाशस्त्रोय, क्रामाशस्त्रोय आदि नये औद्योगिक नगर पैदा हो गए। अग्रेजी पत्र 'नेशन' ने लिखा था : "चार वर्षों में पृथ्वी पर पचास नये नगर उठ खडे हुए, जिनमे से हर एक की जनसख्या पचास हजार से ढाई लाख की है। कुजलनेत्स्क-उपत्यका मे 6 नये शहर तैयार हुए, जिनकी जनसख्या 6 लाख थी। ध्रुवकक्षीय प्रदेश मे फासफेट निकल आने से, वहाँ 50 हजार की आबादी का एक नगर (किरोवग्राद) तैयार हो गया। स्तालिन ने जहाँ प्रथम पचवार्षिक योजना में भारी उद्योगों की दृढ नीव रखकर, सोवियत भूमि को औद्योगिक तौर से स्वावलम्बी बनाने का निश्चय किया था, वही वह यह भी समझते थे कि पूँजीवादी शक्तियाँ एक अकेले समाजवादी राज्य के खिलाफ जिस महायुद्ध की साजिशे कर रही है, उसे छेडकर ही रहेगी और उसमे पडने के लिए सोवियत को मजबूर करेगी ही। ऐसी अवस्था मे, अपने बडे-बडे उद्योग-धधो को मजबूत करना जरूरी है। इसीलिए, मग्नितोगोर्स्क, स्वेर्दलोव्स्क, चेलियाबिन्स्क, नवोसिबिर्स्क, कूजनेत्स्क, अगरास्त्रोय आदि नये विशाल औद्योगिक-केन्द्र बनाये गए।

उद्योग-धधो मे जिस तरह काम हुआ, खेती में भी वही बात हुई। और इस प्रकार, स्तालिन की योजना ने सोवियत रूस को सर्वांगीण सफलता प्रदान की। साम्राज्यवादियों ने औद्योगिक योजनाओ का केवल उपहास करके ही सतोष नही किया, बल्कि उन्होने तोड-फोड के काम कराने की भी पूरी कोशिशे की–शाख्ती की खानो मे ऐसा ही हुआ था। जहाँ भी अवसर मिला, पुराने मध्यवर्ग के प्रतिगामी विशेषज्ञ तोड़-फोड़ का काम किए बिना नही रहे। स्तालिन ने देखा कि देश जब तक विरोधी-वर्ग के विशेषज्ञो पर निर्भर रहेगा, तब तक इस तरह के खतरे बराबर बने ही रहेगे। इसीलिए, योजना के दौरान मे ही, उन्होंने मजदूरवर्गीय विशेषज्ञों, प्रबन्धको, और बुद्धिजीवियो को भारी सख्या में शिक्षित करने की ओर ध्यान दिया। होनहार तरुणो को पाँच वर्ष की शिक्षा देने की जगह, उन्होने डेढ़-डेढ़ वर्ष की फौरी तथा आंशिक शिक्षा देकर, काम पर लगाया और काम करते हुए उनकी शिक्षा और ज्ञान को बढाने का भी प्रबन्ध किया। इसी वक्त, स्तालिन ने यह भी कहा था :

> "हमे अपने बारे म आत्म-आलोचना करते रहने की जरूरत है। इसके बिना, हम अपने व्यवसाय, मजूर-सघ और पार्टी सगठन को नही सुधार सकते। समाजवाद के निर्माण में बूर्ज्वा तोड़-फोड़ की कार्रवाई को तब तक कम नही कर सकते, जब तक कि हम आत्म-आलोचना को पूरी तौर से विकसित नहीं करते, जब तक कि हम अपने सगठनो के काम को जनता के नियत्रण के अधीन नहीं रखते।"

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास के अनुसार : "नये विकास के लिए इतने विराट पैमाने पर, इतने उत्साह के साथ करोड़ो कमकरो द्वारा श्रम मे वीरता दिखलाते हुए, यह विकास और औद्योगिक-निर्माण इतिहास मे कभी नही देखा गया था।"–स्तालिन ने स्वय निर्माण के स्थानों का दौरा किया था। वह सन् 1928 के जाडों में साइबेरिया के बरनोल आदि स्थानों तथा अलूताई के इलाके में गए थे। क्रांति के बारहवें वार्षिकोत्सव

के समय (सन् 1929), स्तालिन ने 'महान् परिवर्तन का एक वर्ष' के नाम से एक लेख में बतलाया था कि समाजवाद ने शहर और देहात मे किस तरह पूँजीवादी तत्त्वो के खिलाफ जबर्दस्त आक्रमण किया था।

2. कोलखोज (सामूहिक खेती) : समाजवादी दृष्टि से सामूहिक खेती, कोलखोजी व्यवस्था पर पहुँचना बिलकुल स्वाभाविक है। सन् 1922-23 मे, मुझे न मार्क्सवाद का उतना ज्ञान था और न सोवियत-भूमि मे होने वाली बातों का परिचय ही था। जब मैंने हिन्दी मे 'उटोपिया' (कल्पना) के रूप मे अपनी 'बाईसवी सदी' लिखनी शुरू की, तो सामुदायिक खेती के रूप मे ही गाँव के जीवन को चित्रित करने का ख्याल आया था। इसलिए, यदि मार्क्स जैसे क्रांतिदर्शी ने इस तरह की खेती को पहले ही देख लिया, तो इसमे आश्चर्य की क्या बात थी ? मार्च सन् 1881 मे, मार्क्स ने वेरा जासुलिच को एक चिट्ठी लिखते हुए कहा था कि रूस एक ऐसा देश है, जिसको प्रकृति ने वह सभी साधन प्रदान किए है, जो समाजवादी क्राति हो जाने पर, समाजवादी यात्रिक खेती के अनुकूल होंगे। उस वक्त, मार्क्स ने राय दी थी कि रूस सामूहिक-यात्रिक खेती के लिए आवश्यक यत्र-साधन पूँजीवादी देशो से प्राप्त कर सकता है। लेनिन भी लाखो ट्रैक्टर और ट्रैक्टर-ड्राइवरो वाली खेती का स्वप्न देख रहे थे। सामूहिक खेती के महत्त्व पर उनका बहुत जोर था। लेनिन का वह स्वप्न, उनके योग्य शिष्य ने सत्य करके दिखला दिया। स्तालिन ने ट्रैक्टरो और कृषि मशीनों के लिए, बडे-बडे कारखाने बनाने की ओर पूरा ध्यान दिया। छोटी से छोटी बातो पर भी उन्होने स्वय विचार किया। नई मशीनो के परीक्षण मे भाग लिया; कारखानो के मेनेजरो, आविष्कारको और डिजाइनरो को स्वय सलाह दी। इस प्रकार थोडे ही दिनो मे, यत्र-निर्माण मे बहुत पिछडे हुए रूस ने ट्रैक्टरो, कटाई की कम्बाइनो, आलू बोनेवाले यत्रो, मगेला, चुकन्दर, कपास की फसलो के जमा करने की मशीनो को बडे परिमाण मे बनाना शुरू कर दिया।

कोलखोजीकरण का काम आसानी से आगे नही बढा; क्योकि जमीदारों के खतम हो जाने के बाद, कुलक (सूदखोर धनी किसान) कोलखोजो को बडी शनि-दृष्टि से देख रहे थे। जब तक किसान जनसाधारण भारी अभाव और गरीबी मे रहे, तभी तक कुलको की पाँचो घी मे रहती है। सामूहिक खेती का मतलब था–किसानो का अभाव और गरीबी से मुक्त होकर, अपने पैरो पर खडा होना, जिसका अर्थ था–कुलको के फलने-फूलने के रास्तो का रुक जाना। उन्होंने हर तरह से छोटे और मझोले किसानो को भडकाना शुरू किया। लेकिन, स्तालिन की आँख सिर्फ कल-कारखानों को ही नही बल्कि रोटी के बारे मे गाँवो मे क्या हो रहा है, इसे भी देख रही थी। एक साल के अन्दर, कोलखोजी आन्दोलन काफी आगे बढा। स्तालिन ने लिखा था : "वर्तमान कोलखोजी आन्दोलन का नया और निर्णायक रूप यह है कि किसान कोलखोजो मे अलग-अलग गुटो मे आकर शामिल नही हो रहे है, जैसा कि उन्होंने पहले किया था, बल्कि अब गाँव के गाँव, तहसीलें की तहसीले और जिले के जिले ही नही, सारे प्रदेश कोलखोज मे शामिल हो रहे है। इसका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ है–मझोले किसान कोलखोज-आन्दोलन मे शामिल हो रहे है।"–लेकिन, जिस तरह कोलखोज मे शामिल होने के लिए किसान जनसाधारण उत्साह दिखला रहा था, उसी तरह कुलक भी उसमे बाधा डालने के लिए तैयार थे। उन्होने साधारण किसानो को भडकाया। कभी प्रलोभन देकर कोलखोज के जानवरो को मरवाया, कभी मशीनो को खराब किया और कभी मुल्लो और पादरियो से मिलकर धर्म के नाम पर सीधे-सादे किसानो को फुसलाया। यही समय था, जब बाहरी दुनिया मे युद्ध का नया खतरा पैदा हो गया था। सन् 1921 मे, जापान ने मचूरिया पर अधिकार कर लिया और सामुराई पूर्वी साइबेरिया पर अपनी गृद्ध-दृष्टि डाल रहे थे। ऐसी व्यवस्था मे, कुलको के अस्तित्व को और बर्दाश्त करते रहना युक्तियुक्त न समझा गया। उन्हे गैरकानूनी बना दिया गया। 27 दिसम्बर, 1929 को कृषि के विद्यार्थियो की कान्फरेस मे भाषण देते हुए, स्तालिन ने बतलाया :

> "चाहे पूँजीवाद की ओर पीछे हटो, या आगे समाजवाद की ओर बढो–दो ही रास्ते है। तीसरा रास्ता न है, न हो सकता है। जहाँ छोटे-छोटे किसानो की बहुतायत है, समाजवादी नगरो को देहातो का नेतृत्व करना होगा। देहाती इलाको मे कोलखोजी और सोविखोजी खेती कायम करो। देहाती इलाको को एक नये समाजवादी आधार पर सगठित करना होगा।'

अभी तक, अधिक खेती के मालिक और अधिक उपज हाथ मे होने के कारण अनाज और पशुओ की

सम्पत्ति की कुंजी कुलकों के हाथ में ही थी, लेकिन अब पाँसा पलट गया। स्तालिन के कथनानुसार : "कुलकों के उत्पादन की जगह, कोलखोज और सोविखोज के उत्पादन के भौतिक आधार हमारे पास हैं। इसीलिए, हमने कुलकों के शोषण पर नियंत्रण करने की जगह, उन्हें एक वर्ग के तौर पर खतम कर देने की नीति अख्तियार की है।"

कोलखोज का प्रसार और भी जोरों से होने लगा। कितने ही अदूरदर्शी कार्यकर्ता उत्साह के मारे चरमपंथी बनकर, किसानों को भी कुलक बनाकर बाहर करने तथा दबाव डालकर सारे इलाके को कोलखोजों में परिवर्तित करने लगे, जिसके कारण देहातों में असंतोष बढ़ने लगा। समय रहते ही, स्तालिन की सावधान आँखों ने खतरे को देख लिया और उसी समय उन्होंने 'सफलता से चकाचौंध' के नाम से एक लेख लिखकर खूब फटकारते हुए, बतलाया कि कोलखोज (सामूहिक खेती) का निर्माण केवल किसानो की स्वेच्छा पर निर्भर होना चाहिए। और, यह भी कि सामूहिक खेती का रूप सहकारी (अर्तेल) होना चाहिए। स्तालिन ने इसी लेख में नेतृत्व के बारे में कहा था :

> "नेतृत्व की कला एक गम्भीर विषय है। आदमी को आन्दोलन से पीछे नहीं रहना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने पर वह जनसाधारण से अलग हो जायेगा। लेकिन, साथ ही आदमी को आगे भी नहीं दौड़ जाना चाहिए, क्योंकि आगे दौड़ जाने का मतलब है—जनसाधारण के सम्पर्क से वंचित होना। जो भी आदमी किसी आन्दोलन का नेतृत्व करना चाहता है और साथ ही विशाल जनता के साथ सम्पर्क भी बनाये रखना चाहता है, उसे दो मोर्चों पर लड़ाई लड़नी होती है—उनके साथ भी, जो पीछे पड़ रहे हैं और उनके साथ भी जो आगे दौड़ जाना चाहते है। हमारी पार्टी इसीलिए मजबूत और अजेय है कि आन्दोलन का नेतृत्व करते समय, वह जानती है कि कैसे कमकरों और किसानों के विशाल समूह के साथ सम्पर्क स्थापित करके आगे बढ़ना चाहिए।"

15 मार्च, 1930 को स्तालिन के इसी लेख को केन्द्रीय कमिटी ने एक प्रस्ताव के रूप में स्वीकार किया।

इसके बाद, किसानों ने स्तालिन को पत्र भेजने शुरू किए। इन प्रश्नो का उत्तर 'कोलखोजी साथियों को जवाब' 3 अप्रैल, 1930 को प्रकाशित हुआ, जिसमें स्तालिन ने बतलाया कि जो गलतियाँ कोलखोजों के बनाने में की गई थीं, उनका कारण था—मझोले किसानों के महत्त्व को न समझना और लेनिन के इस आदेश को भूल जाना था कि किसानों को कोलखोज मे शामिल करने के लिए जबर्दस्ती नहीं करनी चाहिए, कोलखोजों का निर्माण स्वेच्छापूर्वक होना चाहिए। स्तालिन ने यह भी बतलाया था : "कोलखोजी खेत की अंतिम परिणति साम्यवादी खेती मे होगी। किन्तु, ऐसा होना तभी सम्भव होगा, जब उपज इतनी अधिक हो कि कम्यून के सदस्यों की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। सहकारी (या अर्तेल) वह खेती है, जिसमें उत्पादन के मुख्य साधन समाजीकृत किए जाते हैं; लेकिन, घर, साग-सब्जी की क्यारियाँ, कुछ ढोर, भेड़-बकरियाँ, मुर्गियाँ आदि समाजीकृत नहीं होती। साम्यवादी (कम्यून) व्यवस्था में केवल उत्पादन ही नहीं, बल्कि वितरण भी समाजीकृत या सम्मिलित हो जाता है।"

कोलखोज-आदोलन पूर्णतया सफल रहा। पार्टी इतिहास के शब्दों में :

> "इस क्रांति की एक बड़ी विशेषता यह है कि यह ऊपर से, राज्य की प्रेरणा कैसे कार्य रूप में परिणत की गयी है, किंतु उसका समर्थन सीधे नीचे की ओर से उन करोड़ों किसानों द्वारा हुआ है, जो कुलकों की गुलामी को उखाड़ फेंकने के लिए लड़ते हुए कोलखोजों मे स्वतंत्र जीवन बिताना चाहते थे।"

इस सफलता में जिस पुरुष का सबसे बड़ा हाथ था, उसे (स्तालिन को) फरवरी सन् 1930 में सोवियत संघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमिटी ने 'लाल झंडे' का दूसरा तमगा प्रदान किया।

3. सोलहवीं कांग्रेस (सन् 1930) : 26 जून, 1930 को पार्टी की सोलहवीं कांग्रेस शुरू हुई। तब तक कृषि और उद्योग-धंधों—दोनो ही में भारी सफलता प्राप्त हो चुकी थी और समाजवाद चारों ओर विजयी हो रहा था। कुलक-वर्ग देहात से खतम कर दिया गया था और कोलखोजीकरण बड़े व्यापक और ठोस रूप से आगे बढ़ चुका था। इसी कांग्रेस में नारा बुलन्द किया गया—'पाँच वर्षों की योजना चार वर्षों में पूरी की जाये। उसके

बाद, द्वितीय पचवार्षिक योजना की तैयारी हो।' उद्योग-धंधों और कोलखोजी खेती के इतने विशाल रूप में संगठित होने पर, उनके प्रबन्ध की ओर भी ध्यान जाना जरूरी था। इसके लिए, समाजवादी उद्योगो के प्रबंधकों की प्रथम कान्फरेंस हुई, जिसमे 4 फरवरी, 1931 को स्तालिन ने 'व्यवसाय-प्रबधको के कर्तव्य' के नाम से एक भाषण देते हुए कहा :

"हम दुनिया के आगे बढे हुए देशो से पचास या सौ वर्ष पीछे है। हमे यह मजिल दस वर्षों में पूरी करनी है। या तो हम इसे पूरा करे, या वह हमे पीस देगे।"

इस प्रकार, स्तालिन ने व्यावसायिक प्रबन्ध की आवश्यकता को भी ऑखो से ओझल नही होने दिया। उद्योग-धधो की टेक्नीक पर तो उन्होने और भी जोर दिया। साथ ही, सोवियत की नई जनता अन्तर्राष्ट्रीय कमकरो की मैत्री का मूल्य न भूल जायं, इसलिए उन्होने कहा :

"सोवियत समाजवादी गणसघ दुनिया के मजूर-वर्ग का एक अग है। हमे केवल सोवियत समाजवादी गणसघ के मजूर-वर्ग के प्रयत्नो के कारण ही विजय नही मिली, बल्कि दुनिया के मजूर-वर्ग की सहायता भी उसमे सहायक हुई थी। बिना इस समर्थन के, बहुत पहले ही हमारे टुकडे-टुकडे कर दिए गए होते। कहा जाता है, हमारा देश सभी देशों के सर्वहारो का हरावल दस्ता है, जो ठीक ही कहा जाता है। लेकिन, इसमे हमारी जिम्मेवारियॉ बढ जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारो ने क्यो हमारा समर्थन किया ? कैसे हम उस समर्थन के पात्र बने ? इसीलिए कि पूँजीवाद के खिलाफ लडी जानेवाली लडाई मे हमने अपने आपको सबसे पहले झोंका; मजूर-वर्ग के राज्य की स्थापना करने मे हम सबसे पहले आगे बढ़े और समाजवाद के प्रथम निर्माण के आरम्भ करने वाले भी हम ही हुए। इसी कारण, हम वह काम कर रहे है, जिसमे यदि सफलता मिली तो वह सारी दुनिया को बदल देगा और सम्पूर्ण मजूर वर्ग को मुक्त करेगा। लेकिन, सफलता के लिए किस चीज की जरूरत है ? अपने पिछडेपन को हटाना और निर्माण के लिए बोल्शेविको की जबर्दस्त कार्य गति को विकसित करना। हमे इस तरह आगे बढना चाहिए कि सारी दुनिया का मजूर-वर्ग हमारी ओर देखकर कहने लगे : 'यह हमारा हरावल है, यह हमारा तूफानी दस्ता है, यह हमारा मजूर-वर्ग का राज्य है, यह हमारी पितृभूमि है; यह जिस काम को आगे बढा रहे है, वह हमारा काम है और यह उसे अच्छी तरह से कर रहे है। आओ, हम पूँजीपतियो के विरुद्ध उनका समर्थन करे और विश्व-क्रांति के काम को फैलाएं।' "

इस भारी काम की जबर्दस्त कठिनाइयो की बात करनेवालो को स्तालिन का जवाब था :

"दुनिया मे कोई भी ऐसा किला नही है, जिस पर बाल्शेविक अधिकार नही कर सकते। हमने कितनी ही अत्यत कठिन समस्याओ को हल किया है। हमने पूँजीवाद को उखाड फेका है। हमने राज्य-शक्ति हाथ मे ले ली है। हमने एक विशाल समाजवादी उद्योग का निर्माण किया है। हमने मझोले किसानों को समाजवाद के पथ पर चलाया है। निर्माण के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्त्वपूर्ण कितने ही कामो को हम पूरा कर चुके है; अब जो करने को बाकी रह गया है, वह बहुत नही है। वह है—टेक्नीक का अध्ययन और विज्ञान पर अधिकार प्राप्त करना। जब हम इसको भी कर लेगे, तो हमारे कार्य की गति इतनी विकसित हो जायेगी कि आज उसकी कल्पना भी नही की जा सकती। और, हम यह कर सकते है, अगर वस्तुत करना चाहे।"

जून सन् 1931 की व्यवसाय-प्रबन्धको की सभा मे 'नई स्थितियॉ, नये आर्थिक कर्तव्य' पर भाषण देते हुए, स्तालिन ने उद्योग के विकास के लिए आवश्यक 6 बातों पर जोर दिया था :

(1) कोलखोजों के साथ सगठित ढग से शर्तनामा करके, मजदूरो की भर्ती करना और नये कमकरो की मेहनत को यत्रों द्वारा हल्का करना। (2) सब मजूरी को बराबर करने के खयाल को छोडना, ठीक तरह से मजूरी का नियमन करना और कमकरो की जीवन-स्थितियों को सुधारना। (3) वैयक्तिक जवाबदेही के अभाव को खतम करना, श्रम-सगठन को बेहतर बनाना और उद्योग-धधो मे श्रम की शक्तियो का ठीक तौर से वितरण करना। (4) ऐसा प्रबन्ध करना, जिसमे सोवियत समाजवादी गणसघ के मजूर-वर्ग

के पास अपने निजी औद्योगिक और टेक्नीकल बुद्धिजीवी हों। (5) पुराने ढंग के इंजीनियरों और टेक्नीशियनों के प्रति अपने भाव को बदलना, उनकी ओर अधिक ध्यान और सहानुभूति रखना और उनका सहयोग प्राप्त करने के लिए अधिक निर्भीकता से काम लेना। (6) व्यवसाय के हिसाब किताब को ठीक तरह से रखने का प्रबन्ध करना, प्रचार करना और उद्योग धंधों में पूंजी जमा करने के काम को अधिक बढ़ाना।"

स्तालिन सन् 1929 में 50 वर्ष के हो गये। उनकी महिमा सोवियत राष्ट्र के कोने कोने में फैल चुकी थी। उनकी 50वीं वर्षगांठ के दिन व्यक्तियों और संस्थाओं ने बहुत से अभिनंदन भेजे थे, जिनका जवाब देते हुए स्तालिन ने कहा था — "मैं आपके शुभकामनाओं और अभिवादनों को मजूर वर्ग की महान् पार्टी के नाम पर मानता हूँ, जिसने मुझे पैदा किया और पाल-पोसकर अपने रूप में बनाया है।"

स्तालिन यह भली प्रकार जानते थे कि उनकी सारी योजनाएँ केवल दिमागी कल्पना मात्र रह जातीं, यदि कमकर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी उन्हें कार्यरूप में परिणत न करती।

4. स्त्रियाँ — समाजवादी व्यवस्था और सोवियत शासन ने स्त्रियों को आर्थिक स्वतन्त्रता दी, जो सभी स्वतन्त्रताओं की जननी है। वह आर्थिक तौर से अपने पैरों पर खड़ी हुईं। स्तालिन ने स्त्रियों की अतीत और वर्तमान की अवस्था के बारे में कहा था —

"इतिहास में मनुष्यों का कोई भी ऐसा महान् आंदोलन नहीं है, जिसमें कमकर स्त्रियों ने भाग न लिया हो। कमकर स्त्रियाँ सभी पीड़ितों में भी अत्यन्त पीड़ित हैं, लेकिन तो भी वह कभी इस समय में मुक्ति के महान् अभियान में अलग नहीं रहीं और न रह सकती थीं। हम जानते हैं, दास मानव आन्दोलन में [illegible] ने बहुत वीरतापूर्वक काम किया था। किसान और दासों की मुक्ति के [illegible] में स्त्रियों ने प्रमुख भाग लिया था। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि मजूर वर्ग के क्रान्तिकारी आंदोलन, पीड़ित जनता की मुक्ति के आंदोलन में [illegible] क्रान्तिकारी आंदोलन में [illegible] कमकर स्त्रियाँ आकर्षित हुई हैं। कमकर स्त्रियाँ — [illegible] कमकर और किसान स्त्रियाँ — मजूर वर्ग की सबसे बड़ी रिजर्व सेना हैं, [illegible] जनता की आधी है। यह रिजर्व सेना [illegible] मजूर आन्दोलन के भाग्य का [illegible] और [illegible] की विजय या पराजय का निपटारा है। इसीलिए मजूर वर्ग और उसकी हरावल कम्युनिस्ट पार्टी का यह प्रथम कर्तव्य है कि बुर्जुआ के प्रभाव से कमकर और किसान स्त्रियों को निकालने के लिए [illegible] उनके बीच कमकर किसान स्त्रियों को राजनीतिक तौर से शिक्षित और संगठित करने के लिए दृढ़ संघर्ष करें। लेकिन कमकर स्त्रियाँ रिजर्व सेना ही नहीं हैं, [illegible] भी है। [illegible] मजूर वर्ग ठीक नीति अख्तियार करे तो वह बुर्जुआ के विरुद्ध लड़ाई में [illegible] वर्ग की वास्तविक फौज बन सकती है। स्त्रियों की इस सेना [illegible] महान सेना के [illegible] कमकर किसान स्त्री सेना के रूप में ढालना मजूर वर्ग का द्वितीय और निर्णायक [illegible] है।"

[illegible] कमकर की प्रथम [illegible] में कालखोजी औरतों के बारे में स्तालिन ने कहा था —

"साथियो! कालखोजों में स्त्रियों का प्रश्न एक बड़ा प्रश्न है। मैं जानता हूँ, आपमें से बहुत से लोग स्त्रियों के मूल्य को कम समझते या उनका उपहास भी करते हैं। यह गलत है। सवाल यहीं नहीं है कि स्त्रियाँ हमारी जनसंख्या की आधी हैं, बल्कि खास बात यह है कि कालखोज आंदोलन ने उल्लेखनीय तथा योग्य कितनी ही स्त्रियों को ऊँचे पदों पर पहुँचाया है। इसी कांग्रेस की प्रतिनिधियों की ओर देखो, तो तुम्हें मालूम होगा कि स्त्रियाँ पिछड़े हुओं की पंक्ति से आगे बढ़नेवालों की पंक्ति में काफी पहले पहुँच गई हैं। कालखोजों में स्त्रियाँ एक भारी शक्ति हैं। इस शक्ति को दबा रखना भयंकर अपराध होगा। हमारा कर्तव्य है कि स्त्रियों को कालखोजों में लायें, आगे बढ़ायें और इस महान् शक्ति का उपयोग करें।

"और, जहाँ तक कोलखोजी स्त्रिया का अपना सम्बन्ध है, उन्हे कोलखोज के महत्त्व और शक्ति का ध्यान रखना चाहिए। उन्हे याद रखना चाहिए कि केवल कोलखोज मे आकर ही उन्हे पुरुषो के बराबर होने का अवसर मिला है। बिना कोलखोज क असमानता ह और कोलखोज मे समान अधिकार प्राप्त है। हमारी कोलखोजी स्त्री साथिनो को इसे याद रखना चाहिए और कोलखोजी व्यवस्था को अपनी आँखो की पुतली जैसा प्रिय मानना चाहिए।'

सोलहवी काग्रेस न अपने एक प्रस्ताव म कहा 'जमीदारो जब्त करना देहात म अक्तूबर क्राति का पहला कदम था, कोलखोजी खेती का स्वीकार करना दूसरा और अत्यन्त निर्णायक कदम है जिसका कि सोवियत समाजवादी गणसघ मे समाजवादी समाज की नीव रखन म बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

5. विज्ञान स्तालिनग्राद (पुरान जारित्सीन) म सोवियत का सबस बडा ट्रैक्टर का कारखाना बना। उसके उद्घाटन के दिन (17 जून 1930) स्तालिन न कहा था

सोवियत समाजवादी गणसघ के प्रथम विशाल वोल्गा ट्रैक्टर कारखान क श्रमिको और प्रबन्धको का उनकी विजय क उपलक्ष्य म अभिवादन और अभिनदन। पचास हजार ट्रैक्टर जो तुम हर साल हमार देश के लिए पैदा करन वाल हो वह पचास हजार भीषण गोल होकर पुराने व बूर्ज्वा जगत को चूर चूर कर देग और देहात म नवीन समाजवादी व्यवस्था का रास्ता साफ करेग।

स्तालिन वैयक्तिक तौर स हर एक नय आविष्कर्ता को प्रोत्साहन और सम्मान प्रदान करत थ। वह विज्ञान और वैज्ञानिको के हमेशा पृष्ठ पोषक रह और लेनिन की तरह ही उनक सात खून माफ करन क लिए तैयार रहत थ। सोवियत नेताओ और उनक कामो का गाली देत रहन पर भी लेनिन और स्तालिन न पावलोफ को अपनी खोजा म उतनी सहायता दी जो जारशाही क्या किसी पूजीवादी देश म भी सम्भव नही हो सकती। स्तालिन ने त्स्योल्कोव्स्की पावलोफ मीचुरिन लीसेको जैसे महान् वैज्ञानिको का भारी सम्मान और समर्थन किया। कम्युनिस्ट एकेडमी को अलग रखना बेकार समझकर उनकी सलाह स ही उस विज्ञान एकेडमी म मिला दिया गया था।

द्वितीय पचवार्षिक योजना (1933 37)

प्रथम पचवार्षिक योजना की सफलताओ को देखत हुए द्वितीय पचवार्षिक योजना की तैयारी शुरू की गई- सोवियत सघ छोटे छोटे किसानो की खेती के देश म कोलखोज सोवखोज क विकास और यत्रो के अधिकाधिक उपयोग क आधार पर दुनिया क एक बडे पैमान क कृषि वाले देश के रूप म परिणत हो गया है। देश न राष्ट्रीय आर्थिक जीवन क पुनर्निर्माण क काम को पूरा करन के लिए अपन सार आधार तैयार कर लिय है। ऐसी अवस्था म द्वितीय पचवार्षिक योजना तैयार की गई।

इसी साल (सन् 1932 म) स्तालिन की पत्नी-नादेज्दा का देहान्त हुआ। उसकी अर्थी की यात्रा म स्तालिन उसके साथ साथ रहे। उसे बडे सम्मानपूर्वक दफनाया गया। वह अपन एक पुत्र वासिली और पुत्री स्वेतलाना को छोडकर मरी थी जिन्हे स्तालिन बहुत प्रेम करत थ।

प्रथम पचवार्षिक योजना कितनी सफल हुई इसके बारे म हम कह चुके है। सोवियत के साम्राज्यवादी शत्रुओ और उनक पत्रो को भारी सिर दर्द पैदा हो गया जब उन्होंने देखा कि समाजवाद की सार्वत्रिक और सार्वजनीन मुक्ति क वातावरण म कोई चीज असम्भव नही है। फ्रास के साम्राज्यवादी पत्र 'लतॉ' (27 जनवरी 1932) ने स्वीकार किया सोवियत सघ न बिना विदेशी पूँजी की सहायता के अपने को उद्योग प्रधान बनाकर पहली बाजी जीत ली। कुछ ही महीनो बाद अप्रैल म फिर उसी पत्र न लिखा जान पडता है साम्यवाद एक साँस म निर्माण की उन सारी अवस्थाओ को लाघ गया है जिनमे पूँजीवादी शासन को अत्यन्त धीरे धीरे पार होना पडा था। सभी बात देखन पर यह साफ है कि बाल्शेविको ने हमे इस सम्बन्ध म हरा दिया है।' —अग्रेजी साम्राज्यवादी पत्रिका 'राउड टेबिल' न लिखा 'पचवर्षीय योजना की सफलता एक आश्चर्यजनक घटना है।' —'फाइनैन्शियल टाइम्स' न लिखा उनकी सफलता के बारे म कोई सन्देह नही किया जा सकता। अपन

पत्रों और व्याख्यानों में कम्युनिस्ट जो फूल नहीं समाते देखे जाते हैं, वह बेबुनियाद ही नहीं है।" –आस्ट्रियन पत्र 'नोयं फ्राई प्रेस' ने लिखा था "आधुनिक पचवार्षिक योजना विराट है।" –यूनाइटेड डोमिनियन ट्रस्ट के प्रेसीडेंट गिब्सन जार्वी का विचार था "रूस आगे बढता जा रहा है, जबकि हम पीछे हट रहे हैं। पचवार्षिक योजना ने हमे पीछे छोड़ दिया है। रूस के तरुणो ओर कमकरों के पास एक चीज है, जिसका हमारे पास अभाव है, वह है–आशा।" –सयुक्त राष्ट्र अमरीका के पत्र 'नेशन' ने लिखा था "पचवार्षिक योजना के पाँच वर्ष वस्तुत. उल्लेखनीय सफलताओ को दिखलाने में सफल हुए है। सोवियत सघ ने एक नवीन जीवन की नीव निर्माण करने मे जिस ढंग अपने को लगाया, वह युद्ध काल के ज्यादा अनुरूप है।" स्काटलैण्ड के पत्र 'फार्वर्ड' का कहना था "युद्ध के दर्मियान इग्लैंड ने जो कुछ किया, वह इस पचवार्षिक योजना के सामने नगण्य है। अमरीकन स्वीकार करते है कि पश्चिमी राज्यों में अत्यत जोर के निर्माण का भूत सिर पर चढे होने के समय की भी इससे कोई तुलना नहीं है। इतनी मात्रा में शक्ति लगाई गई है, जिसका दुनिया के इतिहास में उदाहरण नहीं मिलता। प्रतिद्वद्वी पूजीवादी जगत के लिए यह चमत्कारपूर्ण ललकार है।"

इन उदाहरणो से, इसका अदाजा लगाया जा सकता है कि सोवियत सघ ने क्या किया था। प्रथम पचवार्षिक योजना के द्वारा स्तालिन के नेतृत्व मे सोवियत के लोग सर्वस्व की बाजी भी लगा सकते थे, क्योकि उनके यहाँ न चोरबाजारी नफाखोर सेठो के हित का ख्याल करना था, न मुट्ठी भर सामन्ती जमीदारो का, और न भाई भतीजे भाजो को नोकरियाँ बाँट बाँटकर शासन के व्यय भार को पाँच छे गुना बढाने और ऊपर से नीचे तक घूस रिश्वत के बाजार को गरम करने की गुजाइश थी। महीने मे तीन चौथाई दिनो मे बेकार रहनेवाले करोडो नर नारियो को श्रम निर्माण के काम मे लगा दिया गया प्रतिभाओ को ढूँढ ढूँढकर आगे बढाया गया। वहाँ राष्ट्रीय धन की एक एक कोडी को विदेशी दूतावासो कमीशनो, मत्रियो तथा उनके कृपापात्रो के सैर सपाटे तथा ऐश मे खर्च नहीं किया जा रहा था। उनको अपनी गरीब जनता के पसीने की कमाई की एक-एक कोडी के लिए दर्द था स्तालिन से लेकर गाव की साधारण किसान औरत तक ने दृढ सकल्प कर लिया था कि चाहे जो भी हो अपनी योजना पूरी करनी है और इसमे कुलक पुराने बुर्ज्वा वर्ग या किसी दूसरे की बाधा को सहन नहीं करना है। जहा इस तरह का दृढ सकल्प काम कर रहा हो, वहाँ क्यो न 'श्रीविजया मूर्ति' पैर तोडकर बैठी रहे ?

जनवरी सन् 1933 मे केन्द्रीय कमिटी और केन्द्रीय नियत्रण कमीशन का सयुक्त विशेष अधिवेशन (प्लेनम) हुआ, जिसमे प्रथम पचवार्षिक योजना के परिणाम के बारे मे स्तालिन ने रिपार्ट दी और घोषित किया

'प्रथम पचवार्षिक योजना के तजर्बे से, हम इस निर्णय पर पहुँचे है कि एक देश के भीतर समाजवादी समाज का निर्माण करना बिलकुल सम्भव है और सोवियत सघ मे ऐसे समाज की आर्थिक नीव डाली जा चुकी है। अब हमारे यहा राष्ट्रीय अर्थनीति का 70 फी सैकडा समाजवादी उद्योग पर निर्भर करता है। समाजवादी आर्थिक ढाँचा ही हमारे उद्योग का एक मात्र ढाचा है। कृषि क्षेत्र मे कोलखोजी खेती ने अपना पक्का स्थान कायम कर लिया है। राष्ट्रीय अर्थनीति की सभी शाखाओ मे समाजवादी विजय ने मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त कर दिया है। पचवार्षिक योजना की सफलताओ ने सभी देशो मे मजदूर वर्ग की क्रातिकारी शक्तियो को पूँजीवाद के खिलाफ सक्रिय कर दिया है। कोलखोजी खेती आर्थिक सगठन का एक समाजवादी रूप है, ठीक वैसे ही जैसे सोवियत (पचायत) राजनीतिक सगठन के समाजवादी रूप है।"

6. कोलखोजी काग्रेस (सन् 1933) : स्तालिन की प्रेरणा से फरवरी 1933 मे कोलखोजी तूफानी दस्तों की प्रथम काग्रेस हुई जिसमे कोलखोज आदोलन के प्रथम परिणामो पर प्रकाश डालते हुए स्तालिन ने कहा

"यह हमारी ऐसी सफलता है, जिसके द्वारा हमने करोडो गरीब किसानो को कोलखोजो मे सम्मिलित होने मे सहायता की है। यह हमारी ऐसी सफलता है कि कोलखोजी खेती मे सम्मिलित होकर उनके पास सबसे अच्छी भूमि है, उत्पादन के सबसे अच्छे हथियार है, और जिसके द्वारा करोडो गरीब किसान उठकर मझोले दर्जे के किसानो के तल तक पहुँचे है। यह हमारी ऐसी सफलता है, जिससे कि पहले

के कौडी-कौडी के लिए मुहताज करोडो किसान अब कोलखोजी खेती से मध्यवित्त किसान बन गए है और उनके लिए आर्थिक सुरक्षा निश्चित हो गई है।··अब हमें अगला दूसरा कदम उठाना है और सभी कोलखोजी किसानों–पुराने समय के गरीब और मध्यवित्त, दोनों ही प्रकार के किसानों–को समृद्ध किसानो के तल पर पहुँचाने में सहायता करनी है।"

प्रथम पचवार्षिक योजना मे देश की 70 फी सैकडा खेती कोलखोजी हो गई थी। कोलखोज और सोविखोज (सोवियत खेती) दोनो मिलकर देश के लिए 85 फी सैकडा अन्न पैदा करने लगे थे। कोलखोज का औसत आकार-प्रकार 1,070 एकड था और सोविखोज का 5,000 एकड। कोलखोजी किसानो की मदद सरकार ने निम्न प्रकार से की थी :

(1) दो अरब रूबल खर्च करके 2 860 मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन कायम किए, जहा से कोलखोजों को ट्रैक्टर और दूसरी मशीनें सस्ते भाडे पर मिलने लगी।

(2) कोलखोजों को 1 60 अरब रूबल उधार दिया गया।

(3) 40 लाख टन बीज उधार दिया गया।

(4) करो की कमी और फसलो के बीमा के द्वारा 37 करोड रूबल की सहायता पहुँचाई गई।

और, इसके बदले मे किसानो ने क्या किया? राज्य को वैयक्तिक किसानो ने 79 करोड पूद (1 पूद=प्रायः आधा मन) और कोलखोजी किसानों ने 12 करोड पूद अनाज सन 1929-30 में दिया था, जबकि सन 1933 मे कोलखोजों ने 1 अरब पूद और वैयक्तिक किसानों ने 13 करोड पूद अनाज प्रदान किया। यह देखने से स्पष्ट हो जाता है कि अब सोवियत सघ अन्न के बारे मे उसी तरह निश्चित था, जिस तरह कि औद्योगिक उपजों मे। सन 1934 मे मौसम अच्छा नही रहा, तब भी उपज सन 1933 की अपेक्षा अच्छी हुई थी। बात यह थी कि भारत से सात गुने बडे देश सोवियत रूस में सभी जगह एक साथ मौसम खराब नही होता। इसलिए, यदि आधुनिक ढग से तत्परता के साथ खेती की जाये, तो जहाँ तक सारे देश का सम्बन्ध है, उपज की कमी नही हो सकती। यदि ऐसी निश्चितता न होती, तो दिसम्बर सन 1934 मे सोवियत सरकार अपने यहाँ राशन की व्यवस्था खतम करने की हिम्मत न करती। इसी सफलता को देखकर, मोलोतोफ ने अपने एक भाषण मे कहा था "तैयार माल और रोटी के सम्बन्ध मे राज्य के प्रान्त इतने बढ गए है, जितना कभी सुना नहीं गया था, जबकि सोवियत नीति की नयी महान् विजय के परिणामस्वरूप अब वह समय आ गया है कि रोटी और आटे को आम तौर से बिना दाम के बचन के बारे मे सोचा जा सकता है।"

हाँ, द्वितीय युद्ध के पहले अन्न की इतनी बहुतायत हो गई थी कि सोवियत नेता बडी गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगे थे कि रोटी और अन्न की बिक्री तथा उसका हिसाब किताब रखने में हजारों आदमियों और हजारों टन लिखने पढने के लिए कागज तथा दूसरे सामान के व्यय और परेशानी को हटाकर, हवा पानी की तरह, रोटी और अनाज का वितरण भी बिना कीमत हो। आज भी सोवियत रूस इस स्थिति मे है, लेकिन जब दुनिया के और देशों मे अन्न का इतना अभाव है और अमरीकन साम्राज्यवादियों द्वारा अन्न जबर्दस्त राजनीतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है, ऐसी अवस्था मे वह इस शौकीनी को पूरा करने के लिए तैयार नही है और वह अपने साथी देशों और दुनिया के दूसरे लोगो को भी अनाज से मदद पहुँचाना चाहते है। प्रथम पचवार्षिक योजना के समाप्त होने के साथ साथ, उसी पहले की जारशाही की खेती की भूमि मे 25 हजार कोलखोज और 5,000 सोविखोज तैयार हो गए थे, जिन्होंने पहले की जोती हुई जमीन मे 80 हजार वर्ग मील खेती की और वृद्धि की। जिस तरह कारखाने की मशीन अपने वेग के कारण मजदूरों को शिथिल नही रहने देती, वही बात अब देहात में कोलखोजों और सोविखोजों ने किसानों के साथ कर दी थी, इसलिए वहाँ किसान सुस्त नही रह सकते थे। काम के अनुसार, ऊपर से उपज का हिस्सा तय होने का नियम होने के कारण शिथिल काम करनेवाला किसान फसल की बँटाई के समय अपने पैसों और अनाज की कमी को देखकर झीखने के लिए मजबूर था।

स्तालिन को हरएक काम सुव्यवस्थित रूप से करने की आदत है। यह हो ही नही सकता था कि वह

कोलखोजों की सुव्यवस्था के लिए स्पष्ट मार्ग निर्देशन न करते। इसके लिए उन्होंने कृषि के 'कोलखोजीकरण का सिद्धांत' लिखा, जिसमें निम्न बातें बतलायीं

(1) कोलखोजी खेती समाजवादी देहाती अर्थनीति का एक रूप है।

(2) उन्होंने बतलाया कि वर्तमान अवस्था में जिस कोलखोजी खेती का विकास करना है, उसका रूप खेती का अर्तेल *(सहकारिता)* है क्योंकि यह किसानों के लिए समझने में बहुत आसान है, तथा कोलखोजी किसानों के वैयक्तिक और सामूहिक—दोनों प्रकार के स्वार्थ इसमें पूरे होते हैं, जिसके कारण वह अपने वैयक्तिक स्वार्थों द्वारा सार्वजनिक स्वार्थों के लिए भी काम करने को तैयार होते हैं।

(3) उन्होंने अपनी इस कृति में यह भी बतलाया कि कुलकों के ऊपर नियंत्रण या उनके 'निचोड़ने की नीति' को छोड़कर सारे कोलखोजीकरण के आधार पर उन्हें एक वर्ग के तौर पर उखाड़ फेंकना ही अच्छा है।

(4) उन्होंने मशीन ट्रैक्टर स्टेशनों के महत्त्व को दिखलाते हुए कहा कि यह कृषि के समाजवादी पुनर्संगठन के सहायक तथा एक साधन हैं जिनके द्वारा समाजवादी राज्य कृषि और किसानों—दोनों को उचित सहायता दे सकता है।

स्तालिन ने पंचवार्षिक योजना की सफलता द्वारा अपने जिस विराट रूप को दिखलाया उस पर गद्गद हो उनके शिष्य और सहकारी सर्गेई किरोफ ने सत्रहवीं कांग्रेस में कुछ पहले लेनिनग्राद में कहा था

> साथियो, जिस समय हम अपनी पार्टी की सेवाओं और उसकी सफलताओं के बारे में कहते हैं, उस समय जिस विराट विजय को हमने प्राप्त किया है हम उसके महान संगठक को नहीं भूल सकते—मेरा मतलब साथी स्तालिन से है। मुझे कहना होगा कि सचमुच ही वह हमारी पार्टी के महान संस्थापक के—जिनसे कि हम इस वर्ष पहले वंचित हो गए, सच्चे तौर से योग्य और पूर्ण उत्तराधिकारी हैं।
>
> स्तालिन को उनके विशाल रूप में हृदयंगत करना आसान नहीं है। इन पिछले वर्षों में जबकि हम लेनिन के बिना ही अपने काम को करना पड़ा, हमारे श्रम मोर्चे पर या नये कामों के सम्बन्ध में किसी भी महत्त्वपूर्ण नीति का कोई भी नारा या सुझाव ऐसा नहीं आया जिसके रचयिता साथी स्तालिन न रहे हों। पार्टी को यह समझना चाहिए कि सभी महत्त्वपूर्ण काम साथी स्तालिन की सम्मति, उनकी हिदायत, उनकी प्रेरणा और उनके पथ-प्रदर्शन में होता है। उनकी सिफारिशों के अनुसार ही अन्तर्राष्ट्रीय नीति के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर निर्णय किया जाता है। केवल महत्त्वपूर्ण ही नहीं बल्कि तृतीय क्या दशम श्रेणी के भी जो प्रश्न हैं, यदि वह कमकरों, किसानों, हमारे देश की आम मेहनतकश जनता से सम्बन्ध रखते हैं, तो उनमें भी स्तालिन की दिलचस्पी रहती है।
>
> मुझे यह भी कहना पड़ेगा कि यह बात समाजवाद के पूरे तौर से निर्माण के बारे में ही नहीं है, बल्कि हमारे काम के भिन्न-भिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में भी है। उदाहरणार्थ हमारे देश की प्रतिरक्षा को ले लीजिए। इसे स्पष्टता और जोर के साथ कहना पड़ेगा कि इस क्षेत्र की सभी सफलताएँ जो हमें मिली हैं उनका श्रेय स्तालिन को ही है और इसके लिए हम स्तालिन के ऋणी हैं।'

7. स्तालिन का स्वभाव जर्मन लेखक एमिल लुडविग ने सन् 1933 में स्तालिन से मुलाकात की थी। इस महान लेखक द्वारा लिखी हुई मुलाकात के वर्णन में स्तालिन के व्यक्तित्व पर काफी प्रकाश पड़ता है। वह लिखता है

जैसी उनकी तसवीर मैंने कल्पित की थी, जो कहानियाँ मैंने सुनी और पढ़ी थीं और जैसा फौलादी उनका स्तालिन नाम है, वह सब उनके लिए उपयुक्त नहीं है। मैंने ख्याल किया था कि मुझे पुरानी जारशाही का कोई रोबीला गम्भीर कठोर गार्ड ड्यूक मिलेगा, लेकिन उसकी जगह मुझे एक ऐसा अधिनायक देखने को मिला जिसके हाथ में मैं अपने बच्चों को खुशी से छोड़ सकता हूँ। मैंने पढ़ा था, वह जनता में नहीं आते, क्योंकि चेचक ने उनके चेहरे को बड़ा कुरूप बना दिया है। लेकिन यहाँ उसका कोई चिह्न या दाग दिखना मुश्किल था। मैंने यह भी पढ़ा था कि जब वह शहर से अपने प्रासाद जैसे देहात के निवास स्थान गोर्की—जिसमें

बीमारी के समय लेनिन रहे और मरे थे—को प्रतिदिन जाते हैं, तो उनके आसपास 5 मोटर कारें रहती हैं। गोर्की के बारे में कहा जाता था कि वहाँ रात दिन हथियारबन्द कसाक पहरा देते हैं। यह भी कहा गया था कि स्तालिन प्रतिदिन क्रैमलिन के एक दरवाजे से भीतर जाते और दूसरे से बाहर आते हैं। खाने के वक्त जार के खाने के सोने के बर्तनों में भोजन परोसा जाता है। यहाँ तक कहा गया है कि वह अपनी तरुण स्त्री को तुर्की के सुलतान की तरह घर में ताला बन्द करके रखते हैं।

" लेकिन, सच्चाई इससे बिलकुल उल्टी है। लेनिन की मृत्यु के बाद, वह कभी गोर्की के प्रासाद में नहीं गए। जब मैं मॉस्को में उनसे मिला, उस वक्त वह अपनी स्त्री और बच्चों के साथ शहर के बाहर एक सीधे-सादे घर में रहते थे। वह अपने आफिस में अपनी अकेली कार में जाते हैं और प्रतिदिन उसी द्वार से जाते हैं। दरवाजे पर सतरी कोई विशेष सलाम नहीं देता। उनका खाना, रहन सहन साधारण आदमी-सा है। वह सुव्यवस्था को बहुत पसन्द करते हैं और अपने काम के समय को ठीक से बाँटने में बड़ा ध्यान रखते हैं। उनकी रुचि बहुत सीधी सादी है।"

" जब मैं स्तालिन से मिला, मैंने उन्हें एकान्तप्रिय आदमी पाया। धन, यश और महत्त्वाकांक्षा का उन पर कोई प्रभाव नहीं है। यद्यपि उनके हाथों में अपार शक्ति है, लेकिन उन्हें उसके लिए अभिमान नहीं। मैं कहूँगा कि स्तालिन के स्वभाव में दो बातें अधिकता से पाई जाती हैं। पहली बात है—धैर्य, और इसको उन्होंने चरम सीमा तक पहुँचा दिया है, और दूसरी बात है—दूसरों पर बिना अवलम्ब किए, पूर्णतया आत्मावलम्बी होना।"

" वह अब (सन 1933 में) 50 के करीब पहुँच रहे हैं। एक वर्ष में वह 3-4 से अधिक यूरोपियनों से भेंट नहीं करते, इसलिए जब कोई पाश्चात्य आदमी पहले उनसे मिलने आता है, तो उन्हें 'अनकुस'-सा मालूम होता है। मुझे इससे आश्चर्य हो रहा था, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि मैं संसार के छठे हिस्से के वास्तविक शासक के सामने हूँ। अगर मेरा दिल धोखा नहीं देता है, तो मैं कहूँगा कि स्तालिन स्वभाव से ही अच्छे दिल के आदमी हैं। उनमें कल्पना का अभाव नहीं है, लेकिन उसकी उड़ान की शौकीनी से वह इन्कार करते हैं। वह महत्त्वाकांक्षी नहीं हैं, लेकिन अपने प्रतिद्वन्द्वियों से नर्मी नहीं बरतना चाहते हैं। पिछले 35 वर्षों से उनके दिमाग में सिर्फ एक ही बात है, जिसके लिए उन्होंने अपना यौवन, अपना स्वास्थ्य, अपनी सुरक्षा और जीवन के सभी दूसरे आनन्द कुर्बान कर दिए हैं। इसलिए नहीं कि वह खुद शासन करें, बल्कि इसलिए कि शासन उन सिद्धान्तों के अनुसार हो, जिनके लिए उन्होंने शपथ ली था। उन्होंने मुझसे कहा : 'मेरे जीवन का यही उद्देश्य है कि जागर, चलानेवाली श्रेणी को और ऊपर उठाया जाय। मुझे जातीय राज्य बनाने का खयाल नहीं है, बल्कि मैं एक समाजवादी राज्य चाहता हूँ, जो संसार के सभी कमकरों के स्वार्थों की रक्षा करे। अगर मेरे जीवन का हरएक कदम उसी राज्य की स्थापना की ओर नहीं बढ़ा, तब मैं समझूँगा कि व्यर्थ ही किया।'—वह बड़ी नर्मी से बोल रहे थे। और, धीमी आवाज ऐसे निकल रही थी, मानो वह अपने आप से बात कर रहे हों।"

" मेरे एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा—'मेरे माता-पिता अशिक्षित थे। लेकिन, उन्होंने मेरे लिए बहुत किया। मसारिक (चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्र-निर्माता) को जैसे धुन हुई थी, वैसे ही मैं 10 या 12 वर्ष में समाजवादी नहीं हो गया था। जब तक मैं पादरियों की पाठशाला में रहा, मैं समाजवादी नहीं बना था। फिर, प्रचलित शासन-प्रथा का विरोधी हुआ। शासन-प्रथा क्या थी ? खुफियों का पीछे पड़े रहना और धोखा देना। मैं 6 बजे सवेरे चाय के लिए बुलाया गया। जब कोठरी में लौटा, तो देखा कि सभी दराजों की एक-एक करके छान-बीन हुई है। वह हमारे कागजों की छान-बीन नहीं कर रहे थे, बल्कि हमारे दिलों के एक-एक कोने की छान-बीन कर रहे थे। यह असह्य था। मैं किसी भी हद तक और किसी भी प्रथा के पक्ष में जाने के लिए तैयार हो जाता, यदि समझता कि मैं उसके द्वारा उस शासन-व्यवस्था का विरोध कर सकता हूँ। उसी समय, रूसी समाजवादियों की एक कानून-विरोधी टोली काकेशस की पहाड़ी में आयी। उन्होंने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला और उसी समय से मुझे निषिद्ध साहित्य का चस्का लगा।'

" स्तालिन और मुस्तफा कमाल—दो ही ऐसे आदमी है, जिनसे बाते करते समय मुझे दुभाषिया की जरूरत पडी। जिस कमरे में हम प्रविष्ट हुए, वह लम्बा था। उसके एक छोर पर, एक मझोले कद का आदमी भूरे रंग का बन्द गले का कोट पहिने कुर्सी के पास खडा था। उसकी पोशाक उतनी ही साफ थी, जैसा कि वह कमरा। "बीच में एक लम्बी मेज रखी थी, जिस पर पानी की झारी, गिलास और राखदानी पडी थी। हरएक चीज से सुव्यवस्था टपक रही थी। दीवारें गहरे हरे रंग से रँगी थी; उन पर लेनिन, मार्क्स तथा कुछ मेरे अपरिचित व्यक्तियों के फोटो टँगे हुए थे। स्तालिन की लिखने की मेज भी सुव्यवस्थित तौर से रखी थी। उस पर लेनिन का एक फोटो था। बगल में 4-5 टेलीफोन के यंत्र वैसे ही रखे थे, जैसे कि सरकारी आफिसों मे होते हैं। लडखडाती रूसी में, मैंने कहा—'दोब्रे उत्रो' (सुप्रभातम्)। उन्होंने कुछ सकोच से मुसकरा दिया, लेकिन वह बडे ही विनम्र थे। उन्होंने मुझे देने के लिए एक सिगरेट उठायी। उन्होंने विश्वास दिलाया कि मै जो भी प्रश्न पूछना चाहूँ, पूछ सकता हूँ और मेरे पास डेढ घंटा समय है। जब समय खतम होते वक्त मैने अपनी घडी निकाली, तो उन्होंने मना करने का संकेत किया और मुझे आधा घंटा और पास रखा। एक शक्तिशाली पुरुष के लिए कुछ मात्रा तक सकोच उतनी ही अच्छी बात है, जितनी कि एक सुन्दर स्त्री में।

" चूँकि वह दुभाषिया के सहारे मुझसे बात कर रहे थे, इसलिए प्रायः बराबर उनका मुँह दूसरी ओर रहता था। वह दोनों नोट कागज के टुकड़ों पर लकीरे खीचते रहे। एक लाल पेंसिल से वृत्त और दूसरी शकलें खीचते तथा अंक लिखते जाते थे। हमारे बात करने के समय, उन्होंने कागज के कई टुकडे लाल रेखाओं से भरे और समय समय पर उनको मोड कर फाड दिया। स्तालिन का स्वभाव है, बिना हिले डुले बैठने का। वह बोलते वक्त किसी शब्द पर जोर देना या हाथ मुँह हिलाना नही जानते। उनके बारे में यह मुख्य बात मेरे दिल में धँसी कि वह सयत हैं। स्तालिन वह आदमी हैं, जिनके नाम से कितने नर-नारी रोब में पड जाते हैं। लेकिन एक बच्चा या पशु वैसा नही कर सकता। पुराने युग में ऐसे पुरुष को लोग देश का पिता कहते थे।

" यद्यपि मेरे सभी प्रश्नों के लिए उन्होंने तैयारी नहीं की थी और उन्हें हमारी यूरोपीय सरकारों के मंत्रियों—जिनसे कि वही प्रश्न हफ्ता दर हफ्ता पूछे जाते हैं—जैसा अनुभव भी नहीं था। वह यह भी जानते थे कि यह उत्तर को सारे ससार के लिए प्रकाशित करेगा। सभी ऐतिहासिक घटनाएँ और नाम उनको कठाग्र थे। मेरे दुभाषिया ने सारे वार्तालाप को लिखा था लेकिन उन्होंने उसकी कापी नही मागी और न किसी सशोधन की इच्छा प्रकट की। इस प्रकार का आत्मविश्वास मैंने कही नही देखा। दुनिया के और जितने नेताओं से मैंने वार्तालाप किया है, उनके कहने को मैंने उसी वक्त कागज पर नही उतारा बल्कि पीछे उतार कर उनकी स्वीकृति के लिए भेजा है। लेकिन यहा मैंने दूसरे आदमी द्वारा त्वरित लिपि में लिखे हुए लेख को लिया और जब मैंने उसे गौर से मिलाया, तो उसमें जरा भी कोई बात छूटी नहीं देखी, ना ही वाक्यावलि बिलकुल दुरुस्त थी। जब मै मन में अपने बेचारे मंत्रियों की आदत का खयाल में लाता हूँ, जो कि अपने पार्लियामेंट मे देने वाले व्याख्यान या सवाद को देने वक्त अपने प्रेस विभाग के अध्यक्ष द्वारा उसका सशोधन करा लेते है, तो इस काकेशस के चर्मकार के लड़के के लिए मेरा दिल सम्मान से भर जाता है। स्तालिन नियमपूर्वक 4 बजे भिनसारे चारपाई पर सोने जाते हैं। लायड जार्ज की तरह, उनके पास 32 सेक्रेटरी नही है, बल्कि सिर्फ एक साथी प्रास्कोविचेफ है। दूसरों के लिखे हुए कागजों पर वह दस्तखत नही करते। उनके पास लेखन-सामग्री भेज दी जाती है और वह सब काम अपने आप करते है। हर एक चीज उनके हाथ से गुजरती है; लेकिन इससे क्या ? वह प्रत्येक पत्र का जवाब दिए या भेजे बिना नही रहते। मुलाकात के समय वह बडे दिल खोलकर, बिना किसी नियंत्रण के मिलते है। वह बच्चों की तरह ठठाकर हँसते है।

" मॉस्को के महान् ओपरा भवन में गोर्की की जुबली हो रही थी। बीच के अवकाश मे, पुराने सम्राट या सम्राटकुमारों के बैठने के स्थान के पीछे के कमरों में कुछ सरकारी अधिकारी जमा थे। आवाज कान के पर्दे फाड रही थी और हरएक आदमी कहकहा लगाकर हँस रहा था। इनमे स्तालिन, ओर्योनीकिद्जे, रुडकोफ, बुगनोफ, मालोतोफ, वोरोशिलोफ, कगानोविच और प्यातिन्स्की भी थे। गृह-युद्ध की घटनाओ की बाते बडे मनोरंजक ढग से कर रहे थे : 'तुम्हे याद है, जब तुम अपने घोडे से लुढक पडे थे ?'—'हाँ, गंदा पशु ! मुझे

नहीं मालूम हुआ, क्या बात थी…।' –लेनिन मे भी जोर से ठठाकर हँसने की आदत थी। गोर्की ने कहा था : 'मैं ऐसे किसी भी आदमी से नही मिला, जिसकी हँसी ब्लादिमिर इलिच जैसी, छूत की बीमारी की तरह, लगती हो। गोर्की ने निष्कर्ष निकाला था : 'इस तरह की हँसी वाले आदमी के पास बड़ा ठोस मानसिक स्वास्थ्य होना आवश्यक है।' जो लोग इस तरह की हँसी हँसते है, वह बच्चों से बडा प्रेम करते हैं। स्तालिन के पास तीन बच्चे है–सबसे बडा यश्चेका और दो छोटे-छोटे–चौदह वर्ष का वासिली और आठ वर्ष की स्वेतलाना। उनकी बीवी नादेज्दा अलीलुइयेवा पिछले ही साल मरी है। उसका भौतिक शरीर अब नही है, लेकिन उसका एक सुन्दर सम्भ्रात साधारण जन जैसा चेहरा और बडी कब्र के भीतर से निकलती सुन्दर सगमरमर की बाँह नवोदेवीची के कब्रिस्तान मे देखी जा सकती है। स्तालिन ने अर्तियोम सेर्गियेफ को करीब-करीब अपना बेटा बना लिया है, जिसका बाप सन 1921 की एक दुर्घटना में मारा गया था। बाकू मे अग्रेजो द्वारा गोली मारे गए–जापरित्जे की दो लडकियों और कितनो ही दूसरो मे भी स्तालिन का व्यवहार अपने बच्चो जैसा ही है। अर्नालूद कपलान और बोरिस गोल्दस्ताइन–पियानो और वाइलिन के अद्भुत प्रतिभाशाली बालकों का सगीत–समाज में उनकी विजय के बाद स्तालिन ने जिस तरह स्वागत किया, उसका वर्णन करते समय उनके चेहरे पर जो प्रसन्नता दीख पड़ती थी, वह मुझे अब भी याद है। स्तालिन ने उन्हे तीन हजार रूबल देते हुए, यह भी कहा था : 'अब तुम पूंजीपति हो गए, क्या सड़क में देखकर मुझे पहचानोगे ?' "

स्तालिन की मुक्त हँसी और उनके खुले दिल का परिचय बहुत कम लोगो को है। इसका एक कारण यह भी था कि इस पुरुष के कंधे पर जितनी अधिक जिम्मेवारी और काम थे, उतने शायद ही इतिहास मे किसी पुरुष पर रहे होंगे। उन्होंने अपने 73 वर्ष के जीवन को, बचपन के थोड़े-से वर्षो को छोड़कर बाकी सारे समय के एक-एक क्षण को, किस तरह इस्तेमाल किया है, इसकी बानगी हम मिल चुकी है। व्यग्य और जिंदादिली में स्तालिन अद्वितीय थे। उनके पुराने सहकारी दामियन बेदनी ने स्तालिन के जीवन की एक मनोरंजक कहानी बतलाई थी :

> "सन 1927 की जुलाई के आरभिक दिनों में, एक शाम को मै और स्तालिन 'प्राव्दा' के सम्पादन के काम में लगे हुए थे। इसी समय टेलीफोन की घटी बजी। क्रौन्सतात के नौसैनिकों ने स्तालिन से पूछा–'प्रदर्शन में हमें अपनी राइफिलों के साथ आना चाहिए, या उनके बिना ही ?'–मै सोच रहा था, देखूं तो वह टेलीफोन पर क्या जवाब देते है ? और, जवाब सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ–'राइफिलें ? साथियो, यह निश्चय करना तुम्हारा अपना काम है। साथियो ! हम लेखक तो अपनी पेंसिलें बराबर अपने साथ रखते है।' और, सचमुच ही, सभी नौसैनिक अपनी-अपनी पेंसिलें लिये हुए ही प्रदर्शन में आये थे।"

इतने महान् होने पर भी, स्तालिन कितने विनम्र थे ! लुडविग से बातें करते समय, उन्होंने अपने अन्तस्तल से कहा था : "मै केवल लेनिन का एक शिष्य हूं।"

8. सत्रहवीं कांग्रेस (सन् 1934) : यह काग्रेस 'विजेताओं की कांग्रेस' के नाम से प्रसिद्ध है। पाँच वर्षो की योजनाओं को सन् 1934 तक, चार वर्षों के भीतर पूरा करके यदि सोवियत के नर-नारियों ने विजेता की उपाधि प्राप्त की, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? इस कांग्रेस मे भी उन्होने, अपने जीवन के अंतिम वर्षो की तरह, सोवियत की वैदेशिक नीति के बारे में कहा था :

> "हमारी वैदेशिक नीति स्पष्ट है, वह है–शांति की रक्षा और सभी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्धों को मजबूत करना। सोवियत समाजवादी गणसघ आक्रमण करने की बात तो अलग,किसी को धमकाने की भी बात नही सोचता। हम शांति चाहते है और शांति के कामों के समर्थक है। लेकिन, हम धमकी से नही डरते और लडाई भड़काने वालो को मुक्के का जवाब मुक्के से देने के लिए तैयार है।…जो हमारे देश पर आक्रमण करने की कोशिश करेंगे, उन्हे हमारी ओर से चूर-चूर कर देने वाला जबर्दस्त प्रहार मिलेगा, जिससे वह सीख जायेंगे कि हमारे सोवियत के बगीचे में अपना थूथुन डालना ठीक नही है।"

इसी समय सन 1934 में, स्तालिन ने अमरीकी सवाददाता वॉल्टर डुरेंटी से 4 जनवरी को मुलाकात की और 23 जुलाई को अंग्रेज ग्रथकार एच. जी. वैल्स से भेंट की। एच. जी. वैल्स के साथ स्तालिन की मुलाकात

बड़ी मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक थी। इस वार्तालाप के बारे में टिप्पणी करते हुए, बर्नार्ड शा ने लिखा था :

> "इसे दो असाधारण पुरुषों के बीच वार्तालाप या भिड़न्त कह लीजिये, यद्यपि इसमें ऐसी कोई भी बात नहीं हुई, जिससे दोनों के विचारों के बारे में हम कोई नई जानकारी पायें।... स्तालिन बड़े ही मजाकपसन्द आदमी है। हर वक्त कोमल हँसी उनके पास मौजूद रहती है... वैल्स ने जो कुछ कहा, स्तालिन ने बड़े ध्यान से और गम्भीरतापूर्वक सुना और अपनी बारी में, उन्होंने जवाब के रूप में कांटी के बिलकुल सिर पर प्रहार किया। वैल्स स्तालिन की बातें नहीं सुनते थे, वह बड़ी अधीरतापूर्वक फिर से बात आरम्भ करने के लिए, स्तालिन के चुप होने की प्रतीक्षा करते रहते थे। वह समझते थे कि वह उससे कहीं ज्यादा जानते हैं, जितना कि स्तालिन जानते हैं। वह स्तालिन से शिक्षा लेने नहीं गए थे, बल्कि उन्हें शिक्षा देने गए थे।"

वेल्स और स्तालिन के वार्तालाप के मनोरंजक पहलुओं को देने के लिए यहाँ स्थान नहीं है, लेकिन इस वार्तालाप में स्तालिन ने कितने ही गम्भीर तत्वों का प्रकाशन और स्पष्टीकरण किया था।

9. किरोफ की हत्या (सन् 1934) : दिसम्बर सन् 1934 में लेनिनग्राद में त्रौत्स्कीवादियों का मनोरथ सफल हुआ, जबकि लेनिनग्राद में उनके एक आदमी ने सेर्गेई किरोफ को गोली मार दी। किरोफ स्तालिन का बहुत ही योग्य शिष्य और सहायक था। राजधानी के मॉस्को में पहुँच जाने पर, स्तालिन विरोधियों ने लेनिनग्राद में अपना मजबूत अड्डा जमा लिया था। वहाँ जिनोवियेफ और कामनेफ की तूती चलती थी। ऐसे समय, किरोफ ने लेनिनग्राद को ठीक करने का बीड़ा उठाया था और उसने अपने काम को बड़ी सफलता के साथ पूरा किया था। वह स्तालिन का दाहिना हाथ था और आम तौर से आशा की जाती थी कि वही स्तालिन का उत्तराधिकारी होगा। लेकिन, देश के भाग्य का संचालन अभी स्तालिन को ही करना था। किरोफ की हत्या के बाद भी वह उन्नीस वर्षों तक काम करके, द्वितीय महायुद्ध और उसके बाद के जबर्दस्त पुनर्निर्माण के काम को समाप्त करके ही, दुनिया से विदा हुए हैं। सोवियत के लोगों के दिलों में इतनी अधिक शंका क्यों रहती है, इसका एक जबर्दस्त कारण किरोफ की हत्या भी है। लेकिन किरोफ पर गोली मारकर, क्रांति विरोधियों ने अपनी अंतिम गोली खतम कर दी; उनके साथ ही उनका भी खात्मा हो गया। अब त्रौत्स्कीवादी और दूसरे क्रांति विरोधियों का नाम अपार घृणा के साथ लेने के लिए ही सोवियत-भूमि में शेष रह गया है। किरोफ की हत्या लेनिनग्राद के स्मोल्नी प्रतिष्ठान में हुई थी, जहां रहकर लेनिन ने अक्तूबर-क्रांति का सफलतापूर्वक संचालन किया था।

सत्रहवीं पार्टी कांग्रेस की रिपोर्ट से पता लगा कि द्वितीय पंचवार्षिक योजना में भी उसी तरह की सफलता मिल रही थी, जिस तरह कि प्रथम पंचवार्षिक योजना में मिली थी। और, आशा बंधने लगी कि इसको भी समय से पहले पूरा कर लिया जायगा। स्तालिन ने इसी समय कहा था :

> "हम विघ्न बाधाओं को हटाकर, लेनिनवादी मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं।... पार्टी के भीतर केन्द्रीय कमिटी के विरुद्ध, विरोधी विद्रोह खड़ा करना चाहते हैं। इतना ही नहीं, वह हम में से कुछ को गोलियों की धमकी भी दे रहे हैं। शायद वह इस तरह हमें डराकर, लेनिनवादी पथ से विमुख करना चाहते हैं। इन लोगों को पता नहीं, यह लोग भूल जाते हैं कि हम बोल्शेविक एक खास धातु के आदमी हैं। वह भूल जाते हैं कि न कठिनाइयाँ और न धमकियाँ ही, बोल्शेविकों को भयभीत कर सकती है। वह भूल जाते हैं कि हम उस महान लेनिन--हमारे नेता, हमारे गुरु, हमारे पिता--द्वारा शिक्षित और फौलादी बनाये गए हैं, जो लड़ाई में न भय को जानता, न उसे मानता था।"

इसी भाषण में स्तालिन ने जोर देकर कहा था : "टेक्नीक (तैयार यंत्र तथा वैज्ञानिक कौशल) सब चीजों का फैसला करती है। जब टेक्नीक तैयार कर ली गई, तो हमें ऐसे आदमियों की आवश्यकता पड़ती है, जो उस टेक्नीक पर पूरा अधिकार रखते है, हमें ऐसे 'कादर' (कर्मियों) की आवश्यकता होती है, जो कला के सभी नियमों के अनुसार टेक्नीक में दक्ष हो और उसको काम में लायें। ऐसे अधिकार प्राप्त आदमियों के बिना, टेक्नीक मरी हुई है। अधिकार-प्राप्त आदमियों के हाथ में पड़कर टेक्नीक जादू-सा काम कर सकती हैं... इसीलिए, अब हमें उन आदमियों, कर्मियों, कमकरों पर जोर देना है, जो टेक्नीक के आचार्य है। इसीलिए, पुराने नारे 'टेक्नीक

हर बात का फैसला करती है'–की जगह, हमें नारा देना चाहिए–'कर्मी सब चीजो का फैसला करते है।' "–स्तालिन ने यह भाषण मई सन् 1935 मे लाल सैनिक एकेडमी के ग्रेज्युएटो के सामने दिया था।

और सचमुच ही, उस समय टेक्नीक के आचार्य आश्चर्यजनक गति से पैदा हुए। जब माध्यमिक शिक्षा अनिवार्य हो, और शिक्षा भी जीवन के हर पहलू के उपयोग की दृष्टि से दी जाती हो; जब सरकार कमकरो की हर तरह से सहायता करने तथा प्रोत्साहन देने के लिए तैयार हो और शोषण तथा भ्रष्टाचार रहित देश दिनोजान से नव-निर्माण मे लगा हो; तो फिर क्यो न अपना चमत्कार दिखलाने के लिए नई नई प्रतिभाएँ कार्य क्षेत्र मे उतरे। ऐसी ही बात हुई, जब कोयले की खान के एक साधारण कमकर–स्ताखानोफ ने अपनी पारी मे तीन गुने से अधिक कोयला निकाल दिया। उसने यह काम काम के बँटवारे तथा खनन-यत्र के अच्छे उपयोग की क्रिया के द्वारा किया था। स्तालिन का इस तरह की असाधारण घटना का पता लगने मे देर नही लगी। यह खबर जैसे ही दोनबास से मॉस्को पहुँची, स्तालिन ने उसका अभिनदन किया। स्ताखानोफ का सम्मान बढाया गया। उसे खान इजीनियर बनकर और बडा काम करने, तथा महासोवियत के सदस्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ; साथ ही, स्ताखानोफ के नाम से एक विशाल आन्दोलन चल पडा। नवम्बर सन् 1935 मे प्रथम स्ताखानोफी कान्फरेस हुई, जिसमे स्तालिन ने कहा था : "यह आन्दोलन समाजवादी प्रेरणा की एक नई लहर तथा समाजवादी विकास की एक नई और ऊँची सीढी है। स्ताखानोफ आदोलन की विशेषता इस बात मे है कि यह टेक्नीक के पुराने मान का अपर्याप्त समझकर, उसे तोड रहा है।"

स्तालिन का ध्यान टेक्नीक के विकास के साथ, सास्कृतिक विकास की ओर भी बराबर था। शिक्षा, कला, साहित्य सभी क्षेत्रो मे वह प्रोत्साहन देते थे। स्तालिन जिनसे बड-बडे विदेशी राजदूत भी वर्षो तक मिलने मे सफल नही होते थे, वह इन अद्भुत कर्मियो, कमकरो और किसानो के लिए बिलकुल सुलभ थे। उनसे मिलने तथा उनकी बात समझने और पथ-प्रदर्शन करने के लिए बराबर उनकी कान्फरेसे कराते रहते थे। क्रेमलिन मे स्ताखानोफी कान्फरेस हुई। उसी साल 4 दिसम्बर का ताजिकिस्तान और तुर्कमानिस्तान के प्रमुख कोलखोजी किसानो की कान्फरेस हुई। इसी समय के आसपास, उज्बेकिस्तान, कजाकस्तान और कराकल्पक के कोलखोजी किसानो ने भी क्रेमलिन मे अपनी कान्फरेस करके, स्तालिन के दर्शन और प्रेरणादायक सीखो से लाभ उठाया। केवल दर्शन के लिए एक एक आदमी को समय देना, स्तालिन जैसे सदा व्यस्त रहनेवाले पुरुष के लिए मुश्किल था, लेकिन जनता के नवीन नायको के घनिष्ठ सम्पर्क मे आने की आवश्यकता वह अच्छी तरह महसूस करते थे इसलिए ऐसी कान्फरेसो मे वह बराबर हिस्सा लेते थे और उनके सुभीते का ख्याल करके यह कान्फरेसे क्रेमलिन मे ही हुआ करती थी। स्तालिन ने सन् 1935 के नवम्बर मे, चुकन्दर की खेती वाले कोलखोजो की अग्रणी स्त्रियो का स्वागत किया और उन्हे बतलाया कि स्ताखानोफी आन्दोलन मानवता के सबसे पिछडे हुए अग–स्त्रियो को आगे बढाने मे कितना सहायक हो सकता है।

जिस तरह उद्योग-धधो और खेती मे सोवियत रूस बहुत तेजी से आगे बढ रहा था, उसी तरह यातायात और सचार के नये नये साधन भी विशाल रूप मे प्रस्तुत किए जा रहे थे। इसका एक उदाहरण इसी साल श्वेत सागर की नहर का बनना है, जिसके द्वारा बाल्तिक समुद्र को ध्रुवीय समुद्र से मिला दिया गया है। यह मानव-निर्मित नवीन जल-पथ केवल सरल यातयात के लिए ही उपयोगी नही है, बल्कि देश की सुरक्षा के लिए इसका सैनिक महत्त्व भी बहुत जबर्दस्त था। इन पचवार्षिक योजनाओ के समय, देश की सामरिक शक्ति को बढाने मे भी उतना ही काम हुआ था, यद्यपि आँकडो को गुप्त रखने के कारण, बाहर वालो को तब तक उसका पता नही लगा, जब तक लाल सेना ने द्वितीय महायुद्ध मे हिटलरियो को भगाना शुरू नही किया।

सन् 1936 मे, स्तालिन का दिमाग फिर एक बार कलम की ओर गया और उन्होने अपने सम्पादकत्व मे सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास तैयार किया। अधिकाशत. स्तालिन द्वारा लिखी गई, इस पुस्तक मे सोवियत और उसके बाहर घटने वाली भिन्न-भिन्न महत्त्वपूर्ण घटनाओ का गहरा विवेचन और विश्लेषण है। यद्यपि इसके सम्पादक-मडल मे और भी कितने ही योग्य व्यक्ति थे, लेकिन उसके एक-एक शब्द का मूल्याकन स्तालिन ने स्वय किया था। इसीलिए, यह एक अमर कृति है। जब तक सारे विश्व मे समाजवाद की विजय

नही हो जाती, तब तक यह बराबर हर समय हमारा पथ-प्रदर्शन करती रहेगी।

स्तालिन सन् 1936 मे भी कितनी ही कान्फरेंसो मे भाग लेते रहे। इसी साल, उन्होने अमरीकन सवाददाता राय होवार्ड से 1 मार्च, 1936 को भेट की थी। पूँजीवादी पत्र सोवियत को गाली देने और झूठे लाछन लगाने मे ही व्यस्त थे, सोवियत की क्षमताओं और सफलताओं की वह मौन रहकर उपेक्षा किया करते थे। स्तालिन अब अत्यंत मितभाषी हो गए थे, इसका अर्थ यह नही था कि वह विशाल निर्माण के काम मे लगे हुए लोगो के साथ भी मौन-व्रत रखते थे। जो भी हो, जब भी वर्षों बाद कोई विदेशी सवाददाता उनसे बातचीत करने मे सफल होता, अथवा वह स्वय किसी वैदेशिक या गृह-नीति पर कोई सक्षिप्त-सा भी भाषण देते, तो उसे प्रकाशित करने के लिए विदशी पत्रो मे होड लग जाती थी।

10. स्तालिनीय संविधान : सन् 1936 की एक असाधारण घटना थी—नये सविधान की स्वीकृति। स्वीकृत करने से पहले, इसके ससौदे का एक साल तक आलोचना और राय देने के लिए प्रकाशित कर दिया गया था और सविधान के बारे मे जो भी आवश्यक सुझाव आये थे उनको सम्मिलित करके, सविधान को स्वीकृत किया गया था। नये सविधान ने सन् 1924 मे स्वीकृत सोवियत सघ के सविधान का स्थान लिया। सविधान को पास कराने के समय, स्तालिन ने एक बहुत महत्त्वपूर्ण भाषण दिया था, जिसके उपसहार मे उन्होने कहा था :

"सन् 1919 म लेनिन ने कहा था . 'वह समय दूर नही है, जबकि सोवियत सरकार इसे लाभदायक समझेगी कि वह बिना प्रतिबन्ध के सार्वजनिक मताधिकार का आरम्भ करे।' इस वाक्य पर कृपया ध्यान दीजिए—'बिना किसी प्रतिबन्ध के।' लेनिन ने यह ऐसे समय कहा थी, जबकि विदेशी सेना का नाजायज दखल अभी बन्द नही हुआ था और जब हमारे उद्योग और हमारी कृषि बहुत ही शोचनीय दशा मे थी। तब से 17 वर्ष बीत चुके हैं। साथियो, क्या अब वह समय नही है कि हम लेनिन के वचन को पूरा करे? मै समझता हूँ कि समय आ गया है।

"यह एक ऐसा दस्तावेज होगा, जो उस घटना को सिद्ध करेगा, जिसका पूँजीवादी देशों के लाखों ईमानदार आदमी स्वप्न देखते थे और अब भी देख रहे है, जो सो स गणसघ मे प्राप्त भी किया जा चुका है। यह एक ऐसा दस्तावेज होगा, जो इस बात को सिद्ध करेगा कि जो बात सो स गणसघ मे प्राप्त की जा चुकी है, दूसरे देशो मे भी उसका प्राप्त करना बिलकुल सम्भव है।

"इससे मालूम होगा कि सो स गणसघ के नये विधान का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व कितना अधिक है।

"आज, जबकि फासिज्म की भयकर लहर श्रमिक श्रेणी के समाजवादी आदोलन को छिन्न-भिन्न कर रही है, सभ्य जगत के श्रेष्ठ पुरुषो के जनतात्रिक प्रयत्नो को विफल कर रही है, सो स. गणसघ का नया सविधान फासिज्म के विरुद्ध 'समाजवाद और जनतात्रिकता का अटूट सम्बन्ध है'—इसे घोषित करते हुए एक जबर्दस्त विरोधी आवाज उठा रहा है। सो. स. गणसघ का नया विधान उन सभी लोगों की नैतिक सहायता और वास्तविक मदद का काम करेगा, जो आज फासिस्ट बर्बरो से लड रहे है।

"यह जानकर आनन्द और खुशी होती है कि कि[illegible] हमारे लोग लडे और किस तरह उन्होने सारे ससार के इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण इस विजय को प्राप्त [illegible] है। यह जानकर आनन्द और खुशी होती है कि हमारे लोगो का खून, जो इतनी अधिकता से बहा है, वह व्यर्थ नही गया, उसने सुन्दर फल दिए हैं।"

सोवियत सविधान 5 दिसम्बर, 1936 को पास हुआ।

सोवियत को बालपन से ही पूतनाओ का सामना करना पडा था, यह हम अनेक बार देख चुके हैं। पुरानी व्यवस्था के समर्थको ने बराबर यह कोशिश की थी कि हरएक काम मे रोडे अटकाये जायें और नेताओं को खतम कर दिया जाय। उन्होने इसी उद्देश्य से लेनिन पर गोली चलाई थी, इसी उद्देश्य से किरोफ को मारा था और फिर भी जब कभी मौका मिला, वह षड्यत्र करने से बाज नही आये। फिर, एक बडे षड्यत्र का भडाफोड सन् 1937 मे हुआ। मुकदमे की कार्रवाइयो से पता लगा कि इस षड्यत्र में सिर्फ देश और विदेश

के प्रतिगामी ही शामिल नही थे, बल्कि उसमे जापान और जर्मनी की फासिस्ट सरकारो का भी हाथ था। ये प्रतिगामी समझते थे कि उनकी ही तरह, सोवियत रूस के भीतर भी सब कुछ एक ही आदमी का तमाशा है। उन्हें पता नहीं था कि व्यक्ति और नेता का महत्त्व सोवियत-व्यवस्था मे भी है, लेकिन सोवियत नेतृत्व एक दूसरे ही प्रकार का है। स्तालिन ने इसके बारे में कहा था : "लेनिन ने हमे सिखाया है कि केवल ऐसे ही नेता वास्तविक बोल्शेविक नेता हो सकते है, जो कमकरो और किसानो को सिखाना ही नही जानते, बल्कि यह भी जानते है कि उनसे कैसे सीखना चाहिए।"–लेनिन को खोकर भी, सोवियत व्यवस्था किस तरह आगे बढी, इसको दुनिया ने देखा है। स्तालिन के महान् नेतृत्व को देखकर भी, साम्राज्यवादी फिर समझने मे गलती करने लगे, तभी तो वह आशा कर रहे थे कि स्तालिन के बाद फिर वहाँ गडबडी होगी और उन्हे साजिशें करने का मौका मिलेगा; लेकिन उन्हे निराश होना पडा।

सन् 1937 मे, द्वितीय पचवार्षिक योजना की पहली योजना भी तरह ही सफलता के साथ और समय से नौ मास पहले पूर्ण हुई। इसी साल, तृतीय पचवार्षिक योजना भी अगले साल से चालू करने के लिए तैयार की गई। वर्ष के अन्त मे नये सविधान के अनुसार, 12 दिसम्बर, 1937 को महासोवियत का नया चुनाव हुआ। एक दिन पहले स्तालिन ने मॉस्को मे चुनाव-भाषण करते हुए बतलाया था कि हमारे पार्लीमेट के सदस्यो को लेनिन की तरह योग्य और निर्भीक होना चाहिए।

तृतीय पंचवार्षिक योजना (1938-41) : 1 जनवरी, 1938 को यह योजना शुरू हुई और 31 दिसम्बर, 1942 को समाप्त होने वाली थी, लेकिन इसके पहले ही हिटलर ने सोवियत भूमि पर आक्रमण कर दिया, जिसके कारण यह योजना खटाई मे पड गई। इसके आरम्भ होने के एक साल बाद ही, द्वितीय महायुद्ध के छिड जाने से सोवियत की अधिक शक्ति अपनी सैनिक-सुरक्षा में लगने लगी। तब भी उसमे कितनी सफलता हुई, यह इसी से पता लगेगा कि सन 1938 मे पिछले साल की अपेक्षा कल-कारखानो की उपज मे 10 फी सैकडा, लकडी की उपज मे 9 फी सैकडा और रेलवे मे साढे 5 फी सैकडा की वृद्धि हुई।

11. अठारहवीं पार्टी कांग्रेस (सन् 1939) : यह महत्त्वपूर्ण कांग्रेस मार्च महीने में हुई। इसी कांग्रेस के आदेशानुसार, सोवियत राष्ट्र ने द्वितीय महायुद्ध मे महान् विजय प्राप्त की और फिर युद्धोपरान्त प्रथम पचवार्षिक योजना (चतुर्थ पचवार्षिक योजना) को सफलतापूर्वक समाप्त किया।

अभी द्वितीय महायुद्ध घोषित होने मे 6 महीने की देर थी। इसी समय यूरोप, अफ्रीका और एशिया मे इटली, जर्मनी ओर जापान के फासिस्टों का जबर्दस्त हस्तक्षेप शुरू हो गया था; और महायुद्ध केवल इसीलिए रुका हुआ था कि प्रतिद्वद्वी साम्राज्यवादी उनके विरोध मे उठने के लिए अपने को समर्थ नही पाते थे। इसी बीच मे द्वितीय पचवार्षिक योजना सफलतापूर्वक हुई थी। कांग्रेस मे स्तालिन ने देश-विदेश की सारी परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए, बतलाया कि जर्मनी और जापान जैसे जबर्दस्त आक्रमणकारी नया साम्राज्यवादी युद्ध छेड चुके है। इस युद्ध मे 50 करोड जनसख्या वाले भूभाग पड भी चुके है, जिसका विस्तार तियान्-चिन्, शंघाई और कैन्टन होते हुए अबीसीनिया से जिब्राल्टर तक फैला हुआ है। युद्ध की भावना इग्लैड, फ्रास और अमरीका के साम्राज्यवादी हितो को अधिकाधिक दबाये जा रही है, लेकिन तब भी यह देश प्रतिरोध के लिए कोई प्रयत्न नही करते। साम्राज्यवादी समझते थे कि वह हिटलर को सोवियत की विशाल भूमि की तरफ बढवाने मे सफल होगे। प्रथम युद्ध के बाद से ही, बोल्शेविक हौवा उनके सिर पर इतना सवार था कि वह दूसरी सभी सम्भावनाओं को छोडकर, केवल इसी का स्वप्न देखा करते थे कि कोई ऐसा शक्तिशाली नेतृत्व पैदा हो, जिसे सोवियत को धर-दबाने के लिए उकसाया जा सके। वस्तुतः, इटली और जर्मनी मे मुसोलिनी और हिटलर के फासिस्तवाद को पैदा करके मजबूत करने में सबसे बडा हाथ इन्ही साम्राज्यवादियो का था। उन्होने जर्मनी के सैनिक तौर से मजबूत हो जाने के बाद, चैकोस्लोवाकिया को ही खतम करवाने का निश्चय नही कर लिया, बल्कि इसी समय चैम्बरलेन और दलादिये ने समझा कि अब हिटलर को सोवियत की तरफ निश्चित तौर से फेर दिया गया है। सोवियत के नेताओ ने बहुत कहा कि मिलकर फासिस्त शक्तियो से मुकाबला किया जाय, लेकिन इंग्लैड और फ्रास के साम्राज्यवादी भला इसे मानने के लिए क्यो तैयार होते, जबकि वह जानते थे कि हिटलरी अभियान

की कुंजी उन्हीं के हाथो मे है। लेकिन, उनका समझना गलत था। हिटलर उनके हाथ की कठपुतली नही था। हिटलर को पूर्व की ओर अभियान करने मे पहले, यह देख लेना जरूरी था कि उसका मुकाबला वहाँ कैसी शक्ति से पडेगा। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद, सोवियत सेना के शिक्षण मे जर्मन सैनिक विशेषज्ञो से भी सहायता ली गई थी, जिन्हे पता था कि नये रूस की सामरिक शक्ति क्या है। इसीलिए हिटलर मुसकरा रहा था, जबकि पश्चिमी साम्राज्यवादी म्यूनिक की सफलता पर फूले नही समा रहे थे।

काग्रेस मे सोवियत की वैदेशिक नीति के सिद्धाती को बतलाते हुए, स्तालिन ने कहा था :

"वैदेशिक नीति के क्षेत्र मे, पार्टी का ये काम करना है

"(1) शान्ति की नीति को जारी रखना और सभी देशो के साथ व्यापारिक सम्बन्ध मजबूत करना,

"(2) सावधान रहना और जगबाजो को हमारे देश को युद्ध मे न खीचने देना। जगबाजो की यह आदत है कि वह अपने लिए दूसरो से आग मे से हालो को उठवाना चाहते है

(3) लाल सेना और लाल नौसेना की शक्ति को चरम रूप मे मजबूत करना,

"(4) राष्ट्रो के बीच शाति और मित्रता की पक्षपातिनी—सभी देशो की कमकर जनता के साथ मित्रता के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो को मजबूत करना।"

स्तालिन ने इसी साल अपना साठवा वर्ष पूरा किया। अपने महान नेता की इस महत्त्वपूर्ण वर्षगाँठ को सारी जनता ने बडे उत्साह के साथ मनाया और हृदय से कामना की कि स्तालिन दीर्घजीवी हो, देश और मानवता के ऊपर घिर आई भयकर काली घटाओ को चीरते हुए, हमारा पथ प्रदर्शन करे।

इसी साल, मध्य एशिया मे सोवियत की जनता ने एक बडी सफलता प्राप्त की, जब उज्बेकिस्तान के लोगो ने 45 दिनो मे 270 किलोमीटर लम्बी फर्गाना की विशाल नहर बना डाली। स्तालिन जानते थे कि जब फासिस्टो के आक्रमण से अन्न की कठिनाई होगी उस समय इस सुरक्षित स्थान मे लाखो मन अनाज की आमदनी होगी। उज्बेक सामूहिक कृषको की इजीनियरो और सामग्री से पूरी मदद की गई। उन्होने सफल होकर स्तालिन के नाम एक पद्य बद्ध अभिनदन भेजा और अपनी नहर का नाम भी 'स्तालिन फर्गाना महानहर' रखा।

कामो मे व्यस्त रहते हुए भी इसी साल (सन् 1936) स्तालिन ने अपना एक महत्त्वपूर्ण ग्रथ 'समाजवादी राज्य का अभ्युदय और पूर्ण सिद्धात' लिखा। लेनिन ने 'राज्य और क्रान्ति' नामक पुस्तक सन् 1917 के अगस्त मे बोल्शेविक क्राति से कुछ ही महीने पहले लिखी थी जिसके द्वारा क्राति के समय भारी पथ प्रदर्शन प्राप्त हुआ था। क्राति के बाद जिस रास्ते से सोवियत रूस को गुजरना पडा, पुनर्निर्माण और पचवार्षिक योजनाओ द्वारा जिस तरह उसमे महान् परिवर्तन किए तथा जिस तरह भीतरी और बाहरी शत्रुओ से उसे मुकाबला करना पडा—इस तरह के महत्त्वपूर्ण और विशाल तजर्बा का वर्णन करना स्तालिन ही के बस का था स्तालिन ने ही उसे किया भी। स्तालिन का यह ग्रथ पार्टी, तरुण कम्युनिस्ट लीग, मजूर सभा, सहयोग सस्थाएँ आर्थिक सगठन, शिक्षा सेना आदि सभी सगठनो के और उनमे काम करने वालो के पथ प्रदर्शन के लिए बहुत मूल्यवान साबित हुआ।

उन्होने अठारहवी काग्रेस की रिपोर्ट मे बतलाया था

"अगर मार्क्सवादी लेनिनवादी शिक्षा हमारे कर्मियो मे ढीली पडने लगी और इन कर्मियो के राजनीतिक और सैद्धातिक ज्ञान के तल को ऊपर उठाने मे हमने गफलत की, कर्मी स्वय इसके कारण हमारी और आगे की प्रगति की सम्भावनाओ मे कम दिलचस्पी लेने लगे और बिना व्यापक दृष्टिकोण के, सकीर्णतापूर्वक, अन्धे होकर यात्रिक तौर से ऊपर की हिदायतो को पूरा करने की कोशिश करने लगे, तो हमारा सम्पूर्ण राज्य और पार्टी का काम जरूर खटाई मे पड जायेगा।"

फासिस्तो के खिलाफ मिलकर मुकाबला करने के लिए, पश्चिमी साम्राज्यवादियो के सामने सोवियत का जोर देना बेकार ही गया। वह बराबर यही सोचते रहे कि हिटलर किस तरह पूर्व की ओर बढे। ऊपर से वह मीठी मीठी बाते करके, सोवियत के नेताओ को गफलत मे रखना चाहते थे, लेकिन सोवियत राजनीतिज्ञ और उनके नेता—स्तालिन कच्चे गोइयाँ नही थे। वह साम्राज्यवादियो की बात को नही, बल्कि उनके काम को

देखते थे। मार्च सन् 1939 मे फ्रास और इग्लैड न चैकोस्लोवाकिया का हिटलर क लिए बलिदान कर दिया। उसके बाद, एक और जर्मनी ने पूर्वी यूरोप मे बढना शुरू कर दिया और दूसरी आर, उसके सहकारी फासिस्त जापान ने चीन मे मनमानी शुरू करके मई 1939 म मगालीय लोक गणराज्य की सीमा पार करके आगे बढना चाहा ता सोवियत के नेताओ को मालूम हो गया कि खतरा बिलकुल सिर पर आ गया है। लेकिन, क्राति के बाद के बाईस वर्षो क एक एक क्षण का सोवियत रूस न पूरा तौर स इस्तेमाल किया था और स्वतत्र मगोल जनता को अपनी देख रेख म इतना मजबूत कर दिया था कि खलखिनगोल के किनारे जापानी सेना को मगोलो क हाथो जबर्दस्त हार खानी पडी। इस हार न पूर्वी और पश्चिमी फासिस्तो को बतला दिया कि सोवियत गणराज्य की शक्ति की तो बात ही क्या, उसके एक छोटे स राज्य क पास भी इतनी शक्ति और दाव पेच है कि सामुराई पहलवान का उसका मान दिन होना पडा।

पश्चिमी साम्राज्यवादी सोवियत क साथ मिलकर कोई भी कार्रवाई करन क लिए तैयार नही थे, बलिक ... उस धारा दना चाहते थे। ... शक्तियो क साथ समझौते की बातचीत महीना चलती रही। स्तालिन ... कि किस तरह छोटे छोटे अधिकारियो को भजकर सुबह की बातचीत म उलझाये रखना ही फ्रास ... इग्लैड की नीति है। ... समय हिटलर ने सोवियत की शक्ति को समझकर चाहा कि उसको पूर्व से खतरा न रह। उसने अपन विदेश मत्री रिबेनट्राप को तुरन्त मॉस्को भेजकर अनाक्रमण सधि करने का प्रस्ताव रखा। स्तालिन उसे कैसे ठुकरा सकते ... इस प्रकार सोवियत न अगस्त सन् 1936 मे जर्मनी के साथ अनाक्रमणात्मक सधि कर ली। पश्चिमी साम्राज्यवादी इस सधि पर सोवियत का फासिस्तवाद का समर्थन कहकर तरह तरह स बदनाम करते रहे ... यह झूठा प्रचार भर था। वह भली भाति जानते थ कि सोवियत का वैसा करना ... के ... कारण हुआ था।

सातवी ... के समय सोवियत सरकार ने 20 दिसम्बर 1936 को स्तालिन को 'समाजवादी श्रम वीर' की उपाधि प्रदान की ... विज्ञान एकेडमी ने उन्हे अपना सम्माननीय सदस्य निर्वाचित किया।

12. स्तालिन की सादगी : स्तालिन का जीवन बहुत सीधा सादा रहा है। यद्यपि विरोधियो क षड्यत्रो ... के कारण उनकी सुरक्षा के हित म यह पसन्द नही किया जाता था कि वह ऐसे स्थानो मे ... जाया करे जहाँ शत्रुओ का अपना मसूबा पूरा करन का मौका मिल सके। इसीलिए, उनके जीवन को नजदीक स देखन का मौका बहुत ही कम लोगो को मिल पाता था। ... याकोब्लफ टक्नीक ... विशेषज्ञ तथा ... है जिन्होने अपनी अविस्मरणीय मुलाकातो के वर्णन म स्तालिन के चरित्र पर इस प्रकार प्रकाश डाला है

साथी स्तालिन स अपनी पहली मुलाकात के बाद भी मुझ एकाधिक बार अपन काम क सम्बन्ध म उनसे मिलन का मौका मिला और मेरे सामने इस महापुरुष की तसवीर और भी साफ होती गई।

हर उस चीज म जो उनके व्यक्तिगत जीवन स सम्बन्ध रखती है स्तालिन बिलकुल ही आडम्बरहीन थे। वह सादी पोशाक पहनते थे। युद्ध स पहले वह बहुधा धूसर वर्ण की विशेष किस्म की सैनिक जाकिट पहिनते थे। उसको सैनिक जाकिट की बजाय एक आरामदेह ढीली ढाली जाकिट कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। वह उनके पतलून की ही तरह धूसर रग क कपडे की बनी होती थी। इसके साथ ही वह मुलायम चमडे क बने हुए आरामदेह ऊचे बूट पहिनते थे।

बातचीत करत समय स्तालिन अपने आफिस म धीरे धीरे चहल कदमी करने लगते थे। वह जिससे बात करते उसको बातचीत के दौरान म बहुत ही कम टोकते थे जब तक वह अपनी बात पूरी तरह न कह ले तब तक इन्तजार करते थे।

मैने देखा उनके पास सरकारी सस्थाओ की सभा द्वारा बहुधा नोट भेज जाते थे। वह हमेशा उन्हे पढते और फिर मोडकर सफाई के साथ अपनी जेब मे रख लेते थे। वह उनमे स एक की भी उपेक्षा नही करते थे।

' स्तालिन अपन प्रश्नो के संक्षिप्त सीधे और स्पष्ट उत्तर पसन्द करते थे। जब कोई पहली बार साथी

स्तालिन से बातें करता, तो बहुधा गलती के डर से उनके प्रश्न का उत्तर देने मे देर तक हिचकिचाता। साथी स्तालिन से पहली बार बाते करते समय मैं भी ऐसा ही करता था, खिडकी के बाहर एक टक देखने लगता और कभी छत की ओर ताकने लगता था। स्तालिन ने हँसकर टीका की : 'छत की ओर ताकने की कोई जरूरत नहीं है। वहाँ आपको कुछ भी लिखा हुआ नही मिलेगा। बेहतर यह है कि आप मेरी ओर देखे और जो कुछ सोचते है, साफ-साफ कहे। आप से सिर्फ यही आशा की जाती है।'

" एक बार जब उन्होंने मुझसे सीधे एक प्रश्न पूछा, तो मैं किंकर्तव्यविमूढ हो गया। मैं नही जानता था कि वह मेरा उत्तर किस रूप मे लेगे, जो कुछ मै कहना चाहता था उसे पसन्द करेगे या नही।

" वह इस बात को ताड गये और गम्भीरतापूर्वक बोले : 'बिलकुल वही उत्तर दीजिए, जो आप सोच रहे हैं। आप वह सब कहने की कोशिश न कीजिये, जिनसे आप सोचते हैं कि मैं खुश होऊँगा। हमारी बातचीत से कुछ भी फायदा नही होगा, यदि आप मेरी मर्जी के बारे मे अनुमान लगाने की कोशिश करेगे। आप यह न सोचे कि यदि आप कुछ ऐसी बात कहेगे, जिसमे मै असहमत हूँ, तो उसका बुरा असर होगा। आप एक विशेषज्ञ है। आप और मै इसीलिए बाते कर रहे है कि मै आपसे कुछ सीखूँ, सिर्फ इसलिए नही कि मै आपको सिखाऊँ।'

" एक बार स्तालिन ने कहा : 'यदि आपका दृढ विश्वास है कि आप जो कह रहे है, वह सही है और आप उसे सिद्ध कर सकते हैं, तो आप इनकी परवाह न करे कि अमुक-अमुक व्यक्ति इसके विषय मे क्या सोचते हैं; आप अपनी बुद्धि और विवेक के अनुसार काम कीजिए।'

" एक राजनीतिक की हैसियत से, साथी स्तालिन को अनिवार्यतः बहुत लोगों से मिलना पडता था। वह नये लोगो को प्यार करते थे, उनका अध्ययन करते थे, पता लगाते थे कि वह व्यक्ति कैसा है, उसे कौन-सा काम सौंपा जा सकता है, उसकी क्षमता क्या है। बहुधा, व्यावहारिक विषयो की बातचीत के दौरान मे वह विनोदपूर्ण टिप्पणी कर देते थे।

" एक बार हम किसी समस्या को लेकर, स्तालिन से मिलने गये। बातचीत के दौरान मे, हमने कुछ कर्मचारियो का जिक्र किया, जिन्होने संतोषजनक प्रगति नही की थी। स्तालिन ने एकाएक टीका कर दी : 'ये है जामोस्कवोरेची (मॉस्को के निकट एक जिला) के मिलशियादीज और थेमिस्तोक्लीज (जनरल और सिपहसालार)।'

" यह कहने के बाद, उन्होने हमारी ओर यह देखने के लिए ताका कि मैंने उनका मजाक समझा या नही और पूछा : 'जामोस्कवोरेची के क्यो ? आप जानते है, मिलशियादीज और थेमिस्तोक्लीज कौन थे ?'

" 'पुराने जमाने मे यूनान के सिपहसालार थे।'

" 'और, उन्होने किस तरह ख्याति प्राप्त की थी ?'

" 'किसी न किसी लडाई मे, ठीक ठीक नही जानता किस तरह।'

" मुझे यूनान के प्राचीन इतिहास की अपनी अनभिज्ञता पर अत्यत लज्जा आई।

" एक बार किसी कर्मचारी के विषय मे बाते करते हुए, स्तालिन ने उसकी तुलना चेखोफ की 'ब्याह' नामक कहानी के एक पात्र से की। इसके बाद, उन्होने मुझसे पूछा : 'आपको वह कहानी याद है ?'

" मैने उत्तर दिया : 'नही, मुझे याद नहीं है साथी स्तालिन।'

" 'आपने चेखोफ को क्यो नही पढ़ा है ?'

" 'मैने चेखोफ की समस्त कृतियाँ कई बार पढ़ी है, लेकिन मुझे वह कहानी याद नही है।'

" 'कोई-कोई ऐसी चीजे है, जो दिमाग मे घर कर लेती है।'

" मै पुनः लज्जित हुआ, मै अपने को एक सुशिक्षित एव सुसस्कृत व्यक्ति समझता था।

" बातचीत चाहे टेक्निकल विषय पर हो रही हो या राजनीतिक पर, स्तालिन इतिहास, पौराणिक कथा अथवा क्लासिकल साहित्य से उपयुक्त उदाहरण देना पसन्द करते थे।

" वह 'एक शहर के इतिहास'—से आश्चर्यजनक ढग से, बडे विनोदपूर्वक लम्बे-चौड़े उद्धरण देते और उन लोगो पर निर्मम व्यग्य कसते थे, जिनमे शेद्रिन के पात्रो की कुछ चारित्रिक विशेषताएँ अभी पाई जाती थीं।

" एक नये विमान की अविलम्ब जाँच-परख की जाने को थी। कुछ लोगो ने वायुयान को फैक्टरी से कुछ दूर, उस जगह ले जाने का सुझाव दिया, जहाँ हवाबाज रहते थे।

" स्तालिन ने कहा : 'वायुयान क्यो ले जाओ। हवाबाजों का यहीं आ जाना कहीं अधिक आसान है। दुनिया में कौन इस ढग से काम करता है ? तुम अपने दिमाग से काम क्यों नहीं लेते ? तुम ग्लुपोफ के निवासियों के दृष्टान्त का अनुसरण कर रहे हो; शेद्रिन की 'शहर का इतिहास'–शीर्षक कहानी में शहर का नाम ! तुम्हें याद है, वे किस तरह बछड़े को स्नानागार मे ले गये थे और उन्होने किस तरह वोल्गा मे जौ का आटा मिलाया था ?'

" एक दिन काफी रात गये उनके आफिस में देर तक काम सम्बन्धी बातचीत करने के बाद, स्तालिन ने हम सभी को अपने यहाँ भोजन के लिए निमत्रित किया।

" उन्होने कहा : 'आज के लिए इतना काफी है। मुझे आप लोगों के विषय मे तो पता नही है, लेकिन मै भूखो मरा जा रहा हूँ। मै आप लोगों मे से किसी को विशेष रूप से निमत्रित नही कर रहा हूँ, जो आप अपने को कृतज्ञता के बोझ से दबा हुआ अनुभव करे। हाँ, जो कोई भोजन करना चाहे, उसे हार्दिक निमत्रण है।'

" इसे कौन अस्वीकार करता ? ऐसा निमत्रण बार-बार नही मिला करता।

" अतः हम सब उनके साथ, उनके निवास-स्थान पर गये। हमारे पहुँचने तक भोजन कक्ष मे मेज लगाई जा चुकी थी। साथी स्तालिन का कक्ष निहायत सादे ढग से सुसज्जित था। वहाँ बडी सख्या में रखी पुस्तकें किसी का भी ध्यान आकृष्ट कर लेती। खाने के कमरे मे भी दीवार के साथ, एक सिरे से दूसरे सिरे तक पुस्तकों से ठसाठस भरी अलमारियो की कतार चली गई थी।

" भोजन के समय राजनीतिक, अतर्राष्ट्रीय, टेक्निकल, साहित्यिक एव कला सम्बन्धी विषयो पर बातचीत होती थी। हम सब इतमीनान के साथ, खुलकर बाते करते थे। ऊँच-नीच अथवा दबने-दबाने का भाव बिलकुल नही था। हम सब बराबरी का अनुभव करते थ।

" स्तालिन किसी चीज के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए, बहुधा पुस्तको का सहारा लेते थे। किसी मसले के बारे मे सोचते हुए, वह किताबो की अलमारी के सामने खड़े हो जाते और उसमे से आवश्यक पुस्तक निकाल लेते थे। यदि बातचीत भौगोलिक विषय से सम्बन्धित होती, तो वह यह कहते हुए अपना फटा-पुराना मानचित्र ले आते थे : 'इसको मेरे मानचित्र मे देखिये। बेशक, यह बहुत जीर्ण-शीर्ण है, लेकिन फिर भी काम देता है।'

" स्तालिन की उक्तियो मे साहित्य के उद्धरणो का प्राचुर्य पाया जाता था। उनकी स्मरणशक्ति असाधारण थी और वह कई कृतियों से लम्बे-चौडे उद्धरण, प्रायः अक्षरशः, देते थे। वह प्रायः गोर्की, चेखोफ तथा साल्तिकोफ शेद्रिन का जिक्र किया करते थ। वह आधुनिक साहित्य के विकास का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते तथा हमेशा नवीनतम पुस्तको की जानकारी रखते थे।

" एक बार साहसिक कहानियों–मेनेरिग और जेम्स फेनीमोर कूपर की कृतियों–के विषय मे प्रसग छिड गया। स्तालिन न कहा कि बचपन म, वह इन लेखकों के उपन्यासों के प्रवाह मे बह जाते थे।

" स्तालिन लोगो के साथ अपने व्यवहार में असाधारण कौशल का परिचय देते थे। वह जिससे बातें करते, उसका बहुत ध्यान रखते और बडी शिष्टता दिखाते थे। जब वे किसी को अपने आफिस मे बुलाते, तो उससे हमेशा पूछते थे : 'अपने कार्य मे व्यस्त रहने के कारण, आपको यहाँ आने मे असुविधा तो नहीं हुई ?' अथवा, 'इस समय मुझसे मिलने के लिए आने मे आपके काम मे हर्ज तो नहीं हुआ ?'

" 'क्यो, साथी स्तालिन ?'

" 'तो यथाशीघ्र आइए।'

" स्तालिन बहुधा, ब्लादिमिर इलिच लेनिन के जीवन और कृत्यों को दृष्टान्त के रूप से पेश करते थे। वह प्रेमपूर्वक लेनिन की याद करते थे। एक बार उन्होंने हमे बताया था : 'सन् 1918 मे, सोवियत सरकार

ने राजधानी पेत्रोग्राद से मॉस्को स्थानान्तरित करने का निर्णय किया था। वह उथल-पुथल का जमाना था। मॉस्को में समाजवादी क्रांतिकारी और मेन्शेविकों का विद्रोह अभी-अभी दबाया गया था। मॉस्को की यात्रा में, हम ब्लादिमिर इलिच के साथ थे। उनकी रक्षा के लिए हमे बड़ी चिन्ता हुई। जब हमने देखा कि हमें खुली गाडी में जाना होगा, तो हमने लेनिन को गाडी के अन्दर बिठा दिया और खुद उनके चारो ओर खड़े हो गये, ताकि उन्हे कोई देखे नहीं और यदि उन पर हमला भी हो, तो उससे उनका बाल भी बाँका न हो। ब्लादिमिर इलिच इस चीज के खिलाफ थे। उन्होंने हमे अपनी बगल मे बैठने को कहा, लेकिन हमने आग्रह किया और हम रास्ते-भर खड़े रहे।'

" अपने काम के दौरान मे जिस किसी को भी, साथी स्तालिन से मिलने का मौका मिलता, उसके लिए यह सुअवसर एक अद्भुत शिक्षालय में शिक्षा प्राप्त करने के समान होता था। उनसे हुई, हर बातचीत की गहरी छाप पड जाती थी। हर बार उनसे मिलने के बाद, अनुभव होता था कि हमने राजनीतिक तथा व्यावसायिक दोनो ही दृष्टियो से तरक्की की है।'

" अपने समस्त कार्यो में, साथी स्तालिन सोवियत सघ के लाखो-लाख लोगो के साथ अदृश्य सूत्रो द्वारा बँधे थे। हमारी विशाल मातृभूमि के कोने-कोने से उनके पास हर रोज हजारो पत्र आते थे। वह व्यक्तिगत रूप में सोवियत सघ के स्त्री पुरुषो से परिचित थे। वह जानते थे कि उनमें किस तरह की बाते करनी चाहिए, तथा यह भी कि उनकी बात कैसे सुननी चाहिए, जो कम महत्त्वपूर्ण नही है। स्तालिन के विचार एव भाव जनता के विचार एव भाव है।—मॉस्को, सन 1950 "

13. महायुद्ध की घटाएँ : सन 1940 में सोवियत की आर्थिक स्थिति कितनी आगे बढ़ी थी, इसका पता निम्न आँकडा से लगेगा—

उत्पादन	1940 में (करोड़ टन	1933 से
कच्चा लोहा	1.50	प्रायः 4 गुना
फौलाद	1.83	साढ़े 4 गुना
कोयला	16.60	साढ़े 5 गुना
तेल-पेट्रोल	3 10	साढ़े 3 गुना
कपास	.27	प्रायः 3 गुना
अनाज	3.83	1.70

साथी स्तालिन ने 11 दिसम्बर, 1937 को पार्लमेंट के निर्वाचन-भाषण में ठीक ही कहा था : "उत्पादन की यह अद्वितीय वृद्धि, देश के पिछड़ेपन में प्रगति की ओर बढ़ने के मामूली साधारण से विकास के तौर पर नही मानी जा सकती। यह वस्तुतः छलाँग मारना है, जिसके द्वारा हमारी मातृभूमि एक पिछडे देश से अग्रगामी देश और कृषि प्रधान देश से उद्योग-प्रधान देश के रूप मे परिवर्तित हो गई है।"

द्वितीय महायुद्ध मे पड़ने से पहले, सोवियत भूमि की आर्थिक अवस्था जहाँ इतनी अच्छी थी, वहाँ सुरक्षा के बारे मे भी वह गाफिल नही थी। हिटलर के पूर्व की ओर के बढ़ाव ने यह भी मौका दे दिया कि सन् 1939 की शरद में, बीस वर्षो में जबर्दस्ती पोलेड के दखल मे चले गये, पश्चिमी उक्रइन और पश्चिमी बेलोरुसिया मुक्त होकर फिर अपने जातीय गणराज्यों में मिल जाये। अगले साल (अगस्त सन् 1940 में) बाल्तिक के गणराज्य लिथुवानिया, लत्विया और एस्तोनिया भी पश्चिमी साम्राज्यवादियो के जाल से निकलकर अपने कम्युनिस्ट परिवार मे आ मिले। इस प्रकार, पचवार्षिक योजनाओ से समृद्ध सोवियत-भूमि और फासिस्त जर्मनी के बीच का फासला, इन राजनीतिक परिवर्तनो के कारण, और भी चौडा हो गया।

अठारहवी पार्टी काग्रेस मार्च सन 1939 मे हुई, जिसमे तृतीय पचवार्षिक योजना की सफलताओं और वैदेशिक सम्बन्धो तथा सुरक्षा के बारे मे विचार किया गया। इसी मे, राज्य-योजना-कमीशन को चौथी पंचवार्षिक योजना बनाने का काम सुपुर्द किया गया और लक्ष्य रखा गया था—कच्चा लोहा, फौलाद, तेल-कोयला,

बिजली-शक्ति, मशीनें, तथा उपभोग की चीजो के उत्पादन की प्रति पुरुष मात्रा मुख्य पूँजीवादी देशो के स्तर से अधिक बढाना।

लेकिन, शांतिपूर्वक निर्माण का समय समाप्ति पर पहुँच रहा था। अब जर्मनी सारे यूरोप पर अधिकार करके, पागल सियार की तरह हो रहा था। स्तालिन की सूक्ष्म बुद्धि बतला रही थी कि वह समय दूर नही था, जब ब्रिटिश चैनल तक पहुँचकर रुका हुआ, हिटलर पूर्व को रुख करेगा।

स्तालिन लेनिन के निर्विवाद उत्तराधिकारी और सोवियत राष्ट्र के सर्वश्रेष्ठ नेता थे, लेकिन वह अब तक केवल कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधानमत्री के पद पर थे। इस स्थिति मे परिवर्तन करते हुए 6 मई, 1941 को महासोवियत के अध्यक्ष-मडल ने उन्हे लोक-कमीसार-परिषद् का अध्यक्ष अर्थात् सोवियत सघ का प्रधानमंत्री चुना। अब आर्थिक क्षेत्र की विजयो के सेनानी, 62 वर्ष की उम्र मे मानवता के लिए ऐतिहासिक युद्ध विजय के सेनानी बने।

9

मानवता का त्राता (सन् 1941-45)

युद्ध-काल मे स्तालिन के कामो का उल्लेख करते हुए, आज (सन 1953) के सोवियत प्रतिरक्षा-मत्री, न बुलगानिन ने महान् नेता की 70वी वर्षगाठ पर कहा था :

" मॉस्को युद्ध के समय, साथी स्तालिन ने अपनी असाधारण बुद्धि और हिम्मत का परिचय दिया था। युद्ध-क्षेत्र की स्थिति बडी भयकर होते हुए भी, साथी स्तालिन ने रिजर्व सेना को समय से पहले युद्ध मे नहीं उतरने दिया। पश्चिमी मोर्चे के मुख्य सेनापति को मालूम था कि मॉस्को के करीब जनरल हेडक्वार्टर के पास भारी रिजर्व सेना मौजूद है। इसलिए, उसने कुमक माँगी, लेकिन साथी स्तालिन ने उसे हुक्म दिया कि अपने पास की फौजों द्वारा ही शत्रु को रोक रखो। जल्दी ही, साथी स्तालिन के निर्णय की दूरदर्शिता का पता लगा। साथी स्तालिन ने उन रिजर्व सेनाओं को एक निर्णायक प्रत्याक्रमण करने के उद्देश्य से बचा रखा था। ठीक समय पर, मोर्चे को ये रिजर्व सेनाएँ उपयुक्त परिमाण मे मिली जिसने मॉस्को के पास शत्रु (जर्मनी) की पराजय मे मुख्य काम किया।

" महान मुक्ति-युद्ध की सभी सैनिक कार्रवाइयों की योजना साथी स्तालिन ने ही बनाई थी और उनके पथ-प्रदर्शन मे ही, उन्हे कार्यरूप मे परिणत किया गया था। कोई भी सैनिक कार्रवाई ऐसी नही थी, जिसकी योजना मे उन्होंने भाग न लिया हो। किसी भी सैनिक कार्रवाई को मजूर करने से पहले, वह अपने नजदीकी सैनिक अफसरों से बहुत बारीकी के साथ बहस और विश्लेषण करते थे। उन्होंने नौसेना और सेना के कमाडरो की सम्मतियो और सुझावों को सुनने का नियम बना लिया था। वह सभी टिप्पणिया और प्रस्तावो को बड़े ध्यान से सुनते थे।

" किसी निश्चित सैनिक कार्रवाई के पहले, मौके पर जाकर सेनाओं की तैयारी की जॉच-पडताल के लिए वह स्वय युद्ध-मोर्चे पर जाते थे। स्मोलेन्स्क मे सैनिक कार्रवाई आरम्भ करने से पहले, वह पश्चिमी मोर्चे पर गये थे।...

" स्तालिन की युद्ध-कला की एक विशेषता यह है कि वह शत्रु के साथ लडने के तरीके और रूप को अपनाने मे अपने दृष्टिकोण को बिलकुल मुक्त रखती है। वह बूर्ज्वा युद्ध-कला की रूढियों और पुरानी मान्यताओं का अन्धानुसरण पसन्द नही करती।...

" साथी स्तालिन ने सोवियत सैनिक नेताओं के नये कर्मियों को चुनकर, उन्हे शिक्षित करके आगे बढाया, जिन्होंने स्तालिन की प्रतिभा द्वारा बनाई गई योजनाओ को कार्यरूप मे परिणत करने में अद्‌भुत कौशल का परिचय दिया है। उन्होंने हमारे सैनिक कर्मियों को नजदीक से परखकर चुना है। वह हमारे जनरलों, एडमिरलों

और बहुसंख्यक सैनिक अफसरों को व्यक्तिगत तौर से जानते हैं। "

जर्मन आक्रमण

1. धोखे से हिटलर का आक्रमण : 22 जून, 1941 को हिटलर ने बिना चेतावनी दिये हुए, अनाक्रमणात्मक संधि तोड़कर सोवियत सघ पर आक्रमण कर दिया, जो सचमुच मे उसका पागल सियार की भाँति गाँव की ओर भागना ही सिद्ध हुआ। सारे यूरोप की सेनाओ और सैनिक उत्पादन के साथ, हिटलर ने अचानक आक्रमण करके उस समय कुछ आरंभिक सफलता जरूर पाई। लेकिन, स्तालिन की नीति बडी गम्भीर थी, जिसको समझने में फासिस्त बिलकुल असमर्थ रहे। स्तालिन ने अपनी सारी शक्ति को पहले ही मुकावले मे दाँव पर लगा देना पसन्द नही किया और उसी सैनिक दाँव-पेच को काम मे लाना अच्छा समझा, जिसके द्वारा रूस मे सवा सौ वर्ष पहले नेपोलियन को हराया गया था। सोवियत सेनाएँ मुकाबला करते हुए, पीछे हटने लगी। वह चाहती थी कि फासिस्त सेनाओ को काफी हानि पहुँचाकर, उनके बढ़ाव की गति मन्द कर दे। हमला होने के आठ दिन बाद (30 जून, 1941), राज्य-सुरक्षा समिति की स्थापना करके उसके हाथ मे सारी शक्ति दे दी गई। स्तालिन इस समिति के अध्यक्ष हुए। अगद की तरह, उन्होंने अपने पैर मॉस्को मे रोप दिए और राजधानी पर भयकर खतरा होने तथा अधाधुध हवाई हमलो के समय भी, वहाँ से हटने का नाम नही लिया। हिटलर के पास हजारो टैंको और हवाई जहाजो के साथ 170 डिवीजन सेना थी। सारे यूरोप के कारखाने उसके लिए गोला-बारूद, टैक, विमान और दूसरे हथियार बना रहे थे। यह कोई आश्चर्य की बात नही थी, यदि फासिस्त सेनाओ ने जल्दी ही लिथुवानिया, लतविया के काफी भाग, पश्चिमी बेलोरुसिया तथा पश्चिमी उक्रइन के भाग को अपने अधिकार मे कर लिया था। 3 जुलाई, 1941 को साथी स्तालिन ने अपने रेडियो-भाषण मे सोवियत जनता और सेना को देश की नाजुक स्थिति का परिचय दिया। उन्होने खतरे का कम करके नही बतलाया और न शत्रु की सफलताओं को छिपाना ही चाहा। साथ ही, सोवियत जनता को बतलाया कि उन्हें सर्वस्व की बाजी लगाकर, शत्रु से मुकाबला करना है। इस भाषण की कुछ पक्तियाँ थी :

> " शत्रु क्रूर और पकडाई आने में कठिन है। वह हमारी उस भूमि को छीनने पर उतारू है, जिसको हमने अपने ललाट के पसीने से सींचा है। वह हमारे अन्न और तेल को छीनना चाहता है, जिन्हें हमारे हाथो के श्रम ने प्राप्त किया है। वह जमीदारो के शासन और जारशाही को पुनः स्थापित करने पर उतारू है और रूसियों के राष्ट्रीय अस्तित्व और राष्ट्रीय सस्कृति को एक राज्य के रूप में नष्ट कर देने की नीयत रखता है। वह रूसियो, उक्रइनियो, बेलोरुसिया, लिथुवानियो, लतवियों, एस्तोनियो, उज्बेको, तातारो, मोलदावियों, गुर्जियो, आर्मनियों, आजुर्बाइजानिया तथा सोवियत सघ की दूसरी स्वतत्र जातियो की राष्ट्रीय सस्कृति और उनके राष्ट्रीय अस्तित्व को एक राज्य के रूप मे खतम करने पर उतारू है।
>
> "वह हमे जर्मन रग मे ढालकर, जर्मन राजुलों और लार्डो के दासो के रूप में परिणत करना चाहता है। इस प्रकार सोवियत राज्य के लिए, यह जन्म-मरण का प्रश्न है। सोवियत समाजवादी गणसघ के लोगो के लिए, जन्म-मरण का प्रश्न है। सोवियत सघ के लोग स्वतत्र रहेगे, या जर्मन-दासता मे पडेगे ?"

स्तालिन ने फासिस्त जर्मनी के विरुद्ध युद्ध मे सोवियत सघ के लक्ष्य को बतलाते हुए कहा कि वह जर्मन फासिस्त सेना के विरुद्ध सारी सोवियत जनता का महान् युद्ध है। जनता के मुक्ति-युद्ध का लक्ष्य केवल देश पर आये खतरे को दूर करना ही नही, बल्कि जर्मन फासिस्तवाद के जुए के नीचे कराहती सारी यूरोपीय जातियो को मुक्त करने मे सहायता देना भी है। उन्होंने यह भी कहा था कि मुक्ति-युद्ध मे सोवियत जनता अकेली नही है :

> "अपनी मातृभूमि की मुक्ति के लिए की जानेवाली यह लडाई यूरोप और अमरीका की जनता की अपनी स्वतत्रता तथा जनतात्रिक मुक्ति के सघर्ष से मिलकर रहेगी। हिटलरी फासिस्त सेना के दास बनने के खतरे के विरुद्ध स्वतत्रता की पक्षपाती, दासीकरण की विरोधी जातियों का यह संयुक्त मोर्चा होगा।"

पश्चिमी शक्तियों ने फासिस्तो के खतरे को सिर पर देखते हुए भी, सोवियत संघ की बात मानकर, एक होकर मुकाबला करने मे बहुत हीला-हवाला किया था। अब उन हीला-हवाला करने वालो मे, इंग्लैंड ही बचा हुआ था और वह भी हिटलरी आक्रमण के भय के मारे कॉप रहा था। हिटलर को शह देने वाला चैम्बरलेन रगमच छोड चुका था और चर्चिल इग्लैड का प्रधानमत्री था। उसने 12 जुलाई, 1941 को जर्मनी के विरुद्ध रूस से समझौता कर लिया। जून, सन् 1942 मे सयुक्त राष्ट्र अमरीका ने भी सोवियत सघ के साथ समझौता करके, आक्रमण के विरुद्ध युद्ध करने मे पारस्परिक सहायता के सिद्धांत को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार, अब इंग्लैड-सोवियत-अमरीका की सयुक्त शक्ति फासिस्ट गुट को नष्ट करने के लिए एकजुट हो गई। थी। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति अनुकूल बनाकर, स्तालिन ने सोवियत जनता का आह्वान किया कि अब से सारा जीवन युद्ध के लिए सगठित करना चाहिए; शत्रु को हराने के लिए सेना की सारी आवश्यकताओ को पहले पूरा करना चाहिए। केवल लाल सेना और लाल नौसेना ही नही, बल्कि सारे सोवियत नागरिको को अपने खून की एक-एक बूँद से सोवियत की एक-एक इच जमीन की, प्रत्येक गॉव और नगर की रक्षा के लिए लडना होगा। उन्होने सेना और जनता को यह भी आदेश दिया कि अगर पीछे हटने के लिए मजबूर होना पडे, तो शत्रु के हाथ मे एक रेल का इजन या डिब्बा ही नही, बल्कि कल-कारखानो, एक सेर अन्न और एक गैलन तेल भी नही छोडना चाहिए। लाखो की तादाद मे बूढे बच्चो और स्त्री-पुरुषो को अपने ग्राम छोडकर पूर्व की ओर भागना पडा था। उस समय, सोवियत सरकार ने फासिस्तो के खतरे मे तुरन्त पडनेवाले कल-कारखानो की मशीनो को बहुत भारी परिमाण मे ले जाकर, पूर्व मे स्थापित करवाया। पचवार्षिक योजनाओ के कारण, थोडे ही समय मे बडे-बडे काम करने के आदी हो जाने से सोवियत कमकरो और विशेषज्ञो ने तीन-तीन वर्षों म खडे होने वाले कारखानो को छ-छ, आठ-आठ महीनो मे ही नई जगहो पर ले जाकर, खडा कर दिया। हजारो की सख्या मे अनाथ बच्चे किसी भी पूँजीवादी देश के लिए भारी समस्या बन सकते थे, लेकिन अपने नेता के परामर्श को सुनते ही मध्य एशिया तथा दूसरे भागो के सोवियत नागरिको ने अपने-अपने घरो मे एक-एक, दो-दो बच्चे धर्म-पुत्रो की तौर पर पालना शुरू किए, जिसके कारण बच्चो के पालन-पोषण ही नही, बल्कि उनकी शिक्षा-दीक्षा की समस्या भी हल हो गई। साथी स्तालिन के प्रथम भाषण को सोवियत जनता ने हृदयगम कर लिया था :

"शत्रु का ध्वस करने के लिए, जनता की सारी शक्तियॉ, विजय के लिए आगे बढो !"

और सचमुच, सोवियत के एशियाई यूरोपीय तथा अनेक जातियो के गणराज्यो ने अपनी अद्भुत एकता का परिचय दिया। उनके भीतर कही भी दरार नही दीख पडी।

19 जुलाई, 1941 को युद्ध शुरू होने के दूसरे महीने, महासोवियत के प्रेसीडियम (अध्यक्ष-मडल) ने स्तालिन को प्रतिरक्षा-जन कमीसार नियुक्त किया। अभी भी जर्मन सेनाओ के बढाव का वेग कम होता नही दिखाई पड रहा था। अक्तूबर मे बहुत भारी सख्या मे अपनी सेनाओ को कटवाकर, फासिस्त सेनाएँ मॉस्को प्रदेश मे घुसने मे सफल हो गई। इस प्रकार सोवियत सेना को पीछे हटते देखकर, पश्चिमी सहयोगियो को यह विश्वास हो गया था कि फ्रास की तरह, रूस भी कुछ ही दिनो मे घुटने टेक देगा। लेकिन, सोवियत जनता और उसके अदम्य नेता को कभी क्षण-भर के लिए भी अपने भविष्य पर सदेह नही हुआ; क्योकि उसे अपनी शक्ति पर पूरा विश्वास था। तो भी, मॉस्को प्रदेश मे फासिस्तो के घुस आने पर राजधानी के लिए भयकर खतरा पैदा हो गया है—इसे वह भी समझते थे। 19 अक्तूबर, 1941 को राज्य-प्रतिरक्षा-कमिटी के अध्यक्ष के तौर पर, स्तालिन ने मॉस्को के घेरे मे पडने की घोषणा कर दी। राजधानी से बहुत-से मत्रालय अन्यत्र भेज दिए गये। कुइबिशेफ युद्धकालीन राजधानी बन गई। लेकिन, अगद मॉस्को मे अपने पैर हटाने के लिए तैयार नही थे। उन्होने अपने सेनापतियो के साथ मिलकर मॉस्को के बचाने की ही नही, बल्कि जर्मन फासिस्तो को सबसे बडा सबक सिखाने की योजना भी तैयार की। शत्रु मॉस्को के दरवाजे पर आकर ललकार रहा था, तो भी क्राति के चौबीसवे वार्षिकोत्सव को लोगो ने उसके अनुरूप ही मनाया। एक दिन पहले, 6 नवम्बर को स्तालिन ने हमेशा की तरह, एक सभा मे भाषण भी दिया, जिसमे उन्होंने चार महीने के युद्ध का सिहावलोकन करते हुए

बतलाया कि सेना, सैनिक नेता और जनता—सभी बड़ी बहादुरी और अद्भुत उत्साह के साथ अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं। साथ ही, यह भी बतलाया कि किसी भी तरह की गफलत करना शत्रु के हाथ मजबूत करना होगा। और, अन्त में घोषित किया : "जर्मन फासिस्तों और उनकी सेना का नाश होकर रहेगा।"

हिटलर ने डेढ़-दो महीनों मे सोवियत संघ को खतम कर देने के लिए गाल बजाया था, लेकिन चार महीने हो गये; पर फासिस्त सेना अगम दलदल मे फँसी दिखाई पड़ती थी। फासिस्तों ने अपने गुरुओं—पश्चिमी साम्राज्यवादियों—की तरह, गलत अंदाजा लगाया था कि सोवियत-व्यवस्था वहाँ की जनता पर जबर्दस्ती लादी गई है, वहाँ के लोग उसके साथ नहीं है और युद्ध के अवसर से फायदा उठाकर वह विद्रोह कर देंगे। सोवियत सैनिक शक्ति के बारे में भी, उनका ख्याल उसी तरह गलत था। और, उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि शकों, मंगोलों तथा इतिहास में अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध दूसरी जातियों के इन वंशजों की वीरता को सोवियत-व्यवस्था ने कम करने की जगह कई गुना बढ़ा दिया है। और, हरएक पिछड़ी हुई जाति को अपने बराबर लाने के लिए प्राण-पण से प्रयत्न करके, पिछले चौबीस वर्षों में रूसी जाति ने अपने स्वाभाविक भाईचारे का एक ऊँचा आदर्श रखा है। वहाँ तो युद्ध के खतरे ने उन्हें कवच की कड़ियों की तरह, एक दूसरे के साथ और भी घनिष्ठ बना दिया था।

फासिस्तों को इतनी सफलता भी निश्चय ही नही मिलती, यदि इसी समय पश्चिमी सहयोगियों ने 'मुँह में राम, बगल मे छुरी' की नीति को न अपनाया होता। स्तालिन ने वार्षिकोत्सव के समय, अपने भाषण में इस बात को स्पष्ट कहा था कि द्वितीय मोर्चे के न खोले जाने के कारण ही फासिस्तों को इतनी सफलता मिली। उन्होंने यह भी बतलाया था कि उनके कारखानों के विमान और टैंक फासिस्तों की अपेक्षा बहुत अच्छे और अधिक शक्तिशाली है, परन्तु सेना के पास उनकी पर्याप्त संख्या नही है। साथी स्तालिन ने सबसे ज्यादा जोर इस बात पर दिया कि टैंकों और विमानों का उत्पादन बढ़ाने की ओर सबसे अधिक ध्यान देना होगा।

तरुणाई का शास्त्रार्थी और भारी वक्ता, अब सोवियत राष्ट्र का संचालक बनकर मितभाषी हो गया था। स्तालिन के भाषण भी छोटे-छोटे होते थे, लेकिन उनके एक-एक शब्द मे अणु बम की शक्ति थी। स्तालिन ने फासिस्टो के आततायीपन को बतलाते हुए, अपनी जनता से कहा था :

> "ये आदमी न इज्जत रखते है, न मानवीय हृदय; इनका व्यवहार पशुओं जैसा है, तो भी ये नीच यह कहने की धृष्टता करते हैं कि वे महान् रूसी राष्ट्र को—प्लेखानोफ और लेनिन, बेलिन्स्की और चेर्नीशेव्स्की, पुश्किन और तालस्ताय, ग्लिंका और चेकोव्स्की, गोर्की और चेखोफ, सेचेनोफ और पावलोफ, रेपिन और सुरिकोफ, सुवारोफ और कतुजोफ की जाति को—नामशेष कर देंगे !..."

स्तालिन ने अपने भाषण में जिन महापुरुषों का नाम लिया था, वह दुनिया के राजनीति और आदर्शवाद के विशारद, साहित्य, संगीत, कविता, विज्ञान, ललितकला और युद्ध-विद्या मे अद्वितीय थे। और सचमुच ही, लोगो ने अपने पूर्वजो के खून को एक बार फिर बडी तेजी के साथ अपनी नसों में दौड़ते हुए पाया; और पिछले ढाई हजार वर्षो से चली आने वाली अपनी वीरता के नये नये उदाहरण युद्ध-क्षेत्र में प्रदर्शित किए। स्तालिन ने कहा :

> " अगर आक्रमणकारी जर्मन सोवियत समाजवादी गणसंघ के लोगों के विरुद्ध सर्वसंहारी युद्ध चाहते है, अगर जर्मन सर्वनाशी लडाई पसन्द करते है; तो वह उन्हें दी जायगी।
>
> " हमारा उद्देश्य न्यायोचित है, हमारी विजय होकर रहेगी ! "

2. मॉस्को के लोहे के चने : अगले दिन, 7 नवम्बर को लाल मैदान मे लाल सेना की सालाना परेड हुई। और हर साल की तरह, स्तालिन ने लेनिन-समाधि-मंदिर पर खडे होकर भाषण दिया। उन्होंने अपनी सेना और जनता के हर क्षेत्र मे वीरतापूर्ण युद्ध की प्रशंसा करते हुए कहा :

> "इस युद्ध में हमें आज अलेक्सान्द्र, नेवस्की, दिमित्री दोन्स्की, कुज्मा मीनिन, दिमित्री पझास्की, अलेक्सान्द्र सुवारोफ और मिखाइल कतुजोफ जैसे महान् पूर्वजों की वीर मूर्तियाँ प्रेरणा दें। महान् लेनिन का विजय-ध्वज हमारे हृदयो में शक्ति भर दे।"

साथी स्तालिन ने स्वयं मॉस्को की रक्षा का सचालन किया, उन्होंने लाल सेना की सैनिक कार्रवाइयों की बागडोर अपने हाथ में ली; राजधानी में आने वाले रास्तो की मोर्चेबंदी की देख-रेख भी उन्होंने स्वयं ही की। उनकी इस निर्भीकता, अदम्य उत्साह और दूरदर्शिता ने हरएक सैनिक और सेनापति मे जान फूँक दी थी।

स्तालिन का हरएक काम गणित की तरह, बिलकुल नपा-तुला होता था। वह अपने गुरु की तरह ही, परिस्थिति को तौलने मे सेर-छटॉक नहीं, बल्कि रत्ती-माशे का भी अन्तर नहीं रहने देते थे। इसीलिए तो कमांडरों की माँग आने पर भी, उन्होने विना रिजर्व सेना के ही मुकाबला करने की आज्ञा दी थी। 6 दिसम्बर, 1941 को आखिर वह समय आ गया, जब अपार क्षति उठाकर थकी-माँदी जर्मन सेनाएँ मॉस्को के पडोस मे आई और उसी समय, पहले से ही तैयार रिजर्व सेना उस पर बिजली की तरह टूट पडी।

मॉस्को की विजय ने ढुलमुलयकीनों को भी यह मानने के लिए मजबूर कर दिया कि हिटलरी सेना अजेय नही है। हिटलर के ढलवाये हुए ढेर के ढेर विजय के तमगे बेकार गये। 23 फरवरी, 1949 में अपने 55वे दैनिक आदेश में, स्तालिन ने आठ महीनो के युद्ध के परिणामो का विश्लेषण करते हुए बतलाया :

> "जर्मन फासिस्त सेना के लिए अचानक और एकाएक आक्रमण करने से जो अपने अनुकूल सैनिक स्थिति प्राप्त हुई थी, वह अब खतम हो गई है। अब युद्ध का फैसला अचानक आक्रमण के सुभीते के बल पर नही, बल्कि लगातार की जाने वाली सैनिक कार्रवाइयों पर ही निर्भर करेगा, जो मोर्चे के पीछे की दृढता, सेना का नैतिक बल, सैनिक डिवीजनो का परिमाण और योग्यता, सेना के हथियार और साधन तथा सेना के कमाडरो की सगठन की योग्यता ही है।"

स्तालिन ने द्वितीय विश्वयुद्ध में अपने को एक श्रेष्ठ सैनिक कमाडर और सैनिक प्रतिभा के धनी के रूप मे साबित किया। सैनिक विज्ञान भी अब उनके लिए हस्तामलक हो गया था और वह अपने प्रतिभाशाली तरुण सेनानायको को आगे बढाते हुए, उसमे नई सूझ निकाल रहे थे। उन्होंने इस युद्ध मे अचानक आक्रमण का सुभीता और लगातार सैनिक कार्रवाई के उपयोग को दिखलाते हुए, लकीर पीटनेवाले सैनिक विज्ञानियो की कितनी ही धारणाओ को झूठा साबित कर दिया।

अजेय स्तालिन के वचन और उदाहरण से उत्साहित होकर सारी सोवियत जनता ने युद्ध के लिए हर-एक क्षेत्र मे काम करना शुरू किया, जिसका फल भी जल्दी ही दिखाई पडा। मॉस्को मे फासिस्तो को हराने के बाद, सन् 1942 के मई दिवस के महोत्सव के सम्बन्ध में आदेश देते हुए, स्तालिन ने बतलाया कि लाल सेना के पास अब वह सारी चीजें मौजूद है, जिनसे वह दुश्मन को हराकर सोवियत-भूमि से बाहर खदेड सकती है। उसके पास "केवल एक चीज की कमी है, वह है–जिन प्रथम श्रेणी के सैनिक साधनों को हमारा देश तैयार कर रहा है, शत्रु के विरुद्ध उनको पूरी तौर से काम मे लाने की क्षमता। इसलिए लाल सेना, उसके आदमियों, उसके मशीनगनधारियों, उसके तोपचियों, उसके मॉर्टरचियो, उसके टैकचियों, उसके वैमानिको और उसके सवारो के सामने युद्ध की कला को सीखना, महनत के साथ सीखना पहला काम है। अपने हथियारों के कल पुर्जो को पूर्णतया समझना और इस प्रकार सीखकर, अपने काम में विशेषज्ञ बनकर शत्रु के ऊपर अचूक प्रहार करना है। केवल यही रास्ता, यही तरीका है, जिससे शत्रु को हराने की कला सीखी जा सकती है।"

स्तालिन ने अफसरो को भी एक नये प्रकार के अफसर बनने की बात बतलाते हुए, कहा था कि लाल सेना के अफसरो को ऐसा होना चाहिए कि वह अपने साधारण सैनिक के हरएक काम को खुद कर सके। जो चीज, जो काम तुम खुद नही कर सकते, तुम अपने सिपाही से भी उसको करने की आशा नही रख सकते। युद्ध के दिनों मे इसका उदाहरण एक अमरीकी पत्र-सवाददाता को मिला था। वह मोटर में बैठा मोर्चे के पास की भूमि मे घूम रहा था; किसी जगह गाडी का पहिया कीचड मे धँस गया और ड्राइवर ने निकालने की पूरी कोशिश की, किन्तु वह नही निकला। इसी समय एक रूसी सैनिक ने आकर कीचड को हटाकर गाडी को बाहर ढकेल दिया। जब सवाददाता ने उसे ठीक से देखा, तो मालूम हुआ कि वह लाल सेना का मेजर था। उसको कभी आशा नही हो सकती थी कि पश्चिमी राज्यों का कोई सैनिक अफसर इस तरह के काम के लिए तैयार हो सकता है और सो भी जब वह गोला-गोली की वर्षा से दूर हो।

3. स्तालिनग्राद की विजय : सन् 1942 की वसंत बीत गई, गर्मी भी आ गई, लेकिन अभी भी पश्चिमी सहयोगी द्वितीय मोर्चा खोलने के लिए तैयार नहीं थे। यद्यपि उन्होने देख लिया था कि उनकी इच्छा के अनुसार, फासिस्तों द्वारा सोवियत खतम होने की सम्भावना नही है। उनको इस तरह रोडा अटकाते देखकर, हिटलर ने निश्चिंत होकर पश्चिमी मोर्चे की सेनाओ तथा अपनी सारी रिजर्व सेना को लाकर सोवियत के खिलाफ पूर्वी मोर्चे पर लगा दिया। अब हिटलर के सेनापतियो ने सीधे राजधानी तथा रूस के मर्म पर प्रहार करने का ख्याल हटाकर, अपनी सेनाओं को काकेशस की ओर बढाया। वस्तुतः, यह उनकी चाल थी, जिसे भॉपने मे स्तालिन को देर नही लगी। उस समय हल्ला मचा हुआ था कि जर्मन सेनाएँ अब बाकू और ग्रोज्नी के महान् तेल-क्षेत्रो को दखल करने के लिए बढ रही है। आगे उनका लक्ष्य ईरान मे भारत पहुँचकर, जापानियो से मिलने का है। लेकिन, स्तालिन ने समझ लिया था कि फासिस्त पश्चिम और दक्षिण से राजधानी को घेरने मे असफल होकर, अब अपने घेरे को लम्बा करके वही काम पूर्व से करना चाहते हैं और इस प्रकार, उनकी मन्शा है कि वोल्गा और उराल के औद्योगिक क्षेत्रो से सोवियत को वचित करके मॉस्को पर आक्रमण कर, इसी साल लडाई को विजयपूर्वक समाप्त कर दे। इस चाल के बारे मे स्तालिन ने सोवियत कमाडरो को हिदायत कर दी। जुलाई के मध्य मे, सचमुच ही जर्मन ईरान और हिन्दुस्तान जाने का रास्ता छोडकर वोल्गा की ओर मुड गये और स्तालिनग्राद पर आक्रमण कर दिया। लेकिन, स्तालिन ने कच्चा दूध नही पिया था। स्तालिनग्राद की रक्षा के लिए, वहाँ पहले से ही सेनाएं तैयार थी। स्तालिन पहले से ही जान लेते थे कि मोर्चे के किस भाग को मुख्य और किसको गौण मानना चाहिए। स्तालिनग्राद पर आक्रमण होते ही, क्राति विरोधियो से भूतपूर्व जारित्सीन की रक्षा करनेवाले, स्तालिन ने आदेश दिया कि जो भी हो स्तालिनग्राद की, वोल्गा के इस महत्त्वपूर्ण नगर की रक्षा करनी होगी। 5 अक्तूबर, 1942 को वहाँ के कमाडर को उन्होंने जो आदेश दिया था, उसकी कुछ पक्तियाँ थी; "मै माँग करता हूँ कि तुम स्तालिनग्राद की प्रतिरक्षा के लिए सभी उपाय करो। स्तालिनग्राद को शत्रु के हाथो मे समर्पण नही करना होगा।"

स्तालिनग्राद का ऐतिहासिक युद्ध शुरू हुआ। यह जिस तरह इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण और बडी विजय है, वैसे ही यहाँ की लडाई भी ससार की सबसे भयकर लडाई थी। लाल सेना ने बडी बहादुरी के साथ अपने नेता के नाम की नगरी की रक्षा की। सन् 1918 की जारित्सीन वाली युद्ध-परम्परा फिर दोहराई गई। सोवियत सैनिको को अपनी विजय पर पूरा विश्वास था। लडाई जब अपनी चरम सीमा पर पहुँची हुई थी, उसी समय स्तालिनग्राद के मोर्चे के सैनिको, सेनापतियो और राजनीतिक अफसरो ने अपने महान नेता के पास एक चिट्ठी भेजकर प्रतिज्ञा की थी :

> " अपनी युद्ध-ध्वजाओ और सारे सोवियत देश के सामने, हम शपथ लेते है कि हम रूसी बाहुबल की कीर्ति को धब्बा नही लगायगे और अन्तिम क्षण तक लडते रहगे। आपके नेतृत्व मे हमारे पिताओ ने जारित्सीन की लडाई को जीता था और अब हम भी आपके नेतृत्व मे स्तालिनग्राद के महान् युद्ध को जीतकर रहेगे।"

यह शपथ उस समय ली जा रही थी, जबकि फासिस्ट सेनाएं स्तालिनग्राद और काकेशस के पर्वतसानुओ मे घुस आई थी। इसी समय, सोवियत सघ क्राति का पच्चीसवाँ वार्षिकोत्सव मना रहा था। हमेशा की तरह, अब भी उस दिन (6 नवम्बर, 1942) स्तालिन ने अपनी जनता के लिए भाषण दिया था। पिछले साल के कामो की चर्चा की और विजय मे पूरा विश्वास प्रकट करते हुए, आगे के कार्य को बताया था। मोर्चे के पीछे जनता कितनी दृढ है और वह किस तरह सेनिक कारखानो, कोलखोजो और दूसरे स्थानो मे अदम्य उत्साह के साथ काम कर रही है इसे बतलाते हुए, उन्होने कहा था : "यह मानना पडेगा कि हमारे देश मे इतना मजबूत और इतना सगठित पृष्ठ भाग पहले कभी नही था।" उन्होंने फिर इसे दोहराया कि इन गर्मियों मे हिटलरियो को जो सफलता हुई, उसका कारण है–यूरोप मे दूसरे मोर्चे का अभाव। आँकडे बताते हुए, उन्होने कहा था कि प्रथम महायुद्ध मे जब जर्मनी दोनो मोर्चों पर लड रहा था; जर्मनी ने अपने मित्रो के डिवीजनों को लेकर कुल 127 डिवीजन रूस के विरुद्ध भेजे थे। लेकिन आज की लडाई मे, जबकि हिटलर को केवल एक मोर्चे

पर लडना पड रहा है, उसने प्रथम महायुद्ध से करीब-करीब दूने—240 डिवीजनो से सोवियत पर हमला किया है। पश्चिमी साम्राज्यवादियों की नियत स्पष्ट थी। उनके पास एक मित्र की साफ नियत नहीं थी, बल्कि वह मित्र बनकर पीठ मे छुरी घुसेड़ने का उपक्रम कर रहे थे। स्तालिन और सोवियत की जनता को मालूम हो गया कि इस लडाई को केवल अपने ही बल पर जीतना है। स्तालिन ने अपनी वीर जनता के कार्यों की प्रशंसा करते हुए, उस वक्त कहा था :

> "मैं समझता हूँ कि कोई भी दूसरा देश या दूसरी सेना जर्मन फासिस्त लुटेरों और उसके सहयोगी बर्बर गुडों के इस आक्रमण से अपने को नही बचा सकती थी। केवल हमारा सोवियत देश और केवल हमारी लाल सेना ही है, जो ऐसे प्रहार को रोककर उसके प्रहार के सामने खडी ही नही रह सकती, बल्कि शत्रु को दबोच भी सकती है।"

अगले दिन 7 नवम्बर, 1942 के दैनिक आदेश मे प्रतिरक्षा-जन-कमीसार (स्तालिन) ने कहा था :

> "रोस्तोफ, मॉस्को और तिखविन मे लाल सेना के प्रहार के बल को शत्रु पहले ही चख चुका है। वह दिन दूर नही है, जब लाल सेना के प्रहार के बल को शत्रु फिर से अनुभव करेगा। हमारी बारी भी आकर रहेगी।"

यह भविष्यवाणी जल्दी ही पूरी होने जा रही थी। ठीक समय पर, 19 नवम्बर, 1942 को स्तालिनग्राद के बाहरी हिस्सो मे लाल सेना ने प्रतिरक्षा के तरीके को छोडकर आक्रमण की नीति अपनाते हुए, शत्रु के दोनो पक्षों पर पहले आक्रमण किया—इतना जबर्दस्त आक्रमण कि आग पर जलते रेशम के धागे की तरह, वह सिमटकर, अस्त-व्यस्त होकर पीछे की ओर हटा। इसी समय, लाल सेना ने पीछे से भी आक्रमण कर दिया। यह व्यूह रचना और आक्रमण का दाव-पेच स्तालिन ने स्वय निश्चित किया था और उन्ही के संचालन मे उसे कार्यरूप मे परिणत किया गया था। जर्मन भी जानते थे कि स्तालिनग्राद के युद्ध का फैसला उनके भाग्य का फैसला होगा, इसलिए वह भी सर्वस्व की बाजी लगाये हुए थे। लेकिन, उससे कोई फायदा नही हुआ। तीन लाख फासिस्त सेनाओ को एक जगह घेरना मामूली बात नही थी, लेकिन लाल सेना ने सिर्फ घेरा ही नही डाला, बल्कि उसने कितने ही भाग को नष्ट भी कर दिया और बाकी को बन्दी बनाकर, स्तालिनग्राद की जबर्दस्त विजय प्राप्त की। स्तालिनग्राद की सफलता के महत्त्व के बारे मे, बाद मे (सन् 1946 मे) स्तालिन ने कहा था : "स्तालिनग्राद से जर्मन फासिस्त सेना के पतन का आरम्भ होता है। यह सभी लोग जानते हैं कि स्तालिनग्राद की घोर मारकाट के बाद जर्मन फिर प्रकृतिस्थ नही हो सके।" स्तालिनग्राद की विजय के बाद तो सचमुच ही हिटलरी सेना मे भगदड मच गई थी; और वह आगे-आगे भागी जा रही थी, पीछे-पीछे लाल सैनिक उनको खदेडते हुए, अपने देश को स्वतत्र करते जा रहे थे।

फासिस्तों की पराजय

आगे की सफलताओं का जिक्र करते हुए, स्तालिन ने 23 फरवरी, 1943 के दैनिक आदेश मे सोवियत सेना और सोवियत जनता की वीरता और सफलता के बारे मे कहा था : "हमारे लोग सैवस्तॉपोल और ओदेसा की वीरतापूर्ण प्रतिरक्षा, मॉस्को के नजदीक की जबर्दस्त लडाई, काकेशस के पर्वतो, र्झेफ इलाके और लेनिनग्राद के समीप के युद्धो एव हमेशा के इतिहास में सबसे बडे युद्ध—स्तालिनग्राद के सबसे बडे युद्ध—को हमेशा याद रखेंगे। इन महान् युद्धो मे हमारे वीर योद्धा, सेनापति और राजनीतिक शिक्षको ने लाल सेना की पताकाओ को अचल कीर्ति से शोभित कर दिया है और जर्मन फासिस्त सेना पर विजय प्राप्त करने की सुदृढ़ नीव रख दी है।"—यह कहते हुए, स्तालिन ने बेकार के अभिमान के खतरे से भी सावधान करते हुए और लेनिन की सूक्ति का स्मरण दिलाते हुए कहा था :

> "पहली मुख्य चीज यह है कि विजय से मतवाला नही होना चाहिए और न घमड से गाल बजाना चाहिए। दूसरी चीज यह है कि विजय को सुप्रतिष्ठित करना, और तीसरी चीज है—शत्रु पर उसे समाप्त करने वाला प्रहार करना।"

4. मातृभूमि की मुक्ति : सन् 1942-43 के जाडो मे लाल सेना का अभियान जर्मनो के हाथ से सोवियत के उन इलाकों को भी छीनने में सफल हुआ, जिन्हें युद्ध के आरम्भ में ही उन्होंने ले लिया था। इस सफलता के लिए, सोवियत राज्य ने अपने कमांडर-इन-चीफ (मुख्य सेनापति) को 6 मार्च, 1943 को 'सोवियत संघ के मार्शल' की उपाधि प्रदान की।

अभी भी, चर्चिल और उसके साथियों ने द्वितीय मोर्चा खोलने का इरादा नही किया था, यद्यपि वह हिटलरी सेना की भीषण पराजय देख चुके थे। यह हिटलर को सीधी मदद देना था, इसमें सन्देह नही। सोवियत के कर्णधार उनकी इस हरकत को खून का घूँट पीकर बर्दाश्त कर रहे थे। इससे हिटलर को फिर हिम्मत हुई और सन् 1943 की गर्मिया में उसने ओरेल और बेलगोरद से कुर्स्क के क्षेत्र मे सोवियत की सेनाओ पर भीषण प्रत्याक्रमण किया। उनके ख्याल मे यह मॉस्को पर आक्रमण का श्रीगणेश था। इससे पहले ही, 2 जुलाई को स्तालिन ने इस क्षेत्र के कमांडरों को सूचित कर दिया था कि जर्मन 3 और 6 जुलाई के बीच उन पर आक्रमण करने वाले है। शत्रु की गतिविधि जानकर, लाल सेना पहले से ही तैयार थी। जब 5 जुलाई को नाजियों ने ओरल कुर्स्क और बेलगोरद के क्षेत्र पर आक्रमण किया, तो सोवियत सेना के सामने उनकी एक न चली और हिटलरी योजना व्यर्थ गई। इसके बाद तो अब सारे युद्ध-क्षेत्र में लाल सेना ने प्रतिरक्षा छोडकर, आक्रमण की नीति अख्तियार कर ली। जर्मनों के इस आक्रमण के विफल होने के बाद, 24 जुलाई को स्तालिन ने घोषित किया : "इस फासिस्ती टॉय-टॉय-फिस्स ने उस पोवाड़े को झूठा साबित कर दिया है जिसमे कहा जाता था कि गर्मियों में जर्मन हमेशा आक्रमणात्मक सैनिक कार्रवाई में सफल होते है और सोवियत सेनाएँ पीछे हटने के लिए मजबूर होती है।" सफलता के बाद, लाल सेना शत्रुओं को नष्ट करती भगाती बराबर आगे बढ़ती रही। 5 अगस्त को उसने अपने हाथ मे ओरेल और बेलगोरद ले लिये, जिसके सम्मान मे राजधानी मे बहादुर सेना को तोपो की सलामी दी गई। इसके बाद तो हरएक महत्त्वपूर्ण विजय पर राजधानी मे तोपे दगने लगी, जिसे सुन-सुनकर राजधानी की जनता फूली नही समाती थी। स्तालिन ने कहा था . "अगर स्तालिनग्राद का युद्ध जर्मन फासिस्त सेना के पतन की भविष्यवाणी करता है, तो कुर्स्क के युद्ध ने फासिस्तो को सर्वनाश के मुँह पर पहुँचा दिया है।"

नवम्बर सन 1943 तक, जर्मनो के हाथो से दो तिहाई सोवियत को फिर से मुक्त कर दिया गया। स्तालिन अच्छी प्रकार जानते थे कि यह मुक्ति अस्थायी नही है। इसीलिए, लाल सेना एक तरफ नये भू-भागो को जर्मनो से मुक्त करती जा रही थी और दूसरी तरफ साधारण जनता एक निश्चित योजना के अनुसार, पुनर्वास और पुनर्निर्माण के काम में लगी थी। 19वी सदी के आरम्भ मे, रूस ने सुवारोफ जैसे महान् सेनापति को जन्म दिया था, जिसकी विजयवाहिनी के घोडो की टापे इटली और आल्प्स पर भी सुनाई दी थी। उसके युद्ध-विज्ञान का सोवियत काल मे पूरी तौर से सम्मान हुआ और, अंग्रेजो के विक्टोरिया क्रास की तरह, 'सुवारोफ तमगे' को वीरता का भारी पारितोषिक बनाया गया। 6 नवम्बर, 1943 को यह तमगा बडे सम्मानपूर्वक स्तालिन को प्रदान किया गया।

शत्रु भाग रहे थे, लेकिन वह भागकर फिर सगठित होने का मौका न पाये इसलिए जगह-जगह गोरिल्ला उन पर भीषण प्रहार करके, उनकी अपार क्षति कर रहे थे। स्तालिन ने उन्हे आदेश दिया था कि शत्रु की पाँतो मे गोरिल्ला-युद्ध की आग भड़का देनी चाहिए, उसके सैनिक अड्डो को नष्ट करके, जर्मन फासिस्त गुडों का सर्वनाश कर देना चाहिए। गोरिल्ला-युद्ध अब और भी प्रचड हो उठा, जिसके कारण फासिस्त सेना किंकर्तव्यविमूढ हो गई। उसको हर जगह अपने शत्रुओ का खतरा दिखाई पडता था।

अब इसमे जरा भी शुबहा नही रह गया था कि इंग्लैड और अमरीका चाहे द्वितीय मोर्चा न भी खोले, सोवियत सेना अकेली ही यूरोप में फासिस्तो को खतम करने के लिए पर्याप्त है। साम्राज्यवादी उसकी इस तरह की पराजय को कभी पसन्द नही कर सकते थे, क्योकि यदि लाल सेना सारे यूरोप को फासिस्तों से मुक्त करती, तो उसके साथ-साथ रोम, पेरिस, बर्लिन और दूसरी राजधानियो मे भी जनवादी मुक्ति के झंडे फहर जाते। इसीलिए 1943 में, अब पश्चिमी सहयोगियो ने भी तत्परता दिखानी शुरू की। उन्होने उत्तरी अफ्रीका और इटली

के खिलाफ जोर की लडाई लड़नी शुरू की। और साथ ही, उनके बमवर्षको ने जर्मनी के युद्ध-सम्बन्धी औद्योगिक केन्द्रों पर आक्रमण करने शुरू कर दिये। फासिस्त शक्ति के ध्वस का पहला जबर्दस्त परिचय उस समय देखने को मिला, जबकि सितम्बर सन् 1943 मे इटली ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया। अब हिटलरी सेना पश्चिम मे अकेली रह गई। पूर्व मे अपने फासिस्त-बन्धुओ की सहायता के नाम पर, अपने चिरपोषित उद्देश्यो की पूर्ति के लिए जापान अब भी बड़े जोर-शोर के साथ लड रहा था। भारत अब भी उसके खतरे से बाहर नहीं था। बर्मा, इण्डोनेशिया तक ही नही, बल्कि चीन का भी अधिकाश भाग उसके हाथ मे था।

5. तेहरान कान्फरेन्स और पुनर्निर्माण का आरम्भ (1943) : लाल सेना की सफलताओ ने पश्चिमी साम्राज्यवादियो के सिर से एक भय के भूत को दूर कर दिया था, लेकिन साथ ही दूसरा भूत उनके सिर पर सवार हो गया—कही बोल्शेविज्म सारे यूरेशिया को उदरसात् न कर ले! इससे बचने के लिए, उन्होंने नवम्बर सन् 1943 में तेहरान में कान्फरेंस की, जहाँ स्तालिन, अमरीका के प्रेसीडेंट रूजवेल्ट और इग्लैड के महामत्री चर्चिल ने मिलकर, आपस मे बातचीत की और जर्मनी के विरुद्ध लडने तथा युद्धोपरान्त सहयोग के सम्बन्ध मे तीनों शक्तियों ने एक समझौता किया।

हम यह बतला चुके है कि सोवियत राष्ट्र युद्ध के आखिरी वर्षो मे केवल लडाइयाँ लडकर विजय ही प्राप्त नहीं कर रहा था, बल्कि इसी समय फासिस्तों द्वारा ध्वस्त कल-कारखानों, लोहे के भट्ठों, पनबिजली-स्टेशनों की लगातार मरम्मत करके उनको फिर से चालू करने में भी लगा था। इसी लडाई के समय, चेलियाबिन्स्क और उज्बेकिस्तान में नये फौलाद के कारखाने तथा तगिल, मगनितोगोर्स्क और दूसरे स्थानो में नये धौकू भट्ठे अधिक लोह-उत्पादन के लिए खड़े किये गये। स्तालिन्स्क में अल्मोनियम का नया कारखाना स्थापित होकर, काम करने लगा। स्तालिन्स्क, चेलियाबिन्स्क आदि में नये पनबिजली स्टेशन काम करने लगे। स्तालिन जिस तरह सम्मान और बढ़ावा देकर सैनिको मे नई रूह फूंक रहे थे, उसी तरह उद्योग क्षेत्र के कर्मठ सैनिको को भी वह परम सम्मान का पात्र समझते थे। युद्ध की कठिन परिस्थिति में भी एक विशाल धौकू भट्ठे को मगनितोगोर्स्क के कमकरो ने बहुत जल्दी खडा कर दिया था, उसके लिए भी उन्होंने दिसम्बर सन 1943 मे उन्हे बधाई भेजी थी। उन्होंने येनाकियेवो के लोह फोलाद के कारखाने के मजदूरों को भी इसी तरह का अभिनंदन भेजा। स्तालिन ने मुक्त होने वाले भू भागों का आर्थिक तौर से, फिर से निर्माण करने की ओर खास ध्यान दिया। उनकी प्रेरणा से, पार्टी की केन्द्रीय कमिटी और राज्य की जन-कमीसार-परिषद् ने अगस्त सन् 1943 मे जर्मन-अधिकार से मुक्त किए गये इलाको के आर्थिक पुनर्वास के लिए आवश्यक उपायों का अख्तियार करने का निश्चय किया, जिससे पुनर्निर्माण और पुनर्वास का काम बहुत तेजी से बढा। सोवियत जनता हर तरह से सहयोग करने के लिए तैयार थी। जिस तरह प्रतिरक्षा के उद्योग को उसने आगे बढ़ाया, उसी तरह अब साथ-साथ पुनर्वास के काम को भी हाथ में लिया। पुनर्वास का काम समाजवादी व्यवस्था में जितनी आसानी से किया जा सकता है, उतना पूँजीवादी व्यवस्था में करना सम्भव नही है। भारत इसका अच्छा उदाहरण है। आज 6 वर्ष बाद भी, पाकिस्तान से आये हुए अपने विस्थापितों का हम ठीक से प्रबन्ध नही कर पाये है, जबकि हमारे देश ने युद्ध की ध्वसलीला भी नही देखी और हमारे सभी आर्थिक साधन सुरक्षित रहे है। तो भी देश-विभाजन के कारण, सन् 1947 के अन्त मे भीषण समस्या उठ खडी हुई। सोवियत जनता का सामूहिक स्वार्थ वैयक्तिक स्वार्थ से अलग नही, बल्कि सामूहिक स्वार्थ का अभिन्न अग होने से व्यक्ति समाज के हितो में ही अपने हितो को मानता है। यही कारण था कि वहाँ के लोग सामूहिक स्वार्थो की रक्षा के लिए ढिलाई नही दिखा सकते थे। हिटलर ने जिन इलाकों पर अधिकार किया था, वहाँ पर उसने चाहा था कि किसान कोलखोजो की जगह फिर वैयक्तिक तौर से अपनी खेती करे, इसी तरह दूसरे व्यवसायो में भी वैयक्तिक स्वार्थो को उसने पुनः स्थापित करने की कोशिश की थी। जब उसमे उसे सफलता नही हुई, तो उसने लोमडी के खट्टे अगूर की तरह, यह कहना शुरू किया कि इन लोगों मे आतरिक बढ़ावा और अध्यवसाय की भावना ही नही है। वैयक्तिक बढ़ावा और अध्यवसाय से सामाजिक बढ़ावा और अध्यवसाय व्यक्ति के लिए भी सबसे अधिक हित की बात है, यह सोवियत के नागरिक अपने सत्ताईस वर्षो के जीवन से अच्छी तरह समझ गये थे। कोलखोजो का समृद्ध जीवन

क्या वैयक्तिक किसानी से कभी प्राप्य हो सकता था ? क्या वैयक्तिक किसान गाँवो में बिजली की रोशनी और जीवन के आधुनिक सुभीतो के पाने का स्वप्न भी देख सकते थे ?

स्तालिनी संविधान ने सोवियत गणसघ को सर्वतत्र-स्वतत्र गणो का सघ मानते हुए, उन्हे अधिकार दे रखा था कि वह स्वेच्छापूर्वक सघ मे सम्बद्ध हैं और जब चाहे तब उनको सघ से अलग होने का अधिकार है; लेकिन सोवियत आर्थिक ढांचे, सास्कृतिक नवनिर्माण तथा जातियो के प्रति स्तालिन की दूरदर्शितापूर्ण नीति ने उनके दिल से अलग होने के ख्याल को ही निकाल दिया था। मार्च सन् 1944 में सोवियत सरकार ने एक और बडा कदम उठाया, जबकि सघ के सोलहो गणराज्यो को प्रतिरक्षा और वैदेशिक विभाग के अपने-अपने मंत्रालय रखने की इजाजत दे दी। युद्ध ने सोवियत की भिन्न-भिन्न जातियों को और भी घनिष्ठता से एक-दूसरे के साथ सम्बद्ध कर दिया। पिछडी हुई जातियों मे पचवार्षिक योजनाओं ने जिस तरह हजारो की तादाद में इजीनियर, विशेषज्ञ आदि पैदा कर दिये थे, वहाँ अब इन जातियों के सैकडो जवान 'सोवियत-सघ-वीर' के सर्वोच्च वीरतासूचक सोने के पचकोने तारे वाले तमगों को अभिमान के साथ धारण कर रहे थे, उनमें कितने ही ऊँचे-ऊँचे अफसरों के पदो पर पहुँचे थे।

6. बर्लिन की ओर : सन 1944 के नवम्बर मे, जब सोवियत की जनता अपनी महान् क्राति का 27वाँ वार्षिकोत्सव मना रही थी, स्तालिन ने अपने भाषण मे बतलाया कि सोवियत की सारी भूमि जर्मन फासिस्तो से मुक्त की जा चुकी है। यही नही, बल्कि सोवियत सेना अब जर्मनी और उसके सहयोगियो के देश मे घुसकर दुश्मनो का सफाया कर रही है। इससे पहले, 20 जून (सन् 1944) को 'मॉस्को प्रतिरक्षा तमगा' सबसे पहले मार्शल स्तालिन को प्रदान किया गया। 26 जुलाई, 1944 को 'विजय-तमगा' भी स्तालिन को दिया गया। स्तालिन की नीति ने सोवियत को अमर विजय प्रदान की थी, क्या यह कहने की आवश्यकता है ? सन 1944 मे फासिस्तो के सहयोगी देशों रूमानिया, फिनलैंड और बल्गेरिया ने आत्मसमर्पण करके ही सतोष नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपनी बन्दूको की नलिया को हिटलरी सनाओ की ओर फेर दिया। इसी साल, हगरी भी अब तब कर रहा था। सोवियत सेना, जर्मनी को एक धक्के मे गिराकर के फ्रास तक के देशो को मुक्त कर, अतलान्तिक के तट पर पहुँचने के लिए बिलकुल सक्षम थी। अब चर्चिल को दूसरे मोर्चे को और अधिक रोके रखना भारी खतरे की बात मालूम होने लगी। इस प्रकार, जून सन् 1944 मे दूसरा मोर्चा खोलते हुए, अमरीकी और अग्रेज सेनाएँ उत्तरी फ्रास के तट पर उतरी। जर्मन फासिस्त अब दोनो ओर से पिटने लगे। स्तालिन ने 6 नवम्बर, 1944 के क्राति-महोत्सव-सम्बन्धी अपने भाषण मे ही पुकार की—"बर्लिन की ओर !" लाल सेना ने अब बडी तेजी के साथ बर्लिन का रास्ता पकडा; पोलैड की राजधानी (वारसा) को मुक्त कर दिया। सेना लाल पूर्वी प्रशिया के भीतर घुसी। सारे मोर्चे पर जर्मन फासिस्त बुरी तौर से पिटने लगे। अन्तिम विजय नजदीक दीख पड रही थी। इसी समय फरवरी सन 1945 मे, तीनो देशों के प्रमुख नेता याल्टा (क्रीमिया) मे मिले, जिसमे हिटलरी जर्मनी को शीघ्रातिशीघ्र पराजित करने के लिए सैनिक तरीकों की योजना के बारे मे विस्तृत विचार हुआ। इसी सम्मेलन मे यह भी निश्चय हुआ कि सोवियत सघ जापान के विरुद्ध भी युद्ध मे सम्मिलित होगा।

23 फरवरी, 1945 को जिस वक्त लाल सेना का 27वाँ जन्मोत्सव मनाया जा रहा था, उस वक्त तक उसने बडी-बडी विजएं प्राप्त की थी। जनवरी और फरवरी के चालीस दिनो मे, बिजली की चाल से चलने वाले अपने आक्रमणों द्वारा सोवियत सेना ने सारे पोलैड को मुक्त कर दिया; चैकोस्लोवाकिया का अधिकांश भाग भी मुक्त हो गया और जर्मन सिलेसिया के अतिरिक्त, पूर्वी प्रशिया का भी बहुत-सा भाग लाल सेना के हाथो मे था। हगरी के रूप मे, हिटलर का अन्तिम यूरोपीय साथी भी अब आत्मसमर्पण कर चुका था। 23 फरवरी, 1945 के दैनिक आदेश मे साथी स्तालिन ने कहा था : "जर्मनो पर पूर्ण विजय की प्राप्ति अब बिलकुल नजदीक है।" लाल सेना ने वियना (आस्ट्रिया) पर अधिकार करके जर्मनी के दक्षिणी दुर्ग को खतम कर दिया। इसी समय ओडर पार करती हुई, लाल सेना बर्लिन के पास पहुँचने लगी। स्तालिन ने कहा :

"अपने विजय-ध्वज को बर्लिन पर फहराओ !"

आखिरी प्रहार होने ही वाला था। इसी समय 21 अप्रैल, 1945 को पोलैंड-सोवियत मित्रता-संधि पर स्तालिन

ने हस्ताक्षर किए। पश्चिमी साम्राज्यवादी पोलैंड को अब भी पिछले महायुद्ध की तरह, अपने हाथ की कठपुतली बनाकर सोवियत-विरोधी अड्डे के रूप में इस्तेमाल करना चाहते थे और उन्होंने कितने ही समय तक इस मित्रता को न होने देने के लिए कोशिश भी की। प्रतिगामियों की भगोड़ी सरकार को लन्दन में शरण देकर, चर्चिल उनकी पीठ ठोकता रहा; लेकिन अन्त मे उसे सफलता नहीं मिली। सोवियत के लिए यह संधि एक बड़ी जबर्दस्त राजनीतिक विजय थी। इसी समय भाषण देते हुए, साथी स्तालिन ने कहा था :

"स्वतत्रताप्रेमी जातियों, खास कर स्लाव जातियाँ बहुत समय से अधीरतापूर्वक इस सधि की प्रतीक्षा कर रही थीं। यह सधि यूरोप में समान शत्रु के विरुद्ध सयुक्त मोर्चे के दृढ होने की सूचना देती है।'

महान् विजय

7. हिटलर का अंत : 2 मई, 1945 को महान् कमाडर-इन-चीफ के दैनिक आदेश को प्रसारित करते हुए, मॉस्को रेडियो ने कहा था कि सोवियत सेना ने "बर्लिन की जर्मन सेनाओ को पूर्ण तौर से पराजित कर दिया है और आज 2 मई को जर्मन साम्राज्यवाद के केन्द्र और जर्मन आक्रमण की पीठ—जर्मनी की राजधानी बर्लिन—पर अधिकार कर लिया है।" लाल सेना ने स्तालिन की आज्ञा को पूरा किया। बर्लिन पर अपनी विजय-ध्वजा फहरा दी। इस समय तक हिटलर अपने गिने-चुने अनुयायियो के साथ अपने तहखाने में आत्महत्या कर चुका था। जर्मनी के लिए अब दूसरा रास्ता नही था, इसलिए 8 मई, 1945 को जर्मन सेना के उच्च प्रतिनिधियो ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया। 9 मई के दिन को स्तालिन ने विजय-दिवस घोषित किया। उस दिन स्तालिन ने अपने लोगों को सम्बोधित करके, कहा था :

" जर्मनी पर विजय का महान् दिवस आ गया है। लाल सेना और हमारे सहयोगियो की सेनाओं के प्रहार से मजबूर होकर, फासिस्त जर्मनी ने घुटने टेककर बिना शर्त के आत्मसमर्पण कर दिया है। अब यह कहने के लिए पूरा कारण है कि जर्मनी की अन्तिम पराजय का ऐतिहासिक दिन, जर्मन साम्राज्यवाद पर हमारी जनता की महान् विजय का दिन आ गया है।

" मेरे प्यारे देशबन्धुओ और देशबहिनो ! विजय के लिए अभिनंदन ! "

सोवियत जनता ही नही, बल्कि सारी मानवता ने उस दिन सुख की साँस ली, जब दुनिया के रेडियो-स्टेशनों ने जर्मनो की पूर्ण पराजय को घोषित किया। इस पराजय का सबसे अधिक श्रेय स्तालिन और उनकी जनता का ही है। उन्होंने इस युद्ध के समय अपनी सर्वांगीण प्रतिभा का पूर्ण उपयोग किया था। पचवार्षिक योजनाओं की तरह, इस समय भी कितनी ही नई-नई सैनिक प्रतिभाओं को खोज निकालना स्तालिन का ही काम था। इस युद्ध से पहले बुल्गानिन, वासीलेव्स्की, कोनेफ, गवरोफ, जुकोफ, वतूनिन, चेर्न्याखोव्स्की, अन्तोनोफ, सोकोलोव्स्की, मेरेत्स्तोफ, मालिनोव्स्की, वरोनोफ, तोल्बुखिन, याकोव्लेफ, मालिनिन, गलित्स्की, त्रोफिमेन्को, गोर्बातोफ, श्तेमेन्को, कुरासोफ, वेरशिनिन, गलोवानोफ, फदोरेको, रिबाल्को, बगदानोफ, कतुकोफ, लेल्युशेंको आदि अनेक प्रतिभाशाली सेनापतियों को कौन जानता था ? उन्हे अपना जौहर दिखलाने का मौका स्तालिन ने जितनी आसानी से दिया, क्या पूँजीवादी राष्ट्र वैसा कर सकते थे ? उनके यहाँ तो ये पैतीस-चालीस वर्ष के छोकरे अभी मेजर और कर्नल तक ही पहुँचने के अधिकारी थे; जनरल और मार्शल होने के लिए तो साठ के नजदीक होना जरूरी था।

स्तालिन के आदेश के अनुसार 24 जून, 1943 को मॉस्को के लाल-मैदान मे विजय-परेड हुई। इस समय लाल सेना के विजय-ध्वजों और पराजित फासिस्तो की पताकाओं के साथ जो विशाल सैनिक प्रदर्शन हुआ, वह मेरे और सभी दर्शकों के लिए अद्वितीय था। लेनिन-समाधि-मदिर पर खडे, इस प्रदर्शन को देखते हुए स्तालिन कितने मुग्ध हुए होंगे, इसे आसानी से समझा जा सकता है। सोवियत जनता और उसका एक-एक बच्चा जानता था कि इस विजय-प्रदर्शन को रूप देने मे सबसे बढ़कर जिनका हाथ है, वह महान् स्तालिन ही हैं। सोवियत-जनता और सरकार अपने महान नेता का सम्मान करते नहीं थकती थी। परेड के दो दिन बाद, 26 जून को राज्य ने मार्शल स्तालिन को एक और 'विजय-तमगा' प्रदान किया और अगले दिन (27 जून को) उन्हे 'जनरलस्सिमो'

(परम सेनापति) की उपाधि दी।

8. जापान हारा : फासिस्त जर्मनी की पूर्ण पराजय हुई। जापान अब भी अमरीका और इंग्लैंड को परेशान किए हुए था। उन्हें दिखाई नही पड रहा था कि कैसे भारत की सीमा तक डटी जापानी सेना को हटाया जाय। इसी समय (जुलाई सन 1945) त्रिदली सम्मेलन हुआ। ट्रूमैन, चर्चिल और स्तालिन की बातचीत हुई। अमरीकी प्रेसीडेंट रूजवेल्ट के अकस्मात् मर जाने से उनके सहकारी ट्रूमैन अब अमरीका के राष्ट्रपति थे। अमरीका और इंग्लैंड ने जापान से बिना शर्त हथियार रखने की माँग पेश की थी, लेकिन उसने ऐसा करने से इन्कार कर दिया था। दोनो राष्ट्र समझने लगे थे कि यदि सोवियत ने हस्तावलम्ब न दिया, तो जापान अभी भी टेढ़ी खीर बना रहेगा। सोवियत ने जापान के विरुद्ध युद्ध मे शामिल होना स्वीकार किया और उसके साथ साम्राज्यवादियो ने भी लम्बी बाँहो को समेटने का वचन दिया।

9 अगस्त, 1945 के सवेरे सोवियत स्थल और नौसेना ने जापान के साथ लड़ाई छेड़ दी। सोवियत के मुकाबले के लिए ही लड़ाई के भी पहले से जापान की मशहूर 'क्वान्तुङ' सेना मचूरिया में रखी गई थी। उसकी भी वही हालत हुई जो लाल सेना के सामने पश्चिम मे हिटलरी सेना की हुई थी। सोवियत सेना ने मचूरिया, दक्षिणी सखालिन, उत्तरी कोरिया और कुरिल द्वीपपुजों मे जापानी सेना को मार भगाया। जापान के लिए बिना शर्त आत्मसमर्पण के सिवा और कोई रास्ता नही रह गया। वह वैसा करने ही जा रहा था कि इससे पहले चर्चिल के समर्थन मे ट्रूमैन ने सोवियत से बिना पूछे ही हिरोशिमा (6 अगस्त) और नागासाकी (9 अगस्त) पर अणुबम गिरा दिया। जब जापान की पराजय निश्चित थी, तो ऐसे नरसंहारी अस्त्र का दो बडे-बडे नगरों की साधारण जनता पर गिराना यही बतलाता है कि साम्राज्यवाद कहाँ तक आततायी बन सकता है। साथ ही, जनता के हितो की परवाह न करते हुए, उसने सोवियत के विरुद्ध शीत युद्ध आरभ भी कर दिया। उसी समय दोनों शहरो मे स्त्री बच्चा बूढ़ो सहित पचास पचास हजार आदमी काल के गाल में चले गये और कुछ ही महीनों बाद उतनी ही सख्या मे और भी आदमी बुरी तौर पर मरे। इस आततायीपन को मानवता और जापानी भी कभी नही भूल सकते। क्या ट्रूमैन और चर्चिल हिटलर के विरुद्ध भी अणुबम का प्रयोग कर सकते थे ? हरगिज नही, क्योकि वह जानते थे कि ऐसा करने पर हिटलर के उडन्तू बम भारी परिमाण मे विषैली गैसो और कीटाणुओ को इग्लैंड पर गिरायेंगे, जिससे लन्दन जैसे शहरो मे कोई रोने वाला भी नही बच पायेगा।

अन्त में 2 सितम्बर, 1945 को जापानी सेना ने भी बिना शर्त के आत्म समर्पण कर दिया।

इस समय भी स्तालिन ने शांति पर ही जोर दिया और रेडियो द्वारा घोषित किया :

> "अब से हम अपने देश को पश्चिम मे जर्मन और पूर्व में जापान के आक्रमण के भय में मुक्त समझ सकते है। सारी दुनिया के लोगो के लिए चिरप्रतीक्षित विजय आज आ गई है।"

10

महामानव (सन् 1945-53)

1. पुनर्निर्माण : युद्ध के समय सोवियत समाजवादी व्यवस्था ने अपने को पूँजीवादी व्यवस्था से कही श्रेष्ठ साबित कर दिया था। स्तालिन के शब्दो मे

> "युद्ध के तजर्बे ने सिद्ध कर दिया है कि सोवियत व्यवस्था केवल शातिपूर्ण निर्माण के समय ही देश के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के सगठन के लिए सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था नही है, बल्कि युद्ध के समय शत्रु के साथ प्रतिरोध करने के लिए, जनता की सारी शक्ति को सचालित करने के लिए भी यही सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था है। अक्तूबर-क्रांति से उत्पन्न समाजवादी व्यवस्था ने हमारे लोगो और हमारी सेनाओं को बल प्रदान कर महान और अजेय बना दिया है।"

कृषि के हथियारों, उपयोगी पशुओं तथा दूसरे साधनों का इतने भारी परिमाण में नष्ट होना और 70 लाख नर-नारियो का युद्ध मे मारा जाना तथा 2 करोड़ का हताहत होना बतलाता है कि सोवियत भूमि को यह विजय कितनी महँगी पडी थी। युद्ध के कारण, परती पड गई करोडो एकड जमीन जोतने के लिए आदमियों का अकाल था। अगर वैयक्तिक खेती का बोलबाला होता तो देहात के पुनर्वास मे एक युग लग जाता, लेकिन सोवियत में पचायती खेती की व्यवस्था थी। नई मशीनो की सहायता से उजडे गॉवो को आबाद करने के लिए सामूहिक श्रम तैयार था। जैसे-जैसे युद्ध की आवश्यकताएँ कम हुई, वैसे ही वैसे युद्ध के लिए माल तैयार करनेवाले कारखाने अब शान्ति के समय के उपयोग की चीजो को पैदा करने मे लग गये और पुनर्निर्माण का काम और जोरो से चल पडा।

इसके लिए चतुर्थ पचवार्षिक योजना तैयार की गई, जिसके बारे मे स्तालिन ने 9 फरवरी, 1946 को अपने निर्वाचन-क्षेत्र मॉस्को के वोटरो के सामने भाषण करते हुए कहा था कि इसका लक्ष्य टूटे-फूटे की मरम्मत करना ही नही, बल्कि अपने देश के उद्योग तथा कृषि-सम्बन्धी उपज को युद्धपूर्व के तल से भी आगे बढ़ाना है। अन्त मे 18 मार्च, 1946 को महासोवियत (पार्लामेण्ट) ने चतुर्थ पचवार्षिक योजना (सन 1946-50) को स्वीकृति दी। इसके सम्बन्ध मे पार्लामेन्ट मे भाषण देते हुए, योजना-कमीशन के अध्यक्ष ने कहा था :

> "...हमारी पचवार्षिक योजना का लक्ष्य है—वर्गहीन समाजवादी समाज का निर्माण और देश को क्रमशः आर्थिक समाजवाद मे परिवर्तित करना। उसका लक्ष्य है—सोवियत सघ के मूलभूत आर्थिक कर्तव्य को पूरा करना, यानी प्रधान पूँजीवादी देशो के, वहाँ की जनसख्या के प्रतिपुरुष औद्योगिक उत्पादन के, तल पर पहुँचना ही नही बल्कि आगे बढ जाना। सोवियत सघ की कृषि और कल कारखानों–राष्ट्रीय अर्थनीति–की पुनःस्थापना की यह पचवार्षिक योजना उक्त दिशा मे एक और कदम है। हमारा झडा मार्क्स एगेल्स-लेनिन-स्तालिन के वैज्ञानिक साम्यवाद का झडा है। इस झडे के नीचे साम्यवाद की ओर बढते हुए, हम नई विजय प्राप्त करेंगे।"

प्रकृति का कायाकल्प

लेकिन, युद्धोत्तर पचवार्षिक योजना के चार वर्षों और तीन महीनो म ही पूरी हो जाने से, युद्ध से विध्वस्त सोवियत के पश्चिमी भाग के पुनर्निर्माण से ही स्तालिन सतुष्ट नही थे। उनकी निगाहे समय के क्षितिज पर दूर कम्युनिस्ट समाज के उदय पर लगी हुई थी, उनका मस्तिष्क कम्युनिस्ट समाज की स्थापना की मजिले पूरी करने का पथ निश्चित करने में और उसकी नीव मजबूत करने मे व्यस्त था। उसके लिए उत्पादन-शक्तियो और साधनो के विशालतम प्रसार की आवश्यकता थी और इस विशालतम प्रसार के लिए जरूरी था कि उत्पादन और उत्पादन के साधनो के विकास के आडे आने वाली प्राकृतिक बाधाओ पर विजय प्राप्त की जायें, प्रकृति के नियमो का मानवता के हित मे उपयोग किया जाये और उनसे शक्ति हासिल की जायें, इसी शक्ति से प्रकृति का कायाकल्प किया जाये।

यह विचार एकदम नया नही था। विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ, जैसे-जैसे मानव कुदरत के नियमों से परिचित होता आया है, वैसे-वैसे इन्ही नियमो के उपयोग के द्वारा प्रकृति का कायाकल्प करने की उसकी कल्पनाओ मे रग भरते चले गये है, उनमे वास्तविकता आती गई है। लेकिन सदैव ही, समाज की वर्ग-व्यवस्था और शासक-वर्गो के यथार्थ उनके विकास पर एक बेडी बनते रहे हैं। आज अमरीका का शासक वर्ग जैसे वैज्ञानिको को मौत की कुर्सियो पर बैठा रहा है, बुद्धिजीवियो और लेखको को अपना शिकार बना रहा है और समाज के निर्माण की जगह विश्व-सहार की योजनाएँ बनाकर मानव सभ्यता और सस्कृति का दुश्मन बन गया है, इसी प्रकार हर एक शासक-वर्ग एक समय मौत के पजे की तरह अपने समकालीन समाज पर जकड़ता रहा है। इसीलिए, मानवता के इन सपनो को मूर्त रूप देने के लिए सबसे पहला महान काम था—वर्ग-शोषणहीन समाजवादी राज्य की स्थापना। लेनिन और स्तालिन के नेतृत्व मे इसे सम्पन्न किया जा चुका था। स्तालिन के नेतृत्व मे इस समाजवादी राज्य को सुदृढ बना लिया गया था। वह जमीन तैयार हो चुकी थी और अब

प्रश्न था—मानवता के उन चिरपोषित सपनों को मूर्त रूप देने का। यह एक नया और युगान्तरकारी कदम था। स्तालिन इसी की योजना बनाने में व्यस्त थे।

2. युगान्तरकारी महान् निर्माण-योजनाएँ : अठारहवीं सदी के अन्त में, एक रूसी इंजीनियर ग्लूखोवस्की ने जार के सामने दो योजनाएँ रखी थी। पहली योजना थी—आमूदर्या नदी को उजबोई नदी की नहर से मिलाकर, कास्पियन सागर की ओर मोड़ देने की। दूसरी योजना थी—बालतिक, कास्पियन और अरल सागरों को एक-दूसरे से सम्बद्ध कर देने की। अलेक्सान्द्र बोईकोफ ने कहा था कि रेगिस्तानों की सिंचाई करके मनुष्य पेड़-पौधे उगा सकता है, फसलों की पैदावार बढ़ा सकता है। वासिली दोकुचायेफ ने नदियों के बहाव की दिशा बदलकर, उसकी नमी का उपयोग करने की योजना रखी थी। जनता की उन दिनों यह धारणा बन गई थी कि हर तीन सालो के बाद एक सूखा पडता ही है। इसके विरुद्ध, क्लीमैंत तिमिरियाजेफ ने गेहूँ की एक बाल की जगह दो बालें उपजाने की एक योजना रखी थी। इवान मिचूरिन ने कहा था : "हम प्रकृति की कृपा पर निर्भर नहीं रह सकते, उसे हमें प्रकृति के हाथों से छीन लेना चाहिए।"—और, जार ने इन सबको 'पागल स्वप्नवादी' घोषित कर दिया था, उनकी योजनाओं पर अमल करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था।

पर, स्तालिन उनके महत्त्व को जानते थे और उनको सम्पन्न करने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ भी समाजवादी समाज के रूप मे उनके नेतृत्व मे तैयार हो चुकी थी। स्तालिन ने इन योजनाओं और योजनाकारों को उचित सम्मान दिया और उनके आधार पर वैसी ही और नई योजनाओं को प्रस्तावित किया। सन् 1924 में ही, स्तालिन ने स्टेपीज के अर्द्ध-रेगिस्तानों और दक्षिण-पूर्व के रेगिस्तानों के सूखे प्रदेश की सिचाई की योजना रखते हुए, कहा था :

> "वोल्गा प्रदेश में बिलकुल स्थायी अन्नभडार के एक ऐसे आधार के बिना हम कुछ नही कर सकते, जो मौसमो की निरकुशता मे कतई स्वतत्र हो और बाजार के लिए लगभग 3,60,00,00,000 सेर अनाज की पूर्ति कर सके।"

लेनिन ने कहा था : "सोवियत शासन + सारे देश का विद्युतीकरण=कम्युनिज्म।"

सोवियत सरकार का सारा निर्माण-कार्य इसी राह पर चलकर हुआ है। सन् 1950 में, मन्त्रियों की कौन्सिल ने पाँच विशालतम पन-बिजली के केन्द्र बनाने का फैसला लिया था। इन केन्द्रों का निर्माण सन् '57 तक पूरा होने की योजना है। इनके अलावा, प्रकृति के कायाकल्प के लिए सिंचाई और कृत्रिम वनों की पेटियो की योजनाएँ भी बनाई गई।

वोल्गा पन-बिजली-शक्ति केन्द्र

वोल्गा यूरोप की सबसे बडी नदी है। उसका महत्त्व सोवियत सघ के लिए उतना ही है, जितना कि हमारी सभ्यता के विकास मे गगा का। सदियों से वहाँ की जनता वोल्गा का पूरा-पूरा उपयोग करने का स्वप्न देख रही थी। पर, वह समाजवादी समाज में ही, स्तालिन के नेतृत्व मे ही सम्भव हो सका है।

इस योजना के अन्तर्गत दो पन-बिजली-शक्ति केन्द्र बनेंगे। पहला—कुई विशेफ पन-बिजली-केन्द्र और दूसरा, स्तालिनग्राद केन्द्र होगा। इन दोनो के फलस्वरूप, मॉस्को को लगभग 10 अरब किलोवाट बिजली मिलेगी और मॉस्को ससार का सबसे बडा बिजली-शक्ति का केन्द्र बन जायेगा। दोनो केन्द्रों मे लगभग 20 अरब किलोवाट बिजली बनेगी, जिसमे से बाकी 10 अरब कुई विशेफ प्रदेश के औद्योगीकरण तथा मध्य वोल्गा प्रदेश की सिंचाई के काम आयेगी। इसी योजना के अन्तर्गत वोल्गा और उराल पर्वत के बीच 508 मील लम्बी मुख्य नहर और 2,812 मील लम्बी एक-दूसरे को मिलानेवाली अगल-बगल की छोटी-छोटी नहरे बनेंगी।

इसके फलस्वरूप, अर्द्ध-रेगिस्तानी और रेगिस्तानी सूखे प्रदेशों की जलवायु ही बदल जायेगी। लगभग 40,00,000 एकड खेतों और 3,00,00,000 एकड चरागाहो को पानी मिलेगा। इस सिंचाई के द्वारा अस्त्राखान प्रदेश मे लगभग 56 लाख मन कपास, 16 करोड 80 लाख मन गेहूँ और 22 करोड़ 40 लाख मन भूसा उपजेगा। स्टेपीज मे 20-25 गुनी अधिक घास पैदा होने लगेगी। कास्पियन सागर के उत्तरी भाग में रेगिस्तानी रेत का

हमला रुक जायेगा। इसका असर पूरी अर्थ-व्यवस्था और भौगोलिक परिस्थिति पर पड़ेगा। आज रेलों के यातायात से जितना माल एक जगह से दूसरी जगह जा पाता है, उसका लगभग 40 गुना माल इन जलमार्गों से आ-जा सकेगा। अकूत श्रमशक्ति, कोयले और यातायात पर होनेवाले खर्च की बचत होगी।

तुर्कमान नहर

आमू दर्या मध्य एशिया की सबसे बडी नदी है। यह पामीर और हिन्दूकुश की पर्वत-श्रेणियो मे बहती है। सदियो से यहाँ के लोग इस नदी का उपयोग करने की सोचते थे, परन्तु यह एक बडी अनियत्रित और वेगमती नदी है। यदि मोटे तौर पर हिसाब लगाया जाये तो इसका लगभग 80 लाख वर्गगज जल व्यर्थ ही समुद्र में पहुँच गया है और उसी के किनारे सदियो से लोग सूखे और अनावृष्टि के कारण भूखो मरते रहे हैं।

स्तालिन की प्रेरणा और नेतृत्व के कारण, इस पर नहर बनाने की योजना कार्यान्वित की गई है। यह नहरें लगभग 467 से 533 वर्गगज जल काराकुम और तुर्कमान के दक्षिणी रेगिस्तानो मे ले जायेगी। इनके कारण, रेगिस्तानों मे नखलिस्तान बनने लगेगे और लगभग 30,00,000 एकड की फसलों को पानी मिल सकेगा। कपास की पैदावार 7-8 गुनी बढ जायेगी। वही फलो की पैदावार होने लगेगी। रेशम के कीडे पाले जा सकेगे। लगभग 1,70,00,000 एकड चरागाहो की सिचाई हो सकेगी। खेतिहर जानवरो की सख्या दुगुनी हो जायेगी। लगभग 13,00,000 एकड के क्षेत्र मे हरियाली की ऐसी पंटियाँ बन जायेगी, जो रेगिस्तानो से आनेवाली गर्म हवाओं और रेत को रोककर खेती की रक्षा करेगी। सूती कपडे की मिलो की सालाना पैदावार लगभग 5 करोड 60 लाख मन हो जायेगी। वनस्पतियो के तेल का परिमाण 11-12 गुना बढ जायेगा। यातयात की सुविधा हो जायगी।

लम्बाई मे इस नहर की तुलना, चीन की विशालतम नहर को छोडकर, ससार की और किसी नहर से नही की जा सकती।

उक्रइन और क्रीमिया मे स्तालिनी योजनाएं

बोरिस मार्गुनकोफ ने लगभग चालीस वर्षों पहले जार के सामने नीपर नदी के पानी को सिचाई के काम मे लाने की योजना रखी थी। लेकिन, उसे स्तालिन के नेतृत्व में ही कार्यरूप मे परिणत किया जा सका है। इसका निर्माण-कार्य सन 1951 मे शुरू हुआ है और 1956 में समाप्त होगा।

इस योजना के अन्तर्गत दो विशाल बाँध, पानी के नियत्रण के लिए दो 'लॉक' और एक पन-बिजली-शक्ति-केन्द्र बनेगा। बाँधों में क्रमशः 19,00,00,00,000 और 8,00,00,00,000 वर्गगज पानी जमा रखने का इन्तिजाम होगा। पन बिजली केन्द्र मे लगभग 1 अरब 20 करोड किलावाट विद्युत शक्ति उपलब्ध होगी। लगभग 40 लाख एकड जमीन की सिचाई हो सकेगी। कपास की पैदावार 5-6 गुनी बढ जायेगी। उक्रइन और क्रीमिया दोनो मिलाकर कुल 22 करोड 40 लाख मन कपास, 5 करोड 60 लाख मन गेहूं और लगभग 11 करोड 20 लाख मन भूसा आज से अधिक पैदा कर सकेगे। खेतो की रेगिस्तानो की रेतो मे रक्षा करके, काली भूमि की उपज शक्ति बढाई जा सकेगी।

इनके बनाने में स्वेज नहर से लगभग 4 गुनी अधिक भूमि को खोदना पडेगा।

जहाजरानी का वोल्गा-दोन जल-मार्ग

इसका निर्माण-कार्य युद्ध से पहले ही आरम्भ कर दिया गया था। फिर युद्ध के बाद सन 1947 से शुरू कर दिया गया था। सन 1952 की बसत मे नियत अवधि से दो वर्षों पहले ही वह पूरी हो चुकी है।

इसके अन्तर्गत सोवियत की दो सबसे बडी नदियां–वोल्गा और दोन–को एक विशाल नहर के जरिये मिलाया गया है। इसके द्वारा सोवियत सघ के यूरोपीय हिस्से के सभी समुद्र–श्वेत, बाल्तिक, कास्पियन, अजोव और काला सागर–एक-दूसरे से सम्बन्धित हो गये हैं। यह एक इतना बडा जल-मार्ग बन गया है कि 'कृत्रिम

समुद्र' कहा जाने लगा है। इसमें बड़े-बड़े जहाज चल सकते हैं और इसी को सुगम बनाने के लिए, इसमें 13 लॉक और 3 बाँध बाँधे गये हैं।

सोवियत संघ के यूरोपीय हिस्से के यातायात की ये सभी समस्याएँ सुलझा देता है। इसके द्वारा लगभग 15,00,000 एकड़ अर्द्ध-रेगिस्तानी खित्तों की सिंचाई होगी, लगभग 40,00,000 एकड़ चरागाहों को पानी पहुँचेगा। सभी ओर यथेष्ट मात्रा में पानी उपलब्ध होगा। सभी को सस्ती बिजली मिल सकेगी।

यह आधुनिक युग का विशालतम निर्माण है। यह वोल्गा प्रदेश की प्राकृतिक-भौगोलिक परिस्थिति में एक आधारभूत परिवर्तन ला देगा। वहाँ की जलवायु बदल देगा।

वृहत्तम वनीय क्षेत्रों की योजना

स्तालिन की यह महानतम योजना सुनने में ऐसी लगती है, जैसे कोई दंतकथा हो !—सचमुच महान् स्तालिन ने मानव जाति के सामने कितनी विशाल सम्भावनाओं के द्वार खोल दिए हैं, उन्हें कार्यरूप में परिणत भी कर दिया है। स्तालिन की यह योजना है : राज्य की ओर से कृत्रिम जंगलों की आठ अत्यंत विशाल पेटियाँ उगाई जायें, जिनका प्रसार पूरे देश में हजारों मीलों तक आर-पार फैला हुआ हो।

इनमें से प्रत्येक पेटी 22 गज चौड़ी और 12½ लाख मील लम्बी होगी। इनका कुल क्षेत्रफल 1,20,00,000 एकड़ से भी ज्यादा होगा। इन पेटियों में पानी इकट्ठा रखने के लिए बड़ी-बड़ी नहरें बनाई जायेंगी। यह नहरें इतनी बड़ी होंगी कि इनके द्वारा यातायात भी हो सके। प्रदेशों की आवश्यकता के अनुसार ही, इन जंगलों में बोने के लिए पेड़ों की किस्मों का चुनाव किया जायेगा।

इनसे कल्पनातीत लाभ होंगे। फसल बोने के त्रावोपालीय नियम के अनुसार एक निश्चित क्रम में फसलें बोने के कारण, जमीन की ऊपरी परत अधिक उर्वर हो जायेगी। जमीन में नमी भी बढ़ जायेगी। रेगिस्तानों से आनेवाली गर्म हवा और रेत से जमीन की रक्षा हो सकेगी। हवा की निचली पर्तों की शुष्कता कम हो जायेगी और उसका तापक्रम कभी भी 60 या 70 अंश सेंटीग्रेड से ज्यादा नहीं हो सकेगा। हवा की नमी में रहनेवाली ऑक्सीजन और कार्बन डाई ऑक्साईड के वर्तमान अनुपात में अन्तर आ जायेगा। ऑक्सीजन का अंश बढ़ जायेगा, मतलब यह कि जलवायु अधिक स्वास्थ्यकर हो जायगी और साथ ही कार्बन डाई-ऑक्साईड भी अधिक बनने लगेगी; क्योंकि हम सभी जानते हैं कि पेड़-पौधों के हरे पत्ते ही उसका निर्माण करते हैं।

और, इसकी सबसे प्रमुख बात यह है कि स्तालिन की यह योजना उस समस्या का भी समाधान करती है जिसका हल ढूँढ़ने में आज संसार के वैज्ञानिक जुटे हुए हैं। वह समस्या है—सूर्य के अकूत भंडार से धरती को नित्य मिलनेवाली सौर-शक्ति का उपयोग। स्तालिन की योजना के अन्तर्गत उगाये गये इन विशालतम जंगलों के हरियाले प्रसार में, हरे-हरे पौधों में यह सौर शक्ति अर्जित की जायेगी और फिर, जहाँ भी आवश्यकता होगी, उसे खाद्य, ईंधन, औद्योगिक कच्चे माल आदि के रूप में प्रयुक्त किया जायेगा। इस सौर-शक्ति का सबसे महत्त्वपूर्ण उपयोग हम जान ही चुके हैं—पन बिजली शक्ति के केन्द्रों के रूप में। पानी से उत्पन्न की जानेवाली पन-बिजली-शक्ति और कुछ नहीं है, प्रकृति के द्वारा तब्दील कर दी गई सौर-शक्ति ही है, जिसका अर्जन जल कर लेता है।

इस प्रकार, महान् स्तालिन ने यह राह दिखाई है जिस पर चलकर समूची मानवता सभी प्राकृतिक शक्तियों का उपयोग अपने हित में कर सकेगी, प्रकृति का कायाकल्प कर सकेगी।

महान् योजनाओं पर एक तुलनात्मक दृष्टिपात

इन योजनाओं और इनके निर्माण-काल के ऐतिहासिक महत्त्व को, महान् स्तालिन के महामानव कहलाने के औचित्य को हम तब तक पूरी तौर पर नहीं समझ सकते, जब तक पूंजीवादी व्यवस्था के निर्माणों की तसवीर भी हमारे सामने न हो।

संक्षेप में, मानवता ने अपने पूरे इतिहास में समूची धरती के रेगिस्तानों का सिर्फ दो फीसदी भाग

ही–3,65,00,000 वर्गमील ही–खेती के काम में लगा पाया है। युद्ध, फसाद, भूमि के प्रबंध की शोषक व्यवस्थाएँ औपनिवेशिक प्रथा, दास-प्रथा आदि के फलस्वरूप हरे-भरे विशाल जनसख्याओ वाले प्रदेश भी उजड़ गये हैं, बजर पड़ गये हैं, रेगिस्तानी बनते जा रहे हैं। पूँजीवादी अर्थशास्त्री चीख रहे हैं कि रेगिस्तान एक दिन समूची धरती को लील लेगा, लीलता जा रहा है। सचमुच पूँजीवाद उसके आगे असमर्थ ही है। नतीजा सामने है कि अपने देश में जोतने योग्य जमीन का 70 फीसदी भाग बेकार पडा है। पिछले बीस सालो में, हमारी प्रति एकड जमीन की गेहूँ की पैदावार .8 से लेकर .9 तक गिर गई है। जोत की जमीन का रकवा लगभग 50,00,000 एकड कम हो गया है। प्रति वर्ष लगभग 6,00,000 आदमी भूख से मरते हैं। अकाल कभी देश से विदा नहीं होता; आज बगाल मे है, तो कल मद्रास, फिर महाराष्ट्र, फिर गुजरात मे।

इसी प्रकार, नील की घाटी की ससार-प्रसिद्ध कपास की पैदावार और किस्म भी उजाड मिश्र मे दिन-दिन गिरती ही जा रही है। अफ्रीका मे कई परित्यक्त उजाड प्रदेश पडे हुए हैं। स्वय अमरीका मे 80,00,00,000 एकड से अधिक जमीन सूखे की शिकार हो गई है। इसमे से 4,00,00,000 एकड तो पूरी तौर से बेकार हो चुकी है। उपजाऊ शक्ति 30-40 फीसदी घट गई है। लगभग 5,00,000 किसान स्वय अपने लिए भरपेट खाना जुटा सकने मे असमर्थ है। और, बूढे पूँजीवादी इग्लैण्ड मे ? टेम्स नदी की बाढो से नगरो की रक्षा नही की जा सकती। इसलिए कि बॉधो की मरम्मत नही की जा सकती, क्योकि कोष ही नही है; सब युद्ध की तैयारी पर खर्च हो जाता है।

इतना ही नही पूँजीवाद ने जो थोडा-बहुत निर्माण-कार्य कभी किया भी था उसकी रफ्तार की जरा समाजवादी निर्माण से तुलना कीजिए। नीपर पन-बिजली-केन्द्र 1,500 दिनो मे, कुई विशेफ केन्द्र 5 सालो मे, स्तालिनग्राद केन्द्र 5 सालो मे, 1,400 मील लम्बी तुर्कमान नहर 7 सालो मे, वोल्गा-दोन नहर–एक कृत्रिम समुद्र–6-7 सालो मे, जबकि नील नदी पर एक बॉध बॉधने मे 68 वर्ष, टैनेन्सी नदी की अमरीकी योजना मे 35 वर्ष, 103 मील लम्बी स्वेज नहर मे 10 वर्ष और 516 मील लम्बी पनामा नहर के बनाने मे 35 वर्ष लगे थे। समूची मानवता के इतिहास मे, जहाँ अब तक कुल लगभग 16,00,00,000 एकड भूमि की सिचाई का प्रबध किया जा सकता था, वहाँ सोवियत सघ मे महान् स्तालिन के नेतृत्व मे, 5-6 वर्षो के दौरान मे ही लगभग 5,60,00,000 एकड की सिचाई हो सकेगी।

लेकिन, इन महान् निर्माणो के लिए सबसे पहल शर्त क्या है ? विश्व शाति। अपने अन्तिम क्षणो तक महामानव स्तालिन ने शान्ति का पथ प्रकीर्ण किया और हर मौके पर जगखोरो का धूल चटाई है।

स्थायी शान्ति के अग्रदूत

साम्राज्यवादी जगबाज और उनके टुकडखोर पत्रकार, आज से नही सोवियत के जन्मकाल से ही, महान् लेनिन और स्तालिन का 'खूँखार', 'साम्राज्यवादी', 'निरकुश' आदि कहकर कीचड उछालते रहे है। आज जब युद्ध ही साम्राज्यवादियो को 'अधिकतम' मुनाफा कमाने का एकमात्र जरिया नजर आ रहा है, तब वह और भी बौखला उठे है और सोवियत सघ तथा महान स्तालिन पर लाछन लगाने की सिरतोड कोशिशे कर रहे है। परन्तु उनका प्रचार सूर्य पर थूकने के समान ही होता जा रहा है। हर मोर्चे पर वह चारो खान चित पडते जा रहे है। सारे ससार की जनता दिन-व-दिन समझती जा रही है कि महान् स्तालिन ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से ही नही, सदैव से ही जनता के लिए एक निर्माणशीला शान्ति का नारा वुलन्द किया है।

3. शान्ति का स्तालिनीय पथ : 8 नवम्बर, 1917 को सत्ता हाथ मे लेते ही, सोवियत सरकार ने जो पहला आदेश निकाला था वह शान्ति की स्थापना का ही था। सन् 1919 मे, सोवियतो की काग्रेस मे लेनिन ने घोषणा की थी : "सोवियत प्रजातत्र सभी देशो के साथ शान्तिपूर्वक रहकर अपनी सारी शक्ति घरू निर्माण पर केन्द्रित कर देना चाहता है।" एक मुलाकात के दौरान मे, उन्होने कहा था –"हम निश्चयपूर्वक अमरीका, सभी देशो, पर खास तौर पर अमरीका, के साथ आर्थिक समझदारी बढाने के पक्षपाती है।" दिसम्बर सन् 1922 मे सोवियत के वैदेशिक मन्त्री–श्चेरिन–ने कहा था : "··आज के इस ऐतिहासिक युग मे, पूँजी की पुरानी और नवजात

व्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले राष्ट्रों में *परस्पर आर्थिक सहयोग होना, संसारव्यापी आर्थिक निर्माण* **के लिए, सबसे आवश्यक है।"**

महान् स्तालिन का नेतृत्व शान्ति के इसी पथ पर आगे बढ़ता रहा है। **इसी पथ को प्रकीर्ण करता रहा है। देखिये, किस तरह उन्होंने** इसका क्रमशः विकास किया है।

दिसम्बर सन् 1927 में, पार्टी की पंद्रहवीं कांग्रेस में स्तालिन ने इसी का समर्थन करते हुए **कहा था : "पूँजीवादी देशों के साथ हमारे** सम्बन्धों का आधार है–दो विरोधी व्यवस्थाओं के एक साथ रहने **की सहमति। अमल ने इसे पक्की** तौर पर सही सिद्ध कर दिया है।"

सन् 1936 में, राय होवार्ड से भेंट करते हुए, स्तालिन ने कहा था : "अमरीकी प्रजातंत्र **और सोवियत व्यवस्था एक-दूसरे** के साथ शान्तिपूर्वक रह सकते और होड़ कर सकते हैं।"

सन् 1938-39 के अरीब-करीब, जब युद्ध की अफवाहें गर्म होने लगीं, धमकियाँ दी जाने लगीं **और सारे वातावरण में** तनातनी आ गई थी, तब स्तालिन ने संसार के सामने 'शान्ति अविभाज्य है' और 'सामूहिक सुरक्षा' **की घोषणा** की थी। सन् 1938 में, पार्टी की अठारहवीं कांग्रेस में उन्होंने सोवियत की शान्तिपूर्ण नीति की घोषणा इस प्रकार की थी : "हम शान्ति के हामी हैं। हम सभी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध दृढ़ करने के हामी हैं। हमारी यही नीति है और हम इसी नीति पर तब तक दृढ़ रहेंगे जब तक सोवियत संघ के साथ दूसरे देश इसी तरह के सम्बन्ध बनाये रखेंगे और जब तक वह हमारे देश के हितों का उल्लंघन नहीं करेंगे।"

9 फरवरी, 1946 को अपने निर्वाचकों के समक्ष बोलते हुए, उन्होंने कहा था : "यह सोचना गलत होगा कि दूसरा विश्व-युद्ध एक आकस्मिक घटना या किसी खास राजनीतिज्ञ की गलतियों का परिणाम था। निःसंदेह, गलतियाँ तो तमाम की गई थीं। पर वास्तव में, युद्ध उन संसारव्यापी और आर्थिक और राजनीतिक शक्तियों के विकास का ही लाजिमी नतीजा था, जो आधुनिक एकाधिकारवादी पूँजीवाद के आधार पर विकसित हो रही थीं।... असलियत यह है कि पूँजीवादी देशों के असमान विकास के फलस्वरूप समय-समय पर, बहुधा पूँजीवादी संसार की व्यवस्था के संतुलन में हिंसापूर्ण गड़बड़ियाँ होने लगती हैं।... इसका नतीजा होता है–पूँजीवादी संसार का दो शत्रु खेमों में बँट जाना और उनके बीच युद्ध !... इस प्रकार, पहला विश्व-युद्ध (सन् 1914-18) संसारव्यापी पूँजीवादी व्यवस्था के पहले आर्थिक संकट का परिणाम था और दूसरा विश्व-युद्ध (सन् 1939-45) उसके एक दूसरे आर्थिक संकट का।...इसका यह अर्थ नहीं है कि दूसरा विश्व-युद्ध पहले युद्ध की बिलकुल एक कापी ही था।..."

हर कदम पर वह साम्राज्यवादी युद्धखोरों का पर्दाफाश करते गये। 13 मार्च, 1946 को चर्चिल की फुल्टन स्पीच के बारे में, स्तालिन ने 'प्राव्दा' के प्रतिनिधि के उत्तर में कहा था : "मैं उसे एक खतरनाक कारनामा मानता हूँ, जिसका नियोजित अर्थ है–मित्र शक्तियों में फूट के बीज बोना और उनके सहकार्य को रोकना। ... ध्यान देने की एक बात यह है कि इस सिलसिले में मि. चर्चिल और उनके दोस्तों तथा हिटलर और उसके दोस्तों में बड़ी समानता है !... लेकिन, भीषण युद्ध के पाँच सालों के दौरान में, राष्ट्रों ने अपनी आजादी और अपनी स्वतंत्रता की खातिर ही अपना खून बहाया था, इसलिए नहीं कि हिटलरों के बजाय चर्चिलों का आधिपत्य कायम हो जाये। इसलिए, यह कतई मुमकिन है कि गैरअंग्रेजी भाषा-भाषी राष्ट्र, जो दुनिया की जनसंख्या के बहुमत में हैं, एक नई गुलामी के सामने सिर नवाने को राजी नहीं होंगे।... यह बिलकुल साफ है कि मि. चर्चिल की यह स्थिति ब्रिटेन और सोवियत संघ के बीच हुई मैत्रीपूर्ण संधि से मेल नहीं रखती।... संधि के अवधि काल के बढ़ाये जाने का कोई मतलब नहीं होता, यदि दोनों में से एक संधि का उल्लंघन करता है और उसे कोई मान्यता ही नही देता।... मै नहीं समझता कि दूसरे विश्व-युद्ध के बाद चर्चिल और उसके दोस्त लोग पूर्वी यूरोप के खिलाफ एक नया सशस्त्र प्रयाण संगठित करने में सफल हो सकेंगे या नहीं। लेकिन, यदि वह सफल भी हो गये, हालाँकि उसकी अधिक संभावना नहीं है क्योंकि लाखों-लाख साधारण मनुष्य शान्ति के हितों की रक्षा के लिए कटिबद्ध हैं, तो यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि वह कुचल दिये जायेंगे, ठीक उसी तरह जैसे वह 26 वर्षों पहले एक बार कुचल दिये गये थे।

22 मार्च, 1946 को एडी गिलमोर–एसोसियेटेड प्रेस के प्रतिनिधि–से मुलाकात करते समय राष्ट्र संघ के बारे मे उसके एक प्रश्न के उत्तर मे, स्तालिन ने कहा था : "मै सयुक्त राष्ट्र सघ को बडा महत्त्व देता हूँ, इसलिए कि वह शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा कायम रखने का एक गम्भीर साधन है।' यदि संयुक्त राष्ट्र सघ भविष्य मे भी समानता के अधिकार को कायम रखने मे सफल रहा, तो निःसदेह ही वह विश्वव्यापी शान्ति और सुरक्षा की गारटी करने मे एक बडी क्रियात्मक भूमिका अदा कर सकेगा।' 'यह जरूरी है कि जनता और राज्यो के शासक नये युद्ध के प्रचारकों के खिलाफ बडे पैमाने पर एक विरोधी प्रचार का सगठन करें, साथ ही शान्ति कायम रखने के लिए प्रयास करें...।"

एक बार फिर सोवियत सघ की वैदेशिक नीति को स्पष्ट करते हुए लाल सेना के नाम अपने 1 मई सन् 1946 के आदेश मे, स्तालिन ने कहा था . "समूचे ससार का न सिर्फ सोवियत सघ की शक्ति, बल्कि सभी जगहो की जनता की समानता की मान्यता और उनकी आजादी तथा स्वतत्र सत्ता की भावना के आदर पर आधारित सोवियत सघ की नीति की विशेषता देखने और समझने का एक मौका मिल चुका है। अब इसमे सदेह करने की कोई गुजाइश ही नही है कि भविष्य मे भी सोवियत सघ अपनी नीति–शान्ति और सुरक्षा की नीति, तमाम जनता की समानता और मित्रता की नीति–के प्रति वफादार रहेगा।"

24 सितम्बर, 1946 को 'लदन सडे टाइम्स' के सम्वाददाता एलेक्जेण्डर वर्थ ने उनसे 'नये युद्ध' के खतरे के बारे मे कुछ सवाल किए थे। स्तालिन ने परिस्थिति का गहरा विवेचन करते हुए, पूरी समस्या का एक एक धागा अलग-अलग निकालकर रख दिया था "मै एक 'नये युद्ध' के वास्तविक खतरे मे यकीन नही करता। जो भी 'नये युद्ध' के बारे म शोरगुल मचा रहे है, उनमे कुछ सैनिक-राजनीतिक गुप्तचर और नागरिको मे से कुछ उनके पिछलग्गू है।" उनको इस शोरगुल की जरूरत इसलिए थी कि कुछ अपने दलाल दूसरे देशो के शासकों को भडकाकर अपने देश के शासकों के लिए भारी सुविधाएँ प्राप्त करने, युद्धकालीन बजट को कायम रखने और फौजों को भग न करके बेकारी न फैलने देने मे उन्हे इससे सहायता मिलती है। आगे चलकर, स्तालिन ने और भी स्पष्टतया कहा था कि आज जो युद्ध के बारे मे शोरगुल हो रहा है, उसमे और 'नये युद्ध' के एक वास्तविक खतरे मे जो आज नही है, साफ फर्क करना चाहिए। उसी मुलाकात मे, उन्होंने एटम बम के बारे म कहा था "कुछ राजनीतिज्ञ जानबूझकर भी एटम बम का जितनी अहम् शक्ति सोचते है, मै उसमे यकीन नही करता। एटम बम दुर्बल हृदयो को धमकाने के मतलब के है, लेकिन वे युद्ध का परिणाम निश्चित नही कर सकते। एटम बम इसके लिए नाकाफी है। हाँ, एटम बम के रहस्य का एकाधिकारी स्वामित्व एक धमकी अवश्य पैदा करता है, लेकिन उसके खिलाफ भी दो इलाज मौजूद है–(अ) एटम बम का एकाधिकारी स्वामित्व अधिक दिनो तक नही रह सकता, (ब) एटम बम का प्रयोग निषिद्ध कर दिया जायेगा।"

और, महान स्तालिन ने फिर दृढ विश्वास से घोषित किया था : "मै सहयोग की शान्तिपूर्ण सम्भावनाओं मे सदेह नही करता। कम होने के बजाय, वह बढ भी सकती है। 'एक देश मे कम्युनिज्म' कतई मुमकिन है, खास तौर पर सोवियत सघ जैसे देश मे।"

28 अक्तूबर, 1946 को 'यूनाइटेड प्रेस' के अध्यक्ष ह्यू बेली से स्तालिन ने कहा था कि अणु-शक्ति को नियत्रित करने का सबसे अच्छा तरीका है–"अन्तर्राष्ट्रीय नियत्रण और यह जरूरी भी है।"

21 दिसम्बर, 1946 को अमरीकी प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट के पुत्र इलियट रूजवेल्ट के प्रश्नों के उत्तर मे, कहा था : "हाँ, कतई। यह (दोनो व्यवस्थाओ का शान्तिपूर्वक रहना) सम्भव ही नही है, बुद्धिमत्तापूर्ण भी है और हासिल भी किया जा सकता है। युद्ध के कई दिनो मे सरकारो के बीच के भेदो ने हमारे दोनों राष्ट्रों के एक-दूसरे से मिलकर अपने दुश्मन को शिकस्त देने म कोई रुकावट नही डाली। इसलिए, अब मैं सोचता हूँ कि एक ही नही, कई मीटिंग (तीन बडो की) होनी चाहिए। उनमे बडा लाभ होगा। विश्व के व्यापार का प्रसार हमारे दोनों देशों के बीच अच्छे सम्बन्धो के विकास के लिए कई क्षेत्रों मे हितकारक होगा।..."

9 अप्रैल, 1947 को हैरोल्ड स्टासेन से मुलाकात के दौरान मे, स्तालिन ने कहा था : "जहाँ तक सहयोग का सवाल है, उनके (दोनों व्यवस्थाओं के) बीच का फर्क महत्त्वपूर्ण नही है। जर्मनी और अमरीका की आर्थिक

व्यवस्थाएँ समान ही थीं, फिर भी दोनों में लड़ाई ठन गई थी। अमरीका और सोवियत संघ की व्यवस्थाएँ भिन्न-भिन्न हैं, फिर भी दोनों ने एक-दूसरे के खिलाफ लड़ाई नहीं छेड़ी; और सोवियत संघ उसका कोई इरादा भी नहीं रखता।··· सहयोग की संभावना तो हमेशा ही रहती है,· लेकिन सहयोग करने की इच्छा हमेशा मौजूद नहीं रहती। यदि एक पक्ष सहयोग करने की इच्छा नहीं रखता तो नतीजा होगा—टकराव, युद्ध।··· हम अपनी व्यवस्थाओं की परस्पर आलोचना न करे। प्रत्येक को यह अधिकार है कि वह जो भी व्यवस्था चाहे, कायम रखे। कौन-सी अच्छी है, यह इतिहास बता देगा। हमें जनता द्वारा चुनी हुई व्यवस्थाओं की इज्जत करनी चाहिए। ··· हमें इस ऐतिहासिक सत्य से बात शुरू करनी चाहिए कि ससार में जनता द्वारा समर्थित दो व्यवस्थाएँ हैं। सिर्फ इसी बिना पर सहयोग सम्भव है।"

17 मई, 1948 को हैनरी वालेस की खुली चिट्ठी के जवाब में, उन्होने फिर घोषित किया : "सोवियत संघ की सरकार का यह यकीन है कि आर्थिक व्यवस्थाओं और सैद्धान्तिक फर्कों के बावजूद इन दोनों व्यवस्थाओं का एक साथ रहना और सोवियत संघ तथा अमरीका के बीच के मतभेदों का शान्तिपूर्वक निपटारा करना सम्भव ही नहीं, बल्कि विश्वव्यापी शान्ति के हित मे परम आवश्यक भी है।"

27 जनवरी, 1949 को 'इंटरनेशनल न्यूज सर्विस' के प्रतिनिधि किंगसबरी स्मिथ के साथ मुलाकात में, कहा था : "सोवियत सरकार एक ऐसी घोषणा निकालने के बारे मे विचार करने को तैयार है (कि अमरीका और सोवियत सघ दोनों एक-दूसरे के खिलाफ युद्ध नहीं छेड़ना चाहते)··· स्वभावतः, सोवियत संघ की सरकार ऐसे शान्ति समझौते को कार्यान्वित करने के लिए कदम उठाने मे अमरीकी सरकार के साथ सहयोग कर सकती है, जिसके द्वारा धीरे-धीरे निशस्त्रीकरण हो सके।··(तीन बड़ों की) मीटिंग के लिए, मै पहले ही कह चुका हूँ, कोई आपत्ति नहीं है।"

इस प्रकार, स्तालिन सदैव ही शान्ति का हाथ बढ़ाते रहे, पर साम्राज्यवादियों ने तीसरा विश्व-युद्ध छेड़ने के लिए सोवियत संघ के सामने हर प्रकार के उकसावे पेश किये, मैत्रीपूर्ण सधियों को तोड़ा, गन्दा और भ्रामक विचार किया, शान्ति को खतरे मे डालने के लिए ही शान्ति की बाते चलाने का पाखड किया। पर स्तालिनीय पथ, चाहे वह समाजवाद के निर्माण का हो या विश्व-शान्ति का, सदैव ही आम जनता के लिए, आम जनता को ध्यान मे रखकर ही तय किया जाता है; चन्द सिरफिरे निहित स्वार्थो के दलाल शासको या बुद्धिजीवियों के कुछ करने या न करने पर इसका दारोमदार नहीं रहता। वह किसी राज्य के चन्द शासकों के चेहरो और उनकी वक्तृताओं में उस राज्य की नीति नहीं ढूँढा करते थे। उनकी अद्वितीय मार्क्सवादी दृष्टि से कुछ भी छिपा नहीं रहता था। वह सिखाते थे कि जनता की शक्ति अजेय है और जिस काम को जनता अपने हाथो में ले लेती है उसे सम्भव होने से ब्रह्मा भी नहीं रोक सकता।

इसीलिए 16 फरवरी, 1951 को 'प्राव्दा' के प्रतिनिधि के प्रश्नो का उत्तर देते हुए, उन्होने कहा था : " नहीं! कम से कम मौजूदा समय के लिए तो नया विश्व-युद्ध अवश्यम्भावी नहीं माना जा सकता।···यह सही है कि अमरीका में ब्रिटेन मे और फ्रांस में भी आक्रमणकारी शक्तियाँ हैं, जो नये युद्ध की पिपासित हैं। उनको अतिरिक्त मुनाफों के लिए, दूसरे देशों को लूटने-खसोटने के लिए युद्ध की जरूरत है।··· वे, यही आक्रमणकारी शक्तियाँ, प्रतिक्रियावादी सरकारो पर कब्जा जमाये रहती है और उनको चलाती हैं। पर साथ ही, वे अपनी उस जनता से खौफ खाती है, जो एक नया युद्ध नहीं चाहती और शान्ति की रक्षा के पक्ष में है। इसीलिए, जनता को झूठ में जकड़ देने के लिए, वे उसको धोखा देने के लिए और नये युद्ध को रक्षणात्मक तथा शान्ति-प्रेमी देशों की शान्तिपूर्ण नीति को आक्रमणकारी बताने के लिए, प्रतिक्रियावादी सरकारों का उपयोग करने की कोशिश कर रहे हैं।···

" इन आक्रमणकारी और शान्ति-प्रेमी शक्तियों के बीच चलनेवाले इस सघर्ष का फल क्या होगा ? यदि तमाम जनता शान्ति की रक्षा के ध्येय को अपने हाथो मे ले लेगी और अन्त तक उसकी रक्षा करेगी, तो शान्ति कायम रहेगी और सुदृढ़ होगी। यदि जंगबाज आम जनता को झुठलाने, धोखा देने और नये युद्ध में खींच लाने मे सफल हो जाते है तभी युद्ध अवश्यम्भावी बन सकता है।

" इसीलिए, जंगबाजों की मुजरिमाना साजिशों का भडाफोड़ करने तथा शान्ति की रक्षा करने के लिए, आज एक विशाल आन्दोलन की परम आवश्यकता है। "

यही नहीं, शान्ति आन्दोलन के बीच उठनेवाली भ्रान्तियों को भी स्तालिन ने नजरअन्दाज नहीं किया। 1 फरवरी, 1952 को उन्होने अपनी अन्तिम महान् पुस्तक 'सोवियत संघ मे समाजवाद की आर्थिक समस्याएँ' (पृष्ठ 39) में शान्ति आन्दोलन के क्षेत्र और ध्येय को पूरी तौर से स्पष्ट कर दिया था : "... इससे नतीजा निकलता है कि पूँजीवादी देशों के बीच युद्धो की अनिवार्यता कायम रहती है। कहा जाता है कि लेनिन की इस स्थापना को, कि साम्राज्यवाद लाजिमी तौर से युद्ध को जन्म देता है, अब पुरानी पड़ चुकी समझना चाहिए; क्योंकि शान्ति की रक्षा के लिए और नये विश्वयुद्ध के खिलाफ ताकतवर जन-शक्तियाँ सामने आ चुकी हैं। यह सत्य नहीं है।

" मौजूदा शान्ति-आन्दोलन का उद्देश्य है कि शान्ति की हिफाजत के लिए नये विश्व-युद्ध को रोकने के लिए, आम जनता को जगाया जायं। इसलिए, इस आन्दोलन का उद्देश्य पूँजीवाद को खत्म करना नहीं है—वह अपने को शान्ति कायम रखने के जनवादी लक्ष्य तक सीमित रखता है। इस लिहाज से मौजूदा शान्ति आन्दोलन पहले महायुद्ध के वक्त साम्राज्यवादी युद्ध को गृह-युद्ध में बदलने के लिए चलाये गये आन्दोलन से भिन्न है, क्योंकि वह आन्दोलन और आगे बढ़ा था और समाजवादी उद्देश्यों को लेकर चला था।

" यह मुमकिन है कि परिस्थितियों के किसी निश्चित योग मे, शान्ति के लिए संघर्ष जहाँ तहाँ समाजवाद के लिए संघर्ष में विकसित हो जाय। लेकिन, तब वह आज का शान्ति आन्दोलन न रह जायगा; वह पूँजीवाद को परास्त करने का आन्दोलन होगा। जिस बात की सबसे ज्यादा सम्भावना है, वह यह है कि मौजूदा शान्ति-आन्दोलन, शान्ति की रक्षा के लिए एक आन्दोलन की हैसियत से, अगर वह कामयाब होगा, तो किसी खास लड़ाई को रोक लेगा, उसे अस्थायी रूप मे मुल्तवी करा देगा, अस्थायी रूप से किसी खास शान्ति को कायम रखेगा, किसी जंगबाज सरकार को पदच्युत कराके उसकी जगह दूसरी सरकार बिठा देगा, जो अस्थायी रूप में शान्ति कायम रखने के लिए तैयार हो। अवश्य ही, यह अच्छा होगा। बल्कि बहुत अच्छा होगा। लेकिन तो भी, आम तौर से पूँजीवादी देशों के बीच युद्धों की अनिवार्यता खत्म करने के लिए वह काफी न होगा। वह इसलिए काफी न होगा कि शान्ति आन्दोलन की तमाम सफलताओं के बावजूद साम्राज्यवाद कायम रहेगा, चालू रहेगा—और फलतः युद्धों की अनिवार्यता भी बनी रहेगी।

" युद्ध की अनिवार्यता को खत्म करने के लिए, यह जरूरी है कि साम्राज्यवाद को ही खत्म कर दिया जाय। "

इस तरह महान स्तालिन ने शान्ति के विरुद्ध चलनेवाले साम्राज्यवादी जंगखोरों के कुत्सित प्रचार का सदैव के लिए क्रियाकर्म कर दिया। इस तरह महान स्तालिन ने नेक इरादोंवाले समूचे मानवों के लिए शान्ति-आन्दोलन के द्वार खोल दिये और शान्ति-आन्दोलन की सम्भावना तथा उसकी व्यापकता का अधिकतम विकास कर दिया है। यह बिलकुल स्पष्ट कर दिया है कि दोनों व्यवस्थाओं का शान्तिपूर्वक एक साथ रहना मानवता के हित में है।

शान्ति-प्रयत्नों का समर्थन

इतना ही नही, समूची मानव जाति के लिए शान्ति के सिद्धान्तो का विकास करने और उसको सुदृढ़ बनाने के लिए अनथक प्रयास करने के साथ ही साथ, जहाँ-जहाँ, जब-जब भी शान्ति की स्थापना के लिए किसी ने प्रयत्न किया, तो उसे महान स्तालिन ने आगे बढ़कर अपना समर्थन भी दिया।

13 अक्तूबर, 1949 को उन्होंने जर्मन जनतांत्रिक प्रजातंत्र के अध्यक्ष और प्रधानमंत्री को बधाई भेजते हुए, कहा था : "... इस प्रकार एक संयुक्त, जनतांत्रिक और शान्ति-प्रेमी जर्मनी की नीव डाल कर, आप साथ ही साथ सारे यूरोप के लिए एक बड़ा कार्य कर रहे है—उसकी स्थायी शान्ति की गारंटी कर रहे हैं। इस नये और वैभवशाली पथ पर, मै आपकी सफलता की कामना करता हूँ।"

15 जुलाई, 1950 को उन्होंने अपने देश के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को कोरिया में शान्ति की स्थापना के लिए उनके प्रयत्नों पर बधाई भेजी थी : "शान्ति के लिए आपकी पहल का मैं स्वागत करता हूँ।..."

1 अक्तूबर, 1951 को उन्होंने अध्यक्ष माओ त्से-तुग को चीनी जनतत्र की वर्षगाँठ पर अभिनन्दन भेजते हुए, कहा था : "...चीन के जनवादी जनतंत्र और सोवियत सघ की महान् मित्रता एक ऐसी मित्रता हो जो सुदूर पूर्व में शान्ति और सुरक्षा की सुदृढ़ गारन्टी बने; और यह दृढतर ही होती जाय !"

शान्ति पुरस्कार

इस समर्थन के साथ ही साथ महान् स्तालिन के शान्ति-प्रयत्नों के सम्मान में उनकी 70वी वर्षगाँठ से. सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्ष-मडल ने 20 दिसम्बर, 1949 को "राज्यो के बीच शान्ति सुदृढ करने के लिए, अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार" देना शुरू किए है।

हर साल 5 से लेकर 10 तक पुरस्कार दिए जाते है। यह बिना किसी भेदभाव के, ससार के किसी भी नागरिक को मिल सकते है, जिसने भी ससार में शान्ति की सुरक्षा और स्थापना के लिए बहुमूल्य काम किया हो। पुरस्कार-विजेता को एक उपाधि-पत्र स्तालिन के चित्र से अंकित एक स्वर्ण का तमगा और एक लाख रूबल का नकद इनाम दिया जाता है।

अभी तक जिनको यह पुरस्कार मिल चुके है, उनके नाम इस प्रकार है : सन् 1950 मे–फ्रेडरिक जोलियो क्यूरी (वैज्ञानिक, फ्रास), मादाम सन यात सेन (चीन), ह्यूलेट जॉनसन–डीन ऑफ कैन्टरबरी (इंग्लैड), यूजेन कॉटन (फ्रांस) विशप आर्थर मोल्टन (अमरीका), पाक देन एइ (कोरिया) और हैरीबेरितो जारा (मैक्सिको); सन् 1951 मे–को मोजो (चीन), पेट्रो नैनी (इटली), याकु ओयामा (जापान), मोनिका फेल्टन (ब्रिटेन), अन्ना सेवर्स (जर्मनी), जार्ज एमाडो (ब्राजील); सन 1952 मे–डा. सैफुद्दीन किचलू (भारत), वेडस फार्ज (फ्रास), पॉल राबसन (अमरीका), एलिसा ब्रॉको (ब्राजील), जॉनेस बेचर (जर्मन जनतत्र), जेम्स एन्डी कॉट (कनाडा) और इलिया इहरेनबर्ग (सोवियत सघ)।

शान्ति का कानून

महान् स्तालिन की प्रेरणा से, सोवियत सघ की सुप्रीम सोवियत ने 12 मार्च, 1951 को शान्ति की रक्षा के लिए यह कानून जारी किया था :

" 1. युद्ध के लिए प्रचार, वह चाहे किसी भी रूप मे किया जाय, शान्ति के ध्येय को हानि पहुँचाता है और एक नये युद्ध का खतरा पैदा करता है और इसी कारण व मानवता के प्रति एक भयकरतम अपराध है।

" 2. युद्ध के लिए प्रचार करने के दोषी लोगो पर जघन्यतम अपराधी की तरह मुकदमा चलाया जायगा।"

यह है–शान्ति और निर्माण का स्तालिनीय पथ !

मानवता के भावी पथ की रूपरेखा

कम्युनिज्म के प्रगति पथ पर बढ़ती हुई समूची मानवता के सामने जो जो मुख्य समस्याएँ उठती जाती थी, उन्हे महान् स्तालिन हल करते जाते थे। अद्वितीय सेनानी की भाँति, वह हर मोर्चे पर सफलता प्राप्त करते जाते थे।

सन् 1899 मे लेनिन ने कहा था : "हम कभी भी मार्क्स के सिद्धान्त को अपने-आप मे पूर्ण और अनुल्लंघनीय नहीं मानते। इसके विपरीत, हमारा विश्वास है कि इस सिद्धान्त ने उस विज्ञान की नींव डाल दी है जिसके आधार पर समाजवादियो को, यदि वह जिन्दगी से पिछड़ना नही चाहते तो, हर दिशा में अनवरत रचना करते जाना चाहिए।"

"हर दिशा में अनवरत रचना करना"–ठीक यही है जो महान् स्तालिन ने किया है और इसीलिए वह सदैव जिन्दगी की राह का निर्देशन ही करते रहे, कभी भी पिछड़े नहीं थे। 65 वर्षो की आयु होने पर भी, उनका अदम्य उत्साह वैसा ही था। वह विश्व की हर महत्त्वपूर्ण समस्या पर सोचते थे।

4. भाषाशास्त्र का प्रश्न : भाषाशास्त्र राजनीति और अर्थनीति से अलग विषय समझा जाता है और उसकी तरफ स्तालिन का ध्यान जाना उतना स्वाभाविक न था। लेकिन क्रांति के बाद, इस क्षेत्र मे इतनी धाँधली चली कि प्रथम श्रेणी के भाषाविदों और भाषाशास्त्रियो को पैदा करने का श्रेय होने पर भी, रूस मे इसके विषय मे एक तरह का गतिरोध सा आ गया था। न ई. मार एक बहुत उच्चकोटि के भाषाशास्त्री थे, जो जन्मना गुर्जी थे। और योग्यताओ के रहते हुए भी, प्रतिभाशाली पुरुषो मे पाई जानेवाली एक सनक उनके सिर पर भी सवार थी। वह चाहते थे कि भाषाशास्त्र के क्षेत्र मे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का प्रयोग करके एक नई खोज और देन का श्रेय ले। भाषाशास्त्र के क्षेत्र मे वह किस तरह द्वन्द्वात्मक भौतिक दर्शन का प्रयोग कर रहे है, इसे ऊपर के नेताओं ने नही देखा और टुटपुजिये भाषाशास्त्री–मार–की जयजयकार करके मनमानी करते रहे। इन पंक्तियो के लेखक का अपना अनुभव है कि डाक्टर श्चेर्वास्की पश्चिम मे संस्कृत और भारतीय दर्शन के 'न भूतो न भविष्यति' जैसे अद्वितीय विद्वान थे; लेकिन वह भी मार के विरुद्ध एक शब्द भी बोलने का साहस नही रखते थे। वस्तुतः वह अपने विषय मे लीन रहनेवाले विद्वान थे। राजनीति मे वह कोई दखल नही देना चाहते थे। मार की महिमा सुनकर, इन पंक्तियो के लेखक ने अपने सहयोगियो द्वारा प्रस्तुत साहित्य पढने के बाद अपने विचारों को स्पष्ट प्रकट किया कि यह कोई विज्ञान नहीं है, बल्कि रहस्यवाद है। इस पर मेरे सहयोगियो ने 'चुप चुप !" कहा। इसी से मालूम होगा कि भाषा-'विज्ञान के क्षेत्र मे कितनी नवकाधोधा चल रही थी और लोगो को खुलकर बहस करने का भी साहस नही होता था।

देर से ही सही, किन्तु अन्त मे, सन 1950 मे इस ओर स्तालिन का ध्यान खीचा गया। और, उन्होंने अपनी स्वाभाविक नम्रता प्रदर्शित करते हुए, इस विषय मे जो बाते कही और मार के जाल मे भाषा विज्ञान को बाहर निकाला, वह इस क्षेत्र की एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना है। स्तालिन के इस विषय के कुछ विचारो को उन्ही के शब्दो मे पढिये :

" नौजवान साथियो के एक दल ने मेरे सामने यह प्रस्ताव रखा है कि भाषाशास्त्र से सम्बन्धित बातो–खास कर भाषाशास्त्र मे सम्बन्धित मार्क्सवाद की समस्याओ–के बारे मे मै अपनी राय पत्रो मे प्रकट करूँ। मै भाषाशास्त्री नहीं हूँ, इसलिए मै साथियो को पूर्ण रूप से सतुष्ट नही कर सकता। लेकिन, जहाँ तक भाषाशास्त्र के सम्बन्ध मे मार्क्सवाद की बात है, उससे भी दूसरे समाज-विज्ञानो की तरह मेरा सीधा सम्बन्ध है। यही वजह है कि मै साथियो के पूछे हुए कई प्रश्नो का जवाब देने के लिए राजी हो गया हूँ।

" समाज के विकास की निश्चित मंजिलो मे, उसकी आर्थिक व्यवस्था उसकी नीव का काम देती है। उसका ऊपरी ढाँचा समाज के कानून, राजनीति, धर्म, दर्शन-सम्बन्धी विचारो और उनके अनुरूप राजनीतिक, कानूनी और दूसरी संस्थाओं का होता है। हर नीव का उसके अनुरूप ही अपना ऊपरी ढाँचा होता है।··· आधार को बदल या खतम कर दिया जाय तो उसके बाद, उसका ऊपरी ढाँचा भी बदल या खतम हो जाता है। इस मामले मे भाषा ऊपरी ढाँचे से मौलिक रूप मे भिन्नता रखती है; उदाहरणार्थ रूसी समाज और रूसी भाषा को ले लीजिये। पिछले तीस वर्षो के भीतर, पुरानी पूँजीवादी नीव मिटा दी गई और उसकी जगह एक नई समाजवादी नीव तैयार की गई है। इसी के अनुसार, पूँजीवादी आधार के ऊपरी ढाँचे को मिटाकर समाजवादी आधार के अनुसार, एक नये ऊपरी ढाँचे की सृष्टि की गई है। फलतः पुरानी राजनीतिक, कानून-सम्बन्धी तथा दूसरी संस्थाओ का स्थान नई समाजवादी संस्थाओं ने लिया है। लेकिन इसके होते हुए भी, रूसी भाषा मूलतः वैसी ही बनी रही जैसी कि वह अक्तूबर की उथल-पुथल के पहले थी।·· इस काल मे, रूसी भाषा मे क्या परिवर्तन हुआ है ? एक हद तक रूसी भाषा का शब्दकोश बदल गया है; · जहाँ तक रूसी भाषा के बुनियादी शब्दकोश और भाषा के आधारभूत व्याकरण के ढाँचे का सम्बन्ध है, पूंजीवादी नीव के नष्ट हो जाने के बाद, उनकी जगह एक नये आधारभूत शब्दकोश और व्याकरण के नये ढाँचे के आ जाने की बात तो दूर रही,

बिना किसी गम्भीर परिवर्तन के आधुनिक रूसी भाषा के आधार ज्यो- के-त्यों बने रहे हैं।..."

उन्होंने आगे कहा : "... उसकी (भाषा की) उत्पत्ति समाज के सदियों के इतिहास के पूरे युग से पैदा होती है। उसकी सृष्टि किसी अकेले वर्ग द्वारा नहीं बल्कि पूरे समाज द्वारा, समाज के सारे वर्गों द्वारा, सैकड़ों पीढ़ियों की कोशिशों द्वारा होती है...इस बात को देखते हुए, भाषा का काम जनता के बीच बातचीत और सम्बन्ध स्थापित करने के साधन के रूप में दूसरे वर्गों को नुकसान पहुँचाकर किसी एक वर्ग की सेवा करना नहीं, बल्कि उसे समान रूप से सारे समाज और उसके सारे वर्गों की सेवा करनी होती है।...(जीवन की) आवश्यकताओं को प्रत्यक्षतः प्रतिबिम्बित करनेवाली भाषा अपने शब्दकोश में नये शब्दों को जोड़ती तथा अपने व्याकरण के ढंग को सुधारती जाती है। इस तरह : (1) कोई भी मार्क्सवादी भाषा को नींव के ऊपर का ऊपरी ढाँचा नहीं मान सकता, और (2) भाषा का ऊपरी ढाँचे के साथ घपला करना एक भारी गलती है।

"... वह (कुछ साथी) कहते हैं कि समाज बँटा हुआ है, अब एक संयुक्त समाज नहीं, बल्कि सिर्फ वर्ग हैं। इसलिए समाज के लिए एक सम्मिलित भाषा, एक जातीय भाषा की जरूरत नहीं है। समाज बँटा होने से अब जनता की कोई जातीय भाषा नहीं रह गई है। तो फिर रह क्या जाता है ? वर्ग और वर्ग-भाषाएँ ही रह जाती हैं। यह स्पष्ट है कि प्रत्येक वर्ग-भाषा का अपना वर्ग-व्याकरण होगा—अर्थात् एक सर्वहारा व्याकरण और दूसरा पूँजीवादी व्याकरण। पर, दुनिया में ऐसे व्याकरणों का कहीं भी कोई अस्तित्व नहीं देखा गया। तो भी, इन साथियों को कोई परेशानी नहीं होती। वह विश्वास रखते हैं कि ऐसे व्याकरण पैदा होंगे। एक समय हमारे भीतर ऐसे मार्क्सवादी भी थे, जो जोर देकर कहते थे कि अक्तूबर क्रांति के बाद जो रेलें रह गई थीं वह पूँजीवादी थीं जिनका इस्तेमाल करना हम मार्क्सवादियों के लिए अच्छा नहीं। उन्हें खतम करके, हमें नई सर्वहारा-रेलों का निर्माण करना चाहिए।... हमारे साथी यहाँ गलती करते हैं। वह संस्कृति और भाषा के भेदों को नहीं देखते और न इस बात को समझते हैं कि समाज के विकास के हर नये काल के साथ विषय-वस्तु की दृष्टि से संस्कृति बदलती है, लेकिन भाषा बहुत-से कालों तक मौलिक आधार के रूप में वही बनी रहती है तथा नई और पुरानी दोनों संस्कृतियों की समान रूप से सेवा करती है। इस प्रकार (1) बातचीत और सामाजिक सम्बन्ध के रूप में, भाषा सदा ही समाज के लिए एक जैसी और उसके व्यक्तियों की सम्मिलित भाषा रहती आई है और अब भी है। (2) बोलियाँ और लोकोक्तियाँ एक निश्चित प्रकार के सभी लोगों की सम्मिलित भाषा के अस्तित्व से इन्कार नहीं, बल्कि उसे स्वीकार करती हैं कि वे किस भाषा की शाखाएँ हैं और किसके अधीन हैं। (3) वर्ग-स्वभाव वाला भाषा का सूत्र गलत और अमार्क्सवादी है।..."

भाषा की कुछ विशेषताओं के बारे में बताते हुए, स्तालिन ने आगे कहा : "भाषा एक ऐसी सामाजिक वस्तु है, जो समाज के अस्तित्व के सम्पूर्ण काल मे बराबर (एक-सा) काम करती रहती है। समाज के जन्म के साथ उसका जन्म और विकास के साथ उसका विकास होता रहता है। समाज की मौत के साथ, वह भी खतम हो जाती है। समाज के बाहर भाषा का कोई अस्तित्व नहीं है। यही कारण है, जो एक भाषा और उसके नियमों को केवल तभी समझा जा सकता है जब कि उसका अध्ययन समाज के इतिहास के साथ, उस जनता के इतिहास से उसके अटूट सम्बन्ध को देखते हुए ही किया जाय, जिस जनता की कि वह भाषा है और जो जनता उस भाषा की संस्थापक और उसे आगे ले जाने वाली है।..."

विरोधी-समागम द्वारा एक बिलकुल नई भाषा के पैदा होने के मार के मत का खंडन करते हुए, स्तालिन ने आगे कहा : "...कहा जाता है कि इतिहास में भाषाओं के जो पारस्परिक समागम हुए हैं, उनसे हमें यह मान लेना पड़ता है कि इस समागम की क्रिया में एक नई भाषा एकाएक फूट निकली और पुराने गुणों से एक नये गुण का अचानक आ जाना एक नई भाषा के जन्म का कारण बना। यह बात बिलकुल गलत है। भाषाओं के समागम को एक निर्णायक प्रभाव डालनेवाला ऐसा अकेला काम नहीं माना जा सकता जिसका फल चन्द ही वर्षों में देखा जा सके। भाषाओं का समागम एक लम्बी क्रिया है, जो सैकड़ों वर्षों तक चलती है। इस प्रकार, यहाँ पर विस्फोटों की कोई बात नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त, यह सोचना बिलकुल ही गलत होगा कि दो भाषाओं के समागम के फलस्वरूप एक नई, तीसरी भाषा पैदा हो जाती है—ऐसी भाषा

जो समागम में आई दोनों भाषाओं के साथ कुछ भी मेल नहीं खाती, अर्थात् जो अपने गुण में उनमें से हर एक से भिन्न है। वस्तुतः समागम होने पर, हमेशा उन दोनों में से ही एक भाषा विजयी हो जाती है। वह अपने व्याकरण-सम्बन्धी ढाँचे और आधारभूत शब्दकोश को बनाये रखती है, अपने विकास के आन्तरिक नियमों के अनुसार आगे बढ़ती जाती है, जबकि दूसरी भाषा धीरे-धीरे अपना गुण खोती हुई कालांतर में लुप्त हो जाती है। इसलिए समागम किसी प्रकार की एक नई तीसरी भाषा को पैदा नहीं करता बल्कि दोनों भाषाओं में से एक को ही बनाये रखता है, उसके व्याकरण-सम्बन्धी ढाँचे और शब्दकोश को कायम रखता है और उस भाषा को अपने विकास के आन्तरिक नियमों के अनुसार विकसित होने में समर्थ बनाता है। यह सच है कि इस प्रक्रिया के समय पराजित भाषा को नुकसान पहुँचकर विजयी भाषा के शब्द-भंडार की कुछ पूति होती है। लेकिन, ऐसा होने से भाषा कमजोर नहीं बल्कि उलटे मजबूत होती है।"

भाषाशास्त्र के सम्बन्ध में विचारो को खुलकर प्रकट करने में जो रुकावटें मार के हौवे ने पैदा कर दी थीं उनको हटाते हुए, स्तालिन ने कहा : "इस बहस से जिस बात का खास तौर से पता चला है, वह है केन्द्र और प्रजातंत्र—दोनों मे भाषाशास्त्र की कमिटियों में जिस तरह का शासन चल रहा था, वह विज्ञान और वैज्ञानिकों के अनुकूल नहीं था। सोवियत भाषाशास्त्र की स्थिति के बारे में जरा-सी भी आलोचना··· करने की हलकी से हलकी कोशिश को भी प्रमुख भाषाशास्त्री मंडलियाँ दमन करतीं, रोक देती थीं।··· यह बात सभी मानते हैं कि विचारों के सघर्ष के बिना, स्वतंत्र आलोचना के अभाव में कोई भी विज्ञान न विकसित हो सकता, न फूल-फल सकता है। लेकिन, यहाँ इस सर्वमान्य नियम को सबसे ज्यादा बेपर्वाही के साथ उपेक्षित करके पैरों तले कुचला गया।··· मार ने वर्ग-भाषा के बारे में एक ओर मिथ्या तथा अमार्क्सवादी विचार का सूत्रपात किया, जिसके द्वारा उसने अपने को भी गड़बड घोटाले में डाला और भाषाशास्त्र को भी। सोवियत भाषाओं को ऐसे मिथ्या सूत्र के आधार पर विकसित नहीं किया जा सकता, जो जनता और भाषाओं के इतिहास के पूरे युग के विरुद्ध है। न. ई. मार ने तुलनात्मक ऐतिहासिक शैली को आदर्शवादी बताकर, लम्बे-चौडे शब्दाडम्बर के साथ दूषित ठहराया। किन्तु, यह कहना पडेगा कि तुलनात्मक ऐतिहासिक शैली अपनी कितनी ही गम्भीर कमजोरियो के होते हुए भी··· मार के··· तत्त्व-विश्लेषण से कहीं बेहतर है।··· "

भाषा और भाषाशास्त्र के सम्बन्ध में जिस तरह महान् स्तालिन ने पथ-प्रदर्शन किया है, उससे यह भी मालूम हो जाता है कि हर विषय में उनका कितना वैज्ञानिक दृष्टिकोण रहता था। वह किसी भी बात में 'बाबा-वाक्यं प्रमाणं' के मानने के विरोधी थे और चाहते थे कि लोग 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः' की सूक्ति पर ही अमल करे।

5. **"सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएँ"** : इस महान् पुस्तक का प्रकाशन सितम्बर, सन् 1952 में, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की ऐतिहासिक 19वीं कांग्रेस के एक माह पहले हुआ था। अर्थशास्त्र पर एक पाठ्य-पुस्तक के मसौदे और उसके बारे में होनेवाली बहस के सिलसिले में, एक आलोचनात्मक टिप्पणी के रूप में स्तालिन ने इसकी रचना की थी।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सारी दुनिया की प्रगतिशील मानवता के सैद्धान्तिक विकास में इसका प्रकाशन एक महानतम महत्त्व की घटना है। यह सारी दुनिया की मेहनतकश जनता को समाज के विकास के नियमों के ज्ञान से लैस करती है; कम्युनिज्म के निर्माण के पथ को प्रकाशित करती है। यह मार्क्सवाद के खजाने को एक महान् देन है।.

इस पुस्तक के प्रत्येक शब्द के पीछे पूँजीवाद शोषण के खिलाफ रूस के प्रारम्भिक मजदूर आंदोलन से लेकर सोवियतों के रूप में मजदूर-किसानों-सैनिकों की पंचायतें बनाने तक, गृह-युद्ध की काली घटाओं से लेकर फासिस्टी दरिंदो की पराजय तक और गृह-युद्ध के काल के अकाल से भूखों मरती हुई जनता के लिए अनाज हासिल करने से लेकर पाँच पंचवार्षिक योजनाओं के जरिये देश में समाजवाद के निर्माण करने तक का अतुलनीय अनुभव है। इस पुस्तक के प्रत्येक शब्द के पीछे संसार की समूची मेहनतकश जनता के आन्दोलन के नेतृत्व करने का अनुभव है। इस अनुभव को इस पुस्तक से जुदा नहीं किया जा सकता; उसी प्रकर जैसे इस पुस्तक

को इस महान् अनुभव से अलग करके नहीं देखा जा सकता। सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण के काम से यह अविभाज्य रूप में जुड़ी हुई है। यह बहुत महत्त्व की बात है। इसीलिए, स्तालिन की यह पुस्तक रचनात्मक मार्क्सवाद की श्रेष्ठतम मिसाल है।

प्राकृतिक और आर्थिक नियमों का फर्क

सोवियत संघ के विद्यार्थियों के लिए अर्थशास्त्र पर जो पुस्तक तैयार की जा रही थी, उसके मसौदे और उस मसौदे पर होने वाली बहस के दौरान में लोगों ने कुछ ऐसी दलीलें दी जैसे कि सोवियत संघ मे आर्थिक नियमों को तबियत के मुताबिक बदला जा सकता है, ठीक उसी तरह जैसे एक सरकार अपने बनाये हुए कानूनों को जब चाहे रद्द करके नये कानून बना सकती है। जाहिर है कि इस समझ का नतीजा यही निकल सकता था कि सोवियत संघ में आर्थिक नियमों की कोई खास अहमियत नहीं है और उनका गहराई से अध्ययन करना भी जरूरी नहीं है। यह भी स्पष्ट है कि ऐसी समझ के लोग आर्थिक योजनाएँ बनाने के समय भी मनमाने ढंग से, अपनी कल्पना के आधार पर, योजनाएँ बनायेंगे और गलतियाँ करेंगे, जिनमें गड़बड़ी पैदा होगी। इसीलिए, स्तालिन ने आर्थिक नियमों की समझदारी ठीक कर देना जरूरी समझा।

स्तालिन ने दिखाया है कि जैसे कुदरत के नियम होते है, वैसे ही समाज के भी नियम हुआ करते हैं; जैसे कि प्रकृति में हर काम उसके निश्चित नियमों के मुताबिक ही हुआ करता है (हम उन नियमों को समझते है या नहीं, यह दूसरी बात है), उसी तरह समाज में भी हर घटना सामाजिक नियमों के अनुसार ही हुआ करती है। जिस तरह प्रकृति में हर मौसम के आने का समय, सूरज के निकलने डूबने आदि का समय निश्चित होता है, इसी तरह समाज में भी सब कुछ निश्चित नियमों के अनुसार ही हुआ करता है। न तो समाज में और न प्रकृति में ही, घटनाएँ या परिवर्तन एक मनमाने ढंग से, संयोगवश हुआ करते है।

हम सभी समझते है कि मनुष्य कुदरत के नियमों को गढ़ नहीं सकता, रच नहीं सकता। यह नियम मनुष्य की चाह से, हमारी अपनी आंतरिक इच्छा से बनते-बिगड़ते नहीं है। उनकी मौजूदगी हमारे मन के अलावा है; उनका अस्तित्व हमारे मन से स्वतन्त्र है। इसी तरह हमारी अपनी चाह और अपनी इच्छा से अलग, सामाजिक नियम भी स्वतंत्र रूप में काम करते है। हम उन्हें गढ़ नहीं सकते। दोनों ही वस्तुगत होते है। हाँ, हम उन्हें जान सकते है, उनकी खोज कर सकते है वह किस प्रकार काम करते है, यह समझ सकते है।

प्रकृति के तमाम नियमों की खोज करके, उनको समझकर, हमने तमाम विज्ञानों का विकास किया है—जैसे जीव विज्ञान, रासायनिक विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि। और इन विज्ञानों के सहारे, हम बिल्कुल नपे तुले तौर पर परिवर्तनों, घटनाओं के घटने के समय तथा किन किन चीजों के योग से क्या नई चीज बनेगी या क्या होगा बता सकते है। अभी चन्द्र ग्रहण पड़ा था, तो उसके महीनों पहले अखबारों में आ गया था कि ग्रहण कितने बजकर कितने मिनट पर कहाँ दिखाई देगा। दिन के मौसम की भविष्यवाणी हम रोज ही अखबारों में पढ़ते है। इसी प्रकार, हम समाज के आर्थिक नियमों को भी जान सकते है, खोज सकते है और उनके एक दूसरे से सम्बन्ध को समझकर समाज के आर्थिक विज्ञान की रचना कर सकते है। ठीक भौतिक, रासायनिक या जीव विज्ञान की तरह ही, समाज के अर्थविज्ञान के द्वारा भी हम आर्थिक घटनाओं और व्यवस्थाओं के नियमों की ठीक ठीक जानकारी के आधार पर, उनका विश्लेषण कर सकते हैं और उनके बारे में भविष्यवाणी भी कर सकते है, जैसे हम मौसमों और चन्द्र-ग्रहणों आदि के बारे में किया करते है।

प्राकृतिक नियमों को अपने हित में उपयोग करने के हम आदी है, अभ्यस्त है। खेती के बोने, काटने और निराई करने के समय हमने मौसमों के आने-जाने के नियम के अनुसार ही तय किए हैं। इसी प्रकार, अपने रोजाना के जीवन में हम अपने हित में प्रकृति के नियमों का उपयोग करते हैं। हम उन नियमों को बदलते नहीं है, बदल नहीं सकते। उनकी जानकारी हासिल करके, उनका उपयोग करते है। ठीक इसी तरह आर्थिक नियमों की जानकारी हासिल करके भी, हम उन्हे अपने हित के लिए उपयोग में ला सकते हैं, बदल नहीं सकते, रद्द नहीं कर सकते।

कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि 'हम नियमों को बदल नहीं सकते'–यह जानकारी मनुष्य को भाग्यवादी बना देगी, वह अपने-आपको नियमों का दास समझने लगेंगे। लोग इसके लिए हिन्दुस्तान के गरीब किसानों की भाग्यवादिता का उदाहरण भी पेश कर सकते हैं। पर, महान् स्तालिन हमें सिखाते हैं कि असलियत ऐसी नहीं है। अपने यहाँ के किसानों की भाग्यवादिता के उदाहरण को ही अगर हम गौर से जाँचें तो दृष्टिकोण साफ हो जायेगा। हिन्दुस्तानी किसान में जो भाग्यवादिता आई है, वह इसलिए नहीं कि वह प्रकृति के नियमों को समझता है, बल्कि इसलिए कि वह उन्हें समझते हुए भी उन नियमों का पूरा उपयोग नहीं कर पाता। समाज की जोंकें, सामंती शक्तियाँ उसे जकड़े हुए हैं और उसे उन नियमों का पूरा उपयोग नहीं करने देतीं। वह जानता है कि खाद देने से धरती की उपजाऊ शक्ति बढ़ सकती है, वह जानता है सिंचाई से अच्छी फसल तैयार की जा सकती है; लेकिन उसके पास यह छोटे-से प्रारम्भिक साधन जुटाने के लिए भी पैसे नहीं हैं। दूसरी ओर, उसी के भाई किसानों ने चीन में–जहाँ सामंती जोकों का क्रियाकर्म कर दिया है, वे भाग्यवादिता को पास फटकने भी नहीं देते; उनका भविष्य उज्ज्वल से उज्ज्वलतर होता जा रहा है। यह तब इसीलिए कि वह प्रकृति के नियमों का अधिक उपयोग करने मे समर्थ हैं। सोवियत संघ के किसानों के लिए हम जिस वृहत् वनीय क्षेत्रों की योजना का जिक्र कर चुके हैं, वह भी प्रकृति के नियमो का उपयोग ही करना है, उन्हें रद्द करना नहीं है। इसी प्रकार, हम समाज के आर्थिक नियमों का भी समाज के हित मे उपयोग कर सकते हैं। संसार के मेहनतकश वर्ग ने, मार्क्स-ऐंगिल्स-लेनिन और स्तालिन के द्वारा, पूँजीवादी समाज के आर्थिक नियमों को जानकर ही संसार के एक तिहाई भाग से पूँजीवादी शोषण की प्रणाली को खतम किया है। इन सिद्धान्तों की समझ ने किसी भी प्रकार से उनमें अपने को पूँजीवादी नियमों का गुलाम समझने की भावना पैदा नहीं की। इसीलिए, स्तालिन हमें सिखाते हैं कि समाज के नियमों की समझ हमें यह अवसर देती है कि हम समाज की हालतों को बदल सकें और नियमों का समाज के हित में प्रयोग कर सकें।

यह कोई बिलकुल नई चीज नहीं है। इतिहास के आरम्भ से ही, इस समाज के नियमों को जानने की कोशिश करते रहे हैं और उनका समाज के हित में उपयोग करने की चेष्टा करते रहे हैं। इसमें जो नया तत्त्व है वह यही कि अब तक के इतिहास में वर्ग रहे हैं और इसीलिए इन नियमों का उपयोग समाज का शोषक वर्ग अपने हित के लिए करता रहा है, परन्तु समाजवादी या जनवादी राज्य बनाने के बाद इन नियमों का उपयोग समाज की समूची जनता के लिए किया जाता है। और, इन नियमों का समाज के हित मे उपयोग करने के लिए उन नियमों का समझना सबसे पहली शर्त है।

इस प्रकार, समाज के नियम प्राकृतिक नियमों की तरह ही वस्तुगत होते हैं, जो हमारी चाह या इच्छा से स्वतंत्र होते है. उनको समझा जा सकता है, खोजा जा सकता है और उनके आधार पर समाज का एक विज्ञान, रसायन विज्ञान या जीव विज्ञान की तरह ही, बनाया जा सकता है। उनको समझकर, उनका उपयोग समाज के हित में किया जा सकता है।

परन्तु, स्तालिन हमें सिखाते हैं कि समाज के नियम बिलकुल प्राकृतिक नियमों की तरह ही नहीं होते। इन समानताओं के साथ-साथ उनमें भेद भी हैं।

पहला भेद यह है कि प्राकृतिक नियम स्थायी होते हैं। सामाजिक नियम बदलते रहते हैं। सामाजिक नियम एक ऐतिहासिक युग के लिए ही होते है और दूसरे ऐतिहासिक युग के आने के साथ-साथ, दूसरे सामाजिक नियम लागू हो जाते हैं। दास-प्रथा की सामाजिक व्यवस्था के नियम सामंती, पूँजीवादी या समाजवादी व्यवस्था में लागू नहीं हो सकते।

सिर्फ कुछ ही सामाजिक नियम हैं जो सभी समाज-व्यवस्थाओं में समान रूप से लागू हो सकते हैं–जैसे यह सिद्धान्त कि पैदावार के सम्बन्धों को उत्पादन-शक्तियों के लक्षणों से (तरीके से) मेल खाना ही चाहिए।

दूसरा भेद यह है कि प्राकृतिक नियमों को खोजने और उनको लागू करने का काम बहुत कुछ सीधे-सीधे हो जाता है। परन्तु, सामाजिक नियमों को खोजकर उनको लागू करने का काम धीरे-धीरे नहीं होता; क्योंकि समाज में जो शक्तियाँ सत्तारूढ़ होती हैं, जिनके हाथों में शक्ति होती है, वह नये नियमों के लागू करने का

विरोध करती हैं क्योंकि उनसे उनके हितों को धक्का लगता है। इसलिए, समाज के नये नियमों को लागू करने में पूरी एक सशक्त, सत्तारूढ़ शक्ति का विरोध सामने आता है। उसको पराजित करके ही, नये नियमों को लागू किया जा सकता है। इसीलिए, उनको लागू करने के लिए एक सशक्त-संगठित ताकत की, संगठन की जरूरत पड़ती है। इसीलिए, हमें जनवादी हिन्दुस्तान के नये सामाजिक नियम लागू होने की परिस्थिति पैदा करने के लिए मेहनतकशों, किसानों और सारी जनता के संगठनों तथा एक कम्युनिस्ट पार्टी की जरूरत पड़ती है।

सामाजिक नियम बदले नही जाते, रद्द नही किए जाते। नये ऐतिहासिक युग की परिस्थितियों में, पुराने सामाजिक नियम लागू नहीं होते और वह अपनी शक्ति तथा सार्थकता खो बैठते हैं। नये ऐतिहासिक युग मे, नये नियम उनकी जगह ले लेते हैं। वह लागू होते हैं, उनकी अपनी शक्ति तथा सार्थकता होती है। पुराने नियम निरर्थक हो जाते है।

इस प्रकार महान स्तालिन ने सामाजिक नियमों के सही लक्षणों को समझाकर, हमे सही मायनो मे सामाजिक विज्ञान बताकर, उसके स्वरूप और कार्यक्षेत्र को समझाकर अपनी नीति को बिल्कुल वैज्ञानिक आधार पर रखने की राह बताई है। इस महान् पुस्तक की रोशनी मे, वैज्ञानिक भौतिकवाद की सही समझ के द्वारा अपनी नीति निर्धारित करने मे हमें बडी मदद मिलेगी। इसीलिए, मालेन्कोफ ने कहा है :

> "का. स्तालिन की सैद्धान्तिक रचनाओ का बहुत बडा महत्त्व यह है कि वह हमें सतह पर ही रह जाने के खिलाफ आगाह करती है और घटना के मर्म तक गहरे जाकर, समाज के विकास की प्रक्रिया के सार तक पहुँचकर, विकास के गर्भ में ही उस घटना को समझ लेना सिखाती है, जो कि आगे आनेवाली सभी घटनाओं का स्वरूप निश्चित करेगी। और इस प्रकार, उनकी सीखे मार्क्सवादी पूर्वाभास को सम्भव बना देती है।"

समाजवाद मे विकाऊ माल की पैदावार और मूल्य का नियम

इस प्रकार सामाजिक आर्थिक विज्ञान का आधार बनाकर, महान स्तालिन ने बताया कि मार्क्स ने जिस आर्थिक विज्ञान के मूल नियम का पता लगाया था वह समाजवादी समाज पर भी उतना ही लागू होता है, जितना कि किसी दूसरी सामाजिक व्यवस्था पर। सोवियत सघ मे भी उत्पादन के सम्बन्धो को उत्पादक-शक्तियो के लक्षणो के अनुकूल ही होना चाहिए। यह नियम कैसे लागू होता है ?

गल्ले के रूप में टैक्स और **सहकारी योजना** नामक अपनी रचनाओ मे लेनिन ने बताया था कि सोवियत राज्य मे गाँवों में छोटे छोटे उत्पादक थे, जिनको अक्तूबर क्रांति के समय तक पूँजीवादी प्रतियोगिता नेस्तनाबूद नही कर पाई थी। गाँवों के छोटे-छोटे उत्पादक बिकाऊ माल की पैदावार करते थे। वह अपने पैदा किए हुए माल को शहरो मे बेचते थे और उन्हे शहरो के साथ अपना केवल वही सम्बन्ध मजूर था। इसलिए, दो ही रास्ते थे—या तो उनहे समाजवादी राज्य का दुश्मन बनाकर क्राति की सफलता पर पानी फेर दिया जाता, या फिर एक निश्चित अवधि के लिए बिकाऊ माल के उत्पादन को कायम रहने दिया जाता और क्रमशः परिस्थितियों बदलकर उन्हे अपनी इच्छा मे ही नये सम्बन्धो को अपनाने दिया जाता। लेनिन ने बताया था कि दूसरा रास्ता सही होगा और परिस्थितियो मे क्रमशः परिवर्तन लाने के लिए उन छोटे-छोटे उत्पादको को सहकारी उत्पादक-सस्थाओ मे सगठित किया जाय। यही सही साबित हुआ। सोवियत सघ मे बिकाऊ माल की पैदावार को सुरक्षित रहने दिया गया था।

इस प्रकार, आज भी सोवियत सघ मे समाजवादी उत्पादन के दो क्षेत्र बने हैं—राज्य या सामाजिक सम्पत्ति का उत्पादन क्षेत्र और सहकारी खेती के उत्पादन का क्षेत्र। इन दो क्षेत्रो के होने से व्यक्तिगत जरूरत की चीजों को बिकाऊ माल के रूप मे पैदा करना आवश्यक हो जाता है।

इस सामाजिक परिस्थिति में. स्तालिन हमे सिखाते हैं कि उन सभी आर्थिक नियमों का चलन भी रहेगा जो इनके अनुकूल है। उन नियमो को मसूख नही किया जा सकता। परिस्थितियो मे परिवर्तन लाकर ही, नये आर्थिक नियमो को जन्म दिया जा सकता है। पूँजीवादी सामाजिक व्यवस्था से पहले, दास-प्रथा मे भी बिकाऊ

माल की पैदावार का प्रचलन था। तभी इस पैदावार के तरीके के साथ ही, मूल्य का नियम भी जन्मा था। माल का बेचा जाना तब तक सम्भव नही हो सकता था जब तक कि माल का मूल्य निश्चित न होता। बाजार के लिए माल के उत्पादन के साथ ही, समाज मे मूल्य के निर्धारण की आवश्यकता पूरे तौर पर उभरकर सामने आ गई। मूल्य का नियम बना कि हर चीज का मूल्य उसके बनाने मे खर्च हुए समय के हिसाब से तय किया जायेगा। इस समय का लेखा-जोखा करने के लिए वही समय का माप माना जायेगा जो उस समाज मे आम तौर से उस चीज के बनाने पर खर्च करना जरूरी होगा। यही मूल्य का नियम है और बिकाऊ माल की पैदावार के साथ-साथ, स्वाभाविक रूप से चालू रहता है। सोवियत सघ मे बिकाऊ माल की पैदावार को एक निश्चित अवधि तक के लिए सुरक्षित करने के कारण, यह मूल्य का नियम भी चालू है।

बिकाऊ माल की पैदावार के साथ जन्मने वाला, यह मूल्य का सिद्धान्त पूँजीवादी समाज-व्यवस्था मे ही अपने चरम विकास पर पहुँचा और यही पूँजीवादी उत्पादन का नियन्त्रण करने लगा। व्यक्तिगत पूँजीपतियो मे यह होड, यह प्रतियोगिता चल पडी कि हर तरह से बिकाऊ माल को कम-से-कम लागत मूल्य मे तैयार करे और बाजार पर आधिपत्य कायम करके, दूसरे पूँजीपतियो से ज्यादा मुनाफा कमा ले। यह लागत मूल्य कैसे कम किया जा सकता है ? लागत मूल्य का अर्थ, जैसाकि हम देख चुके है, किसी भी माल के तैयार करने मे लगनेवाला सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम-समय ही है। इसे कैसे कम किया जा सकता है ? नई से नई और अधिक विकसित मशीनें लगाकर—जिनसे कि कम समय मे अधिक माल पैदा हो सके, मजदूरो की श्रम-शक्ति को कम से-कम दामो पर खरीदकर—जिसमे कि अतिरिक्त मूल्य की मात्रा बढ जाए। सारे पूँजीपतियो मे इसी के लिए होड लग गई और जिस भी माल के उत्पादन मे कम-से-कम लागत मूल्य लगाकर, अतिरिक्त मूल्य की मात्रा अधिक से अधिक बढाकर सबसे ज्यादा मुनाफा कमाने की गुजाइश दिखती थी, सारे पूँजीपति उसी के उत्पादन मे अपनी पूँजी लगाने लगते। इस ओर तो उत्पादन खपत की सम्भावना से कही अधिक तैयार हो जाता और दूसरी ओर कम से कम दामो मे श्रम-शक्ति खरीदने की होड के कारण, कम-से-कम तनखा देकर मजदूरो की खरीदने की शक्ति कम-से-कम कर दी जाती। उत्पादित माल और जनता की क्रय-शक्ति मे इस चौडी खाई के बन जाने का नतीजा होता—मदी, आर्थिक सकट, गला-काट प्रतियोगिता और युद्ध। चूँकि पूँजीवादी व्यवस्था मे यह चीज आज भी हो रही है, दो युद्धो की विभीषिका हमारे दिमागो मे इतनी ताजी है और हम जानते है कि इन सबकी जड मे पूँजीवादी उत्पादन का नियन्त्रण करनेवाला, बिकाऊ माल के साथ पैदा हुआ, मूल्य का नियम ही है। इसलिए, हम यह सोचकर शंकित हो उठते है कि सोवियत सघ मे इन दोनो के मौजूद रहने से क्या पूँजीवाद का पुनर्जन्म नही हो जायगा ?

महान स्तालिन ने अपनी पुस्तिका मे इसका जवाब देते हुए, हमे फिर सीख दी है कि किसी भी आर्थिक नियम के काम करने के तरीके को उसकी वस्तुगत परिस्थितियो से अलग करके नही देखना चाहिए, वरना हम हमेशा ही गलतियाँ करेंगे। बिकाऊ माल की पैदावार और मूल्य का नियम दासप्रथा, सामती, पूँजीवादी और समाजवादी—चारो सामाजिक व्यवस्थाओ मे पाया जाता है। परन्तु, हर व्यवस्था मे उसका अमल भिन्न-भिन्न है, क्योकि हर व्यवस्था की अपनी वस्तुगत परिस्थितियाँ—उत्पादन के लक्षण (तरीके)—भिन्न-भिन्न हैं।

उन्होंने समाजवादी समाज की व्यवस्था का गहरा विश्लेषण करके, बताया है कि सोवियत सघ मे मूल्य के नियम के जारी रहने से पूँजीवाद नही पैदा हो सकता। क्यो ? इसलिए कि सोवियत सघ की व्यवस्था मे उत्पादन के साधनो पर एक व्यक्ति का नही, समाज का अधिकार है। किस चीज का उत्पादन कितना हो, इसका निर्धारण मुनाफे की गुजाइश—मूल्य का नियम—नही, बल्कि जनता की जरूरत करती है। सोवियत सघ मे समाजवादी उत्पादन के दो क्षेत्र है। मूल्य का नियम केवल गाँवो मे सहकारी खेती और शहरो मे रोजाना की जरूरत की चीजो के उत्पादन के क्षेत्र और निर्यात के माल पर ही लागू होता है; क्योकि सिर्फ यही बिकाऊ माल की पैदावार होती है। इस क्षेत्र मे भी मूल्य का सिद्धान्त एक सीमित रूप मे ही लागू है क्योकि वह उत्पादन का नियन्त्रण नही करता, सिर्फ सामूहिक खेती की पैदावार और रोजाना की जरूरत की चीजो की खरीद-बेच पर लागू होता है। उसके द्वारा इनकी कीमत तय की जाती है। इस तरह बिकाऊ माल के सीमित क्षेत्र के

साथ ही साथ, मूल्य के नियम का काम भी सोवियत संघ में सीमित है। वह उत्पादन का नियंत्रण नहीं करता। पैदावार के साधन—मशीनें, जमीन और श्रम-शक्ति आदि—सोवियत संघ में एक बिकाऊ माल नहीं है। साथ ही मजदूरों की तनखा श्रमशक्ति की कीमत के आधार पर नहीं, बल्कि मजदूरों की आवश्यकताओं के अनुसार—कि वह कितना हिस्सा सीधे-सीधे तनखा के रूप मे चाहते है, कितना उत्पादन के साधनों को और बढ़ाने का खर्च करना चाहते है और कितना अपनी राज्य-व्यवस्था आदि की मद में लगाना चाहते हैं—उनकी योजना के अनुसार ही तय होती है। इसलिए, सोवियत सघ में पूंजीवाद का पुनर्जन्म नहीं हो सकता। वहाँ आर्थिक सकट, बेकारी और युद्ध की चाह नहीं भड़क सकती।

सोवियत संघ में मूल्य के नियम का क्षेत्र दिन दिन सीमित ही नही हुआ है, नई परिस्थितियों के पैदा होने में समाजवादी समाज के सन्तुलित उत्पादन के विकास का नया आर्थिक नियम भी पैदा हुआ है, जो उत्तरोत्तर व्यापक होता जा रहा है।

महान स्तालिन हमें सिखाते है कि दूसरे आर्थिक नियमों की तरह, मूल्य का नियम भी अस्थायी है। कम्युनिस्ट समाज के बिकाऊ माल की पैदावार खतम होने के साथ साथ, यह नियम भी नही रहेगा। और वह परिस्थिति जल्दी से जल्दी पैदा हो सके, इसके लिए जरूरी है कि मूल्य के नियम को अमली तौर पर पूरी गहराई के साथ समझा जाय, जिससे योजनाओं में कोई भी गलती न आ सके और जल्दी से जल्दी उनको सम्पन्न किया जा सके।

इस पूरी विवेचना के साथ, उन्होंने बताया है कि सोवियत के समाजवादी समाज में विकाऊ माल की पैदावार और मूल्य के सिद्धान्त का मौजूद होना बताता है कि उत्पादन की शक्तियों के लक्षण और उत्पादन-सम्बन्धों में असगति है। दोनों में विरोध है, परन्तु दोनों में टकराव नही है। दोनों ही समाजवादी व्यवस्था के समाजवादी उत्पादन के अधीन है; इसलिए, दूसरे वर्ग समाजों की भाँति, सोवियत संघ मे नये आर्थिक नियमों को सत्तारूढ़ वर्ग की शक्ति का प्रतिरोध नही करना पड़ता; क्योंकि वहाँ दो विरोधी हितों वाले वर्ग नही है। वहाँ सोच-समझकर दोनो के बीच की खाई को पूरने के लिए सारे समाज द्वारा सचेतन प्रयास किया जाता है। पूर्व नियोजित पच वार्षिक योजनाओं द्वारा इस काम को सम्पन्न किया जाता है। वहाँ नये आर्थिक नियम प्राकृतिक नियमो की सरलता से ही लागू हो जाते है। उत्पादन बढ़ने की एक निश्चित अवस्था तक पहुँचने पर, यह खाई पूर दी जायेगी और फिर कम्युनिस्ट समाज में दोनों में कोई भी असगति नही रहेगी।

महान स्तालिन की यह विवेचना बताती है कि हमें अपने देश के आर्थिक ढाँचे और आर्थिक नियमों के स्वरूप को किस प्रकार समझने की कोशिश करनी चाहिए कि हमारे देश में क्या इतनी तबाही मची हुई है। अपने देश ही क्यों, वह हर समाज व्यवस्था के अध्ययन करने का तरीका बताती है।

आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था के आंतरिक टकराव

मौजूदा समाजवादी समाज की आर्थिक विवेचना के बाद, उन्होंने आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था के आतरिक टकरावो की विवेचना की है, क्योंकि दो तिहाई ससार जिसके जुए के नीचे कराह रहा है उसकी साफ और सही समझ के बिना कोई सही नीति निर्धारित नही की जा सकती।

उन्होंने द्वितीय महायुद्ध के बाद के पूँजीवादी ससार की मुख्य प्रकृतियों का विवेचन करके, बताया कि उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह हुई है कि पूरा ससार पहले की तरह एक मिला-जुला बाज़ार नही रह गया है। वह दो भागों म बट गया है। एक ओर तो पूंजीवादी देशों का बाजार है और दूसरी ओर जनवादी देशों का। इसने पूंजीवादी व्यवस्था के आम सकट को और भी गहरा बना दिया है। ससार के इस एक मिले-जुले बाजार का छिन्न-भिन्न होना असल मे उसके गहरे आम सकट का ही फल है। किस प्रकार ?

उन्होंने बताया है कि इस आम सकट को हमें शुरू से, उसके ऐतिहासिक रूप में ही देखना चाहिए। उसके पूरे विकास को समझे बिना, हम न तो उसकी गहराई का पूरा अंदाजा लगा सकेंगे और न उससे सही नतीजे ही निकाल सकेंगे।

इस शताब्दी से पहले भी पूँजीवादी *व्यवस्था में आर्थिक* संकट, मंदी आदि के चक्र चलते रहते थे, पर वह आम संकट का रूप धारण नहीं कर पाते थे। वह नियमित रूप से आते रहते थे। यह सही है कि वह सभी आंशिक रूप में इसी विश्वव्यापी आम सकट का रास्ता साफ कर रहे थे, पर पूँजीवाद उन पर काबू पा लेता था। वह नये उपनिवेशों के नये बाजारो को खोज कर, उनका समाधान कर लेता था। परन्तु इस सदी की पहली दशाब्दी तक, सारे ससार के बाजार इन साम्राज्यवादी शक्तियों ने आपस मे बाँट लिये थे। नये बाजार नहीं रह गये थे। जर्मनी जैसे नये पूँजीवादी देश के विकास के लिए, नये बाजारों की जरूरत था। पूँजीवादी व्यवस्था के आंतरिक विरोधाभासो के कारण, निरन्तर आनेवाले आर्थिक संकटों के लिए भी निरन्तर नये बाजारों की जरूरत बनी ही रहती थी। पर, नये बाजार थे ही नहीं। और, नये बाजार नहीं तो पूँजीवादी देशों में मंदी, बेकारी और आर्थिक संकटो का दौर शुरू हो जायेगा। नये बाजारों का सवाल पूँजीवादी देशों की व्यवस्था की मौत और जिन्दगी का सवाल था। इसीलिए, मौजूदा बाजारों के ही पुनर्विभाजन के लिए युद्ध छेड़ना जरूरी हो गया और सन् 1914 में शुरू होने वाला विश्व-युद्ध इस पूँजीवादी आम संकट का प्रारम्भ था।

चले थे छब्बे बनने और दुबे ही रह गये—वाली मसल चरितार्थ हुई। पूँजीवादी व्यवस्था के चौधरियों ने मिलकर नये पूँजीवादी प्रतियोगी देश जर्मनी को दबा लिया, परन्तु दुनिया का एक-छठा भाग पूँजीवादी व्यवस्था के घेरे से बाहर निकल गया। रूस में अक्तूबर की महान् क्रान्ति हुई और लेनिन तथा स्तालिन के नेतृत्व में मजदूरों, किसानो और सैनिकों की सोवियतो के समाजवादी राज्य की नीव पड़ गई। दूसरे शब्दो मे, पूँजीवादी बाजार के बन्धन से दुनिया का एक-छठा भाग मुक्त हो गया। वह चले थे बाजारो का पुनर्विभाजन करने और वहाँ उनका बाजार बढ़ना तो दूर और भी सिकुड गया। इसने उनके आम सकट को और भी उभार दिया। यह आम संकट की पहली मंजिल थी।

अपने एक सबसे बडे प्रतिद्वन्द्वी को हराकर, पूँजीवादी गुट ने जो नया बँटवारा किया, उससे कुछ दिनो बड़ी तेजी के साथ, जोर-शोर से चारो ओर फैलना शुरू किया। सन् 1916 में, लेनिन ने कहा था कि पूँजीवाद बड़ी तेज रफ्तार से बढ रहा है। सन् 1927 मे, स्तालिन ने भी बताया था कि पूँजीवाद मे 'क्षणिक स्थायित्व' का दौर है। लेकिन, मूल समस्या तो बाजारो की थी और उसमे कुल मिलाकर एक-छठे भाग की कमी और भी जुड गई थी। इस बार आम आर्थिक सकट ने और गहरा रूप प्रकट किया। सन् 1930 में, स्तालिन ने इस आम संकट की विशेषताएँ बताते हुए, कहा था कि ससार में पूँजीवादी व्यवस्था ही एकमात्र आर्थिक व्यवस्था नही रह गई है, अक्तूबर क्रांति की जीत ने उसकी जडे हिला दी है, पिछड़े हुए देशो मे भी नई पूँजीवादी शक्तियाँ तेजी से प्रतिद्वन्द्विता के मैदान मे उतर रही हैं और प्रमुख पूँजीवादी देशो में स्थायी रूप से बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। प्रमुख पूँजीवादी शक्तियो ने सोवियत संघ को गुलाम बनाकर फिर इस संकट को टालना चाहा और उसे नेस्तनाबूद करने के लिए साजिशे करने लगे। फिर लगभग बीस वर्षो के अन्दर ही, दूसरा महायुद्ध छिड़ गया। इस बार फिर, पूँजीवादी बाजारो के घेरे को तोडकर ससार का एक बहुत बडा भाग मुक्त हो गया; उसमें जनवादी राज्य कायम हो गये। यह पूँजीवाद के आम संकट की दूसरी मंजिल थी।

जनवाद की बढी हुई ताकत देखकर, पूँजीवादी गुट के पाँवो के नीचे से धरती खिसक गई। वह एक ओर एटम बम की धमकी दिखाकर धमकाने लगा और दूसरी ओर सारे जनवादी देशों से व्यापार बन्द करके उनकी व्यापारिक नाकेबन्दी शुरू कर दी। इस प्रकार, पहले जहाँ समूचे ससार का एक मिला-जुला बाजार था वहाँ अब दो समानान्तर बाजार बन गये। इसका नतीजा क्या हुआ ? 'विनाश काले विपरीत बुद्धि'—वाली मसल हुई। पूँजीवाद की सारी समस्या ही बाजारों की समस्या थी। इस नाकेबन्दी के कारण, उसने और भी अधिक बाजारों से अपने को वंचित कर लिया। परिणाम ठीक उलटा ही हुआ। उसका आम सकट और तीव्रतर हो गया है।

एक ओर जनवादी बाजार बन गया, जो जनवादी देशों के पारस्परिक सहयोग के आधार पर दृढ़ता से खड़ा है और जो एक-दूसरे की मदद करते हुए, समानता की बिना पर अपनी सारी जरूरतें पूरी करता है। इतना ही नहीं, अब वह परिस्थिति भी पैदा हो गई है कि यह जनवादी बाजार अपनी जरूरतों से भी ज्यादा

उत्पादन करने लगा है।

दूसरी ओर पूँजीवादी बाजार है, जो एक-दूसरे की लूट-खसोट के आधार पर खड़ा है और जो एक-दूसरे का गला काटते हुए, प्रतियोगिता और मुनाफे की बिना पर एक-दूसरे के आर्थिक जीवन पर कब्जा जमाने की कोशिश में अपने आंतरिक विरोधाभासों को और तीव्रतम बनाता जा रहा है। उसका उत्पादन गिरता जा रहा है। निर्यात कम होता जा रहा है। जनता में बेरोजगारी फैली हुई है और उसकी खरीदने की शक्ति गिरती ही जा रही है। साथ ही, पिछड़े हुए देशों की जनता स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करके अपनी मुक्ति के द्वारा उसे और भी संकुचित बनाती जा रही है।

दो समानान्तर बाजारों के बनने से पैदा होने वाला, पूँजीवाद का यह आम संकट उसकी पूरी गहराई के साथ समझा जाना चाहिए। यह आम संकट पिछले आर्थिक संकटों और मंदी के नियमित रूप से आने वाले चक्रों की तरह नहीं है। आम संकट का अर्थ है–हर दिशा में, हर क्षेत्र में संकट होना और सिवाय आत्मविनाश के उसमें उबरने का और कोई भी रास्ता न होना। यदि हम पिछली शताब्दी के अन्तिम चरण से पूँजीवादी उद्योग के विकास की गति का अध्ययन करें, तो इस आम संकट का अर्थ और भी स्पष्ट हो जायेगा।

इससे बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि सन् 1913 में शुरू हुए आम संकट के काल से पूँजीवादी उद्योगों के विकास की रफ्तार उत्तरोत्तर कम ही होती जा रही है।

विश्व में पूँजीवादी उद्योग के विकास की वार्षिक गति

काल	प्रतिशत गति
सन् 1860 से 1880 तक	3.1%
सन् 1890 से 1913 तक	3.7%
सन् 1913 से 1929 तक	2.4%
सन् 1929 से 1949 तक	1.3%

साथ ही, मौजूदा पूँजीवादी बाजार को लीजिये। पूँजीवादी देशों का सरगना अमरीका ही है। अमरीका का व्यापार संकुचित होता जा रहा है। आज अमरीका में निर्यात होनेवाले गैरफौजी माल में 30 प्रतिशत कमी हो गई है। पहले सभी पूँजीवादी देश इन देशों के साथ व्यापार किया करते थे। पर आज सन् 1937 के मुकाबले में, उनके साथ होनेवाला अमरीका का व्यापार लगभग 1/10, इंग्लैंड का 1/6 और फ्रांस का 1/4 ही रह गया है। यह पूँजीवादी बाजार की तसवीर का एक पहलू हुआ।

संकुचित होते हुए बाजार की इसी तसवीर का दूसरा पहलू यह है कि एक ओर तो अमरीका, इंग्लैंड और फ्रांस ने अपने रहे सहे बाजारों–उपनिवेशों और अर्द्ध-उपनिवेशों–का शोषण और भी तीव्र कर दिया है और अमरीकी थैलीशाह दूसरों के बाजारों को छीनने के लिए हर किस्म की साजिशें और खून-खराबी कर रहे हैं; और दूसरी ओर अमरीका इंग्लैंड, फ्रांस और इटली की घरू अर्थ-व्यवस्था का गला भी घोटता जा रहा है, वहाँ की जनता पर शोषण का बोझ बढ़ाता जा रहा है।

इन सबका लाजिमी नतीजा यही हो रहा है कि एक ओर तो अर्द्ध उपनिवेशों और उपनिवेशों की जनता का मुक्ति-संग्राम तेज हो रहा है और दूसरी ओर इंग्लैंड, फ्रांस, इटली, पश्चिमी जर्मनी, जापान आदि की जनता अमरीकी डॉलरशाही से मुक्ति पाने के लिए छटपटा रही है और अपनी सरकारों पर दबाव डाल रही है कि वे अमरीकी प्रभाव से मुक्त होने के लिए कदम उठाएँ।

इस प्रकार, पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था का आम आर्थिक संकट अधिकाधिक गहरा हो चुका है। उनकी व्यवस्था के विरोधाभास ही एक दूसरे में टकराव पैदा कर रहे हैं। सिवा एक-दूसरे के रहे-सहे बाजारों की छीना-झपट और दूसरे के गला घोटने के, उनके सामने कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है। जनवादी देशों को नेस्तनाबूद करने के लिए, तीसरा विश्व-युद्ध छेड़ने का एक रास्ता उनके लिए हो सकता था और इस प्रकार वहाँ की

जनता को गुलाम बनाकर, नये बाजार पाकर वह कुछ दिनों के लिए अपनी समस्या सुलझा सकते थे। परन्तु द्वितीय विश्व-युद्ध में, उन्होने सोवियत की अपार शक्ति को जान लिया था। वह यह भी जानते हैं कि उसके बाद जनवादी खेमे की शक्ति दुगुनी और तिगुनी बढ़ गई है–आधे यूरोप और चीन की महान वीर जनता की शक्ति भी उसमे जुड़ गई है। फिर, शान्ति आन्दोलन की शक्ति ने उन्हें यह भी बता दिया है कि दुनिया की जनता युद्ध के खिलाफ है। इसीलिए, वह समझ गये हैं कि जनवादी खेमे के खिलाफ युद्ध छेड़ने का अर्थ होगा–ससार मे पूँजीवाद का खात्मा। इससे उनके आपसी टकराव और भी बढ गये हैं; और बढ़ते ही जायेंगे।

परिस्थिति के इस विश्लेषण के बाद, महान् स्तालिन ने नतीजा निकाला है कि आज सैद्धान्तिक रूप से तो आधुनिक पूँजीवादी खेमे और जनवादी खेमे के विरोध ही सबसे महत्त्वपूर्ण है; लेकिन अमली तौर से पूँजीवादी खेमे के अपने आतरिक टकराव अधिक महत्त्वपूर्ण होते जा रहे है। और, यह सोचना गलत होगा कि पूँजीवादी देश जनवादी खेमे के खिलाफ एक हो ही जायेंगे और उनके बीच आपस मे युद्ध नही छिड़ सकता। उन्होंने बताया है कि पूँजीवादी देशो के बीच युद्ध की अनिवार्यता का लेनिनवादी सिद्धान्त आज भी उतना ही लागू होता है, जितना कि पहले। द्वितीय महायुद्ध के समय भी, पूँजीवादी खेमे और समाजवादी खेमे का विरोधाभास ही सैद्धान्तिक रूप से सबसे प्रमुख था। पूँजीवादी देशो ने उसकी शुरुआत भी समाजवादी खेमे के खिलाफ साजिशों से की थी। परन्तु, अमली तौर पर उनके अपने विरोधाभास इतने तीव्र हो गये थे कि उनमे आपस मे ही युद्ध ठन गया था। आज भी वही हो सकता है। महान् स्तालिन ने कहा है कि इन आतरिक टकरावो की वजह से, शायद पहले इंग्लैंड तथा फ्रास और बाद में जापान तथा पश्चिमी जर्मनी अमरीका के प्रभाव से मुक्त होने के लिए कदम उठायेंगे।

महान् स्तालिन के इस विश्लेषण ने शांति आन्दोलन के लिए और भी व्यापक सम्भावनाओं के द्वार खोल दिए है, जैसा कि हम देख चुके है। उनका यह विश्लेषण हमें अपने देश की सही वैदेशिक नीति निर्धारित करने में मदद दे सकता है कि हम अमरीकी और अंग्रेजी पूँजी के प्रभाव में अपने देश को मुक्त करने की नीति अपनाएँ और जनवादी खेमे के बाजार के साथ अपने व्यापारिक सम्बन्धो को बढाये, नही तो हमारे देश की जनता युद्ध, भुखमरी और बेकारी की शिकार होती जायेगी; क्योंकि हमेशा की तरह आज भी आधुनिक पूँजीवादी देश अपने आर्थिक सकट का सारा बोझ अर्द्ध उपनिवेशो, उपनिवेशों और उन पर निर्भर रहनेवाले देशो पर ही डालने की सिरतोड़ कोशिश कर रहे है।

आधुनिक पूँजीवाद का बुनियादी नियम

उपर्युक्त विश्लेषण से, यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक पूँजीवाद वह पूँजीवाद नहीं है जो मार्क्स के काल में था। वह भी नहीं है जो लेनिन के काल में था। तब, उसका बुनियादी नियम क्या है ?

किसी भी आर्थिक व्यवस्था का बुनियादी नियम वही होता है जो उस अर्थ व्यवस्था के अन्तर्गत होनेवाले उत्पादन की शक्ति के लक्षणो के सार को व्यक्त कर दे; ऐसा सार जिससे उसकी सभी विशेषताएँ निश्चित होती है और उत्पादन के विकास की प्रक्रिया के पूरे गुण पता लग जाते है। आधुनिक पूँजीवाद का ऐसा बुनियादी नियम क्या है ?

मूल्य का नियम वह बुनियादी नियम नहीं हो सकता, क्योंकि वह पूँजीवादी व्यवस्था से पहले ही दास और सामती व्यवस्थाओं में भी मौजूद था।

मार्क्स ने अपने काल के पूँजीवाद का बुनियादी नियम अतिरिक्त मूल्य का नियम बताया था। तब वह सोलहों आने सही था। यह अतिरिक्त मूल्य का नियम औसत मुनाफे की दर के नियम से सम्बन्धित था। औसत मुनाफे की दर के नियम के अनुसार, पूँजीवादी उत्पादन के सभी क्षेत्रो के मुनाफो में दूसरे क्षेत्रों के मुनाफों के बराबर होने की प्रवृत्ति होती है। इस प्रकार, सभी क्षेत्रो के मुनाफों की एक औसत दर बन जाती है। जिस क्षेत्र मे भी मुनाफा उस औसत दर से नीचे होता है, पूँजीपति उत्पादन के उस क्षेत्र को छोड़कर दूसरे क्षेत्र मे पूँजी लगाने जाता है। इस प्रकार, सारे क्षेत्रों की पूँजी मे उत्पादन के कुछ ही क्षेत्रो में केन्द्रित होते जाने की

प्रवृत्ति बनने लगती है और नतीजा होता है–अति-उत्पादन, मंदी, आर्थिक संकट आदि का पूरा चक्र। यह औसत मुनाफे की दर कम होती जाती है। परन्तु, आज की पूँजीवादी व्यवस्था में पूँजीपति आपस में व्यक्तिगत तौर से प्रतियोगिता नहीं करते; आज उनमें एकाधिकारी कम्पनियों, कार्पोरेशनों, कर्टेलों, सिन्डीकेटों और विशालतम एकाधिकारी कम्पनियों की संस्थाएँ मिलकर सारे बाजार पर अधिकार जमा लेती हैं।

मुनाफे की औसत दर के अलावा, अति-मुनाफा भी आज के एकाधिकारी पूँजीवादी के लिए पूरा नहीं पड़ता। उपनिवेशों से सस्ते दामों में कच्चा माल तथा श्रम-शक्ति खरीदकर और औसत मूल्य से अधिक कीमत पर पक्का माल बेचकर जो अति-मुनाफा पूँजीवादी देश कमाते है, वह भी उनकी सर्वभक्षिणी भूख को शांत नहीं कर पाता।

तब, आधुनिक पूँजीवाद का बुनियादी नियम क्या होना चाहिए ? महान् स्तालिन ने बताया है कि यह बुनियादी नियम है–अधिकतम मुनाफा प्राप्त करना। "...अतिरिक्त मूल्य के नियम को और ठोस बनाना चाहिए और इजारेदार पूँजीवाद की परिस्थितियों के अनुसार, उसे और विकसित करना चाहिए। साथ ही, यह ध्यान रखना चाहिए कि इजारेदार पूँजीवाद को हर किसी तरह के मुनाफे की चाह नहीं है। उसे अधिकतम मुनाफा ही चाहिए। आधुनिक पूँजीवाद का वह बुनियादी आर्थिक नियम होगा।" (पृष्ठ 42)

यह सवाल उठ सकता है कि पूँजीपति तो हमेशा से ही अधिकतम मुनाफा प्राप्त करने की चेष्टा करते रहे है, तब इसमें नई बात क्या है ? इसको हमें बारीकी से समझना चाहिए। एक पूँजीपति की अधिकतम मुनाफा बटोरने की आंतरिक इच्छा और अधिकतम मुनाफा चूसने की वस्तुगत आवश्यकता मे बहुत बड़ा फर्क है। पहले, पूँजीपति उसी क्षेत्र मे पूँजी लगाते थे जिसमे अधिक मुनाफा मिलता था और उस पर मुनाफे की औसत दर के हिसाब से अधिक मुनाफा कमा लेते थे। इनमें से कुछ पूँजीपति तमाम तिकडमे करके, इस औसत दर से कुछ अधिक मुनाफा भी जुटाने में समर्थ हो जाते थे, परन्तु अधिकाश पूँजीपति इस औसत दर से नीचे ही रहते थे। पर दोनों ही तरह से पूँजीपति कायम रहते थे, हालाँकि और अधिक मुनाफा कमाने की उनकी इच्छा बनी ही रहती थी। परन्तु, आधुनिक पूँजीवाद की वह हालत नहीं रही है। आज के जमाने मे अधिकतम मुनाफा कमाने की वस्तुगत आवश्यकता का मतलब है कि यदि वह अधिकतम मुनाफा प्राप्त करने में असमर्थ रहते है तो वह अपनी पूँजी सुरक्षित नही रख सकते। एक पूँजीपति के रूप में उनकी मौत हो जायेगी। वही कार्पोरेशन या विशाल कार्पोरेशनो की संस्था जिन्दा रह सकेगी, जो अधिकतम मुनाफा कमा सकती है। दूसरी छोटी-मोटी एकाधिकारी कम्पनियाँ मुनाफा कमा ही नहीं सकतीं, उन्हें अपने उद्योग-धन्धे बेच देने पड़ेंगे। वस्तुगत आवश्यकता का अर्थ है–अधिकतम मुनाफा या मौत; तीसरा कोई रास्ता नहीं। यही आधुनिक पूँजीवाद का बुनियादी नियम है।

अधिकतम मुनाफा कमाने के लिए, प्रमुख पूँजीवादी देशों में एकाधिकारी पूँजीपतियो के कुछ मुट्ठीभर विशालतम सगठन ही सारा व्यापार हथियाकर, अपने ही देश के छोटे मोटे पूँजीपतियो तथा उनकी संस्थाओं के मुनाफे की औसत दर कम कर देते है; क्योंकि बाजारों पर उनका एकाधिकार कायम हो जाता है और दूसरे उनसे प्रतियोगिता नही कर सकते। सन् 1948 और '49 के दौरान में अमरीका के 25 विशालतम एकाधिकारी संगठनों ने 13 प्रतिशत अधिक मुनाफा कमाया, जब कि सभी दूसरे पूँजीपति और उनकी छोटी संस्थाओं को 20 प्रतिशत का घाटा रहा था। सन् 1933 से '52 तक के बीस वर्षों में, अमरीकी कार्पोरेशन ने 380 अरब डॉलर का मुनाफा कमाया है जो सन् '33 में अमरीका में लगी हुई कुल पूँजी के बराबर था।

> "आधुनिक पूँजीवाद के बुनियादी आर्थिक नियम की मुख्य विशेषताएँ और जरूरतें मोटे तौर से यों रखी जा सकती हैं : किसी देश की बहुसंख्यक जनता के शोषण, तबाही और गरीबी के जरिये; दूसरे देशों की जनता, खासकर पिछड़े हुए देशों की जनता, की गुलामी और उसकी बाकायदा लूट के जरिये–और अन्त में, युद्ध और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की फौजबन्दी के जरिये–जिससे अधिकतम मुनाफा हासिल किया जाता है–अधिकतम पूँजीवादी मुनाफा प्राप्त करना।" (पृष्ठ 42)

फिर उपनिवेशों, अर्द्ध-उपनिवेशों तथा कम विकसित पूँजीवादी देशों के बाजारों के पुनर्विभाजन के लिए,

वह युद्ध की तैयारियाँ करते हैं, फौजबन्दी करते हैं, राष्ट्रीय बजट का अधिकाश भाग युद्ध के लिए शस्त्रों और फौजों पर खर्च करते हैं और इसके लिए अपने यहाँ की जनता पर टैक्सो की भरमार करते जाते हैं। कुछ मुट्ठीभर एकाधिकारी विशालतम सगठनो को, जनता की कीमत पर, टैक्सों मे भारी सुविधाएँ देते है और युद्ध का सामान आदि बनाने के लिए मनमाने ठेके दिया करते हैं। युद्ध के जमाने में, इन मुट्ठीभर एकाधिकारी महाप्रभुओं को 175 अरब डॉलर के और सन् '52 मे, 73 अरब डॉलर के ठेके मिले थे। इन ठेकों मे अमरीकी एकाधिकारी महाप्रभुओं ने पहले विश्व-युद्ध से 25 अरब, दूसरे विश्व-युद्ध से 100 अरब और कोरिया के युद्ध से 123 अरब डॉलर मुनाफे के रूप मे कमाये थे। ब्रिटेन के बजट का एक-तिहाई भाग युद्ध की तैयारी पर खर्च होता है।

यही एकाधिकारी पूँजी के महाप्रभु उपनिवेशो, अर्द्ध-उपनिवेशो और कम विकसित देशो के बाजारों पर कब्जा जमा लेते है। उनकी लूट खसोट, तबाही-बर्बादी और शोषण करते है। उनकी जनता के साथ ही साथ, अपने घर की जनता का शोषण भी अधिकतम कर देते हैं। आज अमरीका की जनता पर सन् 1937-38 की तुलना मे, 12 गुना टैक्स और बढ गया है। अमरीकी मजदूर अपनी तनखा का एक-तिहाई टैक्सो में दे देता है। रोजाना की जरूरत की चीजो की कीमतें जो सन '39 मे सिर्फ 99.4 थी, सन् '52 मे आसमान पर चढकर 189.6 तक पहुँच गई है। सारे ससार के बचे-खुचे बाजारों पर, खास तौर पर अर्द्ध-औपनिवेशिक और कम विकसित देशों के बाजारों पर, छा जाने की प्रवृत्ति के लिए अमरीका द्वारा तमाम बाजारों पर खर्च की जाने वाली पूँजी का अनुपात देखना ही काफी होगा–

मार्शल योजना के बाहर रहनेवाले यूरोपीय देशो पर	7 6%
कनाडा पर	14.0%
मार्शल योजना के अन्तर्गत आनेवाले देशो पर	14.5%
अमरीकी प्रजातन्त्रों पर	17 4%
मार्शल योजना के अन्तर्गत उपनिवेशो पर	20.0%
मध्यपूर्व के देशों पर	31 3%

आधुनिक पूँजीवाद का अधिकतम मुनाफा प्राप्त करने का यही तरीका है। इस अधिकतम मुनाफे के बिना वह पनप नही सकता और अधिकतम मुनाफा प्राप्त करने का इसके सिवा दूसरा रास्ता नही है। इस रास्ते पर चलने में उसके आतरिक टकराव और तीव्रतर होते जाते है, उनका आम आर्थिक सकट और भी गहरा होता जाता है। उसका पूरा अस्तित्व खतरे मे है। इसलिए, आधुनिक पूँजीवाद आज खतरे-भरे कदम उठाने का दुःसाहस भी कर बैठता है। परन्तु, उससे उसके आतरिक विरोधो में और भी विस्फोट होने लगता है।

इस प्रकार, महान् स्तालिन द्वारा प्रतिपादित आधुनिक पूँजीवाद का अधिकतम मुनाफे का बुनियादी नियम हमे आधुनिक पूँजीवाद के आम संकट की गहराई और सभी क्षेत्रों पर पडनेवाले उसके असर की व्यापकता को समझने मे मदद देता है। और, यह समझ भारत को आर्थिक सहायता देने के अमरीकी ढोंग का पर्दाफाश कर देती है। हमे अपने राष्ट्रीय हितो के लिए पैदा होनेवाले खतरों के खिलाफ आगाह करती है। यह समझ हमे रास्ता दिखाती है कि अधिकतम मुनाफे के भूखे आधुनिक पूँजीवाद के खिलाफ सभी अर्द्ध-औपनिवेशिक और कम विकसित देशो का एक सयुक्त मोर्चा बनाकर, अपने राष्ट्रीय प्रभुत्व और हितों की रक्षा की जाय, युद्ध छेडने की उसकी दुःसाहसिक चेष्टाओ को दफना दिया जाय।

समाजवाद का बुनियादी नियम

दूसरी ओर समाजवाद का बुनियादी आर्थिक नियम क्या है ? सोवियत सघ मे अर्थ-व्यवस्था के संतुलित विकास का नियम भी काम करता है। यह हम देख चुके हैं। पर, क्या वह समाजवाद का बुनियादी आर्थिक नियम बन सकता है ? महान् स्तालिन ने बताया है कि नहीं; क्योकि यह सतुलित विकास किस दिशा मे, किस उद्देश्य से होता है उसे यह नियम नही बताता। असल मे यह बुनियादी आर्थिक नियम का प्रतिफल या प्रतिबिम्ब ही हो सकता है। स्वय बुनियादी नियम नही बन सकता। तब वह बुनियादी नियम क्या है ?

उन्होंने समाजवादी अर्थ-व्यवस्था की विवेचना करके, बताया है कि वह बुनियादी आर्थिक नियम है—समाज की लगातार बढ़ती हुई भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की अधिकतम पूर्ति करना। समाज की आवश्यकताओं की यह अधिकतम पूर्ति उच्चतर कौशल के आधार पर, समाजवादी पैदावार के निरंतर प्रसार और पूर्णता के जरिये की जाती है। समाजवादी पैदावार के संतुलित विकास का नियम इसी बुनियादी आर्थिक नियम पर आश्रित होकर, इसी के अन्तर्गत काम करता है।

एक ओर जहाँ आधुनिक पूँजीवाद का बुनियादी आर्थिक नियम अधिकतम मुनाफे के लिए समूची मानवता पर आम आर्थिक संकट, बेरोजगारी, भुखमरी, बेशुमार टैक्स, शोषण और युद्ध की बलाएँ थोपता है; दूसरी ओर वहीं समाजवाद का बुनियादी आर्थिक नियम समाज की बढ़ती हुई भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की अधिकतम पूर्ति करके जनता की खुशहाली, तनख्वाहों में बढ़ती, चीजों की कीमतों में आम कमी, समृद्धि तथा समानता के आधार पर सभी देशों के साथ सहयोग और शांति को बढ़ावा देता है। सोवियत संघ की चौथी पंचवार्षिक योजना सन् 1951 में पूरी हुई है। इसके फलस्वरूप, उसकी राष्ट्रीय आय 83 प्रतिशत और बढ़ गई है। इसका तीन चौथाई भाग मजदूर वर्ग में तनख्वाहों, फंडों, बोनसों और राज्य द्वारा प्रस्तुत की हुई सेवाओं के द्वारा बाँट दिया जायेगा; बाकी एक-चौथाई उत्पादन के साधनों को और भी विकसित करने में लगा दिया जायगा। पाँचवीं पंचवार्षिक योजना आजकल चल रही है। इसके द्वारा सन् 1955 तक राष्ट्रीय आय में 60 प्रतिशत वृद्धि और हो जायेगी। दूसरे विश्वयुद्ध के पहले की पैदावार के मुकाबले में, सारी पैदावार तिगुनी हो जायगी।

यह दोनों बुनियादी आर्थिक नियम बताकर, महान् स्तालिन ने स्पष्ट कर दिया है कि किस ओर नाश, शोषण तथा मृत्यु है और किस ओर समृद्धि, समानता तथा जीवन है। यह मानवता की सबसे बड़ी सेवा है।

कम्यूनिज्म तक संक्रमण की प्राथमिक शर्तें

लेनिन ने अपनी महान् रचना **राज्य और क्रांति** में 'कम्यूनिज्म की आर्थिक परिपक्वता की विभिन्न मंजिलों' के मार्क्स के विश्लेषण की इस विशेषता पर सबसे अधिक जोर दिया है कि वह गैर स्वप्नवादी है, कि उस विश्लेषण और विभिन्न मंजिलों के निर्देशन का आधार ठोस आर्थिक परिस्थितियाँ ही हैं; मार्क्स की अपनी आंतरिक इच्छा या स्वप्नवादिता नहीं है। मार्क्स ने विभिन्न वस्तुगत आर्थिक नियमों को समझने के बाद, उनसे पैदा होनेवाली परिस्थितियों के लेखे जोखे के बाद ही उन मंजिलों का निर्देशन किया है।

महान् स्तालिन ने भी हमें इस पुस्तिका में यही मार्क्सवादी सत्य सिखाया है कि कम्युनिज्म की स्थापना सरकारी कानून पास कर देने से नहीं, बल्कि उसके लिए आर्थिक नियमों की वस्तुगत समझ के आधार पर सचेतन और नियोजित कदम उठाकर, उस संक्रमण के लिए ठोस परिस्थितियाँ तैयार कर देने पर ही होगी। वह परिस्थितियाँ क्या है ?

महान् स्तालिन ने सोवियत संघ के समाजवादी अर्थतंत्र से उसके उच्चतर रूप कम्युनिस्ट अर्थतंत्र तक संक्रमण की तीन बुनियादी शर्तें बताई हैं :

1. पैदावार के साधनों के उत्पादन का प्रसार और भी तेज रफ्तार से होता जाये।
2. पंचायती खेतों की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति की सतह तक न जाकर, समाजवादी पैदावार का एक ही क्षेत्र बनाया जाये।
3. चौमुखी सांस्कृतिक विकास की बढ़ती पक्की हो जाय।

ये शर्तें कैसे पूरी की जायेंगी ? इनके द्वारा किस प्रकार समाज में यह परिवर्तन आयेगा ?

पहली शर्त को लीजिए। पैदावार के साधनों का और भी तेज रफ्तार से प्रसार होते जाने का साफ मतलब है कि समाज की पुनरुत्पादन करने की शक्ति लगातार बढ़ती रहे। यदि यह शक्ति लगातार बढ़ती न रहे, एक सतह पर जाकर उत्पादन के साधनों का प्रसार यदि रुक जाय तो जाहिर है कि उसका उत्पादन भी एक निश्चित सतह तक ही रह जायेगा। इससे समाज का विकास भी रुक जायेगा। इसीलिए, यह जरूरी है कि उत्पादन

करने के साधनों–जैसे भारी मशीनें, कारखाने, भूमि, कौशल यानी श्रम-शक्ति की पैदा करने की क्षमता आदि–में लगातार वृद्धि होती रहे; तभी इनसे होनेवाला पुनरुत्पादन भी बढ़ता रहेगा और समाज की सभी शाखाओं को साज-सामान मिलता रहेगा। रोजाना की जरूरत की चीजों का उत्पादन भी बढते रहने की गारटी रहेगी और उनके उत्पादन पर होनेवाला खर्च भी कम होता रहेगा, उनकी कीमते भी घटती ही जायेगी। समाज की सम्पन्नता बढती जायेगी। सोवियत सघ मे सन् 1953 के अन्त तक, द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले की अपेक्षा, उत्पादन के साधनो में 170 प्रतिशत की वृद्धि हो जायेगी। इसी के आधार पर, सन् 1955 तक कुल उत्पादन तिगुना हो सकेगा। हम इसी से समझ सकते हैं कि कम्युनिज्म तक पहुँचने के लिए यह प्रसार कितना आवश्यक है।

दूसरी शर्त है–पचायती खेती की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति की सतह तक ले जाना। दूसरे शब्दों मे, इसका अर्थ है–समाजवादी उत्पादन का एक ही राज्य-क्षेत्र बनाना। हम देख चुके है कि वर्तमान सोवियत समाज मे समाजवादी उत्पादन के दो क्षेत्र है–राज्य या सामाजिक सम्पत्ति का उत्पादन-क्षेत्र और सहकारी खेती के उत्पादन का क्षेत्र। इन दोनो का एक ही राज्य या सामाजिक सम्पत्ति का उत्पादन क्षेत्र बनाना पडेगा। इन दोनों क्षेत्रो के कायम रहने की वजह भी हम जान चुके है। हमने यह भी देख लिया है कि समाज मे उत्तरोत्तर विकास होने की सबसे बडी शर्त मार्क्स का यही आर्थिक सिद्धान्त है कि समाज की उत्पादक शक्तियो का लक्षण सामाजिक सम्बन्धो के साथ मेल खाना चाहिए। एक मजिल पर आकर, समाज की उत्पादक शक्तियों का विकास आगे बढ जाया करता है और हमेशा समाज के उत्पादन-सम्बन्ध पीछे पड जाते है। तब उन सम्बन्धो मे परिवर्तन करना आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए, हम आज के पूँजीवादी समाज को देखे। सारे पूँजीवादी समाज मे उत्पादन की शक्तियो का लक्षण (तरीका) सामाजिक यानी सामूहिक है, यानी आगे बढ गया है। किसी भी विकाऊ माल का उत्पादन आज सामती काल के तरीके से, व्यक्तिगत तौर पर करके, मुनाफे के साथ नही बेचा जा सकता; क्योकि मशीने कम समय और अधिक मात्रा मे उसे तैयार करके सस्ते दामो मे बेच सकती है। परन्तु दूसरी ओर, उत्पादन के सम्बन्ध पीछे पड गये है, यानी उत्पादन के साधनो पर समाज का नही, व्यक्तियों का अधिकार है। आज आधुनिक पूँजीवाद मे आर्थिक सकटो और तबाही का यही मूल कारण है। जहाँ-जहाँ मानवता ने इस मूल विरोधाभास को दूर कर दिया है, वहाँ हम देख रहे है कि उत्पादन का चौमुखी विकास हो रहा है।

इसी को समझाते हुए, महान् स्तालिन ने इस पुस्तिका मे बताया है कि समाजवादी उत्पादन मे यह क्षेत्र सुरक्षित रखने की वजह उस समय की आर्थिक परिस्थिति थी। जाहिर है कि पूँजीवादी उत्पादन के तरीके से यह सामूहिक खेती के द्वारा उत्पादन करने का तरीका एक और ऊँची समाजवादी मजिल थी और इसीलिए, समाज के विकास मे इसने एक बडा भारी योग दिया था और अभी काफी समय तक देती भी रहेगी। पर, इसके कारण यह भूल जाना घातक होगा कि इन दो क्षेत्रो के उत्पादन के तरीको मे असगति है, जो यदि आगे चलकर दूर न की गई तो समाज के विकास मे एक रोडा बन जायेगी। जब सोवियत की उत्पादक शक्तियो का विकास एक निश्चित सतह तक पहुँच जायेगा, तब शहर के सामाजिक सम्पत्ति वाले क्षेत्र और सामूहिक खेती के उत्पादन के क्षेत्र का आपस मे बिकाऊ माल के आधार पर खडा रहनेवाला सम्बन्ध पिछड जायेगा और उसे बदलना ही पडेगा। तभी कम्युनिस्ट अर्थतत्र तक पहुँचा जा सकेगा।

यह कैसे किया जा सकेगा ? आज दोनों क्षेत्रों का सम्बन्ध बिकाऊ माल के उत्पादन पर निर्भर है, यानी सहकारी खेतो मे जितना उत्पादन होता है उसमे से अपनी जरूरत या गाँवो मे रखकर, बाकी शहर मे बेच दिया जाता है और उससे मिली हुई रकम से अपनी रोजाना की जरूरत की चीजे शहर मे खरीद ली जाती है। इससे मूल्य का नियम इस सीमित क्षेत्र मे लागू होने लगता है। यह हम देख चुके है। अब इस सम्बन्ध को मिटाने का तरीका क्या है ? तरीका यह है कि सहकारी खेती से होनेवाली पैदावार के गाँवो की जरूरत से बचे हुए हिस्से को बिकाऊ माल के चलन से अलग कर दिया जाय। गाँवों की सामूहिक सस्थाएँ शहरों की उत्पादक सस्थाओ को अपनी अतिरिक्त पैदावार बेचकर उनसे अपनी जरूरत की चीजें हासिल न करे, बल्कि वे एक-दूसरे की उपज को आपस मे विनिमय कर ले। सामूहिक खेतो की सस्थाएँ और राज्य-उद्योगों की सस्थाएँ

मुताबिक अपनी-अपनी उपज की अदला-बदली कर ले।

यह, सरकार की ओर से कानून बना देने से नहीं हो जायगा। इसके लिए दो चीजे जरूरी हैं—पहली तो यह कि राज्य के उद्योग-क्षेत्र का उत्पादन इतना अधिक बढ जाय कि वह गॉवो की जनता की जरूरत की चीजें काफी तादाद में और कम कीमत पर पैदा करने लगे; दूसरी यह कि सामूहिक खेती का क्षेत्र भी इतना अधिक अनाज और खेतिहर कच्चा माल पैदा करने लगे कि वह शहर की जनता और कारखानों की जरूरत पूरी कर सके। दोनों से ही एक-दूसरे का फायदा होगा। दोनो मे से एक न होने से जरूरत के मुताबिक पैदावार की अदला-बदली, उपज-विनिमय का ढग चल ही नही सकता।

उपज-विनिमय मे क्या होगा ? बिकाऊ माल की पैदावार और इसीलिए मूल्य के नियम का क्षेत्र दिन-दिन सिकुडता जायेगा। समाज मे जरूरतो की चीजे कम होने पर ही, यह जरूरत खडी होती है कि चीजो का मूल्य उनमें लगे हुए सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम-समय के आधार पर तय किया जाय। जब उत्पादन इतना बढ जायगा कि सभी की जरूरते पूरी हो सकती हैं, तो यह मूल्य का नियम बेमतलब हो जायेगा। हम अपनी-अपनी जरूरतो के आधार पर ही चीजो का महत्त्व ऑकेगे। फिर, आज जो राष्ट्रीय योजना बनाई जाती है उसमे सहकारी खेतो की मूल सम्पत्ति का शुमार नही किया जा सकता। उस समय इसका शुमार भी किया जा सकेगा। यह अड़चन मिट जायेगी और अधिक व्यापक योजना बनाई जा सकेगी। इसके फलस्वरूप, गॉवो और शहरो के बीच का भेद मिट जायगा; क्योकि एक ओर तो अधिकाधिक रूप मे गॉवो के रहन सहन का स्तर शहरो के बराबर होता जायेगा और दूसरी ओर तमाम बडे-बडे नये शहर उठ खडे होगे।

सहकारी खेती की सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण करना, सिर्फ एक आरम्भिक कदम होगा। सोवियत के समाजवादी समाज मे राज्य तभी तक रहेगा जब तक वह चारो ओर से पूँजीवादी ससार से घिरा रहता है। जब सारे ससार मे समाजवाद कायम हो जायगा, तब वहाँ राज्य जेसी सस्था बेमतलब हो जायेगी और सारी सम्पत्ति सार्वजनिक सस्थाओ के हाथो मे दे दी जायेगी। वही कम्युनिज्म का पूर्ण रूप होगा।

इस उपज विनिमय के लिए, आज के सोवियत समाज मे प्राथमिक सगठन मौजूद है। वहाँ आज भी खेतिहर उपज की 'सौदागरी' होती है। यह उपज विनिमय ही है। इसी को सारे उत्पादन के क्षेत्र मे फैलाने की आवश्यकता है।

इस प्रकार, दूसरी शर्त का तब तक पूरा नही किया जा सकता। जब तक कि पहली शर्त—पैदावार के साधनो के उत्पादन का तेज होती हुई रफ्तार से प्रसार—पूरी नही हो जाती। तब तक उपज-विनिमय और सरकारी खेतो की सम्पत्ति को सामाजिक सम्पत्ति के स्तर तक ऊँचा उठाने का आर्थिक आधार तैयार नही हो सकता।

तीसरी शर्त है—चौमुखी सांस्कृतिक विकास की गारटी। इस सास्कृतिक विकास के लिए, समाज के सभी सदस्यो की शारीरिक और मानसिक शक्तियो का चौमुखी विकास होना आवश्यक है। यह तभी हो सकता है जब उन्हे इतनी शिक्षा मिल जाये कि वे 'सामाजिक विकास के सक्रिय कार्यकर्ता' बन सके, यानी समाज के उत्पादन के विकास मे पूरी समझदारी से और क्रियात्मक ढग से योग देने लगे। इसके लिए, यह भी जरूरी है कि वे अपने पेशे अपनी ही इच्छा से चुन सके और जब किसी दूसरे पेशे को भी अपनाना चाहे तो अपने पहले पेशे को छोडकर, उसे अपना सके। यानी जिन्दगी भर एक ही पेशे से बँधे रहने की अनिवार्यता न हो। यह कैसे हो सकता है ?

यह तभी हो सकता है जब काम करने के घटे 5 या 6 से ज्यादा न हो। दूसरे शब्दो मे, उत्पादन के साधनो का इतना विकास हो जाय कि समाज के हर सदस्य के द्वारा पॉच या छह घण्टे रोज काम करने से ही सारे समाज की आवश्यकताओ को पूरा करने लायक उत्पादन हो सके। समाज के सभी सदस्य अपना बाकी फुर्सत—लगभग दस या ग्यारह घण्टे रोज—का काम अपने सास्कृतिक विकास मे लगा सके; अपनी रुचि के विषयो और पेशो का अध्ययन करने मे लगा सके। उसके लिए सार्वजनिक लाजिमी 'पोलीटेकनिकल' (बहुकौशली) शिक्षा चालू की जाय और वह उससे फायदा उठाने के योग्य हो। यह भी जरूरी है कि उनकी तनखा कम-से-कम दुगुनी कर दी जाय और मकानो की व्यवस्था मे बुनियादी सुधार हो सके।

तभी सास्कृतिक विकास सम्भव होगा और समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए उच्चतर कौशल प्राप्त करना सम्भव हो सकेगा। मानसिक और शारीरिक श्रम का भेद भी तभी मिट सकेगा।

ड्यूरिंग मत-खंडन में एगेल्स ने बताया था कि श्रम को एक बोझ के रूप मे खतम करने और उसे जिन्दगी की एक प्रथम आवश्यकता बनाने के लिए, समाज को मनुष्य की श्रम के विभाजन से बँधे रहने की गुलामी मिटानी पडेगी। मार्क्स ने कहा था कि यह तभी हो सकेगा जबकि व्यक्तियो के चौमुखी विकास के साथ-साथ, मामाजिक उत्पादन की शक्तियाँ भी विकसित हो जायेगी और सामाजिक सम्पदा के सारे स्रोत सवतत्रता से प्रवाहित होगे। महान् स्तालिन की इन तीनो शर्तो मे यह सभी उपकरण आ जाते है। इन तीनो शर्तों के पूरा होन पर ही, यह मुमकिन होगा कि 'हरएक से उसकी योग्यता के अनुसार और हरएक को उसके काम के अनुसार' के इस समाजवादी सूत्र से आगे बढकर, 'हरएक से उसकी योग्यता के अनुसार और हरएक को उसकी जरूरत के अनुमार' के कम्युनिस्ट सूत्र तक पहुँचा जा सकेगा। तभी यह बुनियादी सक्रमण सम्भव होगा।

और, सोवियत सघ तेजी से इस ओर बढा जा रहा है। युद्ध के पहले के काल की अपेक्षा, वहाँ रोजाना की जरूरत की चीजो का उत्पादन 60 फीमदी, असल तनख्वा 35 फीसदी, सहकारी खेतो के सदस्यो की आदमनी 40 फीसदी और श्रम शक्ति की उत्पादक शक्ति 50 फीसदी बढ चुकी है। युद्ध के बाद से आज तक कीमतो म पाच कटौतियाँ हो चुकी है।

इमी साल, 1 ली सितम्बर को मॉस्को विश्वविद्यालय की 32 मजिली इमारत का उद्घाटन-समारोह हुआ है। इसमे 57 जातियो के लगभग 17,000 विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। इस इमारत के हॉल मे 1,500 लोगो क बैठन लायक स्थान है। 148 शिक्षाभवना, विज्ञान की शिक्षा क लिए 1,000 शिक्षाभवनों और विद्यार्थियो के निवास के लिए 5,754 कमरो के साथ साथ एक विशाल पुस्तकालय भी है, जिसमे 12,00,000 ग्रथ हैं।

इम प्रकार ठोस आर्थिक आधार बनाकर ममाज की परिस्थिति म बुनियादी परिवर्तन करने और नये उच्चतर ममाज क निर्माण करन के महान् स्तालिन के इस मार्क्सवादी तरीके से हमे काफी शिक्षा मिलती है। हम वह सही तरीका मिलता है जिमके द्वारा हम अपने देश की हालतो म भी बुनियादी आर्थिक और सास्कृतिक परिवर्तन करने का काम शुरू कर सकते है। इससे हमारी सरकार की उस पचसाला योजना की निस्सारिता समझ म आ जाती है जो सामतवाद का खात्मा किए बिना, बुनियादी आर्थिक परिवर्तन करके किसानो को जमीन दिए बिना ही देश की कृषि मे युगान्तरकारी विकाम करने की डीग मारती है, जो मजदूरो और किसानो की आमदनी और रहन सहन म कोई परिवर्तन किए बिना ही, उनका अध्ययन के लिए अवकाश दिए बिना ही सार्वजनिक शिक्षा और सम्कृति मे व्यापक प्रसार की बाते करके जनता को धोखे मे डालती है। महान् स्तालिन की यह पुस्तिका हम मीख देती है कि जब तक हम अपने देश की उत्पादन की शक्तियो के लक्षण और उत्पादन के पिछडे हुए मम्बन्धो के टकराव को खतम नही कर देते, तब तक कोई भी सास्कृतिक या आर्थिक विकास अमम्भव है। सबसे पहले हमे मामतवादी सम्बन्धो का क्रियाकरम करके, जमीन किमानो को देनी चाहिए; विदेशी ओर अपने देश की एकाधिकारी पूँजी का राज्य की सम्पत्ति बनाकर, कृषि और भारी उद्योग-धधो के विकास की योजना बनानी चाहिए।

पुस्तिका की देन

महान् स्तालिन की यह पुस्तिका मार्क्सवादी लेनिनवादी विज्ञान को एक और ऊँची सतह पर ले जाती है। समार के मजदूर वर्ग के हाथो मे एक अमोघ मैद्धान्तिक अस्त्र देती है। यह आज के काल का—समाजवादी अर्थ-व्यवस्था से कम्युनिस्ट अर्थ व्यवस्था की उच्चतर मजिल तक सक्रमण के काल का—मार्क्सवाद है।

इस पुस्तिका मे महान् स्तालिन ने तमाम कठिनतम सामाजिक समस्याओ का वैज्ञानिक समाधान पेश किया है, जैसे शहरो तथा गॉवो, मानसिक तथा शारीरिक श्रम और उद्योग-धधे तथा कृषि के विरोध की समस्याएँ। उन्होने इनके आपसी टकरावो को मिटाने की राह बताई है। इस तरह, यह पुस्तिका मार्क्सवादी विज्ञान मे एक नया और शानदार अध्याय जोडती है।

इस पुस्तिका में महान् स्तालिन ने मार्क्स और एंगेल्स की कई धारणाओं का संशोधन किया है और कई नई धारणाएँ प्रस्तावित की हैं। समाजवादी उत्पादन के दो क्षेत्रों की समस्या पर मार्क्स और एंगेल्स ने विचार नहीं किया था।

इस पुस्तिका में वर्तमान युग की सभी मूलभूत समस्याओं का समाधान किया गया है। और, जब-जब मार्क्सवाद ने किसी नये युग की मूल सैद्धान्तिक समस्याओं का समाधान किया है, तब-तब सामाजिक विकास को एक नई स्फूर्ति मिली है; क्योंकि जब सैद्धान्तिक समस्याएँ उलझी रहती हैं तब वह सामाजिक विकास में एक रोड़ा बन जाती हैं। इसीलिए, यह पुस्तिका जहाँ एक ओर सोवियत संघ और जनवादी शांतिप्रिय देशों के निर्माण-कार्य को एक नई स्फूर्ति देती है, वहीं दूसरी ओर सारे संसार के मजदूरों को शांति, जनवाद और समाजवाद के अपने संघर्ष में एक नया बल और विश्वास देती है। यह हमें बताती है कि भावी संसार की संभावित रूपरेखा कैसी होगी।

महान स्तालिन की पुस्तिका के बिना, इसके वैज्ञानिक ज्ञान के बिना, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 19वीं कांग्रेस पूरे सोवियत संघ को कम्युनिज्म की उच्चतर मंजिल पर ले जाने के कार्यक्रम को इतने वैज्ञानिक तरीके पर नहीं बना सकती थी।

6. उन्नीसवीं कांग्रेस और अन्तिम सन्देश : महान् स्तालिन ने 28 सितम्बर, 1952 को अपनी पुस्तिका पूरी की थी। उसके लगभग एक सप्ताह बाद ही, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की कांग्रेस अक्तूबर के दूसरे सप्ताह में हुई। इस कांग्रेस में 44 दूसरे देशों की बिरादर कम्युनिस्ट पार्टियों के प्रतिनिधि भी मौजूद थे। इस प्रकार, यह कांग्रेस संसार के मजदूरों की एकता और उनकी बढ़ती हुई शक्ति की प्रतीक बन गई थी।

इस कांग्रेस में कॉ. मालेन्कोफ ने अपनी रिपोर्ट पेश की थी। इस रिपोर्ट में महान् स्तालिन की पुस्तक के द्वारा प्रस्तुत किये गये वैज्ञानिक मार्क्सवाद की रोशनी में अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का विवेचन किया गया था। उसमें बताया गया था कि कैसे फासिस्टों की हार के कारण, साम्राज्यवादियों की सारी योजनाएँ धूल में मिल गई हैं और समाजवाद तथा जनवाद के खेमे की शक्ति और अधिक बढ़ गई है; किस प्रकार उपनिवेशों और अर्द्ध-उपनिवेशों की जनता में जनवाद की स्थापना और मुक्ति के लिए एक नया उभार आया है। चीन में जनवाद की जीत के साथ-साथ, दुनिया की एक-तिहाई जनता जनवाद और शान्ति के खेमे में आ गई है। साम्राज्यवादियों का खेमा आम संकट के भँवर में फँसकर नाश की ओर बढ़ रहा है और जनवाद का खेमा महान् निर्माणकारी योजनाएँ कार्यान्वित कर रहा है। सोवियत संघ की जनता कम्युनिज्म के निर्माण की ओर अग्रसर हो रही है। उन्होंने सारी दुनिया के सामने युद्धखोरों को बेनकाब करके, सारे संसार के जनसाधारण को शान्ति के लिए क्रियाशील बनाने का काम रखा।

इस कांग्रेस ने सोवियत की जनता के सामने कम्युनिज्म की उच्चतर मंजिल तक पहुँचने की परिस्थितियाँ पैदा करने के लिए अगली पंचसाला योजना का मसविदा भी पेश किया।

इस कांग्रेस ने शान्ति और मुक्ति के मानवता के भावी पथ को प्रकाशित किया।

अन्तिम सन्देश

इसी कांग्रेस के अन्त में 14 अक्तूबर, 1952 को हमारे युग के सबसे बड़े महापुरुष स्तालिन ने मानवता को अपना यह अन्तिम संदेश दिया :

"साथियो ! मुझे इजाजत दीजिए कि मैं अपनी कांग्रेस की तरफ से उन सभी बिरादराना पार्टियों और दलों के प्रति उनके मित्रतापूर्ण अभिनन्दन के लिए, सफलता की उनकी कामनाओं के लिए और उनके विश्वास के लिए आभार प्रदर्शित करूँ, जिनके प्रतिनिधियों ने अपनी उपस्थिति से हमारी कांग्रेस की इज्जत बढ़ायी है या जिन्होंने कांग्रेस के लिए अभिनन्दन के सन्देश भेजे हैं।

"उनका यह विश्वास हमारे लिए विशेष रूप से मूल्यवान है। यह इस बात का प्रतीक है कि जनता के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी पार्टी के संघर्ष में, जंग के खिलाफ संघर्ष में और शान्ति कायम रखने

के संघर्ष में वे हमारी पार्टी का समर्थन करने को तैयार हैं।

" यह सोचना गलत होगा कि चूँकि हमारी पार्टी अब एक शक्तिशाली ताकत बन गयी है, इसलिए उसे समर्थन की जरूरत नहीं रही। यह बात सही नही है। बाहरी देशों की बिरादराना जनता के विश्वास, सहानुभूति और समर्थन की हमारे देश को हमेशा जरूरत रही है और जरूरत रहेगी।

" इस समर्थन की विशेषता यह है कि जब कभी कोई बिरादराना पार्टी हमारी पार्टी की शान्तिमय आकांक्षाओ का समर्थन करती है, तो साथ ही साथ यह, शान्ति कायम रखने के संघर्ष मे स्वय उसकी जनता का समर्थन भी हो जाता है। सन् 1918-19 में, जब ब्रिटेन के पूँजीपति वर्ग ने सोवियत संघ पर हथियारबन्द हमला किया था, तो ब्रिटेन के मजदूरो ने 'रूस मे दखलन्दाजी बन्द करो' का नारा बुलन्द करके, उस जग के खिलाफ सघर्ष का सगठन किया था। उनका यह समर्थन, सबसे पहले शाति के लिए ब्रिटेन की जनता के सघर्ष का समर्थन था और साथ ही, वह सोवियत मघ का समर्थन भी था। कामरेड थोरे या कामरेड तोगलियाती जब ऐलान करते हैं कि उनके देशो की जनता सोवियत मघ की जनता के खिलाफ लडाई न लडेगी तो, यह ऐलान सबसे पहले शाति के लिए सघर्ष करनेवाले फ्रास और इटली के मजदूरो और किसानो का समर्थन करना होता है और साथ ही, वह सोवियत सघ की शातिमय आकाक्षाओ का समर्थन भी होता है। पारस्परिक समर्थन की इस विशेषता का कारण यह है कि हमारी पार्टी के हित, न सिर्फ शाति-प्रेमी जनता के हितों के खिलाफ नहीं जाते, बल्कि उसके विपरीत, उनके हितो के साथ एक रूप हो जाते है। जहाँ तक सोवियत सघ का सवाल है, उसके हित विश्व-शाति के ध्येय मे एकदम ही अभिन्न है।

" स्वाभाविक है कि हमारी पार्टी बिरादराना पार्टियो की ऋणी नही रह सकती और उसे अपनी ओर से उनका और स्वतत्रता के उनके सघर्ष मे, शान्ति कायम रखने के उनके सघर्ष मे, उनके देशो की जनता का भी समर्थन करना ही चाहिए। सन् 1917 मे, जब हमारी पार्टी ने राज्यसत्ता पर कब्जा कर लिया और जब पूँजीपतियो व जमींदारो के उत्पीडन के खात्मे के लिए कारगर कदम उठा लिया था, तो बिरादराना पार्टियों के प्रतिनिधियों ने हमारी पार्टी के साहस और कामयाबियो की प्रशसा मे उसे दुनिया के क्रातिकारी आदोलन और मजदूर आदोलन की 'तूफानी पलटन' की उपाधि दी। इस तरह उन्होने यह आशा प्रकट की कि 'तूफानी पलटन' की सफलताओ से, पूँजीवादी जुए के नीचे कराह रही जनता को राहत पाने में मदद मिलेगी। मेरे विचार मे हमारी पार्टी ने इन आशाओ को पूरा किया है, खास तौर से दूसरे विश्व युद्ध के दौरान मे जब जर्मन और जापानी फासिस्टी आतक का अत करके, सोवियत सघ ने यूरोप और एशिया की जनता को फासिस्टी गुलामी के खतरे से मुक्त किया।

" जब हमारी यह 'तूफानी पलटन' एकमात्र और अकेली थी, जब उसे इस नेतृत्व की भूमिका को करीब-करीब अकेला ही पूरा करना पड रहा था, तब बेशक इस गौरवशाली उद्देश्य को पूरा करना बहुत ही मुश्किल काम था। लेकिन, यह तो बीते जमाने की बात है। आज हालात बिलकुल ही भिन्न हैं। आज जब चीन और कोरिया से लेकर चेकोस्लोवाकिया और हगरी तक जनता के जनवादी देशो के रूप मे नयी 'तूफानी पलटने' सामने आ गयी है–तो अब हमारी पार्टी के लिए सघर्ष करना ज्यादा आसान हो गया है और सचमुच मे काम बडे मजे मे आगे बढ रहा है।

" वे कम्युनिस्ट, जनवादी, मजदूर और किसान पार्टियाँ जिनके हाथो मे अब तक भी सत्ता की बागडोर नही आयी है और जो अभी भी पूँजीपति वर्ग के तानाशाही कानूनो के बूटो के नीचे काम कर रही हैं, उनकी ओर खास ध्यान देने की जरूरत है। बेशक, उनके लिए काम करना ज्यादा मुश्किल है। फिर भी, उनके लिए काम करना उतना कठिन नही है जितना कि वह हमारे रूसी कम्युनिस्टो के लिए जारशाही जमाने मे था, जब थोडे आगे बढे हुए आदोलन को भी भयानक अपराध करार दे दिया जाता था। फिर भी, रूसी कम्युनिस्ट दृढतापूर्वक डटे रहे, वे मुश्किलो से नही डरे और उन्होने विजय हासिल की। इन पार्टियो के बारे मे भी ऐसा ही होगा।

" आखिर इन पार्टियो के लिए काम करना उतना ही कठिन क्यो नहीं रहा है, जितना कि वह जारशाही जमाने मे रूसी कम्युनिस्टो के लिए था ?

" एक तो इसलिए कि उनके सामने संघर्ष और सफलताओं की वे मिसालें मौजूद हैं, जिन्हें सोवियत संघ और जनता के जनवादी देशों ने पेश किया है। इस कारण, वे इन देशों की गलतियों व सफलताओं से सीख सकती हैं और इस तरह अपना काम आसान बना सकती हैं।

" और, दूसरे इसलिए कि स्वाधीनता आन्दोलन का खास दुश्मन–पूँजीपति वर्ग–स्वयं बदल गया है, बहुत काफी बदल गया है। वह और ज्यादा प्रतिक्रियावादी हो गया है। वह जनता से अलग हो गया है और इस तरह उसने अपने को कमजोर बना लिया है। स्वाभाविक है कि यह परिस्थिति भी, क्रांतिकारी और जनवादी पार्टियों के काम को आसान बनायेगी ही।

" पहले पूँजीपति वर्ग उदारवादी होने का शौक कर सकता था, पूँजीवादी-जनवादी स्वतंत्रताओं का समर्थन कर सकता था और ऐसा करके वह जनता के बीच लोकप्रियता हासिल कर सकता था। अब तो उस उदारवाद का एक चिह्न भी बाकी नहीं रह गया है। तथाकथित 'व्यक्ति की आजादी' अब नहीं रह गयी है। अब व्यक्ति के अधिकार सिर्फ उन्हीं के लिए माने जाते हैं जिनके पास पूँजी है; दूसरी ओर बाकी तमाम नागरिकों को सिर्फ शोषण के योग्य इन्सानी कच्चा माल माना जाता है। मनुष्यों और देशों के समान अधिकारों के सिद्धान्त को पैरों तले रौंदा गया है। उसकी जगह, यह सिद्धान्त कायम किया गया है कि अल्पमत शोषकों को तो तमाम अधिकार हैं और बहुमत शोषितों को कोई अधिकार नहीं है। पूँजीवादी-जनवादी स्वतंत्रताओं के झंडे को उठाकर फेंक दिया गया है। यदि आप जनता की बहुसंख्या को अपने इर्द-गर्द संगठित करना चाहते हैं तो मेरे विचार से आपको ही, कम्युनिस्ट और जनवादी पार्टियों के प्रतिनिधियों को ही, इस झंडे को उठाना होगा और आगे ले चलना होगा। दूसरा और कोई नहीं है जो इसे उठा सके।

" पहले पूँजीपति वर्ग को राष्ट्र का अगुआ माना जाता था। उसने राष्ट्र के अधिकारों और आजादी को 'सबसे ऊपर' मानकर उनका समर्थन किया था। अब 'राष्ट्रीय सिद्धान्त' का एक भी चिह्न बाकी नहीं रह गया है। अब पूँजीपति वर्ग डॉलरों के लिए राष्ट्र के अधिकारों और आजादी को बेच देता है। राष्ट्रीय आजादी और राष्ट्रीय स्वाधीनता का झंडा उठाकर फेंक दिया गया है। यदि आप अपने देश के देशभक्त होना चाहते हैं, यदि आप राष्ट्र की अगुआ शक्ति बनना चाहते हैं, तो इस बात में जरा भी शक नहीं है कि आपको ही, कम्युनिस्ट और जनवादी पार्टियों के प्रतिनिधियों को ही, इस झंडे को उठाना होगा और आगे ले चलना होगा। दूसरा और कोई नहीं है जो उसे उठा सके।

" आज की स्थिति ऐसी ही है। स्वाभाविक है कि इन तमाम परिस्थितियों से उन कम्युनिस्ट और जनवादी पार्टियों के काम में आसानी होगी, जिनके हाथों में अभी तक भी सत्ता की बागडोर नहीं आयी है।

" फलस्वरूप, जहाँ अभी भी पूँजी का बोलबाला है, उन देशों की हमारी बिरादर पार्टियों की सफलता और विजय पर भरोसा करने का हर कारण मौजूद है।

" हमारी बिरादर पार्टियाँ जिन्दाबाद !

" बिरादर पार्टियों के नेता दीर्घजीवी हों और स्वस्थ रहें !

" राष्ट्रों के बीच शांति जिन्दाबाद !

" जंगबाजों का नाश हो ! "

महान् स्तालिन का यह अन्तिम सन्देश हमारे देश के लिए विशेष महत्त्व का है। हमारे देश में हर मनुष्य कहता है कि राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने पन्द्रह अगस्त के अपने सभी वायदों को तोड़ दिया है, और उन सभी सिद्धान्तों के खिलाफ खड़ी हो रही है, जिनके लिए एक जमाने में वह साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ा करती थी। महान् स्तालिन ने बताया है कि अब उन सिद्धान्तों की रक्षा करने का काम भारतीय मजदूरों और किसानों की कम्युनिस्ट और दूसरी जनवादी पार्टियों को ही करना पड़ेगा। यह सीख हमें अपने देश की स्वतंत्रता, प्रभुता और नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए सभी जनवादी पार्टियों का एक संयुक्त मोर्चा बनाने की राह बताती है।

11
महाप्रयाण (सन् 1953)

19वीं कांग्रेस ने नई पंचवार्षिक योजना तथा दूसरी बातों पर अपने निर्णय करते समय, नहीं सोचा था कि पार्टी-कांग्रेस में महान् नेता की यह अन्तिम उपस्थिति है।

आखिर क्रांति का पैंतीसवाँ वार्षिकोत्सव आया। 6 नवम्बर को बोल्शोई नाट्यशाला की बैठक में, स्तालिन मार्शल की वर्दी में स्वस्थ दीख पड़ते थे। उन्होने दृढ़तापूर्वक कदम बढ़ाते हुए, दूसरी पंक्ति के बीच में अपना स्थान ग्रहण किया। उनके साथ पोलिट ब्यूरो के सदस्य और दूसरे नेता भी थे। अगले दिन हर साल की तरह लाल मैदान मे अक्तूबर क्रांति का महान् महोत्सव बडे जोश-खरोश के साथ मनाया गया। उस समय भी स्तालिन मार्शल की वर्दी में आकर, लेनिन-समाधि की छत पर खड़े हुए। लोगों ने अपने प्रिय नेता के दर्शन से गद्गद हो, हर्षध्वनि की। प्रधान भाषण मार्शल तिमोशेंको ने किया। कोई दुःशंका नहीं थी। यद्यपि समय-समय पर उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे चिन्ताजनक खबरें भी उड़ा करती थीं, लेकिन साम्राज्यवादियों की झूठ से अघाये हुए लोग उन्हें कोई महत्त्व नही देते थे।

अन्त में, 1953 का सन् आया। 7 फरवरी को अर्जेन्तीन के राजदूत ब्रावो ने स्तालिन से मुलाकात करने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसने 24 मिनटों तक मुलाकात की और उत्सुक जनता ने बहुत संतोष की साँस ली, जबकि ब्रावो ने बतलाया : "वह शारीरिक तौर से बहुत ही स्वस्थ और बातचीत में असाधारण तौर से सजग दिखाई पडे।" 17 फरवरी की रात को भारतीय राजदूत क. प. स मैनन ने भी स्तालिन से क्रैमलिन मे आध घटे तक मुलाकात की। उन्होंने भी अर्जेन्तीन के राजदूत की तरह ही उनके स्वास्थ्य के बारे में खुशखबरी दी। लेकिन, 73 वर्षों का कर्मठ शरीर कितने दिनों तक साथ देता ?

1. निधन

आखिर 1 मार्च का वह शोचनीय दिन आ गया, जब हृदय के धड़कते रहते भी मस्तिष्क ने विश्राम लेना शुरू किया। उस दिन रात को वह बेहोश हुए, तो फिर होश मे नहीं आये। 5 मार्च को उन्होंने अपनी जीवन-यात्रा समाप्त की। महान् स्तालिन की बीमारी और मृत्यु के बारे में सूचना देते हुए, डाक्टरों ने निम्न बुलेटिन निकाला :

" 1 मार्च की रात को खून का दबाब बढ़ जाने तथा रक्त की नालियो की दीवारों के मोटे और कड़े पड जाने के कारण, यो. वि. स्तालिन के मस्तिष्क के अन्दर बायें अर्द्धवृत्त में रक्तस्राव हो गया। फलस्वरूप, शरीर के दाहिने हिस्से में लकवा मार गया और उनकी चेतना-शक्ति का लगातार ह्रास शुरू हो गया। बीमारी के ठीक पहले दिन ही, स्नायु-केन्द्रों की क्रियाओं में गड़बड़ी के लक्षण पाये गये। दिन-प्रतिदिन यह गड़बड़ी बढ़ती ही गई। लम्बे विराम के साथ, रुक-रुककर आनेवाली साँसों के रूप में यह गड़बड़ी प्रकट हुई। 2 मार्च की रात को साँस लेने की क्रिया मे गड़बड़ी जब-तब भयानक रूप धारण करने लगी। बीमारी शुरू होने के समय से ही, हृदय और रक्त-संचार-प्रणाली में भारी विकार पाये गये—खून का ऊँचा दबाव, नाड़ी की निरन्तर असमान धड़कन तथा दिल का फैल जाना। साँस लेने की क्रिया तथा रक्त-संचार में गड़बड़ी के बढ़ते जाने के कारण, 3 मार्च के दिन से ऑक्सीजन की कमी शुरू हो गई थी। बीमारी के पहले दिन से तापमान अत्यन्त बढ़ गया था और रक्त के श्वेतकणों में वृद्धि हो गई थी, जो फेफड़ों में सूजन की बढ़ती की सूचक हो सकती थी।

" बीमारी के आखिरी दिन शरीर की सामान्य स्थिति तेजी से बिगड़ गई, दिल और रक्त-संचार-प्रणाली में गहरे और भीषण ह्रास (शरीर-पात) के बार-बार आक्रमण होने लगे। बिजली के जरिये दिल की धड़कनों का चार्ट लेने से पता चला कि हृदय की मांसल दीवारों के और कड़े हो जाने से, वर्तुलाकार धमनियों के अन्दर

रक्त-संचार में भारी गड़बड़ी आ गई।

"5 मार्च को दोपहर के बाद, रोगी की हालत तेजी से बेहद बिगड़ गई : साँस उखड़ गई, उसकी गति अत्यन्त विकृत हो गई, नाडी की धडकन प्रति मिनट 140-150 तक पहुँच गई, नाडी का फैलाव गिर गया।

"हृदय, रक्त-सचार-क्रिया तथा साँस के ह्रास मे उत्तरोत्तर बढ़ती के साथ नौ बजकर पचास मिनट (भारतीय समय—रात के एक बजकर बीस मिनट) पर यो. वि. स्तालिन की मृत्यु हो गई।"

सोवियत की जनता अपने महान् नेता को कितना प्यार करती थी, किस तरह उन्हें पिता, त्राता और महामानव के रूप मे देखती थी, इसका पता उनके सम्मान मे की गई परेड, अर्थी की यात्रा और उनके जन्म-स्थान गोरी मे व्यक्त हुए जनता के उद्‌गारों से लगता है। इसीलिए, हम यहाँ अलेक्सेइ सुरिकोफ द्वारा लिखित वर्णन और 'प्राव्दा' के लेखो मे उद्धरण दे रहे है।

2. सम्मान-गारद

रात और दिन, बिना किसी विराम के, लगातार तीन दिनो तक मॉस्को के बाजारो मे लोगो के प्रेम और शोक का सजीव सागर उमड-उमडकर स्तम्भ सदन की ओर प्रवाहित होता रहा। जिसके भी वक्ष मे सोवियत देशभक्त का हृदय धड़का है, ऐसा हरएक व्यक्ति इन दिनो नेता और शिक्षक की अर्थी के पास तक पहुँचने की कोशिश कर रहा था, ताकि वह अपनी श्रद्धाजलि अर्पित कर सके, स्तालिन के प्रति अपनी पितृभक्ति को व्यक्त कर सके। उनके लक्ष्य के प्रति, उनकी पार्टी के प्रति वफादारी की शपथ ले सके। नेता को अन्तिम श्रद्धाजलि देने का यह क्रम अगर सालभर तक चलता रहता, तब भी यह सजीव मानव सागर इसी प्रकार अन्तहीन बना रहता, जिस प्रकार कि इन उन्तीस सालों में वह अनत सजीव सागर ग्रेनाइट पत्थर से बनी लेनिन की समाधि के सामने उमडता रहा है।

हर कोने से स्तम्भ सदन में लाये गये फूलो और हारो का ढेर लोगों के प्रेम की अभिव्यक्ति का केवल एक ही रूप है। लेकिन, इन फूलो की मूक भाषा कितनी अर्थपूर्ण है! हारों के साथ लगे स्याह हाशिये वाले लाल फीतो पर सुनहरी अक्षरों मे रूसी और बन्धु-जातियों की भाषाओ मे शुभ्रतम, अत्यन्त सच्चे, कोमलतम और साहस से पूर्ण शब्द अंकित है।

सोवियत जनता के प्रेम और शोक को मुखर करनेवाले हारो के साथ-साथ, हमारे देश की सीमाओ से बाहर शान्ति और समाजवाद के सघर्ष में योग देनेवाले हमारे मित्रो के हार भी शामिल है। महान चीन, सघर्षरत कोरिया, जनता के जनतत्रों और पूँजीवादी देशों की बिरादराना कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो के एक के बाद एक प्रतिनिधि-मडलो ने शव शय्या के चरणो मे अपने हार अर्पित किए। इनमें से एक पर, ये शब्द अकित है : 'एक कृतज्ञ और निस्सीम परमभक्त शिष्य मोरिस थोरेज की ओर से!'

इन तीन दिनो मे कई कई घंटो तक, दिन और रात उमड़ते-बढ़ते अबाध मानव-सागर के तटो पर मैं खडा रहा। लगता था, जैसे सामने से गुजरनेवाले हरएक भाई और हरएक बहिन के हृदय की धडकन सुनाई दे रही हो। मेरे कानो ने सुना उन शब्दो को, जो मुँह से प्रकट हुए थे; और हृदय ने आँखों की चमक से अनुभव किया अन्तर मे निकले उन शब्दो की सच्चाई को—वे शब्द जो मेरे देशवासियो के मुँह से महान् विदाई के इन क्षणो मे प्रकट हुए है।

मॉस्को-निवासी इस किशोर को देखिये, जिसके सिर पर घने लाल बाल छाये है। अनायास ही उसके पाँव धीमे पड़ जाते है और वह एक लम्बी गहरी नजर से स्तालिन के रूप को देखता है—ठीक बडे लोगों की भाँति। अपने ऊर्ध्वमुखी और उज्ज्वल समूचे भावी जीवन के लिए, वह महान् स्तालिन की छवि को, उनकी अमिट स्मृति को अपने हृदय में उतार लेना चाहता है।

सोवियत अफसरो और तोपखाना एकेडमी के छात्रों की पाँते, एक के बाद एक महान जनरलस्सिमो के सामने से गुजरती है। चौड़े कधो के ये प्रतापी युवक, मालूम होता है, खास तौर के मजबूत इस्पात से ढाले गये है। आकृति-सम्बन्धी कुछ अलक्षित चिह्नो से उनमे रूसियो, उक्रेनियो और उजबेकों को और हमारी शानदार

मातृभूमि में बसनेवाली अन्य जातियों की सन्तानो को पहचाना जा सकता है। हमारे देश की जनता की शानदार स्तालिन-पीढ़ी के इन किशोर-प्रतिनिधियो की प्रतिभापूर्ण ऑखों मे कितना अक्षय पितृप्रेम और सैनिकों जैसी वफादारी हिलोरें ले रही है।

नेता की अर्थी के निकट अभी-अभी दो सामूहिक-किसान महिलाओं ने 'सम्मान-गारद' मे स्थान ग्रहण किया है—इनमे एक बुजुर्ग महिला है और दूसरी फुर्तीली तपे चेहरे की एक किशोरी। दोनो के वक्षों पर 'समाजवादी-श्रम-वीर' के सोने के तारे दिखाई दे रहे है। साम्यवाद के प्रतिभाशाली शिल्पकार की महान् विदाई के इन क्षणों में, सोवियत जनता की सभी पीढियो की स्तालिनी एकता के ये मूर्तिमान रूप हैं।

तीन दिनो तक महान् और बुद्धिमान स्तालिन की अर्थी के सामने जनता के प्रेम और शोक का अक्षय और अनन्त जीवित सागर उमडता रहा। तीन दिनो तक सभी कालो और सभी लोगा के महानतम सेनानी की अर्थी के चरणा के पास सैनिक गारद बदलते रहे। स्तालिनी सैनिको के वीरतापूर्ण खिले हुए किशोर चेहरे, 'प्रोजेक्टरो' के प्रकाश मे चमकती हुई सगीनो की इस्पाती नोके, दुनिया की परम विजयिनी सेना और शान्ति तथा निर्माण सम्बन्धी श्रम के निःस्वार्थ रखवारो की सेना, अपनी शक्ति और अमर गौरव के रचयिता की अर्थी के सामने शोकपूर्ण सम्मान मे खडी थी।

तीन दिनो तक अर्थी के 'सम्मान-गारद' बदलते रहे।

पार्टी कर्मिया, मत्रियां, सोवियत सेना के प्रसिद्ध मार्शलो और जनरलो, नौसेना के एडमिरलो—सभी ने बारी-बारी से अर्थी के निकट 'सम्मान-गारद' मे अपना स्थान ग्रहण किया।

महनतकश लोगो के लक्ष्य के प्रति असीम भक्ति की भावना मे साथी स्तालिन द्वारा पाले-पोसे गये, सोवियत देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिको, जन-कलाकारो और साहित्यकारो, श्रेष्ठतम शिक्षको, डाक्टरो इजीनियरो, डिजाइनरो, आविष्कारको, समाजवादी सोवियत के बुद्धिजीवियो के प्रतिनिधियो ने बारी-बारी से विज्ञान के महान् प्रकाशपुज की अर्थी के निकट 'सम्मान गारद' मे अपना स्थान ग्रहण किया।

करोडो सोवियत जवानो की सशक्त सेना के नेताओ और सामान्य सैनिको ने, मजदूर सभाओ के नेताओ ओर सामान्य कार्यकर्ताओं ने, उद्योग की अग्रणी विभूतियो और नये समाजवादी देहातो के निर्माताओं ने, एक के बाद एक 'सम्मान गारद' मे स्थान ग्रहण किया।

जनता के इन सन्देश वाहको ने नेता की अर्थी के सम्मुख केवल भारी शोक और दुःख ही प्रकट नहीं किया, बल्कि सबसे बढकर यह कि उन्होंने लेनिन और स्तालिन के लक्ष्य के प्रति वफादार रहने की, कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी केन्द्रीय कमिटी के प्रति वफादार रहने की अटूट शपथ ग्रहण की।

'सम्मान-गारद' मे दुनिया के पहले समाजवादी राज्य के मेहनतकश लोगो के साथ-साथ जनता के जनतत्रो की सरकारो के अध्यक्षो, प्रतिनिधि-मडलो के सदस्यो, अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट और मजदूर आन्दोलन के प्रमुख नेताओ ने बारी-बारी से स्थान ग्रहण किया।

चैकोस्लोवाकिया जनतत्र के अध्यक्ष क्लीमन्त गोतवाल्द, पोल जनता के जनतत्र की मत्रिपरिषद् के अध्यक्ष बोलेस्लवि बीरूत, पोलैड के मार्शल रोकोस्सोवस्की, चीनी जनता के जनतंत्र की राजकीय प्रशासन-परिषद् के महामत्री और पर-राष्ट्र-मत्री चाउ-एन्-लाई, रूमानियन जनता के जनतत्र की मत्रिपरिषद् के अध्यक्ष गेओर्गे गेओर्गीयू देज, बुल्गारी जनता के जनतत्र की मत्रिपरिषद के अध्यक्ष विल्को चेर्वेन्कोफ़, मगयार जनता के जनतत्र की मत्रिपरिषद् के अध्यक्ष मथाइअस राकोसी, जर्मन समाजवादी एकता पार्टी के प्रधानमत्री वाल्टर उलब्रिख्त, जर्मन जनवादी जनतत्र के प्रधानमत्री ओटो ग्रोटवाल्ड, मगोल जनता के जनतत्र के प्रधानमत्री चेदेन्बल ने बारी-बारी से 'सम्मान-गारद' मे स्थान ग्रहण किया।

'सम्मान-गारद' मे स्थान ग्रहण करनेवालो मे इटली की जनता के नेता पाल मीरो तोगलियात्ती, स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमिटी की प्रधान मत्रिणी दोलोर इबारुरी, ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधान मत्री हैरी पौलिट, आस्ट्रिया की कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष को प्लेनिग, फिनलैंड की कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष विल्ले पेस्मी और इटली की सोशलिस्ट पार्टी के मत्री पिएत्रो नेन्नी भी थे।

सुबह के दो बजे महान् स्तालिन के वफादार शिष्यों और सहकर्मियो–साथी ग. म. मालेन्कोफ, व. म. मोलोतोफ, क. य. वोरोशिलोफ, न. स. बुल्गानिन, ल म. कगानोविच, अ. ई. मिकोयान, म. ज. साबुरोफ और म. ग. पेर्वुखिन–ने 'सम्मान-गारद' मे स्थान ग्रहण किया।

इसके बाद, 'सम्मान-गारद' मे न. म. श्वेर्तिक, म. अ. मुस्तोफ, प. क. पोनोमरेन्को, न. अ. मिखाइलोफ, अ. अ. अन्द्रेयेफ अ. म. वसीलेव्स्की और ग. क. झुकोफ ने स्थान ग्रहण किया।

सुबह के ढाई बजे मजदूर सभा-सदन के स्तम्भ-भवन मे प्रवेश बन्द कर दिया गया।

महान् नेता के प्रति अन्तिम श्रद्धाजलि देते हुए, सोवियतो के देश के लोगो ने साथी स्तालिन द्वारा लिखित 'सोवियत सघ मे समाजवाद की आर्थिक समस्याएँ' और सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की उन्नीसवी काग्रेस में दिए गये* उनके भाषण–'अन्तिम सदेश'–मे वर्णित साम्यवाद के पथ के प्रति वफादार रहने की शपथ ग्रहण की।

स्तालिन हम सोवियत लोगो के लिए, हमारे नेताओं–अपने शिष्यों और सहकर्मियों–के लिए, एक समृद्ध और गौरवपूर्ण दायभाग छोड गये है। पार्टी की उन्नीसवी काग्रेस मे कहे गये, ग. म मालेन्कोफ के ये शब्द सोवियत जनता मे गहरे देशभक्तिपूर्ण गर्व का सचार करते है·

"हमारा शक्तिशाली देश अपनी शक्ति के शिखर पर पहुँच, सफलता पर सफलताएँ पाता हुआ आगे बढ रहा है। हमारे पास पूर्ण साम्यवादी समाज के निर्माण के लिए आवश्यक प्रत्येक चीज है। सोवियत सघ प्राकृतिक निधियो का अक्षय भडार है। हमारा राज्य इन व्यापक निधियों को मेहनतकशो के काम मे लाने की अपनी योग्यता को प्रदर्शित कर चुका है। सोवियत जन एक नये समाज का निर्माण करने और विश्वास के साथ सामने भविष्य की ओर देखने की अपनी क्षमता को प्रदर्शित कर चुके है।

"लडाइयो मे परखी, कसौटी पर खरी उतरी, फौलादी बनी हुई तथा लेनिन-स्तालिन की नीति का अडिग अनुसरण करनेवाली हमारी पार्टी सोवियत सघ की जनता की अगुआ है।"

इसी मे हमारी शक्ति निहित है। इसी मे आने वाली सुबह मे हमारे विश्वास का अक्षय स्रोत निहित है। इसी मे यह गारटी निहित है कि दुनिया के मेहनतकश मानव सुख के निर्माण मे हमारे अनुभवो से सीखते हुए, प्रतिदिन अधिकाधिक सख्या मे उसी पथ का ग्रहण करेगे, जिस पर कि हम लेनिन और स्तालिन के विजयी झडे के नीचे आगे बढ रहे हैं।

3. स्तालिन की जन्मभूमि–गोरी

उस रात को लोग कभी नही भूलेगे। गोरी कस्बे की आँखे जरा भी नही झपकी। पौ फटते ही हजारो लोग स्तालिन-प्रागण मे जमा हो गये। उनकी आँखो मे अकथनीय शोक और दुःख भरा था। योसेफ विस्सारियोनोविच के निधन का समाचार मुँह-मुँह सारे कस्बे मे फैल गया था।

"हमारी कितनी इच्छा थी कि साथी स्तालिन अपने जन्मस्थल–गोरी मे एक बार और आते और देखते कि यहाँ की प्रत्येक चीज मे कितना अद्भुत परिवर्तन हो गया है। हम चाहते थे कि हमारे साथ वह हमारी खुशी मे शामिल होते। और, अब ।"–स्कूल के एक बहत्तरवर्षीय वृद्ध शिक्षक के मुँह से ये शब्द निकले थे। उनके इन शब्दो मे गोरी के प्रत्येक निवासी की आकाक्षा व्यक्त हुई थी।

स्तालिन-प्रागण उस मामूली घर के पास पहुँचा देता है, जिसमे नेता ने जन्म लिया था। दुनिया के सभी हिस्सो से आये हुए, अनगिनत लोग इस घर की यात्रा कर चुके हैं और आगे भी स्तालिन की प्रतिभा के अमर गौरव के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए, अनगिनत लोग इस घर की यात्रा करेगे। उस दिन यहाँ शोक से पूर्ण लोगो की एक अनन्त धारा उमड पडी। इस घर के सामने, जहाँ महान् जीवन का उदय हुआ था–एक ऐसे जीवन का जिसने अपने रक्त की आखिरी बूँद तक मेहनतकश लोगों की सेवा की–वे नगे सिर, निस्तब्ध और निश्चल खडे थे। गोरी के निवासियो के साथ आसपास के खिदिस्तावी, तिनिखिदी, स्वेनेती, खेल्तूबानी और दूसरे गाँवो के सामूहिक किसान भी यहाँ आये थे। छोटे घर के ऊपर बने सगमरमरी पडाल के खम्भो

पर काले हाशियों से युक्त, आधे झुके हुए फरहरे फहरा रहे थे।

स्मारक-म्यूजियम में उन्नीस बड़ी जिल्दे रखी हैं, जिनमें आगन्तुको की भावनाएँ दर्ज है। ये योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन के प्रति समूची प्रगतिशील मानव जाति के असीम प्रेम, भक्ति और कृतज्ञता का हृदयस्पर्शी चित्र पेश करती हैं।

आइये, आखिरी पन्नों को पलटकर एक नजर देखे, जिन पर मार्च सन् 1953 की तारीखें पड़ी हैं। यहाँ पर आखाल्त्सीने जिले के सामूहिक-किसान बगरात दव्लोसादर्जे के, महान् कौमी युद्ध के एक सैनिक के–जिसने अपने दो बेटों के साथ तुआप्से से बर्लिन तक अभियान किया था–शब्द अंकित है : "प्रिय साथी स्तालिन, एक सैनिक के रूप में, एक जनसेवक के रूप मे, एक से अधिक बार मैने आपकी सराहना प्राप्त की थी। आज शान्तिपूर्ण नागरिक जीवन मे, मै इस तरह काम कर रहा हूँ कि अब भी आपके सन्तोष का पात्र बन सकूँ। मै आपको अपना वचन देता हूं कि भविष्य मे भी साम्यवाद की जीत के लक्ष्य के लिए अपनी शक्तियों को लगाने मे, मैं उसी प्रकार कोई कसर नही उठा रखूंगा, जिस प्रकार कि जनता की खुशहाली के लिए अपनी शक्तियाँ लगाने मे आप कोई कसर नही उठा रखते।"

इस लिखावट पर 2 मार्च की तारीख पडी है। नेता की खतरनाक बीमारी की खबर मिलने से पहले की यह आखिरी लिखावट है। इसके बाद की लिखावटे साथी स्तालिन के जीवन के प्रति आशकाओ से भरी हे और उस आह्वान का देशभक्तिपूर्ण जवाब है, जो पार्टी तथा सरकार ने साम्यवाद के निर्माण के लिए अपनी पॉतों को और भी ज्यादा एकजुट बनाने के लिए किया था।

"आज 4 मार्च को, इस महान पवित्र स्थल मे, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार से प्रतिज्ञा करते है कि हम और भी ज्यादा निःस्वार्थ भाव से काम करेंगे, हम और भी ज्यादा सतर्क रहेंगे और हम स्तालिन द्वारा निर्धारित कामों को सम्मान के साथ पूरा करेंगे।"–इस लिखावट के नीचे दस्तखत है : 'शोतादूजे, चगुरिया।'

मार्च के इन दिनो मे बाहर से आए हुए अतिथियों की अनेक लिखावटें भी इसमे मौजूद है : "फ्रान्स के सूती कपडा मजदूरों का प्रतिनिधि-मडल–जिसने इस घर के दर्शन किए है, जहाँ कि साथी स्तालिन ने जन्म लिया था–अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा के प्रिय नेता की अडिग इच्छा और साहस की सराहना मे अपना मस्तक झुकाता है।"

6 मार्च को नई पक्तियाँ, मेहनतकश लोगों के दुःख और शोक से पूर्ण पक्तिया, आगन्तुको के इस रजिस्टर मे दर्ज हुई हैं : "यहाँ, जहाँ नेता ने पालन मे जीवन बिताया है, मै उनके निधन का शोक मनाता हूँ।"–कवि इराकली अबाशिदजे ने लिखा।

"मुझे यकीन नहा होता कि हमारे प्यारे स्तालिन की छवि को काले हाशिये ने घेर लिया है।"–एक सैनिक अफसर की पत्नी ओल्गा तिनियाकोवा ने लिखा।

बावजूद इसके कि उनका शोक गहरा था, सोवियत नर-नारियों ने साहस, दृढता और अपनी ताकत मे विश्वास से भरपूर पक्तियाँ लिखी। इस साहस, दृढ़ता और विश्वास का स्रोत सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति उनके गहरे प्रेम मे, पार्टी की बुद्धिमत्तापूर्ण नीति मे, उनके असीम भरोसे मे निहित है।

"साथी स्तालिन की सीख के मुताबिक, हम जियेंगे और काम करेंगे। पार्टी के नेतृत्व मे, हम स्तालिन द्वारा निर्देशित पथ पर, साम्यवाद के पथ पर आगे बढ़ना जारी रखेंगे।"–यही वह शपथ है, जो इस घर के दर्शन करने वाले तमाम सोवियत नर-नारियों ने ग्रहण की। यही शपथ अत्यधिक शक्तिशाली रूप मे, गोरी की फैक्टरियों, दफ्तरों और स्कूलों मे हुई शोक-सभाओं मे गूँजी।

युद्ध के बाद की पहली पचवार्षिक योजना के काल में स्थापित सूती कपडा मिल–जिसने अब मजदूरो की बड़ी बस्ती से युक्त भारी-भरकम कारखाने का रूप धारण कर लिया है–के भीमाकार बुनकर-विभाग के शान्त माँचो पर मिल के तमाम मजदूर और कर्मचारी जमा हुए। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमिटी और सोवियत सरकार को भेजे गये, अपने तार मे उन्होंने अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हुए, लिखा है : "हम अपनी प्रिय कम्युनिस्ट पार्टी के चारों ओर पॉतों को और भी ज्यादा घनिष्ठ रूप मे एकजुट

करेंगे, अपनी समाजवादी मातृभूमि की महान विजयो की हम सदा से और भी ज्यादा जागरूकता के साथ रक्षा करेंगे; उसकी ताकत को मजबूत बनाने के लिए हम सदा से और भी ज्यादा निःस्वार्थ भाव से काम करेंगे, ताकि साम्यवाद विजयी हो।"

4. अर्थी की अंतिम यात्रा

9 मार्च को, लेनिन के सघर्षो के साथी और उनके लक्ष्य को आगे ले जानेवाले महापुरुष, दुनिया के बुद्धिमान नेता और शिक्षक, योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन की अन्तिम यात्रा के समय सोवियत जनता और सारी प्रगतिशील मानवजाति उनका साथ दे रही थी।

मजदूर सघ-सदन का स्तम्भ भवन। विदा की अन्तिम घडियाँ। वातावरण मातमी सगीत की उदास धुन मे डूबा हुआ है। नेता की अर्थी के समीप केवल उनके सम्बन्धी और मित्र, पार्टी और सरकार के प्रमुख सदस्य, मत्री और दूसरे देशो की बिरादर कम्युनिस्ट मजदूर पार्टियो के नेता खड़े है। योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन के अन्तिम सस्कार मे शामिल होने के लिए आये हुए विदेशी सरकारो के प्रतिनिधि-मंडल और दूतावासो तथा विदेशी मिशनों के प्रमुख—जिन्हे उनकी सरकारो ने अन्तिम सस्कार के समय मौजूद रहने का आदेश दिया है,—सब अर्थी के समीप शोक मे खड़े है। हर दो-दो, तीन-तीन मिनटो बाद 'सम्मान-गारद' बदल रहे है।

सुबह के दस बजे। अर्थी के सम्मुख गारद के रूप मे महान स्तालिन के वफादार शिष्य और उनके सहकर्मी साथी, सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के नेता शोक मे खड़े होते है।

दस बजकर पाँच मिनट। साथी ग म मालन्कोफ, व म मोलोतोफ, न स ख्रुश्चेफ, न अ बुलगानिन, ल म कगानोविच और अ ई मिकोयान योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन की अर्थी को सावधानी से उठाये, धीरे-धीरे बाहर के दरवाजे की ओर बढते है। मजदूर-सघ-सदन मे शोक-मालाएँ उठा ली गई। सोवियत सघ के मार्शल और जनरल लाल मखमल के कुशनो पर रखे हुए स्तालिन के उपाधि-चिह्न और तमगे हाथो पर उठाये, आगे बढने लगे। ओखोतनीर्याद और मानेझनया चौक के किनारे-किनारे फौजी सन्तरी पाँव बाँधे खड़े है।

साथी स्तालिन की अर्थी धीरे से तोप गाडी पर रख दी गई। अर्थी के ऊपर सिर की तरफ, सोवियत सघ के परम सेनापति (जनरलिस्सिमो) की टोपी रखी है।

दिवगत पुरुष के परिवार के सदस्य, महान् नेता के सघर्षो के निकटतम साथी, पार्टी और सोवियत सरकार के नेता, सोवियत सेना के मार्शल, जनरल, दूसरे देशो और उनकी सरकारो के प्रतिनिधि मडलो के नेता, कूटनीतिक दलो और दूतावासो के व सब प्रमुख, जिन्हे उनकी सरकारो ने योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन के अन्तिम सस्कार मे भाग लेने का आदेश दिया था तथा बाहरी देशो के दूसरे प्रतिनिधि अर्थी के साथ साथ चल रहे है।

मातमी सगीत की उदास धुन बज रही है। सघीय गणतन्त्रो, स्वायत्त गणतन्त्रो, क्षेत्रो और प्रदेशो के प्रतिनिधि मडल मौजूद है। महान चीनी जनता और जनता के जनतत्रो के प्रतिनिधि, दूसरे देशो के प्रतिनिधि-मडल और प्रतिनिधि भी मौजूद है।

दूतावासो के सदस्य लाल मैदान के चबूतरे पर निस्तब्ध मुद्रा में खडे है। लाल मैदान मे मॉस्को के सैनिक रक्षक पाँत बाँधे मूर्तिवत् निश्चल खड़े है।

दस बजकर पैतालीस मिनट। अर्थी समाधि के सामने आकर रुकती है। सैनिक झडे झुका दिए जाते है—झडे जो महान् राष्ट्रीय युद्ध मे सोवियत सेना की अमर जीतो के गौरव से मडित हैं, उन जीतो के गौरव से जिन्हे सोवियत सेना ने सभी कालो और सभी राष्ट्रो के महानतम सेनापति, साथी यो. वि. स्तालिन के नेतृत्व मे प्राप्त किया था। तोप-गाडी से उठाकर, अर्थी को एक ऊँचे चबूतरे पर रख दिया जाता है। चबूतरा लाल और काले कपडो से ढँका है। पार्टी और सोवियत सरकार के नेता, दूसरे देशो और उनकी सरकारो के प्रतिनिधि-मडलो के नेता, कूटनीतिक दलो और दूतावासो के प्रमुख, बाहरी देशों की बंधु कम्युनिस्ट और मजदूर

पार्टियों के नेता—सब समाधि के चबूतरे पर खडे है।

दस बजकर बावन मिनट। अन्त्येष्टि कमीशन के अध्यक्ष, साथी न. स. ख्रुश्चेफ सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमिटी और मत्रिमडल की ओर से शोक-सभा को शुरू करते हैं। सोवियत सघ के मत्रिमडल के अध्यक्ष, सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमिटी के मत्री और सोवियत सघ के जनरलस्सिमो योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन के शोक मे सभा शुरू होती है।

ग्यारह बजकर चौवन मिनट। साथी न स ख्रुश्चेफ सभा समाप्त करते है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के नेता और बाहर के देशो की बधु कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के नेता समाधि से नीचे उतर आते है। अर्थी को उठाकर धीरे-धीरे समाधि के भीतर ले जाया जाता है—उस समाधि के भीतर, जिसके द्वार पर दो अत्यत ही प्रिय नाम अकित है : 'लेनिन, स्तालिन।'

तोपें तीस गोलो की सलामी देती है। उनकी गरज से जमीन कॉप उठती है। क्रेमलिन के स्पास्की घटाघर मे बारह बजता है। तीन मिनटों के लिए मॉस्को और समस्त सोवियत भूमि का वातावरण कारखानो, इजनो और जहाजो की सीटियो और भोपुओं की आवाजो से गूँज उठता है,—महान पिता और जनता के शिक्षक को मातृभूमि सलामी देती है। बाल्तिक के तट से लेकर कुरील द्वीपसमूह तक, सारी सोवियत भूमि मे तमाम कल कारखाने पॉच मिनटो के लिए काम रोककर निस्तब्ध हो जाते है। चलती हुई रेलें, जहाज और मोटर—सब जहॉ-के तहॉ खडे हो जाते है।

देश महान् क्षति पर शोक प्रकट कर रहा है, किन्तु स्तालिन का नाम और उनका उद्देश्य अमर है। जनता के हृदयों मे और कम्युनिज्म के लिए किए जानेवाले उनके कामों में स्तालिन हमेशा के लिए जीवित रहेंगे।

अन्तिम सस्कार के बाद, सोवियत सघ के राष्ट्र गीत के राजसी गम्भीर स्वर वायु मे गूँज उठते है।

पार्टी और सरकार के नेता फिर समाधि के चबूतरे पर खडे हो जाते है। समाधि के सामने से दृढतापूर्वक मार्च करती हुई फौज की टुकडियॉ गुजरती है। बहुत ऊँचे, आकाश मे, चौक के ऊपर सुव्यवस्थित आकार मे वायुयान उड रहे हैं। महान् नेता और सेनानायक योसेफ विस्सारियोनोविच को अन्तिम सैनिक श्रद्धाजलि अर्पित की जा रही है।

5. कुछ श्रद्धाजलियाँ

सोवियत सरकार ओर केन्द्रीय कमिटी की श्रद्धांजलि : प्यारे साथियो और दोस्तो! सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमिटी, सोवियत सघ की मन्त्रिपरिषद् और सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्ष-मडल गहनतम शोक के साथ, सोवियत सघ की पार्टी के सदस्यो और तमाम मेहनतकश जनता को सूचित करता है कि 5 मार्च की रात का 6 बजकर 50 मिनट (भारतीय समय—रात के 1 बजकर 20 मिनट) पर खतरनाक बीमारी के बाद, सोवियत सघ की मन्त्रिपरिषद् के अध्यक्ष और सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमिटी के महामन्त्री योसफ विस्सारियोनोविच स्तालिन का देहान्त हो गया है।

लेनिन के सहकर्मी, उनके उद्देश्यों को आगे ले जानेवाले, प्रतिभा पुज, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत जनता के बुद्धिमान नेता और शिक्षक, योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन के हृदय की धडकन बन्द हो गई है।

स्तालिन का नाम हमारी पार्टी के लिए, सोवियत जनता के लिए, तमाम दुनिया के मेहनतकशों के लिए, अत्यन्त प्यारा नाम है। लेनिन के साथ मिलकर, साथी स्तालिन ने कम्युनिस्टो की शक्तिशाली पार्टी खड़ी की, उसे पाला-पोसा और फौलादी बनाया। लेनिन के साथ साथ, साथी स्तालिन ने अक्तूबर की महान् समाजवादी क्राति को प्रेरणा दी, उसका नेतृत्व किया, दुनिया में सबसे पहले समाजवादी राज्य की स्थापना की। लेनिन के अमर उद्देश्य को आगे बढाते हुए, साथी स्तालिन ने हमारे देश मे समाजवाद को युगान्तरकारी जीतें हासिल करने मे सोवियत जनता की अगुआई की। साथी स्तालिन ने दूसरे महायुद्ध में फासिज्म के खिलाफ विजय पाने मे हमारे देश का नेतृत्व किया, जिसने समूची अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में आमूल परिवर्तन कर दिया। साथी

स्तालिन ने सोवियत संघ मे कम्युनिज्म के निर्माण के महान और स्पष्ट कार्यक्रम से पार्टी और समूची जनता को लैस किया।

साथी स्तालिन–जिन्होंने कि अपना सारा जीवन कम्युनिज्म की निःस्वार्थ सेवा के महान् उद्देश्य मे अर्पित कर दिया था–की मृत्यु पार्टी के, सोवियत संघ और सारी दुनिया की मेहनतकश जनता के लिए एक अत्यन्त गम्भीर क्षति है।

हमारे देश के मजदूरो, कलखोजी किसानो, बुद्धिजीवियों और तमाम मेहनतकशो के दिलों में, हमारी बहादुर सेना और नौसेना के वीरो के दिलो में, दुनिया के सभी देशो की करोडो मेहनतकश जनता के दिलों में साथी स्तालिन की मृत्यु की खबर गहरी पीडा का सचार करेगी।

शोक में डूबे हुए इन दिनों में हमारे देश म बसी सभी जातियों के लोग, लेनिन और स्तालिन की जन्माई तथा बढ़ी की हुई, कम्युनिस्ट पार्टी के परखे और कुन्दन बने नेतृत्व म अपने महान भ्रातृत्वपूर्ण परिवार के अन्दर और भी घनिष्ठता के साथ एकजुट हो रहे है।

सोवियत जन खुद अपनी कम्युनिस्ट पार्टी में अटूट विश्वास रखते हैं और उसके प्रति उनमे ज्वलत प्रेम के भाव है, क्योंकि वे जानते है कि पार्टी की सारी कार्रवाइयों का सर्वोच्च उद्देश्य जनता के हितों की सेवा करना ही है।

मजदूर, कलखोजी किसान, सोवियत बुद्धिजीवी, हमारे देश की समूची मेहनतकश जनता, अविचल रूप से हमारी पार्टी द्वारा बताई हुई नीति पर चलती है। यह नीति मेहनतकश जनता के बुनियादी हितो के अनुकूल है और इसका उद्देश्य हमारी समाजवादी जन्मभूमि की शक्ति को और मजबूत बनाना है। कम्युनिस्ट पार्टी की नीति की सच्चाई दसियो सालों के सघर्ष में परखी हुई सच्चाई है। उसने सोवियत देश की जनता का समाजवाद की ऐतिहासिक विजयो के पथ पर नेतृत्व किया है। इस नीति से अनुप्राणित हो, सोवियत सघ की सारी जनता के नेतृत्व म अपने देश म कम्युनिज्म के निर्माण म नई से नई सफलताएँ प्राप्त करने के लिए विश्वासपूर्ण आगे बढ़ रही है।

हमारे देश की जनता जानती है कि आजादी के सभी अशो–मजदूरो, कलखोजी किसानो, बुद्धिजीवियो की भौतिक समृद्धि और समुन्नति, सारे समाज की बराबर बढ़ती हुई भौतिक और सास्कृतिक आवश्यकताओ की पूर्णतम पूर्ति कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के विशेष ध्यान का केन्द्र रही है, और है।

सोवियत जनता जानती है कि सोवियत राज्य की रक्षा की क्षमता और शक्ति बढ़ती और बराबर मजबूत होती जा रही है। सोवियत सेना, नौसेना और अतरग सुरक्षा-सगठनो को पार्टी हर तरह से मजबूत बना रही है, ताकि किसी भी हमलावर को मुँहतोड जवाब देने की हमारी तैयारी मे निरतन्तर वृद्धि होती रहे।

कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सघ की सरकार की परराष्ट्र नीति हमेशा से शांति की रक्षा तथा मजबूती की दूसरा युद्ध की तैयारी और उसे छेड़ने के खिलाफ सघर्ष की, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सभी देशो से व्यापारिक सम्बन्धों के विकास की अटल नीति रही है, और है।

सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के झडे की वफादार, सोवियत सघ की जनता महान चीनी जनता तथा सभी जनवादी देशो की मेहनतकश जनता के साथ बन्धुतापूर्ण दोस्ती का और शाति, जनतत्र और समाजवाद के लिए लडती हुई पूँजीवादी तथा औपनिवेशिक देशों की मेहनतकश जनता के साथ मित्रता के सम्बन्धो को मजबूत बनाती हुई आगे बढ़ी है।

प्यारे साथियो और दोस्तो! दूसरी कम्युनिस्ट पार्टी कम्युनिज्म के निर्माण मे सोवियत जनता के सघर्ष का पथ-प्रदर्शन और निर्देशन करनेवाली महान् शक्ति है। पार्टी के पाँतो की वज्र एकता और अखण्ड एकबद्धता पार्टी की शक्ति और बल का मुख्य आधार है। हमारा कर्तव्य है कि पार्टी की एकता की आँख की पुतली की भाँति रक्षा करे, पार्टी की नीति और फैसलो को अमल मे लाने के लिए कम्युनिस्टों को सक्रिय राजनीतिक योद्धाओ के रूप में तैयार करे, तमाम मेहनतकश जनता के साथ मजदूरो, कलखोजी किसानो, बुद्धिजीवियों के साथ पार्टी के सम्बन्ध को और भी ज्यादा मजबूत बनाएँ; क्योंकि जनता के साथ इसी अटूट सम्बन्ध में हमारी

पार्टी की अजयता और शक्ति निहित है।

ऊँची राजनीतिक जागरूकता की भावना मे, भीतरी तथा बाहरी दुश्मनो के खिलाफ सघर्ष मे निर्ममता और अगद की भाँति डटे रहने की भावना मे कम्युनिस्टो और तमाम मेहनतकश जनता को दीक्षित करना पार्टी अपना एक कर्तव्य मानती है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमिटी सोवियत सघ की मत्रिपरिषद् और सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्ष मडल शोक से भरे इन दिनो मे पार्टी और जनता को सदेश देता हुआ अपना यह दृढ विश्वास प्रकट करता है कि हमारे देश की पार्टी और जनता केन्द्रीय कमिटी और सोवियत सरकार के चारो तरफ और भी घनिष्ठता से एकजुट होगी और हमारे देश मे कम्युनिज्म के निर्माण के महान उद्देश्य मे अपनी सारी ताकत और रचनात्मक सामर्थ्य लगा देगी।

स्तालिन का अमर नाम सोवियत जनता तथा सारी प्रगतिशील मानवता के दिलो मे सदा जीवित रहेगा।

मार्क्स एगेल्स लेनिन और स्तालिन की महान और सर्वजयी शिक्षा-जिन्दाबाद!

हमारी शक्तिशाली समाजवादी मातृभूमि-जिन्दाबाद!

हमारी बहादुर सोवियत जनता जिन्दाबाद!

सोवियत सघ की महान कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद!

5 मार्च 1953

ग म मालेन्कोफ की श्रद्धाजलि प्रिय कामरेडो साथियो और मित्रो! हमारे देश के प्रिय भाइयो हमारी पार्टी सोवियत जनता और समूची मानव जाति को गम्भीरतम कभी न पूरी होनेवाली क्षति सहनी पडी है। हमारे शिक्षक और नेता मानव जाति की महानतम प्रतिभा योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन की गौरवमय जीवन यात्रा का अन्त हो गया है।

इन कठिन दिनो मे समूची उन्नत और प्रगतिशील मानव जाति ने सोवियत जनता के गहरे शोक मे उसका साथ दिया है। स्तालिन का नाम सोवियत पुरुषो और स्त्रियो को दुनिया के सभी हिस्सो की व्यापकतम जनता को इतना प्यारा है कि उसकी कोई सीमा नही। सोवियत जनता और सभी देशो के मेहनतकश लोगो के लिए साथी स्तालिन ने जो काम किए है उनकी महानता और महत्त्व अकूत है। स्तालिन का लक्ष्य युग युग तक जीवित रहेगा और आनेवाली कृतज्ञ पीढियाँ ठीक हम सब लोगो की भाँति स्तालिन के नाम का गौरव गान करेगी।

साथी स्तालिन ने अपना जीवन शोषको के उत्पीडन और गुलामी से मेहनतकश वर्ग तथा तमाम मेहनतकश लोगो को मुक्त करने विनाशकारी युद्धो से मानव जाति को उबारने, मेहनत करनेवाले लोगो के वास्ते धरती पर आजाद और खुशहाल जीवन का निर्माण करने के सघर्ष के लिए अर्पित कर दिया है। साथी स्तालिन ने हमारे युग के इस महान विचारक ने नई ऐतिहासिक परिस्थितियो मे मार्क्सवाद लेनिनवाद की सीख का रचनात्मक विकास किया है। मानवता के समूचे इतिहास की महानतम विभूतियो के साथ-मार्क्स, एगेल्स लेनिन के साथ-स्तालिन का नाम लिया जाना सर्वथा उचित है।

हमारी पार्टी मार्क्सवाद लेनिनवाद की महान् सीख पर चलती है जो कि पार्टी और जनता को अजेय शक्ति तथा इतिहास मे नई लीके डालने की योग्यता प्रदान करती है।

फरारी (अण्डरग्राउण्ड) जीवन की कठिन परिस्थितियो मे, लेनिन और स्तालिन ने रूस के लोगो को निरकुश शासन के जुए से जमीदारो और पूँजीपतियो के उत्पीडन से मुक्त करने के लिए अनेक लम्बे सालो तक सघर्ष किया था। लेनिन और स्तालिन की अगुआई मे सोवियत जनता ने मानव जाति के इतिहास मे महानतम मोड लिया था, पूँजीवादी व्यवस्था को हमारे देश मे खतम कर एक नये पथ पर-समाजवाद के पथ पर-पाँव रखा था।

लेनिन के लक्ष्य को आगे बढाते हुए पार्टी तथा सोवियत राज्य के अग्रिम पथ को आलोकित करनेवाली सीख को बराबर विकसित करते हुए स्तालिन ने समाजवाद की युगातरकारी जीत हासिल करने

मे देश की अगुआई की है। इससे, मानव जाति के हजारो वर्षो के जीवन मे पहली बार मानव द्वारा मानव के शोषण का खात्मा सुनिश्चित हो गया है।

लेनिन और स्तालिन ने दुनिया मे मजदूरो और किसानो के पहले राज्य की हमारे सोवियत राज्य की नीव रखी थी। साथी स्तालिन ने सोवियत राज्य को मजबूत बनाने के लिए अनथक काम किया है। हमारे राज्य का ठोसपन और ताकत ही हमारे देश मे साम्यवाद के सफल निर्माण का बुनियादी आधार है।

यह हमारा पवित्र कर्तव्य है कि अनथक और हर प्रकार से अपने समाजवादी राज्य का, राष्ट्रो की सुरक्षा और शान्ति के दुर्ग का मजबूत बनाना जारी रखे।

साथी स्तालिन का नाम समाज के इतिहास की एक अत्यन्त पचीदा समस्या–जातियो के सवाल–के हल के साथ जुडा हुआ है। जातियो के सवाल के महानतम सिद्धान्तविद साथी स्तालिन ने इतिहास मे पहली बार एक सुविस्तृत बहुजातीय राज्य के भीतर युगो के पुराने जातीय वमनस्यो का पक्की तौर से खात्मा कर दिया है। साथी स्तालिन के निर्देशन मे, हमारी पार्टी ने पहले की उत्पीडित जातियो के आर्थिक और सास्कृतिक पिछडेपन को काबू मे किया सोवियत सघ की तमाम जातियो को एक बन्धुता के परिवार मे सयुक्त किया और जातियो की मित्रता को ढाला है।

हमारा यह पवित्र कर्तव्य है कि सोवियत देश मे बसी हुई जातियो की एकता और मित्रता की मजबूती को, बहुजातीय सोवियत राज्य की दृढता को और भी ज्यादा पक्की करे। हमारे देश की जातियो के बीच मित्रता के कायम रहते हुए हमे भीतरी या बाहरी किन्ही भी दुश्मनो से डरने की जरूरत नही।

साथी स्तालिन के प्रत्यक्ष निर्देशन मे ही सोवियत सेना जन्मी बढी और शक्तिशाली बनी है। साथी स्तालिन की निरन्तर लगन का लक्ष्य देश की रक्षात्मक क्षमता और सोवियत सैन्य बल को मजबूत बनाना था। महान् सेनानी जनरलस्सिमो स्तालिन की ही अगुआई मे सोवियत सैन्यबल ने दूसरे विश्वयुद्ध मे इतिहास निर्माणकारी जीत हासिल की और यूरोप तथा एशिया के लोगो को फासिस्टी गुलामी के खतरे से मुक्त किया है।

हमारा यह पवित्र कर्तव्य है कि शक्तिशाली सोवियत सैन्यबल को हर प्रकार से मजबूत बनाये। दुश्मन के किसी भी आक्रमण का मुहतोड जवाब देने के लिए जरूरी है कि उन्हे युद्ध तत्परता की स्थिति मे रखा जाये।

साथी स्तालिन की अनथक कोशिशो के फलस्वरूप उन योजनाओ के मुताबिक जो कि उन्होने बनाई थी हमारी पार्टी ने पहले के एक पिछडे हुए देश को एक शक्तिशाली उद्योग और कलखोजी (सामूहिक) कृषि का राज्य बना दिया है सकटो और बेकारी से मुक्त एक नई आर्थिक व्यवस्था का निर्माण किया है।

हमारा यह पवित्र कर्तव्य है कि समाजवादी मातृभूमि की निर्बाध प्रगति को और भी ज्यादा सुनिश्चित बनाएं। जरूरी है कि हम हर प्रकार से अपने देश की ताकत और ठोसपन के मुख्य आधार–समाजवादी उद्योग–को विकसित करे। जरूरी है कि हम सामूहिक खेती की व्यवस्था को मजबूत बनाएँ सोवियत देश के तमाम कलखोजो की बेरोक उन्नति और खुशहाली के लिए और भी ज्यादा कोशिश करे मेहनतकश वर्ग और सामूहिक किसानवर्ग के गठबन्धन को पक्का बनाएं।

गृह नीति मे मजदूरो सामूहिक किसानो बुद्धिजीवियो–सारे सोवियत जनो की आर्थिक खुशहाली मे और भी ज्यादा सुधार के लिए निश्चित गति से कोशिश करना हमारा मुख्य काम है। लोगो की खुशहाली का ध्यान रखना उनकी आर्थिक और सास्कृतिक जरूरतो की पूर्णतम पूर्ति करना, हमारी पार्टी और सरकार का कानून है।

लेनिन और स्तालिन ने हमारी पार्टी को कायापलट करनेवाली एक महान शक्ति के रूप मे रचा और ढाला था। जीवन पर्यन्त साथी स्तालिन ने हमे सिखाया है कि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य की उपाधि से ऊँची और कोई भी चीज नही है। दुश्मनो के खिलाफ अनवरत सघर्ष मे साथी स्तालिन ने पार्टी की एकता और अखड एकबद्धता को ऊँचा उठाया था।

हमारा यह कर्तव्य है कि हम महान् कम्युनिस्ट पार्टी को मजबूत बनाने का काम जारी रखे। हमारी पार्टी

की ताकत और अजेयता उसकी पाँतो की एकता और जुडाव मे, सकल्प और क्रियात्मक एकता मे, पार्टी के सकल्प और इच्छाओं के साथ अपने सकल्प और इच्छाओ का विलय करने की पार्टी-सदस्यो की योग्यता में निहित है। हमारी पार्टी की ताकत और अजेयता आम जनता के साथ उसके अटूट नाते मे निहित है। पार्टी द्वारा जनता के हितो की निरन्तर सेवा की नीव पर पार्टी और जनता की एकता टिकी है। जरूरी है कि हम पार्टी की एकता की ऑख की पुतली की भाँति रक्षा करे, जनता के साथ पार्टी के अटूट नाते को और भी ज्यादा पक्का बनाएँ, कम्युनिस्टो और तमाम मेहनतकश लोगो को ऊँची राजनीतिक जागरूकता की भावना मे, भीतरी और बाहरी दुश्मनो के खिलाफ सघर्ष मे दृढता और कभी न झुकने की भावना मे शिक्षित करे।

महान् स्तालिन के निर्देशन मे शाति, जनतत्र और समाजवाद के एक शक्तिशाली खेमे का निर्माण हो गया है। इस खेमे मे सोवियत जनता के साथ-साथ, घनिष्ट बधुतापूर्ण एकता मे, चीन की महान् जनता, पोलैण्ड, चैकोस्लोवाकिया, बुलगारिया, हगरी, रूमानिया, अलबानिया, जर्मन जनवादी जनतन्त्र, मगोलिया-जनता के सभी गणतन्त्रो के भाईचारे पूर्ण लोग आगे बढ रहे है। कोरिया की वीर जनता जुझारू लडाइयो मे अपनी मातृभूमि की आजादी की रक्षा कर रही है। वियतनाम के लोग अपनी आजादी और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए साहस के साथ सघर्ष कर रहे हैं।

हमारा यह पवित्र कर्तव्य है कि लोगों के-शान्ति, जनतत्र और समाजवाद के खेमे के-महानतम लाभ की रक्षा करे और उसे मजबूत बनाये, जनवादी खेमे के देशों के लोगो की मित्रता और एकजुटता के नातो को दृढ करे। जरूरी है कि हम हर प्रकार से महान् चीनी जनता के साथ, जनता के सारे गणतंत्रों के मेहनतकश लोगों के साथ, सोवियत सघ की चिरतन और अनुल्लघनीय बन्धुत्वपूर्ण मित्रता के नाते को सुदृढ बनाएँ।

सभी देशो के लोग जानते है कि साथी स्तालिन शान्ति के महान् अलमबरदार थे। साथी स्तालिन ने सभी देशों के लोगो को ऊँचा उठाने मे अपनी प्रतिभा की महानतम कोशिशो को लगाया था। सोवियत राज्य की परराष्ट्र नीति, राष्ट्रो के बीच शान्ति और मित्रता की नीति, एक दूसरे युद्ध के फूट पडने के रास्ते मे एक निर्णायक रुकावट है और सभी राष्ट्रो के बुनियादी हितो के साथ मेल खाती है। सोवियत सघ ने शान्ति के लक्ष्य की पूरी हिमायत की है और करता है, क्योंकि उसके हित विश्व-शान्ति के लक्ष्य से अभिन्न है। सोवियत सघ ने शान्ति को कायम रखने और मजबूत बनाने की अडिग नीति का, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सभी देशो के साथ व्यापारिक सम्बन्ध विकसित करने की नीति का-एक ऐसी नीति का, जो लेनिन-स्तालिन की इस स्थापना से निकली है कि दो भिन्न व्यवस्थाओ (पूँजीवादी और समाजवादी व्यवस्थाओ) के लम्बे अर्से तक एक साथ बने रहने और शातिपूर्ण प्रतियोगिता करने की सम्भावना है-अनुसरण किया है और करता है।

महान् स्तालिन ने हम जनता के हितो की सेवा के प्रति असीम भक्ति की भावना मे बडा किया है। हम जनता के सच्चे सेवक है, जनता शान्ति चाहती है, युद्ध से घृणा करती है। करोडो के रक्त की होली को रोकने और खुशहाल जीवन के शातिपूर्ण निर्माण की गारटी करने की लोगों की इच्छा, हम सबकी पवित्र इच्छा हो।

परराष्ट्र नीति मे, एक दूसरे युद्ध को रोकना और तमाम देशों के साथ शान्ति से रहना हमारा मुख्य काम है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की नजर मे परस्पर विश्वास पर आधारित सभी राष्ट्रों के बीच की शान्ति-जो कि तथ्यो पर आधारित और तथ्यों मे पुष्ट एक कारगर नीति है-अत्यन्त सही, जरूरी और न्यायपूर्ण परराष्ट्र नीति है। जरूरी है कि सरकारे सच्चाई के साथ अपने लोगो की सेवा करे। लोग शान्ति के प्यासे है, युद्ध को कोसते हैं। वे सरकारे जो लोगों को धोखा देना चाहेगी और शाति को कायम रखने तथा एक दूसरे विनाश को रोकने की पवित्र इच्छा के खिलाफ जायेगी, अपराधी होंगी। कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार मानती है कि राष्ट्रों के बीच शाति की नीति ही एकमात्र सही नीति है, जो तमाम लोगों के बुनियादी हितो के साथ मेल खाती है।

साथियो, हमारे नेता और शिक्षक महान् स्तालिन की विदाई तमाम सोवियत नर-नारियो को कर्तव्यबद्ध करती है कि वे सोवियत जनता के सामने प्रस्तुत शानदार कामो की पूर्ति मे अपनी कोशिशों को दुगुना-चौगुना

बढ़ाएँ, साम्यवादी समाज के निर्माण के सामूहिक लक्ष्य मे और भी ज्यादा भारी योग दें, हमारी समाजवादी मातृभूमि की ताकत और प्रतिरक्षा की क्षमता और भी ज्यादा मजबूत बनाएँ।

सोवियत सघ के मेहनतकश लोग देखते और समझते है कि हमारी शक्तिशाली मातृभूमि नई से नई सफलताओ की ओर बढ़ रही है। पूर्ण साम्यवादी समाज के निर्माण के लिए जरूरी हर चीज हमारे पास है।

अपनी अक्षय ताकतो और क्षमताओ मे दृढ़ विश्वास के साथ, सोवियत जनता साम्यवाद के निर्माण के महान् लक्ष्य को कार्य मे उतार रही है। दुनिया मे ऐसी कोई ताकत नही है, जो सोवियत समाज की साम्यवाद की ओर प्रगति को रोक सके।

विदा, हमारे शिक्षक और नेता, हमारे प्रिय मित्र, हमारे अपने साथी स्तालिन, विदा!

लेनिन और स्तालिन के महान लक्ष्य की पूर्ण विजय के पथ पर आगे बढ़ो!

माओ त्से-तुग की श्रद्धाजलि . हमारे युग के महानतम प्रतिभाशाली व्यक्ति साथी योसेफ विस्सारियोनोविच स्तालिन जो दुनिया के कम्युनिस्ट आन्दोलन के महान् शिक्षक और अमर लेनिन के सहयोगी थे, हमसे सदा के लिए बिछुड़ गये है।

सिद्धान्त और अमल दोनो ही के क्षेत्रो मे उनके कार्यो के जरिये हमारे युग को साथी स्तालिन की जो देन रही है, वह अद्भुत है। स्तालिन हमारे इस पूरे नये युग के प्रतिनिधि है। यह उनके कार्यो का ही परिणाम है कि सोवियत जनता और सभी देशो की मेहनतकश जनता ने समूची दुनिया की परिस्थिति बदल दी है। इसका मतलब है कि न्याय, जनवादी जनतन्त्र और समाजवाद के ध्येय ने दुनिया के एक विशाल भूभाग पर—जिस पर पृथ्वी की एक तिहाई से ज्यादा आबादी 80 करोड़ जनता बसती है—विजय प्राप्त कर ली है। जैसे जैसे दिन गुजरते जाते है वैसे ही उस ध्येय की विजय का असर पृथ्वी के हर कोने मे फैलता जा रहा है।

साथी स्तालिन की मृत्यु से सारी दुनिया की मेहनतकश जनता अथाह शोक मे डूब गई है। सारे ससार के ईमानदार लोगो के दिल दर्द से भर गये है। यह बात बताती है कि साथी स्तालिन के ध्येय और उनके विचारो ने सारी दुनिया की विशाल जनता को अत्यधिक प्रभावित किया है और वे एक अजेय शक्ति बन गई है जो विजयी देशो की जनता को नई से नई विजयो की तरफ ले जा रही है और जिन देशो की जनता अभी भी पुरानी, कालिमाग्रस्त पूँजीवादी दुनिया के उत्पीड़न के नीचे कराह रही है उसे वह इतनी सामर्थ्य देगी कि वह भी अपने दुश्मनो पर हिम्मत के साथ प्रहार कर सके।

लेनिन के निधन के बाद स्तालिन ने जनता का पथ प्रदर्शन किया। जिसे पहले समाजवादी राज्य को अक्तूबर क्रांति के दिनो मे उन्होने अमर लेनिन के साथ मिल कर जन्म दिया था, उन्होने उसका निर्माण किया और उसे एक शानदार समाजवादी समाज बना दिया।

सोवियत समाजवादी निर्माण की विजय अकेली सोवियत जनता की विजय नही है वह सारी दुनिया की जनता की भी विजय है। एक तो इस विजय ने जिन्दगी मे मार्क्सवाद लेनिनवाद की पूर्ण सच्चाई को साबित कर दिया है सारी दुनिया की मेहनतकश जनता को प्रत्यक्ष रूप से सिखा दिया है कि वह सुखी जीवन की तरफ कैसे बढ़े। दूसरे इस विजय ने मानव जाति को दूसरे विश्व युद्ध मे फासिस्ट राक्षसो पर विजय प्राप्त करने की शक्ति दी है। सोवियत समाजवादी निर्माण की इस विजय के बिना फासिस्ट-विरोधी युद्ध मे विजय प्राप्त की जा सकती थी इसकी कल्पना भी नही की जा सकती। सोवियत सघ मे समाजवादी निर्माण की विजय का और फासिस्ट विरोधी युद्ध मे विजय का मानव जाति के भविष्य से सीधा सम्बन्ध है। और, इन विजयो का श्रेय सचमुच ही महान् स्तालिन का है।

साथी स्तालिन ने मार्क्सवाद लेनिनवाद के सिद्धान्तो का अधिकारपूर्वक और सागोपाग विकास किया। उन्होने मार्क्सवाद को एक नई मजिल पर पहुँचाया। पूँजीवाद के असमान विकास और एक देश मे समाजवाद की विजय की सम्भावना के लेनिनवादी सिद्धान्तो का साथी स्तालिन ने रचनात्मक रूप मे विकास किया। पूँजीवादी व्यवस्था के आम सकट के सिद्धान्त को और सोवियत सघ मे कम्युनिज्म के निर्माण के सिद्धान्त को साथी स्तालिन ने रचनात्मक रूप मे सम्पन्न बनाया। आधुनिक पूँजीवाद के बुनियादी आर्थिक नियम की और समाजवाद

के बुनियादी आर्थिक नियम की उन्होने खोज की और उसे साबित किया। उपनिवेशों की क्राति के सिद्धान्त को उन्होंने समृद्ध बनाया। साथी स्तालिन ने पार्टी के निर्माण के लेनिनवादी सिद्धान्त का भी रचनात्मक तरीके से विकास किया। साथी स्तालिन के इन सब कामो ने सारी दुनिया के मजदूरो को और भी ज्यादा एकजुट किया, सारी दुनिया की सारी उत्पीडित जनता को और भी ज्यादा एकजुट किया। इस तरह, उन्होने दुनिया के मजदूरवर्ग और तमाम उत्पीडित जनता को मुक्ति और खुशहाली के सघर्ष के लिए समर्थ बनाया और सघर्ष मे उसे अभूतपूर्व विजएँ प्राप्त हुई।

साथी स्तालिन की सभी रचनाएँ मार्क्सवाद को उनकी अमर देने है। 'लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त', 'सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास' और उनकी अन्तिम महान रचना 'सोवियत सघ मे समाजवाद की आर्थिक समस्याएँ'–सभी मार्क्सवाद-लेनिनवाद के ज्ञान कोष है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 19वी काग्रेस में उनका भाषण दुनिया के सभी देशो के कम्युनिस्टो के लिए अमूल्य, पवित्र आदेश है। दुनिया के सभी देशों के कम्युनिस्टो की तरह, हम चीनी कम्युनिस्ट भी साथी स्तालिन की महान रचनाओ के प्रकाश मे अपनी विजय का मार्ग पाते हैं।

लेनिन के निधन के बाद मे, साथी स्तालिन ही हमेशा दुनिया के कम्युनिस्ट आन्दोलन के मुख्य व्यक्ति रहे है। हम उनके इर्द गिर्द एकजुट हुए। हमने निरन्तर उनकी सलाह ली और बराबर उनकी रचनाओ से सैद्धान्तिक शक्ति प्राप्त की।

साथी स्तालिन के हृदय मे पूर्व की उत्पीडित जनता के लिए अगाध स्नेह था। 'पूर्व को मत भूलो'– अक्तूबर क्राति के बाद, साथी स्तालिन का यही महान आह्वान था।

सभी लोग जानते है कि चीनी जनता के लिए साथी स्तालिन के दिल मे गहरा प्रेम था और वह चीनी क्राति की शक्ति को अकूत मानते थे। उन्होंने अपनी महान् बुद्धिमता से चीनी क्राति की समस्याओ को सुलझाने मे मदद की। लेनिन तथा स्तालिन के सिद्धान्तो पर अमल करके और महान् सोवियत सघ तथा दूसरे सभी देशो की सभी क्रातिकारी शक्तियो की मदद से ही, कुछ बरसो पहले चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी जनता ने ऐतिहासिक विजय प्राप्त की है।

अब हमारे महान् शिक्षक, हमारे सबसे सच्चे दोस्त साथी स्तालिन हमारे बीच मे नही रहे। यह कैसा वज्रपात हुआ है! दुर्भाग्य के इस तरह फट पड़ने से, हमे जो दुःख हुआ है उसे व्यक्त करने के लिए शब्द नही है।

हमारा कर्तव्य है कि हम इस दुख को शक्ति मे बदल दे। अपने महान् शिक्षक स्तालिन की स्मृति मे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी जनता तथा सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत जनता के बीच साथी स्तालिन के नाम पर जो महान मित्रता मौजूद है उसे हम असीम रूप से शक्तिशाली बनायेंगे। अपने देश का निर्माण करने के लिए, चीनी कम्युनिस्ट और चीनी जनता स्तालिन के सिद्धान्तो का और सोवियत विज्ञान तथा कौशल का और भी जोरो से अध्ययन करगी।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी, जिसे खुद लेनिन और स्तालिन ने बडा किया दुनिया की सबसे आगे बढी हुई, सबसे ज्यादा अनुभवशील और सैद्धान्तिक दृष्टि से सबसे ज्यादा लैस पार्टी है। यह पार्टी हमारे लिए आदर्श थी, अब भी है, भविष्य मे भी बनी रहेगी। हमे पूरा विश्वास है कि सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमिटी और सोवियत सरकार, जिसके नेता साथी मालेन्कोफ है, कम्युनिज्म के महान् ध्येय को आगे बढाने और अधिक शानदार कामयाबियाँ हासिल करने के सम्बन्ध मे साथी स्तालिन के आदेशो को पूरा करने मे अवश्य सफल होगी।

इस बात मे कोई भी सन्देह नही है कि सोवियत सघ के नेतृत्व मे चलनेवाला शान्ति, जनवाद और समाजवाद का विश्व-पक्ष और भी अधिक एकजुट तथा और भी अधिक शक्तिशाली होगा।

पिछले 30 बरसो मे, साथी स्तालिन के सिद्धान्तो और सोवियत समाजवादी निर्माण के उदाहरण की बदौलत दुनिया ने जबर्दस्त प्रगति की है। आज सोवियत सघ इतना शक्तिशाली हो गया है, चीनी जन-क्राति ने ऐसी

महान् विजय हासिल कर ली है, जनता के विभिन्न लोकतन्त्रों ने अपने निर्माण-कार्य में ऐसी महान् सफलताएँ प्राप्त कर ली हैं, उत्पीड़न तथा आक्रमण के खिलाफ सारी दुनिया की जनता का आन्दोलन इतनी बुलन्दियों पर पहुँच गया है और मित्रता तथा सहयोग का हमारा मोर्चा इतना शक्तिशाली बन गया है कि हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हम किसी भी साम्राज्यवादी हमले से नहीं डरते। हम किसी भी साम्राज्यी हमले को धूल में मिला देंगे, तमाम घृणित उकसावे एकदम असफल साबित होंगे।

चीन और सोवियत संघ की जनता की महान मित्रता अटूट है; क्योंकि उसका आधार मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के अन्तर्राष्ट्रीयता के महान सिद्धान्त हैं। चीनी जनता, सोवियत जनता, विभिन्न जन-लोकतन्त्रों की जनता और दुनिया के सभी देशो में शान्ति, जनवाद तथा न्याय को प्यार करनेवाली तमाम जनता की दोस्ती का आधार भी अन्तर्राष्ट्रीयता का यही महान् सिद्धान्त है। इसलिए, वह अटूट है।

साफ जाहिर है कि इस मित्रता में जन्मी हुई शक्तियाँ असीम, सक्षम और वास्तव में अजेय हैं।

तमाम साम्राज्यी हमलेवर और जगवाज हमारी महान् मित्रता के आगे थर थर काँप रहे है।

मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की शिक्षाएँ जिन्दाबाद!

महान स्तालिन का अमर नाम युग युग तक चिरजीवी हो!

श्रीमती सनयात् सेन की श्रद्धांजलि : हम उसे खो बैठे है, जो महान प्रतिभाशाली क्रान्तिकारी रचयिता था, लम्बे सघर्ष की आग मे इस्पात बना था, जिसमे अदम्य भावना शक्ति थी और जो ऊँचे सिद्धान्तोवाला तथा तमाम उत्पीड़कों का कट्टर दुश्मन था। स्तालिन के भीतर जलनेवाली क्रान्ति की लौ इतनी प्रखर थी कि उनके लिए जिन्दगी का बस एक ही कानून था—जनता की सेवा करना। इतने बरसों तक क्रैमलिन के अपने कमरे से, उन्होंने न सिर्फ निर्माण करने और सारी मानव जाति के भविष्य की गारटी करने मे सोवियत जनता का नेतृत्व किया, बल्कि सभी उत्पीडितो के लिए भी—फिर वे चाहे कितनी ही दूर क्यों न बसते हो—गहरी सहानुभूति दिखाई है।

हम उसे खो बैठे है, जो शान्ति का सबसे बड़ा झडाबरदार था। स्तालिन ने दुनिया को एक नई जिन्दगी का रास्ता दिखाया—सचाई और ईमानदारी की जिन्दगी का, जो सीधी और स्पष्ट है, आदमियो और औरतो के लिए, तमाम जनता के लिए और तमाम राज्यो के लिए समान है और जो ऐसी जिन्दगी है जिसने राष्ट्रों के बीच के सम्बन्धों को ऐसी मित्रता के आधार पर कायम किया है, जैसी इतिहास में पहले कभी भी मौजूद न थी।

सचमुच हमने बहुत कुछ खो दिया है। मगर, आगे हमारी प्रगति के लिए स्तालिन ने हमे निःशस्त्र नही छोड़ा है। उनकी समूची जिन्दगी और काम ने हमें इतना लैस कर दिया है कि उनके पूर्वगामियो और खुद उनकी उच्चतम आशाओ को हम पूरा करे।

उनके ध्येय को आगे बढ़ाना हमारा कर्तव्य है। तमाम प्रगतिशील मानव जाति को जागरूक होना चाहिए। स्तालिन की पार्टी और महान् सोवियत जनता के चौगिर्द हमे एकजुट होना चाहिए।

'स्तालिन के लिए'—यही वह झडा है, जिसके तले अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग की विजय हासिल करनी है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू की श्रद्धांजलि : मार्शल स्तालिन अब नहीं रहे। अभी दो दिन पहले ही, हमने उनकी सख्त बीमारी की खबर सुनी थी। सिर्फ दो या तीन हफ्ते पहले ही, हमारे मॉस्को-स्थित राजदूत ने उनसे मुलाकात की थी और जब हमारे राजदूत द्वारा भेजी हुई इस मुलाकात की रिपोर्ट मैं पढ़ ही रहा था, तो मुझे मार्शल स्तालिन की सख्त बीमारी की सूचना मिली। हमारे राजदूत के मिलने पर, उन्होने अपने-आपको शान्ति का हामी बतलाते हुए यह ख्वाहिश जाहिर की थी कि दुनिया की शान्ति भंग नही होनी चाहिए। उन्होंने हिन्दुस्तान के लिए अपनी सद्भावना प्रकट की थी और हमारे मुल्क तथा हममे से कुछ लोगों के लिए अपनी शुभकामनाएँ भी भेजी थीं। यह बात और भी दिलचस्प है कि उन्होने हमारी बहुत-सी सांस्कृतिक समस्याओं के बारे में भी बातचीत की थी। इस बारे मे उनकी काफी जानकारी है, यह देखकर हमारे राजदूत को थोड़ा ताज्जुब भी हुआ। उन्होने हिन्दुस्तान की भिन्न-भिन्न भाषाओं, उनकी उत्पत्ति, उनके पारस्परिक सम्बन्धों और उनके बोले

जाने के क्षेत्रों के बारे में बातचीत की थी।

जब हम मार्शल स्तालिन के बारे मे सोचते हैं, तो हमारे—कम-से-कम मेरे—दिमाग के सामने कई विचार आ जाते हैं और पिछले पैंतीस वर्षों के इतिहास की घटनावली जैसे आँखो के सामने आ जाती है। हम सब इसी युग की सन्तान हैं और हम पर अनेक प्रकार से इसका असर भी पड़ा है। इस दौरान में हम न सिर्फ अपने देश में ही संघर्ष करके बड़े हुए है, दुनिया के दूसरे हिस्सो में होनेवाले ताकतवर सघर्षों ने भी हम पर अपना असर डाला है। इन पैंतीस वर्षो की घटनाओ पर नजर डालने से कई उल्लेखनीय व्यक्तित्व सामने आते है। पर, शायद कोई भी ऐसा दूसरा व्यक्तित्व नजर नही आता, जिसने मार्शल स्तालिन की तरह इन वर्षो के इतिहास को इतना प्रभावित किया और बनाया हो। धीरे-धीरे वे कथा-कहानियों के नायक की तरह बन गये। कभी एक रहस्यमय व्यक्ति के रूप मे और कभी असख्य लोगो के साथ घनिष्ठ सबध रखनेवाले व्यक्ति के रूप मे वे सामने आये। शान्ति और युद्ध दोनो मे ही, उन्होने अपने-आपको महान साबित किया। उन्होने जिस दुर्गम इच्छा-शक्ति और असाधारण साहस का परिचय दिया, कम ही लोगो मे होते है। जब इस काल का इतिहास लिखा जायगा, तो उनके बारे मे तरह तरह की बाते कही जायंगी और पता नही, आनेवाली पीढियाँ क्या राय कायम करेंगी; पर इस बात से तो सभी सहमत होगे कि मार्शल स्तालिन एक बहुत बडे व्यक्तित्व वाले आदमी थे, जिन्होने अपने युग के भाग्य का निर्माण किया। यद्यपि उन्हे लडाई मे ही काफी सफलता मिली, पर उन्हे सबसे ज्यादा तो इसलिए याद किया जायगा कि उन्होंने अपने देश को महान् बनाया है।

उन्होंने जो कुछ कहा या किया, उसकी इस सचाई से कोई इन्कार नही कर सकता कि उन्होने रूस को महान् बनाया, जो कि एक बहुत बडी कामयाबी है। इसके अलावा, वे न सिर्फ अपने मुल्क की मौजूदा पीढ़ी मे ही काफी प्रसिद्ध और लोकप्रिय थे, बल्कि वे काफी बडी तादाद मे दुनिया के इन्सानो के साथ घनिष्ठ सम्पर्क भी रखते थे। यह बात बहुत ही कम लोगो के बारे में कही जा सकती है। देश और विदेश के बहुसख्यक लोग उनसे बडे ही घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण भाव से सम्बद्ध थे। मै ऐसे लोगो को भी जानता हूँ जो मार्शल स्तालिन से इस घनिष्ठ सम्बन्ध के बावजूद, बहुत-सी बातो और कार्यो मे सहमत नही थे। उन्होने मुझे बताया कि जिस घनिष्ट मैत्री भाव मे वे मार्शल स्तालिन के साथ सम्बद्ध थे, उसके साथ इस तरह का मतभेद बडा अरुचिकर लगता था। ऐसे लोगों मे रूस और बाहरी देशों के वे लोग भी है, जिन्होंने स्तालिन को सिर्फ देखा-भर था और उनके बहुत नजदीक नही गये थे। इस तरह स्तालिन एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होने एक तरफ इतिहास के इस अशान्त समय मे से सफलतापूर्वक गुजरने की चेष्टा की और दूसरी तरफ, अगणित मनुष्यो की मुहब्बत और तारीफ भी हासिल की। वे अपने किन कामो में सफल हुए और किन मे उन्होने गलतियाँ की, इस बारे मे मुख्तलिफ लोगो की मुख्तलिफ राये हो सकती है, मगर यह तो सभी मजूर करेंगे कि उनका व्यक्तित्व महान् था और वैसी ही बुलन्द उनकी कामयाबियाँ भी थी।

आज उनके निधन पर, हम उनके प्रति अपनी श्रद्धा का इजहार कर रहे है, यह न सिर्फ एक महान् व्यक्ति की जिन्दगी के खतम होने का मौका है, बल्कि एक तरह से इतिहास के एक युग की समाप्ति भी है। वैसे इतिहास का काम तो जारी ही है और उसे मुख्तलिफ टुकडो मे बाँटना गलत होगा—जैसा कि हमारे इतिहासकार और दूसरे लोग किया करते है। इतिहास तो बराबर ही आगे बढता है, पर उसके कुछ खास युग खतम हो जाते हैं और फिर नये रूप मे नये सिरे मे जिन्दगी शुरू होती है। पर, जो अत्यन्त महान् व्यक्ति अपने-आपको युग-विशेष का प्रतीक बना लेता है, उसके निधन से ऐसा मालूम होता है, मानो वह युग ही खतम हो गया है। मै नही कह सकता कि भविष्य का फैसला क्या होगा, पर इस बात मे कोई शक नही कि जो जबर्दस्त असर लोगों के दिलों और दिमागों पर मार्शल स्तालिन का है, वह उनकी मौत के बाद भी कायम रहेगा और लोग उनसे प्रेरणा लेते रहेंगे।

बहुत-से लोगो ने—जिनमे से कई ऐसे भी हैं, जो दुनिया मे उनके बडे विरोधियों के रूप में मशहूर हो चुके हैं—भिन्न-भिन्न ढग से स्तालिन के बारे मे अपना मत जाहिर किया है। अक्सर ये बाते परस्पर विरोधी भी होती है। कुछ लोगो ने उन्हे बड़ा ही बेतकल्लुफ और भला आदमी बतलाया है, जबकि दूसरों ने बडा ही

[illegible] और बेरहम। हो सकता है, ये सारी बातें उनमे रही हो, पर इनके वावजूद इसमे कोई शक नहीं कि वे एक महान् व्यक्ति थे।

हालांकि संविधान की रू से मार्शल स्तालिन सोवियत राष्ट्र के मुखिया नही थे, लेकिन वैसे वे राष्ट्र के **मुखिया से कहीं अधिक थे।** वे अपने अधिकार से ही महान् थे, भले ही वे किसी ओहदे पर हों या न हो। **मेरा विश्वास है कि** उन्होंने अपने असर का इस्तेमाल हमेशा शान्ति के हक मे ही किया है। पर जब जग छिडी, **तो उसमें भी वे** एक महान योद्धा साबित हुए। लेकिन, जहाँ तक मेरी जानकारी है उसके आधार पर, मै यही **कह सकता हूँ कि** अशाति और सघर्ष की इस दुनिया मे उन्होने अपने प्रभाव का इस्तेमाल हमेशा शान्ति के **पक्ष मे ही किया।** मुझे यह पक्की उम्मीद है कि जिस प्रभाव का इस्तेमाल उन्होंने शान्ति रक्षा के लिए किया, **वह उनकी** मृत्यु के बाद भी शान्ति के लिए ही काम मे लाया जायेगा। ऐसा करने मे, मुझे उम्मीद है कि **मुख्तलिफ** मुल्को के लोगो के दिमागो मे आज जो एक दिमागी तनहाई की हालत पैदा हो रही है, वह कम **होगी।** जिस तनाव के साथ आज के मसलो का हल करने की कोशिश की जा रही है, लम्बी-लम्बी बहसे होती **है,** उन मसलो के हल की दिशा मे ज्यादा समझदारी और सहयोग की भावना से काम होगा, ताकि मार्शल स्तालिन की मौत हम इस बात की ओर ज्यादा प्रेरणा दे सके कि आज की अशात दुनिया को पहले से भी कही ज्यादा शान्ति की जरूरत है और हम सबको मिलकर, उसे नई दुर्घटनाओ से बचाना चाहिए।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्ण की श्रद्धांजलि : स्तालिन की यह हार्दिक आकाक्षा थी कि मृत्यु के रूप मे वे अपने देश से उसी समय विदा ले, जबकि उनका देश किसी खतरे मे नही, बल्कि पूर्ण शान्ति की अवस्था मे हो। कहना न होगा कि उनकी इच्छा सचमुच परिपूर्ण हुई है। मुझे आशा है, स्तालिन के उत्तराधिकारी भी शान्ति-रक्षा के लिए भरसक चेष्टा करेगे और राष्ट्रो के आपसी सम्बन्धो को अधिकाधिक मैत्रीपूर्ण बनाएँगे। अपने ढाई वर्ष के राजदूत काल मे, भारत के राजदूत की हैसियत से मॉस्को मे मार्शल स्तालिन से भेंट करने पर, उन्होने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप मे कभी भी यह सकेत नही किया कि मौजूदा सघर्ष मे भारत सोवियत सघ का साथ दे।

तेहरान मे हुई चार महान् राष्ट्रो के नेताओ की कान्फरेस मे, चर्चिल ने कहा था कि रूस के इतिहास की महानतम विभूतियो के समकक्ष होने के नाते स्तालिन को महान् कहना सर्वथा उपयुक्त ही है। भले या बुरे जिस रूप मे भी हो, उनके कार्य ने विश्व इतिहास पर अपनी गहरी छाप डाली है, जिसका प्रभाव हर राष्ट्र महसूस करता है।

मै यह स्पष्ट कह देना हूँ कि जिन्हे हम नागरिक स्वतत्रताएँ कहते है, रूस मे उनके अभाव की बात से स्तालिन अनभिज्ञ नही थे। जब इस बारे मे उनसे कोई कुछ पूछता, तो वे यही कहते थे कि उनके देश के वैविध्यपूर्ण इतिहास को देखिए और जिन ऐतिहासिक परिस्थितियो मे से उन्हे गुजरना पडा है, उन्हे भी देखिए। उन्ही से इस बात का जवाब मिल जायगा कि रूस मे नागरिक स्वतत्रताओ का अभाव क्यो है। फिर, जब पहले शान्ति, समृद्धि और सुरक्षा हो जायगी, तब नागरिक स्वतत्रताएँ तो बाद मे भी प्राप्त की जा सकती है। जब मैने उनसे कहा कि यह तो मार्क्सवाद के सिद्धान्तानुसार नही है; तो उन्होने सिर्फ यही कहा कि वे कोई मौखिक कट्टरतावाले मार्क्सवादी नही, बल्कि क्रियात्मक मार्क्सवादी है।

यदि युद्ध-काल मे मित्र राष्ट्रो मे जो सहयोग सम्बन्ध था, वह युद्ध के बाद भी बना रहता तो आज दुनिया का मानस अधिक स्वस्थ होता। जहा तक रूस का सम्बन्ध है, जिस देश के दो करोड व्यक्ति हताहत हुए हो और समूचे देश का एक तिहाई भाग शत्रुओ द्वारा नष्ट कर दिया गया हो, वह आसानी से युद्ध की बात नही सोचेगा।

स्तालिन का निधन रूस के लिए एक बहुत बडी दुर्घटना है। अक्सर दुर्घटनाएँ एक बहुत बडा परिवर्तन लाती हैं और मुझे आशा है, यह दुर्घटना भी रूसियो मे वह बडा परिवर्तन लायेगी, जिससे कि वे दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों के साथ भाईचारे और मित्रता का सम्बन्ध स्थापित कर सकेगे। इस देशव्यापी दुःख, चिन्ता और सकट के समय हम रूसवासियो के साथ हार्दिक समवेदना और सहानुभूति प्रकट करते है और यह आशा करते

हैं कि वे अपने देश को सुसंगठित रखते हुए, दूसरे राष्ट्रों से अपने सम्बन्ध सुधारने और शान्ति को कायम रखने की भरसक चेष्टा करेंगे।

हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी की श्रद्धांजलि : गहरे शोक के साथ, जिसे आँसू नहीं बता सकते, हम कामरेड स्तालिन की याद को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। मानव-जाति ने अपना सबसे महान प्रतिनिधि खो दिया। मानव-मुक्ति के आन्दोलन ने अपना सबसे बड़ा रहनुमा खो दिया। और, शान्ति के ध्येय ने अपना अथक सूरमा खो दिया।

करोड़ों घरों में मातम छा गया है। सभी देशों के पचासों करोड़ आदमियों और औरतों के दिल दुख से भर गये हैं। जिसके लिए वे सबसे ज्यादा लालायित हैं, जिसे वे सबसे ज्यादा प्यार करते हैं, स्तालिन उसी सब के प्रतीक थे। वे उन सबकी आशाओ और आकांक्षाओं के मूर्त रूप थे।

मानव इतिहास में आज तक दूसरा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ, जिसके हर शब्द का दुनिया के हर देश में ऐसा व्यापक स्वागत हुआ हो, जिसके नाम का इतनी भारी बहुसंख्या के लिए इतना भारी महत्त्व रहा हो।

सोवियत जनता और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के लिए, हमारे दिल में गहरी सहानुभूति है। हम उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि उनका शोक हिन्दुस्तान की तमाम जनता का शोक है, हर देश के हर नेकनीयत आदमी और औरत का शोक है।

कामरेड स्तालिन मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन के वफादार शिष्य थे। उनके वैज्ञानिक और क्रांतिकारी काम को उन्होंने जारी रखा, आगे बढ़ाया और नई बुलन्दियों पर पहुँचाया। कम्युनिज्म में संक्रमण करनेवाले समाज के वह मेमार और निर्माता थे और वह उस विजय के संगठनकर्ता और प्रेरणा-स्रोत थे, जिसने मानव-जाति को बर्बर फास्स्टिों की यंत्रणाओं से बचाया। कामरेड स्तालिन दुनिया के क्रान्तिकारी आन्दोलन के सेनानी थे। उनके ही नेतृत्व में उसने विजय पर विजय प्राप्त की।

औपनिवेशिक और गुलाम देशों की जनता के ध्येय को उन्होंने हमेशा आगे बढ़ाया। आजादी और जनवाद के लिए, उसके सघर्ष में वह अविचल पथ-प्रदर्शक और मित्र थे।

एक-तिहाई मानव-जाति गौरवपूर्ण मुक्त दुनिया में रह रही है। समाजवाद, जनवाद और शान्ति का बराबर बढ़ता हुआ आन्दोलन पुरानी दुनिया की नींव हिला रहा है और तमाम देशों की जनता के लिए एक नयी और खुशहाल जिन्दगी के द्वार खोल रहा है। ये उनकी याद के जीवित स्मारक हैं। उनके ऐतिहासिक नेतृत्व के महान् सबूत हैं।

मानव सिद्धान्त और कार्यनीति के इस महापुरुष की मृत्यु से दुखी, हम मौजूदा पीढ़ी के कम्युनिस्ट इस बात को हमेशा गर्व के साथ याद करेंगे कि हम कामरेड स्तालिन के ही युग में रहे हैं, उन्होंने हमारा पथ-प्रदर्शन और नेतृत्व किया और उन्होंने हमें सिखाया कि कैसे अपने खून की आखिरी बूँद तक मजदूर वर्ग और जनता की सेवा करनी चाहिए।

मुश्किलों के दिन, कठिन परीक्षा के दिन, इम्तहानों और कठिनाइयों के दिन आगे आनेवाले हैं। उनमें कामरेड स्तालिन की बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह, उनका प्रेरणादायक नेतृत्व अब हमें न मिल सकेगा। उनकी मृत्यु से हुई भारी क्षति हर घड़ी खटकेगी। मगर, इस बात में हमें जरा भी सन्देह नहीं है कि स्तालिन के साँचे में ढले हुए व्यक्तियों के नेतृत्व में और स्तालिन द्वारा निर्मित पार्टी के पथ-प्रदर्शन में कम्युनिस्ट आन्दोलन और शक्तिशाली तथा एकजुट होगा; मानव-प्रगति के शत्रुओं की साजिशों को खतम करेगा और हमारे महान शिक्षक और नेता द्वारा निर्धारित रास्ते पर दुनिया के मजदूर वर्ग और आम जनता की रहनुमाई करता रहेगा।

जिस फरहरे को स्तालिन ने ऊँचा उठाया, उसके नीचे दृढ़तापूर्वक एकजुट होकर; जिस ध्येय के लिए स्तालिन जिये और जिसके लिए उन्होंने वीरगति पाई, उसके प्रति अडिग रूप से वफादार रहकर और स्तालिन द्वारा हमारे लिए छोड़ी गई सबसे कीमती विरासत के रूप में कम्युनिस्ट पार्टी और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के एके को सुरक्षित रखकर, हम विजय-पथ पर आगे बढ़ेंगे।

कामरेड स्तालिन का अमर नाम हमारे हृदय में अंकित है। अपने ध्येय को प्राप्त करने के लिए, वह

हमेशा हमें प्रेरणा देते रहेंगे। इस गम्भीर घडी मे, हम एक बार फिर प्रतिज्ञा करते हैं कि उन ध्येयो को हासिल करने के लिए हम अपने प्राण तक निछावर कर देंगे।

इलिया एरेनबुर्ग की श्रद्धांजलि : इन कठिन दिनो मे, स्तालिन अपनी पूर्णतम महानता के माथ हमारी आँखो के सामने उभरकर आये—हमने देखा उन्हे अखिल विश्व के मार्गों पर लम्बे डग भरने हुए, हमारे सकटपूर्ण जमाने की हिलोरो पर शिखर की भॉति छाते हुए। अपनी जन्मभूमि गुर्जी क पहाडो को वह लॉघते हैं, दोन और वोल्गा के बीच के युद्ध क्षेत्र को वह पार करते हैं, निर्माण रत नये मॉस्को क चौडे पथो म वह गुजरते हैं, जनरव से पूर्ण शघाई के बाजारो म वह दिखाई देते हैं, फ्रास की पहाडिया को वह पार करते हैं, ब्राजील के जगलो से गुजरते हैं, रोम क प्रागण मे पहुँचते हैं भारत क गॉवा को पार करते है—शिखरा को अपने चरणो स नापते हुए।

स्तालिन की अन्त्येष्टि का समय जब आ आया तो पेरिम म एक बेरोजगार आदमी गुलाब के हारो से सजे उनके चित्र के पाम पहुँचा और वायलेट क फूलो का एक छाटा सा गुलदस्ता उमने अपनी ओर से अर्पित किया—"बजाय राटी खरीदन क, मैने उनके लिए फूल खरीद। तूरिन म मशीनी औजारो का चलना बन्द हो गया, मिमली क कृषि मजदूर खामोशी म निस्तब्ध खड हो गये गनोआ क घाट मजदूरो ने काम बन्द कर दिया। ये सब भी स्तालिन की अर्थी का माथ द रह थ। प्राचीन पीकिंग म युवक, बूढे लोग और अपने बच्चो को साथ लिए स्त्रियाँ सँकरे बाजारा को लाँघती हुई मैदान की आर तेजी स बढ रही थी जहॉ चीन अपने मित्र क प्रति शोक प्रकट कर रहा था। अर्जन्तीना की चरागाहा म एक गडरिये ने किसी राह चलते यात्री का 'शोक !' शब्द कहकर रोका और दाना न मिलकर स्तालिन के निधन का शोक मनाया। कोरिया के खडहरो के बीच उन माताओ न जो मानव क दुर्भाग्य क लबालब प्याले चख चुकी हैं अपनी आँखे झुका ली और स्तालिन के निधन का शाक मनाया। पुलिस मुखबिरो और दमनकारियो से घिर हुए न्युयॉर्क के ईमानदार लोगो ने शाक म भरकर कहा—"शान्ति का मित्र जाता रहा।

हमारे दुश्मनो ने साचा था कि इस महान शोक म हमारा कोई साथी नही रहेगा। निस्सन्देह हमारा शोक ऐसा है कि उस शब्दो म नही बताया जा मकता। कमीने लाग जा हर चीज का मूल्य डालरो और सेन्टो मे आँकते है कभी नही ममझ सकते कि इस आदमी को खोने के क्या अर्थ होते है। लकिन इन कठिन दिनो मे ही सम्भवत पहली बार हमने देखा कि हमारे मित्र कितने है कि हमारा शाक मानव जाति का शोक बन गया है।

ब्राजील का खेत मजदूर जो सपने म भी नही सोच मकता था कि मॉस्को के बाजारो की शकल कैसी है या गॉवो म लाग किस प्रकार जीवन बिताते हैं रूसियो स वह कभी नही मिला है उसने कभी बर्फ नही देखी है वह नही जानता कि छुट्टियो का विश्राम घर कैसा होता है। अनेक सदियो पहले की भॉति, वह सुबह से सॉझ तक हाड तोडता है और उसकी खुशी के दुर्लभ क्षण बहुत ही नगण्य होत है। लेकिन हर मेहनत करने वाले की भांति उसका हृदय बड़ा है और उसके हृदय पर उस आदमी क बारे म शब्द अकित है, जो दुनिया क दूसरे हिस्से मे रहता है और जो सब लोगो के लिए खुशहाली चाहता है। दुबला पतला, काले रग का यह खेत मजदूर जानता है कि मॉस्को नाम का एक नगर है और मॉस्को मे स्तालिन रहते थे। उससे उसे जीवित रहने म मदद मिली। उससे उसे अपने कधो को सीधा करने मे सहारा मिला।

ऐसी पुस्तके है जो हृदय को हिला देती है इटली और फ्रास के फॉसी पाये हुए कम्युनिस्टो के पत्र फासिज्म के खिलाफ ५ ५ ि मे जल्लादो क हाथो पडने वाले वीर, जिन्होने साहस के साथ मौत को गले लगाया था। उनम से कई अपने जीवन की आखिरी घडियो मे अपनी पत्नियो, अपनी माताओ या अपने मित्रो के नाम कुछ शब्द भेजने मे सफल हो गये थे। किन चीजो के बारे मे उन्होने लिखा था ? उन्होने लिखा था अपने प्रियजनो के बारे मे, अपने बच्चो के बारे मे और उस आदमी के बारे मे, जिसने उन्हे उनकी मृत्यु से पहले की घडियो मे सहारा दिया था—उन्होने लिखा था स्तालिन के बारे मे। फॉसी पर चढाये जाने से एक घटा पहले, रेबेर, जो गेस्टापो की यत्रणाओ के कारण हिल तक नही सकता था, ने स्तालिन का नाम लिखा

था। स्तालिन के नाम को अपने होठो पर धारण किए, गैब्रील पेरी और दनियल केसानोबा ने बहादुरी के साथ अपनी मौत को गले लगाया था। स्तालिन का नाम था—चीन के उन वीरो की जबान पर जिन्होने महान् अभियान मे हिस्सा लिया था, कैन्टन के उन शहीदो की जबान पर जिन्होने अपने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की बलि दी थी। स्तालिन का नाम लेकर ही, स्पेन के लोगो ने फासिज्म के खिलाफ सघर्ष मे कूदने की शपथ ली थी। थेलमॉन को जब यत्रणाएँ दी जा रही थी, तब स्तालिन के नाम ने ही उन्हे बल दिया था और स्तालिन ही थे जिन्होने वियतनाम के हृदय मे आशाओ को जगाये रखा था।

उनकी बातो को केवल सुना ही नही जाता था, केवल दोहराया ही नही जाता था, उन्हे प्यार किया जाता था, एक महान् मानवीय प्रेम के साथ प्यार किया जाता था; क्योकि वह जनता को प्यार करते थे, उनकी कमजोरियो और उनकी ताकत को पहचानते थ, क्योकि वह उस मॉ के ऑसुओ का मर्म समझते थे जो युद्ध मे अपने बेटे को खो चुकी है, क्योंकि वह खान-मजदूर और ईंटसाज के श्रम की कद्र करते थे। उनके शब्दो को सभी समझते थ—मॉस्को मे और कैन्टन मे, पेरिस मे और रियो-द-जनेरो मे। उनकी जडे हमारे इतिहास मे, हमारी जन्मभूमि मे गहरी जमी थी, लेकिन वह वास करते थे हमारे देश की सीमाओ से परे, बहुत दूर-दूर के लोगो के हृदयो मे।

उन दिनो जब फासिज्म सस्कृति के अस्तित्व मात्र को आतकित कर रहा था, मानव की प्रतिष्ठा और जीवन के लिए खतरा बन गया था—स्तालिन ने मुक्ति-सेना को युद्ध मे उतारा। उन्होने यूरोप और एशिया के लोगो की रक्षा करनेवाली सेनाओ का नेतृत्व किया। गुलाम देशो के वीरो को—लीमूसीन, पिएमौन्त पोलैंड और स्लोवाकिया के गुरिल्ला सैनिको को प्राग और आमलो की, एथेन्स और तिराना की बहादुर सन्तानो को—उन्होने आगे बढाया। विजय के गौरव को लोगो ने पहचाना। इसका कारण यह था कि खुद स्तालिन ने युद्ध मे उनकी अगुआई की थी। और, जब फासिस्टी कैदखानो और कन्सैन्ट्रेशन कैम्पो के दरवाजे खोले गये तो यूरोप के सभी देशो के पुरुषो और स्त्रियो ने खुशी के ऑसू बहाते हुए, स्तालिन के नाम को दोहराया। योसेफ विस्सारियोनोविच के जन्म की सत्तरवी वर्षगॉठ के अवसर पर, उनके पास बहुमूल्य उपहार भेजे गये—युद्ध मे काम आये सैनिको की माताओ ने पारिवारिक स्मृति चिह्न भेजे यत्रणाएँ देकर गेस्टापो द्वारा मारी गई लडकी का हैट, लडाई मे मारे गये बेटे को मिला युद्ध का पदक। फ्रास के लोगो ने स्तालिन को एक कलश भेजा, जिसमे बलेरिएन के उस किले की मिट्टी रखी थी जहॉ देशभक्तो को गोलियो से उडा दिया गया था और जहॉ वीरो ने अपने देश की जय के साथ, जीवन की जय के साथ, स्तालिन की जय के साथ अपनी मौत को गले लगाया था।

वह महान् सेनापति थे, जो युद्ध से घृणा करते थे। वह उस शोक से अच्छी तरह परिचित थे, जो युद्ध मे आम लोगो के सिर पर फूटता है। वह सेनापति थे एक ऐसी सेना के, जो युद्ध के वर्षो मे शान्ति के लिए लडी, जिसने स्तालिनग्राद के खडहरो मे शपथ ली कि भयानक कत्लेआम की आग लगानेवालो का अन्त करके ही वह दम लेगी। सभी जानते हैं कि वह कौन था, जिसने लोगो की विजय को कलकित किया, वह कौन था जिसने फिर से युद्ध का हल्ला शुरू किया। उस छाया को हम कभी नही भूलेगे, जो स्तालिन के चेहरे पर उस समय पड गई थी, जबकि समुद्र के उस पार से नये रक्तपात के पहले आह्वान हम तक पहुँचे थे।

स्तालिन ने कहा कि लोग, सभी देशो के साधारण पुरुष और स्त्रियॉ, युद्ध को रोक सकते हैं और इसके जवाब मे शान्ति की एक अभूतपूर्व सेना का उदय हो गया। एक मामूली सी स्त्री फौजी गाडी को रोकने के लिए रेल की पटरी पर लेट गई। एक अन्य स्त्री दौडकर परेड के मैदान मे पहुँची और उसने सैनिको का आह्वान किया कि वे अपने भाइयो के खिलाफ हाथ न उठाएँ। घाट-मजदूरो ने अपनी बॉहो को समेट लिया और हमलावरो के हथियारो को लादने या उतारने से इन्कार कर दिया। अपने खेतो का विदेशी हवाई अड्डो के रूप मे परिवर्तित करने के खिलाफ, किसान अपने खेतो के लिए लडे। शान्ति की मॉग करते हुए, लोग बाजारो मे निकल आये। विराट काग्रेस का आह्वान किया गया, जिनमे सभी देशो के प्रतिनिधि पुरुषो और स्त्रियो ने, सभी विचारो और सभी धर्मो के लोगो ने शान्ति के झडे को ऊँचा उठाने की शपथ ली। करोडो लोगो ने अपीलो पर अपने हस्ताक्षर किये। ये अपीले नही, बल्कि वचन-पत्र थे। इतिहास मे पहले कभी लोगो की चेतना इतनी जाग्रत नही हुई

इतनी आशा का सचार नही हुआ था।

आज, इस दुखपूर्ण दिनो मे, शान्ति के सारे समर्थको ने–वे चाहे जिस देश के भी रहनेवाले हों, वे चाहे जैसे भी विचार रखते हो–देखा है कि वे स्तालिन के कितने ऋणी हैं। वही है जिसने लोगों को एक दूसरे युद्ध को रोकने मे मदद दी, वही है जिमने करोडा बच्चो और हजारो नगरो की रक्षा की।

लोगों से इस छोर से उस छोर तक भरे, रोम के प्रागण मे टार्चो के प्रकाश से आलोकित स्तालिन का चित्र लगाया गया। और, देर तक जोरो से ये शब्द गूँजते रहे "स्तालिन ही शाति है।" मिसीसीपी राज्य के एक छोटे-से कस्बे में एक नीग्रो मजदूर ने मुझे बताया–"वे हमे कत्ल करने के लिए ले जाना चाहते हैं, लेकिन स्तालिन यह नही होने देगे।" डनमार्क मे एक मीधी सादी पाँच बच्चो की माँ ने कहा–'मुझे अपने बच्चो के लिए डर नही है। स्तालिन उनकी रक्षा करेगे।"

चीन के गाँवो म मैने स्तालिन के चित्रो को देखा और इन चित्रो की ओर इशारा करते हुए, चीन के पुरुषो और स्त्रियो न कहा– वह हमारे घर की रक्षा कर रहे है।' परिस मे घरो की दीवारो पर दो शब्द अकित थे, जो लोगो के मस्तिष्क मे एक दूसरे मे मिलकर एक हो गये है स्तालिन और 'शान्ति'।

स्वभावत शान्ति की सेना मे अनेक बहुत से कम्युनिस्ट है। ठीक वैसे ही जैसे कि फासिज्म से मानव जाति को मुक्त करनेवाली सेना म कितने ही बहुत से कम्युनिस्ट थे। लेकिन अकेले कम्युनिस्ट ही शान्ति को ऊँचा नही उठा रहे है। सभाओ मे सम्मेलनो और काग्रेसो म कितने ही विश्वासो के लोगो ने–कैण्टर्बरी के डीन ह्यूलट जॉन्सन एबोट बौनियर, रोम के भूतपूर्व चान्सलर वर्थ और इटली के उदारदली नेता नित्ति ने–स्तालिन की बुद्धिमत्ता और शाति प्रेम का जिक्र किया है। शाति के महान रखवार की अन्त्यष्टि म भारत की राष्ट्रीय काग्रेस के सदस्य डाक्टर किचलू ने हिस्सा लिया फ्रास के प्रगतिशील नेताओ–येव फार्ज और पिथर कात ने हिस्सा लिया। मानव जाति के दुश्मन शान्ति के अन्य समर्थको से कम्युनिस्टो का अलग करने के लिए व्यर्थ ही जोड तोड लगा रहे है। व्यर्थ ही वे सोवियत सघ चीन और जनता के जनतत्रो को शाति के लक्ष्य की रक्षा करनेवाली पश्चिमी यूरोप अमरीका और एशिया की जनप्रिय ताकतो से अलग करने की सोचते है। स्तालिन के ये शब्द कि भिन्न व्यवस्थाए भिन्न दुनियाए एक साथ रह सकती है और शातिपूर्ण प्रतियोगिता कर सकती है, मानव जाति की चेतना म समा गये हैं। इन शब्दो ने लोगो को सयुक्त बनाया है उन्होने एक ऐसी ताकत को जन्म दिया है जिसे कुत्सित युद्ध प्रेमी कुचल नही सकते।

स्तालिन ने एक से अधिक बार राष्ट्रो के आजादी के अधिकार के पक्ष म आवाज उठाई है। अब राष्ट्र समझ गये है कि अगर आजादी नही तो सुरक्षा भी नही। गुप्त या खुले आधिपत्य के खिलाफ विदेशी अड्डो के खिलाफ और नये हमलावर कृत्यो के लिए सभी प्रकार के विदेशी सैनिक दलो' के खिलाफ सघर्ष म स्तालिन के शब्द उन्हे प्रेरणा देते है।

दिसम्बर के अन्त म एक अमरीकी पत्रकार को स्तालिन ने जवाब देते हुए कहा था कि सयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत सघ के बीच युद्ध को अनिवार्य नही माना जा सकता और यह कि दोनो देश आगे भी शान्ति के साथ रह सकते है। ये स्तालिन के आखिरी शब्द थे जो समूचे भूमण्डल मे व्याप्त हुए थे। ये दुनिया मे सबसे ज्यादा मजबूत और सबसे ज्यादा शान्तिप्रिय राज्य के अध्यक्ष के शब्द थे। सारी दुनिया के आम लोगो की रक्षा के लिए रक्तपात के खिलाफ स्तालिन ने शान्ति के पक्ष म आवाज उठाई थी।

शान्ति के महान् रखवार के निधन का समाचार सुनकर, हर जगह के लोगो पर छा जानेवाला शोक कितना स्वाभाविक है। लेकिन हर कोई जानता है कि स्तालिन मर नही सकते। वह केवल अपनी कृतियो मे ही जीवित नही है केवल सोवियत राज्य की शक्ति और बढती म ही जीवित नही हैं बल्कि वह करोडो लोगो के मस्तिष्क मे जीवित है–रूसियो और चीनियो के पोलो और जर्मनो के फ्रासीसियो और विएतनामियो के, इटालियनो और ब्राजीलियनो के कोरियनो और अमरीकियो के। जब स्तालिन का हृदय धडकना बन्द हुआ, तो मानव जाति का शोक सन्तप्त हृदय और भी ज्यादा जोरो से धडकने लगा। साधारण पुरुषो और स्त्रियो ने अनुभव किया कि स्तालिन की स्मृति ने स्तालिन के आदेशो ने शान्ति और मानव जाति की खुशहाली के लिए सघर्ष ने,

उन्हें और भी ज्यादा घनिष्ठ सूत्र में बाँध दिया है।

स्तालिन की अर्थी पर, ये शब्द गूँजकर चारों ओर फैल गये : "हम जनता के सच्चे सेवक हैं और जनता शान्ति चाहती है, युद्ध से घृणा करती है। करोड़ों के रक्त की होली को रोकने और खुशहाल जीवन के निर्माण की गारटी करने की लोगों की इच्छा, हम सबकी पवित्र इच्छा हो !" ये शब्द साथी स्तालिन के विचारों, चिन्ताओं और उनके इरादों के मूर्त रूप थे और इन शब्दो को उनके सहकर्मी, सोवियत सरकार के अध्यक्ष ने उच्चारित किया था। ये शब्द हर कही और हर जगह सर्वसाधारण पुरुषो और स्त्रियो के पास पहुँचेंगे और हमारे साथ मिलकर, वे कहेगे–"स्तालिन जीवित है !"

6. स्तालिन सम्बन्धी कविताएँ

चिरकाल से जनगण अपने वीरों की गाथाएँ गाता आया है, लेकिन स्तालिन तो सोवियत की जनता के लिए गाथाओ के वीरो से बहुत विलक्षण थे। उन्होंने अपने कार्यो से उनके जीवन मे अद्भुत परिवर्तन किया है। स्तालिन ने उन्हें अत्याचारो और भूख से मुक्त किया, अगाध अन्धकार से निकालकर प्रकाश मे रखा, उनकी सभी तरह की बेडियाँ काट फेंकी और कुछ ही वर्षो मे उनके सामने ऐसा सुखमय ससार ला दिया, जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकते थे। स्तालिन के बारे मे, जनसाधारण ने अपनी-अपनी भाषाओ मे अनेक गीत बनाये और उन्हे गाकर साइबेरिया के तैगा, तुद्रा, पामीर और काकेशस के हिमाच्छादित शिखरो, किजिलकुम और कराकुम के रेगिस्तानो उक्रइन और रूस की शस्यश्यामला भूमि को प्रतिध्वनित किया है। इन गीतो मे बहुतो के रचयिताओ का भी पता नही है। हम यहाँ सोवियत मे जन प्रसिद्ध ऐसे पाँच गीतो को ही दे रहे है। अत मे, हिन्दी और उर्दू की भी एक एक कविता है।

अज्ञात कवि

[illegible] होते दो हृदय मेरे सीने मे,
[illegible] घोड़े पर मै,
[illegible] आता उन्हें मास्को।
    पुर द्वार उतरता अदब से,
    लेता निकाल कटिबन्द रेशमी,
    रखता उस पर दो ज्वलित हृदय।
देता रख सुघड पाँवडो पर,
कहता पुकार दरबानो से
"उपहार स्तालिन के लिए एक रेशमी पोटलि का।"
    पोटलि मे हृदय द्वय जल उठते;
    जल उठते, जैसे महाहृदय
    जगमग करता क्रेमलिन मे।

अज्ञात कवि

ऊपर ऊपर घाटी के
गिरि-शिखर तुग।
ऊपर-ऊपर शिखरो के
है नभ महान।
किन्तु स्तालिन के आगे,
है खर्व गगन।

सम हैं, तेरे मम केवल
व उच्च विचार।
ऊँचे उगते हैं नभ मे
तारे और रजनीपति।
तेरे सन्मुख तारे होते मलिन, किन्तु
वह रवि भी होता मलिन,

चमक तेरे सन्मुख।
रवि-किरण लुप्त होती,
रजनी के सन्मुख,
पर बुद्धि पार कर उसे चमकती
यह लौह कठिन,
पर धातु कल्पना की तेरी
है कठिन, कठिनतर।
तू है नभ मे अतिमहान्,
सम्मानित है इससे ही
तू इन सभी पर्वतो से भी।
औरो के ऊँचे-ऊँचे
नभचुम्बी सुविचारो को,
ऊँचे पर्वत के वासी,
लाते मन मे नही।
जन नेत्र चमत्कृत होते उन
गिरिबाजो से,

जब शब्द पहुँचते तेरे,
आदेश हमे देने को।
शब्द जो तेरे सुनता है,
नही उसे बिसर वह सकता।
जो कोई अवगम करता
तेरी उस हित-शिक्षा को,
जय-शिक्षा पाता है, वह
हारेगा कभी न रण मे।
उत्सुक है सारे जनगण
ऊँचे पर्वत-पुजो मे दे दे दिल
द्रुत अपने
तेरी सच्ची शिक्षा मे।
मुँह फेर, जरा तो देखो,
शत शत हैं पीछे तेरे
अनुयायी वे हैं तेरे,
क्योकि सत्पथ है तेरा।
बनता जो अनुचर तेरा,
नही वह मरने मे डरता—स्तालिन !

दागिस्तानी कवि सुलेमान स्तालस्की

जीवन बढ़ता है आगे,
दल करता है नेतृत्व।
श्रमिको का महाप्रयाण,
साथ तुम्हारे उनका ध्वज।
—स्तालिन !।। 1 ।।
नव तरुणायी मे चमकी,
ज्योति दिखाती पथ श्रमिको को,
नेतृत्व जहाँ, तब शोक नही,
जीवन है सुखमय
—स्तालिन !।। 2 ।।
वर्षो बीते और कभी नही
आया दुर्भग वत्सर कोई,
जब से हमको त्राण दिया।
उत्तुग शिखर मे तुमको,
हैं साफ दीखते दूर क्षितिज
—स्तालिन !।। 3 ।।
अरिभुज को तुमने भग्न किया,
दृढ किया हमारी भुज को
और पूर्ण विजय माला को
रख दिया शीश दुर्बल के।
एक कुजी नव जीवन की।
—स्तालिन !।। 4 ।
तेरा औ मेरे युग प्रसिद्ध !
जिसका है नाम,
है सुन्दर कृतियो की सज्ञा,
तेरा कि जिसने शब्द सुने,
औ' समझे मन दुखियो के;
तेरा गाता हूँ मै यश
—स्तालिन !।। 5 ।

मिखाइल इन्युश्किन

भू-सीमा से सीमा तक, घाटी, वन और पर्वत मे–
जहाँ बाज परम अभिमानी मँडराता केवल ऊपर।
अति प्रेम-पात्र स्तालिन सुचतुर के गुण-गौरव को लेकर,
जनता के हृदयो से उठता सगीत।
द्रुततर बाजो की गति से, यह गीत उड रहा है नभ मे,
कम्पित है अत्याचारी सब इसके भय-भैरव से।
कटकित-तार-सरक्षित औ' दुर्ग-गुप्त सीमाएँ,
अवरुद्ध न कर सकती हैं सगीत सतत-प्रसरण को।
नहि गोली और न कोडा चुप रह सकता है इसको,
यह साभिमान लाँघ जाता खाई औ' मोर्चा-बन्दी।
रिक्शो के चलते पहियो और ओठो से कुलियो के,
हलवाहो के हल से भी है गीत निकलता इसका।
जयकर्ता-ध्वज-सा इसको ऊँचे स्वर से वह गाते,
जनता का सयुत-सगर बढ रहा प्रबल पाँती मे।
ऊँचे और ऊँचे स्वर मे साहस और ताप बढाता,
बढ रहा, हटाता अत्याचारी को अपने मग से।
कर प्राप्त विजय हम यो सब, अब साभिमान हैं गाते,
स्तालिन के युग को मिल कर हम सम्मानित हैं करते।
सुखमय अद्भुत नवजीवन को गाते है हम अपने,
अपनी पाई विजयो के गाते सुख के गीतो को।
भू-सीमा से सीमा तक, घाटी, वन औ' पर्वत म,
घहराता यान गगन का, मोटर गर्जन करती जहाँ,
जनता के अतिशय प्रेम का भाजन जो है स्तालिन,
यह विजयी जनता सा।ो उस सुचतुर के यश गाती।

चेरकास स्वायत्त प्रजातंत्र की जुरियत् शकोवा रचित–लोरी

लाउ-लाउ-लाउ-ला।
रात आई मेरे बच्चे सो जा।
सो जा मेरे छोटे, भूरी आँखो वाले,
मै गाती हूँ तेरे लिए।
बडे दिन होगे।
तेरा भाग्य, ओ मेरे प्रसिद्ध !
खेत और जगल, सरिता और गिरिवर,
जो कुछ देखता है मेरे धनी, सब तेरे।
मेरे छोटे, भूरी आँखो वाले !
रात आई,
हो गये राजपथ सूने,
खेतो का काम बन्द हुआ,
सुनता है घर आने के गीत,
दूर से ट्रैक्टर-ड्राइवरो के।
जल्दी ही मेरे बच्चे तू होगा बडा,
जब बढ के तू युवा होगा,
तू भी पुत्र, कम्बाइन चलायेगा,
हाँ, मेरे छोटे, भूरी आँखोवाले !
तू सिद्ध करगा अपने को मेरा पुत्र,
बढने को हैं तेरे समाजवादी सम्वत्सर
तेरे सीने पर अच्छे कामो के लिए,
चमकेगे रग पदक के।

तू होगा सम्मानित अपने कामा मे
तू पिछडेगा नही सगर मे।
कौन तुझसे हाथ मिलाएगा ?
हमारे स्तालिन !
मिलाएँगे वह छोटे हाथो से।

लाउ-लाउ-लाउ-ला।
सो जा कोमल औ' गहरी नीद,
ओह ! कैसा चमकीला यश
तेरे लिए रक्खा है,
कैसा सुन्दर और यशस्वी जीवन !

श्री नरेन्द्र शर्मा

जागरूक प्रहरी धरती का, जनता का अभिभावक !
लोह और हिम का तन धर कर आया था ज्यो पावक !
हिटलर से गिरनाकुस मारे बन बन कर नर नाहर,
खेल सके फिर धरती की फुलवारी मे मनु शावक !

निर्भर अभय स्वरूप कि जिससे जन का भय भगता था,
गहन मौन जिसका रिपु को हुकार सदृश लगता था !
नपी तुली सयत वाणी मे उत्स नए जन मन का,
उसके दो नयनो मे शतमुख स्वप्न दीप जगता था !

उसकी अँगुली के इगित पर स्वयम् काल भी नाचा,
रक्त मास का मनुज बना दुर्दान्त क्रान्ति का ढाचा !
अतर मे करुणा, कराल कर स्वार्थो के सहारक
कोमल मास लिये सीने मे वह इस्पाती साचा !

पूँजीवादी चक्रव्यूह का द्वार तोडने वाला,
अधोगामिनी सरिताओ की धार मोडने वाला,
सदियो के भूखे बजर का दिया बीज का दाना—
नित्य नए नौतोड जोत कर भूमि गोडने वाला !

निश्चित नियत योजनाओ से नियति प्रकृति को कीला,
क्राति विपथगा उसके बल कौशल से बनी सुशीला !
सबल राष्ट्र का सार्थवाह वह पहुच चुका मजिल तक
उसके लिए सोच क्योकर हो ? क्यो हो आचल गीला !

अपने लिए न जीने वाले मर कर भी कब मरते ?
हर घर मे वह दीपक बनते हर दिन मे घर करते !
सौ सौ भाग्य बिगडते जग मे एक स्वार्थ के कारण,
एक अमर निस्स्वार्थ भाव से सौ सौ भाग्य सँवरते !

अमर हो गया है मर कर भी वह अरुणध्वज धारी !
लडा सर्वहारा के हित मे, कभी न हिम्मत हारी !
आशा का उद्धार किया युग युग के अधकूप से,
अर्थपिशाचो मे स्वतन्त्र की मानवता सुकुमारी !

वह सुकुमारी थी जो कामुक सामन्तो की दासी,
जिसको सुदरता हो जिसको बनी गले की फाँसी !
वह सुकुमारी, जो अब भी क्रय विक्रय की सामग्री,
जो बल-सम्बल की भूखी है और शाति की प्यासी !

मुक्त किया उस सुकुमारी को, दिया शान्ति-शीतल जल ।
जन-बल धन-बल की भूखी को दिया श्रमिक का सबल ।
अब न बवडर उडा सकेगे धरती को अम्बर मे,
भँवर धरा को दिखा सकेगी अब न दिनाध रसातल ।

जन-नेता के चरण-चिह्न अब दीपस्तम्भ बनेगे,
चरण चरण पर मुक्तचरण यश के कवि गीत रचेगे ।
उसके सुफल मनोरथ सब के सम्बल बन जाएँगे,
उसकी सुध को हम भी धुँधली होने कभी न देगे ।

श्री जाँ निसार अख्तर

उफक[1] वक्त से खुर्शीदे दुरख्शाँ[2] टूटा,
कौन खुर्शीदे-दुरख्शाँ वो मेरा स्तालिन ।
दफअतन[3] चीख-सी एक मीनए गती[4] स उठी
दफअतन दिल की पुकारो मे जहाँ गूँज उठा
नालए दर्द से काशानए[5] जाँ गूँज उठा ।

दश्ता दर[6] गूँज उठे—कौन मेरा स्तालिन ।
बहरा बर[7] गूँज उठे—कौन मेरा स्तालिन ।
कल्बे[8] गुलशन से जुनूखेज पुकारे निकली
चाक करती हुई दामन को बहार निकली
बाल खोले हुए खेतो से हवाएँ लपकी
कारखानो से दिल अफगार[9] सदाएँ लपकी
बादबानो[10] मे लरजती हुई आहे दौडी
थरथराती हुई तारो की निगाहे दौडी
एक लमहे के लिए छा सी गई दहर[11] पै रात
रौशनी चीख उठी—कौन मेरा स्तालिन ।
एक लमहे के लिए रुक सी गई नब्जे हयात[12]
जिन्दगी चीख उठी—कौन मेरा स्तालिन ।

साथियो, जादए[13] मजिल पे हमारा रहबर
जिन्दगी भर की मशक्कत से थका सोता है
जर्रे जर्रे को फरोग महो अन्जुम[14] देकर
आसमाँ मीनए गती मे लगा सोता है

दोस्तो, बारगहे[15] अजमते-आदम है यही
पाये-रफ्तार[16] को आदाब[17] सिखा दो, ठहरो
दिल हमारे है उसी के तो खिलाये हुए फूल
उसके कदमो पै यही फूल चढ़ा दो, ठहरो

---

1 काल का क्षितिज 2 चमकीला सूरज 3 एकदम 4 धरती का सीना, 5 प्राण का प्रासाद, 6. जगल और घर, 7. भूमि और समुद्र, 8. उपवन का हृदय 9 दिल चीरनेवाली, 10. पाला, 11. दुनिया, 12 जिन्दगी की नब्ज 13 मजिल की देहरी, 14 चाँद तारो की चमक, 15 मनुष्यता का महानतम स्थान, 16. गति के पैरो को 17. आधार ।

सरबख़म[1] अज़मते-कौनेन[2] हुई जाती है
साथियो, परचमे-गुलरंग[3] झुका दो, ठहरो
तुझमें ये परचमे-गुलरंग अदा किसकी है ?
सुर्ख़ तारे तेरे सीने में ज़िया[4] किसकी है ?
चीन किस अब्र[5] का परतौ[6] तेरे गुलज़ार[7] पै है ?
रंग किसका ये तेरे बाग की दीवार पै है ?
तेरे झूमे हुए धानों में लहक है किसकी ?
माओ के नर्म तबस्सुम[8] मे झलक है किसकी ?
कोरिया अज़्म[9] है किसका तेरे जाँबाज़ों में ?
किसकी ललकार छुपी है तेरी आवाजों में ?
वीतमिन्ह ये तेरे शोले मे लपक किसकी है ?
तेरे बढ़ते हुए कदमों मे धमक किसकी है ?
आग ये किसकी मलाया तेरे बागात में है ?
कौन-सा सुर्ख़ निशाँ देख तेरे हाथ मे है ?
मिश्र, ये धूम है क्या तेरे ख़रीदारों मे ?
आ गया कौन-सा यूसुफ* तेरे बाज़ारो मे ?
वादिए-नील पे है लालाफ़िशानी[10] किसकी ?
छा गई अर्ज़े[11]-जुलेख़ा पे जवानी किसकी ?
ख़ाके-ईरान तेरे दिल मे लगी है किसकी ?
आग ये तेल के सीने में दबी है किसकी ?
हिन्द, ऐ मेरे वतन, मेरे हिमाला की ज़मी
मेरे फ़िरदौस[12], मेरे ताजो-अजन्ता की ज़मीं
ज़ुल्फ़े बगाल मे ये ख़म, ये अदा किसकी है ?
ये दकन पर तेरे गुलनार[13] घटा किसकी है ?
सुर्ख़ है किससे जबीं तेरे तेलंगाने की ?
किसकी ममनून[14] है सुर्ख़ी[15] तेरे अफ़साने[16] की ?
एशिया, तेरे गुलिस्ताँ को सजानेवाला
इक नई आबोहवा देके गया है तुझको
अर्ज़े मशरिक तेरी जीनत[17] का बढ़ानेवाला
सुर्ख़ फूलो की क़बा[18] देके गया है तुझको
उम्र-भर तेरे लिए जान ख़पानेवाला
अपनी मेहनत का सिला देके गया है तुझको
जाते-जाते भी तेरा नाज उठानेवाला
तोहफ़ए-अमनो-बका[19] देके गया है तुझको

---

1. नतमस्तक, 2. सृष्टि की महत्ता, 3. लाल गुलाब जैसे रंग का, 4. रोशनी, 5. बादल, 6. छाया, 7. बाग़, 8. मुस्कराहट, 9. निश्चय, 10. लाले के फूलों की बारिश, 11. जुलेखा का देश, 12. स्वर्ग, 13. सुर्ख़, 14. कृतज्ञ, 15. शीर्षक, 16. कथा, 17. सजावट, 18. लिबास, 19. शान्ति और जीवन।

* यूसुफ का सौन्दर्य अद्वितीय था और उन्हें मिस्र के बाजार में एक दास की तरह बेचा गया था। उनके सौन्दर्य के कारण, मिस्र के प्रभु वर्ग का हर आदमी उन्हें खरीदने को लालायित था। मिस्र की रानी जुलेख़ा ने उन्हें सबसे अधिक दाम देकर खरीद लिया था।

हाँ, बढे चल कि तेरा राह बतानेवाला
नेरी मजिल का पता देके गया है तुझको

स्तालिन, तेरी साहब-नजरी[1] बाकी है
दीदावर देख तेरी दीदावरी[2] बाकी है
राहबर अब भी तेरी राहबरी बाकी है
अज्मे-मोहकम[3] है तेरा नाम जमाने के लिए
जेहदे-पैहम[4] है तेरा नाम जमाने के लिए
एक परचम है तेरा नाम जमाने के लिए

साथियो दोश[5] पै गुलरग निशाँ[6] लेके चलो
इक जहाँ लेके उठो, एक जहाँ लेके चलो
स्तालिन अभी जिन्दा है हमारे दिल मे
हर कदम एक नया अज्मे जवाँ[7] लेके चलो
जिन्दगानी के खजाने कही लुट सकते है ?
जिन्दगानी से नई ताबो-तबाँ[8] लेके चलो
सैले रफ्तार मे दरिया की रवानी खो जाय
अपनी ठोकर मे हर इक कोहे गराँ[9] लेके चलो
जगमगा जाय सितारो से जमी दूर नही
अपने कदमो मे कोई काहकशाँ[10] लेके चलो
जुल्मते[11]-आखिरे-शब भी न रहेगी बाकी
और दो-चार कदम मिशअले[12]-जाँ लेके चलो

साथियो, हौसलए-शौक का महमेज[13] करो
हाँ, कदम तेज करो, तेज करो, तेज करो
इर्तिका[14] वक्त का फर्मान सुनाता है चलो
हर कदम माओ हमे राह दिखाता है चलो
स्तालिन हमे मजिल पै बुलाता है चलो।

---

1. दार्शनिक दृष्टि, 2. व्यापक दृष्टि, 3. दृढ निश्चय, 4. निरतर सघर्ष, 5. कधा, 6. ध्वजा, 7. जवान निश्चय, 8 शक्ति 9. भारी पहाड, 10. आकाश गगा, 11 रात के पिछल पहर का अँधेरा, 12. जीवन ज्योति, 13. एड लगाओ, 14. विकास।

परिशिष्ट

स्तालिन का वर्ष-पत्र

सन्	स्थान	घटना विवरण
1879, दिसम्बर, 21	गारी	स्तालिन का जन्म
1888, सितम्बर	गारी	पुरोहित स्कूल मे प्रवेश
1894, सितम्बर, 2	तिफलिस	अर्थाडक्स धर्मशास्त्रीय सेमिनरी मे प्रवेश
1895	तिफलिस	स्तालिन की कविता छपी
1896-98	तिफलिस	मार्क्सीय अध्ययन चक्र स्थापित किया
1898, अगस्त	तिफलिस	क्रान्तिकारी सस्था के सदस्य बने
अगस्त	तिफलिस	हडताल का सगठन
1899, मई, 29	तिफलिस	स्तालिन सेमिनरी से निकाल गये
1900, अप्रेल, 23	तिफलिस	मई दिवस पर भाषण
1901, नवम्बर, 11	तिफलिस	समाजवादी कमिटी क सदस्य
नवम्बर	बातूम	मजदूरो मे काम आरम्भ
दिसम्बर, 31	बातूम	अध्ययन चक्र-कान्फरेस
1902, मार्च, 8	बातूम	मजदूर-प्रदर्शन का सगठन
मार्च, 9	बातूम	मजदूरो के प्रदर्शन पर गोली चली
अप्रैल, 5	बातूम	स्तालिन की प्रथम गिरफ्तारी
1903, फरवरी,	बातूम	काकेशीय पार्टी काग्रेस
जुलाई, 9	कुतैस	साइबेरिया मे तीन वर्ष का निर्वासन-दड
नवम्बर, 27	कुतैस	साइबेरिया पहुँचे
दिसम्बर	कुतैस	लेनिन का प्रथम पत्र
1904 जनवरी, 5	कुतैस	स्तालिन साइबेरिया से गायब
जनवरी 6	काकेशिया	स्तालिन का प्रथम विवाह
दिसम्बर, 13-31	बाकू	हडताल का नेतृत्व
1905, फरवरी, 13	बाकू	खूनी रविवार के विरुद्ध पर्चा
जुलाई, 15	बाकू	हथियारबद विद्रोह और हमारे दॉव-पेच' लेख प्रकाशित
अक्तूबर, 18	बाकू	जार की सुधार-घोषणा पर भाषण

नवम्बर	बाकू	काकेशीय चतुर्थ सम्मेलन का सचालक
दिसम्बर	मॉस्को	प्रथम रूसी क्रान्ति
1905, दिसम्बर 12-17	तमरफोर्स	लेनिन से प्रथम मुलाकात
1906, अप्रैल, 15	तिफलिस	गुप्त छापाखाना पकडा गया
अप्रैल, 10-25	स्टॉकहोम	पार्टी की चौथी काग्रेस मे
जून, 21	तिफनिस	'अराजकतावाद या समाजवाद ?' लेख छपा
1907, अप्रैल, 30	लन्दन	पचम पार्टी काग्रेस मे
अगस्त, 12	बाकू	'गुदाक' का प्रकाशन
सितम्बर, 29	बाकू	लानल" की घटना' लेख छपा
अक्तूबर, 25	बाकू	बाकू पार्टी कमिटी के सदस्य चुने गये
1908 मार्च 9	बाकू	तेल के मालिक' लेख छपा
मार्च 25	बाकू	स्तालिन गिरफ्तार
नवम्बर 9	वलाग्दा	निर्वासन-दड
1909 जून 24	वलाग्दा	भाग निकले
1910, मार्च, 23	वलाग्दा	स्तालिन तीसरी बार गिरफ्तार
अगस्त 27	वलाग्दा	काकेशिया म पाच साल के लिए निष्कासित
सितम्बर, 23	वलाग्दा	निर्वासित, नजरबन्द
1911, जून 1	वलाग्दा	अनुपस्थिति म केंद्रीय काफ्रेस की सगठन-कमिटी के सदस्य चुने गये
सितम्बर 6	वलाग्दा	निर्वासन से निकल भागे
सितम्बर 9	पीतरबुर्ग	चौथी गिरफ्तारी
दिसम्बर 14	वलाग्दा	तीन वर्ष के लिए निर्वासित
1912, फरवरी 29	वलाग्दा	नजरबन्दी से भागे
अप्रैल, 22	पीतरबुर्ग	पाँचवी गिरफ्तारी
जुलाई, 2	नारिम	साइबेरिया मे निर्वासित
सितम्बर, 1	नारिम	निर्वासन से भागे
1913 फरवरी, 23	पीतरबुर्ग	छठी गिरफ्तारी
1914, सितम्बर	यूराप	प्रथम विश्व युद्ध घोषित
1915 ग्रीष्म	साइबरिय	बोल्शेविको की सभा मे
1917 फरवरी	साइबेरिय	बूर्ज्वा क्रान्ति
मार्च 12	पीतरबुर्ग	स्तालिन पहुँचे
मई	पीतरबुर्ग	पालित ब्यूरो के सदस्य चुन गये
जुलाई 26	पीतरबुर्ग	छठी पार्टी काग्रेस का सचालन
1917 अगस्त अक्तूबर	पीतरबुर्ग	केन्द्रीय पत्रो 'प्रॉलितारी' और 'रबॉची' का सम्पादन
अक्तूबर, 24 (6 नवम्बर)	पीतरबुर्ग	अस्थायी सरकार को उलटने का आह्वान
अक्तूबर, 25 (7 नवम्बर)	पीतरबुर्ग	महाक्रान्ति
1918, मार्च	पीतरबुर्ग	ब्रेस्तलितोवस्क-सन्धि
मई, 26	पीतरबुर्ग	खाद्य-विभाग के प्रधान सचालक
अगस्त	मॉस्को	समाजवादी-क्रान्तिकारियो का विद्रोह

अगस्त	मॉस्को	स्तालिन वारित्सीन में
1919, मार्च	पीतरबुर्ग	राजनियंत्रण लोककमीसार नियुक्त
जून-जुलाई	पीतरबुर्ग	पेत्रोग्राद की रक्षा
मई-अक्तूबर	उक्रइन	दक्षिणी मोर्चे पर
1920, नवम्बर	उक्रइन	पोल और रेंगल की पराजय
1921, मार्च	मॉस्को	मॉस्को दसवीं पार्टी-कांग्रेस
मार्च	मॉस्को	नवीन आर्थिक नीति
1922, मार्च-अप्रैल	मॉस्को	11वी पार्टी-कांग्रेस—स्तालिन पार्टी के महामंत्री चुने गये
दिसम्बर, 30	मॉस्को	सोवियत समाजवादी गण संघ की स्थापना
1923, अप्रैल	मॉस्को	12वीं पार्टी-कांग्रेस
1924, जनवरी, 21	गोर्की	लेनिन का निधन
मई	गोर्की	13वीं पार्टी-कांग्रेस
1925, दिसम्बर	मॉस्को	14वीं पार्टी-कांग्रेस
1927, दिसम्बर,	मॉस्को	15वीं पार्टी-कांग्रेस
1929, दिसम्बर, 21	मॉस्को	स्तालिन की 50वीं वर्षगाँठ
1930, मार्च, 15	मॉस्को	'सफलता से चकाचौंध' लेख
अप्रैल, 3	मॉस्को	'कलखोजी साथियों को जवाब' लेख
1930, जून	मॉस्को	16वी पार्टी कांग्रेस
1933, दिसम्बर, 11	मॉस्को	निर्वाचन-भाषण
नवम्बर, 3	मॉस्को	पत्नी नादेज्दा का देहांत
1934, जनवरी	मॉस्को	17वी पार्टी-कांग्रेस
जनवरी, 28	मॉस्को	लेनिन सम्मरण सभा में भाषण
दिसम्बर, 1	मॉस्को	किरोफ की हत्या
1936, मार्च, 1	मॉस्को	राय होवार्ड से मुलाकात
1936, दिसम्बर, 5	मॉस्को	सोवियत-संविधान स्वीकृत
1937, दिसम्बर, 12	मॉस्को	महासोवियत का चुनाव
1939, मार्च	मॉस्को	18वी पार्टी-कांग्रेस
1941, जून, 22	मॉस्को	हिटलर का सोवियत पर आक्रमण
जुलाई, 3	मॉस्को	देश की नाजुक स्थिति पर भाषण
जुलाई	मॉस्को	प्रतिरक्षा-जनकमीसार नियुक्त
दिसम्बर, 19	मॉस्को	राजधानी के घिरावे की घोषणा
1942, फरवरी, 23	मॉस्को	आठ महीनो के युद्ध का विश्लेषण
दिसम्बर	स्तालिनग्राद	जर्मनों की पराजय का आरम्भ
1943, मार्च, 6	मॉस्को	'मार्शल' की उपाधि
नवम्बर	मॉस्को	दो-तिहाई
नवम्बर	मॉस्को	भूमि की मुक्ति तेहरान कान्फरेंस में
1944, जुलाई, 26	मॉस्को	विजय-तमगा-प्राप्ति
1945, जनवरी फरवरी	मॉस्को	सारे पोलैंड की मुक्ति
मई, 2	बर्लिन	जमीन राजधानी पर अधिकार
मई, 8	बर्लिन	जर्मनी का बिना शर्त आत्मसमर्पण

मई, 9	मॉस्को	विजय-दिवस
जुलाई, 17	मॉस्को	बर्लिन-कान्फरेस
अगस्त, 9	मॉस्को	जापान के विरुद्ध युद्ध-घोषणा
सितम्बर, 2	मॉस्को	जापान का आत्मसमर्पण
46, सितम्बर	मॉस्को	सवाददाता अलैक्जेडर वर्थ से मुलाकात
7, अप्रैल		अमरीकन स्टासेन से मुलाकात
8	मॉस्को	वॉलेस को जवाब
'	मॉस्को	भाषा का प्रश्न
1, दिसम्बर, 31	मॉस्को	जापानी जनता के नाम सदेश
2, अक्तूबर, 5	मॉस्को	19वी पार्टी-काग्रेस
53, फरवरी, 7	मॉस्को	अर्जन्तीन के राजदूत से मुलाकात
फरवरी, 17	मॉस्को	भारतीय राजदूत से मुलाकान
मार्च, 1	मॉस्को	स्तालिन बेहोश हुए
मार्च 5	मॉस्को	स्तालिन का निधन
मार्च, 9	मॉस्को	अन्त्येष्टि, 'सम्मान गारद'

माओ चे-तुंग

भारतीय कम्युनिस्ट शहीदों को समर्पित

भूमिका

'माओ चे-तुंग' इस माला की चौथी और अंतिम पुस्तक है। 'स्तालिन' से शुरू करके 'कार्ल मार्क्स' और 'लेनिन' को लिख डालने के बाद मैंने इस पुस्तक में हाथ लगाया। पुस्तक जैसी भी है, पाठकों के सामने है। गुण-दोष के बारे में वही कहने के अधिकारी हैं। मैंने आधुनिक जगत् के महान निर्माताओं की जीवनियां, सिद्धांतों और कार्यों के बारे में हिंदी में कमी अनुभव की, जिसकी ही पूर्ति के लिए इन चारो पुस्तकों को लिखा। माओ एसिया के है, और एसिया में भी चीन के, जिसका भारत के साथ सास्कृतिक दानादान और घनिष्ठता बहुत पुरानी है। यह कह सकते हैं, कि दोनों की विचारधारा और जीवन में प्राचीन काल से ही बहुत घनिष्ठता रही है। यद्यपि मार्क्सवाद का पयोग (व्यवहार) हरेक देश में उसकी परिस्थिति के अनुसार करना पड़ता है, जो सबसे मुश्किल काम है, बल्कि कहना चाहिए कि मार्क्सवाद को अपने देश में व्यवहृत करने के मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन और माओ चे-तुंग जैसी प्रतिभाओं की आवश्यकता लिये हैं। हर देश में क्रांति और नव-निर्माण की शक्तियाँ मौजूद हैं, समय भी कभी-कभी मिलता है. लेकिन क्रांति की सफलता के लिए वहाँ ऐसी ही महान् प्रतिभाओं की आवश्यकता है। आवश्यकता है, तो प्रतिभा जरूर पैदा होकर रहेगी। हमारे देश के लिए तो माओ की जीवनी बड़ी ही लाभदायक है।

पुस्तक लिखने में मेरे मित्र डा. महादेव साहा ने बड़ी सहायता की है। उन्होंने पुस्तकों को जमा करने मे इतनी तत्परता न दिखलाई होती, तो शायद यह लिखी भी न जाती। इसी तरह साथी सच्चिदानन्द शर्मा, ओमप्रकाश शर्मा और शिव वर्मा का भी मैं बहुत कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने सामग्री जुटाने मे बड़ी सहायता पहुँचाई।

पुस्तक के टाइप करने में श्री मंगलसिंह परियार की सहायता का भी मैं कृतज्ञ हूँ।

मसूरी, 16-7-'56

–राहुल सांकृत्यायन

1
पृष्ठभूमि

माओ चे-तुग चीनी इतिहास के मबसे बडे नेता हैं। महान् नेता आकाश से नही टपकता, वह अपनी भूमि और समाज की उपज होता है। इसलिए माओ चे-तुग की जीवनी, उनके सिद्धात, और प्रयोग के बारे मे कहने मे पहल उस पृष्ठभूमिका के बारे मे कहना जरूरी है, जिसमे पैदा हो माओ चे-तुग बढे और बडे हुए।

1. चीन देश

चीन को ई पू दूसरी शताब्दी के राजवश चिन् (छिन्) क कारण, यद्यपि इसी नाम से अधिकतर पुकारा जाता है, लेकिन स्वय चीनी लोग अपन देश को चुङ्ह्वा और अपनी जाति का हान कहत है।

चीन की प्राकृतिक स्थिति को देखन पर वह पर्वतो और नदियो द्वारा सीमित एक महान् दश है। वह पश्चिम म पामीर, तियान्शान् और अलूताई से शुरू होकर पूर्व मे कोरिया और प्रशान्त सागर तक फैला हुआ है। उत्तर की ओर त्यान्शान् (देवगिरि)-अलूताई (सुवर्णगिरि) की श्रेणियाँ आगे बढते बीच मे कुछ टूटी सी मन्चूरिया तक चली जाती है। दूसरी पर्वतश्रेणी पामीर से खुन्-लुन् (कुइनलेन) होती चीन क मेदानो तक पहुँच गई है। दक्षिण में फिर पामीर से ही हिमालय (शी मा-ला-या) को लेते दक्षिणी चीन मे चुङ् नान् (पान ताओ) तक समाप्त होती है। इन्ही पर्वतश्रेणियो के बीच से ह्वाग-हो (पीत नदी), हाइ लुग-चियाग (हाइ-लुग नदी), ह्वै हो, छाग चियाग (याग-ची-कियाग) और चू-चियाग (मोती नदी) वहती है।

चीन गणराज्य का क्षेत्रफल 95 लाख 96 हजार वर्गकिलोमीटर है, जो कि करीब करीब सारे यूरोप के बराबर है, और 1953 ई म उसकी जनसख्या 50 कराड आँकी जाती रही है।

2. प्रदेश

म 32 प्रदश तथा भीतरी मगोलिया और तिब्बत के स्वायत्त शासित क्षत्र है। 32 प्रदेशो म ताइवान (फारमूसा) भी है, जिसे अभी तक अमेरिका नै ी दखल कर रक्खा है। इन प्रदेशा का विवरण निम्न प्रकार है

क्षेत्र	प्रदेश या नगरपालिका	राजधानी
1. उत्तर चीन		पेकिग
	1 होपेइ	पाउतिग
	2 शान्सी	ताइयुवान्
	3 चहार	वनुचुआन्

	4 पिंग युआन	
	5 सुइ युआन	क्वेइशुइ
	पेकिंग	नगरपालिका
	तियानचिन	नगरपालिका
2. उत्तर-पूर्व चीन		मुकदन
	6 सुंग कियांग	
	7 किरिन	किरिन
	8 हइलुंग कियांग	चीचीहार
	9 ल्याउ तुंग	मुकदन
	10 ल्याउ सी	
	11 जेहोल	चंग तंग
	पोर्ट आर्थर दरेन इलाका	
	मुकदन न	
	पेकिंग न	
	अनशान (अनशांग) न	
	फूशन न	
3. पूर्व चीन		शांघाई
	12 कियांग सु	चंग कियांग
	13 चेकियांग	हांग चाउ
	14 अन्हवेइ	अनकिंग
	15 फूकियन	फूचाउ
	16 शान्तुंग	चिनान
	17 ताइवान	तपे
	शांघाई न	(नगरपालिका)
	नानकिंग न	(नगरपालिका)
4. केन्द्रीय दक्षिणी चीन		हान काउ
	18 हूपे	हान काउ
	19 हूनान	चांग शा
	20 होनान	काइफंग
	21 क्यांग सी	नानचांग
	22 क्वान्तुंग	कान्तन
	23 क्वांग सी	क्वइलिन
	कान्तन न	
	हानकाउ न	
5. पश्चिमोत्तर चीन		सियान
	24 शान्सी	सियान
	25 कान्सू	लानचाउ
	26 निंग स्या	निंग स्या
	27 चिंघई	सिननिंग
	28 सिंग कियांग	तिहुआ (उरूम्ची)

सियान न

6. दक्षिण-पश्चिम चीन		चुग किग
	29. जेचुआन	चुग तू
	30. कवेइचाउ	क्वेइयाग
	31 युन्नान	कुनमिन
	32. सीकाग	काग तिग
	चुग किग न	
7. भीतरी मगोलिया स्वायत्त भू-प्रदेश		कलगन
8 तिब्बत स्वायत्त भू प्रदेश		ल्हासा

चीन के ये प्रदेश भारत की तरह ही बड़े बड़े है, उदाहरणार्थ जेचुआन की आबादी 4 करोड़ 70 लाख और हूनान की 4 करोड़ है। गणराज्य के बहुत से भागो मे हान् (चीनी) लोग रहते हैं, लेकिन उसके अन्य प्रदेशो म 60 जातियो के लोग बसते है, जिनम शताब्दियो से वैमनस्य और खूनी झगड़े हुआ करते थे। अध्यक्ष माओ के नेतृत्व म अब वह अतीत की बाते रह गई है। सिग कियाग (चीनी तुर्किस्तान) इंग्लैण्ड से सात गुना बड़ा देश है, लेकिन वहा की आबादी सिर्फ 35 लाख है, जिसम भी 13 जातियो के लोग हैं।

3.

चीन मे मुख्यत पाच बड़ी बड़ी जातियाँ है : चीनी (हान्), मचू (मान्), मगोल (मग), मुसलमान या तुर्क (हुइ) और तिब्बत (छाग)। इनम मचू अब बहुत कुछ चीनियो मे मिल गय है। तो भी चीन गणराज्य के राष्ट्रीय ध्वज मे लाल जमीन के ऊपर एक बड़ा और चार छोटे छोटे पचकोन तारे इन्ही पाँचो जातियो के सकेत के रूप म रक्खे गय है। इन जातियो के बारे मे निम्न बाते उल्लेखनीय है

(1) तुर्क (हुइ) —इनको भूमिका कम से कम ई पू तृतीय शताब्दी म भारत के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहा, यद्यपि पिछली सात शताब्दियो म भारत का सम्बन्ध वहा के लोगो से बहुत शिथिल होते होते अन्त मे वहाँ कुछ थोड़े से भारतीय सौदागर और सूदखोर (महाजन) भारत का प्रतिनिधित्व करते रहे। इतिहास के विस्मृत पन्नो मे भारत और सिग क्याग के प्राचीन सम्बन्धो को मुश्किल से पाया जा सकता था, लेकिन वर्तमान शताब्दी के आरम्भ मे वह पुराना सम्बन्ध फिर बड़े जोर के साथ प्रकाशमान हो गया, जबकि वहाँ के रेगिस्तानों मे उजडे नगरो ने भारतीय और तरिम-उपत्यका की पुरानी भाषाओ की अनेक बहुमूल्य पुस्तको को प्रकट करके दुनिया के सामने रक्खा। किसी समय तरिम उपत्यका (खोतन-यारकन्द-काशगर-कूचा) के रहनेवाले वही लोग थ, जो कि ई. पू. द्वितीय सहस्राब्दी स चलकर पहाडो पहाडो गिलगित (दरद), कश्मीर होते दार्जिलिग तक सारे पहाड मे फैल गय और जिन्हे हम खस (कश) के नाम से जानते है। इसी कश शब्द की छाप कश्मीर पर है, और इसी को हम कशगर (काशगर, कशगिरि, खशगिरि) के नाम मे देखते है। कश्मीर और काशगर का घनिष्ठ सम्बन्ध अभी हाल तक रहा है। किसी देश मे भी कोई शुद्ध जाति नही रह सकती, क्योंकि मनुष्य स्वभाव से जगम प्रगतिशील है, जातियो का सम्मिश्रण बराबर होता रहता है। तरिम-उपत्यका मे किसी समय खस (शक, तुखार) लोग रहते थे, फिर वहाँ हूण, तुर्क और उइगुर जातियाँ भारी सख्या म आई। आज उनकी ही सम्मिलित सताने वहाँ बसती है। शताब्दियो तक धर्मान्धता और पिछड़ेपन ने वहाँ के निवासियो की अवस्था बड़ी हीन बना रक्खी, उनके भव्य नगर ध्वस्त हो बालू के नीचे दब गये, और कितनी ही बातो मे वह पीछे जा पड़े। लेकिन अब लाल चीन के अभिन्न अग होने के बाद वह सभी क्षेत्रो मे बड़ी तेजी से बढ़न लगे हैं—एक ही दशाब्दी मे पहचाना नही जा सकेगा, कि यह वही मध्य एशियाई तुर्क है, जो हजारो प्रकार के मिथ्या विश्वासो मे गले तक डूबे अपने भविष्य के पथ को खो चुके थ।

तरिम-उपत्यका की एक-एक जाति अपना बड़ा ही मधुर तथा सुन्दर इतिहास रखती है। खोतन प्रदेश के साथ भारत का कितना घनिष्ठ सम्बन्ध रहा, यह इसी से मालूम होगा कि एक समय वहाँ पर भारतीय लिपि ही नहीं, बल्कि उत्तरी भारत की तत्कालीन प्राकृत भाषा भी प्रचलित थी।

कूचा के लोग बड़े वीर, संस्कृत और विनोदप्रिय थे। उनकी भाषा का सम्बन्ध हिन्दी-यूरोपीय भाषाओं के पूर्वी वंश की अपेक्षा पश्चिमी वंश में अधिक था। नाच, अभिनय और संगीत की इतनी प्रेमी जाति ईसा की पहली सात शताब्दियों में शायद ही कोई रही हो। आज इस भाषा के बोलनेवाले वहाँ नहीं हैं, लेकिन वहाँ की बालुकाभूमि ने 'मैत्रेय समिति' नाटक, 'उदानवर्ग', 'अवदान' आदि कितने ही ग्रन्थों और सुन्दर चित्रों को प्रदान करके अतीत की स्मृति दिलाते हुए भारत के साथ पुराने घनिष्ठ सम्बन्ध को जीवित किया है। आर्यचन्द्र ने जिस विशाल 'मैत्रेय समिति' नाटक को कूची भाषा में लिखा था, वह सत्ताईस अंकों में समाप्त हुआ था और कूचा के मुमुक्षु नर नारी सप्ताहों तक इसका अभिनय करते थे। वहाँ जो पंचवार्षिक मेला होता था, उसमें दस दिन तक लोग नाच रंग और विनोद में अपना मनोविनोद करते थे। 'मैत्रेय समिति' का अनुवाद उइगुर (तुर्क) भाषा में भी हुआ था, जिसमें भी कितने ही अंश मिले हैं। उइगुर भाषा तुर्की भाषा की वह शाखा है, जिसमें तुर्क जाति का सबसे पुराना साहित्य प्राप्य है, और जिस साहित्य का भारतीय साहित्य से बहुत सम्बन्ध है।

(2) मंगोल (मंग) -मंगोल जाति का भारत के साथ सम्बन्ध कभी भी विस्मृत नहीं हुआ, और हजार बन्धनों के बाद अब भी जब तब मंगोल यात्री भारतभूमि के दर्शन के लिए आ जाते हैं। बुर्यत मंगोल साइबेरिया में बैकाल सरोवर के पास सोवियत की एक स्वायत्त शासित जाति के रूप में रहते हैं। खलखा मंगोल (बाह्य मंगोलिया के लोग) एक स्वतन्त्र जनगणराज्य के रूप में तीन दशाब्दियों से साम्यवाद के मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं। अन्तर् मंगोलिया चीन के सामन्तों और उनके अन्तिम प्रतिनिधि च्यांग काई शेक (चि आंग चिए ख) के जूये के नीचे कराह रहे थे, लेकिन अब उनकी काल रात्रि खतम हो चुकी है, नवीन उषा ने उन्हें उद्बुद्ध करके चीनी गणराज्य की और जातियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ने के लिए तैयार कर दिया है। बुर्यत और खलखा पहले ही से शत प्रतिशत शिक्षित और नवीन आर्थिक ढाँचे का निर्माण कर अपने जीवन को समृद्ध कर चुके हैं, अन्तर् मंगोलिया के मंगोल अब माओ चे-तुंग के नेतृत्व में उसी काम को तेजी से कर रहे हैं। मंगोल भाषा का विशाल प्राचीन साहित्य अधिकांशतः हमारे संस्कृत साहित्य का रूपान्तर है, जिसमें अश्वघोष, आर्यशूर, कालिदास जैसे महान् कवियों, वसुबन्धु, दिङ्नाग, धर्मकीर्ति जैसे महान् दार्शनिकों की कृतियाँ मौजूद हैं। अलंकार और साहित्य के गम्भीर तत्त्वों का पहला पाठ हमारे दण्डी ने उन्हें दिया। तूलिका चलाने में मंगोल जातियाँ दुनिया में बहुत निपुण हैं, लेकिन उस तूलिका को मंगोल हाथों में पकड़ाकर उनकी जातीय चित्रकला और ललितकला के निर्माण करने में हमारे लोगों ने बहुत काम किया। इसलिए यदि बैकाल के तट से होग हो तक और खिंग गन पर्वतशृंखला से अल्ताई तक फैले मंगोल लोग भारतभूमि को बड़े प्रेम और श्रद्धा से याद करते हैं, तो कोई आश्चर्य नहीं।

(3) तिब्बती, भोट (छाग) –तिब्बती अभी हाल तक पुराणपंथिता का अन्तिम गढ़ समझा जाता रहा। दिव्य 'महात्माओं' और उनकी अद्भुत शक्तियों की सैकड़ों झूठी-झूठी कथाएँ तिब्बत के नाम पर दुनिया-भर में फैलाई जाती थीं, लेकिन शताब्दियों तक सोया तिब्बत (भोट) देश भी अब जाग उठा है। वह समय बड़ी जल्दी आ रहा है, जब कि वह हमारे सारे उत्तरी सीमान्त को नये आलोक से आलोकित कर देगा। आसाम से लद्दाख तक चीन गणराज्य की सीमा हमारी सीमा से मिलती है, और वहाँ पर हमारे तिब्बती पड़ोसी अब नव-निर्माण में लगे हुए हैं। साम्राज्यवादी अंग्रेज और अमेरिकन वहाँ के पिछड़ेपन से फायदा उठाकर चीन के साथ उसका झगड़ा खड़ा करने की हर तरह से कोशिश करते रहे। हिमालय के सत्रह हजार फीट ऊँचे डाँड़ों द्वारा वह भारी सैनिक सहायता नहीं पहुँचा सकते थे, इसलिए इस काम के लिए उन्होंने भारत को ढकेलना चाहा; लेकिन उसमें उन्हें सफलता नहीं हुई। तिब्बत के प्रतिगामियों ने सब जगह हाथ-पैर मार के देख लिया, कि उनके सबसे पिछड़े तथा निरंकुश शासन को अक्षुण्ण रखने के वास्ते कोई आकर सहायता देने के लिए तैयार नहीं है, तो

अन्त में जनतांत्रिक भावनाओ की विजय हुई और बिना एक बूँद भी खून गिराये तिब्बत विशाल चीनी जनगणराज्य की सहोदर जातियो मे सम्मिलित हो गया। अब भी दुनिया के प्रतिगामी झूठे-झूठे प्रचार से बाज नहीं आते, यद्यपि वह 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' जैसी ही बात है। कभी वह कहते हैं कि वहाँ धर्म और धार्मिक व्यक्तियों पर भारी अत्याचार हो रहा है। लेकिन तिब्बत के धर्म के ठेकेदार अंग्रेज और अमेरिकन साम्राज्यवादी नहीं, बल्कि तिब्बत के धार्मिक नेता दलाई लामा और पण्-छेन् लामा हैं, जो पूरी तौर से नवीन चीन के साथ सहयोग कर रहे हैं। कहा जाता है, चीनी गणराज्य की सीमा पास आ जाने पर फौलादी परदा अब आसाम से लद्दाख की सीमा तक हमारे सारे उत्तरी सीमांत पर पहुँच गया है। लेकिन, परदा किधर है, इसका अच्छा अनुभव मानसरोवर और कैलाश जानेवाले हमारे तीर्थ यात्रियो को हो रहा है। हिमालय के तिब्बत जानेवाले हरेक दरवाजे (घाटा) पर हमारी पुलिस चौकियाँ बैठ गई है जिनका काम है कम्युनिज्म के विरोध के नाम पर हर तरह से यात्रियों को आगे जाने मे बाधा डालना। परले पार चौकियाँ बहुत जगह अस्तित्व ही नहीं रखती, और जहाँ पर है भी, वह तीर्थयात्रियो की यात्रा में बाधा डालने की जगह सहायता करना अपना कर्तव्य समझती है। 1953 ई. की जुलाई मे कैलाश-मानसरोवर के एक तीर्थयात्री को जहाँ हमारी चौकियो की आँख बचाकर मुश्किल से सीमा पार करना पड़ा, वहा उसे सतलज के किनारे अवस्थित थोलिंग मठ, नुबरा और ग्यानिमा जैसी बड़ी-बड़ी मंडियों मे कहीं भी कम्युनिस्ट सिपाही और पुलिस के दर्शन नही हुए—मानसरोवर और कैलाश की सारी परिक्रमा में उन्हे एक भी कम्युनिस्ट पुलिस से भेंट करने का अवसर नही मिला, यद्यपि कम्युनिस्ट पुलिस या सैनिकों के दर्शन न होने का यह मतलब नही था कि वहाँ की शान्ति-व्यवस्था में कोई कमी थी। अब तो पुराने अधिकारियो की लूट-खसोट और लुटेरो की खून-खराबी अतीत की बात हो चुकी।

यदि उक्त सज्जन अपने गये हुए रास्ते से ही कैलाश मानसरोवर का दर्शन करके लौट आना चाहते, तो शायद उन्हे एक भी कम्युनिस्ट सिपाही को देखे बिना ही लौट आना पड़ता। जब वह अलमोड़ा की सीमा के पास तकलाकोट (पुरङ) पहुँचे, तो वहाँ उन्हे कम्युनिस्ट सैनिकों को देखने का मौका मिला, और उनके व्यवहार से वह प्रभावित हुए बिना न रह सके। तिब्बत के साथ सदा व्यापार करनेवाले अलमोड़ा के व्यापारियो ने उन्हे जौ मटर गेहूँ आदि के लहलहाते हुए विशाल खेतों को दिखलाकर बतलाया कि पहले यहाँ भूमि उजाड़ पड़ी हुई थी, हरियाली का कहीं नाम नही था। कम्युनिस्ट सैनिकों ने इन खेतों को आबाद किया, खोदकर इनके लिए नहर ही नही तैयार की, बल्कि पहले के आबाद खेतों के लिए भी पानी की सुविधा पैदा कर दी। थोड़े से समय के भीतर ही कम्युनिस्ट वहाँ एक नये गाँव को बसा चुके है, सैकड़ो आदमी मकानों और खेतों के तैयार करने मे लगे हुए है, जिनमें कम्युनिस्ट सैनिक स्वयं हाथ बँटा रहे है। कैलाश-मानसरोवर की यात्रा अब तक बेरोकटोक होती रही है, अब भी चीनी गणराज्य उसमें कोई बाधा नही उपस्थित कर रहा है, लेकिन हमारे शासक कम्युनिज्म के हौवे मे इतने परेशान है कि वह तब तक किसी को सीमा पार होने देना नही चाहते जब तक मालूम न हो जाय कि वह कम्युनिज्म का नाम नहीं जानता, या उसका विरोधी है। इससे मालूम होगा कि फौलादी परदा किस तरफ से खड़ा किया जा रहा है।

तिब्बत के साथ भारत का पिछली तेरह शताब्दियों का बहुत घनिष्ठ सांस्कृतिक सम्बन्ध है। तिब्बती लिपि हमारी लिपि से निकली है; तिब्बती साहित्य का विशाल भाग या तो हमारे साहित्य का सुन्दर अनुवाद है, या उससे अनुप्राणित होकर बना है। तिब्बती लोक-जीवन के हर एक अंग पर हमारे देश की छाप है। हमारी बहुत-सी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक निधियों को हमारे देश से विलुप्त हो जाने के बाद तिब्बतियों ने अपने यहाँ सुरक्षित रक्खा है। यदि अजन्ता के बाद अपनी चित्रकला के विकास के नमूनो को देखना हो, तो उसे हम तिब्बत में देख सकते हैं। यदि गुप्तकाल की भव्य मूर्तिकला के मूल नमूनों और उसके बाद विकसित होती मूर्तिकला को देखना हो, तो हमें तिब्बत के विहारों की यात्रा करनी होगी। हमारी अनमोल साहित्यिक निधियों में से कितनी ही वहाँ तालपत्र पर संस्कृत मे लिखी मुझे मिली, जिनके बारे में दुनिया के विद्वान समझते थे कि वह नालन्दा और विक्रमशिला के ध्वंस के साथ हमेशा के लिए मूल रूप मे नष्ट हो चुकी हैं, और उन्हे हम तिब्बती और चीनी अनुवादो में ही पढ सकते है। आज भी तिब्बत के पुराने विहारों, स्तूपों तथा मूर्तियो

के भीतर तालपत्र पर लिखे कितने ही संस्कृत के अनमोल ग्रन्थों के प्राप्त होने की सम्भावना है। अभी इसी साल मानसरोवर की यात्रा से लौटे एक तरुण ने बतलाया कि वहाँ के दो मठों में मैंने स्याही से तालपत्र पर लिखी पुस्तकों के पन्ने देखे। भारतीय और चीनी-तिब्बती विद्वानों के सहयोग से हम ऐसी अनेक सांस्कृतिक निधियों का उद्धार कर सकते हैं। ल्हासा में अब हमारे प्रतिनिधि को कौंसिल जेनरलों के तौर पर स्वीकार कर लिया गया है, लेकिन ऐसे कौंसिल जेनरलों से क्या आशा हो सकती है, जो कि अंग्रेजों के फौलादी ढाँचे से चुने जाते हैं और जिनके लिए अपने और अपने पड़ोसी के हजारों वर्ष के सांस्कृतिक सम्बन्धों से अपरिचित होना योग्यता का प्रमाणपत्र माना जाता है। यह निश्चित है कि हमारे दोनों महान् देशों की शताब्दियों से अवरुद्ध सांस्कृतिक सम्बन्ध धारा को मुक्त प्रवाह से बहने का अवसर, अपनी संस्कृति से बिल्कुल अपरिचित आज के दिल्ली के देवता, नहीं देंगे, लेकिन अब जो नई शक्तियाँ उद्भूत हुई हैं, उनका सामना वह नहीं कर सकते।

(4) चीनी (हान्)– उत्तर पश्चिम में मंगोलिया और तुर्किस्तान, पश्चिम में तिब्बत छोड़ बाकी चीनी गणराज्य में चीन जाति का निवास है। चीन के साथ हमारा घनिष्ठ सांस्कृतिक सम्बन्ध निश्चित तौर से ईसा की प्रथम शताब्दी से तो जरूर है। यह भी निश्चित है कि ई. पू. की शताब्दियों में भी बर्मा की पूर्वोत्तरीय सीमा पर अवस्थित युन्नान प्रदेश से भारत का घनिष्ठ सम्बन्ध था। कितना घनिष्ठ सम्बन्ध था, इसका परिचय इसी से मिलेगा कि युन्नान प्रदेश का नाम उस समय गन्धार था, और वहाँ के कितने ही दूसरे नगरों के नाम थे आलवी, सुवर्णग्राम, उन्मार्गशिला, हरिपुंजय। इसी गन्धार के लोग पीछे स्याम, बर्मा और आसाम में आकर थाई, श्रम्म (शान) और अहोम के नाम से विख्यात हुए। आज भी युन्नान के लोगों की वेशभूषा और कितने ही रीति रिवाजों और सांस्कृतिक रूपों पर भारत की छाप स्पष्ट है। चीन की विशाल जाति के साथ भारत का मुक्त सांस्कृतिक आदान प्रदान बराबर होता रहा। चीन ने हमें रेशम दिया, चाय दी, सैकड़ों प्रकार की कला-कौशल की चीजें सिखलाईं। भारत ने भी अपनी सुन्दर कला, गम्भीर दर्शन और अनमोल साहित्यिक कृतियों को देकर चीन के साथ अपना बन्धुत्व स्थापित किया। आज हजार से अधिक हमारे ऐसे संस्कृत के ग्रन्थ हैं जो मूल में लुप्त हो चुके हैं और उनका अनुवाद चीनी भाषा में अब भी मौजूद है, जिससे हम अपने साहित्य का उद्धार कर सकते हैं। एक समय था जबकि सैकड़ों भारतीय और चीनी पंडितों ने मिलकर उन ग्रन्थों का हमारी भाषा से चीनी भाषा में अनुवाद किया। अब उन डेढ़ हजार ग्रन्थों में से सैकड़ों को फिर से भारतीयों के लिए सुलभ करने के वास्ते दोनों देशों के विद्वानों के सहयोग की आवश्यकता होगी।

(5) मंचू (मग) –चीन की यह पाँचवीं जाति थी, जो यद्यपि वंश में मंगोलों के नजदीक थी, लेकिन चीन के आखिरी राजवंश को स्थापित करके वह बहुत कुछ चीनी बन गई।

4. चीनी संस्कृति

चीनी संस्कृति दुनिया की भव्य संस्कृतियों में है। इसका इतिहास ही लम्बा नहीं है, बल्कि इसने दुनिया को बहुत से आविष्कार दिये हैं। 3000 वर्ष पहले चीनी लोगों ने दिग्दर्शन यन्त्र निकाला, 1700 वर्ष पहले इन्होंने ही पहले पहल कागज बनाया। 1200 वर्ष पहले छाप का आविष्कार किया और 800 वर्ष पहले खुदे हुए अक्षरों की जगह अलग अलग बने हुए टाइपों से छपाई भी शुरू की। इसी समय बारूद का आविष्कार किया। रेशम तो चीन की खास चीज थी, इसीलिए संस्कृत में उसे चीना-शुक (चीनी वस्त्र) कहा जाने लगा। चश्मे का आविष्कार, खाने के चम्मच का आविष्कार, अण्डों के खाने का प्रयोग आदि बहुत सी देनें चीनियों की हैं। चीन ने कनफूशी (कनफूजू), लाउ जू, माजू जैसे गम्भीर दार्शनिक पैदा किये। लाउजू ने वेदान्त की तरह का एक रहस्यवादी दर्शन उसी समय आविष्कार किया, जिस समय कि भारत में गौतम बुद्ध थे। कनफूजू (कुङ् फूजू), कश्चित् भद्रपुरुष कुङ् (551-478 ई. पू.) को तो चीन का अफलातून समझना चाहिए। वह सामन्तवादी राजनीतिक दर्शन का बड़ा आचार्य था, जिसकी पुस्तक साहित्य की निधि समझ करके सदा पढ़ी जाती रहेगी, च्यांग काइ शेक तक के सभी सामन्तों के लिए तो वह आदर्श ग्रन्थ है। कनफूजू ने राजभक्ति का पाठ उसी तरह खूब पढ़ाया, जैसे भारत के ब्राह्मण धर्मशास्त्रियों ने। मौजू भी इसी काल में पैदा हुआ था, जो अपने दोनों समसामयिक आचार्यों

मे कही अधिक बढा हुआ था। उसका उत्तराधिकार आदर्शवादी विचारक के रूप मे है, किन्तु बहुत ऊँचे रूप म माओ च-तुग को मिला। वह जनता को भूलभुलेया मे डालकर उसक हित की बाते चाहता था और कहता था

> नावे जल मे यात्रा करन के लिए उपयोगी हैं और गाडिया स्थल मे। जनता के खर्च पर वह बनाई जायें, इसमे मुझे कोई आपत्ति नही है। लेकिन लोग तीन महान् विपत्तियो म पडे हुए है बिना अन्न के भूखे मरते है बिना कपडो के जाडा मे ठिठुरते है और मेहनत की मार क कारण विश्राम नही पाते। क्या तुम उन्हे अन्न वस्त्र वीणा बजाकर, ढाल पीटकर या वशी अलाप कर दे सकते हो ? अथवा जब बडा शक्तिवाला निर्बल को मारता है बडा परिवार छोट को आक्रात करता है जब बलवान निर्बल का लूटता है और बहुत स मिलकर कुछ को उत्पीडित करते है जब चालाक भोले भाल श्रद्धालु को ठगता है और सामन्त अपनी रैयता क साथ क्रूरता का वर्ताव करता है जब कि चोर और लुटेरे भरे पडे है और कानून द्वारा उनका नियत्रण नही हो सकता तो क्या तुम वशी बजा या भाला या नृत्य करके उन्हे बचा सकते हो ? तुम ऐसा नही कर सकते।

माजू (575 525 ई पू) कनफ्यूशस के पहल हुआ था। वह सामन्तवादी वर्ग स्वार्थ के खिलाफ था और उनक शोषणो को रूढी और अध्यात्मवाद के परदे म ढकना नही चाहता था। वह मानव समाज के दुखो को हटाने के लिए कहता था और युद्ध लोभ उत्पीडन और दुराचार का विरोधी था। कनफ्यूशस की तरह वह सामाजिक व्यवस्थाओ और रूढियो को सनातन और पवित्र नही मानता था बल्कि कहता था कि वे मनुष्यो की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए है और बाधा पहचान पर उन्हे हटा देना चाहिए।

जानफुई नामक एक विज्ञानवादी विचारक भी इसी काल म पैदा हुआ था जो कानून के पालन करने का जबर्दस्त समर्थक था। आनफुई और कनफ्यूशस सामन्तो के बडे काम के थे इसे कहने की आवश्यकता नही।

5 चीन का पतन

(1) युद्ध और सधिया—सहस्राब्दियो तक चीन एक महान राष्ट्र रहा जिसका लोहा सारी दुनिया मानती रही। लेकिन 19वी शताब्दी के आरम्भ म पहुचकर उसका पतन शुरू हुआ। अन्तिम राजवश खोखला हो गया था और सामन्तो के मनमानी करने का कोई रोकनेवाला नही था। इस अवस्था म फायदा उठाने के लिए पश्चिमी शक्तिया तैयार थी। उन्होने चीन के विशाल कार्य को हर तरह स दबाना चाहा। अग्रेजो के हाथ मे हिन्दुस्तान आ गया था जहा खूब अफीम की खेती होती जिसे चीनियो को खिलाकर अग्रेजी बनिये मालामाल हो रहे थे। चीनियो के लिए अफीमची नाम मशहूर हो गया था। अपनी प्रजा का इतना पतन देखकर बिगडे मचू शासक भी चुप नही रह सकते थे। अफीम के बदले रेशम और दूसरे रूप म अग्रेज वहा से अपार सम्पत्ति लूट रहे थे। केवल कान्तन के बन्दरगाह म तीन करोड तेल (चादी का सिक्का) प्रतिवर्ष अफीम खरीदने मे उड जाता था। 1838 ई म मचू सम्राट से उसके एक मत्री ने प्रार्थना की कि अफीम का प्रचार बन्द करना चाहिए नही तो हमारी प्रजा नष्ट हो जायगी। अफीम पर रोकथाम लगाई गई। लेकिन अग्रेज बनिये जबर्दस्ती चीनियो को अफीम खिलाना चाहते थे। उन्होने 1844 ई की गर्मियो म अफीम के व्यापार को मनवाने के लिए युद्ध छेड दिया। वाष्पचालित लोहे के जहाजो और शक्तिशाली तोपो के सामने पुरानपन्थी चीनी सामन्त कैसे ठहर सकते थे ? अन्त म चीन को पराजित हो हागकाग को सदा के लिए अग्रेजो के हाथ म दे अफीम के व्यापार के लिए रास्ता खोल देना पडा। यह सन्धि नानकिंग की सन्धि के नाम स मशहूर है जिसके द्वारा अमाय फूचाउ निगपो शघाई और कातन के पाच म अग्रेज मुक्त व्यापार करने लगे। लेकिन चीन ने प्रथम हार म हथियार रख नही दिया। जैसे

सन्	युद्ध	प्रतिपक्षी	सन्धि
1840-42	प्रथम अफीम युद्ध	अग्रेज	नानकिंग

1857	द्वितीय अफीम-युद्ध	अंग्रेज-फ्रेंच-अमेरिका	तियेनचिंग
1884		फ्रांस	
1894-95		जापान	सिमोनोसकी
1900	बाक्सर	अंग्रेज, फ्रेंच, रूसी, जर्मन, अमेरिकन इतालियन, आस्ट्रियन, जापानी	हेया (शान्ति)

इन युद्धों और युद्ध के डर के मारे चीन को विदेशी शक्तियों के साथ बहुत ही दबकर अनेक सन्धियाँ करनी पड़ीं, जिनके कारण चीन पश्चिमी लुटेरों की कृपा पर ही जीता रहा। ये मनमानी सन्धियाँ 1842 ई. से शुरू हुईं; तो 1922 ई. तक वह होती ही रहीं। उनके बोझ से दबी चीनी जनता को उबारने का काम माओ चे-तुंग और कम्युनिस्ट पार्टी ने किया। इन सन्धियों की सूची निम्न प्रकार है :

सन्	नाम	प्रतिपक्षी	परिणाम
1840-42	नानकिंग	अंग्रेज	हांगकांग छीनना
1843	हूमन	अंग्रेज	पाँच बन्दर खुले
1858	तियेनचिन	अंग्रेज, फ्रेंच, अमेरिकन, रूसी	
1860		रूसी	
1861	तियेनचिन	जर्मन	
1862	तियेनचिन	पोर्तगीज	
1863	तियेनचिन	डेन, डच	
1864	तियेनचिन	स्पेन	
1865	पेकिंग	बेल्जियन	
1866	पेकिंग	इताली	
1869	पेकिंग	आस्ट्रिया	
1874	तियेनचिन	पेरू	
1876	येनताइ	अंग्रेज	
1880	येनताइ	अमेरिका	
1895	सिमोनोसकी	जापान	
1901	हेया (शान्ति)	आठ राज्य	
1902	मारवाई	अंग्रेज	
1903		अमेरिका	
1905	मन्चूरिया	जापान	
1908		स्वीडन	
1921	21 मांगें	जापान	
1922	नवशक्ति सन्धि	नवराज्य	'खुला दरवाजा'

(2) सन्धियों के फल–चीन को हर लड़ाई में हारकर और हर धमकी से डरकर विदेशी शक्तियों के सामने घुटने टेक तरह-तरह की रियायतें देनी पड़ी। ये रियायतें चीन की स्वतंत्रता को खतम कर देती थीं। यह इनमें से कुछ का विवरण है–

(क) बहिर्देशीय अधिकार–इसके अनुसार रियायत पानेवाले विदेशी राज्यों के नागरिकों को अधिकार था, (1) कि वादी-प्रतिवादी दोनो के विदेशी होने पर उनके मुकदमे का फैसला चीनी अधिकारी नही कर सकते थे,

(2) यदि दोनों में से एक चीनी हो, तो विदेशी और चीनी अफसर दोनो मिलकर उसके मुकदमे को देखेंगे, (3) यदि फौजदारी मुकदमे मे चीनी और विदेशी दोनो हों, तो भी विदेशी प्रतिवादी की सुनवाई उसके अपने देश के अधिकारी द्वारा तथा अपने कानून के अनुसार होगी।

मुकदमे की सुनवाई मे नानकिंग की सन्धि के बाद की होनेवाली सन्धियो में 'हुइ-थुंग-शन्-सिन्' वाक्य था, जिसका अर्थ दीवानी मुकदमा ही था, किन्तु अनुवाद की गलती से उसमे फौजदारी मुकदमा भी शामिल कर लिया गया। इस अधिकार ने चीन के शासन-अधिकार पर अनधिकार हस्तक्षेप किया, जिसके फलस्वरूप चीन की प्रभुसत्ता खतम हो गई। एक तरफ तो विदेशी नागरिक इसके कारण चीन के कानून के अधिकार मे नही आते थे, और दूसरी तरफ वे चीन के न्याय-प्रबन्ध मे हस्तक्षेप कर सकते थे। विदेशी नागरिक चीन के अदालत के अधिकार क्षेत्र से बाहर थे, पर विदेशियो को चीनी नागरिको के मुकदमे सुनने का अधिकार था।

(ख) रियायती क्षेत्र–विभिन्न सन्धियो से खोले गये बन्दरगाहो पर विदेशियो के लिए रियायती क्षेत्र दिये गये। पहले केवल शाघाई के 'अन्तर्राष्ट्रीय निवास-क्षेत्र' की सीमा सन् 1845 मे और फ्रासीसी रियायती क्षेत्र की सन 1849 मे निर्धारित हुई थी। सन 1861 मे तियेनचिंग के ब्रिटिश रियायती क्षेत्र और फ्रासीसी रियायती क्षेत्र की सीमा निर्धारित हुई, इसी साल हानूकाउ, चिउचियाग, चैन् चियाग और श्यामिन् (अमोय) के ब्रिटिश रियायती क्षेत्रो की सीमा तथा कान्तन (क्वाग चाउ) मे अवस्थित शामियन के ब्रिटिश रियायती क्षेत्र और फ्रासीसी रियायती क्षेत्र की सीमा निर्धारित हुई। इस अधिकार के अनुसार 1895 ई मे हानूकाउ जर्मन रियायती क्षेत्र और तियनचिन जर्मन रियायती क्षेत्र, 1896 ई. मे हानूकाउ रूसी रियायती क्षेत्र और फ्रासीसी-रियायती क्षेत्र एव हाग चाउ जापानी रियायती क्षेत्र, 1897 ई. मे सूचाउ जापानी रियायती-क्षेत्र, 1898 ई. मे तियेनचिन् जापानी रियायती क्षेत्र, हानकाउ रियायती क्षेत्र, शा-श जापानी रियायती क्षेत्र और 1899 ई मे शिया-मन् तथा फूचाउ के जापानी रियायती क्षेत्र स्थापित हुए।

बहिर्देशीय अधिकार भूभाग पर नही, बल्कि केवल व्यक्तियो पर लागू होता था, किन्तु रियायती क्षेत्र का अधिकार हर रियायती क्षेत्र के सारे भूभाग पर लागू हो गया, जिसका अर्थ था चीनी भूभाग के भीतर अनेक विदेशी राज्य स्थापित हो गये।

(ग) विदेशी चुंगी जहाज-अधिकार–इसके अनुसार विदेशी जगी जहाज चीन के समुद्र के किनारे-किनारे तथा देश की भीतरी नदियों मे चल सकते और लगर डाल सकते थे। इसके कारण चीन के पास नाममात्र की सामुद्रिक रक्षा भी नही रह गई, और विदेशियो के जगी जहाज चीन के प्रायः सभी प्रधान नगरो मे इच्छा होने पर पहुँच सकते थे।

(घ) चुंगी-नियंत्रण–तियेनचिन् की सन्धि के पूर्व मे ही शाघाई के चुगी (आयात कर) के प्रबन्ध मे विदेशी भाग लेते थे। 1856 ई की 'व्यापारिक नियम सम्बन्धी चीन ब्रिटिश करारनामा' मे एक शर्त यह भी थी, कि चीन के आयात-कर के प्रबन्ध मे सहायता करने के लिए एक अग्रेज अधिकारी की नियुक्ति होगी। तब से चीन के आयात-कर का इन्सपक्टर जेनरल बराबर अग्रेज होने लगा, और उसका अधिकार भी बढता ही गया। विदेशियो के साथ चीन की जो सन्धियाँ हुई थी, उनके अनुसार कर की दर निश्चित कर दी गई थी। अब चीन के आयात कर पर विदेशियो का प्रत्यक्ष नियत्रण हो जाने से राज्य की आय पर भी उनका नियत्रण हो गया।

(ङ) एकतरफा व्यापार-रियायत–सन्धियों के अनुसार व्यापार-कर मूल्यानुसार 5 प्रतिशत निर्धारित किया गया। देश के भीतर लगनेवाले कर की दर नियमित जकात (आयात-कर) से आधी निर्धारित हुई, अर्थात् मूल्य के अनुसार ढाई सैकडा, जहाजी महसूल घटाकर केवल 0.4 तेल प्रतिटन कर दिया गया, और हर दसवे वर्ष चुगी के करारनामो मे सशोधन होने लगा। इस रियायत के अनुसार विदेशी माल किसी दूसरे प्रकार का कर दिये बिना चीन के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान मे बिना रोक-टोक भेजा जाने लगा, और उसे सशोधनो द्वारा अधिकाधिक सरक्षण दिया जाने लगा।

(च) व्यापारिक जहाज चालन—इसके सम्बन्ध के विशेष अधिकार प्राप्त कर लेने पर अब चीनी समुद्रतट और देश की नदियों के भीतर अपने व्यापार के लिए विदेशी जहाजों को चलाने की छूट हो गई। फलस्वरूप केवल विदेशी माल से चीन के सभी भागों के बाजार ही नहीं भर गये, बल्कि चीन का जहाजी धन्धा भी विदेशियों के हाथ में चला गया। विदेशी माल नहीं, बल्कि चीनी माल भी अब विदेशी जहाजो द्वारा ही हर जगह जाता-आता था।

(छ) प्रभाव क्षेत्र-अधिकार—इग्लेण्ड, फ्रास, जर्मनी, जारशाही रूस और जापान ने इस अधिकार द्वारा चीन के अपने प्रभाव-क्षेत्रो में रेल बनाने, खान खोदने आदि के अधिकार प्राप्त किये, जिसके द्वारा विदेशियों ने चीन को विभाजित करने की ओर कदम बढ़ाया। रेल, खान, उद्योग-धन्धे और वाणिज्य-व्यापार आदि सारे आर्थिक जीवन पर विदेशियों का अधिकार हो गया।

चीन मे विदेशी सैनिक रखने, चीन के डाक-विभाग में विदेशी कर्मचारी की नियुक्ति और विदेशी डाकखानों की स्थापना, कल-कारखाने स्थापित करने के अधिकार आदि द्वारा विदेशियो ने चीन को पंगु कर दिया था। अब चीन सैनिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि में विदेशी शक्तियों के हाथ की कठपुतली-भर था। अगर विदेशी चीन पर सीधे शासन नहीं कर रहे थे, तो उसका कारण यही था कि लुटेरो मे लूट के माल को बॉटने के लिए भारी मतभेद था। यह अवस्था थी, जब कि चीन के उद्धारक माओ चे तुग ने जन्म लिया।

2

बाल्य (1893-1901 ई.)

ह्वाग हो और याग ची क्याग चीन की दोनो महान नदियों के बीच मे होनान प्रदेश में श्याग-तान् जिले के शाउ-शाग-च्रुग गॉव को माओ चे तुग को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त है। शाउ-शाग गॉव पहाड के किनारे-किनारे प्रायः तीन मील (10 ली) लम्बा चला गया है। चारो तरफ पहाड़ो की सुषमा और जलाशय की नयनाभिराम छवि देखने मे आती है। गॉव में बहुत अधिक घर नहीं थे, और जो थे भी, वह एक-दूसरे से काफी दूर-दूर बसे हुए थे। किसानों का गांव था, जिनकी जीविका का अवलम्ब खेती थी। इसी गॉव में माओ परिवार रहा करता था। गाव दो भागो मे विभक्त था—'ऊपरी दक्षिणतट' और 'निचला दक्षिणतट'। निचले दक्षिणतट से श्याग-तान कस्बे को सड़क जाती थी, जो कि जिले (शियान) का सदरमुकाम था। ऊपरी दक्षिणतट के पास एक पत्थर का पुल था, जिसके किनारे गॉव का छोटा सा बाजार अर्थात् थोड़ी-सी दुकाने थीं, जिनमें मास, नमक, तथा किसानो की आवश्यकता की दूसरी चीजे बिका करती थी। पुल के नीचे एक छोटी-सी नदी बहती थी। वह बहुत सीधी सादी नदी थी, यह इसी से मालूम होगा कि उसकी धारा के पास ही समतल भूमि मे खपडैल की छतोवाला एक घर बना था, जिसके दो खण्डो में से एक मे माओ-परिवार रहता था और दूसरे में चाओ। दोनों परिवार एक कुल के न होते हुए भी एक ही घर के आधे आधे में रहा करते थे, जिसकी सीमा रहने के कमरे के बीच से जाती थी।

1. किसान पुत्र का जन्म

शाओ-शान् के इसी घर में 1893 ई. में चीनी ग्यारहवे महीने की 19वी तारीख को एक बालक पैदा हुआ, जिसका नाम चे-तुग रक्खा गया। परिवार की उपाधि माओ से मिलकर चीनी परम्परा के अनुसार जाति उपाधि को पहले रख बालक को माओ चे-तुग कहा जाने लगा।

2. माता-पिता

चे-तुग के पिता का नाम माओ जेन्-शेग (शुन्-शेन) था। वह बहुत गरीब, लेकिन शरीर से लम्बे और बहुत हट्टे-कट्टे थे। चीनी लोगो को मूँछ-दाढी बहुत कम होती है, शायद उसी के कारण वहाँ दाढी का मूल्य अधिक है, और कम-से-कम प्रौढा या वृद्धावस्था मे अपनी लम्बी बकर-दाढी को बढाकर रखना सभ्रान्त पुरुष का चिह्न माना जाता है। माओ शुन-शेन ने भी पिछली अवस्था मे दाढी पाल ली थी। जवानी म उन्हे गरीबी से मुकाबला करना था। भारी सूद पर कर्जा ले रक्खा था, जिसमे उनका खेत बन्धक लग गया था। कर्जा चुकाकर खेत वापस करके फिर से किसानी जीवन शुरू करने के लिए उन्हे कई साल सिपाही की नौकरी करनी पडी थी। पैसा कमाकर लौटने के बाद शुन-शेन ने बन्धक रक्खी अपनी पन्द्रह मू* (7-1/2 एकड) जमीन लौटा ली और उसमे खेती करना शुरू किया। उस समय माओ-परिवार में दादा भी मौजूद थे, जिनके अतिरिक्त पिता, माता, दस वर्ष के चे-तुग और छोटा भाई चे-मन् पाँच व्यक्ति थे। माओ चे-तुग ने आत्मकथा में परिवार का लेखा-जोखा देते हुए लिखा है : "हर साल इस जमीन से 60 तान+ (100 मन) अन्न पैदा होता, जिसमे से 35 तान घर के पाँचो व्यक्तियो पर प्रति व्यक्ति 7 तान के हिसाब मे खर्च होता, बाकी बच 25 तान (41-2/3 मन) से पैसा जमा करके पिता ने 7 मू (3-1/2 एकड) और खरीद ली। अब माओ-परिवार के पास 22 मू (11 एकड) जमीन थी, अर्थात् परिवार मध्यमवित्त किसान था।

जब परिवार मे 7 मू (3-1/2 एकड) जमीन और आ गई, उस समय तक दादा ससार छोड गये थे, लेकिन उनकी जगह एक तीसरा भाई चे-तान पैदा हो गया, इस प्रकार 7 मू जमीन के हाथ मे आने के समय एक खानेवाला दूसरा तैयार हो गया। शुन शेन बडे चतुर और व्यवहार-दक्ष पुरुष थे। घर के खाने से जो अन्न बचता, उससे पूँजी जमा करते। कुछ ही दिनो बाद उन्होने छोटे मोटे बनिये का रूप धारण कर लिया, और किसानो से अनाज तथा सूअर मास खरीदकर शहरो मे ले जाकर बेचने लगे।

माओ की माता तग-चिया तो गाँव (जिला शियाग शियाग) के वेन परिवार की लडकी थी। उनके गुणो के बारे मे यही कहना काफी है कि माओ चे तुग अपनी माँ के साथ बहुत प्रेम रखते थे। उन्होने लिखा है 'मेरी माँ प्रेमल, उदार हृदयवाली महिला थी। अपने पास मे दूसरो को देने के लिए वह सदा तैयार रहती थी। अकाल के वक्त लोग चावल माँगने आते तो वह उन्हे कुछ दिये बिना नही रहती।" पिता को दान-धर्म पसन्द नही था लेकिन माँ इसमे बिलकुल उलटी थी। बुद्ध धर्म मे उनकी बडी भक्ति थी। किसान स्त्री की तरह खेतो और घर मे काम करना, रसोई पकाना, ईंधन जमा करना, चर्खा चलाना, कपडे धोना, मरम्मत करना आदि मे लगे रहते भी वह बुद्ध की पूजा के लिए समय निकाल लेती। चे तुग का अपनी माँ के साथ असाधारण प्रेम था। जब तक वह जीवित रही, तब तक वह अपनी माँ के परम आज्ञाकारी पुत्र रहे। इसे कहने की आवश्यकता नही कि भावी माओ चू शी (माओ-अध्यक्ष) के चरित्र निर्माण पर माता का बहुत गहरा प्रभाव पडा। आज भी विश्व का यह महान् नेता अपनी माता का नाम बडी श्रद्धा और प्रेम से लेता है। माँ के ससर्ग मे आकर चे-तुग भी बुद्ध की पूजा किया करते, और पढ-लिख जाने के बाद बौद्ध ग्रन्थो का बडी श्रद्धा और सम्मान के साथ पाठ करते, लेकिन पिता शुन् शेन के विचार धर्म विरोधी थे। घर एक तरह से विचार और स्वभाव मे दो पक्ष मे बँटा हुआ था, जिनमे एक पक्ष पिता का था, दूसरा माता का। यह कहने की आवश्यकता नही कि चे तुग अपनी माँ के साथ था।

3. बाल्य से महनत

चे-तुग अभी मुश्किल से सात वर्ष का हो पाया था कि उसे खेतो मे काम करने के लिए जाना पडा। पिता का अधिक समय अपने अनाज और मास के व्यापार मे लगता। वह इन चीजो को गाँव मे खरीदकर

*1 मू = 1/2 एकड

+1 तान = 66-2/3 सेर

श्याग-तान्-नींग-श्यान् और चांग शाके नगरो मे ले जाकर बेचा करते। इस प्रकार खेत का सारा काम चे-तुंग और उसकी मा एक नौकर के सहारे किया करते। धान रोपते, बोने या खेत काटने के समय कुछ और भी मजूर रख लिये जाते। जाड़े के दिनों मे चावल कूटने के लिए भी मजूर रखे जाते, और घर मे सात आदमी खानेवाले हो जाते। पिता माओ खर्च करने में बहुत किफायत से काम लेते थे। घर मे खाली सागभाजी और चावल खाने के लिए पकता। चीनी प्रथा के अनुसार चान्द्रमास की पहली और पद्रहवी तिथि को विशेष भोजन बनाया जाता, जिसमे अडा, मछली और कभी कभी मास भी शामिल कर लिया जाता। यद्यपि यह तो नहीं कहा जा सकता कि चे-तुग ने कभी भूख और भीषण गरीबी का सामना किया हो, लेकिन पिता पैसे जोडने के लिए इतने उतारू थे, कि परिवार को बिलकुल मामूली भोजन पर गुजारा करना पडता। और चे तुंग ने बचपन से ही गरीबो के जीवन को बहुत नजदीक से देखा। उससे द्रवित होकर उसकी मॉ अपने पति के पीठ-पीछे दान-धर्म करके गरीबों की सहायता कर आत्मसतोष प्राप्त करती।

4. माओ की बचपन-सम्बन्धी कथाएँ

चे तुग के बाल्य जीवन की कितनी ही कथाएँ उसी तरह प्रसिद्ध हैं, जिस तरह किसी भी महापुरुष की होती हैं :

1 एक साल फसल के समय एकाएक वर्षा आ गई। किसान अपने कटे हुए धान को खलिहान में सुखा रहे थे। चे तुग अभी बालक ही था। वह जाकर दूसरे किसान के धान को बटोरने मे सहायता करने लगा। बाप ने बुरा-भला कहा, इस पर लडके ने उत्तर दिया "उनका परिवार बहुत गरीब है, ऊपर से उन्हे मालगुजारी भी देनी है। थोड़ा भी नुकसान उनके लिए बहुत असह्य होगा। जहॉ तक हमारे नाज का सवाल है, यदि नुकसान भी हो जाय, तो कोई बात नहीं।"

2 जाडे के दिनो में एक बार जब चे तुग स्कूल जा रहा था, तो उसे पतला कपडा पहने कॉपता हुआ एक तरुण बर्फ में जाता मिला। चे तुग ने उससे पूछा, और फिर अपने रुईदार कुरते को निकालकर उसे दे दिया। घर जाने पर उसे पिता की झिड़कियाँ सुननी पडी।

3. चीनी नव वर्ष के त्योहार के एक दिन पहले पिता ने सूअर के मास के लिए चे तुग को एक घर मे भेजा, जिसने माओ परिवार के हाथ सूअर बेचना ते किया था। चे-तुग की जैब में उगाहे पैसे पडे थे। रास्ते मे उसे फटे चीथडो मे लिपटे कुछ बहुत गरीब आदमी मिले। चे-तुग का दिल पिघल गया, और उसने जो पैसा उगाहा था, उसे उन लोगो मे बॉट दिया।

4 एक दिन पिता ने चे तुग और उसके भाई को खेत मे मटर तोडकर लाने के लिए भेजा। भाई ने खेत की ऐसी जगह पसन्द की, जहाँ मटर दूर दूर खड़ी थी, और जल्दी फलियाँ चुनकर खतम कर सकता था। चे तुग ने रात की ऐसी जगह चुनी, जहा कि मटर बहुत घनी उगी हुई थी। वहाँ वह फलियाँ तोडने लगा और थोडी ही जगह मे देर तक फँसा रहा। बाप ने आकर देखा, कि छोटे भाई ने बहुत-सी जगह की मटर तोड ली है। वह उस पर बहुत प्रसन्न हुआ, और बडे लडके को एक ही जगह बैठे रहने के लिए बहुत बुरा-भला कहा। इस पर चे तुग ने अपनी टोकरी दिखला दी। उसमे छोटे भाई से बहुत अधिक फलियाँ मौजूद थी। बाप अब क्या कहता ?

5. परिवार के पडोसी—जिसका भी कुलनाम माओ था—ने एक बार चे-तुग के पिता के हाथ एक सूअर बेचा। दाम भी दे दिया गया लेकिन बडे माओ ने उसी समय सूअर को अपने यहाँ नही मँगा लिया। दो-तीन हफ्ते बीत गये, इसी बीच सूअर के मास का दाम बढ गया। बाप ने जल्दी चे-तुग को सूअर लाने के लिए भेजा। पड़ोसी ने कहा "सूअर के मास का दाम बढ गया है न,और मैने इतने दिनो तक इसे खिलाया-पिलाया है, इसलिए मै उसी दाम पर सूअर नही बेचूगा।" चे-तुग ने उसकी दलील को मजूर किया : "उसने दस दिन से अधिक सूअर को खिलाया है, भला वह कैसे उसी दाम पर बेच सकता है ?" चे-तुग खाली हाथ घर लौट आया, और उसने पिता को भी समझाने की कोशिश की।

3
शिक्षा और मेहनतकशी (1901-11)

1. शिक्षा

आठ वर्ष की उम्र मे पिता ने चे-तुग को गॉव के गुरुजी के पास पढने के लिए बैठा दिया। गुरुजी ने अपने घर पर ही स्कूल खोल रक्खा था। कुछ फीस लेकर वह लडको को पढाया करते थे। यह 20वी शताब्दी का आरम्भ–1901 ई का साल था। तब से 13 वर्ष की उम्र (1906 ई) तक चे-तुग इसी पाठशाला में पढता रहा। पढने के अतिरिक्त उसे खेतो मे भी काम करने के लिए शाम-सवेरे जाना पडता। चीनी भाषा में हमारी वर्णमाला की तरह कुछ दर्जन अक्षर नही है, बल्कि प्रत्येक शब्द के लिए अलग सकेत या अक्षर होने से वर्ण-परिचय के लिए कई हजार अक्षरो को बडी मेहनत से सीखना और लिखना पडता है। चे तुग भी ब्रुश और पत्थर पर रगडी काली स्याही से कागज पर इन अक्षरो को लिखता और सीखता रहा। पुरानी परिपाटी के अनुसार पुस्तको का घोखना शिक्षा का मुख्य तरीका था। गुरुजी इसी परिपाटी से अपने छात्रो को पढाया करते। चे तुग बहुत मेधावी छात्र था, उसने कनफूजू के चारो मूल ग्रन्थो को कठस्थ कर लिया। ये ग्रन्थ अपनी भाषा की दृष्टि से भी भारी साहित्यिक मूल्य रखते थे, और उनमे बहुत तरह की नैतिक शिक्षाएँ भी थी। लेकिन पढाते वक्त उनके भावो का समझाने की जरूरत नही समझी जाती थी। जिस तरह हमारे यहाँ सस्कृत के विद्यार्थियो के लिए बिना समझ व्याकरण के सूत्रो को रटा दिया जाता है, वही बात चीन मे भी थी। चे-तुग को यह ढग पसन्द नही था–बिना समझे तोतारटन ! किन्तु उसने रट जरूर लिया था। जब उसे पर्याप्त अक्षरो का परिचय हो गया, तो उसका मन समझने लायक दूसरी पुस्तको के पढने मे खूब लगने लगा। कनफूजू ढाई हजार वर्ष पहले पैदा हुए थे, उनकी भाषा-शैली बहुत पुरानी थी, किन्तु अब नई कहानियों और उपन्यास निकलने लगे थे। चे तुग ने यूय फे (ईमानदार खरगोश), थाग-वश की कहानियॉ 'पश्चिम का तीर्थयात्री' जैसी पुस्तके पढ डाली, फिर 'जलतट' और 'तीन राज्य' जैसी पुस्तके भी पढी। आगे उसे पुरानी पुस्तको मे भी रस आने लगा। स्मृति तेज होने से चे तुग को उनके बहुत-से वाक्य याद हो जाते थे। पुस्तक समाप्त करने के बाद कहानियो के व्यक्तियो और कथानको को वह सुना सकता था। कहानी कहने का ढग भी उसे बहुत अच्छा आता था। प्राचीन इतिहास के वीर पुरुषो की कथाएँ चे-तुग को बहुत प्रिय थी। 'यो फंड चुवान' (चिन-चुग-चुवान), 'शुई हू-चुवान', 'फान-तान', 'सान कुओ' (तीन राज्य), 'शी-यू-ची' पुस्तको के पढने का उल्लेख माओ चे तुग ने अपने आत्मचरित मे भी किया है। गुरुजी जिन पुस्तको का पढना व्यर्थ या हानिकारक समझते थे, उन्हे चे-तुग जरूर पढता था, और आगे उसने स्वीकार किया कि "ऐसी पुस्तको की छाप मेरे ऊपर बहुत पडी।"

पुराने अध्यापको की तरह इस गॉव के गुरुजी भी विद्या को दिमाग मे घुसेडने के लिए छडी की सहायता अत्यावश्यक समझते थे। लडको को कभी छडी से हाथ पर मारते, कभी सिर पर, कभी पैरो के तले मे और कभी जॉघ पर। कान पकडकर बैठाना और कितने ही दूसरे प्रकार की भी ताडना देते थे। कान पकडकर, सिर झुकाकर बैठने की सजा तब तक चलती थी, जब तक कि एक धूपबत्ती जल न जाती। गुरुजी चे-तुग पर भी दण्ड के प्रयोग से बाज नही आ सकते थे, लेकिन उसे यह पसन्द नही था। उसने विरोध का कोई फायदा न देखकर यही निश्चय किया कि गॉव छोडकर कही दूसरी जगह भाग चले। एक दिन वह भाग चला, तीन दिन तक चलता रहा, किन्तु आसपास मे चक्कर काटता तीन मील (10 ली) के घेरे मे ही रहा, यद्यपि वह समझ रहा था कि मै शहर जा रहा हूँ। घरवाले परेशान थे। आखिर मे उन्होने लडके को ढूँढ पाया। इस समय 1903 ई. थी और चे-तुग की उम्र दस साल की थी। पिता का गुस्सा ठडा हो चुका था। वह समझते थे यदि फिर कुछ कहा, तो बेटा तीन मील के भीतर ही चक्कर काटता नही रहेगा। मास्टर के ऊपर भी इस सत्याग्रह का प्रभाव पडा। चे-तुग की पहली हडताल सफल रही।

चे-तुंग जब कुछ लिखना-पढना सीख गया, तो पिता ने उसे हिसाब लिखने-पढ़ने तथा हिसाब-यन्त्र को सिखला दिया। अब बहीखाते का काम उसे ही करने को मिल गया और इस प्रकार रात के लिए भी काम बढ़ गया। बाप इस सिद्धात के माननेवाले थे कि लडके को कभी बेकार नहीं छोडना चाहिए, इसलिए वह बाकी समय चे-तुंग को खेत मे काम करने के लिए भेज देते।

2. गरीबों से सहानुभूति

13 वर्ष की उम्र (1906 ई.) तक चे तुग की गाँव की पढाई खतम हो गई। बाप ने अब लड़के को काम मे लगाना ज्यादा लाभदायक समझा। इसी समय उन्होने अपने चौदह वर्ष के ज्येष्ठ पुत्र का ब्याह एक बीस वर्ष की कन्या मे कर दिया, लेकिन यह नाममात्र का ही ब्याह था, जैसा कि माओ चे-तुग ने स्वय लिखा है : "किन्तु मैं उसके साथ कभी नही रहा। मै उसे अपनी पत्नी नही समझता था।" यद्यपि पढाई अब बन्द हो गई थी, लेकिन चे-तुग का पढने का शौक बढता ही जा रहा था। वह पुस्तको को बराबर पढ़ता रहता। पुरानी पुस्तको के अतिरिक्त नये तरह की पुस्तके उसके लिए अधिक आकर्षण रखती थी, विशेषकर ऐसी पुस्तको को, जिनमे शासको और उत्पीड़को के विद्रोह और बगावती कथाएँ रहती। एक दिन स्वय चे तुग के दिमाग मे खयाल उठा : "इन उपन्यासो और कथानको मे केवल राजाओ, मन्त्रियो, सेनापतियो, ऋषि-मुनियो और योद्धाओ की ही गाथाएँ क्यो मिलती है, क्यो नही उनमे हमारे जैसे किसानो की कथाएँ आती ?" अन्त मे वह अपने ही आप इस निष्कर्ष पर पहुँचा . "पुराने कथानको के अधिकतर नायक शासक, शोषक और उत्पीडक इसलिए होते है, कि वह बहुत भारी जमीन के मालिक होते हैं, जिसमे वह मजूरो से खेती करवाते है। लेकिन जो सूर्योदय से सूर्यास्त तक ही नही, बल्कि रात तक मर-पचकर काम करते है, इतने कष्ट सहते है, वह क्यो नही इन कथानको के नायक बनते ?" अभी इसका जवाब मिलने के लिए काफी देर थी। तो भी माओ चे तुग ने ताईपिग की क्रान्ति की बाते सुन रक्खी थी। ताईपिग विद्रोह वस्तुतः एक असाधारण—वस्तुतः किसानो की क्रान्ति थी।

3. ताईपिग का पँवाडा

हम देख चुके है, किस तरह पश्चिमी शक्तियों ने चीन मे लूट खसोट मचानी शुरू की और किस तरह विशाल चीन देश बेबस होने के लिए मजबूर हुआ। उस समय और पीछे भी एक ओर विदेशी बनिये चीन की जनता के ऊपर गिद्ध की तरह लगे हुए थे, और दूसरी तरफ चीन के राजा और सामन्त जनता का खून चूस रहे थे। इसी समय 1851-65 ई मे चीनी जनता उठ खडी हुई—1951 मे ताइपिग शताब्दी को बड़े उत्साह के साथ स्वतन्त्र चीन ने मनाया। क्याग सू प्रदेश मे सूचाउ पुराना नगर है, जहाँ पर यह नाटक आरम्भ हुआ था। सूचाउ के लोग अपनी वश-परम्परा से ताइपिग वीरो की कहानियाँ याद रखते आये है। सूचाउ के वृद्ध प्रपितामह वू-हू बडे गर्व से कहते हैं : "हमारे नगर के इतिहास मे ताइपिग क्रान्तिकारी सेना के हितकारी शासन से बढ़कर कोई दूसरा नही।" यह सेना जून 1860 से दिसम्बर 1863 तक इस नगर मे रही। वृद्ध को अब भी याद है, किस तरह सूचाउ के आसपास के इलाके म उस समय पहले की मालगुजारी और कर कम कर दिये गये, फिर जमीदारो से जमीन छीनकर बेखेतवाले मजूरो और गरीब किसानो मे बाँट दिया गया। नगर मे शासन ने बेकारो को काम देने तथा शरीर से काम न कर सकनेवाले लोगो को सरकारी कोष से सहायता देने का प्रबन्ध किया था। चोरो और भिखमगो को काम सिखलाया जाता था, जिससे वह ईमानदारी से अपनी जीविका कमा सके। प्रपितामह वू को अब भी जनता के इस विद्रोह के जनगीत की कुछ पक्तियाँ याद है :

> "सूर्य की किरणे चमक रही ऊँचे आकाश मे,
> सभी जा रहे मचूराज्य से लड़न,
> पाशविक अत्याचार को परास्त करने,
> चिरशान्ति और सुख के लिए।"

1860 के जून महीने के आरम्भिक दिनो मे मचू सेना ने परास्त होकर नगर छोडने के लिए मजबूर होने

से पहले सूचाउ को लूटा, और नगर मे आग लगा दी। नागरिक ताइपिग सना के स्वागत के लिए क्यो न तैयार होते ? 12 जून, 1860 को विद्रोही वीर-सेनापति ली श्यू चेग जिसे चुन वाग (भला राजा) भी कहा जाता है—अपने आदमियो के साथ सूचाउ मे दाखिल हुआ। यह सेना जिस तरह लडने म बहादुर थी, वैसे ही जनता के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध और मधुर बर्ताव के कारण बहुत जनप्रिय भी थी। उसने नगर म बहुत जल्दी शान्ति ही नही, बल्कि आर्थिक जीवन को भी अच्छे ढग मे स्थापित करके रोटी और काम देने का प्रबन्ध किया। व्यापारियो को कर्ज दिया गया बचने के बाद जिसका 70 सैकडा लौटाना पडता और 30 सैकडा आगे की पूँजी के रूप मे रक्खा जाता। गॉव मे नगर म निर्बाध माल जिससे आता रहे, इसके लिए सूचाउ के चुग मेन् दरवाजे के करीब ली श्यू चेग ने एक बाजार कायम किया। नफाखोरी और जखीरा जमा करके रखना सख्त मना था। ताइपिग शासन तीन साल तक इस इलाके मे रहा। इस सारे समय मे लोगो का जीवन बहुत सुखमय रहा। विद्रोही शासन ने साधारण जनता के लडके लडकियो के पढने के लिए स्कूल खोले थे, पुराने अमीरो के घरो और दूसरी इमारतो को स्कूलो के रूप म परिणत कर दिया था। उसने सडको को पक्का किया, पुलो की मरम्मत की। सूचाउ मे आज भी ताइपिग क्रान्ति के चिह्नस्वरूप कितने ही मकान और कितने ही अभिलेख मौजूद हैं, जिनको कम्युनिस्ट शासन ने अब सुन्दर स्मारको का रूप दे दिया है।

अग्रेज और अमेरिकन उस वक्त मचू शासन के पृष्ठपोषक थे। अमेरिकन फ्रेडरिक टौनसेड वार्ड और अग्रेज गॉर्डन मचू सेना के सचालक और परामर्शदाता थे। वार्ड को लडाई मे अपने प्राणो से हाथ धोना पडा। ताइपिग विद्रोही जनता के सबसे उत्पीडित भाग के हितो के समर्थक थे, इसलिए उन्हे जनता की सहायता सुलभ थी। ताइपिग महान् नेता हुग श्यू चुवान (दिव्य राजा) बडा ही जनप्रिय था। उसने क्रान्ति का बडा सुन्दर सगठन किया था। उसे सहायक भी ली श्यू चेग जैसे योग्य सेनानायक मिले थे। 'दिव्य राजा' की राजमोहर अब भी मिलती है, जिस पर और बातो के साथ ज्येष्ठ भाई ईसू ख्रीष्ट का नाम भी अकित है। इससे पता लगेगा, कि ताइपिग यूरोपियो के अन्ध शत्रु नही थे। लेकिन क्रान्ति की सफलता के लिए किसान पर्याप्त नही थे, विशेषकर ऐसी क्रान्ति के लिए जिसमे उत्पीडित वर्ग के स्वार्थो को प्रमुखता देने का प्रयत्न किया गया था। जनता ने ताइपिग के स्मारक के तौर पर चुग मेन् के दरवाजे के बाहर एक तोरण स्थापित किया था जिस पर लिखा था जनता नही भूल सकती। 2 दिसम्बर, 1863 को क्रान्तिकारियो को सूचाउ छोडने के लिए मजबूर होना पडा मचू शासक फिर नगर म आ गये और उन्होने जनता के विजय तोरण को ध्वस्त कर दिया लेकिन जनता उसे कैसे भूल सकती थी ? उसने हमेशा उसे याद रक्खा और क्रान्तिकारी चीन ने तो अब ताइपिग की कीर्ति को अमर कर दिया है।

चे तुग ताइपिग की कहानियो को बडे चाव और श्रद्धा के साथ सुनता था, जब उसके दादा उन वीरो की गाथाओ को दोहराते। विद्रोह को दबाने मे कमाई विश्वासघाती चेग कुओ फान का खास हाथ था, जो कि चे तुग के अपने प्रदेश हूनान के शियाग शियाग का निवासी था। चेग ने शियाग (हूनान) सेना सगठित करके विद्रोहियो म लडाई की थी, और हराने के बाद उसने बडी भारी सख्या मे अपने ही लोगो को निर्दयतापूर्वक कत्ल करवाया। ताइपिग की परम्परा को चे तुग के प्रदेश के किसानो ने कभी नही भुलाया और जब जब भी अत्याचार ने सीमा पार की, वह विद्रोह करने म बाज नही आये।

एक बार भारी अकाल पडा। चे तुग अपने दूसरे लडको के साथ पाठशाला के बाहर खेल रहा था, उसी समय उसने चाग-शा से आये कितने ही चावल के व्यापारियो को देखा। चाग शा बहुत बडा नगर है, जो हूनान म दक्षिण हूनान प्रदेश म पडता है। लडको ने पूछा, 'तुम क्यो बडे नगर से भाग आये ?' बनियो ने जवाब दिया 'वहाँ बलवा हो गया है, और अकाल के मारे हजारो आदमी मर गये है।" जब भूखे शरणार्थियो ने प्रतिनिधियो को भेजकर राज्यपाल से सहायता मॉगी, तो उसने जवाब दिया "क्यो, तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ नही है ! नगर मे बहुत चावल है। मुझे ही देखो, खाने की बहुत-सी चीजे मेरे पास हैं।" शरणार्थी 'भूखा मरता क्या न करता' के रास्ते पर चले, और उन्होने बलवा कर दिया। यामन (राज्यपाल भवन और कार्यालय) को तोड दिया, दरवाजे के ध्वज स्तम्भ को काटकर गिरा दिया। राज्यपाल जान लेकर भागा। अत मे एक

अफसर च्वांग-केंग-लियांग घोड़े पर सवार हो दौड़कर आया, उसने लोगो को यह कहकर शान्त किया कि सरकार सहायता का प्रबन्ध कर रही है। पीछे मचू राजा ने च्वाग को यह कहकर नौकरी से निकाल दिया कि वह 'बलवाइयों का पक्षपाती' था। एक नया राज्यपाल आया, जिसने बलवाइयों के सभी नेताओं को पकडकर कितनो को कतल करवा दिया।

चे-तुग और उसके साथी शरणार्थियो की बुरी हालत को अपनी आँखो देख चुके थे। उनकी कथाओं को सुनकर लडको मे से अधिकाश की सहानुभूति बलवाइयों के साथ थी। चे-तुंग के लिए तो वह और भी अधिक सहानुभूति के पात्र थे। इस घटना ने चे-तुग के जीवन पर एक अमिट छाप छोडी, जिसने माओ चे-तुग बनने के लिए उसका पथ-प्रदर्शन किया।

बालपन की एक और घटना भी चे-तुग के लिए स्मरणीय रह गई। अत्याचारियो से मुकाबला करने तथा दूसरे कामो के लिए भी गुप्त सभाएँ चीन मे अक्सर काम करती थी। शाउशान् चुग मे भी के लाउ-हुइ नाम की ऐसी ही एक किसान गुप्त सभा थी। सभा के मेम्बर का जमीदार से झगडा हो गया। जमीदार ने किसान के ऊपर मुकदमा कर दिया। पैसा और प्रभाव उसके पास था, इसलिए उसके मुकाबले मे किसान भला न्याय कैसे प्राप्त कर सकता था ? के लाउ हुइ ने इस फैसले को बिलकुल अन्याय समझा और सभी लोग गॉव छोड ल्यूशान पहाड मे मोर्चाबन्दी करके जा बसे। सरकार ने उनके खिलाफ सैनिक भेजे। जमीदार ने सरकार को प्रभावित करने के लिए यह अफवाह फैला दी कि किसानो ने हथियारबन्द विद्रोह किया है, और अपने झडे के लिए उन्होंने एक बच्चे को मारकर 'खून की बलि' भी चढाई है। भला सरकारी सेना के सामने मुट्ठीभर किसान क्या करते ? हारने के बाद उनका नेता के फान (एक लोहार) किसी तरह से भाग निकला। पीछे उसे पकडकर कतल कर दिया गया। अपने गॉव के वीर लोहार के प्रति चे तुग और उसके साथियो का अपार सम्मान था। वह दूर-दूर के देश काल के वीरो की उपासना करते थे। फिर अपने गॉव के वीर की उपासना क्यो न करते, जो कि अत्याचारी शासन के सामने अभी अभी बलिदान हुआ था।

अगले साल इस इलाके मे भी अकाल पड गया। गरीब भूखो मरने लगे, और धनी महँगा बेचने के लिए अनाज को बखारो मे भर भारी महँगे दाम पर ही चावल बेचने लगे। अब भूखी देहाती जनता ने 'बडे घर मे भोज' आन्दोलन शुरू किया। सैकडो की सख्या मे भूखे लोग धनियों के घरो मे घुस जाते, उनके कोठारो मे से अनाज निकाल लाते, वहीं उन्हे पीसते कूटते और धनी के बडे हडे मे पकाकर खा डालते। इसी तरह वह एक बडे घर मे दूसरे बडे घर मे भोज रचाया करते। चे-तुग इस भोज को बहुत पसन्द करता था। उसे गरीबो का यह विद्रोह किसी भी पुरानी वीरगाथा से कम प्रिय नही मालूम होता।

चे-तुग के पिता की सहानुभूति 'बडे घरो' की तरफ थी, क्योंकि वह भी उन्ही की तरह का होना चाहता था। वह घर के लोगो को अच्छा खाना न दे, हर तरह के पैसे को जमा कर धन बढाना चाहता था। पत्नी की उदारहृदयता पति को पसन्द नही थी। पत्नी खुलकर पति का सामना नही कर सकती थी, तो भी कभी-कभी पति के अतिलोभ और नफाखोरी की निन्दा करती, पर उसका कोई प्रभाव नही पडता था। चीनी पति को अधिकार था कि वह पत्नी को चुपचाप अपनी आज्ञा स्वीकार करने के लिए मजबूर करे। ऐसे समय चे-तुग, उसका भाई और घर का नौकर माँ के पक्ष मे होते। चे तुग इस बात का पूरा ध्यान रखता कि हिसाब-किताब या खेत के काम मे ऐसा मौका न दे, जिससे पिता बुरा भला कहे।

4. घर और बाहर

अपने घर के भीतर ही चे-तुग को उत्पीडक और उत्पीडित दो पक्ष दिखलाई पडते थे, और बाहर कितने ही विद्रोहो को वह अपनी आँखो देख चुका था और उनसे भी अधिक को पँवाड़ा के रूप मे बडे चाव से सुन चुका था, इसलिए अपने विशाल देश पर बीतती बातो के लिए अब उसके कान खुल चुके थे। मचू-शासन के भ्रष्टाचार और अत्याचार के कारण जनता उससे घृणा करती थी। वह अत्याचारो को चुपचाप सहने के लिए तैयार नही थी। जनता यह भी देखती थी कि हमारे ऊपर जुल्म का पहाड ढाने के लिए तो मंचू-शासन

शेर है, लेकिन विदेशी गोरों के सामने वह भीगी बिल्ली बन जाता है। दोनो के विरुद्ध किसानो ने ई-हो-त्वान् (बाक्सर-आन्दोलन) 1900 ई. मे शुरू किया, जिसका नारा था : "मंचुओं को हटाओ और मिग वंश को बैठाओ।" मंचू चीन .भिन्न जाति के थे, और जिस राजवंश का स्थान उन्होने लिया था, वह मिग वंश चीनी था। बाक्सर विद्रोही समझते थे, स्वदेशी वंश के आ जाने से सब काम ठीक हो जायगा। ई-हो-त्वान् का रुख विदेशियों के विरुद्ध बड़ा उग्र था, इसलिए मंचू-सरकार ने नारे को 'मंचुओं की सहायता करो और विदेशियो का सर्वनाश करो' के रूप में बदल अपने को जनता का कोपभाजन बनने से बचा लिया। जब पश्चिमी साम्राज्यवादियों की बन्दूकें और तोपे पहुँची, तो मंचू-शासन ने ई-दो-त्वान् के दबाने मे विदेशियो की सहायता की। 1900 ई. मे विद्रोह के शुरू होते समय चे-तुंग की उम्र केवल सात साल की थी। आठ राष्ट्रो ने अपनी सेनाएँ भेजकर विद्रोह को दबाते हुए राजधानी पेकिग को खूब लूटा-पाटा और 'पेकिग सन्धि' के नाम से 1901 ई. में अपने जूए को और मजबूती के साथ चीन के ऊपर लाद दिया।

1894 ई. मे चीन-जापान युद्ध के समय ही यूरोपियन शक्तियो ने चीन का बँटवारा करना चाहा था, लेकिन उनके आपसी स्वार्थ इसकी इजाजत नही देते थे। इसलिए, बाँटकर शोषण करने की जगह, उन्होंने साझे मे शोषण करना ही अच्छा समझा।

5. देश का ख्याल

13 वर्ष की अवस्था (1906 ई.) मे पढाई छोडने के बाद 16 वर्ष की उम्र (1909 ई.) तक चे-तुंग बाप के हिसाब-किताब और खेती के काम मे लगा रहा, लेकिन इस समय भी वह पुस्तकों को पढा करता था। बाप उसे पसन्द नही करता था, इसलिए उसे रात के वक्त खिडकी के सामने पर्दा लगाकर अपने छोटे-से दीये की रोशनी को ढाँकना पडता था। इसी समय एक बार चे-तुग के हाथ मे 'विदेशी राज्यों द्वारा बाँट लेने का चीन पर खतरा' नामक पुस्तिका आई। चे तुग के हृदय पर सदा के लिए इस पुस्तिका के पहले पृष्ठ का पहला वाक्य अंकित हो गया : "हाय, चीन सर्वनाश के तट पर है।" इस पुस्तिका के पढने के बाद चे तुग के मन मे मातृभूमि की असहाय अवस्था को देख छटपटाहट पैदा हो गई, और उसने उसी समय सकल्प किया कि मै अपने देश को बचाने के काम मे अपना जीवन दे दूँगा। इसी समय से अपनी उस धुन का पुजारी हो गया, जिसने उसके जीवन को बदल दिया।

घर मे पिता अब दो-तीन हजार डालर के पूँजीवाले व्यापारी हो गये थे। उनकी इच्छा यही थी, कि उनका ज्येष्ठ पुत्र भी मेरे कदमों पर चले। लेकिन पिता की बात पुत्र को पसन्द नहीं थी। पिता साक्षर थे, लेकिन अब बडा लडका उनसे बडा पडित था, यह पिता भी मान चुके थे। माँ निरक्षर थी, लेकिन पडित-पुत्र उसकी आज्ञा को अधिक शिरोधार्य मान उसी के रास्ते पर चलना चाहता था, यद्यपि नई पुस्तकें और उनके द्वारा नया जगत् जो दिन-पर-दिन उसके सामने प्रकट होता जा रहा था, उसने चे-तुग की माता को पहले की तरह बुद्ध का अनन्य भक्त आगे नही रहने दिया। पहले पिता की नास्तिकता को वह नापसन्द करता था, किन्तु पीछे वही नास्तिकता उसे ज्यादा पसन्द आने लगी और पूजापाठ मे उसका मन हटने लगा। पिता किसी दिन अपना कर्ज वसूल करने के लिए कही जा रहे थे। रास्ते मे उन्हे बाघ मिला। बाघ रास्ता छोडकर चला गया। इस पर बूढे माओ का धर्म पर विश्वास हो चला और उन्होंने नास्तिकता के रास्ते को छोड बुद्ध धर्म के प्रति अधिक आदर-भाव दिखलाना शुरू किया। एक पीढी पीछे लौट रही थी, लेकिन अगली पीढी वैसा करने के लिए तैयार नही थी।

चे-तुग को इसी समय एक पुस्तक 'चेतावनी के शब्द' (शन-शी विएन) पढने को मिली, जिसको रात मे पढने के लिए चे-तुग ने खिडकी पर पर्दा डाल दिया। इस पुस्तक के विद्वान लेखकों ने बतलाया था कि जब तक चीन मे रेल, तार, टेलीफोन, अग्निबोट जैसे आधुनिक साधन नही होते, तब तक चीन दुर्बल ही बना रहेगा और 'दुर्बल की वहू सारे गाँव की भाभी' बनकर रहेगी। चे-तुग को यह विचार पसन्द आया और वह भी स्वप्न देखने लगा कि हमारा देश भी किसी समय आधुनिक यन्त्रो से सम्पन्न होगा।

6. शिक्षा के लिए घर से बाहर

16 वर्ष की उम्र में चे-तुंग अब गाँव में रहते हुए भी पुस्तकों द्वारा कुछ विस्तृत दुनिया देखने लगा था। बाप को भी मालूम होने लगा कि बेटे को जबर्दस्ती रोकना मुश्किल होगा, इसलिए उसे किसी काम में लगाना चाहिए। चावल की खरीद-फरोख्त और लेन-देन का काम कुछ हो ही रहा था। उन्होंने प्रस्ताव रक्खा, कि बेटा किसी चावल के व्यापारी के पास रहकर उसका काम सीखे, लेकिन चे-तुंग को यह पसन्द नहीं आया। उसे पढ़ने की बड़ी भूख थी। परन्तु अब पुरानी पुस्तकों और पुरानी तरह की पढ़ाई में उसका मन नहीं लगता था। उसे आधुनिक ढंग की शिक्षा पसन्द आने लगी थी, इसलिए वह ऐसे ही किसी स्कूल की तलाश में था। माँ उदार थी, उस उदारता को पुत्र ने और अधिक मात्रा में पाया था। लोग भूखे मर रहे थे, तो भी वृद्ध माओ शाओ शान गाँव के चावल को ढोकर बाजार में पहुँचाते ही रहते थे। एक बार बूढ़े माओ हाँफते-हाँफते आकर माओ के पास बैठ गये और कहा, "गाड़ी लुट गई।"

"कौन चीज की गाड़ी ?"

"चावल की गाड़ी। रास्ते में गाड़ी लुट गई, अब साहु बड़ा नाराज होगा।"

भूखे गाँववालों ने चावल लूट लिया। यह तो चे-तुंग को बुरा नहीं लगा।

चे-तुंग ने बनिये का काम सीखने से इन्कार कर दिया। इसी समय उसका मामा आया। उसने अपने गाँव में नये तरह के स्कूल के खुलने की बात कही। माओ को उसी स्कूल में भर्ती होने का खयाल आया। बाप इसके लिए राजी नहीं था, किन्तु माँ ने बेटे का समर्थन किया, जिस पर बाप ने ताना मारते हुए कहा—"तूने ही छोकरे को खराब कर दिया है।" अगले दिन मामा ने जब कहा कि चे-तुंग को मेरे साथ ननिहाल जाने दो, तो फिर बूढ़े माओ ने जवाब दिया : "इसे पीछे शियाग-तान जाना है। यदि जगह भर गई, तो फिर काम सीखने का मौका नहीं मिलेगा।"

मामा ने इस पर कहा—"लड़का पढ़ने-लिखने में होशियार है। इसको चावल की बनीजी में सड़ाना अच्छा नहीं है।"

बूढ़े का जवाब था—"अरे पढ़े लिखे तो दर दर ठोकरें खाते फिरते हैं।"

मामा ने कहा—"नये तरह का स्कूल है, वहाँ से पढ़कर निकले लड़के चौगुनी कमाई करेंगे।" बेचारे माओ जन शग अकेले पड़ गये, सारे घर के लोग विपक्ष में थे। चे तुंग स्वयं ननिहाल के स्कूल में जाकर पढ़ने के लिए व्यग्र था। जबर्दस्ती करने का मतलब होता, चे-तुंग का कहीं भाग जाना, इसलिए बूढ़े ने ननिहाल जाने की इजाजत दे दी, और चे तुंग 16 वर्ष की अवस्था में शाउशान से 16-17 मील दूर पढ़ने के लिए चला गया।

ननिहाल तुंग तैशान शाउशान से 50 ली (16-17 मील) दूर था। श्याग-श्याग नगर के वागचुन् द्वार से निकलकर बाहर जाने पर लियानशुइ नदी आती है, जिसे पार करने के लिए वहाँ घाट पर नावें रहती हैं। दूसरे तट पर छोटे-छोटे कंकड़ पत्थर से ढँके रास्ते से थोड़ा जाने पर तुंग तैशान का हरे-भरे जंगलों से आच्छादित सुन्दर पहाड़ दिखाई पड़ता है। नागनगर (श्याग श्याग) से तीन-साढ़े तीन मील (6-7 ली) के करीब दूर तुग-पिग नामक जगह है। यहीं ईंटों की ऊँची चौकोर दीवालों तथा काले लाख की बार्निशवाला दोहरा द्वार है, जिसके पीछे एक अच्छा सा घर है। इसी में पहले तुंग शान् स्कूल चलता था, जिसको आजकल श्यांग-श्याग का तुंग शान हाई स्कूल कहा जाता है। स्कूल के पास एक गोल-सा तालाब है। उसका सात तलों का एक सफेद बौद्ध-स्तूप और तुंग तैशान पर्वत बड़े सुन्दर दिखाई पड़ते हैं। तुंग शान् स्कूल में पढ़ते समय चे-तुंग अक्सर अपने मित्रों के साथ इस नयनाभिराम दृश्य को देखने आया करता था। पुल की पत्थरवाली बँधनी पर झुककर तरुण कितनी ही बार जल में क्रीड़ा करती मछलियों की ओर देखते आपस में बातचीत किया करते थे।

स्कूल में संगीत और अंग्रेजी का अध्यापक जापान से पढ़ करके आया था। मंचू गुलामी का चिह्न—लम्बी चोटी उस समय सभी चीनियों के सिर पर रहा करती थी। स्कूल के लड़के भी चोटीवाले थे, चे-तुंग भी चोटी का बड़ा पक्षपाती था। जापान से पढ़कर आये अध्यापक ने अपनी चोटी कटवा ली थी। चोटी बिना लड़कों

में इज्जत न होती, इसलिए वह नकली चोटी लगाये रहता। लडके उसका मजाक करते, उसे 'नकली परदेसी राक्षस' कहा करते। यद्यपि चे-तुंग भी जानता था, कि चोटी मंचू-सम्राटो ने रखवाया है, लेकिन अभी कन्फूजू और दूसरे पुराने विचारो का प्रभाव उसके ऊपर बहुत था, और समझता था कि देवपुत्र समाट कोई अन्याय नही कर सकते। देश मे यदि अन्याय है तो मन्त्रियो और क्षत्रपो के कारण। इसीलिए चोटी मे दोष देखना तो अलग, उसे वह अभिमान की बात समझता था।

नये तरह का स्कूल था, तो वहाँ नई हवा भी बहनी ही चाहिए। वहाँ के विद्यार्थी भी नई किताबे पढा करते थे। ननिहाल मे आने पर मामा के लड़के ने एक लेख-सग्रह 'नई जनता' लाकर दी। इसमे लियाग ची-चाओ और काग युवाइ के लेख थे, जिन्होने उनमे राजनीतिक सुधारो की आवश्यकता के बारे मे लिखा था। तरुण चे-तुंग के ऊपर इन लेखो का बहुत प्रभाव पडा, और वह इन दोनो लेखको का भक्त बन गया। यह आसानी से समझा जा सकता है कि यद्यपि शब्द-सकेत चीनी भाषा मे अव भी वही थे, जो कि दो-ढाई हजार वर्ष पहले, लेकिन जिस तरह ढाई हजार वर्ष पहले की भाषा हमारे यहाँ आज की भाषा से भिन्न है, उसी तरह चीन मे भी है। इसके कारण पुराने ढग से लिखी पुस्तक चाहे समझने मे बहुत कठिन न हो, किन्तु दोनो की शैली मे बहुत भेद था। लियाग बोलचाल की भाषा का पक्षपाती था। उसका प्रभाव चे तुग पर इतना पडा, कि वह भी उसी की शैली की नकल करने लगा। यद्यपि सगीत अध्यापक चोटीकटा था, लेकिन वह दूसरे देश मे सालो रहकर आया था, इसलिए जब वहाँ की बाते कहता, तो चे तुग उसे बड़ी खुशी के साथ सुनता। जापानी और चीनी भाषा एक दूसरे से अत्यन्त भेद रखती है, लेकिन लिखने मे वह एक ही तरह के शब्द सकेत या चित्रलिपि का प्रयोग करती है। चीनी मे विभक्तियो का प्राय· बिलकुल अभाव है, जापानी मे वह है, लेकिन उनके लिखने के लिए जापानी लोग उच्चारणानुसार वर्णमाला (कितकना और हिरगकना) का इस्तेमाल करते है। चीनी पाठक भिन्न लिपि मे लिखी इन विभक्तियो को छोडकर जापानी पुस्तक को अपनी भाषा मे पढ और समझ भी सकते है। इसलिए जब अध्यापक ने जापान मे छपी जापानी पुस्तकों को दिया, तो उन्हे चे तुग पढ गया, और कुछ जापानी कविताएँ तो उसे इतनी पसन्द आई, कि उन्हे उसने याद कर लिया और आज भी उनमे से कुछ को अध्यक्ष माओ चे तुग दोहरा सकते हैं—यद्यपि जापानी नही, चीनी भाषा मे।

ननिहाल मे स्कूल मे पढते समय चे तुग ने जार्ज वाशिंगटन, नेपोलियन आदि भिन्न भिन्न देशो के महान् नेताओं और वीरो के जीवन पढे, लेकिन अभी उसे अपने देश के नये नेताओ का ज्ञान नाम मात्र हो था।

स्कूल की इमारत मे एक हाल था, जिसमे ही लड़के पढते, स्वाध्याय करते और गा जाते थे। चे तुग जैसा, असाधारण लडका आसानी से दूसरो का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर सकता था। प्रतिभा उसके चेहरे और आँखो से झलकती थी। शरीर से पतला और कपडे उसके मामूली नीलाकोट और पायजामा थे, तो भी यह सादगी तरुण को छिपा नही सकती। इस नये स्कूल के अधिकाश विद्यार्थी जमीदारो के लडके थे। उनके बदन पर नफीस रेशमी कपड हुआ करते थे। उनके लम्बे चोगे के ऊपर रग बिरगा कमरबन्द बँधा रहता था। जूते भी उसी के अनुसार होते थे। कोई-कोई लडके पुरानी पोशाक छोड छात्रों की वर्दी भी पहनते थे। लेकिन चे-तुग के शरीर पर वह मोटी-झोटी नीली खद्दर की पोशाक होती। श्याग श्याग नगर था और शाउशान् गाँव। यद्यपि दोनो के बीच मे सोलह सत्रह मील का अन्तर था, लेकिन ग्रामीण और नागरिक मे फर्क होता है, जो चे-तुग के शब्दो के उच्चारण के स्वर मे भी मालूम हो जाता था। लडके इसका मजाक उडाते, कभी पूछते तो चे-तुग कह देता—"मेरा घर श्याग तान मे है, लेकिन मेरी माँ स्याग के वन परिवार की है।" वन परिवार का मामा का लडका भी इसी स्कूल मे एक साल पहले से पढ रहा था, इसलिए दूसरे लडके उसे जानते थे। चे-तुग फैशनेबुल धनी लडको के बीच अपने को अकेला पाता था, लेकिन वहाँ कुछ लडके अपने जैसे घरो के भी थे, जिनकी मित्रता ने चे-तुग के मन के सूनेपन को दूर करने मे बडी सहायता की। अमीरों के लडके जहाँ पढ़ने की ओर ध्यान नही देते थे, वहाँ गरीब परिवारो के लडके भद्दे भेस मे रहते हुए भी पढने मे बहुत मेहनती थे। गरीबो और अमीरों के भाषा-उच्चारण मे जो अन्तर था, वह चे-तुग को गरीबो के लडको के नजदीक कर देता था, और श्याग-श्याग के उच्चारण से थोडा सा अन्तर रखता था। श्याग-श्याग की भाषा मे 'मे' के

लिए 'ड' जहाँ कहा जाता, वहाँ ये लड़के 'वो' कहा करते थे। चे-तुग धीरे-धीरे बोलता था, उसके बात करने का ढंग भी धीरे-धीरे का था, लेकिन उसमे दिखावा नही था। पढने मे भी वह बहुत तेज था, इसलिए अध्यापक बड़ी जल्दी उसके साथ स्नेह करने लगे। प्राचीन साहित्य का उसे पहले ही से काफी परिचय था, इसलिए साहित्य के अध्यापक उसे बहुत मानते थे, और पुरानी शैली मे लिखे उसके सुन्दर निबन्धों को देखकर बहुत साधुवाद देते थे।

स्कूल मे यह आम तरीका था कि सवेरे के वक्त, जब लडके हाजिरी देने के लिए इकट्ठा होते, तो अध्यापक छोटा-सा भाषण देता। चीन जापान जैसे एक छोटे देश से हार चुका था। जापान ने चार ही पाँच वर्ष पहले रूस को हरा दिया था। विदेशी शक्तियाँ और उनके लोग चीन में अपने को स्वामी समझते थे। चीनी तरुणो का देशाभिमान इसे सहन नही करता था, इसलिए नवशिक्षित चीनियो का ख्याल देश की दुर्दशा की ओर जाना स्वाभाविक था। अध्यापको के इन छोटे छोटे भाषणों में भी इसका जिक्र आता, वह विदेशी राक्षसो के प्रति घृणा प्रकट करते। जापान से लौटे अध्यापक यही बतलाते थे कि मेइजी सुधार (1868 ई.) के बाद पिछले चालीस वर्षों में ही जापान किस तरह इतना शक्तिशाली राष्ट्र हो गया, कि उसके सामने चीन ही नही, रूस को भी चारों खाने चित होना पड़ा।

तुग शान् स्कूल मे पाठ्य पुस्तकों के पढने के अतिरिक्त स्वाध्याय का अत्यन्त प्रेमी होने के कारण चे-तुग का समय कितनी ही दूसरी पुस्तकों के पढने मे लगा करता। चीनी प्राचीन साहित्य के साथ चीन का इतिहास चे-तुग का प्रिय विषय था। अब वह दूसरे देशों के इतिहास और भूगोल का भी बड़े ध्यान से पढने लगा। इस समय की पढी हुई पुस्तको मे से जिन्होंने उसके ऊपर अधिक प्रभाव डाला, उनमें एक थी कान यू-वेइ के सुधार-आन्दोलन (1898 ई.) और दूसरी लियाग ची-चाउ द्वारा सम्पादित 'नवीन जनता संग्रह'। इन पुस्तको को चे-तुग ने कई बार पारायण किया, जिससे वह करीब करीब उसे कठस्थ हो गई। पढने के बाद वह काग और लियाग का परम भक्त बन गया।

शाम को लडके जब खेल मे थे, फिर घटा बजने पर वह पढने के कमरे में आये। उस समय स्कूल के दूसरे दरवाजे को जाते समय चे-तुग के साथ जानेवाले एक लडके के हाथ में कोई पुस्तक थी। पुस्तक के बारे मे चे तुग की जिज्ञासा क्यो न होती ? उसने पूछ लिया :

"यह क्या पुस्तक है ?"

"दुनिया के वीर और महापुरुष।"

"क्या मै इसे देख सकता हू ?"

लडके ने बडी खुशी से पुस्तक दे दी। पढकर कुछ दिनो बाद चे-तुग ने पुस्तक को लौटाते हुए, मैली कर देने के लिए अपने साथी से क्षमा माँगी। लडके ने पुस्तक खोली, तो देखा कि उसमे कई जगहो पर निशान पड़े हुए है। सबसे ज्यादा निशान थे, वाशिंगटन, नेपोलियन, पीतर महान्, महाएकातेरिना, वेलिंगटन, ग्लैड्स्टन, रूसो, मोन्तेस्क्यू और लिंकन के ऊपर। चे-तुग ने अपने साथी से कहा :

"हमे अपने देश को सबल और समृद्ध बनाने की कोशिश करनी होगी, जिसमे कि हमारी गत वही न हो, जो कि हिन्दुस्तान, इन्दो-चीन और कोरिया की है। तुम जानते हो न पुरानी चीनी कहावत : 'एक उलट पड़ा रथ दूसरे को सावधान करता है।' हम सबको मिलकर जोर लगाना चाहिए। क्वेन-वू ने ठीक ही कहा है : 'हरेक साधारण आदमी अपने राष्ट्र के भाग्य का फैसला करने मे हाथ रखता है'।" थोडा रुककर चे-तुंग ने फिर कहा : "चीन का पतन कल से नही शुरू हुआ, इसलिए उसे सबल, समृद्ध और स्वतन्त्र बनाने मे भी लम्बा समय लगेगा। पर हमे समय की लम्बाई से घबराना नही चाहिए।" चे-तुग ने पुस्तक खोलकर एक पृष्ठ पर पढा : "सयुक्त राष्ट्र को वाशिंगटन के नेतृत्व मे आठ लम्बे तथा कडवे वर्षो तक लडते रहने के बाद ही विजय और स्वतन्त्रता का मुँह देखने को मिला।"

चे-तुग ने तुग-शान् स्कूल मे केवल एक साल पढा। पढने के साथ-साथ घुमक्कडी भी चे-तुग को प्रिय थी, इसलिए भी उसका मन देर तक एक जगह लग नही सकता था। अब उसने दूसरी जगह जाने का निश्चय किया।

4
बड़ी दुनिया (1910-11 ई.)

1. चांगशा में

1911 का सन् था, अर्थात् चीनी-क्रान्ति का वर्ष, जब कि मचू-वश को चीन से खतम कर दिया गया। चे-तुग अब सत्रह साल पूरा कर चुका था। उसने तुग शान से जाने का विचार प्रकट किया। इस समय उसके एक अध्यापक ने उसके लिए परिचय-पत्र लिख दिया। पहले वह शियाग तान् शहर के मिडिल स्कूल मे गया, लेकिन अपने लम्बे कद के कारण वहाँ उसको प्रवेश नही मिला। अब उसने हूनान की राजधानी चागशा की ओर मुँह मोडा और शियाग नदी के एक छोटे-से स्टीमर मे तीसरे दर्जे का टिकट लेकर बैठ गया। चागशा मे श्याग-श्याग के लडको के लिए एक हाई स्कूल था। स्टीमर ने तरुण चे-तुग को चागशा नगरी मे पहुँचा दिया। चागशा के बारे मे चे-तुग पहले ही से बहुत सुन चुका था कि वह बहुत बडा नगर है, वहाँ लाखो आदमी बसते है, बहुत-से स्कूल है, मचू-सम्राट का प्रतिनिधि राज्यपाल वहाँ अपने भव्य प्रासादो मे रहता है। ऐसे शहर मे एक गँवार तरुण का जाकर खो जाना आसान था। लेकिन जिस समय वह चागशा पहुँचा, उस वक्त चे-तुग की अवस्था दूसरी ही थी। चारो ओर सारे चीन मे राजनीतिक आन्दोलन जोर शोर से चल रहा था, जिसका प्रभाव दक्षिणी चीन के इस महानगर पर भी पडा था। शहर के चारो तरफ लोगो की भीड थी, लेकिन अभी इस बारे मे जानने से पहले चे-तुग को प्रादेशिक श्याग-श्याग हाई स्कूल मे दाखिल होना था। उसे भय था कि इतने बड़े स्कूल मे उसको प्रवेश करने की शायद इजाजत न मिले। लेकिन, देखने मे सीधा-सादा होने पर भी उसका ज्ञान इतना था, कि प्रिंसिपल ने बिना कठिनाई के ही उसे स्कूल मे दाखिल कर लिया।

पहले-पहल चे-तुग ने चागशा मे अखबार देखा। उस अखबार का नाम था 'जनशक्ति' जिसका सचालन वही तुग मेन्-हुई सस्था करती थी, जिसने आगे चलकर कुवो-मिन ताग का नाम लिया। उसमे चे-तुग ने मचू-शासन के विरुद्ध विद्रोह करने के अपराध मे कान्तन मे शहीद होनेवाले बहत्तर पुरुषो के सम्बन्ध मे एक लेख पढा जिससे वह बहुत प्रभावित हुआ। यही पहले पहल उसे तुग-मेन् हुई और उसके सस्थापक डा सुन् यात्-सेन् का नाम पढने को मिला।

2. डा सुन् यात्-सेन्

चीन के राष्ट्रपिता सुन यात्-सेन उस समय तक काफी प्रसिद्ध हो चुके थे, और यदि चे-तुग उनके नाम से परिचित नही था, तो वह यही बतलाता है कि चीन के सुदूरवर्ती गाँव नये ससार से कितने दूर थे। डा. सुन् ने अमेरिका मे जाकर अध्ययन कर देश के उद्धार के लिए व्रत लिया था। इसी उद्देश्य से उन्होने 1894 ई. मे–जब कि चे तुग अभी एक साल का ही था–शिग-चुन्-वाइ (चीनी पुनरुज्जीवन सघ) के नाम से एक सभा अमेरिका के अधीन हवाई द्वीप के होनोलुलू मे स्थापित की। सभा का उद्देश्य था : 'देशभक्त चीनियो को एकताबद्ध करना, उन्हे शक्ति और समृद्धि प्राप्त करने की कला सिखाना और चीन को पुनरुज्जीवित करना।' पहले इस सस्था मे अधिकतर विदेश मे गये विद्यार्थी तथा तरुण फौजी अफसर शामिल हुए थे। उन्होने स्थापना के एक साल बाद ही कान्तन मे असफल विद्रोह किया; लेकिन उससे देशभक्ति की आग दबी नही। सस्था के सदस्यो की सख्या बढती ही गई। सन 1905 ई मे सस्था का नाम बदलकर 'क्रातिकारी साथी दल'* रख दिया। जब अमेरिका ने चीनियो का आना बन्द कर दिया, तो सस्था ने अमेरिकन माल के बायकाट का आन्दोलन छेड दिया। 1908 ई मे जापानी माल का भी बायकाट शुरू किया। अमेरिका इस बायकाट से इतना डरा कि उसने बाक्सर-विद्रोह के लिए क्षतिपूर्ति के रूप मे चीन से मिलनेवाले धन को चीन मे शिक्षा प्रचार मे खर्च करने को

---

* 1914 ई मे सुन् यात्-सेन् ने कुओमिन्ताग (जनता पार्टी) का नाम बदलकर चुगाह्वा-क मिन्-ताग रक्खा। 1919 ई मे, पुनर्गठन के बाद उसका नाम बदलकर चुग-कुओ कुओ-मिन्ताग रख उसका घोषणापत्र जनवरी 1923 ई मे प्रकाशित हुआ।

दे दिया। संस्था की यह पहली जीत थी। 1907 ई. से विदेशियों ने रेल बनाने का अधिकार देने के लिए मंचू-सरकार पर दबाव डालना शुरू किया था। उधर मंचू-शासन की अयोग्यता और उसके अधिकारियों के अत्याचारों को दूर करने के लिए पार्लियामेण्ट की स्थापना की माँग हो रही थी। सरकार ने पार्लियामेण्ट स्थापित करके अधिकांश सदस्यों को सम्राट की ओर से नामजद करने तथा पार्लियामेण्ट को केवल सलाहकार संस्था के तौर पर मानने का ही वचन दिया। 1910 ई. में एक राष्ट्रीय सभा मिली जिसमें आधे सदस्य सम्राट द्वारा नामजद थे। राष्ट्रीय सभा ने तुरन्त पार्लियामेण्ट बुलाने की माँग रक्खी। 1911 ई. में एक और सवाल उठ खड़ा हुआ। मध्य-चीन के कितने ही करोड़पतियों ने जेचुआन से हांग-काउ तक रेल बनाने की योजना सरकार के सामने रखकर उसके लिए आज्ञा माँगी. लेकिन मचू-वंश तो अब पश्चिमी साम्राज्यवादियों के हाथ का खिलौना था। उसने स्वदेशी करोड़पतियों को निराश करते हुए विदेशी पूँजीपतियों को रेल बनाने का अधिकार दे दिया।

जब साधारण जनता से लेकर बड़े-बड़े सेठों तक को मंचू-वंश ने नाराज कर दिया था, तो फिर देश में विद्रोह की प्रचंड आग क्यों न भड़कती ? 10 अक्टूबर को हांग-काउ में विद्रोह हो गया। जंगल की आग की तरह वह बड़ी जल्दी कान्तन और शांघाइ जैसे बड़े-बड़े शहरों तक फैल गया। उस वक्त डा. सुन् यात्-सेन् अमेरिका में थे। व्यापारियों, विद्यार्थियों और फौजी अफसरों की कांग्रेस हुई, जिसने डा. सुन् को स्वदेश लौटने के लिए निमन्त्रण भेजा।

यह स्थिति थी. जब कि अठारह वर्ष के चे-तुग ने चांग-शा में पहले-पहल डा. सुन् का नाम पढ़ा। वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने तुरन्त एक लेख लिखकर स्कूल की दीवाल पर चिपका दिया। लेख में उसने प्रस्ताव किया था कि डा. सुन को जापान से बुलाकर नई सरकार का राष्ट्रपति बनाया जाय और थांग-यांग-वेइ को प्रधानमन्त्री तथा लियाग ची-चाओ को विदेश-मन्त्री। अभी चे-तुंग का राजनीतिक ज्ञान इतना आगे नही बढ़ा था कि वह उनकी विचारधाराओं के बारे में फर्क कर सकता।

माओ चे-तुंग का यह पहला राजनीतिक लेख था। उसे यह जानने की बड़ी इच्छा थी कि उसके विचारों के बारे में दूसरो की क्या राय है। तरुण विद्यार्थी लेख को पढ़ रहे थे और टिप्पणी कर रहे थे। कोई कहता—यह प्रस्ताव ठीक है। कोई कहता—यह ठीक नहीं है। चे-तुंग पास मे खड़ा उनकी टिप्पणियों को सुन रहा था। उसी समय अगले दर्जे में पढ़नेवाले एक विद्यार्थी ने आकर लेख को पढ़ना शुरू किया। विद्यार्थी चांगशा नगर का रहनेवाला और विद्यालय के छात्रों का नेता था। माओ चे-तुंग कान लगाकर उसकी राय सुनने का इन्तजार करने लगा। तरुण ने 'धूल पत्थर' कहकर पहले नाक-भौ सिकोड़ा, फिर पूछने पर इस बात के लिए सहमति प्रकट की कि डा. सुन् को राष्ट्रपति बनाना चाहिए, "लेकिन इन दोनों विदूषकों को उनके अगल-बगल में खड़ा करने की क्या जरूरत ?" लड़के ने बतलाया कि डा. सुन् क्रांति चाहते हैं, मंचू-राजतंत्र को खतम करना चाहते हैं, जब कि ये दोनों विदूषक मचू-शासन में थोड़े-से सुधार करने से संतुष्ट हो सकते हैं। माओ चे-तुंग इसका क्या जवाब देता ? उसे अपने लिखने के प्रथम प्रयास से निराशा होने लगी। इस पर उसके तरुण साथी ने कहा—"किंतु, तुम्हारी कितनी ही बातें मुझे अच्छी लगती हैं। आज छुट्टी के बाद शाम को मेरे पास आना, मैं तुम्हें डा. सुन् के लेखों को पढ़ने के लिए दूँगा।" उस समय से दोनों तरुणों में मित्रता स्थापित हो गई।

राष्ट्रीय आन्दोलन की बाढ़ सारे देश में आ गई थी। देश-भर में विदेशियों की गुलामी के प्रति घृणा और विदेशी माल के बायकाट का जबर्दस्त प्रचार हो रहा था। कितनी ही जगहों में सेनाएँ राष्ट्रवादियों की तरफ होकर सरकारी सेना से लड़ रही थीं। स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थी तथा दूसरे बुद्धिजीवी देश के कोने-कोने में मचू-शासन के खिलाफ विद्रोह की आग भड़का रहे थे। नौजवान करोड़ों की संख्या में अपनी चोटियाँ काट-काटकर फेक रहे थे। माओ ने स्वयं अपनी चोटी काटी, और दसियों दूसरों की चोटी काट डाली। अब उसे अपने पुराने अध्यापक को 'नकली परदेशी राक्षस' कहकर मजाक करने का अफसोस हो रहा था, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि अब भी वहाँ ऐसों का अभाव था, जो कहते थे : "शरीर, चमड़ा, बाल और नख माँ-बाप की ओर से मिले हैं, उनके नष्ट करने का हमको कोई अधिकार नहीं।"

हूनान प्रदेश सदा से विद्रोह का पक्षपाती रहा है. इसलिए वहाँ क्रान्ति की लपट इस समय सबसे अधिक

दिखाई दे रही थी। सुधार-आन्दोलन के कितने ही उग्र सदस्य हूनान-निवासी थे। यहाँ यातायात के सुधार, खानों में काम, सैनिक अकादमी की स्थापना और सैनिक शिक्षा देने की योजना बनी। 'दक्षिणी पंडित सभा' के नाम से यहाँ एक संस्था कायम हुई, जिसके हजार से अधिक सदस्य थे, और जिसका उद्देश्य था : दक्षिण के सभी देशभक्तों को हूनान से आरम्भ कर एकताबद्ध करके देशभक्ति के लिए विचार-विनिमय तथा देशरक्षा के लिए नीति तैयार करना। इस समय राजनीतिक आन्दोलन के समर्थन में 'शियांग शूये शिन् पाओ' (दशाहिक) और 'शियांग' पाउ (दैनिक, पीछे मासिक) निकला करते थे।

तुंग-मेंग हुइ की एक शाखा हुआ-शिग सभा थी, जिसका नेता चांगशा-निवासी ह्वांग शिंग था। वह कान्तन के उन विद्रोहियों का भी नेता था, जिनके 72 आदमी शहीद हुए थे। इनके अतिरिक्त आन्-ह्वेइ में काम करनेवाले शू सी-लेन और चिउ-चिन इन दो क्रान्तिकारियों के मृत्युदण्ड ने हूनान के लोगों को भड़काने में भारी काम किया। लोग रेलों के राष्ट्रीकरण, संविधान और पार्लियामेण्ट की स्थापना की जबर्दस्त माँग कर रहे थे। एक बड़े क्रान्तिकारी नेता शू ते-ली ने उँगली काटकर अपने खून से पार्लियामेण्ट स्थापित करने के लिए आवेदन लिखा था।

शांघाई में 1903 ई. में वहाँ की देशभक्ति क्लब ने 'देशभक्ति विद्रोह' किया था, जिसके बाद वह मंचू-विरोधी प्रचार का गढ़ बनती चली गई। देश मे अध्यापकों और विद्यार्थियों ने आन्दोलन करते सर्वत्र रात्रि-पाठशालाएं खोलीं। भाषणों के अतिरिक्त वह छोटी-छोटी पुस्तिकाओं द्वारा जनता में प्रचार करती थी। चोटी काटने का जोर तो सभी जगह था। चारों तरफ नारे सुनाई दे रहे थे : 'मचुओं को मार भगाओ !' 'स्वतन्त्र चीन !' 'गणराज्य कायम करो !' और 'भूमि में समानाधिकार !' माओ चे-तुग भी अब इस तूफान के बीच में था।

माओ चे-तुंग ने अपनी आत्मकथा में स्वयं इस समय के बारे मे लिखा है :

"चांगशा जाने की मुझे बड़ी इच्छा थी। वह हमारे प्रदेश की राजधानी तथा बड़ी नगरी और मेरे गाँव से 120 ली (40 मील) पर अवस्थित थी। यह शहर बहुत बड़ा था। वहाँ बहुत लोग रहते थे। मेरे एक शिक्षक ने मुझे परिचय-पत्र दिया था, जिससे मेरे मन में बड़ी खलबली मच रही थी, यदि मुझे न लिया तो।···चांगशा में पहुँचकर अपने उम्र में पहली बार मैंने अखबार पढ़ा। 'मिन्-ली-पाओ' (जनशक्ति) इस पत्र का नाम था। वह राष्ट्रीय क्रांति का पक्षपाती था।··· उसने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला। "मिन्-ली-पाओ' में मुझे बहुत-से जोशीले लेख पढ़ने को मिले। उसका सम्पादक यू यू-जेन था, जोकि कुओ-मिन्-ताग का एक प्रसिद्ध नेता था। इस पत्र के द्वारा मुझे सुन् यात्-सेन् के बारे मे मालूम हुआ और 'तुंग-मेग-हुई' सस्था के कार्यक्रम का भी ज्ञान प्राप्त हुआ।···"

3. माओ का सैनिक जीवन (1911 ई.)

10 अक्टूबर, 1911 को वूचाग मे नगर विद्रोह उठ खड़ा हुआ, यद्यपि विधवा सम्राज्ञी के जन्म-दिवस पर शुरू करने का निश्चय किया गया था, लेकिन कारणोंवश वह चालीस दिन पहले शुरू हो गया। क्रान्तिकारी पार्टी के मेम्बरों की एक सूची मंचू गुप्तचरों के हाथ लग गई और उन्होंने बहुतों को पकड़कर मरवा दिया। इसी कारण समय से पहले विद्रोह को शुरू करना पड़ा। चांगशा की अवस्था बहुत खतरनाक हो गई। हूनान के राज्यपाल ने मार्शल-लॉ की घोषणा कर दी, लेकिन क्रान्तिकारी तब भी नगर की दीवालों के भीतर और बाहर अपने काम को गुप्त रूप से जारी रखे रहे। स्कूलों में मंचू-विरोधी और हान्-पक्षपाती भाषण दिए जाते। कितने ही तरुण नगर से बाहर छावनी डाले पड़ी नवीन सेना में काम करते सैनिकों को विद्रोह करने के लिए उत्तेजित करते।

एक दिन प्रादेशिक (श्यांग-श्यांग) विद्यालय में एक क्रान्तिकारी आया। प्रिंसिपल ने आज्ञा दे दी और उसने छात्रों के सामने बड़ा ही जोशीला भाषण दिया। कितने ही विद्यार्थियों ने उसका समर्थन करते हुए मंचुओं को बुरा-भला कहा और गणराज्य स्थापित करने की माँग की। श्रोतृमंडली में भारी जोश और उत्तेजना फैली हुई थी। माओ चे-तुंग भी जोश में बह गया। वह क्रान्ति में सम्मिलित होने के बारे में पाँच दिनों तक सोचने के

बाद इस निश्चय पर पहुँचा कि क्रान्ति की मंवा क लिए सैनिक काम सबसे अधिक लाभदायक है। हूपे के राज्यपाल ली युवान-हुग द्वारा सचालित क्रान्तिकारी सेना मे नाम लिखाने का सकल्प कर अपने छात्र साथियो स उमने कुछ पैमा उधार लिया और कितन ही मित्र के साथ वूचाग पहुँचा। किमी ने बतलाया कि वूचाग की सडको मे बहुत कीचड हाती है इसलिए चमडे का जूता पहनना अच्छा होगा। माओ चे-तुग को इस समय याद आया, कि उसक एक किमान मित्र क पाम उमी तरह का एक जूता है। किमान-मित्र उसका अपने गाँव का आदमी और उमी नवीन सेना म उस ममय सिपाही था, जा कि चागशा क नगर-प्राकार के बाहर पडी हुई थी। वह उसक पाम जान लगा। सतरी न उस रोक दिया।

तुग मेग हु और क लाऊ हुइ जैम क्रान्तिकारी दलो के आदमी नवीन सना के 39वे और 50वे ब्रिगेडो के बारको म घुस चुके थ। ह्वाग शिग उस समय हूनान म नही था। क लाउ-हुइ दल उस वक्त सबसे आगे बढा हुआ था। उसन दाना ब्रिगडा म सम्मिलित हा उन्हे वूचाग हाग काओ के क्रान्तिकारियो से मिलाने मे सफलता प्राप्त की। जिस वक्त माओ चे तुग वहाँ पहुँचा, उसी समय नवीन सना को गोली बारूद मिली थी, और वह चागशा की ओर मार्च करनवाली थी। माओ चे तुग तुरन्त नगर की ओर लौटा। उसके फाटक बन्द थे, लेकिन भीतर से सिटकनी नही लगी थी।

इतवार का सवेरा था। नई सना बाहर क परेड मैदान से मार्च करके चागशा के एक फाटक की ओर बढा। कुछ गोलियाँ चलाने क बाद उसकी एक टुकडी 'पद्म सरोवर' म हथियारखाने पर अधिकार करने गई, और सना का मुख्य भाग राज्यपाल भवन की ओर बढते हुए एक दरवाजे से नगर के भीतर घुसा। गारद ने कोई प्रतिरोध नही किया और राज्यपाल आत्मसमर्पण करन क लिए मजबूर हुआ। राज्यपाल भवन पर एक विशाल सफेद झडा गाड दिया गया। इसके बाद ही सभी स्कूलो सरकारी दफ्तरो दुकानो आदि मे छोटे बडे बहुतर सफेद झडे फहराने लगे। माओ चे तुग स्कूल की ओर लौटा। उस समय उसके दरवाजो पर सफेद झडे लग चुके थ और बाहर कुछ सिपाही पहरा दे रहे थ। हूनान प्रदेश ने अपने को मचू सरकार से स्वतन्त्र घोषित किया।

अपराह्न मे खबर मिली कि हूनान के लाऊ हुइ (क्रान्तिकारी दल) क दो नेता प्रदेश के राज्यपाल और उपराज्यपाल निर्वाचित हुए। उस दिन आसमान मे बादल छाये हुए थ, और विद्रोह से लोगो मे सनसनी फैली हुई थी। इतनी आसानी म विद्रोह का सफल होते देखकर सभी के चेहरे खिल उठे थे। यद्यपि मचू शासन की इमारत ढह रही थी लकिन अभी वह बिल्कुल नष्ट नही हुई थी। लडाई जगह जगह जारी थी। चागशा पर क्रान्तिकारियो का अधिकार हो गया था लकिन अब ऊपर दूसरी जगहो म कुमुक भेजने की जिम्मेवारी आ गई थी। वूचाग हागकाउ के क्रान्तिकारियो क पास सना भजी जा रही थी, और साथ ही नये सैनिको क भरती करने का काम जारी था। कुछ उत्साही तरुणो ने एक छात्र सना तैयार की। माओ चे तुग छात्र सना को खिलवाड समझता था इसलिए वह क्रान्तिकारी सना मे शामिल होना चाहता था, जहाँ कि बाकायदा सैनिक-शिक्षा प्राप्त करके लडने का मौका मिल सकता था। वह सोचता था 'सफल क्रान्ति के लिए लडना आवश्यक है, इसलिए क्रान्ति की अच्छी तरह सेवा करने क लिए बाकायदा सिपाही बनना चाहिए।'

माओ चे तुग इस समय अठारह साल का था और अपनी आयु की अपेक्षा अधिक लम्बा भी था। अपनी ऊँचाई के कारण श्याग श्याग विद्यालय का प्रिंसिपल उस अपने यहाँ दाखिल नही करना चाहता था, लेकिन यहाँ सेना मे लम्बे आदमियो की बडी माँग थी। वह जल्दी ही सेना मे भरती कर लिया गया। उसकी कम्पनी न्यायालय के भीतर डेरा डाल पडी थी। बाकायदा कवायद-परेड के अतिरिक्त रँगरूटो को और कितने ही काम करने पडते थे। अपन अफसरो की चारपाई विस्तरा, पोशाक टोकरी आदि ढोकर वही एक जगह से दूसरी जगह ले जाते थ। कुछ को प्रतिदिन नगर से बाहर श्वेत बालुका-कूप पर अपनी रसोई और अफसरो की चाय के लिए पानी लाने क लिए जाना पडता था। माओ चे तुग सिपाही था, और सुशिक्षित भी। अपने साथी सिपाहियो के साथ जल्दी ही उसकी घनिष्ठता बढ गई और अफसर भी उसे पसन्द करने लगे। सिपाही माओ के पास चिट्ठी पढाने लिखाने के लिए आते। वह कभी उनके काम से इन्कार नही करता था। सिपाहियो के साथ बात

करते वक्त वह उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के अध्ययन करने की कोशिश करता। उसे मालूम हो गया कि उनमे से अधिकाश भले और ईमानदार किसान हैं, कुछ थोड़े-से खान-मजदूर, लोहार तथा दूसरे शिल्पकार हैं। चे-तुग का उनके साथ बड़ा अच्छा बर्ताव था और वे भी उसे अपना निजी मित्र समझते थे। एक सिपाही कुछ बदमाश-सा था, जिससे सभी घृणा करते भी भय खाते थे। उसका सामना एक दिन माओ चे-तुग से पड़ा। उसने उसे ऐसा पाठ पढाया कि फिर उसे माओ के सामने ढिटाई करने की हिम्मत नही पडी।

माओ चे-तुग ने अपने आत्मचरित्र मे लिखा है : "मेरी तनखाह प्रतिमास 7 डालर थी—जोकि आजकल फौज को मिलनेवाली तनखाह से अधिक ही थी। इस तनखाह मे से दो डालर मै भोजन पर खर्च करता। मुझे पानी के लिए भी पैसा खर्च करना पडता। सैनिको को शहर मे बाहर पानी लाने जाना पडता, किन्तु मैं विद्यार्थी था, पानी भरना मेरी शान के खिलाफ था, यह समझ कर मैं पैसा देकर पानी मँगवाता। मेरी बाकी बची तनखाह अखबारो पर खर्च होती। मै अखबारो को बडे चाव से पढता। उस समय क्रान्ति-सम्बन्धी लेखो के लिखने मे 'शी आग कीआग एरूपाउ' (एक दैनिक पत्र) की बडी प्रसिद्धि थी। उसमे समाजवाद की भी चर्चा होती थी। (समाजवाद) शब्द पहले-पहल मुझे इसी अखबार मे पढने को मिला। मै दूसरे विद्यार्थियो तथा सैनिको के साथ बराबर समाजवाद की चर्चा करने लगा, किन्तु वस्तुत वह समाजवाद नही बल्कि वह सामाजिक सुधारवाद था। समाजवाद और समाजवादी तत्त्वो के ऊपर क्याग क्याग-हू द्वारा लिखी किसी पुस्तक को भी मैने पढा।· मेरी सैनिक टुकडी मे हूनान का एक खनक और एक लोहार भी थे, जिनके साथ मेरी बडी घनिष्ठता थी।"

1911 ई की क्रान्ति का अन्त मचू-शासन के पतन के साथ हुआ। उस समय बहुत-सी राजनीतिक विचारधाराएँ फैली हुई थी। तुग-मेग-हुइ (पीछे कुओ-मिन् ताग) के अतिरिक्त स्वतन्त्रता पार्टी, प्रगतिशील पार्टी, समाजवादी पार्टी इत्यादि कितनी ही पार्टियाँ दिखाई पडने लगी थी, जिनमे से कुछ अचिरस्थायी तथा बहुत छोटे हलके तक ही सीमित थी। समाजवाद के ऊपर छपे लेखो को पढने के बाद, उस माओ चे-तुग को कुछ छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ भी मिली, किन्तु उनमे स्पष्टता और गम्भीरता की कमी थी। मालूम होता था, लिखनेवालो ने मूल पुस्तको को बिना देखे सुन-सुनाकर लिखा था। माओ चे-तुग तो भी उन पुस्तको मे से समाजवाद के तत्त्वो को समझने की कोशिश करने लगा और उससे उसको बहुत प्रेरणा और सतोष भी मिला। तुरन्त ही वह बड़े उत्साह के साथ अपने सैनिको मे समाजवाद को दुनिया और मानवता के लिए एकमात्र मुक्ति-पथ कहकर बातचीत करने लगा। तुग-शान्-विद्यालय से आये उसे एक साल से अधिक हो गया था, लेकिन अब भी उसका अपने पुराने मित्रो से पत्र-व्यवहार था। उसने नये मुक्ति पथ के बारे मे जानकारी प्राप्त करके बडे उत्साह के साथ अपने मित्रो को भी उसके सिद्धान्तो के बारे मे लिखा।

चागशा और वूचाग के सफल विद्रोह के बाद क्याग-सी, शेन्-सी, शान् सी, युन्न्न्, क्याग-सू, चे-क्याग, क्वाग-तुग, क्वाग सी, फूकियेन, शान तुग, जचूआन क्वेइ चाउ, कानसू और सिग-क्वाग के प्रदेशो ने भी एक के बाद एक अपने को मचू शासन से स्वतत्र घोषित किया। 260 वर्ष के शासन के बाद मचू-राजवश चीन मे खत्म हुआ, लेकिन मरने से पहले उसने क्रान्ति की बाढ को रोकने के लिए काफी हाथ-पैर मारते, 19 सूत्री सविधान, सम्राट् के अधिकारो को बहुत सीमित करना, युयान् शि-काइ को प्रधानमत्री बना, नये मत्रिमडल का निर्माण करना आदि के नाटक खेले। मचूओ ने समझा था, युवान शि-काइ बडे सामन्ती जमीदारो का नेता होने से हमारे साथ रहेगा। युवान शि-काइ की उत्तरी सेना ने सभी राजकीय अधिकारो को अपने हाथ मे कर लिया। इसके बाद अब उसने क्रान्ति के साथ भुगतन का निश्चय किया। उसने वूचाग-हाग पर आक्रमण किया और हाग-काउ के सामने याग-ची-क्याग के दूसरे तट पर अवस्थित हान्-याग पर अधिकार कर लिया। चाग-शुन (1855-1923 ई. युवान शि-काइ के उत्तरी युद्धपति ने) नानकिग की रक्षा करने का बहुत प्रयत्न किया, किन्तु उसे हार खानी पडी। पहले नवीन-सेना के नाम से प्रसिद्ध लोक-सेना नानकिग पर चढ दौडी। क्रान्तिकारी नेताओ ने समस्त प्रादेशिक राज्यपालो के प्रतिनिधियो की एक सयुक्त बैठक उस समय शाघाइ मे कर रक्खी थी। वह वूचाग-हाग-काउ मे थोडा ठहरने के बाद नानकिग गये। यही पर 'अस्थायी चीन गणराजय सरकार' कायम हुई,

जिसके सभापति डा. सुन् यात्-सेन् बनाये गये और साथ ही एक 'अस्थायी संविधान' तैयार करके जारी किया गया।

इस समय (1911-12 ई.) तक पश्चिमी देशों में कमकर-आन्दोलन और सर्वहारा-संगठन काफी मजबूत हो रहा था। 1845 ई. में ही मार्क्सवाद अस्तित्व में आया था। 1848 ई. में मार्क्स-ऐंगेल्स ने 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' प्रकाशित किया। 1864 ई. में उन्होंने प्रथम इण्टर्नेशनल की स्थापना करके पश्चिमी देशों के कमकरों में राजनीतिक चेतना और एकता पैदा करने की कोशिश भी की। चीनी पूँजीवाद के उदय के साथ-साथ चीन में भी सर्वहारा (कारखानों के मजदूर) पैदा हो गये, लेकिन अभी उनमें न कोई वर्ग-चेतना थी, न उनका कोई मजबूत संगठन था। किसान, दस्तकार, निम्न-मध्यमवर्ग, बूर्जुआ-बुद्धिवादी तथा दूसरे क्रान्तिकारी अभी अपना कोई संगठन नहीं रखते थे, इनमें से कुछ में ही मामूली-सी राजनीतिक चेतना आई थी। क्रान्ति में सम्मिलित लोगों के अपने उसी तरह के भिन्न-भिन्न विचार थे, जिस तरह के भिन्न-भिन्न स्वार्थों और स्तरों के समाज से वे ले आये थे। अगर सब किसी एक बात पर एकमत थे, तो वह है 'मंचू-विरोध'। मंचुओं के खतम होते ही अब उनके स्वार्थ परस्पर टकराने लगे। क्रान्तिकारी शक्तियाँ अभी इतनी संगठित या सबल नहीं थीं कि वह कोई नया रास्ता निकालकर प्रवाह को उधर ले चलने में समर्थ होती। मंचू-शासन के नाश से क्रान्ति द्वारा जो फल मिला, उसे जमींदारों और सेठों, युद्धपतियों और नौकरशाहों ने अपने हाथ में कर लिया। भारत की स्वतन्त्रता का फल भी हम देख रहे हैं, सेठों और नौकरशाहों के हाथ में चला गया है। चीन के इसी वर्ग का मुख्य प्रतिनिधि और नेता युवान शि-काइ था।

माओ चे तुंग के अपने प्रदेश हूनान की स्थिति में भी अब परिवर्तन हो गया था। तान येन्-काइ (1876-1903 ई., कुओ-मिन-तांग शासन में ऊँचे पदस्थ) राज्यपाल होकर आया था। के-लाउ-हुइ के दोनों प्रमुख नेता च्याउ ता-फेंग और कन चो-शिन् विद्रोह के सफल संगठन करने के बाद मार डाले गये। क्रान्ति के कितने ही बड़े-बडे नेता और समर्थक युवान शि-काइ से समझौता करने के लिए तैयार हो गए। उनको डर लगा कि कहीं चीन उत्तर और दक्षिण के दो भागों में बँट न जाय; इसलिए उन्होंने शान्ति से काम लेने की नीति बरतनी चाही। लेकिन उनमें कोई दम नहीं था, इसलिए युवान शि-काइ के सामने वह हर बात में दबने लगे। उन्होंने युवान की माँगों के अनुसार निम्न बातें स्वीकार कर लीं : मंचू-सम्राट के सिंहासन-च्युत् होने पर अब सुन् यात-सेन् राष्ट्रपति के पद को युवान शि-काइ के लिए खाली करें, नानकिंग सरकार तोड़ दी जाय, चीनी गणराज्य की राजधानी पेकिंग में रहे।

सुन् यात-सेन इस शर्त को पसन्द नहीं करते थे, लेकिन उनके साथियों में से अधिकांश ने उनका साथ छोड दिया, फिर वह अकेले क्या कर सकते थे ?

सुन् यात्-सेन ने पीछे स्वीकार किया, कि 1911 ई. की क्रान्ति असफल रही; लेकिन, तो भी उसे बिलकुल असफल नहीं कहा जा सकता, क्योंकि दुनिया के सबसे पुराने राजतन्त्र को खतम कर देवपुत्र सम्राट् की प्रतिष्ठा को धूल में मिला चीनी जनता ने एक जबर्दस्त बेड़ी को तोड़ दिया। चीन के इतिहास में क्रान्ति का बड़ा स्थान है, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता।

माओ चे-तुंग वाली पलटन में उस वक्त किसी बड़े धावे या कूच की आपस में बड़ी चर्चा थी। माओ चे-तुंग के लोहार मित्र ने जब कहा :

"भाई, आजकल में हमारा कूच होगा। मेरे मन में हो रहा है, दो अक्षर घरवालों को लिख दूँ।"

माओ चे-तुंग उस वक्त बैठा अखबार पढ़ रहा था। उसने जब 'जल्दी की आवश्यकता नहीं है' कहा तो लोहार मित्र ने अपने आग्रह को फिर दोहराया। इस पर माओ चे-तुंग ने कहा—"हमारा कूच रद्द समझो। डा. सुन् और युवान शि-काइ में समझौता हो गया है।"

1911 के दिसम्बर में डा. सुन यात्-सेन चीन लौटे थे। उस समय उत्तरी और दक्षिणी चीन में दो सरकारें थीं, जिनके बारे में अभी हम बतला चुके हैं। युवान शि-काइ एक बड़ा सामन्त तथा शान्-तुंग प्रदेश का राज्यपाल रह चुका था। दरबार में चुगली लग जाने से उसे अपने पद से हाथ धोना पड़ा, लेकिन जब 1911 ई. में क्रान्ति

की लपटें चारों ओर दिखलाई देने लगीं, तो मंचुओं ने फिर उसे दरबार में बुलाकर प्रधानमंत्री का पद दिया था।

डा. सुन् ने राष्ट्रपति पद स्वीकार करते ही जनता के हित के लिए तीन सिद्धान्तों–जनतन्त्रता, राष्ट्रीयता और लोक-समृद्धि–के अनुसार शासन चलाने का निश्चय किया था। उन्होंने क्रान्ति के तीन उद्देश्य रक्खे : राजतन्त्र नष्ट करके पाश्चात्य ढंग की जनसत्ता स्थापित करना और विदेशी साम्राज्यवाद का मुकाबला करना। डा. सुन् में प्रचार और संगठन दोनों की अद्‌भुत शक्ति थी, लेकिन उनकी अपनी कोई मजबूत संगठित संस्था अभी मौजूद नहीं थी। तुंग-मेंग हुइ (क्रान्तिकारी साथी दल) की शक्ति और प्रभाव सीमित था, जिसे उन्होने अब कुओ-मिन्-तांग (राष्ट्रीय लोक पार्टी) बना दिया था। पर उसमें अभी न कोई कड़ा अनुशासन था, न अच्छा संगठन। तरह-तरह के अवसरवादी उसके भीतर घुस आये थे। एक तरह से कह सकते है कि वह एक मंचू-विरोधी सम्मिलित संस्था थी। क्रान्तिकारी सेना और प्रचार आदि के खर्च के लिए मचू-विरोधी सेठों की थैली की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। मंचू-वश के खतम होने के बाद अब वह अपने लाभ के फिकर में थे। अब तक पश्चिमी साम्राज्यवादी उसी तरह मचू-वश के सरक्षक थे, जैसे अंग्रेज भारत मे देशी रियासतों के। वह मचू-सम्राट को शिखडी बनाकर अपनी मनमानी जारी रखना चाहते थे। उन्होंने जब देखा कि मचू-वश की रक्षा करना अब हमारी शक्ति के बाहर की बात है, और उसकी आवश्यकता भी नही है, क्योंकि युवान शि-काइ जैसा खिलौना उनके हाथ में आ गया है तो युवान का समर्थन करना शुरू किया। दक्षिण के सेठ हमारे 'विरुद्ध नही जायँगे', इसका भी उन्हें विश्वास था, इसलिए अंग्रेज परराष्ट्र सचिव सर एडवर्ड ग्रेने, युवान शि-काइ और दक्षिण के क्रान्तिकारियों में समझौता कराने का प्रयत्न किया। उन्होंने साफ बतलाया कि मंचू-वंश के नष्ट होने का हमें कोई खयाल नहीं है, लेकिन नई सरकार का मुखिया युवान शि-काइ को होना चाहिए, नही तो पश्चिमी शक्तियों से दुश्मनी मोल लेनी पड़ेगी।

कुओ-मिन-ताग के उग्र नेता युवान शि-काइ का विरोध करने के लिए डा. सुन पर जोर दे रहे थे, हूनानी-सेना उत्तरी चीन पर कूच करने के लिए तैयार थी, लेकिन जैसा कि अभी बतलाया, वह हो नही सका। 12 फरवरी 1912 को मचू सम्राट को सिहासन से हटा दिया गया। 14 फरवरी को डा. सुन-यात्-सेन ने शि काइ के लिए राष्ट्रपति के पद को खाली कर दिया। पश्चिमी साम्राज्यवादियों के घर घी के चिराग जलने लगे। 17 फरवरी को चार विदेशी राज्यों ने गणराज्य को भारी रकम कर्ज में दी।

माओ चे-तुग का छह महीने का सैनिक जीवन अब खतम होने लगा। क्रान्ति के लिए अब सेना में रहकर वह कोई काम नहीं कर सकता था, इसलिए उसने सेना से इस्तीफा दे दिया।

5
कालेज-जीवन (1912-18 ई.)

1. विद्या के दीवाने

माओ चे-तुंग की उम्र इस वक्त 19 वर्ष की हो रही थी। सिपाहीगीरी छोड़ने के बाद अब उनको सबसे पहले खयाल आया–कहीं रहकर बाकायदा शिक्षा प्राप्त करना–आधुनिक ढंग से पढ़ाई करना। इसके लिए चांगशा से बढ़कर कौन स्थान हो सकता था, जिससे कि अब वह कुछ-कुछ परिचित भी हो चुके थे।

(1) चांगशा नगरी में–किस विद्यालय में प्रवेश हो, इसके लिए उन्होंने अखबारों में छपे विज्ञापन देखने शुरू किये। 'मिन् ली पाउ' से उनका पहले से परिचय था। अखबारों में तरह-तरह के विज्ञापन छपते रहते थे। पुलिस विद्यालय का भी एक विज्ञापन था। दूसरे विज्ञापन में साबुन बनाना सिखाने के विद्यालय की बात थी। इसमें चे-तुग जैसे तरुण के लिए आकर्षण भी हो सकता था, क्योंकि उसमें फीस नही लगती थी, भोजन

भी मिलता था और उसके ऊपर से थोड़ा-सा मासिक भी। साबुन भी देश के लिए एक आवश्यक चीज है। माओ चे-तुंग ने पुलिस विद्यालय में जाने का खयाल छोड़ साबुन विद्यालय को पसन्द किया और नाम लिखाने की एक डालर फीस भी जमा कर दी। इसी बीच उनके एक विद्यार्थी मित्र ने अपने विद्यालय के गुणगान शुरू किये। वहाँ बाकायदा शिक्षा होती थी, कितनी ही आधुनिक विद्याओं का ज्ञान तीन वर्ष के भीतर कराकर पंडित बना दिया जाता। मित्र अपने विद्यालय का गुणगान करते नही अघाते थे। माओ चे-तुंग ने विद्यालय के बारे मे सारी बातें घर लिखकर फीस के लिए पैसा माँगा। इसके बाद ही दूसरे मित्र ने कहना शुरू किया कि आर्थिक व्यवस्था के बिगड़ने के कारण, देश रसातल जा रहा है, इसलिए अर्थशास्त्रियो की बडी आवश्यकता है। चे-तुंग ने एक डालर इस मित्र के बतलाए हुए विद्यालय मे भी नाम लिखाने का दे दिया, और प्रवेश हो भी गया था। इसी बीच फिर एक दूसरा विज्ञापन देखने मे आया, जिसमे सरकार द्वारा चालित एक कालेज के पाठ्य-क्रम के बारे मे लिखा हुआ था। विज्ञापन से यह भी मालूम हुआ कि वहाँ के अध्यापक अधिक योग्य हैं। इस विद्यालय मे व्यापार की शिक्षा मुख्य तौर से दी जाती थी। एक डालर देकर यहाँ भी नाम लिखवा इसकी खबर पिता को दी। पिता पहले से व्यापारशास्त्र के ही पक्षपाती थे, और वह चे-तुंग को एक महाजन के यहाँ रखकर इस शास्त्र को सिखलाना चाहते थे, इसलिए वह इसमे बहुत खुश हुए।

विद्यालय मे दाखिल होने से पहले माओ चे-तुंग को यह पता नही था, कि वहाँ सभी विषयों की शिक्षा अंग्रेजी मे दी जाती है, जिसका ज्ञान उन्हे नाममात्र को था। अंग्रेजी सिखानेवाला कोई ऐसा अध्यापक भी नही था, ऐसी अवस्था मे उसमे और वक्त बरबाद करना बेकार था।

(2) प्रथम प्रादेशिक विद्यालय में—महीने-भर व्यापारिक विद्यालय में रहने के बाद अब उसे छोड माओ चे-तुग ने फिर विज्ञापन देखने शुरू किए। प्रथम प्रादेशिक कालेज का पता लगा, जिसके लिए प्रवेश-परीक्षा भी देनी पडी। अपनी प्रतिभा और ज्ञान के कारण प्रवेश परीक्षा मे वह सर्वप्रथम रहे। प्रिंसिपल और दूसरे अध्यापक अपने नये होनहार विद्यार्थी से बडे प्रसन्न हुए। उन्होने परीक्षा मे एक निबन्ध लिखने के लिए दिया था। माओ का निबन्ध इतना सुन्दर था कि उन्हे विश्वास नही हुआ कि यह इस विद्यार्थी का लिखा हुआ है। इस पर उन्होंने दूसरा निबन्ध अपने सामने लिखने के लिए दिया। नवीन और प्राचीन चीनी-साहित्य को अवगाहन किये हुए, गामडे के इस प्रतिभाशाली किसान पुत्र ने उस भी बहुत सुन्दर तौर से लिख दिया। सभी अध्यापक अब तरुण का लोहा मानने लगे। माओ कालेज मे दाखिल हो गया। लेकिन, पढ़ते समय देखा, कि पाठ्यक्रम बहुत ही सीमित तथा मामूली-सा है। वह उससे सन्तुष्ट नही हुआ और किसी तरह छह महीने बिताये। एक चीनी अध्यापक ने उसे इस समय पढ़ने मे काफी सहायता दी। साहित्य की ओर विशेष अनुराग देखकर अध्यापक ने माओ को 'यू पी तुग-चियेन्' (इतिहास दर्पण) नामक पुस्तक दी। इस पुस्तक पर चियेन् लुंग की टीका भी थी। माओ को पुस्तक पढ़ने मे बड़ा रस आया। उसने देखा कि पाठ्यक्रम मे चाहे कुछ भी कमी हो, लेकिन स्वाध्याय द्वारा मै अपनी ज्ञान पिपासा को पूर्ण कर सकता हूँ, इसलिए उसने स्वय अध्ययन की योजना बना ली।

विद्यालय के अध्यापक याग चेन-ची की पहले ही दिन से माओ के ऊपर विशेष कृपा थी। याग इग्लैड से पढ़कर आये थे, और वह राजनीति के अध्यापक होते हुए एक आदर्शवादी पुरुष थे। माओ का भी ऐसे आदर्शवादी अध्यापक के प्रति विशेष आदर होना स्वाभाविक था। याग का पढ़ाने का ढग भी अच्छा था। अपने विद्यार्थी को आगे बढ़ते हुए देखकर एक दिन याग ने पीठ ठोंकते हुए माओ से कहा : "मानसिक शक्ति के ऊपर तुम्हारा लिखा निबन्ध बहुत सुन्दर था। मैंने तुम्हे सौ में सौ नम्बर दिये।" ताग नामक एक दूसरे शिक्षक भी माओ को पसन्द थे। एक दिन उनके पास से 'जनता का अखबार' लेकर माओ ने पढ़ा। उसमे दो विद्यार्थियों की तिब्बत की साहस-यात्रा वर्णित थी। उसे पढकर माओ को भी बहुत शौक हुआ, और उसने भी घुमक्कड़ी करने का स्वप्न देखा। उन्होने गर्मियो के दिनो हाथ में बिना पैसा-कौड़ी के एक छोटी-मोटी यात्रा की भी। उससे वह इतना उत्साहित हुआ कि उसने मुफ्त यात्रा करने वाली तरुणों की मंडली बनाने के लिए अखबारों मे लेख छपवाया। माओ के कहने के मुताबिक साढे तीन जवानों ने इसका जवाब दिया, जिनमें आधा जवाब

देनेवाला ली ली-सान नामक तरुण था। वह माओ से मिलने भी आया और उससे योजना पर चुपचाप बात सुनी और अपनी कुछ भी सम्मति दिये बिना चला गया। पीछे ली भी कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हुआ, लेकिन उसकी दृष्टि अव्यावहारिक ज्यादा साबित हुई।

(3) स्वयं अध्ययन—माओ विद्यालय की पाठ्य-पुस्तकों से अधिक अपने ऊपर विश्वास रखता था, इसलिए अब उसका समय स्वाध्याय मे अधिक लगने लगा। चागशा में कोई एकान्त पहाडी नही थी, लेकिन तिंग-वाग-ताइ नामक एक ऊँचा बड़ा टीला था, जिसके ऊपर जाकर देखने से दृष्टि वहुत दूर तक नही जा सकती थी। लेकिन, इसके ऊपर एक इमारत थी, जिसमे पुस्तकालय था। पहली मजिल पर चीनी और विदेशी भाषाओ की पुस्तकें थी। हूनान का यह पहला प्रादेशिक पुस्तकालय था और अभी थोडे ही समय से आम पाठको के लिए इसका दरवाजा खुला था। रोज जैसे ही दरवाजा खुलता, नियमपूर्वक सीधी-सादी पोशाक मे एक लम्बा-सा तरुण धीरे-धीरे पुस्तकालय की ओर पग बढ़ाता। अपनी इच्छित पुस्तक को लेकर वह वाचनालय मे एक मेज पर बैठ जाता और बीच मे जरा भी रुक विना तव तक पढ़ता रहता, जब तक कि पुस्तकालय के बन्द होने का समय न आता। जाडा हो या वर्षा, प्रतिदिन वह इसी तरह से आकर पढ़ता रहता। बीच मे वह थोडी देर के लिए क्षुधा शान्त करने के वास्ते कुछ रोटियाँ लेकर खाने के लिए बाहर जा फिर लौट आता। माओ चे-तुग के अपने शब्दो मे ही वह पुस्तकालय की पुस्तकों के ऊपर क्या पडता माना "बैल को बारी मे छोड़ दिया गया।" माओ ने इस पुस्तकालय मे प्राचीन साहित्य, इतिहास, दर्शन आदि पर चीनी भाषा की कितनी ही सुन्दर पुस्तके पढी। विदेशी साहित्य इतिहास, भूगोल और दर्शन ने भी उसका ध्यान अपनी ओर खीचा। इसी समय चे तुग ने अर्थशास्त्री एडम स्मिथ की पुस्तक 'राष्ट्रों का धन', चार्ल्स डार्विन की 'प्राणिजातियो की उत्पत्ति', टामस हक्सले की 'विकास और आचारशास्त्र', जान स्टुअर्ट मिल का 'तर्कशास्त्र', हरबर्ट स्पेन्सर का 'समाजशास्त्र का अध्ययन', मोन्तेस्क्यू की 'विधान की आत्मा' पढ़ी। इसी तरह रूस, प्राचीन ग्रीस और रोम के कुछ महान् ग्रन्थकारो की कृतियो को भी पढने का उसे वहाँ मौका मिला। वस्तुतः माओ चे-तुग ने विदेशी भाषाओं से चीनी में अनुवादित ग्रथो मे से शायद ही किसी पुस्तक को उस समय छोड़ा हो। पुस्तकालय की दीवाल पर एक बहुत बडा दुनिया का नक्शा टँगा था, वह भी माओ चे तुग का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किये विना नही रहता था। उधर से गुजरते समय वह अवश्य थोडी देर ठहरकर उसे बडे ध्यान से देखता।

पुस्तकालय मे सारा दिन विताने के बाद चे तुग शाम को अपने बासे मे लौटता। छह महीने तक माओ ने इसी तरह जीवन बिताया। माओ अध्ययन के सम्बन्ध मे अपने जीवन के इस आध साल को वहुत ही मूल्यवान समझता था। पिता खर्च भेज रहे थे, लेकिन जब उन्हे मालूम हुआ कि पुत्र न तो वाकायदा किसी स्कूल मे पढ़ता है और न कोई काम ही कर रहा है, तो उन्होने पैसा भेजना बन्द कर दिया। माओ खर्च बहुत संकोच मे करने लगा, लेकिन तब भी वह कितने दिनो तक चलता ? उसने पहले अपने वर्तमान बासे को एक और मामूली कोठरी मे वदलना चाहा। फिर इधर उधर कही पढ़ाने के काम की तलाश करने लगा। इसी समय एक दिन एक अखबार मे उसने निम्न विज्ञापन पढ़ा :

"हूनान का प्रथम नार्मल विद्यालय
पढ़ना और रहना मुफ्त
ग्रेजुएट होने पर शिक्षा का काम
शिक्षा देश की नीव रखती है", इत्यादि

विज्ञापन पढ़कर माओ को बड़ी प्रसन्नता हुई। घर लिखने पर वहाँ से भी उत्साहजनक उत्तर आया। प्रवेश-परीक्षा मे वह पास हुआ और कालेज मे दाखिल हो गया।

2. कालेज में (1913-18 ई.)

प्रथम नार्मल विद्यालय (कालेज) चागशा के दक्षिणी दरवाजे के बाहर म्याउ-काउ-फेग नामक पहाडी के नजदीक अवस्थित था। माओ ने यहाँ डटकर पाँच साल अध्ययन करके बाकायदा शिक्षा समाप्त की। पढने की उसमे धुन थी, और बहुत-से ग्रन्थो को अब तक वह स्वय भी पढ चुका था। बीस से पच्चीस वर्ष की उम्र तक

इसी कालेज मे पढते माओ चे-तुंग ने ज्ञानवृद्धि के साथ-साथ सामाजिक जीवन के भी तजर्बे हासिल किये। इसी समय उसके विचार परिपक्व और दृष्टिकोण विस्तृत होने लगे। इसी कालेज मे उसकी सगठन सम्बन्धी प्रतिभा का पहले-पहल जौहर देखने में आया। यही पर उसे कितने ही विद्यार्थी मित्र मिले, जो आगे चलकर उसके काम मे बड़े सहायक साबित हुए।

माओ का नाम ड श्रेणी में लिखा गया। पाठय-पुस्तको के अतिरिक्त अपने स्वाध्याय को भी उसने पहले की तरह अखड जारी रक्खा। ऐसे मेहनती, मेधावी और अहकारशून्य मधुर बर्ताववाले तरुण के प्रति लोगो का विशेष अनुराग क्यो न होगा ? माओ के निबन्ध विद्यालय मे बडे चाव से पढे जाते। जब-जब वह निबन्ध लिखता, अध्यापक उसके निबन्ध को विभागाध्यक्ष (डीन) के आफिस के सामने दीवाल पर चिपका देते, और क्लास के बाद पढनेवालो की वहाँ सदा भीड लग जाती। चे-तुग को इसका न अभिमान होता, न इतने से वह अपने को सतुष्ट मानता। वह भली प्रकार जानता था कि ज्ञान का विशाल सागर अभी बहुत कुछ उसके लिए अछूता है। वह क्लास के बाद के समय को भी पढने मे लगाता, रात को बहुत देर तक अपने रहने की कोठरी मे पढा करता। जब कालेज के चिरागो को बुझाने का बिगुल बज जाता, तो वह अपना छोटा-सा चिराग जला लेता, पास मे बाँस की छोटी सलाई पड़ी रहती, जिससे समय-समय पर बत्ती के गुल को हटाकर रोशनी तेज कर चारपाई पर पडे पडे पढता। कितनी ही बार पढते-पढते सबेरा हो जाता।

लेकिन इसका यह मतलब नही कि क्लास मे नियमपूर्वक जाने से कभी वह चूका हो। हाँ, जिस वक्त कोई ऐसी समस्या अध्ययन के विषय मे आ जाती, जो उसका ध्यान बहुत आकृष्ट करती, तो वह उसके हल करने मे इतना लीन हो जाता कि क्लास मे जाने की भी सुध न रहती। सामाजिक विज्ञान उसका बहुत प्रिय विषय था। यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि सामाजिक और राजनीतिक समस्याएँ उसका ध्यान विशेष करके अपनी ओर आकृष्ट करती थीं। प्राकृतिक विज्ञान के अध्ययन मे भी वह काफी समय और परिश्रम लगाता। यद्यपि जिस विषय मे उसकी ज्यादा दिलचस्पी होती, अपना सबसे अधिक ध्यान उसी की ओर लगाना उसकी आदत थी। चीन के इतिहास का वह बडी सावधानी से अध्ययन करता। एक बार उसने चीनी इतिहास पर लिखी गई सभी तरह की नई और पुरानी पुस्तको का इकट्ठा किया और क्रम मे एक के बाद एक अध्ययन करके उनके नोट लिये। उसकी इन नोटबुको से एक पूरा बक्स भर गया।

(1) **'शूये वेन्' (पढ़ो और पूछो)**–याग हुए-चुग कालेज मे एक प्रसिद्ध अध्यापक थे, जिनका प्रभाव माओ और उनके साथियो पर विशेष पड़ा। याग चागशा के रहनेवाले थे, उन्होंने छह साल जापान और चार साल इग्लैड मे अध्ययन किया था। यह कहने की आवश्यकता नही कि एक ही प्रकार की सकेतलिपि मे लिखे होने से किसी चीनी छात्र को जापान मे पढने का बहुत सुभीता रहता है। याग केवल आधुनिक ज्ञान विज्ञान से ही सुपरिचित नही थे, बल्कि अपने देश की विचारधारा और दर्शन का भी उन्होने गम्भीर अध्ययन किया था, विशेषकर सुगकाल (960-1279 ई.) के दार्शनिको का वह बडे सम्मान की दृष्टि से देखते थे। पश्चिमी विचारको मे दार्शनिक कान्ट, स्पेन्सर तथा रूसो मे उनकी बहुत दिलचस्पी थी। कालेज मे वह आचारशास्त्र, तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान, शिक्षा और दर्शन के अध्यापक थे। यद्यपि वह बहुत अच्छे वक्ता नहीं थे, लेकिन साथ ही उनके बोलने का ढग दिलचस्प था, विद्यार्थी उनकी बातो को बड़े ध्यान से सुनते थे। उनके प्रिय विद्यार्थियो मे माओ चे-तुग, चाइ हो शेन्[1], चन चाग[2] और दूसरे थे।

---

1 चाई हो शेन् माओ चे तुग के बहुत घनिष्ठ मित्र थे। यह श्याग श्याग के रहनेवाले तथा बडे ही मेहनती छात्र थे। पीछे वह फ्रास चले गये जहाँ पर उन्होने चीनी विद्यार्थियो और मजूरो के बीच कम्युनिस्ट समूह सगठित किया। चीन लौटने पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की ओर से उन्होने बहुत सफलतापूर्वक प्रचार का कार्य किया। 1931 ई. मे उन्हे हाग-काग मे गिरफ्तार किया गया। अग्रेजो ने उन्हे कोमिन्तान के क्रान्ति विरोधी कसाइयो के हाथ में दे दिया, जिन्होने उन्हे दीवाल से बाँधकर भाले और सगीनो से छेद छेदकर मारा–उनकी छाती सगीनो के घाव से छलनी हो गई थी।

2 चेन-चाग भी पीछे कम्युनिस्ट पार्टी मे आये। बहस करने मे वह जितने चतुर थे, उतने ही अच्छे सुवक्ता भी थे। 1928 ई. मे कुओ-मिन्-ताग के कसाइयो ने पकडकर उन्हे मार डाला, लेकिन मरने से पहले उन्होने अपने दुश्मनो के सामने एक निर्भीकतापूर्ण जबर्दस्त भाषण दिया जिससे वे लज्जित हो गये।

ये तीनों मित्र प्रोफेसर याग के अधिक प्रिय थे। वे अक्सर इतवार के दिन उनके घर पर जाकर भिन्न-भिन्न विषयों पर बातचीत करते। यांग उनकी सहायता करने मे जरा भी सकोच नही करते थे।

इतिहास और साहित्य के बाद माओ चे-तुग का सबसे प्रिय विषय था दर्शन। इसे वह बडे उत्साह और चाव के साथ पढता। पढने के साथ-साथ उसकी जिज्ञासा और तीव्र हो जाती। चागशा मे जब कोई बडा विद्वान आता, तो माओ चे-तुग उससे मिलकर अपनी जिज्ञासा की पूर्ति करते हुए ज्ञान बढाने से बाज न आता। ऐसे विद्वान् से मिलने के बाद जो बाते उसे जानने को मिलती, आलोचना करते हुय उसमे वह अपने मित्र को भी परिचित कराता। चागशा मे 'चुआन्-शान् सभा' नाम की एक सस्था थी, जिसमे मिग काल (1368-1644 ई) के महान् दार्शनिक वाग चुआन शान् की शिक्षा के सम्बन्ध मे व्याख्यान हुआ करते। इस दार्शनिक की गम्भीर देशभक्ति से माओ चे-तुग विशेष तौर से प्रभावित हुआ था। माओ चे-तुग कहा करता · "शूये वेन् (अध्ययन) शब्द बडा ही महत्त्वपूर्ण है, जिसमे शूये (अध्ययन) और वेन् (प्रश्न, पृच्छ) दोनो एक साथ आते हैं।"

(2) तितिक्षा और तपस्या—प्रोफेसर याग पाश्चात्य ज्ञान और दर्शन के साथ-साथ पूर्वी ज्ञान और दर्शन के भी पडित तथा पेमी थे। एक आदर्शवादी के तौर पर वह सामन्तो के भ्रष्ट जीवन के विरोधी तथा नवीन, जनतात्रिक और वैज्ञानिक ढग के जीवन को पसन्द करते थे। वह कहते थे कि सुबह के जलपान की आवश्यकता नही है, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा है कि आदमी प्राणायाम और ध्यान करे, बारहो महीने ठडे पानी मे नहाये। अपने गुरु का अनुकरण माओ चे-तुग, चे हो-शेन् और दूसरे बडे उत्साह के साथ करने लगे। करीब-करीब दो साल तक उन्होने नाश्ते को छोड रक्खा।

एक साल गर्मी की छुट्टियो मे माओ, चाइ और एक दूसर विद्यार्थी चाग कुन् तीन चागशा के परले पारवाली नदी के तट के यूये-लू पहाड के ऊपर अवस्थित एक शाला म रहे। वह नाश्ता और ब्यालू दोनो नही खाते थे। उनका भोजन अधिकतर हरी मटर का होता। यह कहने की आवश्यकता नही कि इसमे जितना भोजन की सादगी का खयाल था, उतना ही खर्च की कमी का भी। सबेरे वह पहाड के ऊपर ध्यान करने के लिए जात, फिर नीचे उतरकर तालाब या नदी मे स्नान करते। सारे छुट्टी के दिनो मे उन्होने ऐसा ही किया। उनकी इस तितिक्षा के प्रति बडी श्रद्धा थी। तितिक्षा मे ठडे पानी मे नहाना ही पर्याप्त नही था, बल्कि उन्होने चीन के बौद्ध तितिक्षुओ की तरह धूप, हवा और वर्षा मे कपडे उतारकर रहने की साधना भी की। माओ चे तुग इन्हे 'सूर्यस्नान', 'वायुस्नान', और 'वर्षास्नान' के नाम से पुकारता था। शियाग नदी म एक छोटा-सा द्वीप था, जहाँ जाकर वह अक्सर तैरा करते। इसमे तो सन्देह नही कि शरीर का मजबूत करने के लिए यह साधनामार्ग बुरी नही था। तरह तरह के स्नानो और ध्यान-साधना के साथ-साथ 'कट साधने' का भी उन्हे शौक पैदा हो गया। वह पहाड के ऊपर चल जात, और वहाँ से थाग-काल (618-907 ई) के कवियो की मनोहर कविताओ को पढत या चिल्लात। कभी कभी नगर के प्राकार के ऊपर चढकर माओ वहाँ से भी फेफडे मे हवा भरकर जोर से चिल्लाता। इस शाला म इस एकान्तवास के समय चे तुग ने अपने पास सिर्फ एक अँगोछा, एक छाता और कुछ कपडे रख छोड थे। माओ चे-तुग हमेशा एक लम्बे खाकी चोगे मे रहा करता, जो कि दूसरो से भिन्न था। रात का तीनो मित्र आसमान के नीचे मैदान मे सोते। काफी स्वच्छ हवा प्राप्त करने के लिए वह एक-दूसरे से दूर सोया करत। छुट्टियो के बाद कालेज लौटने पर जाडे के आने तक वह बाहर खेल के मैदान मे सोया करत। माओ चे-तुग ने उस समय के बारे मे अपनी डायरी मे लिखा था ·

"देवो के विरुद्ध लडना, क्या आनन्द !
पृथ्वी के विरुद्ध लडना, क्या आनन्द !"

पीछे 1920-21 ई मे चे तुग ने एक 'सप्ताह क्लब' सगठित की थी, जिसके सदस्य इतवार को चागशा के उपनगरो के सुवर्णद्रोणी श्रेणी, रौप्यद्रोणी श्रेणी, वानरशिला आदि जैसे सुन्दर प्राकृतिक स्थानो मे घूमने जाया करते। शरद् ऋतु मे एक रात वह शियाग नदी के नीचे चाँदनी का आनन्द लेने गया, जहाँ से 'नाग्ग द्वीप' की पूरी परिक्रमा करते अगले दिन भिनसार को लौट सका।

माओ को भी एक समय कविता करने का शौक पैदा हुआ था, और अब भी कविता-प्रेम उनसे दूर नही

हुआ है। उनकी कविताएँ अच्छी भी होती हैं, लेकिन महान् नेता और चीन के भाग्यविधाता बनने के बाद चापलूसी के डर के मारे वह अपनी कविताओं को छपने नहीं देते। अपने तितिक्षा और तपस्या के दिनों में माओ चे-तुंग ने निम्न कविता लिखी थी :

"एकाकी ठंडी शरद में,
उत्तरवाहिनी शियांग नदी के साथ,
नारंगियों के द्वीप में,
मैंने देखा लाखों पर्वत सर्वत्र लाल
रँगी घनी पत्तियों से,
और पारदर्शक हरित नदी
जिसमें सैकड़ों नौकाएँ दौड़ रहीं
बाज असीम आकाश में उड़ता,
मछलियाँ झुंडों में एकत्रित,
शीतल आकाश के नीचे जीवन नाना रूप में
स्वतन्त्रता के लिए फूट निकल रहा था।
मैंने एक एकाकी मीनार के तहखाने को खोला
और पूछा : विशाल ग्रह पर कौन,
प्राणियों के भाग्य का फैसला करता ?
बहुत साथियों के साथ दुबारा,
मैं इस स्थान पर आया,
मैंने बीते उत्साहमय दिनों को याद किया,
जब कि मेरे सारे मित्र तरुण
और भार-मुक्त, हृदय से कोमल थे,
और हाथ भी, जो लिखते और बाधा न जानते,
मुक्त किन्तु कोमल कल्पना पर अधिकार रखते।
हमने नदी और पहाड़ों की ओर संकेत किया,
जो सृजनात्मक बुद्धि को प्रेरित करते थे,
और लाखों परिवारों के शासक,
अतीत के ठाकुरों से घृणा करते थे,
क्या तुम भूल गये :
तीव्र बहते जलप्रवाह के बीच कैसे
लहरों पर आरूढ़ हमारी नौका आगे बह चली ?"

–(शिन्-युवान-चुन् के राग में लिखित)

1917 ई. में चांगशा में पढ़ते समय ही माओ चे-तुंग की माँ मर गई। माँ के प्रति माओ का असाधारण प्रेम था और जब तक वह शाउ-शान् में जीवित थीं, तब तक वहाँ उसके लिए आकर्षण था। अब वह उस मृदु स्नेहबन्धन से भी मुक्त था।

(3) घुमक्कड़ विद्यार्थी–माओ चे-तुंग अपने पाँच साल के कालेज-जीवन में नियमपूर्वक पढ़ने-लिखने में लगा रहा, लेकिन गर्मी की छुट्टियाँ उसे कुछ समय के लिए कालेज और स्वाध्ययन से मुक्त कर देतीं। यदि उसने अपनी एक छुट्टी को तितिक्षा और तपस्या में लगाया तो दूसरी छुट्टी को घुमक्कड़ी में लगाना पसन्द किया। अब की उसने अपने हूनान प्रदेश के भिन्न-भिन्न जिलों को देख आने का निश्चय किया। छुट्टी हुई। पाकेट में एक भी पैसा बिना वह तरुण पैदल चल पड़ा। बौद्ध पर्यटकों ने शायद उसे इस तरह की यात्रा के

लिए प्रोत्साहित किया। वह निंग-शियांग, पिंग-चियांग, ल्यू-यांग आदि पाँच जिलों में घूमा। धार्मिक तथा दूसरे तरह के लेखों को लिखकर पैसा कमाते, यात्रा का खर्च निकालते घूमना चीन में पहले से चला आता था, माओ चे-तुंग ने भी उसी तरीके को स्वीकार किया। उसकी आवश्यकताएँ बहुत ही सीधी-सादी और थोड़ी थीं। इस प्रकार बिना पैसे की यात्रा करते हुए वह किसानों के रीति-रवाज और जीवन का गभीरतापूर्वक अध्ययन करता रहा। उसके उद्‌बुद्ध मस्तिष्क में अब किसानो की समस्याएँ ज्यादा स्पष्ट रूप मे आने लगी।

अगली गर्मियो की छुट्‌टी में चाइ हो-शेन् भी माओ का साथी बना और दोनो श्यांग यिन् यीयांग और यूये चाउ चुंग चिग सरोवर की परिक्रमा करते घूमे। उन्होंने अपनी यात्रा यूवेलू पर्वत से शुरू की, जो कि चांगशा के बाहर है। हरेक के पास एक छाता, एक अँगोछा, एक जोड़ा देशी जूता और कुछ मामूली से कपड़े थे। अँगोछे को उन्होने छाते से लपेट रक्खा था। स्थान छोडने से पहले चाइ हो-शेन् ने अपनी माँ और बहन (चाइ-चांग, आजकल अखिल चीन जनतांत्रिक महिलासंघ की अध्यक्षा) को कह दिया कि हम दो या तीन दिन में लौट आयेगे, लेकिन दोनो करीब दो महीने बाद ही लौट सके। यूवेलू पर्वत से चलते-चलते वह युनवान मन्दिर गये और दो महीने की यात्रा पूरी करके यूवेलू पर्वत लौट आये, जिसके पास ही चाइ परिवार का एक घर था। दोनो पर्यटको ने अपनी यात्रा का विवरण परिवार को कह सुनाया : "हम रास्ते मे पड़नेवाले विहारों के भिक्षुओं से किस तरह बात-व्यवहार करते, कैसे अभिलेखो को लिखकर जहाँ तहाँ पैसा कमाते", इत्यादि। किसान पहले-पहल उनको सन्देह की दृष्टि से देखते थे, क्योंकि वह साधारण घुमक्कड भिक्षुओ या पडितो जैसे नही दीख पडते थे।

कोई-कोई कहते शायद ज्योतिषी है। लेकिन, जब एक बार तरुणो के सामने बात करने के लिए वह राजी हो जाते, तो तरुण उन्हे मोह लेते और वह उनका बडा स्वागत-सत्कार करते। दोनो साथियो ने अपनी इस यात्रा मे भिन्न-भिन्न गाँवों के रीति-रिवाजो और तरीकों के बारे में पूछ-ताछ की, किसानो के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त की : 'मालगुजारी कैसे ली जाती है ? किसानो और जमीदारो का सम्बन्ध कैसा है ? गरीब किसानो की क्या अवस्था है ?' अक्सर किसान उन्हे खाने रहने के लिए बुलाते, लेकिन बहुत बार उन्हे खुल आसमान के नीचे सोना तथा पहाडी फल फूल खाकर क्षुधा शान्त करनी पडी थी।

3. वैज्ञानिक दिमाग

कालेज म विद्यार्थियों को रात मे पढने के लिए एक विशेष शाला थी। यह दुमजिला इमारत जब रोशनी से जगमगा उठती, तो विद्यार्थी वहाँ बैठ अपनी किताबों के भिन्न-भिन्न स्थलों को घोखने की कोशिश करते। उस समय माओ चे-तुग को भी वहाँ देखा जा सकता था, लेकिन वह घोखने की जगह समाचार-पत्रों मे लीन रहता, देश-विदेश की राजनीतिक और सैनिक स्थिति पर गभीरतापूर्वक विचार करने मे लगा रहता। इस अध्ययन का परिणाम यह हुआ था कि वह चीन तथा दुनिया की स्थिति का स्पष्ट विश्लेषण कर सकता था। जब प्रथम विश्वयुद्ध के वर्ष चल रहे थे, उस समय उसके साथी विद्यार्थी बराबर चे-तुग से तत्कालीन सैनिक और राजनीतिक अवस्थाओं के बारे मे सुना करते। आस्ट्रिया के युवराज की सेराजीवो मे हत्या करने से लेकर कैसर विलियम द्वितीय के सेनाचालन, फिर जर्मनी और रूस के बीच म युद्ध-घोषणा, फिर जर्मनी और इग्लैड मे युद्ध-घोषणा की बात बतलाते हुए वह कहता कि वेर्दू में कैसे डटकर लडाई हुई और कैसे पश्चिमी साम्राज्यवादियो को आपस मे लडते देखकर जापान ने उससे फायदा उठाते हुए चीन के ऊपर अपना जूआ लादने के खयाल से एक्कीस माँगे रक्खी।

माओ के साथियों का यह सब सुनकर बड़ा आश्चर्य होता, और वह कहते . "हम भी अखबार पढते है, लेकिन क्या बात है, जो हम उस तरह स्थिति का विश्लेषण नही कर सकते, जैसे कि तुम ?"

माओ चे-तुग अब राजनीतिक विचारधाराओ को अपना चुका था। उसका तीव्र वैज्ञानिक मस्तिष्क अखबारो की पक्तियों को पढते हुए एक-एक बात को विश्लेषण करते, सम्बन्ध जोडते उसके भीतर छिपे हुए मूल कारणो तक पहुँचता। विदेशो की राजनीतिक घटनाओं और स्थितियो के बारे मे बात करते समय वह अपने देश के

इतिहास और तत्कालीन स्थिति से तुलना किया करता। कालेज में दो अखबार आया करते, जिनमें एक शाघचाइ का था और दूसरा चागशा का। स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी। उनके लिए ये दोनों अखबार पूरे नहीं पड़ते थे। चे तुग अखबारों के महत्त्व को समझता, उन्हें दैनिक इतिहास मानता था। वह अपने लिए एक अलग अखबार मँगाया करता था। उसे ध्यानपूर्वक पढ़कर वह अखबारों की खाली हाशिया पर सभी पढ़े हुए भौगोलिक नामों को लिख डालता, फिर हाशिया को काटकर नत्थी कर लेता और नक्शे की सहायता से नामों को अंग्रेजी में लिख डालता। उसके साथी पूछते, "क्या कर रहे हो?"

"मैं अंग्रेजी लिखना सीख रहा हूँ," माओ का उत्तर होता, "और मैं दुनिया के सभी महत्त्वपूर्ण नगरों, बन्दरगाहों, सागरों, नदियों और पहाड़ियों को याद करना चाहता हूँ। आखिरी बात यह कि मैं अपने साधारण ज्ञान को बढ़ाना चाहता हूँ, क्योंकि अखबार जीवित इतिहास के स्रोत हैं।"

कभी-कभी वह घंटों अखबार में लीन रहता। उसके सामने एक चीनी और एक दुनिया का एटलस रहता। वह प्रत्येक स्थान के नाम को अखबारों में पढ़कर नक्शे में देखता। माओ की स्मृति बड़ी तेज थी। अगर किसी स्थान का नाम उसके सामने कहा जाय, तो वह तुरन्त बतला देता कि चीन के किस प्रदेश या जिले में अथवा बाहर कौन से देश में किस जगह वह स्थान है। पीछे शाघाइ, चागशा और पेकिंग के अखबारों को वह इसी तरह ध्यान से उस समय तक पढ़ता रहा, जब कि उन्हें चिंग काग शान में क्रान्तिकारी संघर्ष का नेतृत्व करना पड़ा। इतिहास और भूगोल दोनों को वह एक तरह के ध्यान से पढ़ा करता। माओ चे तुग को अपने [illegible] जिसकी तैयारी [illegible] संगठन और प्रचार [illegible] अभ्यास किया और साथ ही साथ [illegible] सब प्रकार के ज्ञान को।

4 जन्मजात नेता

माओ में [illegible] जन्मजात नेता के सारे गुण मौजूद थे [illegible] सभी साथियों में [illegible] उन्होंने अपने इस पाँच वर्ष के [illegible] जीवन में किया। माओ को बहुत [illegible] विद्यार्थियों के प्रेम और सम्मान को प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे प्रतिभावान और मेहनती थे [illegible] तथा [illegible] होता था। उनके विचार और निश्चय इतने पक्के [illegible] होते [illegible] उनके सहाध्यायी अनुसरण किए बिना न रहते। उनके विचार उदार तथा प्रेरणादायक होते। [illegible] पर एक प्रकार की गम्भीरता और हास्य रहता। [illegible] नहीं। कितने ही विद्यार्थी उनके प्रभाव में आये [illegible] माओ को अपना आदर्श माना। बातचीत का उनका अपना एक सरल और दिलचस्प ढंग था। [illegible] और साहित्य, व्यक्तियों, घटनाओं और समसामयिक बातों के बारे में कहते [illegible] अपने [illegible] का विषय न बनाते। अपनी पटुताई दिखलाने का उन्हें कभी [illegible] न होता और बारी आने पर वह बहुत स्पष्ट किन्तु बिना जल्दी किये साफ तौर से ख्याल करके बतलाते। जब कोई दूसरा बात करता, तो जरा सा सिर एक तरफ झुकाये वह बड़े ध्यान से सुनते और बीच में अक्सर [illegible] कहते। फिर जब उनकी बारी आती, तो एक एक बात को लेकर उसका विश्लेषण करते हुए सामने रखी समस्या की महत्त्वपूर्ण बातों को लेते, बहुत थोड़े शब्दों में सार निकालकर रख देते। उनकी [illegible] विषयान्तर में न जाती और सदा श्रोता के हृदय में प्रेरणा पैदा करती। लोग उनके सामने अपनी समस्याएँ लेकर आते और [illegible] बातचीत में वह उन्हें उनके सामने स्पष्ट करके रख देते। हरेक प्रश्न या समस्या का जवाब उनकी जीभ के नोक पर मौजूद रहता। माओ के और भी कितने ही गुण थे: लक्ष्य पर दृढ़ता, प्रज्ञा, निर्णय और तर्क की बहुत तीव्र और तीक्ष्ण शक्ति तथा सभी तरह की समस्याओं का ध्यानपूर्वक सावधानी से [illegible] विचारपूर्ण निर्भीक हल। उनके सहाध्यायी और कितने ही पुराने क्रान्तिकारी साथी माओ के बारे में [illegible] शब्द न पाते। कोई कहता

"माओ चे-तुंग सचमुच अद्भुत है—उनकी प्रतिभा अद्भुत है।"

माओ ने एक बार अपने सहपाठियों से कहा था :

'दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं : एक वह जो कि वैयक्तिक बातों में अच्छे हैं, और दूसरे वह जो कि संगठन में। पहले प्रकार के लोग अपेक्षाकृत अधिक हैं। तो भी हरेक आदमी के अपने विशेष गुण होते हैं जो चाहे कितने ही सीमित क्यों न हों, उन्हें अच्छी तरह काम में तथा विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। किसी आदमी के ऊपर फैसला देने के पहले हमें उसके गुणों की ओर देखना चाहिए।'

माओ चे-तुंग इसी दृष्टि से अपने साथियों और दूसरे आदमियों को उन्नत और उनकी क्षमता का उपयोग में लाने में सहायता करते। अपनी इसी पारखी बुद्धि से वह इतने जबर्दस्त संगठनकर्ता और क्रान्तिकारी बने। वह अक्सर कहा करते : लंगड़ा, लूला, बहरा, गूंगा और अन्धा भी क्रान्ति के काम में उपयुक्त हो सकता है। पीछे अपने संगठन में काम करनेवालों के साथ बात करते हुए उन्होंने एक बार कहा था : पहले यह देखो कि किसी साथी में क्रान्ति के प्रति अति प्रेम, मार्क्सवाद लेनिनवाद में विश्वास आदि कौन सी बातें अपने जैसी हैं। फिर देखो कि उसमें सैद्धान्तिक निर्बलता आदि कौन से दोष हैं। माओ चे-तुंग अपने सम्पर्क में आनेवाले व्यक्तियों से उनके गुणों और क्षमता से परिचय प्राप्त करके उनका उपयोग में लाने की हमेशा कोशिश करते रहे। दोषों के लिए कुढ़ना और धिक्कारना उन्हें तनिक पसन्द नहीं है। उनका सिद्धान्त है : रोग मुक्त करना और बचाना, आदमी को [illegible] में सहायता करना।

(1) छात्र-संघ संगठन : [illegible] पहले-पहल [illegible] माओ चे-तुंग को अपने इसी कालेज में मिला। [illegible] यहीं से उनके सामाजिक कार्य और जनतन्त्रता के प्रचार का आरम्भ होता है। यहीं पर उन्हें संगठन के बारे में दोषों गुणों को जानने और कटु-मीठे तजर्बों से फायदा उठाने का मौका मिला। हूनान क्या सारे चीन में जिस तरह शिक्षा और शिक्षण संस्थाओं का सञ्चालन किया जाता था, उसमें नादिरशाही और भ्रष्टाचार बहुत दिखलाई पड़ता था। किसी विद्यालय का मुख्याध्यापक बनने के लिए भिन्न-भिन्न [illegible] अफसरों को [illegible] चापलूसी [illegible]। [illegible] रिश्वत भी देनी पड़ती। [illegible] मुख्याध्यापक बनते ही आदमी अपने भाई-भतीजों और मित्रों को मुख्य-मुख्य स्थानों पर बैठाना [illegible] समझते। अक्सर अयोग्य आदमी [illegible] पद पर [illegible] कर दिये जाते और विद्यार्थियों को [illegible] सब देखते हुए भी आवाज उठाने की हिम्मत न होती। ऐसा [illegible] सारा नियन्त्रण हेडमास्टर या प्रिंसिपल के हाथ में रहता। वह उन्हें अपने [illegible] के तौर पर इस्तेमाल करता। विद्यार्थियों को ऐसा [illegible] बड़ा गुरु होता। [illegible] आँख मूंदकर [illegible]। युवान [illegible] के राष्ट्रपति होने के समय [illegible] प्रिंसिपल और हेडमास्टर पुराने शासन के समर्थक थे। राष्ट्रपति की हिदायतें [illegible] हरेक स्कूल के सभा-भवन की दीवार पर टंगी रहतीं, जिसमें विद्यार्थियों को कहा जाता : विद्रोह न करो, अध्यापकों का सम्मान करो इत्यादि। जब हाल में विद्यार्थी जमा हो जाते तो [illegible] उठकर राष्ट्रपति की हिदायतों का [illegible] पढ़ना। विद्यार्थी स्वभावतः ही [illegible] ध्यान न देते और बीच में हल्ला-गुल्ला मचाते। अधिकांश हेडमास्टर या प्रिंसिपल किसी न किसी तरह से सरकारी अधिकारियों से सम्बद्ध थे। इसीलिए वह नहीं चाहते थे कि विद्यार्थी अपने पढ़ने-लिखने से बाहर किसी क्षेत्र में कोई काम करें। विद्यार्थियों को अपनी पाठ्य पुस्तकें पढ़ने के लिए तो जाता, लेकिन विद्यालय में भी या बाहर किसी दूसरी कार्रवाई में भाग लेने का मौका न दिया जाता। यही अवस्था उस कालेज की भी थी, जिसमें माओ चे-तुंग पढ़ते थे।

मंचू वंश खतम हो गया था, तो भी युवान शि काइ ने शासन के पुराने ढांचे को बनाये रखने की कोशिश की थी। लेकिन सदियों से चले आते ढर्रे को सन् 1911-12 ई० की क्रान्ति ने हटा दिया था, इसलिए विद्यालय के तरुण हरेक बात को चुपचाप मानने के लिए तैयार नहीं हो सकते थे। कितने ही मर्तबे वह असंतुष्ट होकर विद्यालय के अधिकारियों के खिलाफ हड़ताल कर बैठते और प्रादेशिक सरकार से नये प्रिंसिपल को भेजने की

माँग करते। माओ चे-तुंग विद्यार्थियों के हितों के पक्षपाती थे। वह प्रबन्धकों के स्वेच्छाचार और भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए हमेशा तैयार रहते। उनमें योग्यता और दृढ़ता दोनों एक समान मौजूद थीं। विद्यार्थी अपने तरुण सतीर्थ्य को भलीभाँति जानते थे, इसीलिए उन्होंने माओ को अपना नेता चुना था। एक बार विद्यालय के अधिकारियों ने इसके लिए उन्हें निकाल बाहर करने की कोशिश की, लेकिन वह इसमें सफल नहीं हो सके, क्योंकि सारे विद्यार्थी माओ के समर्थक थे, और कितने ही अध्यापक भी माओ के पक्षपाती थे।

माओ चे-तुग ने अपने सहाध्यायियों का पूर्ण समर्थन प्राप्त कर कुछ कर्मठ विद्यार्थियों के साथ मिलकर जनतन्त्रतावादी एक युवान शि-काई विरोधी प्रधानाध्यापक के आने के समय अवसर पा एक छात्र-संघ संगठित कर लिया। हूनान के शिक्षणालय में पहले ऐसा नही हुआ था। छात्र-संघ का विद्यार्थियों के ऊपर बहुत जबर्दस्त प्रभाव हो गया। विद्यालय में जब कोई प्रबन्ध या शिक्षा-सम्बन्धी बैठक होती, तो छात्र-संघ के प्रतिनिधि को वहाँ अवश्य बुलाया जाता। अधिकारी तब तक किसी नियम-उपनियम या कार्रवाई के करने की हिम्मत नहीं रखते थे, जब कि छात्र-संघ उसे मंजूर न कर ले। छात्र अपने छात्र-संघ द्वारा अपनी माँगों को रखते थे। छात्र-संघ के सगटित हो जाने के बाद, पढाई, रोजमर्रे के जीवन, अनुशासन, पाठ्य से बाहर के पढने-लिखने आदि सम्बन्धी समस्याएँ बड़ी आसानी से हल कर ली गईं। विद्यालय के छह सौ विद्यार्थी माओ चे-तुंग को अपना नेता मानते थे। उनके इशारे पर सारा स्कूल उठ खडा होने के लिए तैयार रहता।

कुछ समय तक स्कूल का जीवन बड़ा ही उत्साहवर्द्धक रहा। विद्यार्थियों के कामों की प्रदर्शनी की जाती, अखाडे में कुश्तियाँ लडी जातीं। अनुसन्धान-मडली मे विशेष-विशेष विषयो पर वाद-विवाद और भाषण होते। प्रदर्शनी मे माओ चे-तुग के सुलेख बहुत पसन्द किये जाते। चीनी लिपि चित्र जैसी लिपि है, जिसके लिखने के लिए चित्रकार की तरह तूलिका इस्तेमाल की जाती है। माओ चे-तुग की लिपि बहुत सुन्दर होती थी। विद्यालय देखनेवाले हमेशा अपनी सम्मति-पुस्तक में लिखते समय माओ चे-तुंग का विशेष तौर से उल्लेख करते। यह छात्र-सघ माओ के अपने कालेज मे बराबर तब तक उसी तरह सक्रिय रहा, जब तक कि जापानी आक्रमण के विरुद्ध युद्ध नही आरम्भ हो गया। देश के सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों में भिन्न-भिन्न छात्र-सगठनों ने बडा महत्त्वपूर्ण काम किया था।

(2) **युद्धपतियों का विरोध**—तान् येन्-काइ के बाद ताग शियाग-मिग हूनान का सैनिक राज्यपाल बनकर आया। युवान शि-काइ ने इसे उस समय राज्यपाल बनाकर भेजा, जब कि वह गणराज्य को उठा अपने को सम्राट घोषित करने लिए उतारू था। तांग तुंग-मेंग हुइ का मेम्बर था, पर वस्तुतः वह मंचुओ का खरीदा गुप्तचर था। हूनान में आते ही उसने कई आदमियो को मरवाया, जिसके कारण लोग उसे 'कसाई ताग' कहने लगे। जब युवान शि-काइ ने अपने को सम्राट घोषित कर दिया, तो ताग को मारक्विस (राजा) की उपाधि प्रदान की। लेकिन, सम्राट युवान अधिक दिनो तक शासन नही कर सका। युन्नान पहला प्रदेश था, जिसने उसके खिलाफ बगावत की। उसके बाद दूसरे प्रदेशो ने भी उसकी नकल की। 'गणराज्य रक्षासेना' ने सगठित हो जेचुआन, हूनान और क्वेइ-चाउ पर कूच कर दिया। सुन्-यात् सेन् ने भी युवान शि-काइ के विरुद्ध काम करने के लिए याग-जी-उपत्यका में अपने आदमी भेजे। गण सम्वत्सर 5 (1916 ई.) मे हूनान मे लिन् छ्रू-हान (आजकल केन्द्रीय जन सरकार के महासचिव लिन् पो-चू) और दूसरों ने 'ताग को भगाओ' का आन्दोलन शुरू कर दिया। युवान शि-काइ ने जब देखा, कि इतने अधिक प्रदेश हमारे खिलाफ हो गये है, तो उसने सम्राट के सिहासन को छोडकर फिर राष्ट्रपति के पद पर लौटने का निश्चय किया। वह केवल सौ दिनों से थोड़ा ही अधिक सम्राट रहा।

'गणराज्य रक्षासेना' दृढ़ होती गई। जल्दी ही और कितने ही प्रदेशों ने भी अपने को स्वतन्त्र घोषित किया। चारों ओर गड़बड़ी छाई हुई थी। युवान शि-काइ भयभीत और हताश हो जल्दी ही (1917 ई. में) मर गया। हूनान के राज्यपाल तांग शियाग-मिंग को भी अपने पद से हाथ धोना पड़ा।

युवान के मरने के बाद 1 जुलाई, 1917 को मचू-पिट्ठू चांग शुन् ने गद्दी से उतार पू-यी को फिर से मंचू-सम्राट बनाना चाहा, लेकिन 10 जुलाई को उसे हार खानी पड़ी। इसके बाद फेंग कुओ-चांग राष्ट्रपति और

तुआन ची-जुइ प्रधानमन्त्री बने। तुआह ची (1864-1936 ई.) युवान शि-काइ का दाहिना हाथ था। अब हूनान पर शासन करने के लिए उत्तरी युद्धपतियो की गुट का एक आदमी फू लियाग-चो नया सैनिक राज्यपाल बनाकर भेजा गया। उत्तर के राज्यपाल का मुकाबला करने के लिए तान् येन्-काइ ने दक्षिणी गुट से मदद माँगी और साथ ही मुकाबले के लिए हूनान मे सैनिक तैयारी की। इस आपस की धीगामुश्ती मे चारो ओर गडबडी फैल गई। चागशा के स्कूलो मे अक्सर सेनाएँ जबर्दस्ती बैठ जाती, और विद्यार्थियो का पढना-लिखना बन्द हो जाता।

इसी समय 'गणराज्य रक्षासेना' ने फू लियाग-चाउ की उत्तरी सेना को करारी हार दी और वह चागशा की ओर पीछे हटने लगी। फूकी सेना ने कई स्कूलो की इमारतो को अपने लिए खाली कराना चाहा। प्रथम नार्मल विद्यालय चागशा के दक्षिणी दरवाजे के बाहर था और उसकी इमारत भी आधुनिक ढग की विशाल तथा बहुत सुन्दर थी, इसलिए हारी हुई सेना के एक भाग ने उसे अपने लिए लेना चाहा। प्रबन्ध-विभाग तथा लोगो के समझ मे नहीं आ रहा था कि क्या किया जाय। इसी समय माओ चे-तुग ने विद्यालय की रक्षा का काम अपने हाथो मे लिया और सभी कुश्तीबाजो को सगठित कर स्कूल के दरवाजो को रोक, डेस्को और कुर्सियां को ला, रोक लगा दी। फिर उत्तरी सिपाहियो मे से कुछ बन्दूके लेकर वह वहाँ डट गये। अब वह हथियारबन्द हो विद्यालय की प्रतिरक्षा के लिए तैयार थे। गोलियो की आवाज सुनकर कितने ही कायर विद्यार्थी और अध्यापक छात्रावास के पीछे के सेहन मे जा छिपे। स्कूल के बडे रोब गाँठने वाले सभी जवाबदेह अधिकारी तथा अध्यापक भी अब भीगी बिल्ली की तरह माओ चे-तुग की आज्ञा मानने के लिए तैयार थे। भगोडी सेना को जब यह मालूम हुआ तो कुछ गोलियाँ चलाकर वह वहाँ से आगे बढ गई।

इसके बाद माओ चे-तुग और उनके कुछ विद्यार्थी साथी विद्यालय के पीछेवाले पहाड पर गये और वहाँ गडबडी पैदा करनेवाले सिपाहियो को उन्होने बहुत दुत्कारा। कालेज की इमारत और उसका सारा सामान सुरक्षित बच रहा। माओ चे-तुग का यह काम पहली सैनिक कार्रवाई थी।

चीन मे गणराज्य स्थापित हो जाने के बाद कुछ वर्ष सारे देश मे गडबडी फैली रही। मध्यम वर्ग न और पश्चिमी साम्राज्यवादियो ने मचू-वश को हटाकर युवान शि-काइ को बैठाया था। युवान ने कामन्तवाद ही को कायम नही रखना चाहा, बल्कि अपन एक नये राजवश को चलाने का भी असफल प्रयत्न किया। अब सारे देश मे जगह-जगह युद्धपति अपना स्वतन्त्र शासन कायम करने का प्रयत्न कर रहे थे, जिसके कारण एक की जगह दर्जनो राज्यो के अस्तित्व मे आने का डर था, इसलिए फिर से क्रान्ति की जरूरत पडी। 'गणराज्य प्रतिरक्षा सेना' ने फिर अभियान शुरू किया। युन्नन्, क्वेड चाउ क्वान्तुन और क्वान् ती ने दूसरी बार अपनी स्वतन्त्रता घोषित की। युद्धपतियो ने उत्तर-दक्षिण का झगडा भी खडा कर दिया था। गणराज्य के नये राष्ट्रपति फेग कुओ-चाग ने दक्षिण को सतुष्ट करने के लिए तान येन्-काइ को हूनान का सैनिक-राज्यपाल नियुक्त किया, लेकिन अन्-हुई (तुआन) की गुट अब भी तलवार को म्यान में रखने के लिए तैयार नही थी। इस पर फेग ने चाग-याउ और दूसरे जेनरलो के अधीन एक बडी सेना हूनान-कयाग सी प्रदेश मे भेजी। तुआन ची-जुइ ने अपनी ओर से चाग चिग याउ को हूनान का सैनिक राज्यपाल नियुक्त किया। चाग की सेना उस समय चागशा के पास पडी हुई थी। युद्धपति जब स्वय डाकू थे, तो उनके सिपाहियो मे अनुशासन कैसे रह सकता था? सिपाहियो के बर्ताव से लोग तग आ गये थे। चाग ने हूनान के सभी प्रगतिशील तत्त्वो को दबा डालने की पूरी कोशिश की। माओ चे-तुग का चुप रहना मुश्किल था। उन्होने 'चाग को निकाल बाहर करो' का नारा दे उसके खिलाफ पहले से भी बडा अभियान सगठित किया—पहला अभियान उन्होने अपने कालेज के दुष्ट प्रिंसिपल चाग कान् के खिलाफ सगठित किया था। माओ चे-तुग का यह अभियान युद्धपतियो के विरुद्ध आन्दोलन का सूत्रपात था, जो हूनान से आरभ हुआ, किन्तु बढते-बढते अन्त मे सारे देश मे फैल गया।

5. सार्वजनिक जीवन में

हम देख चुके कि माओ चे-तुग के कार्यक्षेत्र ने परिस्थितियो से मजबूर होकर अब कालेज के सीमित क्षेत्र मे न रहकर विशाल रूप लिया। 23 वर्ष मे माओ चे-तुग अब इस योग्य भी हो चुके थे, कि वह विशाल क्षेत्र

मे अपने जौहर को दिखलाते।

(1) 'नूतन जनता संघ' (1971 ई.)–कालेज के विद्यार्थियों का दृढ़ संगठन करने के बाद माओ का प्रभाव बाहर के विद्यार्थी मंडल में पड़ने लगा और सलाह-मशविरा करने के लिए दूसरी जगह के विद्यार्थी भी उनके साथ पत्र-व्यवहार करने लगे। यह वस्तुतः छोटे रूप मे हमारे यहाँ के 'नौजवान सभाओं' की तरह की संस्था थी। पेकिंग युनिवर्सिटी के प्रोफेसर चेन् शु शिउ–जो वहाँ साहित्य विभाग के अध्यक्ष भी थे–के सम्पादकत्व में 'नौजवान' पत्र निकलता था, जिससे तरुणों के इस नये संगठन के अस्तित्व में आने मे प्रेरणा मिली थी। जिस तरह माओ चे-तुग ने चागशा में 'नूतन जनता संघ' स्थापित किया था, उसी तरह त्यिेन चिन् मे चाउ एन-लाइ और उसकी भावी पत्नी ताग यिंग चाउ ने भी 'नूतन जनता संघ' स्थापित किया था। प्रोफेसर चेन् समझते थे कि ऐसे सार्वजनिक संगठन और आन्दोलन के लिए जनता के समझ मे आनेवाली भाषा द्वारा प्रचार करना अधिक लाभदायक हो सकता है, इसलिए साहित्य के प्रकांड पंडित होते हुए भी उन्होंने भाषा की सुगम शैली अपनायी। चेन् की लेखक के तौर पर पहले ही से ख्याति थी। वह मार्क्सवाद मे विश्वास रखते थे। 1921 ई. मे चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना में भी उनका हाथ था। माओ चे-तुग को चेन की लेखन-शैली बहुत पसन्द आई, उन्होंने भी उसी को अपनाया। 1917 ई. की गर्मियो में चाग शा के सभी स्कूलों की दीवालों पर एक छपा हुआ छोटा-सा कागज चिपका देखा गया। उस पर स्पष्ट अक्षरों मे कुछ पंक्तियाँ लिखी हुई थी, जिनके आरम्भ में पुरानी साहित्यिक भाषा में लिखा हुआ था : 'ओरियोल* चहचहाती मित्रों की खोज में है।' उसमें लेखक ने देश की मुक्ति के लिए लोगों को आगे आकर लेखक और उसके साथियो के साथ मिलने का निमन्त्रण दिया था। यह नौजवानों के लिए एक खुला पत्र सा था। पत्र पर '28 लकीरों' के सिवा और कोई हस्ताक्षर नहीं था–चे-तुग के तीन चीनी सकेताक्षर 28 लकीरों से बनते है।

चागशा के अखबारों मे भी यह नोटिस छपी थी। उसे पढ़कर कई दर्जन तरुणो ने जवाब दिया, जिनमे से कुछ दूसरे कालेजों और अधिकांश माओ के अपने कालेज के विद्यार्थी थे।

शरद का मौसम आया। गर्मियों की छुट्टियाँ खत्म हो गई। विद्यार्थी अपने स्कूल कालेजों को लौटे। जाड़े के आने से पहले ही मापल की अगार की तरह लाल पत्तियाँ गिरने लगी थीं। युवेलू पहाड़ी की जड़ में चै हो शन के परिवार का भात का घर था। उसी में तीस के करीब आदमी एकत्रित हुए। मध्याह्न और सायंकाल के भोजन के बीच के समय मे उन्होंने एक संगठन की आवश्यकता, उसके नाम तथा नियमोपनियम पर विचार किया। इसी के परिणामस्वरूप माओ चे तुग ने शिनमिन सभा (नूतन जनता-संघ) की स्थापना की। माओ चे तुग संघ के संस्थापक और संगठनकर्ता थे। उन्हें ही मंत्री का पद संभालने के लिए भी कहा गया। लेकिन माओ उसे इन्कार करके सदस्य बने रहने के लिए राजी हुए। संघ का उद्देश्य था 'चरित्र निर्माण विद्वत्तापूर्ण अनुसन्धान'। संघ के नियमों में जुआ खेलना, वेश्यालयों में जाना और उठाईगीरी करना निषिद्ध था। इसी संघ ने चागशा के सभी प्रगतिशील तरुणों को पहले पहल एकताबद्ध करने का प्रयत्न किया।

यह संघ एक छोटी चिनगारी थी, किन्तु हूनान में निकली यह चिनगारी लेनिन के 'इस्क्रा' की तरह सारे चीन मे विशाल दावाग्नि लगाने में सफल हुई। आरंभ में इसके सत्तर-अस्सी सदस्य थे, जिनमे से करीब-करीब सभी आगे चलकर चीन के कम्युनिस्ट आन्दोलन मे प्रधान कार्यकर्ता बने, और चीनी क्रान्ति के इतिहास ने उनके नाम को अमर कर दिया। 1924-27 ई. की क्रान्ति के असफल होने पर कसाई चांग काई-शेक और उसके गीदड़ो के हाथों इनमे से कितने ही शहीद हुए।

(2) द्वितीय क्रांति के शहीद–कुओ नियाग–यह शियाग-यिन के निवासी तथा हूनान के कमकरो के नेता थे। कद मे छोटे लेकिन कार्य करने की अद्भुत क्षमता रखते थे। क्रान्ति के असफल होने पर चागशा मे उन्होंने वीरगति प्राप्त की।

शियाग सिग यू–यह शूप् (हूनान) की निवासिनी, तथा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की प्रथम और योग्यतम महिला थी। यह भाषण, लेखन और काम करने मे बड़ी चतुर और एक समान योग्यता रखती थीं। क्रान्ति के असफल

---

* एक पक्षी

हान पर 1 मई 1928 के 4 बजे शाम को वू हान में क्‌ओ मिन् ताग के कमाण्डरों ने उनको मार डाला।

चेन चाग—यह एक सुन्दर वादकर्त्ता अच्छे वक्ता और आन्दोलन करने की अद्भुत क्षमता रखनेवाले थे। कद में मध्यम दर्जे का यह सुन्दर तरुण शील स्वभाव में भी बड़ा ही सुन्दर तथा विचारों में प्रगतिशील था। क्रान्ति के असफल होने पर इसे गिरफ्तार करके मारने के लिए ले गये। उस वक्त अपने हत्यारों के सामने इसने निर्भयतापूर्वक एक जबर्दस्त भाषण देते हुए लोगों को हिम्मत के साथ संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए कहा।

लो ज्ये चान—यह श्याग तान के निवासी थे। चागशा में कमकरों के आन्दोलन में भाग ले क्रान्ति के असफल होने पर शहीद हुए।

चाउ हो शन—माओ चे तुग के इस अभिन्न मित्र के बारे में पहले बतला चुके हैं।

शिया शि—यी याग के निवासी थे। यह 1934 ई० के लालसेना के लम्बे कूच के समय नदी में डूब गये।

हो शु हग—निग शियाग के निवासी तथा शिन मिन संघ और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के आरम्भिक सदस्यों में सबसे अधिक उमर के थे। जब केन्द्रीय लालसेना ने लम्बे कूच के लिए क्याग सी से कूच आरम्भ शुरू की उस समय क्रान्ति विरोधियों के गिरफ्तार करने के प्रयत्न में बाधा देते हुए उन्होंने वीरगति प्राप्त की।

शिन मिन संघ द्वारा प्रभावित विद्यार्थियों और तरुणों ने चौथी मई और क्रान्ति के आन्दोलन में भारी काम किया था। इसी के सदस्य नव संस्कृति आन्दोलन के भी स्तम्भ थे। उन्होंने बुद्धिजीवियों में आन्दोलन का सफलतापूर्वक प्रचार किया। संघ ने अपनी स्थापना के बाद किसानों और कमकरों में बड़े उत्साह के साथ काम करना शुरू किया। कहा जा सकता है कि शिन मिन संघ से ही आगे हूनान में कम्युनिस्ट पार्टी संगठित हुई। इस संघ द्वारा आगे के देश के क्रान्तिकारी और राजनीतिक कामों में माओ चे तुग का कितना हाथ था यह आसानी से मालूम हो सकता है।

(३) **नव-संस्कृति आन्दोलन**—भारत की तरह चीन की भी संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी है और भारत की तरह ही वहाँ पर भी सहस्रों वर्ष तक उग्र रूप में बहुत क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं हुआ जिसके कारण सामन्तवाद की जड़ वहाँ बहुत गहरी और मजबूत थी। पुरानी संस्कृति की पताका उठाकर सामन्त और मिरासदार जनसाधारण शोषक किसानों को बरगलाने में अधिक सफल रहते थे। राजवंश बदलते रहे लेकिन सामन्तवाद जैसा का तैसा बना रहा और उसका शोषण तथा उत्पीड़न पहले से और भी भीषण होता गया। सामन्तों के इस स्वेच्छाचारी क्रूर शासन में पश्चिमी पूँजीवादी देशों ने दाल भात में मूसलचन्द की तरह दखल दिया। पुराने चीन ने विदेशियों से देश की प्रतिरक्षा के लिए हजारों मील लम्बी महादीवार बनाई थी लेकिन पश्चिमी पूँजीवादियों को इस दीवार को बेकार करने के लिए कोई परिश्रम नहीं करना पड़ा क्योंकि वह तुपक से समुद्र के रास्ते चीन के विशाल तट पर पहुँच गये। यदि चीन ने बाधा डाली तो उनके जहाजों की तोपों ने विरोध को विफल कर बन्दरगाहों के फाटक अपने लिए खोल लिये। अब चीन में उन विदेशियों का बोलबाला था। उनके व्यवसायी जगह जगह अपनी कोठियाँ कायम करके खूब नफा कमा रहे थे उनके ईसाई मिशनरी धर्म के नाम पर चीनी तरुणों को पश्चिमी साम्राज्यवादियों के पक्ष में करके उनका काम कर रहे थे इसलिए यदि वह मिशनरियों के ऊपर लाखों करोड़ खर्च कर रहे थे तो इसमें आश्चर्य क्या? विदेशी अब यहाँ तक ढीठ हो गये कि अपनी भूमि में चीनियों और कुत्तों को एक समान बना उन्होंने खास खास जगहों में उनका जाना निषिद्ध कर दिया था। चारों ओर उत्पीड़न शोषण और अपमान का बोलबाला था। विदेशियों की यह हेकड़ी चीनी तरुणों के सहन के मान की नहीं थी। मंचू शासन विदेशियों के सामने पूँछ हिलाता अपनों के सामने शेर बन जाता इसलिए उसके प्रति चीन के तरुणों के हृदय में अपार घृणा होना स्वाभाविक था और इसी का परिणाम 1911 ई० क्रान्ति द्वारा मंचू वंश का खत्म होना था। क्रान्ति को छह सात साल हो गये थे और अब भी वही रफ्तार बेढंगी थी। विदेशी पूँजीपतियों के दास उस भ्रष्ट स्वेच्छाचारी चीनी सामंतवाद के ऊपर चारों ओर से प्रहार करने की आवश्यकता थी जो कि कभी सुधार कभी आधुनिकता और कभी वैधानिक राजतन्त्र आदि का आन्दोलन खड़ा कर लोगों की आँखों में धूल झोंकना चाहता था।

माओ चे-तुंग अपने देश के कान् यू-वेड, लियांग ची-चाउ, तान् सू-तुंग जैसे सुधारवादियो के विचारों से प्रभावित हुए थे। तान् सू-तुंग ने 'यान् शुये' (लोक-प्रेम-कला) के नाम से एक पुस्तक लिखी थी जिसमें उसने उदारवाद, जनतात्रिक सुधारवाद और स्वप्नचारी (उटोपियन) समाजवाद को मिलाकर एक विचित्र चूँचूँ का मुरब्बा तैयार किया था। 1911 ई. की क्रान्ति से वह क्रान्तिकारी जनतंत्रता पर विश्वास रखने लगा। चतुर्थ मई-आन्दोलन के आरंभ होने पर, तथा "1914 ई. मे प्रथम साम्राज्यवादी युद्ध के आरभ हो जाने तथा भूतल के एक-छठे हिस्से पर 1917 ई. की रूसी अक्तूबर क्रान्ति द्वारा एक समाजवादी राज्य स्थापित हो जाने के बाद" इस तरह की जनतंत्रता में और भी परिवर्तन हुआ, जो असाधारण था। माओ चे-तुंग ने पीछे 'चिये फाग' (मुक्ति) पत्र मे 'चतुर्थ मई-आन्दोलन' के बारे मे लेख येनान मे लिखकर बतलाया था कि इस परिवर्तन द्वारा "चीन की साम्राज्यवादी विरोधी, सामतवाद-विरोधी बूर्ज्वा-जनतात्रिक क्रान्ति बढकर एक नई मजिल पर पहुँची।" माओ ने आगे इस जनतत्रता को 'नवीन जनतत्रता' का नाम दिया। उक्त लेख मे माओ ने लिखा था :

"बीस साल पहले चतुर्थ मई-आन्दोलन ने बतलाया कि चीन की साम्राज्यवाद-विरोधी और सामन्तवाद-विरोधी बूर्ज्वा जनतात्रिक क्रान्ति बढकर एक नई मजिल पर पहुँची है। चतुर्थ मई-आन्दोलन बन गया। यह केवल चीन के साम्राज्यवाद-विरोधी बूर्ज्वा-जनतात्रिक क्रान्ति का सिर्फ एक पहलू था। उस समय की नवीन सामाजिक शक्तियों की वृद्धि और विकास के कारण पहले ही से मजबूत एक पक्ष चीन के साम्राज्यवाद-विरोधी और सामन्तवाद-विरोधी बूर्ज्वा जनतात्रिक क्रान्ति मे तैयार हुआ। इस पक्ष मे चीन का मजूर वर्ग, उसके विद्यार्थी-समूह, और उसकी नवोदित राष्ट्रीय बूर्ज्वाजी शामिल थी। चतुर्थ मई-आन्दोलन के काल में आन्दोलन के मुखिया बनकर लाखो विद्यार्थी बहादुरी के साथ खड़े हुए। यह बतलाता है कि चतुर्थ मई-आन्दोलन 1911 ई. की क्रान्ति मे एक कदम आगे था।

नई जनतत्रता के काम मे माओ चे-तुग हाथ बँटाते अपने कालेज में नवसस्कृति-नव-जनतत्रता आदोलन के यह अगुआ बन गए। 'नौजवान' की विचारधारा का समर्थन और प्रचार करते हुए देश मे नव-सस्कृति के लिए काम करनेवाले कर्मिया के साथ भी उन्होंने सम्बन्ध स्थापित किया, और इस प्रकार हूनान तक ही अपने को उन्होंने सीमित नहीं रखा।

1918 ई मे माओ चे तुग अपने कालेज की पढाई समाप्त कर उसके ग्रेजुएट हो गये। अब उनके सामने विस्तृत क्षेत्र मे प्रवेश करने का समय आया।

6
विस्तृत क्षेत्र (1918-20 ई.)

1. घर से बाहर

चागशा मे रहते हुए 'नौजवान' पत्रिका तथा नव सस्कृति के दूसरे प्रचारको के साथ माओ चे-तुग का सम्बन्ध हो चुका था। विश्वयुद्ध अब समाप्ति पर आ रहा था। इस वक्त दूसरे कामो मे योग देने की आवश्यकता माओ को मालूम हुई।

(1) **स्वावलम्बी विद्यार्थी**—कालेज की पढाई सफलतापूर्वक समाप्त करने के बाद माओ चे-तुंग ने उत्तरी चीन के नव-सस्कृतिवाले कर्मियो के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए चागशा से पेकिंग के लिए प्रस्थान किया। इसी समय फ्रास मे जा 'स्वावलम्बी हो पढने के' प्रोग्राम के सम्बन्ध मे कुछ छपी सूचनाएँ हूनान में आईं। हूनान और दूसरे प्रदेशों के भी उन विद्यार्थियो के लिए वह सुवर्ण सयोग था, जो पढ़ाई में और आगे बढने मे धन के अभाव के कारण असमर्थ थे। तरुणो के लिए बिना पैसा-कौडी यूरोप में जाकर पढ़ने का

अवसर बहुत आकर्षक था। इसके लिए माओ चे-तुंग, चाइ हो-शेन और दूसरों ने हूनान में तरुणों को तैयार करना शुरू किया। लेकिन फ्रांस जाने से पहले उन्होंने विद्यार्थियों के लिए यह भी जरूरी समझा कि वह पाउ-तिंग या पेकिंग में जाकर फ्रेंच भाग का थोड़ा-सा ज्ञान प्राप्त कर ले, फिर वह 'चौथे क्लास के कैबिन में' फ्रेंच जहाज पर फ्रांस के लिए रवाना हो। महायुद्ध के कारण फ्रांस के ग्राम-नगरों को बड़ी क्षति हुई थी, और वहाँ पर्याप्त संख्या में तथा सस्ते मजदूर मिल नहीं सकते थे, इसलिए एशियाई देशों से मजूरों को मँगाया जा रहा था। चीनी मजूर भी जा रहे थे। चीनी विद्यार्थियों को भी 'कमाओ और पढ़ो' की बात अच्छी मालूम हुई। ऐसा ही एक जमात के साथ चीन के वर्तमान प्रधानमन्त्री चाउ एन-लाई भी फ्रांस गये। माओ चे-तुग को विदेश जाकर पढ़ने का खयाल नहीं था, वह देश में रहकर ही पढ़ना-गुनना चाहते थे। इसी समय 1 लाख 40 हजार चीनी मजूर लाखो भारतीय मजूरो की तरह लड़ाई के बन्द होने से पहले ही फ्रास जाने लगे। उन्होंने टूटी-फूटी जगहों को ठीक करने के अतिरिक्त कारखानो में भी काम किया और पीछे फ्रेंच मजदूरों के सम्पर्क में आकर हड़तालों मे भी भाग लिया।

माओ चे-तुग का अध्ययन प्राचीन और अर्वाचीन दोनो शैली से और सभी विषयो में बहुत गम्भीर था। अपने अखड अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के रहते चीनी सस्कृति के प्रति भी उनकी बडी आस्था थी। 14 मई, 1945 को सातवीं पार्टी काग्रेस मे व्याख्यान देते हुए साथी ल्यू शाओ ची ने एशिया के इस महान् नेता के बारे मे कहा था : "वह हमारी महान् जाति की सभी सर्वश्रेष्ठ परम्पराओ के श्रेष्ट प्रतिनिधि है। वह सृजनकर्ता और प्रतिभाशाली मार्क्सवादी हैं, जिनमे सार्वभौम मानव-जाति की सर्वश्रेष्ठ विचारधारा मार्क्सवाद के विश्वजनीन सत्य तथा चीनी-क्रान्ति के साकार व्यवहारात्मक ज्ञान का सुन्दर सम्मिश्रण है। उन्होन हमारी बुद्धिवादी विचारधारा को अनुपम उत्कर्ष पर पहुँचाया, और पूर्ण मुक्ति के एकमात्र निर्भ्रान्त और स्पप्ट पथ—माओ चे-तुंग के पथ—को विपदा में पड़ी चीनी जाति और लोगों को दिखलाया।" माओ चे-तुंग ने चीनी जाति की हजारों वर्ष पुरानी सांस्कृतिक परम्पराओ को विवेक के साथ स्वीकार किया। एमी स्याउ के शब्दो में "वह हमारी सुन्दर संस्कृति के अत्यन्त पूर्ण प्रतीक हैं, जो सस्कृति उनकी विचारधारा मे अपने श्रेष्ठ विकास और अविच्छिन्न रूपेण प्राप्त हुई।"

माओ ने अपनी पुस्तक 'सम्मिलित सरकार' मे मार्क्सवाद, ऐतिहासिक, भौतिकवाद और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के बारे मे लिखा है कि "मार्क्सवाद सारी दुनिया मे सर्वहारा की अत्यन्त परिशुद्ध, अत्यन्त क्रान्तिकारी तथा वैज्ञानिक विचारधारा है।" अपनी इस विशेषता के कारण जहाँ हरेक परिस्थिति में वह अपने चीनी राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए स्पष्ट मार्ग निकालते रहे, वहाँ चीनी सस्कृति का कौन-सा पहलू हेय और कौन-सा उपादेय है, इसका विवेक करते वह अपनी जाति की पुरानी देनों को स्वीकार करते हुए भी चीन के बहुजातिक राष्ट्र मे भेदों के बीच गहरी एकता स्थापन करने मे सफल हुए। मार्क्सवाद की सहायता से उन्होंने चीनी राष्ट्रीय सस्कृति का विवेचन, विश्लेषण और उत्कर्षापादन करते हुए उसे वैज्ञानिक रूप दिया। यदि चीनी राष्ट्रीय संस्कृति का इतना गम्भीर अवगाहन, चीनी समाज के समृद्ध ज्ञान और जातीय संघर्ष के अनुभवों का इतना गम्भीर ज्ञान उन्हे न होता; तो सचमुच ही मार्क्सवाद को व्यवहार मे लाकर चीन के सर्वहारा को मुक्त करते अपने राष्ट्र को उस ऊँचे स्थान पर पहुँचाना, उनके लिए असभव नहीं तो मुश्किल जरूर होता, जहाँ पर कि आज वह देखा जा रहा है; मार्क्सवाद 'बाहर से जातीय और तत्वतः समाजवाद के' अपनाने की जो बात कहता है, उसको व्यवहार में लाना सचमुच ही बहुत कठिन है। लेनिन और स्तालिन की तरह के अद्भुत प्रतिभाशाली व्यक्ति ही ऐसा कर सकते है। चीन के सम्बन्ध मे माओ ने उसी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दे मार्क्स-एगेल्स, लेनिन-स्तालिन की पक्ति मे अमर स्थान प्राप्त किया। इसी कारण मार्क्सवाद चीन के लिए पराया नहीं रह गया, और वहाँ उसकी जड़ पाताल तक जम गई। उन्होंने चीनी जीवन को मार्क्सवाद की देन से एक पूर्ण शरीर प्रदान किया। यदि उन्होंने कन्फूजू, बौद्ध तथा दूसरे महान् साहित्यकारों, दार्शनिको, कलाकारों की कृतियों का बहुत समय तक और अन्तस्तल तक पहुँचकर अवगाहन किया, तो आगे चलकर इसी ने उन्हें चीनी राष्ट्र के लिए मार्क्सवाद के पथ को प्रशस्त में काम करने में बड़ी सहायता की। निश्चय ही ऐसे पुरुष के लिए

अपने देश की उस समय की परिस्थिति में काम करने से वंचित रहते विदेश में जाकर शिक्षा प्राप्त करने में बहुत फायदा न होता; यह वह जानते थे, इसीलिए यद्यपि वह अपने साथियों को फ्रांस में जाकर अपनी दृष्टि [illegible] शिक्षा को अधिक व्यापक बनाने की प्रेरणा देते रहे, पर स्वयं वहाँ नहीं जाना चाहते थे। [illegible] लिखते हैं : "आज सारे चीन में कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर या बाहर चीन को जो सबसे अच्छी तरह समझता है, वह पुरुष माओ चे-तुंग है। साथ ही वह दूसरे देशों की स्थितियों से अत्यन्त सुपरिचित हैं। बहुत-से विदेशी उनसे बातचीत करने के बाद यह जानकर चकित हुए कि दूसरे देशों के बारे में माओ का ज्ञान इतना अधिक है। (विदेशी अतिथियों से वह उनके देश के भिन्न-भिन्न पहलुओं के बारे में सवाल पूछा करते हैं। उनसे जो सवाल पूछे जाते हैं माओ के प्रश्नों की संख्या अक्सर उनकी अपेक्षा अधिक होती है।) उनका 'चीनी शिक्षण' और 'पश्चिमी शिक्षण' बड़ा ही सुन्दर और बहुत ही व्यापक तथा आगे बढ़ा हुआ है। यह बिलकुल स्वाभाविक है क्योंकि यह उनके बालकपन से लेकर एक लम्बे अर्से तक कठिन परिश्रम और लगातार स्वाध्याय का परिणाम है।

(2) पेकिंग में प्रथम—(1919 ई.)—फ्रांस के लिए जाने की इच्छा रखनेवाले विद्यार्थियों में से कुछ चांगशा से रवाना होने से पहले फ्रेंच भाषा सीखने के ख्याल से पेकिंग गये। माओ ने उन्हें प्रोत्साहित ही नहीं किया बल्कि उनके साथ वह भी पेकिंग पहुँचे। चीन की प्राचीन और अर्वाचीन राजधानी को दक्षिणी चीन में पैदा हुए माओ ने पहली बार देखा। उनके पुराने अध्यापक याङ चेन्-ची अब पेकिंग में अध्यापक हो गये थे। प्रोफेसर याङ अपने पूर्व विद्यार्थी से बहुत स्नेह रखते थे। माओ को अब इस विशाल नगरी में पहुँचकर सबसे पहले खाने-रहने का प्रबन्ध करना था, जिसमें याङ ने बड़ी सहायता की। अपने विद्यार्थी की योग्यता से वह भली भाँति परिचित थे। उन्होंने युनिवर्सिटी पुस्तकालय के अध्यक्ष ली ता-चाओ से उनका परिचय करा दिया। ली ता-चाओ पीछे कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापकों में हुए। उन्होंने आठ चीनी डालर मासिक पर माओ को अपने सहायक का काम दे दिया। यह सहायक का काम इतना छोटा समझा जाता था कि माओ के शब्दों में "मेरा यह काम इतना नीचा समझा जाता था कि लोग मुझसे मिलने से परहेज करते थे। मेरे अनेक कामों में एक काम यह भी था कि लाइब्रेरी में जो लोग अखबार पढ़ने आयें, उनके नामों को नोट कर लिया करूँ। इन आनेवालों में अधिकांश की नजर में मैं मनुष्य भी नहीं था। इनमें कुछ तो पुनर्जागरण आन्दोलन के नेता थे। मैंने उनके साथ राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयों पर बात करने का निश्चय किया, किन्तु वह लोग इतने कार्य-व्यस्त थे कि दक्षिणी बोली बोलनेवाले एक सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष से बात करने के लिए उनके पास समय नहीं था।" चाहे माओ अभी पचीस वर्ष के तरुण थे, लेकिन वह ज्ञानवृद्ध थे, इसे हम जानते हैं। लेकिन मध्यम वर्ग के भीतर से खोखले और ऊपर से तड़क-भड़क रखनेवाले बुद्धिजीवी कब आदमी को परख कर सकते हैं? वह तो स्वयं लिफाफिया होते हैं और दूसरों के लिफाफियापन को ही पसन्द करते हैं।

अपने आठ डालर मासिक में माओ को खाने-रहने का प्रबन्ध करना था, लेकिन माओ को तितिक्षा और तपस्या के जीवन का काफी अनुभव था। वह परिस्थितियों के अनुसार अपनी जीवन-यात्रा चला सकते थे। चांगशा से पेकिंग जाते समय भी कुछ पैसों का प्रबन्ध उन्हें उधार लेकर करना पड़ा था। उनको इस बात की प्रसन्नता थी कि उनके मुखिया ली ता-चाओ एक प्रसिद्ध और प्रगतिशील विद्वान् हैं, जिन्होंने पहले-पहल चीन में रूसी क्रान्ति और मार्क्सवाद का प्रचार और प्रवेश कराया। ली ता-चाओ के विचार और व्यवहार की मधुरता से माओ बहुत प्रभावित हुए। ली को पीछे (1927 ई. में) युद्धपति चाङ त्सो-लिन् ने उनके विचारों के कारण पेकिंग में मरवा डाला। उस समय अभी वह 40 वर्ष के भी नहीं हो पाये थे। पेकिंग विश्वविद्यालय में पहुँचकर माओ यदि स्वाध्याय में डूब जायें, तो इसमें आश्चर्य क्या?

यहीं पर अपने पुराने अध्यापक याङ ह्वइ-चङ की पुत्री याङ कइ-हुइ के साथ माओ का प्रेम हो गया। लड़की बहुत सुशिक्षिता तथा क्रान्तिकारी विचारों की थी। उसने अपने पिता से माओ की प्रशंसा काफी सुन रक्खी थी, दोनों काफी वर्षों से एक दूसरे को जानते थे। 1920 ई. में माओ ने इस तरुणी के साथ ब्याह कर लिया। माओ का यह विवाह साधारण अर्थों में स्त्री-पुरुषों के प्रेम का विवाह नहीं था, बल्कि याङ कई-हुइ

के रूप में माओ ने एक अत्यन्त दृढ़ सहकारी प्राप्त किया था। अपने काम के सिलसिले में दोनों को कितनी ही बार अलग-अलग क्षेत्रों में जाना पड़ता था। 1927 ई. में क्रान्ति-विरोधी सफलता प्राप्त कर माओ तथा दूसरे कम्युनिस्टों की जान के ग्राहक बन गये, और 1930 ई. में माओ की पत्नी और बहन चांग काई-शेक के पिट्ठू हूनान के एक जमींदार के हाथ में पड़ गईं। माओ उस वक्त क्रांतिकारी सेना को चिंग-कांग-शान् की ओर ले जा रहे थे और उनकी पत्नी हूनान में रह गईं। क्रान्ति-विरोधियों ने घोर साँसत देकर यांग कइ-हुइ को मजबूर करना चाहा. कि वह माओ चे-तुंग को छोड़ दे, लेकिन कइ-हुइ ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया, और दस साल के आदर्श वैवाहिक जीवन के बाद वह अपनी ननद के साथ शहीद हो गई। माओ अपने सर्वस्व को चीनी सर्वहारा के उद्धार के लिए दे चुके थे, उनके लिए कोई भी बलि अदेय नहीं थी।

पेकिंग में रहते समय अपनी पुरानी आदत के अनुसार वह फिर स्वाध्याय में लीन हो गये। प्रोफेसर यांग तथा हूनान कालेज के साथियों ने पेकिंग के कुछ प्रसिद्ध विद्वानों और भद्र पुरुषों से माओ का परिचय करा दिया, और उन्होंने उनके सत्संग से लाभ उठाने से कभी भी अपने को वंचित नहीं रक्खा। लम्बी नाकवाले नव-संस्कृति आन्दोलन के नेताओं की उपेक्षा से माओ केवल मुस्करा दिया करते और अपने रास्ते चले जाते। इसी समय माओ को अराजकतावाद-सम्बन्धी कुछ पुस्तिकाएँ मिलीं। कुछ समय तक इसी नकली समाजवाद ने माओ को भी कितने ही दूसरे चीनी तरुणों की तरह अपने प्रभाव में रक्खा। लेकिन मार्क्सवाद का ज्ञान होने पर जल्दी ही उन्होंने उसे तिलांजलि दे दी। पेकिंग यूनिवर्सिटी में दर्शन और पत्रकारिता के भी अध्ययन का प्रबन्ध था. माओ भी उनके अध्ययन के लिए कक्षाओं में शामिल होते। वह विशाल नगरी के सान्-येन्-चिंग मोहल्ले में एक छोटी कोठरी में सात और आदमियों के साथ रहते। आठों के इकट्ठा हो जाने पर कोठरी की हवा उनके साँस लेने के लिए पर्याप्त न होती; लेकिन माओ को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी। पेकिंग का वसन्त उनको बहुत प्रिय था। उस समय उनका कवि हृदय इस गन्दी कोठरी को भूलकर वसन्त की सुषमा लूटने में लीन रहता।

(3) शांघाइ में प्रथम बार (1919 ई.)—पेकिंग में कितने ही समय तक रहने के बाद फ्रांस में पढ़ने के लिए जानेवाले विद्यार्थियों के साथ-साथ माओ चे तुंग भी शांघाइ के लिए रवाना हुए। लेकिन उनके पास सिर्फ यान्-चिन् तक के टिकट के लिए ही पैसा था। एक मित्र ने दस डालर उधार दिये, और अन्त में वह पुको तक पहुँच सके। सीधे जाने की जगह उन्होंने रास्ते के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों को देख लेना जरूरी समझा। वह चीन के पवित्र पर्वत थाई-शान पर गये। कन्फ्यूज़, येन् युवान और मेनसियस जैसे चीन के महान् विचारकों के जन्म-स्थानों और समाधियों के उन्होंने दर्शन किये। पुको पहुँचने पर उनके पास तांबे के केवल दो पैसे रह गये। जूते फट गये थे, पैदल चलना एक भारी समस्या थी। इसी समय हूनान का एक पुराना मित्र सहायता के लिए निकल आया। वह उसकी मदद से एक जोड़ा जूता और शांघाइ तक पहुँचने की यात्रा का प्रबन्ध कर सके। शांघाइ में पहुँचकर उनके विद्यार्थी मित्रों ने हूनान पहुँचने-भर का खर्चा अपने चन्दे से प्राप्त पैसों में से दे दिया। ताई शान् चीन का एक पवित्र पर्वत ही नहीं, बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक स्मृतियों के लिए भी प्रसिद्ध पर्वत है। जेनरल फेंग यू-श्याग ने वहीं पर रहकर कितने ही देशभक्तिपूर्ण लेख लिखे थे। इस यात्रा में पेइ-हाइ तक माओ को बर्फ के ऊपर चलना पड़ा था। थुंग-थिंग सरोवर की उन्होंने प्रदक्षिणा की। वह पाउ-तिंग-फू और शूचाउ गये, नानकिंग शहर भी देखा। ये प्राचीन सांस्कृतिक स्थान पुराने ग्रंथों के अध्ययन के समय माओ के मानस-नेत्रों के सामने अनेक बार अंकित होते रहते थे, अब उन्होंने उनको साकार अपनी आँखों के सामने बड़े प्रेम के साथ देखा।

2. क्रान्तिकारी सरगर्मी

शांघाइ की पहली यात्रा में माओ इस आधुनिक महान् नगर को बाहर ही से देख सके। अभी उन्हें इन नगरों के सर्वहारों तथा क्रान्तिकारी धाराओं से परिचय प्राप्त करने का मौका नहीं मिला। वहाँ से वह अपने जन्म-प्रदेश हूनान को चले गये।

(1) 'चतुर्थ मई आन्दोलन' (1919 ई.)–युवान शि-काइ ने पश्चिमी साम्राज्यवादियों की कृपा तथा चीन की बूर्ज्वाजी की मदद से राष्ट्रपति का पद प्राप्त किया था। पश्चिमी साम्राज्यवादियो ने युवान को और भी मुट्ठी मे करने के लिए 1913 ई. मे ढाई करोड पौण्ड कर्ज दिया और जिसके सूद मे चीन के कर और कस्टम (आयात) शुल्क को अपने प्रबन्ध मे कर लिया था। कर्ज की सुरक्षा के लिए उन्होने युवान को मजबूर किया कि सरकारी हिसाब-किताब का देखनेवाला कोई यूरोपियन हो। राजनीतिक सलाहकार के तौर पर चीन सरकार एक अंग्रेज को रखने के लिए भी मजबूर हुई और डाक-तार तथा सैनिक सलाहकार एक फ्रेंच बनाया गया। आधुनिक ढग के उद्योग-धन्धो का बहुत अधिक भाग अब पश्चिमी पूँजीपतियो के हाथो मे चला गया। इस प्रकार चीन को हाथ-पैर बाँधकर पश्चिमी पूँजीवाद के सामने पटक दिया गया। हम देख चुके हैं, किस तरह युवान शि-काइ ने अपन को आजीवन राष्ट्रपति होने से ही सतुष्ट न रह अपना राजवश चलाने की कोशिश की। ससद को उसन ताड दिया और चीन के अठारहो प्रदेशो म अपने क्षत्रप (तू-चुन) नियुक्त किये। इस अवस्था स फायदा उठाकर पश्चिमी साम्राज्यवादियो और उनके साथी जापान ने चीन राष्ट्र के शरीर को नोचना शुरू किया। अग्रेजो न तिब्बत और बर्मा के भीतर पैर पसारने की कोशिश की। जापान ने दक्षिणी मचूरिया की रेलो म सतोष न करक जर्मनी के हाथ के बन्दरगाह शान्-तुग पर महायुद्ध के समय हाथ साफ किया और 1915 ई म चीन की बेबसी स फायदा उठा चीन के सामने अपनी 21 माँगे रक्खी थी।*

"इस काल म असम सधियो मे जापान की 'इक्कीस माँगे' सबसे अधिक घातक और घृणित थी। इनसे ता यह पता चलता है कि चीन के प्रति जापान की आक्रामक साम्राज्यवादी नीति एक कदम और आगे बढी है, यानी जापान की 'चीन के विभाजन की नीति' अब 'चीन पर अपने एकाधिकार करने की नीति' के रूप मे बदल गई। इन माँगो की मूल्य बाते यो हैं

प्रथम वर्ग (शान तुग सम्बन्धी माँगें)–प्रथम वर्ग मे चार धाराएँ थी। इनके अनुसार पइ-चिग (पेकिंग) सरकार शान्तुग प्राप्त स्थित जर्मनी के सभी विशेष अधिकार जापान को दे दे। ये विशेष अधिकार थे–चिआव् चउ-वान् तथा चिआव्-चउ चि-निग रेलवे सम्बन्धी अधिकार तथा रेल के किनारे-किनारे खान खोदने का अधिकार। शान्तुग प्रान्त तथा उसके समुद्री तट के जितने भूभाग तथा द्वीप हैं, 'किसी दूसरी शक्ति को न तो सौपे जाये और न पट्टे पर दिये जायँ।' यह भी माँग की कि जापान को यन्-थाइ या लुग-ख्राउ से चिआव-चउ-चि-निग तक रेल लाइन बिछाने का अधिकार हो और शानतुग के सभी प्रसिद्ध नगर व्यापारिक बदरगाह की तरह खोल दिये जायँ। सक्षेप म जापान की यह माँग रही कि सम्पूर्ण शान्तुग प्रान्त जापान 'प्रभावक्षेत्र' माना जाय।

दूसरा वर्ग {तीन पूर्वी प्रान्तों (मचूरिया) के दक्षिणी भाग और भीतरी-मगोलिया के पूर्वी भाग सम्बन्धी माँगें}–दूसरे भाग मे सात धाराएँ थी, जिनकी मुख्य बाते यो थी–लु शुन् (पोर्ट आर्थर) और ता-लिएन् (डाइरेन्) के पट्टे तथा दक्षिणी मचूरिया और आन्-तुग-फग-थिएन्–इन दोनो रेलो-सम्बन्धी पट्टे की अवधि 99 वर्ष और बढा दी जाय। 'दक्षिणी मचूरिया' और 'पूर्वी मगोलिया' मे जापानी नागरिको को जमीन रखने या पट्टे पर लेने, बसने, यात्रा करने और वाणिज्य व्यापार चलाने का अधिकार हो, तथा इन दानो क्षेत्रो म जापानी लोग राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक परामर्शदाता तथा शिक्षक के रूप मे नियुक्त किये जाये। चि-लिन् (किरिन्)–छाग-छुन् रेलवे की व्यवस्था तथा नियत्रण का अधिकार जापान को रहे और दोनो क्षेत्रो (दक्षिणी मचूरिया और पूर्वी मगोलिया) मे किसी दूसरी शक्ति को रेल बिछाने या आर्थिक पूँजी लगाने की आज्ञा न मिले। सक्षेप मे जापान ने चाहा कि तीन पूर्वी प्रान्तो (मचूरिया) का दक्षिणी भाग और भीतरी मगोलिया का पूर्वी भाग उसका 'प्रभाव क्षेत्र' मान लिया जाय।

तीसरा वर्ग ('हान् ये फिग' कम्पनी सम्बन्धी माँगें)–तीसरे वर्ग मे दो धाराएँ थी। इनके द्वारा माँग की गई थी कि हान्-ये कपनी को चीन और जापान सयुक्त रूप से चलाएँ और हान्-ये-फिग कपनी के अधिकार मे जो खाने हैं, उनके अडोस-पड़ोस की सभी खानो का एकमात्र अधिकार जापान को हो।

चौथा और पाँचवाँ वर्ग (सम्पूर्ण चीन से सम्बन्ध रखनेवाली माँगें)–चौथे वर्ग मे एक धारा थी, जिसके द्वारा

---

* "चीन का भाग ।

माँग की गई थी कि चीन अपने समुद्र के बन्दरगाह, खाड़ी और द्वीप किसी दूसरे देश को न दे। पाँचवें वर्ग में सात धाराएँ थीं, जिनके द्वारा यह माँग की गई थी कि चीन जापान के लोगों को अपने यहाँ राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक परामर्शदाता के रूप में नियुक्त करे, चीन के भीतरी भाग में जापान के लोगों को जमीन रखने का अधिकार हो, चीन के पुलिस-विभाग का नियन्त्रण चीन और जापान द्वारा संयुक्त रूप से किया जाय, जापान को चीन के लिए अस्त्र-शस्त्र की पूर्ति करने का अधिकार मिले तथा चीन के अस्त्रागार की व्यवस्था चीन और जापान मिलकर करें, जापान को वू-छांग से हांक-चउ तक और नान् छांग चउ तक रेल बिछाने का अधिकार हो, सम्पूर्ण फू-चियेन् प्रान्त को जापान का 'प्रभाव क्षेत्र' करार दिया जाय और जापान के लोगों को चीन में धर्म-प्रचार का अधिकार रहे। संक्षेप में जापान ने सम्पूर्ण चीन पर अपना एकाधिकार स्थापित कर उसे अपने आश्रित या अधीनस्थ राज्य के रूप में रखना चाहा।

जापान द्वारा 'इक्कीस माँगों' के पेश किए जाने पर चीनी जनता क्रोध से जल-भुन उठी और सारा संसार चकित हो गया।

जब रूस में बोल्शेविक क्रान्ति हो गई, तो बोल्शेविकों को रोकने के बहाने 1917-18 ई. के बीच जापान ने सारे मंचूरिया को अपने हाथ में कर लिया। चीनी सरकार को उसने जबर्दस्ती कर्ज लादकर चीनी सेना की शिक्षा का काम भी अपने हाथों में ले लिया।

इसी समय युवान शि-काइ मर गया। उसके मरते ही चीन में अराजकता ने और घोर रूप धारण किया। ली ने युवान के स्थान पर राष्ट्रपति का स्थान लिया था। उसे पदच्युत करके 1918 ई. मे तीन जापानियों ने पेकिग मे आकर सत्ता अपने हाथ मे ले ली। ली ने भागकर कान्तन में जा दूसरी सरकार स्थापित की। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जब शत्रुओं के साथ सन्धि करने के लिए वरसाई शान्ति-परिषद् बैठी, उस समय पेकिंग और कान्तन दोनों सरकारो ने अपने-अपने प्रतिनिधि भेजे थे। जापान ने पहले ही से अपने हाथ में किये शांतुंग को माँगा और पश्चिमी साम्राज्यवादियों ने 'परमुडे फलाहार' करने में कोई आनाकानी नहीं की। चीनी प्रतिनिधियों के विरोध करने पर भी वरसाई शान्ति परिषद् ने शानुतुग को जापान के हाथ में दे दिया। यह खबर जब चीन पहुँची, तो प्रथम महायुद्ध मे मित्रशक्तियों का मित्र रहने का यह परिणाम देख चीन की जनता मे अपार क्षोभ पैदा हो गया।

विद्यार्थियो और बुद्धिजीवियो मे राजनीतिक चेतना लाने में पेकिंग से निकलेवाली पत्रिका 'नौजवान' ने जबर्दस्त काम किया। माओ चे-तुंग हूनान में उसके जबर्दस्त समर्थक थे। वह अपने साथी विद्यार्थियों से उसके बारे में कहा करते थे : "नौजवान के दो सिद्धान्त हैं : एक कू-वेन् (पुरानी भाषाशैली) का विरोध करना, और पेइ-हुआ (लोक-भाषाशैली) का समर्थन करना। दूसरा सिद्धान्त है, पुरानी आचार-शिक्षा का विरोध करना। ... नौजवान विज्ञान और जनतत्रता का समर्थक है। इसीलिए यह पत्रिका सांस्कृतिक एव राजनीतिक भी है।" अब उसे तथा चीन के तरुणो को आग मे घी डालने का समय आ गया था।

राष्ट्र का यह भीषण क्षोभ 4 मई, 1919 को एक विशाल राष्ट्रीय प्रदर्शन के रूप में परिणत हो गया। उस दिन पेकिंग के स्कूल-कालेज विद्यार्थियो से सूने हो गये। सबेरे से ही विद्यार्थी मोहल्ले-मोहल्ले जमा होने लगे। उनका नेतृत्व अध्यापक चेन् श्यू-तू कर रहे थे। दिन चढ़ा। 15 हजार विद्यार्थी सरकारी कार्यालयों की तरफ गये और उन्होंने वहाँ घेरा डाल दिया। सशस्त्र घुड़सवार उनके ऊपर छोड़े गये, जिन्होंने आकर उनका रास्ता रोक लिया, लेकिन विद्यार्थियो के एक भाग ने उनकी पाँती तोड़कर राजभवन में प्रवेश करने में सफलता पाई। तीनों जापानी सर्वेसर्वा उस वक्त वहाँ मौज से बैठे हुए थे। इसी समय घनगर्जन जैसा नारा उठा : "जापानी पिट्ठुओं को विदा करो !" "देश बेचनेवाले मन्त्री हमें नहीं चाहिए !"

विद्यार्थी राजभवन से जब लौटने लगे, उसी समय धर-पकड़ शुरू हो गई। विद्यार्थी लौट पडे और उन्होंने फिर नारा लगाना शुरू किया : "हमारे साथियों को लौटाओ !" और उन्होंने अपने साथियों को मुक्त कराकर ही छोड़ा। मुक्त हुए विद्यार्थियों को लिए विशाल जलूस जब पेकिंग के दरवाजे के बाहरवाले विशाल मैदान मे पहुँचा, उस समय शाम के 4 बज रहे थे। विद्यार्थियो की आवाज घर-घर पहुँच चुकी थी, पेकिग की दूकानें

बन्द होने लगी थीं, और जनसाधारण इस विशाल सार्वजनिक सभा मे भारी सख्या मे पहुँचे। विद्यार्थियों ने प्रोफेसर चेन् श्यू-तू की सलाह से अपनी एक युद्ध-समिति स्थापित की, और 'चतुर्थ मई-आन्दोलन' के नाम से यह आन्दोलन देश के कोने-कोने मे फैल चला। सारा देश भारत के असहयोग-आन्दोलन की तरह चतुर्थ मई के आन्दोलन मे गूँज उठा।

माओ चे-तुग ने 'नवीन जनतन्त्रता' मे इस समय के अपने भावो के बारे मे लिखा है . "चीन पूँजीवादी अर्थनीति एक कदम आगे बढ़ी, तीन बडी साम्राज्यवादी शक्तियां—रूस, जर्मनी और आस्ट्रिया-हुगरी—के परास्त होने तथा इग्लेड और फ्रास के कमजोर पडने, साथ ही रूसी सर्वहारा द्वारा एक समाजवादी राज्य के स्थापित होने, एव जर्मन, आस्ट्रियन (हुगेरियन), और इतालियन सर्वहारो के क्रान्ति के लिए उठ खडे होने को देखकर चीनी क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों के मन मे चीन राष्ट्र की मुक्ति के लिए नई आशाएँ पैदा हुईं।" रूस की समाजवादी क्रान्ति ने इस समय चीन के क्रान्तिकारियो, विशेषकर तरुणो पर भारी प्रभाव डाला। और ठीक वैसा ही हुआ, जैसा कि स्तालिन ने कहा था

"अक्टूबर-क्रान्ति दुनिया के इतिहास में पहली क्रान्ति है, जिसने कि पूर्व की मेहनतकश जनता, उत्पीडित जातियो की युगो से चली आती नीद को तोड दिया और उन्हे विश्व साम्राज्यवादियों के विरुद्ध लडने के लिए तैयार किया। ईरान, चीन और भारत मे रूस की सोवियतो के नमूने पर कमकरो और किसानों की पचायतो का बनना इसका पर्याप्त प्रमाण है।"

माओ चे तुग ने भी 'नवीन जनतन्त्रता मे' इसी विषय पर कहा था "चतुर्थ मई आन्दोलन तत्कालीन विश्व-क्रान्ति, सोवियत क्रान्ति और लेनिन की पुकार का परिणाम था।" 4 मई, 1919 के पेकिंग के विशाल आन्दोलन ने जब खोखला नारा नही बुलन्द किया "जापान के साथ सीधी बातचीत न हो!" "देशद्रोहियो की क्षय!" "हम सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर नही करेगे!" "एक्कीस माँगो को हटा दो!" "चियाग ताउ को जैसे भी हो लौटाओ!" "कूटनीति मुर्दाबाद!" 'जापानी माल का बायकाट करो।"

नारा लगाते पाच हजार विद्यार्थी तियान आन मन के सामने प्रदर्शन करते हुए गए फिर वहा से 1915 ई मे जापान द्वारा लादी गई एक्कीस माँगो पर हस्ताक्षर करनेवाले देशद्रोही चाउ जू लिन् के घर पर चाउ चियो लूम गये। विद्यार्थियो ने वहा चागचुग शियाग (जापान मे राजदूत) लू चुग यू (टकसाल सचालक) चाउ जू लिन तथा एक जापानी को बैठक करते देखा। विद्यार्थी चाग चुग शियाग पर टूट पडे और उसकी लात मुक्को से खबर लेने लगे, दूसरे तीन इसी बीच भाग निकले। फिर विद्यार्थियो ने चाउ जू लिन् के घर में आग लगा दी।

पुलिस और हथियारबन्द सैनिक त्वान् ची जुइ की सरकार द्वारा प्रदर्शन भग करने के लिए भेजे गये जिन्होने 32 विद्यार्थियो को गिरफ्तार किया। अगले दिन पेकिंग के सभी विद्यार्थियो ने हडताल कर दी। पेकिंग के स्कूलो और कालेजो के विद्यार्थियो की सभा बनाई गई, जिसने विरोध मे तार भेजे प्रचार के लिए पुस्तिकाएँ निकाली और हर जगह विरोध सभाएँ सगठित की।

इस प्रकार आरम्भ हुआ चतुर्थ मई आन्दोलन अब तियान्-चिन् शाघाइ, नानकिन् और वूहान मे विद्रोह की आग लगाने मे सफल हुआ। क्वाग तुग क्वागसी, फूकियान, शानसी, चेक्याग क्याग सी, हूनान एव उत्तर-पूर्वी इलाको मे आन्दोलन जगल की आग की तरह भडक उठा। जगह जगह हडताल और विरोध सभाएं होने लगी। असहयोग आन्दोलन के विदेशी माल के बायकाट की तरह चीन मे भी जापानी माल का बायकाट होने लगा। सारे देश के विद्यार्थी और तरुण बुद्धिजीवी इस जापान विरोधी आन्दोलन मे सम्मिलित हो गये।

(2) माओ मैदान में—माओ चे-तुग इस समय शाघाइ से चागशा पहुंच गये थे। चतुर्थ मई-आन्दोलन को हूनान मे फैलाने के लिए उन्होने एक छोटा-सी किन्तु जबर्दस्त अपील निकाली, जिसके आरम्भ के वाक्य थे . "उठो देशभाइयो!" हूनान के विद्यार्थी उठ खडे हुए। उन पर माओ का पहले ही से भारी प्रभाव था। उन्होने हूनान छात्र सभा सगठित की और उसकी तरफ से एक पत्रिका निकालने का निश्चय किया। माओ चे-तुग ने पत्रिका का नाम 'शियाग पत्रिका' रक्खा और वह स्वय उसके सम्पादक बने। पत्रिका का आधा भाग सम्पादक की कलम से लिखा जाता था। इसके एक एक शब्द दहकते हुए अगारे थे, जो पाठक के हृदय मे

ज्वाला फूँक देते थे। उसमे साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और युद्धपतिवाद का घोर विरोध तथा जनतन्त्रता, विज्ञान और नवसंस्कृति का समर्थन होता था। उसने हूनान और बाहर के भी विद्यार्थियों और तरुणो को बडी प्रेरणा दी, और वहाँ के बुद्धिजीवियों तथा शिक्षण-संस्थाओं मे क्रान्ति की लहर पैदा करने मे भारी काम किया। पत्रिका पुराने आचारों के विरुद्ध संस्कृति का प्रचार ही नही करती थी, बल्कि वह जनता के क्रान्तिकारी आन्दोलन का संगठन भी करती थी। उसमे वास्तविक सामाजिक समस्याओ पर अक्सर लेख होते। वह तरुण बुद्धिजीवियों और विद्यार्थियो मे अपनी नीति का प्रसार करते हुए उन्हे जनसाधारण के साथ एकताबद्ध होने के लिए प्रेरित करती। छुट्टियो मे घर जाने पर विद्यार्थियो पर जनता को संगठित करने के लिए जोर दिया जाता। सम्पादकीय लेख की एक सुर्खी थी : 'जनता की महान एकता' जिसमे गर्मियो की छुट्टियो मे घर लौटनेवाले विद्यार्थियो को काम करने का रास्ता बतलाया गया था। हूनान छात्रसभा से भिन्न भिन्न स्कूलो के विद्यार्थियो मे 'घर जाओ और काम करो' वाली टुकडियाँ संगठित की। घर लौटने पर बहुत से विद्यार्थी स्थानीय तरुण बुद्धिजीवियो से मिलकर अपने संगठन को बढाने तथा प्रचार कार्य को करने के लिए 'देश भाषण इकाइयाँ' कायम की। सभा ने 'तन-मान (देशभक्ति) टुकडियाँ' और 'दुश्मन के माल की पडताल करनेवाली टुकडियाँ' कायम की, जिनका काम था जापानी माल के बहिष्कार को कार्यरूप मे परिणत कराना। हूनान प्रदेश के बहुत से स्कूलो के अपने साप्ताहिक पत्र निकलने लगे। अब चियांग पत्रिका ने—जो कि क्रान्तिकारी प्रचार के क्षेत्र मे प्रमुख स्थान रखती थी—सबको एकसाथ मिल जाने के लिए कहा। इसके परिणामस्वरूप 'साप्ताहिकों की सभा' कायम हुई। इस संगठन के बाद अब मिलकर भिन्न भिन्न पत्र-पत्रिकाओ द्वारा और अच्छी तरह प्रचार कार्य होने लगा। 'सियांग चियांग' पत्रिका और उसके सम्पादक माओ त्से तुंग के इस प्रयत्न से सारे हूनान प्रदेश के विद्यार्थियों और बुद्धिजीवियो मे एक अभूतपूर्व नये ढंग की जागृति दिखाई पडने लगी। यहीं से माओ की क्रान्तिकारी पत्रकारिता और सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पुस्तिकाओं के प्रभावशाली रूप मे निकालने का प्रयत्न होता है। प्रयत्न सफलता का परिणाम था, जो कि पत्रिका को सरकार ने यानी घोरियों ने बन्द कर दिया।

(3) **शांघाइ मे दूसरी बार** (1919 ई.)—16 जून 1919 को शांघाइ मे विद्यार्थियो की राष्ट्रीय सभा स्थापित हुई। उसके लिए सारे देश के विद्यार्थियो के प्रतिनिधि वहाँ पहुँचे थे। हडताल मे अब व्यापारी और मजूर भी शामिल हो गये थे। 'चतुर्थ मई आन्दोलन' ने अब तृतीय जून आन्दोलन का रूप ले लिया था। माओ ने 'नवीन जनतन्त्रता' मे इसके बारे मे लिखा है : 'जैसे ही तृतीय जून आन्दोलन (3 जून को पेकिंग के विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से नगर की सडको मे निकलकर लोगो के सामने भाषण दिये। हजार से अधिक विद्यार्थी पकडे गये) की खबर शांघाइ पहुँची, तो पेकिंग के विद्यार्थियो का समर्थन करते हुए वहाँ के सभी व्यापारियो, विद्यार्थियो और मजूरो ने हडताल कर दी। शांघाइ की इस हडताल मे केवल बुद्धिजीवी वर्ग ही नही, बल्कि सर्वहारा, निम्न मध्यमवर्ग और बूर्ज्वाजी (मध्यमवर्ग) ने भी बहुत भारी संख्या मे भाग लिया, और आन्दोलन ने सम्पूर्ण राष्ट्रव्यापी क्रान्तिकारी आन्दोलन का रूप लिया।'

शांघाइ के सर्वहारा के रूप मे चीन के मजदूर वर्ग ने पहले-पहल क्रान्ति के पथ पर पैर रक्खा। चीनी सर्वहारा का जन्म पूँजीवाद के जन्म के साथ साथ हुआ था। माओ त्से-तुंग ने 'चीनी क्रान्ति और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी' मे इसके बारे मे कहा है : "चीनी सर्वहारा उमर और अनुभव मे चीनी बूर्ज्वाजी से जेठा है, क्योंकि चीनी सर्वहारा की उत्पत्ति और विकास केवल चीनी राष्ट्रीय बूर्ज्वाजी की उत्पत्ति और विकास के साथ नहीं हुआ, बल्कि इसी समय चीन मे साम्राज्यवादी उद्योग धन्धो मे सीधे कार्य करना भी हुआ। प्रथम साम्राज्यवादी विश्वयुद्ध के दौरान मे चीन का राष्ट्रीय उद्योग और अधिक विकसित हुआ।" इसके परिणामस्वरूप चीनी सर्वहारा ने भी और प्रगति की।

'चतुर्थ मई-आन्दोलन' मे सर्वहारा की दृढ शक्ति का सम्मिलित होना क्रान्तिकारी आन्दोलन मे एक नये जीवन का संचार करना था। 5 जून, 1919 को शांघाइ के 70 हजार कमकरो ने हडताल कर दी। इन हडतालियों मे धातु कमकर, मशीन-टूल, कपडे के कारखानों, छापेखानो, जहाजो और रेलो, ट्रामो और बसो, टेलीफोन कम्पनियो और दियासलाई के कारखानो, कागज की मिलो और तम्बाकू के कारखानो मे काम करनेवाले मजूर शामिल

हुए थे। यही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय भावना इतनी जाग उठी थी कि शांघाइ के टैक्सी-ड्राइवर, सड़क सफाई करनेवाले, होटल में काम करनेवाले, मकानों के राज-मजदूर भी उसमें शामिल हो गये। शांघाई-नानकिन रेलवे-मजदूरों की हड़ताल ने खास तौर से प्रभाव डाला। उसी दिन शांघाइ के व्यापारियों ने भी अपनी दूकानों के दरवाजे बन्द कर लिये और नानकिन, हांग-चाउ, क्यूकियांग, तियान्-चिन, वूहान; अमोय जैसे नगरों, तथा शान्तुंग और आनह्वेइ प्रदेशों के कस्बों और शहरों के व्यापारियों ने भी अपने शांघाइ के भाइयो का अनुसरण किया। ताग-शान में पेकिंग, मुकदन रेलवे के मजूरो तथा चांग-शिन्-तियान में पेकिंग-हानकाउ रेलवे के मजदूरों ने विशाल प्रदर्शन किये। 6 जून को शांघाइ अखिल चक्रसभा ने पेकिंग तार भेजकर देशद्रोहियों को दण्ड देने की माँग की। पेकिंग सरकार के लिए और कोई रास्ता नहीं रह गया, और 9 जून को जापान-समर्थक तीन राजनीतिज्ञ चाउ जू-लिन्, लू चुंग-यू और चांग चुंग-शियांग को उनके पद से हटाते घोषित किया कि चीन पेरिस-सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर नहीं करेगा। आन्दोलन की जबर्दस्त विजय थी, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। 28 जून को चीनी प्रतिनिधियों ने पेरिस में सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। इसकी खबर सारी दुनिया में फैल गई। चीन जैसे एक विशाल राष्ट्र ने नई अँगड़ाई ली और बता दिया कि वह मुर्दा लाश नहीं, बल्कि सजीव शक्तिशाली महाशरीर है, जिसका प्रथम परिचय शांघाइ के सर्वहारो ने क्रातिकारी आन्दोलन में शामिल होकर दिया।

3. सक्रमण-काल

नव सस्कृति-आन्दोलन का साम्राज्य विरोधी और सामन्तवाद-विरोधी रूप था। राजनीतिक आन्दोलन को आगे बढ़ाते उसे देश के कोने-कोने मे पहुँचाने मे उसने सहायता की। उसका लक्ष्य था पुराणपन्थी आचारो के विरुद्ध सांस्कृतिक क्रान्ति को और पुराने साहित्य के विरुद्ध नवीन साहित्य को आगे बढ़ाना। 'नव-संस्कृति आन्दोलन' अब सारे देश में फैल गया था। जगह-जगह कितनी ही पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ तथा साहित्यिक सग्रह छपकर निकलने लगे। इसी समय ली ता-चाउ ने अपने राजनीतिक निबन्ध लिखे, और लू शुन् ने अपने उपन्यास और कहानियाँ प्रकाशित की—ली ता-चाउ ने 1918 के अक्टूबर मे 'साधारण जनता की विजय', 'बोल्शेविज्म की विजय', और 'नौजवान' प्रकाशित कराये, पीछे 1919 की मई मे उन्होने मार्क्सवाद पर अपने तुलनात्मक सारगर्भित निबन्ध 'मार्क्सवाद पर मेरे विचार' प्रकाशित किये। इस पुस्तक ने चीन मे वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवेश का रास्ता साफ कर दिया।

माओ ने 'नवीन जनतन्त्रता' मे लिखा है : "यद्यपि चतुर्थ मई-आन्दोलन के समय चीन में अभी कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी, लेकिन ऐसे बुद्धिजीवी काफी सख्या मे थे, जो कि रूसी क्रान्ति के समर्थक थे और उनको कम्युनिस्ट विचारधारा का मोटा-मोटा ज्ञान था। चतुर्थ मई-आन्दोलन आरम्भ में जनता के तीन भागो—कम्युनिस्ट बुद्धिजीवियो, क्रान्तिकारी, निम्न-मध्यमवर्गी बुद्धिजीवियों और बूर्ज्वा बुद्धिजीवियों—के सयुक्त मोर्चे का क्रान्तिकारी आन्दोलन था। बूर्ज्वा बुद्धिजीवी उस समय आन्दोलन के दक्षिण पक्ष थे।

पीछे इस क्रान्तिकारी आन्दोलन में जो बूर्ज्वा शामिल हुए थे, और जिन्होंने सांस्कृतिक और वैचारिक संयुक्त मोर्चा कायम किया था, वह दो पक्षो में बँट गये : एक पक्ष उग्र-क्रान्तिकारी जनतन्त्रता के सर्वहारा-समाजवाद अर्थात् साम्यवाद (कम्युनिज्म) की ओर बढा, जिसके मुखिया थे ली ता-चाउ, माओ चे-तुग, चू च्यू-पो, युन् ताई-यिग आदि। दूसरे पक्ष मे हू शी जैसे लोग थे, जो कि व्यवहारवाद* की ओर बढे जिनका मत था "वादों के बारे मे बात करने की अपेक्षा समस्याओं का अधिक अध्ययन" करना चाहिए। इसी विषय पर ली ता-चाउ ने अपनी पुस्तक 'वादो की समस्याओं का पुनः परीक्षण' लिखा, जिसमे ली ने हू शी के पाखण्ड का भंडाफोड़ करते हुए बतलाया कि मार्क्सवाद का इतना व्यापक प्रभाव एक महान् घटना है। समस्याओं के अध्ययन को वादों की ठीक शैली और उनके समर्थन के बिना नहीं किया जा सकता। हू शी ने इसके जवाब में 'नवीन विचारधारा का अर्थ' के नाम से एक लेख छपवाया, जिसमें उसने 'छोटी मात्रा में सुधार' और 'समस्याओं की

* Pragmatism.

खडशः समस्या' की बात कहते हुए मार्क्सवाद तथा समाज के भौतिक पुनर्निर्माण का विरोध किया। आगे और दूर हटते हुए उसने 'भले मानुसो की सरकार' और 'चीन की प्राचीन शिक्षा के अनुसधान' की बाते की। इस प्रकार माओ चे-तुंग के शब्दो मे बूर्ज्वा बुद्धिजीवियो का अधिक भाग "शत्रु के साथ समझौता करने तथा प्रतिक्रियावाद के पक्ष में था।"

माओ ने अपने लेख 'पार्टी लफ्फाजी का विरोध करो' मे सक्षेपतः इसके बार मे कहा है : "अपन विकासक्रम में चतुर्थ मई-आन्दोलन दो धाराओ में बँट गया। एक ने चतुर्थ मई-आन्दोलन के वैज्ञानिक और जनतान्त्रिक भावो को अपने को मार्क्सवाद के आधार पर फिर से ढाला। यह काम कम्युनिस्टो और कुछ थोड़े-से अ-पार्टी मार्क्सवादियों ने किया। दूसरी धारा ने बूर्ज्वाजी का रास्ता ले दक्षिण पक्ष का रूप लिया।'

शिन्-मिन् सभा भी अब दक्षिणपक्ष और वामपक्ष के दो भागो मे बँट गई। अल्पमत निराशावादी हो अपने रास्ते चला गया, लेकिन सभा के अधिकाश मेम्बर सदा जैसे उत्साही तथा ईमानदार प्रगतिशील बने माओ चे तुग के उदाहरण और पथ-प्रदर्शन पर चले और उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व्यवस्था में पूर्ण परिवर्तन करने पर जोर दिया।

'चतुर्थ मई-आन्दोलन' के असफल होने का मुख्य कारण था कि वह इतना व्यापक नही था, जिसमें कमकर और किसान सम्मिलित हो जाते। थोड़े-से कमकर (मजूर) जरूर उसमें शामिल हुए, लेकिन पर्याप्त सख्या मे नही। माओ ने अपने गुरुओ की शिक्षाओं के अनुसार 'चतुर्थ मई आन्दोलन' लेख में लिखा है "यदि बुद्धिजीवी कमकरो और किसानो के साथ एकताबद्ध नही होते, तो वह कुछ नही कर सकते।' कमकरों और किसानो के साथ एकताबद्ध होने का मतलब दूसरे समाजवादियो की तरह से भेडो को डडे के सहारे हाँकना नहीं बल्कि अटूट सम्बन्ध रख उनमे शक्ति और प्रेरणा दोनो को प्राप्त करना है। लेकिन माओ ने 'नवीन स्वतन्त्रता' में स्वीकार किया है : "चतुर्थ मई आन्दोलन ने विचारधारा और कर्मियों के सम्बन्ध में 1921 में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के लिए रास्ता तैयार किया, साथ ही 30 मई-आन्दोलन और उत्तरी अभियान का भी रास्ता साफ किया।"

'काम करो और पढो' के खयाल मे तीन हजार के करीब चीनी विद्यार्थी फ्रास गये थे, जिनमे ते-ली, चाउ एन-लाइ जैसे भावी कम्युनिस्ट नेता भी थे। शू ते-ली उन चार सौ हूनानी विद्यार्थियो मे से थे, जो कि विचारो मे प्रगतिशील रहते सभी तरह की कठिनाइयो को सहने के लिए तैयार थे। ये चार सौ विद्यार्थी बारी-बारी से शाघाइ से फ्रास के लिए रवाना हुए थे। 1920 ई. की गर्मियों में माओ चे तुग (चाग चिग याउ) 'चाग को भगाओ' के लिए हूनान मे जनता-आन्दोलन तथा युद्धपति विरोधी राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का सगठित करने के लिए दूसरी बार शाघाइ आये। इसी समय हूनान के स्वावलम्बी विद्यार्थियों का एक जत्था फ्रास के लिए रवाना हो रहा था। उन्हे विदाई देने के लिए माओ चे तुग जहाज पर गये। शाघाइ के पासवाली नदी ह्वागपू की लहरें सूर्य के प्रकाश मे चमक रही थीं। इसी समय में विदाई लेने और देनेवाले एक-दूसरे से जुदा हो रहे थे। वह देर तक एक-दूसरे की तरफ बड़े भावुकतापूर्ण दृष्टि से देखते रहे। जब तक जहाज रवाना नही हुआ, माओ चे-तुग एक हल्के नीले रग का चोगा पहने जहाज पर चढे साथियों के लिए हाथ हिलाते रहे। फिर जहाज के लगर के उठने की प्रतीक्षा करने से पहले ही वह जेटी पर होते शाघाइ की जनसकुल सड़को के जन समुद्र में विलीन हो गये।

अपने 27 वर्ष की उमर में माओ चे-तुग ने कितनी मजिले पार की ? विद्या के लिए असीम प्यास रखनेवाले ग्रामीण तरुण से वह राष्ट्रीय जनतत्रतावादी बने, पुरानी सामाजिक व्यवस्था, सामन्तवाद और पूँजीवाद का विरोध करते उन्होंने उग्र क्रान्तिकारी जनतान्त्रिकता को अपनाया, फिर सर्वहारा-विचारधारा की ओर बढते वह वैज्ञानिक समाजवादी बन गये। अब उनके पास अदम्य उत्साह था, बलिवेदी पर सर्वस्व अर्पण करने की तीव्र इच्छा थी, सगठन की अद्भुत शक्ति और व्यापक तजर्बा था, और उसके साथ मार्क्सवाद लेनिनवाद के सिद्धान्त हर समय रास्ता बतलाने के लिए उनको मिल चुके थे।

'चिग याउ' के लिए हूनानी जनता के आन्दोलन के सम्बन्ध में ही दूसरी बार शाघाइ जाने से पहले माओ

चे-तुंग पहले नौजवान संघ के निश्चयानुसार उसकी ओर से भेजे पेकिंग जानेवाले प्रतिनिधि मंडल में शामिल हुए। दूसरा प्रतिनिधि मंडल डा. सुन यात्-सेन के पास गया था। पेकिंग में माओ को चेन् श्यू-तू से मिलना था, लेकिन वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि चेन् शांघाइ चले गये। इस समय पेकिंग में रहते उन्होंने अनेक बार ली ता-चाउ से मुलाकात की, और उससे मार्क्सवाद के बारे में बहुत-सी बातें मालूम कीं। उस समय रूसी क्रान्ति के बारे में बहुत कम ही पुस्तकें चीनी भाषा में लिखी गई थीं। माओ को कार्ल मार्क्स-एंगेल्स की अमर रचना 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' पढ़ने को मिला। कौत्स्की का 'वर्ग-संघर्ष' और किरकुप का 'समाजवाद का इतिहास' पढ़ने को मिले। इन तीनों पुस्तकों ने माओ की विचारधारा का निर्माण करने में बड़ी सहायता की।

(4) विवाह—चतुर्थ मई-आन्दोलन के फलस्वरूप उसके मूलस्थान पेकिंग में भी उस समय बड़ी चेतना फैली हुई थी। सारे रूस मे उसी तरह की उत्तेजना और जोश दिखलाई पड़ता था, जैसाकि उस समय भारत में हो रहा था। विद्यार्थी पकड़े जाते और उनकी जगह नये दूसरे अधिक संख्या में लेते। स्त्रियाँ भी आन्दोलन में शामिल होने लगी थीं। माओ की प्रिया यांग काइ-हुइ स्वय भाग ले रही थी। माओ अपनी भावी पत्नी के साथ उसके पिता तथा अपने पुराने अध्यापक के घर जाया करते। प्रोफेसर ने माओ को बतलाया कि रूस में राजसत्ता मजूरों के हाथ में चली गई। माओ के हृदय में जबर्दस्त प्रेरणा मिली, जो कि तीनों उक्त ग्रन्थों के पढ़ने से कम नहीं थी। उन्होंने सोचा : "दुनिया में एक जगह तो सर्वहारा का राज्य कायम हो गया।"

कुछ दिनो तक पेकिंग में रहने के बाद माओ चेन् श्यू-तू से मिलने शाघाइ चले गये, जहाँ उन्होंने रूसी क्रान्ति तथा अपनी पढ़ी तीनों पुस्तकों की चर्चा की। चेन ने रूसी क्रान्ति की प्रशसा की और मार्क्सवाद के बारे में अपनी जानी हुई बाते बतलाईं। इस प्रकार माओ चे-तुंग के जीवन ने एक जबर्दस्त मोड़ लिया।

(5) फिर हूनान में—1919 ई. में दुबारा शाघाइ में जाकर चेन्-श्यू-तू से माओ ने मुलाकात की और माओ के शब्दों मे उन्होंने शायद मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया। शांघाइ मे रहते उन्होंने 'हूनान पुनर्निर्माण लीग' के सगठन के बारे में बातचीत की। शाघाइ से चागशा लौटने के बाद माओ ने लीग के सगठन में हाथ लगा दिया। लीग का उद्देश्य था हूनान की आजादी के लिए सघर्ष और आजादी का अर्थ था स्वायत्त-शासन। लीग के सदस्यों का विश्वास था कि यदि हूनान पेकिंग के प्रतिक्रियावादी शासन से अलग हो जाय, तो वह तेजी से उन्नति कर सकता है। हूनान के स्वतन्त्रता-आन्दोलन के समर्थकों में चाउ-हेग-ती नामक एक युद्धपति भी था। जन-आन्दोलन की सहायता से उसने हूनान के राज्यपाल को भगाकर शासन की बागडोर अपने हाथ मे ले ली, और फिर जन-आन्दोलन का बलपूर्वक दमन करने लगा। माओ तथा उनके दल के लोग अभी बूर्ज्वा जनतन्त्र के समर्थक थे और स्त्री-पुरुषों के समानाधिकार तथा पार्लियामेण्टरी सरकारी माँग करते थे। माओ ने चांगशा लौटकर लीग की ओर से 'नवीन हूनान' पत्र का सम्पादन शुरू कर दिया, जिसके शक्तिशाली लेखों और लीग के प्रयत्न की सहायता से तान येन्-काइ ने पेकिंग के क्षत्रप चांग को मार भगाया था जब दूसरे युद्धपति ने वही काम करना शुरू किया, तो 'नवीन हूनान' ने उसके विरोध के लिए कमर कसी, और तरुणों ने प्रतिक्रियावादी प्रादेशिक पार्लियामेण्ट पर आक्रमण करके उसके झंडों और तोरणों को फाड़ फेंका।

1920 की 7वी नवम्बर को तारीख आई। रूस में सर्वहारों की सरकार कायम हुए तीन वर्ष हो चुके थे। माओ चे-तुग और उनके साथियों ने रूसी-क्रान्ति के तृतीय महोत्सव को मनाने का निश्चय किया। इसके उपलक्ष्य में एक प्रदर्शन का सगठन हुआ। सभा मे लालझंडा फहराने के समय पुलिस ने लोगों को रोकना चाहा। प्रदर्शनकारियों ने जब विधान की बारहवीं धारा में उल्लिखित जनता के सभा-सम्मेलन करने और भाषण की स्वतंत्रता के बारे में कहा, तो पुलिस ने साफ कह दिया कि हमें विधान देखने की फुर्सत नहीं है, बल्कि राज्यपाल चाओ हेग पी की आज्ञा पालन करनी है। इस उत्तर को सुनकर माओ की आँखे खुल गईं और उन्हीं के शब्दों में : "इस घटना के बाद मेरा यह विश्वास पक्का हो गया कि सजीव सुधार केवल जन-संघर्षों द्वारा प्राप्त जनता की राजनीतिक शक्ति द्वारा ही पाये जा सकते हैं।" इसी समय यांग काइ-हुइ से माओ ने विवाह किया। अब दोनो मिलकर नौजवान सघ मे काम करने लगे। माओ ने अब मार्क्सवाद को स्वीकार कर लिया था।

7

पार्टी-जीवन आरम्भ (1921-23 ई.)

चीनी सामन्तवाद अपने हजारों वर्ष पुरानी चाल से चला जा रहा था, लेकिन पूँजीवाद दुनिया के किसी कोने को कैसे अछूता छोड़ सकता था ? उसे लाभ-शुभ के साथ व्यापार करना था, और अधिक-से-अधिक नफा कमाने के लिए उसे कोई चीज अकरणीय नही थी। अगर कोई देश व्यापार के लिए दरवाजा बन्द करता, तो भाप और लोहेवाले उसके आधुनिक जहाज अपनी शक्तिशाली तोपों को लेकर दरवाजा तोड़ने के लिए तैयार थे। 19वी शताब्दी के मध्य मे पहुँचते-पहुँचते कारखानो के माल से भी ज्यादा लाभ का व्यापार था अफीम का। अफीम की लत के कारण कोई जाति तबाह हो जाय, तो उनकी बला जाने। एक तरफ यूरोपीय पादरी काफिरो को ईसाई बनाकर धर्म के रास्ते पर चला, उनके वास्ते स्वर्ग का दरवाजा खोल रहे थे, और दूसरी तरफ अंग्रेज व्यापारी अफीम खिलाकर सारी जाति को रसातल पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे थे। चीन ने जब अफीम खाने से इन्कार किया, तो 1840 ई. मे ब्रिटेन की हथियारबन्द सेनाओं ने चीन पर हमला करके अफीम-युद्ध शुरू कर दिया, और जैसाकि हम देख चुके है, असमान शर्तो के साथ नानकिन सन्धि पर हस्ताक्षर करने के लिए उसे मजबूर किया। इसके बाद चीन के अंग-भंग करने और वहाँ मनमाने सुभीते प्राप्त करने के लिए यूरोपीय शक्तियों ने लगातार जो लड़ाइयाँ छेड़ी, उनका अन्त एक तरह से 1949 ई. मे चीन मे लोकशाही गणराज्य की स्थापना के बाद ही हो सका। 1857 ई. मे—उसी साल जब कि भारतीय मुक्ति युद्ध को दबाया गया—अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने मिलकर चीन से युद्ध छेड़ा। 1884 ई. मे फ्रांसीसियों ने चीन से लड़ाई की, दस वर्ष बाद 1894 ई. मे जापान ने प्रहार किया। 1900 ई. मे बाक्सर-विद्रोह मे सात पश्चिमी राज्यो और आठो सवारो मे नाम लिखानेवाले जापान ने भी चीन पर हमला करके मनमानी शुरू की। 1914 ई. मे पश्चिमी शक्तियो को आपस मे उलझा देखकर जापान ने शान्तुग पर हाथ साफ किया, और उसके बाद द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त होने तक वह चीन के प्रदेशो को एक के बाद एक दबाता गया, यह हम आगे देखेंगे। जापान के जूते मे अमेरिका ने पैर रखना चाहा, लेकिन आखिर मे उसे और उसके पिट्ठू चाग काइ-शेक को मुँह की खानी पड़ी और पुराने की जगह पर अधिक सुन्दर, अधिक शक्तिशाली और अधिक उद्बुद्ध आधी अरब जनता का चीन पैदा हुआ। इस महान् परिवर्तन का काम चीन की कम्युनिस्ट पार्टी और उसके महान नेता माओ चे-तुग ने किया जिनको अपने जन्म से ही तलवारों की छाया मे पलना पड़ा। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास भीषण युद्धो और महान् त्याग का इतिहास है। जन्म से (1 जुलाई, 1921) तिब्बत की मुक्ति (नवम्बर, 1950) तक अपने तीस वर्ष के जीवन को उसने संघर्षो मे बिताया। इस तीस वर्ष के काल को चार युद्धकालो मे विभक्त किया जाता है :

(1) पार्टी का जन्म और 1921-27 का पहला क्रान्तिकारी गृहयुद्ध,

(2) 1927-36 ई. का दूसरा क्रान्तिकारी गृहयुद्ध,

(3) 1936-47 ई. का जापानी आक्रमण के विरुद्ध प्रतिरोध युद्ध, और

(4) 1945-51 ई. का तीसरा क्रान्तिकारी गृह-युद्ध और चीन मे लोकशाही गणराज्य की स्थापना।

कम्युनिस्ट पार्टी—सर्वहारा की मुक्ति-युद्ध के संचालन का जेनरल स्टाफ—सर्वहारा की उत्पत्ति के बिना अस्तित्व मे नही आ सकती। इसीलिए उसका अस्तित्व तब आया, जब कि चीन मे आधुनिक उद्योग-धन्धों का विस्तार होने लगा। 19वी सदी के उत्तरार्ध मे 1860-69 ई. तक के काल मे चीन मे नये तरह के कारखाने स्थापित होने लगे, लेकिन देशी सामन्तवाद उसकी ओर से उदासीन था और विदेशी पूँजीवाद चीन को अपने माल का बाजार बनाये रखना चाहता था, इसलिए उद्योग-धन्धों की प्रगति बड़ी मन्द रही; लेकिन, पीछे—विशेषकर पूँजीवाद के अपने इजारादारी रूप—साम्राज्यवाद बनने के समय (20वी सदी के आरम्भ) से अब विदेशी उद्योगपति अपनी पूँजी चीन के अपने अधीनस्थ भागो हाङकाग या अपने प्रभाव-क्षेत्रवाले शाघाइ जैसे नगरो मे कल-कारखाने

बनाने लगे, और इस प्रकार इन कारखानों के आसपास सर्वहारा जमा होने लगे। 'ताइपिंग राज्य' के काल (1851-1864 ई.) में किसानों ने क्रान्तिकारी युद्ध करके एक नई तरह की राजव्यवस्था कायम करने की कोशिश की, जिसकी परम्पराएँ चीन की उत्पीडित जनता मे आशा का सचार करती थीं। लेकिन इससे जग-परिवर्तन का काम नहीं हो सकता था। उसकी ठोस भूमि सर्वहारा ही हो सकती थी, जो कि वास्तविक सामाजिक क्रान्ति करने के लिए स्थायी सेना का रूप ले सकता था। चीनी सर्वहारा ने 1915 ई. मे हांगकाग में पहले-पहल अपना मजदूर संगठन किया। चतुर्थ मई-आन्दोलन ने जन-जागृति के लिए बडा काम किया, यह हम बतला आये हैं, किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात थी उसी साल के 3 जून को शाघाइ मे जापानी और दूसरे विदेशी मिलों के मजूरों का राजनीतिक हडताल मे पैर रखना। विदेशी सेनाओं ने उनके ऊपर गोली चलाई। लेकिन, गोली सर्वहारा के आन्दोलन को दुनिया मे कहीं भी दबा नही सकी। रूस मे जार ने खूनी अवतार मनाकर केवल अपने लिए कब्र खोदी। पेकिग और तिग-ताउ के मजदूरों ने भी हडताल मे भाग लिया और अगले साल 1920 ई. में मजदूरो का त्यौहार मई दिवस मनाया गया। हू चियाओ-मू के अनुसार[1] :

"1919 की 4 मई के आन्दोलन मे चीन के मजूर वर्ग ने पहली बार अपनी ताकत का प्रदर्शन किया, तथा उसने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के असर को ग्रहण करना शुरू किया। चीन के इतिहास मे पहली बार जनता ने राष्ट्रव्यापी साम्राज्य-विरोधी सघर्ष मे भाग लेते और इस प्रकार सघर्ष को तेजी के साथ विजय तक पहुँचाने मे मदद देने के लिए शाघाइ, ताग शान् और चाग सिन् तिन के मजदूरो ने राजनीतिक हडताल की। मजूर वर्ग की ताकत की वृद्धि ने चीन के वामपक्षी बुद्धिजीवियो मे जान फूंक दी और उन्हे मजदूरों के बीच क्रान्तिकारी काम करने के बारे मे फैसला करने मे मदद दी। सास्कृतिक क्षेत्र मे 4 मई के आन्दोलन ने जनवाद और विज्ञान के लिए सघर्ष करने के नारे को जन्म दिया। लेकिन, रूस मे हुई अक्टूबर की क्रान्ति से प्रभावित होकर उस आन्दोलन के वाम पक्ष ने—उन क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियो ने, जिन्होंने साम्यवाद के बारे मे प्राथमिक जानकारी हासिल की थी—इस दृष्टिकोण का प्रचार करना शुरू किया कि चीन मे समाजवाद को कार्यरूप मे परिणत करना और चीनी-क्रान्ति के मार्ग-दर्शन के लिए मार्क्सवाद लेनिनवाद से काम लेना जरूरी है। इस दृष्टिकोण को अपना आधार बनाकर वे मजूरो के बीच प्रचार और सगठन-सम्बन्धी काम करने लगे। इस प्रकार चीन के मजदूर-वर्ग के आन्दोलन और चीन के क्रान्तिकारी आन्दोलन ने एक नये युग मे प्रवेश किया।"

माओ चे-तुग ने अपनी पुस्तक 'जनता की नई लोकशाही' मे 1919 ई के साल को चीन की जनवादी क्रान्ति मे एक ऐसे मोड का साल बताया है, जिसने पुरानी तरह की जनवादी क्रान्ति को नई तरह की जनवादी क्रान्ति मे बदल दिया। इसी साल मे जनवादी क्रान्ति ने चीन के मजूर-वर्ग के नेतृत्व मे चलनेवाली क्रान्ति का रूप धारण कर लिया।

1. कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना (1921 ई)

अक्टूबर-क्रान्ति के बाद विशेष तौर से समाजवादी विचारधारा चीन में फैलने लगी और जगह-जगह नई विचारधारावाले लोग पैदा होने लगे। अब इनको सगठित करके कम्युनिस्ट पार्टी को अस्तित्व मे लाने की आवश्यकता थी। पार्टी की स्थापना के बारे मे साथी हू ने लिखा है[2] :

"कम्युनिस्ट दलो द्वारा चुने गये बारह प्रतिनिधियो ने 1 जुलाई, 1921 को शाघाई मे हुई पहली पार्टी-कांग्रेस मे हिस्सा लिया। ये वे दल थे, जो 4 मई के आन्दोलन के बाद कई केन्द्रो मे कायम हो गये थे। इन प्रतिनिधियो मे माओ चे-तुग, तुग पी-हू, चेन् तान्-च्यू, ओं शू-हेग आदि शामिल थे। लगभग पचास कम्युनिस्टो ने इन्हे अपना प्रतिनिधि चुनकर काग्रेस मे भेजा था। पहली पार्टी-कांग्रेस ने चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का पहला विधान मजूर किया, पार्टी के केन्द्रीय सगठन का चुनाव किया और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की नींव डाली। उस दिन से

---

1 'चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के तीस वर्ष', पृष्ठ 6-7

2 वही, पृष्ठ 8

चीन मे एक बिलकुल नई और संयुक्त राजनीतिक पार्टी–मजदूरों की एक ऐसी पार्टी का उदय हुआ, जिसका उद्देश्य था साम्यवाद और जो लेनिनवाद के पथ-निर्देशन मे काम करती थी। इस काग्रेस मे कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल का एक प्रतिनिधि भी मौजूद था।"

पार्टी की स्थापना के लिए अब के तीसरी बार माओ शाघाइ गये, जहाँ उन्होने पार्टी की स्थापना मे भाग लिया। इस समय उनकी अवस्था 27 वर्ष की थी। पहली पार्टी-काग्रेस मे पार्टी की स्थापना के बाद माओ फिर अपने कार्य-क्षेत्र हूनान मे चले आये और उन्होंने काग्रेस के निश्चयानुसार हूनान पार्टी के सेक्रेटरी का पद सँभाला। यह भी याद रखना चाहिए कि जिस तरह चीन मे वहाँ के साथियो ने अपनी कम्युनिस्ट पार्टी स्थापित की, उसी तरह विदेश मे रहनेवाले कम्युनिस्ट विचारधारा रखनेवाले चीनी तरुणो ने वहाँ भी पार्टी स्थापित की। इसी तरह चाउ एन्-लाइ, ली-सान् और शाग चन्-लू (चाइ-हो शाग की पत्नी तथा पार्टी सस्थापको मे एकमात्र चीनी महिला) ने फ्रास मे पार्टी के निर्माण मे काम किया। ली मान् और चाइ-हो-शाग चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की फ्रेच शाखा के सस्थापक थे। जर्मनी मे जो पार्टी-शाखा बनाई गई, उसमे काओ यू हान्, चू तेह (आजकल चीन गणराज्य के महासेनापति), और चाग-शाग पू (पीछे चिग-हुआ विद्यापीठ के प्रोफेसर) थे। मास्को मे चू च्यू-पाइ आदि ने पार्टी-शाखा खोली और जापान मे भी चाउ फू हाइ आदि ने यह काम किया।

शाघाइ से लौटकर हूनान मे माओ ने पार्टी का काम जोर शोर से शुरू किया। 1922 के मई महीने मे हूनान-पार्टी के खनक मजूरो, रेलवे मजूरो, म्यूनिसिपल मजूरो, प्रेस मजूरो, सरकारी टकसाल के मजूरो के सगठनो को मिलाकर मजूरसघ स्थापित किया, और उस साल के जाडो तक मजूर आन्दोलन जोर-शोर से होने लगा।

शाघाइ मे पार्टी ने चेन् तू श्यू को अपना नेता चुना था, लेकिन उसका मार्क्सवाद बहुत गहरा नही था। चतुर्थ मई-आन्दोलन मे वह एक अत्यन्त उग्र जनवादी नेता के तौर पर प्रसिद्ध हुआ था, इसलिए चीन मे मार्क्सवाद के आते ही वह एक प्रभावशाली समाजवादी प्रचारक बन गया।

1922 के जाडो मे हूनान के राज्यपाल ने दो मजूरो को फॉसी की सजा दी, जिनमे हुवाग पाइ भी था। हुवाग पाइ एक आतकवादी विद्यार्थी था। फॉसी की सजा रद्द करने के लिए जब आन्दोलन शुरू हुआ, तो कुछ साथियो ने शका उठाई कि आतकवादी को छुड़ाने के लिए हमे प्रयत्न करने की आवश्यकता नही। इस पर माओ ने अपनी दीर्घदर्शिता का परिचय देते हुए कहा · कोई बात नही, आखिर वह मजूर तो है। और हम दोनो के सम्मिलित दुश्मन ने उसे सजा दी है, इसलिए उसकी सजा रद्द करने के लिए लडना हमारा कर्तव्य है। फॉसी के रद्द करने के आन्दोलन के लिए माओ को जाना पड़ा, जहाँ पार्टी की दूसरी काग्रेस होनेवाली थी।

2. द्वितीय पार्टी-काग्रेस (1922 ई)

मई, 1922 मे पश्चिम सरोवर (सी), हाग-चाउ मे यह काग्रेस हुई, जिसमे पार्टी का घोषणा पत्र तैयार किया गया, और महत्तम तथा लघुत्तम कार्यक्रम बनाया गया। जरूरी कर्तव्यो के बारे मे काग्रेस का कहना था :

"… गृह-युद्ध का खतम करना, सामन्ती युद्धपतियो का तख्ता उलटकर देश मे शान्तिमय काम करना, अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद के उत्पीडन का अन्त करना, चीनी राष्ट्र को पूर्ण स्वतन्त्र बनाना, और एक सच्चे जनवादी गणराज्य के रूप मे समूचे चीन को एकताबद्ध करना।"

घोषणापत्र मे कुछ कमियाँ भी थी, सर्वहारा-वर्ग के नेतृत्व के बिना जनवादी क्रान्ति भूलभूलैया मे पड सकती है, और इस नेतृत्व को द्वितीय काग्रेस ने घोषित नही किया था। यही नही बल्कि किसानो के लिए जमीन की मॉग तथा उनके राजनीतिक अधिकारो के बारे मे भी कुछ नही कहा गया था। इसमे मजूरो और किसानो के जनवादी क्रान्ति मे हिस्सा लेने तथा सिर्फ अपने अधिकारो के लिए सघर्ष करने के वास्ते आवाहन किया गया था। इस गलती के कारण 1924 से 1927 ई. तक के काम मे पार्टी के काम मे चेन् तू-श्यू की असरवादी नीति ने बहुत हानि पहुँचाई। दूसरी पार्टी-काग्रेस मे चीनी पार्टी को कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल से सम्बद्ध करने का भी फैसला किया गया।

इस काग्रेस मे माओ चे तुग शामिल नही हो सके। उन्हें शाघाइ का जो पता दिया गया था, वहा काग्रेस नही हुई। गैरकानूनी होने के कारण काग्रेस के स्थान को बदलकर उसे हाग काग मे किया गया। माओ ने बडी कोशिश की, लेकिन स्थान और स्थान परिवर्तन का पता नही लग सका और इस प्रकार उनको वहाँ से खाली हाथ हूनान लौटना पड़ा।

मजूर-आन्दोलन मे उन्होने फिर जोर शोर से काम शुरू किया, और 1 मई 1923 के दिन हूनान प्रदेश मे मजूरो ने आम हडताल कर दी। उनकी माँगे थी मजूरी बढाओ मालिको की मनमानी कम करो और मजूर सभा को स्वीकार करो। चीनी मजूर आन्दोलन के इतिहास मे यह हडताल अपूर्व थी।

3. तृतीय पार्टी काग्रेस (1923 ई)

चीन मे मजूरो का आन्दोलन बढता गया। हूनान मे माओ उसका सचालन कर रहे थे। अब छिटपुट होते मजूर आन्दोलनो को एकताबद्ध करने के लिए पार्टी ने एक कानूनी मजूर सघ (ट्रेड यूनियन) सचिवालय की स्थापना की और मई 1922 मे कान्तन् मे पहली अखिल चीन मजूर काग्रेस की गई। पार्टी के काम का यह परिणाम हुआ कि जनवरी 1922 से फरवरी, 1923 तक सारे देश मे मजूरो के सघर्ष ने जोर पकडा और देश के बडे बडे नगरो और औद्योगिक केन्द्रो मे सौ से अधिक हडताले हुई जिनमे तीन लाख मजूरो ने भाग लिया। सभी हडतालो के अगुवा कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे और अधिकतर हडताले पूरी तरह सफल हुई। इस प्रकार कम्युनिस्टो के नेतृत्व मे मजूरो ने अपने मजूर सघो का निर्माण करके उसकी जडे मजबूत की।

एक तरफ मजूर आन्दोलन इस प्रकार जोर पकडता जा रहा था दूसरी तरफ प्रतिक्रियावाद भी प्रहार करने के लिए तैयार था। उस समय हो पे हूनान और हू पेइ प्रदेशो पर युद्धपति वू पेइ फू का आधिपत्य था। पेकिंग हाग काग रेल मजूरो के आम मजूर सघ की उद्घाटन सभा होनेवाली थी। वू ने उस पर प्रहार करने का निश्चय किया। इसके विरोध मे वाको रेलवे लाइनो के मजूरो ने भी हडताल कर दी। वू ने अपने सैनिको को भेजकर 7 फरवरी को हानकाउ और चाग शिन तिन् मे रेलवे मजूरो के साथ खून की होली खेली जिसे 7 फरवरी का हत्याकाड कहा जाता है। इसमे 40 मजूर शहीद हुए और कई सौ घायल। मजूरो ने प्रथम बलिदान और अपनी हिम्मत को दिखलाकर सर्वहारा की शक्ति का परिचय दिया किन्तु अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित प्रतिक्रियावादियो की सेना से निहत्थे मजूर कैसे सफलतापूर्वक लड सकते थे ? कम्युनिस्ट पार्टी भी पेरिस कम्यून तथा रूसी क्रान्ति के तजर्बो से जानती थी कि बिना किसानो की सहायता के सर्वहारा सफल नही हो सकता—चीन की आबादी मे 80 सैकडा किसान थे। इनके अतिरिक्त नगरो के निम्न पूँजीपति वर्ग के लाखो लोगो तथा पूँजीवादी वर्ग के उन जनतन्त्रवादियो को भी साथ लेना जरूरी था जो कि साम्राज्य था और सामन्तवाद से लोहा लेने के लिए तैयार थे।

इन सब बातो पर विचार करके पार्टी ने सुन यात सेन के नेतृत्व मे चलनेवाले कुओ मिन ताग से मेल करने के लिए ठीक कदम उठाया। 1911 ई मे मचू शासन को उठाने मे तुग मेन हुइ (क्रान्तिकारी लीग) ने भारी काम किया था इस प्रकार उसकी परम्परा जनवादी थी। इसी तुग मेन् हुइ ने कुओ मिन् ताग का रूप लिया यह हम देख आये हैं। 1911 ई की क्रान्ति को जब विश्वासघातियो ने विफल करके युवान् शि काइ को ला बैठाया और देश मे युद्धपतियो का बोलवाला होने के लिए रास्ता साफ कर दिया तो भी डा सुन यात सेन् के नेतृत्व मे उसके एक भाग ने जनवादी सघर्ष को नही छोडा। पेकिंग सरकार के विरुद्ध सघर्ष करने मे डा सुन ने आशा रक्खी थी कि क्वान् तुग के युद्धपति हमारी सहायता करेंगे लेकिन युद्धपति च्याग मिन् ने उन्हे क्वान तुग से भगा दिया जिनके कारण कुओ मिन ताग और भी अधिक टूट फूट गई।

ऐसी अवस्था मे सब तरह से निराश होकर डा सुन् और कुओ मिन् ताग के दूसरे सदस्यो को आशा की किरण कम्युनिस्ट पार्टी तथा मजूर आन्दोलन की शक्ति मे दिखाई पडी और उन्होने सोवियत रूस और कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मेल करना चाहा।

इसके बाद जून 1923 मे कान्तन् शहर मे चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की तीसरी काग्रेस हुई, जिसमे शामिल

होने के लिए हूनान के हाल के जबर्दस्त मजूर-हड़ताल के तजर्बो को लिए माओ चे-तुंग भी शामिल हुए। जिस समय काग्रेस बैठ रही थी, उसी समय जापानी माल के बायकाट के आन्दोलन द्वारा चीन मे जापानी व्यापार को बहुत नुकसान पहुँचा था। उसी समय साइबेरिया के भीतर घुसे जापानियो को सोवियत सेना हार पर हार दे रही थी। अमेरिका चीन के बाजार को अपने हाथ मे करने की सोच रहा था, इसलिए वह नही चाहता था, कि जापान का पैर वहाँ मजबूत हो। उसने अग्रेजो को भी जापान से अलग करने के लिए दबाव डाला। जापान को मजबूर होकर शातुग से निकलना स्वीकार करना पडा। चीन के भीतर भी स्थिति बदलती जा रही थी। चतुर्थ मई आन्दोलन के समय कान्तन् मे ली की सरकार टूट गई, शहर का मध्यम-वर्ग डा. सुन् के कुओ-मिन-तांग दल की ओर झुक रहा था। लेकिन कुओ-मिन् ताग के पास अभी ऐसी शिक्षित सेना नही थी, जो युद्धपतियों का मुकाबला कर सकती। डा. सुन् ने अपने मित्र मोरिस कोहन को कनाडा और अमेरिका में भेजकर सैनिक विशेषज्ञो को बुलाना चाहा। विशेषज्ञ आने के लिए तैयार थे, लेकिन उनकी सरकारे चीन में एक मजबूत शासन को देखना पसन्द नही करती थी। इग्लेड और फ्रास की भी वही नीति थी। जापान से कोई आशा नही रक्खी जा सकती थी। इस प्रकार चारो ओर का रास्ता बन्द देख डा सुन् का ध्यान सोवियत रूस की तरफ गया। अपने जन्म से ही सोवियत रूस ने सभी देशो की पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग की थी। जारशाही रूस मे चीन के साथ असमान सन्धि करके जो बन्दर दखल किये थे, और पूर्वी चीन के रेलो आदि के बारे मे दूसरे विशेषाधिकार प्राप्त किये थे, उन्हे सोवियत सरकार ने लौटा दिया था।

डा. सुन् के माँगने पर सोवियत रूस ने गालेन जैसे सैनिक तथा बोरोदिन जैसे राजनीतिक विशेषज्ञो को चीन भेजा। उसी समय एशियाई समझकर एम एन राय को भी भेजा गया, जिन्होंने अन्त मे अपने कामो से हमेशा के लिए अपने मत्थे मे कलक का टीका लगाते भारत को भी बदनाम किया।

जून 1923 मे पार्टी की तीसरी काग्रेस ने साम्राज्यवाद और सामन्ती युद्धपतियों के खिलाफ खडे होने की डा सुन की जनवादी नीति का ठीक तौर से मूल्याकन किया। साथ ही उसने कुओ-मिन् ताग को मजूरो-किसानो, निम्न पूँजीपतियो और राष्ट्रीय पूँजीपतियो के क्रान्तिकारी सगठन के रूप मे परिवर्तित करने की सभावना के बारे मे भी ठीक राय कायम की। पार्टी ने दो बडी गलतियो की आलोचना की . एक गलती समर्पणवादी चेन्-तु-श्यु जैसे लोग कर रहे थे, जो समझते थे, कि पूँजीवादी जनवादी क्रान्ति की अगुवाई पूँजीपति वर्ग ही कर सकता है, इसलिए सारा काम कुओ मिन ताग को समर्पित कर देना चाहिए। वह यह भी मानते थे कि क्रान्ति के सफल हो जाने पर सर्वहारा को वर्ग इतना ही लाभ होगा कि उसे कुछ साँस लेने की फुर्सत तथा थोडे-से अधिकार मिल जायेगे। वह यह नही समझ पाते थे कि क्रान्ति की अगुवाई के लिए सर्वहारा वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी को आगे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए, जिससे कि सर्वहारा वर्ग क्रान्ति की विजय से अधिकाधिक लाभ उठा राजनीतिक सत्ता को हाथ मे लेने मे सफलता प्राप्त कर सके, और उसे काम में लाकर देश को समाजवाद की ओर बढ़ाने के लिए अगला कदम उठा सके। चाग कुओ ताउ जैसे लोग 'बन्द दरवाजे' की नीति को स्वीकार करते दूसरी गलती कर रहे थे। उनका कहना था कि कुओ-मिन ताग के साथ सहयोग का दरवाजा बन्द होना चाहिए। क्योंकि कुओ मिन्-ताग के मध्यवर्गी लोग नही, बल्कि मजूरवर्ग ही सफल क्रान्ति कर सकता है, कुओ-मिन्-ताग कभी जनवादी क्रान्ति का साथ नही दे सकती। यह लोग कुओ-मिन-ताग मे कम्युनिस्टो, मजूरो और किसानो के शामिल होने का विरोध करते थे। काग्रेस ने पहले प्रकार के सुधारवादी और दूसरी प्रकार के नामधारी 'वामपक्षी' दृष्टिकोणो को गलत बतलाते हुए निश्चय किया कि कुओ-मिन्-ताग के साथ हमे सहयोग करना चाहिए, और हमारे सदस्यो को उसमे शामिल हो उसे क्रान्तिकारी जनवादी सगठन के रूप में बदलना चाहिए। यह सब करते हुए काग्रेस ने यह भी निश्चय किया कि पार्टी के सगठन और राजनीतिक स्वतन्त्रता को यथापूर्व कायम रखना चाहिए। अभी भी पार्टी काग्रेस किसानो और सशस्त्र सेना के महत्त्व पर ठीक से ध्यान नही दे सकी थी। तृतीय काग्रेस में माओ चे-तुग ने भाग लिया और गलत दृष्टिकोणो का विरोध करते हुए सही दृष्टिकोण अपनाने के पक्ष में अपनी राय दी। काग्रेस ने उन्हे पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का सदस्य चुना।

8
कुओ-मिन्-तांग से सहयोग (1923-26 ई.)

1. संयुक्त मोर्चा

इस समय डा. सुन्-यात-सेन् के नेतृत्व में कुओ-मिन्-तांग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी दोनों चीन की स्वतन्त्रता और वहाँ वास्तविक जनतन्त्रता को स्थापित करने के लिए परस्पर सहयोग कर रहे थे। चीन की सैनिक और आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए सोवियत रूस के विशेषज्ञ भी उनकी सहायता कर रहे थे। इसके फलस्वरूप देश मे एक नई स्फूर्ति आ रही थी। कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल के मुख्य सगठनों तथा चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की कोशिशों से जनवरी, 1924 मे कान्तन में कुओ मिन ताग की पहली राष्ट्रीय कांग्रेस हुई। इस कांग्रेस ने एक घोषणा पत्र जारी किया, जनवादी क्रान्ति के कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई और अपने को पुनर्गठित करने तथा क्रान्तिकारी साँचे में ढालने के लिए अनेक उपायों की रूपरेखा तैयार की। इस समय तक व्यक्तिगत रूप से कम्युनिस्ट भी कुओ-मिन-ताग में शामिल हो गये थे। माओ ने राय दी थी : यदि हम अपने संगठन को अलग कायम रखते व्यक्तिगत रीति से कुओ-मिन-ताग में दाखिल हों, तो हम बुरी तरह से फँसने से ही नहीं बचेंगे, बल्कि कुओ-मिन ताग के विश्वसनीय उग्र तत्त्वों को भी आगे बढाने में सहायता करेंगे। चेन् तू-श्यू उत्साह में इतना उतावला हो गया था कि वह कम्युनिस्ट पार्टी के अलग सगठन को भी अनावश्यक समझता था। माओ का कहना था—यदि हमारी पार्टी छिन्न-भिन्न कर दी गई, तो मजूरों के हक के लिए कौन लड़ेगा ? माओ ने इसी तरह 'वामपक्षी' चेग हाउ ताउ के मत का भी खडन किया। उनके प्रयत्न का यह परिणाम हुआ कि कुओ-मिन्-ताग मे सम्मिलित होकर पार्टी-मेंबरो ने कुओ-मिन्-तांग की कांग्रेस मे महत्त्वपूर्ण भाग लिया और उन्होंने डा. सुन्, कुओ मिन ताग के वामपक्षी लोगों और सारे देश को साम्राज्यवाद, सामन्तवाद तथा कुओ-मिन्-तांग में घुसे उनके दलालों—कुओ मिन ताग के दक्षिणपथी तत्त्वो के खिलाफ सघर्ष को आगे बढाने के लिए बाध्य कर दिया। पार्टी के सुझाव पर उसकी अगुवाई तथा मदद से क्वातुग प्रदेश मे क्रान्तिकारी सरकार और एक क्रान्तिकारी सैनिक विद्यालय कायम किया गया। क्वातुग प्रदेश की प्रतिक्रियावादी शक्तियों के खिलाफ युद्ध छेड दिया गया और साथ ही राष्ट्रीय सभा (एसेम्बली) के आयोजन करते असमान सन्धियों को रद्द करने के लिए देशव्यापी जन आन्दोलन का सूत्रपात कर दिया गया। अब मजूर-वर्ग के आन्दोलन के साथ-साथ किसानो का आन्दोलन भी जोर पकडने लगा।

कम्युनिस्ट राष्ट्रीय कांग्रेस मे कितना प्रभाव रखते थे, यह इसी से मालूम होगा कि कुओ-मिन्-तांग के मुखपत्र का सम्पादक माओ चे-तुग को बनाया गया। सैनिक शिक्षा देने के लिए हम्-प्वा सैनिक विद्यालय की स्थापना हुई, जिसका प्रमुख यद्यपि चाग काई शक को बनाया गया, लेकिन उसका मत्री कम्युनिस्ट तरुण चाउ एन् लाइ (वर्तमान चीन के प्रधानमत्री) बनाये गये। चारो ओर नारा लगने लगा : "असमान सन्धियों को रद्द करो।" "सार्वजनिक चुनाव द्वारा राष्ट्रीय सभा कायम करो।"

अब मजूर-सघ बडा जोर पकडने लगा और कुछ ही दिनों मे उसके पाँच लाख सदस्य हो गये। पार्टी-मेम्बरों की सख्या भी 8 सौ से बढ़कर साढ़े तीन हजार हो गई, किसानो में भी काम होने लगा।

(1) चौथी पार्टी कांग्रेस (1925 ई.) —इसी साल जनवरी मे पार्टी की चौथी कांग्रेस हुई, जिसने अपने पिछले काम का लेखा-जोखा अपने सगठन को मजबूत करने तथा जन-संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए कई महत्त्वपूर्ण निर्णय किये। लेकिन इसके थोडे ही समय बाद पेकिंग मे 12 मार्च, 1925 को चीन के राष्ट्रपति डा. सुन् यात्-सेन की मृत्यु हो गई। सुन् यात्-सेन् के मन मे उस समय एक तरफ सोवियत के मैत्रीपूर्ण हाथों और दूसरी तरफ देश मे निर्लोभ, निर्भीक, दीर्घदर्शी तरुण कम्युनिस्टो को पाकर बड़ी आशा होने लगी थी, साथ ही उनके मन में कुछ शंका भी थी। इसी समय उन्होंने अपने पत्र मे सोवियत रूस के साथियों को लिखा था :

"प्रिय साथियो, मृत्यु-शय्या पर पड़े-पड़े मेरा ध्यान तुम्हारी तरफ तथा हमारी और राष्ट्र के भविष्य की तरफ जाय, यह स्वाभाविक है। अमर लेनिन ने जिसे मुक्तिदान दिया, उस गणराज्य के तुम सूत्रधार हो। साम्राज्यवाद के उत्पीड़न मे पड़े देश आज अगर तुम्हारे रास्ते पर चलेंगे, तो वह भी तुम्हारी तरह दासता, युद्ध और अन्याय के ऊपर निर्मित सामाजिक व्यवस्था के फन्दे से छूट सकेंगे। अपने पीछे जो मै अपनी पार्टी छोड़े जा रहा हूँ, वह तुम्हारे सहयोग से चीन तथा दूसरे गुलाम राष्ट्रो को साम्राज्यवाद के फन्दे से छुडाने मे काम करेगी, यह हमेशा मेरी आशा रही है। इसीलिए मै अपनी पार्टी को आदेश देता हूँ कि वह तुम्हारे साथ बराबर सम्पर्क रक्खे। हमारे देश को तुमने सदा सहायता की है। तुम हमेशा बेधड़क उसकी मदद करते रहोगे, इस बात का मुझे पूरा विश्वास है और इससे मुझे आनन्द है। तुमसे विदा लेते समय एक अभिलाषा प्रकट किये बिना मै नही रह सकता। वह दिन बहुत दूर नही है, जब कि सोवियत रूस तथा उसका साथी तथा मित्र स्वतन्त्र शक्तिशाली चीन मिलकर दुनिया के दलितो के महान् मुक्तियुद्ध को आगे बढ़ाएँगे।

साथी जैसे अभिनन्दन के साथ

सुन यात्-सेन्"

चीन के राष्ट्रपिता की क्या वसीयत थी, यह इस पत्र से प्रकट होती है। लेकिन, अभी घनघोर संघर्ष मे चीन को चौबीस वर्ष बिताने थे, जब कि डा सुन् की वसीयत को पूरा करने मे माओ चे-तुग और उनके साथियो को सफलता मिलनेवाली थी। इसमे शक नही कि आज चीन, रूस और दूसरे लोकशाही गणराज्यो मे रहती मानव-जाति का आधा भाग इस बात की गारटी है कि साम्राज्यवाद के नीचे कराहती जातियो का मुक्ति-युद्ध सफल होके रहेगा।

मई, 1925 मे शाघाइ के मजदूरो ने इग्लैड और जापान के खिलाफ एक बडी हडताल की, जिसके साथ सारे देश म एक जबर्दस्त क्रान्तिकारी तूफान उठ खडा हुआ। 18 मई को शाघाइ मे सूती कपडे के एक जापानी मिल के मालिक ने कू चेग हू नामक एक कम्युनिस्ट कार्यकर्ता को जान से मार डाला। 30 मई को शाघाइ के छात्रो ने उक्त सूती मिल के मजूरो के सगठन मे एक प्रदर्शन किया। शाघाइ को अलग-अलग हिस्से मे बॉटकर वहाँ अग्रेजो, फ्रासीसियो, जापानियो आदि ने अपने राज्य स्थापित कर लिये थे। प्रदर्शन नानकिग सडक से गुजर रहा था, उसी समय अग्रेज पुलिस ने उस पर गोली दागनी शुरू कर दी। कितने ही प्रदर्शनकारी मारे गये और कितने ही घायल हुए। यह 30 मई का हत्याकाड था। इसके बाद शाघाइ और समूचे राष्ट्र मे क्षोभ की लहर दौड गई। कई दिनो तक शाघाइ के मजूरो, छात्रो और दूसरे नागरिको ने इस अत्याचार के विरुद्ध प्रदर्शन किये, जिसमे से कितनो ही पर अग्रेज, अमेरिकन और जापानी पुलिस ने गोलियाँ चलाई, और कितने ही लोग मारे गये। शाघाइ के सभी मजूरो ने आम हडताल की पुकार की, छात्रो ने विद्यालयो मे जाने से इन्कार किया, व्यापारियो ने अपनी दूकाने बन्द कर दी। शाघाइ के साथ साथ सभी नगरो मे यह आन्दोलन फैल गया। जगह-जगह मजूरो, विद्यार्थियो और नागरिको ने मिलकर साम्राज्यवाद विरोधी प्रदर्शन किये, मजूरो ने काम छोड दिया, विद्यार्थियो ने स्कूलो मे जाना बन्द कर दिया सारी दूकाने बन्द हो गई ओर अग्रेजी तथा जापानी माल का बायकाट होने लगा। हागकाग मे भी आम हडताल हुई। उसके बाद वहाँ के मजदूर कान्तन् पहुँचे और उन्होने नाकाबन्दी करके हागकाग को एक निर्जीव बन्दरगाह बना दिया। 23 जून को कान्तन् मे एक जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ, जिसमे मजदूरो और छात्रो के साथ सैनिक विद्यालय के जवान भी शामिल थे। अग्रेज पनडुब्बियो ने गोले बरसाये, जिनसे कितने ही प्रदर्शनकारी हताहत हुए। सारे देश मे साम्राज्यवाद-विरोधी भाव भी बढा। देश ने एकमत हो मॉग की कि हत्यारो को सजा दी जाय, हरजाने अदा किये जायें, माफी मॉगी जाय, चीन की भूमि के जिन खडों को विदेशियो ने अपने हाथ मे कर लिया है, उन्हे चीन को दिया जाय और देश मे विदेशी सैनिको को हटाया जाय। लेकिन इन मॉंगो को पूरा करने के लिए देश के भिन्न-भिन्न भागो के सामन्तवादी युद्धपति तैयार नही थे। वह तो जन-आन्दोलन को कुचलकर साम्राज्य के सामने घुटना टेकने मे ही अपना हित समझते थे। कान्तन् में उस समय क्रान्तिकारी सरकार थी। सिर्फ उसी ने साम्राज्यवाद के खिलाफ इस जन-आन्दोलन का समर्थन किया, जिसके कारण हागकाग और कान्तन् में पूरे सोलह महीनो तक हडतालों का सिलसिला

जारी रहा।

'30 मई-आन्दोलन' ने क्वान्तुग प्रदेश में क्रान्तिकारी भावनाओं को बहुत आगे बढ़ाया, जिससे सारा देश प्रभावित हुआ। सबकी नजर क्वान्तुग और उसकी 'राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना' की ओर थी, सभी उसकी सहायता के लिए तैयार थे।

इस समय माओ बीमार पड़कर हूनान के गॉव में पडे हुए थे। अत्यन्त काम करने के कारण शाघाइ में उनको बुखार आने लगा। जब और तरह से स्वास्थ्य-सुधार होने मे कठिनाई दीख पड़ी, तो उन्हे चिकित्सा और विश्राम करने के लिए गॉव मे लाया गया। लेकिन वहॉ पर भी माओ अपने क्रान्तिकारी काम को कैसे छोड़ सकते थे ? गॉव के लोगों मे नई चेतना पैदा करने से वह बाज नही आ सकते थे। यही पर उन्हे पूरी तौर से अनुभव हुआ कि किसान क्रान्ति की सेना के लिए पक्के सिपाही हो सकते है। एक दिन पन्द्रह-सोलह वर्ष के एक किसान लड़के ने कहा : "मेरा दादा, स्वर्ग के राजकुमार की सेना में मरा और बाप कुओ-मिन्-ताग की सेना मे शामिल हो स्वर्ग गया। हमारे गॉव में कौन है जो दो वर्ष भी निश्चिन्त जिन्दगी बिता सके ?"

"एक तूचुन (सैनिक डाकू) सेना आती है, और गॉव को नष्ट करके अपना झडा गाड़ती है। वह जाती है, तो उसका दुश्मन दूसरा तूचुन आ धमकता है, और गॉव को नष्ट करके पहला झडा उखाड़कर अपना झडा गाड़ता है। इसमें हमारा क्या बना ?" लड़के की मॉ ने कहा।

इस पर माओ ने समझाया : "मॉ, तुम पहले की बाते कर रही हो। अब जो राष्ट्रीय सरकार आवेगी, वह सभी तूचुनों को खतम कर डालेगी और सबको जमीन देगी।"

किसान-माता ने कहा : "जमीन ! जमीन मिले, तो बेटा ! मनुष्य एक नही अपने लाख लड़को की बलि देने के लिए तैयार है।"

लेकिन किसान माता को विश्वास कहाँ हो सकता था कि कभी किसान धरती के मालिक होंगे। माओ ने विश्वास दिलाते हुए कहा कि तुम्हे जमीन जरूर मिलेगी।

किसान स्त्री ने कहा : "मान लो, तुम्हारे जैसे लोगो ने हमे जमीन भी दिला दी, किन्तु तुम तो हवा के बादल, आज आये कल चले गये, फिर जमीदार अपने गुडो को हमारे ऊपर छोड़ेगा। अपने पीहर की बात बतलाती हूँ। मेरे बाप को ताइपिग के समय जमीन मिली थी, मेरे भाइयो को कुछ सुख-चैन भी मिला, लेकिन, ताइपिग राज गया, तो उसके साथ जमीन भी चली गई। हँसिया और दराती लेकर भला कोई बन्दूकधारियो को हरा सकता है ?"

किसान-माता का सोलह वर्ष का लड़का अपने उत्पीड़को से लड़ने के लिए अधीर हो रहा था। मॉ उसे समझाने के लिए ही यह बात कर रही थी। माओ ने लड़के की ओर मुँह करके पूछा : "बतला, तेरे पास इसका क्या जवाब है ?"

"इसका जवाब मेरे पास नही है भैया। मेरे दोस्त भी इसी तरह की बात कहते है। हमारे पास यदि हथियार हो और गॉव की हमारी सेना हो, तो "

'हमारी सेना हो तो ' यह शब्द बार-बार माओ के कानो मे गूँजने लगे। गॉव मे वर्गभेद किस सीमा तक पहुँच गया है, इसका साक्षात्कार माओ को अब हो रहा था। उन्होंने किसानो मे जागृति पैदा करने तथा उनके सगठन को मजबूत करने का निश्चय किया। '30 मई आन्दोलन' ने किसानो मे भी जागृति पैदा कर दी थी। कुछ ही महीनो मे माओ ने बीस से अधिक किसान सभाएँ कायम की, खेतिहर मजूर और गरीब किसान इन सभाओ में बड़े उत्साह से शामिल होने लगे। गॉव के जमीदार घबडा गये और उनकी मदद मे राज्यपाल यावो हेग-ती ने अपनी सेना माओ को पकड़ने के लिए गॉव मे भेजी। लेकिन, किसान अपने नेता की पीठ पर थे। उन्होने पहले ही से चेतावनी दे दी, और माओ हूनान से अन्तर्धान हो कान्तन् पहुँच गये। उस समय तक डा सुन् के मरने के बाद च्याग-काइ-शेक कुओ-मिन्-तांग की सेना का प्रधान सेनापति बन चुका था।

माओ चे-तुग ने 'राजकीय साप्ताहिक' का सम्पादन का काम हाथ मे लिया था; लेकिन उनका दिल बराबर किसान-आन्दोलन को मजबूत करने की ओर था। माओ को किसान-आन्दोलन चलानेवाले कार्यकर्ताओ को शिक्षा

देने का काम सौंपा गया। इससे उन्हे बड़ी प्रसन्नता हुई। 21 प्रदेशो के कर्मी शिक्षाएँ लेने के लिए आये थे। कान्तन् मे आने के थोडे ही दिनो बाद माओ कुओ-मिन्-ताग के प्रचार-विभाग के मुखिया और कुओ-मिन्-तांग की केन्द्रीय समिति के सदस्य भी हो गये। उन्होंने किसानो मे काम करनेवाले कर्मियों के लिए विशेष शिक्षा-क्रम तैयार किया, और उनको शिक्षा ही नही दी, बल्कि भिन्न-भिन्न प्रदेशो मे किसानों की क्या-क्या समस्याएँ हैं, इसे भी जानने के अवसर से फायदा उठाया।

मार्च, 1926 मे च्याग काइ-शेक ने कान्तन शहर मे अकस्मात् कत्लेआम शुरू कर दिया। उस समय माओ कुओ-मिन्-ताग के दफ्तर मे काम करते थे। उस वक्त पार्टी और कुओ-मिन्-ताग मे फिर मेल हो गया था और 1926 ई. के वसन्त में ही वह शाघाइ गये थे। वहाँ मई महीने मे कुओ-मिन्-ताग की दूसरी काग्रेस च्याग काइ-शेक के नेतृत्व मे हुई। माओ को किसान-विभाग की देखरेख के लिए निरीक्षक (इन्स्पेक्टर) नियुक्त किया गया, और वह हूनान चले गये। इसी वक्त के सयुक्त मोर्चे के समय 1926 ई की वर्षा मे उत्तराभिमुख अभियान हुआ था।

2. उत्तरी अभियान

देश की सर्वव्यापी सहानुभूति से फायदा उठाते राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना ने क्वान्तुग के सारे प्रदेश को युद्धपतियो के हाथ से निकालकर सारे राष्ट्र को एकताबद्ध करने के लिए जुलाई, 1926 मे उत्तर की ओर अपनी विजय-यात्रा शुरू की। किसानो की सहायता अभियान की सफलता के लिए आवश्यक थी। माओ चे तुग किसान प्रचार-विभाग-किसान-आन्दोलन की राष्ट्रीय सस्था की बागडोर हाथ मे लेते ही उसमे दिलोजान से लग गये। उन्होने 1926 ई. मे 'चीनी समाज के विभिन्न वर्गो का एक विश्लेषण' के नाम से एक पुस्तक लिखी, जिसमें किसानों और दूसरे वर्गो के बारे मे जो ज्ञान उन्होंने पिछले दो वर्षो मे प्राप्त किया था, उसे पेश करते हुए बतलाया कि क्रान्ति की सफलता के लिए उसके दोस्तों और दुश्मनो को पहचानना जरूरी है। केवल इसी तरह "हम अपने असली दुश्मनों के खिलाफ आक्रमण करने के लिए अपने सच्चे दोस्तो को एकजुट कर सकते हैं।" आगे माओ ने (1) जमींदार और विदेशी पूंजी के पत्तलचट वर्गो (2) पूंजीपति वर्ग, (3) मझोले किसानों और निम्न पूंजीपति, (4) गरीब किसानो और अर्ध सर्वहारा वर्ग–चीन की इन पाँच प्रमुख सामाजिक शक्तियो की–राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि "सारे युद्धपति, नौकरशाह, विदेशी पूँजी के पत्तलचट पूंजीपति और साम्राज्यवादियो के साथ षड्यन्त्र मे शामिल बडे जमीदार एव उनके साथ सम्बद्ध प्रतिक्रियावादी बुद्धिजीवी हमारे दुश्मन है। औद्योगिक सर्वहारा-वर्ग हमारी क्रान्ति की अगुवा ताकत है। सारा अर्ध दास-सर्वहारा वर्ग और निम्न पूंजीवादी वर्ग के लोग हमारे घनिष्टतम मित्र है। जहाँ तक ढुलमुल मध्यवर्गियो (राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग) का सम्बन्ध है, उनका दक्षिणपथी तत्त्व हमारा पक्का दुश्मन है और वामपक्षी तत्त्व हमारा पक्का मित्र। लेकिन हमे उनके प्रति बराबर सजग रहना है, जिससे वह सारे मोर्चे को छिन्न-भिन्न न कर सके।"

इस प्रकार माओ ने किसानो और क्रान्ति के सहायक दूसरे तत्त्वो के महत्त्व को बतलाया।

(1) **सर्वत्र विजय**–राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना का अभियान बड़ी सफलतापूर्वक उत्तर की ओर आगे बढता गया। सारा देश युद्धपतियों और उनके आका साम्राज्यवादियो के खिलाफ उठ खड़ा हुआ था, इसलिए युद्धपतियो की सेनाएँ क्रान्तिकारी सेना के सामने टहर नही सकी। सितम्बर, 1926 मे हानकाउ पर अधिकार हुआ। मार्च, 1927 मे शाघाइ के मजदूर क्रान्तिकारी सेना के साथ तालमेल रखते अपने नगर पर कब्जा करने के लिए उठ खडे हुए।

चाउ एन्-लाइ–चाउ एन्-लाइ ह्म-पु-आ सैनिक विद्यालय के सेक्रेटरी थे, यह हम बतला चुके हैं। वह मचू-वश के एक बडे अफसर तथा प्रभावशाली खानदान मे पैदा हुए थे। उनका बाप एक प्रतिभाशाली शिक्षक और माँ भी सुशिक्षिता थीं। चीन के भावी प्रधानमन्त्री चाउ एन्-लाइ ने पहले स्कूल मे पढाई की, फिर अमेरिकन पादरियों की युनिवर्सिटी मे पढते अंग्रेजी सीखी। जब युद्ध के बाद साम्राज्यवादी अत्याचारो और जापान की माँगो के

विरुद्ध विद्यार्थियों में जबर्दस्त विद्रोह की आग भड़की, तो चाउ ने विद्यार्थियो का नेतृत्व किया और गिरफ्तार होकर जेल में ठूँसे गये। फिर 'काम करो और पढ़ो' के नारे से प्रभावित हो वह फ्रास पहुँचे और वहाँ उन्होंने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की शाखा सगठित की। दो वर्ष तक फ्रास मे काम करते और पढते उन्होने मार्क्सवाद तथा विश्व-राजनीति का अध्ययन किया। फिर वहाँ से जाकर वह एक वर्ष तक जर्मनी मे पढते रहे। 1904 ई. में चीन लौटने पर उन्होंने कान्तन मे डा. सुन से मुलाकात की। सैनिक विद्यालय के खुलते ही 26 वर्ष के इस तरुण को उसका सेक्रेटरी बना दिया गया। गालेन (जेनरल ब्लूखैर) का इस तरुण पर बहुत विश्वास था, किन्तु साथ ही विद्यालय का प्रमुख च्याग काइ-शेक उनसे जला-भुना करता था। जिस वक्त क्रान्तिकारी सेना ने उत्तर की ओर अपना अभियान शुरू किया, उसी समय युद्धपतियों का प्रभाव हटाने के लिए चाउ एन्-लाइ को शांघाइ भेजा गया। मजूरों की मदद से ही यह काम हो सकता था, जिसके लिए चाउ को अधिक योग्य समझा गया। चाउ ने तीन महीने के भीतर ही वहाँ के छः लाख मजूरो का एक जबर्दस्त संगठन तैयार किया। मजूरों ने आम हड़ताल कर दी। हड़ताल पूरी सफल हुई, किन्तु राजनीतिक शक्ति को लेने मे निहत्थे मजूर सफल नही हो सके। दूसरी हड़ताल भी की गई, लेकिन उससे भी काम नही बना, और केवल कितने ही मजूरो ने अपने प्राणों से हाथ धोये। अब चाउ का खयाल मजूरो की स्वयसेवक सेना सगठित करने की ओर गया, जिसमे पाँच हजार मजूर शामिल हो गये और दो हजार मजूर गुप्तरीति से कुछ सैनिक शिक्षा प्राप्त करने मे भी सफल हो गये। पिस्तौल और कुछ दूसरे हथियार इकट्ठा करके तीन सौ मजूरो को हथियारबन्द कर दिया गया। 21 मार्च, 1927 को फिर आम हड़ताल की गई। शाघाइ के सभी कारखाने और दूसरे स्थानों मे काम करनेवाले मजूरो ने काम छोड दिया। हथियारबन्द मजूरों ने सड़को पर मोर्चाबन्दी कर डाली, थानो, हथियारखानो, फिर फौजी पडावो पर कब्जा कर लिया। नये प्राप्त हथियारों से पाँच हजार मजूर लैस करके उनकी छह बटालियन सेना तैयार कर दी गई और शाघाइ मे 'नागरिकों की सरकार' कायम हो गई। इस सारे कार्य का सूत्रधार तरुण चाउ एन्-लाइ था, जिसने सेना की कोई बाकायदा शिक्षा नही पाई थी, लेकिन जरूरत ने उसे एक कुशल सैनिक-विशेषज्ञ बना दिया। आखिर सैनिक विद्यालय का सेक्रेटरी सैनिक विज्ञान से अछूता नही हो सकता था।

इसी साल जनवरी मे माओ चे-तुग ने हूनान के किसानों के जबर्दस्त सघर्षो का अच्छी तरह अध्ययन किया। फिर उन्होंने पार्टी के प्रथम क्रान्तिकारी गृहयुद्ध के समय लिखे गये अपने सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण ग्रथ 'हूनान मे किसान आन्दोलन के बारे मे किये गये अनुसन्धान की रिपोर्ट' को लिखा। इस ग्रथ मे माओ ने किसानों के महत्त्व की अवहेलना करनेवालो की खबर लेते हुए उनको एकताबद्ध करने तथा उससे काम लेने के बारे मे जोर देते हुए कहा : "बहुत थोडे ही समय मे चीन के केन्द्रीय, दक्षिणी और उत्तरी प्रान्तो मे लाखोलाख किसान उठ खडे होंगे। वे तूफान की भाति इतनी अदम्य तेजी और ताकत से आगे बढ़ेंगे कि कोई बडी से बडी शक्ति भी उन्हे रोकने मे सफल नही हो सकेगी। वे अपनी मुक्ति के लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ते हुए रास्ते की सभी बाधाओ को उखाड फेकेगे और साम्राज्यवादियों, युद्धपतियों, भ्रष्टाचारियो और काले-सफेदपोशो को कब्रिस्तान की ओर ढकेल देंगे।"

पार्टी के तीस साल के इतिहास मे इस ग्रथ के महत्त्व के बारे मे लिखा गया है : (1) यह चीनी क्रान्ति मे किसानो की भूमिका का पूर्ण लेखा जोखा पेश करता है, (2) यह देहाती क्षेत्रो मे किसानो की राजनीतिक सत्ता और उनकी हथियारबन्द सेनाएँ कायम करने की जरूरत को बताता है, (3) यह किसान-वर्ग के विभिन्न स्तरो का विश्लेषण करके बतलाता है कि चीन की आबादी मे सबसे अधिक सख्या रखनेवाले गरीब किसानो के भीतर अत्यन्त क्रान्तिकारी शक्ति है, (4) यह जनता को जोरों के साथ और पूरे देश मे मैदान मे लाने, सगठित करने और उस पर भरोसा रखने के क्रान्तिकारी सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। इस ग्रथ ने चीन के कम्युनिस्टों को किसानो के बीच काम करने के लिए जबर्दस्त पथ-प्रदर्शन का काम दिया। लेकिन, उस समय इससे इतना फायदा नही उठाया जा सका, क्योकि पार्टी का नेतृत्व चेन् तू-श्यू जैसे अवसरवादियों के हाथ में था।

24 मार्च, 1927 को क्रान्तिकारी सेना ने नानकिंग पर अधिकार कर लिया। इस पर ब्रिटेन, अमेरिका, जापान, फ्रास और इताली के युद्धपोतों ने नगर पर बमबारी शुरू कर दी।

अब तक च्यांग काइ-शेक ने अपने को नंगा कर दिया था। वैसे मार्च, 1826 में ही उसने एक चीनी जंगी जहाज के सेनापति को कम्युनिस्ट कहकर गिरफ्तार कर लिया था, साथ ही उसने यह भी हुकुम निकाला था कि सेना के वह सभी कार्यकर्ता अपने पदो से हटा दिये जायँ, जो कम्युनिस्ट हैं या जिन पर वैसे होने का सन्देह है। उस समय कुओ-मिन्-तांग की चार सेनाओं मे से तीन पर कम्युनिस्टों का पूरी तरह से प्रभाव था और चौथी भी अछूती नही थी। बहुत से कम्युनिस्ट च्याग की आज्ञा का विरोध करना चाहते थे, लेकिन चेन् तू-श्यू ऐसा नही चाहता था और उसने एकता के नाम पर च्याग की आज्ञाओ को स्वीकार किया। इसी प्रकार, 1927 ई. की गर्मियो मे च्यांग की तानाशाही के विरुद्ध वूहान् मे कुओ-मिन्-ताग के आधे आदमियों ने अपनी अलग सरकार बना ली थी। वूहान नगर मे सशस्त्र मजूर प्रतिरक्षा का काम कर रहे थे, लेकिन वूहान-सरकार के कहने पर चेन् तू-श्यू ने मजूरो से हथियार रखवा दिया। इसी समय एक युद्धपति ने वूहान सरकार का विरोध करके चागशा नगर पर अधिकार कर लिया, जिसके विरोध मे एक लाख किसानों ने 'वूहान जनवादी सरकार' के नाम से चागशा को घेर लिया। वूहान की निम्न पूँजीवादी सरकार इससे घबड़ा उठी और कम्युनिस्टों से माँग की कि वह किसानो को घर लौटने के लिए कहे। चेन् ने वैसा ही किया। किसानों को इससे बडी निराशा हुई और नेताओं के बिना उनकी शक्ति जल्दी ही छिन्न-भिन्न कर दी गई। और फिर जुलाई, 1927 मे वूहान मे कम्युनिस्टो पर प्रहार आरम्भ हो गया।

उत्तरी अभियान बहुत हद तक सफल रहा। 11 जुलाई (1927 ई) को चागशा युद्धपति के हाथ से निकला। अगस्त मे एक समय एक युद्धपति के नीचे काम करते फेंग यु-शियाग भी कुओ-मिन ताग से आ मिला। सितम्बर मे हाग-काउ पर अधिकार हो गया। अक्टूबर मे एक वूहान के तीनों शहरो पर कुओ-मिन्-ताग का झडा लहराने लगा। 1926 ई की इन विजयो के बाद मार्च, 1927 मे अभियानिक सेना शाघाइ पहुँची, जिसमे तीन दिन पहले ही शाघाइ के मजूरो ने प्रतिगामी शासन को हटाकर नगर को स्वतन्त्र कर लिया था।

लेकिन, च्याग काइ-शक मजूरो की इस उदीयमान शक्ति को कैसे देख सकता था ? मजूर स्वागत करने के लिए आये और च्याग उन पर भडक उठा। च्याग और उसके सम्बन्धी जमीदार थे जो मजूरो-किसानों के भारी शत्रु थे। इसलिए, च्याग किसी तरह के जमीन-सम्बन्धी सुधार को अपने हित के लिए भारी घातक समझता था। उसकी सेना को पैसा देनेवाले व्यापारी और उद्योगपति थे, जो मजूरो को आगे बढते देखना नही चाहते थे। मजूर और किसान का पक्ष ले या निहित स्वार्थो की तरफ आँख मूँदकर च्याग सामन्ती जमीदारो और चीनी उद्योगपतियो की सहायता से वचित हो सकता था। विदेशी साम्राज्यवादी भी अब समझने लगे : जिस तरह एक बार हमे केवल अपने स्वार्थो के खयाल से भवितव्यता के सामने सिर झुकाते हुए युवान शि-काइ को स्वीकार करना पडा था, वही बात हमे चीन के 'बलवान पुरुष' च्याग काइ-शेक के सामने करनी होगी, नही तो बोल्शेविको का खतरा यहाँ भी साफ दिखलाई पड रहा है। उन्होंने इसी खयाल से हाग-काउ और क्यूकॅग मे प्राप्त अपने विशेषाधिकारो को लौटा दिया और कहने लगे, चीन का एकीकरण होना चाहिए।

11 फरवरी, 1927 को कुओ-मिन्-ताग की एक निजी सभा में च्याग ने कम्युनिस्टो की कड़ी आलोचना की थी। जब नानकिंग पर अंग्रेज, अमेरिकन, जापानी, फ्रेंच एव इतालियन युद्धपोतों ने गोलाबारी की, उस समय च्याग पैतरा बदलने का विचार कर रहा था। शाघाइ मे अत्र मजूरो की सफलता को देखकर उसने अपना अंतिम निश्चय कर लिया।

(2) कम्युनिस्टों के बारे में च्यांग--च्याग कम्युनिस्टों का घोर शत्रु रहा। एक स्वार्थी तथा देश के साथ विश्वासघात करनेवाले नेता से यही आशा की जा सकती है। च्याग ने कुओ मिन् ताग और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच जो बिगाड़ हुआ था, उसके बारे मे लिखा है* :

"कम्युनिस्ट व्यक्तिगत हैसियत से कुओ-मिन्-ताग मे शामिल हुए थे। वह कुओ-मिन्-ताग के प्रति भक्ति बनाये रखने की अपनी पवित्र प्रतिज्ञा को नही निभा सके। साथ-साथ वे राष्ट्रीय क्रान्ति को जनतन्त्रात्मक पूँजीवादी

* 'चीन का भाग्य', पृष्ठ 100-101

क्रान्ति मानते थे। उन लोगो ने राष्ट्रीय क्रान्ति की प्रगति का लाभ उठा उसे सर्वहारा सामाजिक क्राति के रूप में बदलना चाहा। उनकी राय मे कुओ-मिन्-ताग कोई राजनीतिक पार्टी नही, बल्कि एक राजनीतिक सगठन था, जिसमे विभिन्न वर्गों के लोग शामिल थे। कुओ मिन्-ताग की प्रगति मे जो सुयोग पैदा हो गया था, उसका उपयोग वे अपने सगठनो को मजबूत बनाने मे करना चाहते थे। इन बातो को तो छन् तु-शिउ (चेन् तु-शिउ), अन्य कम्युनिस्ट नेताओ ने खुले आम तथा बराबर 'शिन् छिग निएन्' (नवयुवक) 'शियाग ताव' (मार्गदर्शक) और दूसरी पत्रिकाओ मे प्रकट किया है। कम्युनिस्टो के कार्यो की ओर देखने मे मालूम होता है कि उन्होने कुओ-मिन्-ताग के दक्षिणपक्षीय और वामपक्षीय सदस्यो के बीच झगडा लगा दिया। जनसाधारण के बीच उन्होने सामाजिक क्रान्ति द्वारा वर्ग सघर्ष का आन्दोलन मचाया। वर्ग सघर्ष का नारा लगा उन्होने मजदूरो और किसानो को अपना हथियार बना उन पर कम्युनिस्ट पार्टी का एकाधिकार जमाया। इस प्रकार उन्होने उत्पादन ही बन्द करा दिया। दूसरी आर्थिक ओर सामाजिक बातो का तो इसी से अन्दाज लगाया जा सकता है कि जो विद्यार्थी ध्यानपूर्वक पढने मे लगे रहे, उन पर 'क्रान्ति-विरोधी' होने का कलक लगाया और जो अनियन्त्रित तथा उच्छृखल जीवन व्यतीत करते थे, उनको 'प्रगतिवादी युवक' कहकर प्रशसा की। कम्युनिस्टो ने युवको से अपने परम्परागत गुणो को छोड देने की सलाह दी। यहाँ तक कि उन्होने औचित्य, न्यायनिष्ठ, चारित्र्य और प्रतिष्ठा की भावना को फूहड तथा मातृ पितृ भक्ति, भाईचारे राजभक्ति और विश्वासपात्रता की भावना को सडा गला बताया। इस प्रकार उन्होने अपने को इतना नीचे गिरा दिया कि उनका ऊपर उठना प्राय असभव हो गया। इसके अतिरिक्त, सन् 1931-33 (गण सवत् 20-25) के बीच कम्युनिस्टो ने दक्षिण चिआग सि (क्याग सी), पूर्व हूनान, पश्चिम अन् हेइ, दक्षिण हूनान, पश्चिम हू पइ, स चुआन् (जेचुआन), शन सि और दूसरी जगहो पर तलवार की नीति अपनाई। वे जहाँ कही भी गए, उन्होने देश को उजाड डाला तथा लोगो को लूट लिया। अब चूँकि घाव भर गया है, इसलिए हम उस पर विचार कर सकते है। जब हम इन सबका कारण ढूँढते हे, तो हमे पता चलता है कि इनका कारण 'हान् ख्वउ नान् चिग (हान् हाउ नानकिंग) फूट' जैसी दुखद घटना थी। इस नाटक का अभिनय पूर्ण रूप से विश्वासघाती वाग चिग वइ द्वारा किया गया था जिससे राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना मे फूट पड गई। इस आतरिक विभेद के कारण उत्तरी अभियान की प्रगति जहाँ की तहाँ रुक गई—राष्ट्रीय क्रान्ति मे हम लोगो को यह सबसे बडी शिक्षा मिली और राष्ट्रीय क्रान्ति के इतिहास की यह सबसे दुखद घटना भी है।"

3 सयुक्त मोर्चा भग

च्याग काइ-शेक प्रतिगामी स्वार्थो का प्रतिनिधि था यह जानने मे चीन को नोचकर खानेवाले साम्राज्यवादियो को देर नही लगी, और उसे अपने हाथ मे करने मे उन्हे कोई दिक्कत नही हुई। च्याग शाघाइ के मजूरो की सफलता से बौखला गया था जिन्होने उसमे बिना पूछे वहाँ नया शासन स्थापित कर लिया।

(1) शाघाइ-हत्याकाड (1927 ई)—12 अप्रैल 1927 को च्याग एकाएक शाघाइ के मजूरो पर टूट पडा। कम्युनिस्टो के खिलाफ जहाद मे भला विदेशी पूँजीपतियो को क्यो न प्रसन्नता होती ? उस दिन च्याग की सेना ने पाँच हजार मजूरो और विद्यार्थियो के खून से अपने हाथ रँगे। चीन मे फिर से गृहयुद्ध शुरू हो गया। इस हत्याकाण्ड मे कितने ही प्रभावशाली नेता और क्रान्तिकारी नेता मारे गये। शाघाइ का ही हत्याकाड सारे देश मे फैल गया। और सब जगह कम्युनिस्ट होने के बहाने किसानो, बुद्धिजीवियो को जरा-सा भी सन्देह होने पर गाजर-मूली की तरह काटकर फेका गया। यह बडी परीक्षा का समय था। 'समूचा देश एकाएक अँधेरे मे डूब गया। केवल राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग ही नही बल्कि ऊपरी स्तर के कितने ही निम्न पूँजीपति भी क्रान्ति से अलग हो रहे। पार्टी मे शामिल निम्न पूँजीपति वर्ग से आये कितने ही बुद्धिजीवियो ने दृढता के अभाव के कारण पार्टी से अपना नाता तोडने की घोषणा कर दी।" लेकिन चीन की बहादुर कम्युनिस्ट पार्टी और क्रान्तिकारी जनता साथी माओ चे-तुग के लेख 'मिली जुली सरकार' के अनुसार "न तो भयभीत हुई, न पराजित की जा सकी और न उसे नष्ट ही किया जा सका। वह फिर से उठ खडी हुई, खून के दागो को उसने पोछ

डाला, मारे गये अपने साथियों को दफनाकर उसने फिर अपनी लड़ाई जारी रक्खी।"

देश और क्रान्ति को धोखा देनेवाले च्यांग काइ-शेक और कुओ-मिन्-ताग ने देश की सारी समस्याओं को जैसा-का-तैसा छोड़कर अब पूरी तरह पुराने प्रतिक्रियावादी शासको और साम्राज्यवादियो के हाथ में खेलना शुरू किया। साम्राज्यवादी चतुर खिलाड़ी थे। उन्होने दिखलावे के लिए कस्टम-सम्बन्धी तथा दूसरे विशेषाधिकारों को छोडकर च्यांग को बहलाया। उनकी उन्हे जरूरत भी नही थी, क्योकि च्याग और कुओ-मिन्-ताग तो अब उनके हाथ की कठपुतली थी। च्याग ने अब अमेरिका से ज्यादा सॉठ-गॉठ करनी शुरू की। लेकिन, च्याग को अकेला शासन करने के लिए युद्धपति छोड कैसे सकते थे ? उन्होंने फिर आपसी लड़ाइयाँ शुरू कर दी। लड़ाइयो मे जो अपार जन-धन नष्ट हो रहा था, च्याग, युद्धपति और उनके भाई-बन्धु गुलछर्रे उडाने के लिए जो भारी सम्पत्ति लूट रहे थे, उन सबका बोझ मजूरो और किसानों के ऊपर पड रहा था। च्याग अब राष्ट्रीय पूँजीपतियों के हितो का रक्षक नही, बल्कि उनके विरुद्ध साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और विदेशी पूँजी की जूठ खानेवालो के हितो का सरक्षक बन गया। च्याग की इस नीति से चीन मे एक और तरह का पूँजीवाद विकसित हुआ, जिसे पीछे 'नौकरशाही पूँजीवाद' कहा जाने लगा, जो था "विदेशी पूंजी का पत्तलचट, सामन्ती, सैनिकवादी, इशारेदार पूँजीवाद।" अब च्याग नौकरशाही और विदेशी पूँजीवाद के बीच केवल मजदूर किसान ही नही, बल्कि राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग भी पिसने लगा। इस समय की स्थिति के बारे मे 1928 ई. मे माओ ने कहा था :

"राजनीतिक या आर्थिक दृष्टि से जरा भी छुटकारा पाये बिना समूचे देश के मजूर, किसान और आम लोग, यहाँ तक कि पूँजीपति वर्ग भी अभी तक प्रतिक्रियावादी शासन के बगल मे फँसे हुए थे।"

—"चीन की लाल राज्यसत्ता कायम रहना क्यों सभव है ?"

(2) पाँचवीं पार्टी-कांग्रेस (1927 ई.)—जिस महीने मे च्याग ने शाघाइ मे कत्लेआम किया था, उसी अप्रैल के अन्तिम दस दिनों मे पार्टी काग्रेस वूहान मे (25 अप्रेल का शुरू) हुई। पार्टी छह वर्ष की हो रही थी, लेकिन अभी उसके अनुभव उतने पक्के नही थे। चेन् तू श्यू का ज्ञान किताबी था और वह उन परिस्थितियों मे ठीक से मार्ग-प्रदर्शन नही कर सकता था। माओ ने चेन की नीति का विरोध किया। चन् के मार्ग-दर्शन ने असफलता का मुँह देखा था, इसलिए अब उसका साहस घट गया था, पार्टी के लोग समझने लगे थे कि चेन् का नेतृत्व बहुत महँगा पड़ेगा। तब भी काग्रेस मे हानुकाउ मे चेन अभी माओ को आगे न आने देने मे सफल हुआ। चू च्यु पाइ और जेन् पी-शी जैसे कुछ साथियो ने चेन के काम की आलोचना की, लेकिन वह अपनी ओर से कोई ठोस कदम उठा नही सके। इतना होने पर भी कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल के सही निर्देशो को पाँचवी काग्रेस ने मजूर किया। तो भी, अभी रस्सी की ऐंठन वैसी ही बनी रही। अवसरवादिता की निन्दा तथा भूमि-सुधार सम्बन्धी प्रस्ताव भी पास किये गये, लेकिन तो भी काग्रेस ने चेन् को ही पार्टी का प्रधानमन्त्री चुना।

इसका परिणाम जैसा होना था, वैसा ही हुआ। पार्टी अपनी कमियो को दूर करके मजबूत नही बन सकी और दुश्मनों को उस पर प्रहार करने का मौका मिला। काग्रेस के थोड़े ही समय बाद 21 मई को चागशा मे सैनिक अफसर हू क-श्याग ने आक्रमण कर कितने ही क्रान्तिकारियो को मार डाला। 15 जुलाई को हानकाउ मे स्थित कुओ-मिन ताग ने कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बन्ध विच्छेद करने का बाकायदा निश्चय किया।

इस प्रकार, 1927 ई. मे कम्युनिस्ट पार्टी का पहला क्रान्तिकारी युग खतम हुआ, जिसके साथ सयुक्त मोर्चा ही खतम नहीं हुआ, बल्कि पार्टी को भी बहुत क्षति हुई। इस समय पिछले सालों के काम का निष्कर्ष निकालते हुए हू चियाओमू ने लिखा है* :

"(1) आज के चीन मे जनवादी क्रान्ति का बीडा उठाने के लिए मजदूर-वर्ग की अगुआई मे सयुक्त मोर्चे का होना लाजिमी है, बिना इस सयुक्त मोर्चे के क्रान्ति मे जीत प्राप्त नही की जा सकती और यह कि सयुक्त मोर्चा असफल होगा अगर इसका नेतृत्व मजदूर-वर्ग के हाथों मे न हो, पूँजीपति वर्ग के हाथो मे रहेगा।

(2) चीन की जनवादी क्रान्ति मे मजदूर-वर्ग के नेतृत्व की केन्द्रीय समस्या किसानो की समस्या थी, इसलिए

* 'चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के तीस वर्ष', पृष्ठ 23

क्रान्तिकारी साथी के रूप में किसानों को अपनी ओर करके ही क्रान्ति को विजयी बनाया जा सकता है।

(3) हथियारबन्द प्रतिक्रान्ति के मुकाबले मे हथियारबन्द क्रान्ति को खड़ा करना ही चीन में क्रान्ति का मुख्य रूप हो सकता है, बिना हथियारबन्द क्रान्तिकारी सेनाओं के प्रत्येक चीज हाथ से जाती रहेगी।"

9

चीनी सोवियत (1923-30)

च्याग की पीठ पर स्वदेशी सामन्त और विदेशी पूंजीवाद के पत्तनचट एव साम्राज्यवादी थे, लेकिन इन छह वर्षों मे अपनी सूझ, स्वार्थत्याग और कर्मण्यता द्वारा चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का असर दूर दूर तक फैल गया। यदि चन की दिवालिया नीति पार्टी को डुबो देने के लिए तैयार थी, तो पार्टी मे माओ चे-तुग, चाउ एन्-लाइ चू तेह, एह पिग, हो लुग जैसे पक्के कम्युनिस्ट भी थे। च्याग के हत्याकाण्ड को देखकर एक अगस्त को चाउ एन लाई, चू तेह, एह पिग, हो लुग, आदि साथियो ने उत्तरी अभियान के पार्टी द्वारा प्रभावित तीस हजार सैनिकों को लेकर नानचाग और क्याग सी के प्रदेशो पर हथियारबन्द कार्रवाई की। उन्होंने एक बड़ी गलती यह की कि क्याग सी प्रदेश मे उस समय हो रहे किसान आन्दोलन से अपना सम्बन्ध जोडकर अपनी स्थिति को मजबूत नही किया, बल्कि वह दक्षिण म क्वान् तुग की ओर बढते गये। क्वान्-तुग प्रदेश के पूर्व मे शत्रु ने उनका जबर्दस्त मुकाबला किया, जिसके कारण भारी हार हुई और कम्युनिस्ट सेनानायक अपनी सेना के थोडे ही भाग को बचा सके। अप्रैल मे शुरू हुए कत्लेआम मे पार्टी के बहुत से अत्यन्त योग्य क्रान्तिकारी मजदूर और नेता, किसान और बुद्धिजीवी बलिदान होकर पार्टी को बहुत कमजोर कर चुके थे। लेकिन, च्याग की और उसकी कुओ-मिन् ताग पार्टी के पीछे अब जनता का बल नही रह गया था। देश की पीसी जाती बहुसख्यक जनता अब एकमात्र कम्युनिस्ट पार्टी से ही भले दिनो की आशा रख सकती थी। पार्टी कमजोर थी, लेकिन रक्त-बीज की तरह एक सिर गंवाने पर सौ सिर उसके लिए पैदा होने को तैयार थे। च्याग का प्रभाव अपनी हथियारबन्द सेनाओं के बल पर केवल नगरो तक ही सीमित था। वह देश के विशाल देहाती इलाके मे अपने शासन को फैला नही सकता था। ऊपर से कुओ-मिन ताग अब डाकू युद्धपतियों के आपसी सघर्ष का अखाडा बन गई थी। देहात मे किसान जमीदारों के खिलाफ थ और वह सगठित होकर उनसे जमीन मॉग रहे थे। इतना बड़ा किसान जनसाधारण इस बात के लिए तैयार था कि उसको योग्य नेतृत्व देकर प्रतिक्रान्ति को दबाया और क्रान्ति को आगे बढाया जा सके। किसान उस समय क्रान्ति के लिए कितना महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा कर सकते थे, इसका चेन् तू श्यू क बस की बात नही थी।

पार्टी के कर्मियो के सर्वनाश का डर सिर पर था। शहरो मे हर जगह खून की होली खेली जा रही थी। पार्टी के लिए यह था कि वह अपने कुछ सगठनो को देहाती जिलो मे स्थानान्तरित कर दे, जहाँ प्रतिक्रान्ति की ताकते अपेक्षाकृत कमजोर थी, और क्रान्ति की ताकतें अच्छी तरह अपने पॉव जमाये थी। वहाँ जाकर वह भूमि-सुधार के पथ पर किसानो को आगे बढाने तथा छापामार युद्ध को चलाने मे किसानों की अगुवाई कर सके। पार्टी के सगठन का दूसरा हिस्सा, जो नगरो मे था, उसे अन्तर्धान (अडरग्राउड) कर देना था। छिपकर काम करने से ही अब कार्यकर्ताओं तथा पार्टी सगठनो को बचा आम जनता की क्रान्तिकारी शक्तियो को फिर से खडा किया जा सकता था। इसके बाद दुश्मन के भीतरी विरोधो और कमजोरियों से लाभ उठाते क्रान्तिकारी आन्दोलन को पुनरुज्जीवित करने के लिए दोनो भाग एक-दूसरे से तालमेल करके क्रांतिकारी सघर्ष को आगे बढ़ा सकते थे।

(1) चेन् तू-श्यू का पतन (1927 ई.)—जब तक चन तू-श्यू पार्टी का प्रधानमत्री था, तब तक गलतियों से मुक्त नही हुआ जा सकता था, इसलिए जुलाई, 1927 मे वूहान के कुओ-मिन्तागी जब पार्टी के खिलाफ

हो गये, तो पार्टी की नीति को फिर से निर्धारित करने के लिए 7 अगस्त को पार्टी ने एक अत्यावश्यक कान्फरेंस बुलाई। कान्फरेस ने चेन् की गलतियो को बतलाते हुए उसे पार्टी के नेतृत्व से हटा दिया। लेकिन, पूरी तौर से आगे का रास्ता साफ करने का काम तब तक नही हो सका, जब तक कि जुलाई, 1928 मे छठी पार्टी-काग्रेस ने फिर से विस्तारपूर्वक चेन् की गलतियो को नही जॉचा-परखा। अभी भी चेन् अपनी गलतियो को मजूर करने के लिए तैयार नहीं था। उसने और उसके समर्थको ने उस समय कहा कि पूँजीपति-वर्ग की चीन के साथ चीन मे पूँजीवादी-क्रांति पूरी हो चुकी है, पूँजीपति-वर्ग अपना शासन कायम कर चुका है। वह जरूर अपने शासन को मजबूत बना लेगा। अब चीन के सर्वहारा-वर्ग को क्रान्तिकारी सघर्ष का रास्ता छोड़ देना चाहिए और उसे वैधानिक कार्यकलाप की ओर अपना मुँह मोड़ना चाहिए तथा भविष्य मे उदय होनेवाली समाजवादी क्रान्ति की प्रतीक्षा करनी चाहिए। तब से चेन् तु-श्यू और उसके सहायकों ने त्रोत्स्कियायियो के साथ सहयोग का प्रतिक्रियावादी पथ स्वीकार किया और वे पार्टी-विरोधी कार्रवाइयाँ करने लगे, इसलिए अगले साल (1929 ई) मे उसे पार्टी से निकाल दिया गया।

अपनी 7 अगस्त की कान्फरेस मे पार्टी ने शरद् के फसल बटोरने के दिनो मे किसानो को विद्रोह करने के लिए आवाहन किया। कान्फरेस के बाद माओ चे-तुग ने पश्चिमी क्याग-सी प्रदेश के भिन्न-भिन्न इलाको और हूनान-प्रदेश के पूर्वी इलाको का दौरा किया और किसानो, मजूरो तथा उत्तरी अभियान के सैनिको के एक हिस्से का विद्रोह चलाने मे पथ-प्रदर्शन किया। हूनान और क्याग सी प्रदेशो की सीमा पर इसी समय मजूरो और किसानो की क्रान्तिकारी सेनाओ का निर्माण हुआ, जिन्होंने शत्रुओं के साथ लड़ाई की।

(2) मृत्यु के मुख में- सितम्बर महीने मे माओ हूनान-प्रदेश मे किसान सगठन को मजबूत करते उसे आगे बढ़ा रहे थे। उसी समय जैसाकि अभी बतलाया, किसानो और कमकरो की फौज की पहली टुकडी सगठित हुई। माओ ने इस फौज के तैयार करने मे किसानो के अतिरिक्त हान् याग के खान-मजदूरो तथा पहले की सेना के सैनिको को भी भरती किया था। उन्होने इस टुकडी का नाम 'किसान-मजूर प्रथम सेना का प्रथम डिवीजन' रक्खा। पहली रेजिमेट खान-कमकरो की थी। दूसरी हूनान-प्रदेश के पिग कियाग, ल्यू-याग, ली-लिग और दो जिला के किसानो से तैयार की गई थी। तीसरी रेजिमेट को वाग चिग-वइ के विरुद्ध सघर्ष करने के लिए वूहान से तैयार किया गया। माओ ने यद्यपि यह सेना-सगठन हूनान-प्रान्त की कमेटी की मजूरी से किया था, लेकिन केन्द्रीय कमेटी ने इसका विरोध किया। जिस वक्त माओ कमकर किसानो की सेना का सगठन करते हाग याग के खान मजूरो और जिले के किसान गारदो के बीच मे थे, इसी समय कुओ मिन्-ताग की मिन्-तुवान टुकडी ने उन्हे पकड लिया। उस समय च्याग काइ-शेक ने जमीदारो को भी छोटा मोटा युद्धपति बना दिया था। यदि एक तरफ किसान उनसे सघर्ष करने के लिए सगठित थे, तो उन्होंने भी अपना सशस्त्र सगठन कर लिया था। मिन्-तुवान सेना के आदमी माओ को पकडकर अपने स्वामी की कचहरी की ओर ले गये। वहाँ उन्हे मृत्युदण्ड का हुक्म हुआ। सिपाही अब उन्हे मारने के लिए दूसरी जगह ले चले। इसी समय रिश्वत देकर छुडाने का प्रयत्न किया गया। सिपाही भाड़े के थे, उन्हे इसकी बहुत चिन्ता नही थी कि हाथ मे पड़े बन्दी को मृत्यु का मुख देखना पड़े या न पड़े। वह कुछ डालर पाकर माओ को छोड़ सकते थे, लेकिन उनके अफसर ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। माओ के सिर पर अब मृत्यु नाच रही थी। वह इसकी ताक मे थे कि कैसे मौका मिले और वह हाथ से निकल जायें। सिपाही खेतो के भीतर से जा रहे थे। इसी समय मौका पा वह सिपाहियो के हाथ से निकलकर फसल उगे खेतो के बीच से भाग निकले। मृत्यु पीछा कर रही थी और माओ उसके पजे से निकलने की जी तोड़ कोशिश कर रहे थे। उन्हे पास मे एक तालाब मिला, जिसके ऊपर बहुत ऊँची घास उगी हुई थी। माओ उसी मे जाकर छिप गये। जमीदार के सैनिक आसपास के किसानो को पकडकर माओ की खोज करने लगे, लेकिन जमीदार या कुओ-मिन्-ताग से किसानो का सद्भाव नही था, सभी बेमन से काम कर रहे थे। एकाध बार तो ढूँढनेवाले इतने नजदीक आ गये थे कि वह हाथ बढ़ाकर उन्हे छू सकते थे। सूर्यास्त होने के बाद ढूँढनेवाले लौट गये, माओ अपनी जगह से निकलकर पहाड़ की ओर चले। दिन को छिपते और रात को मुसाफिरी करते वह दौड़ते भागते चलते ही गये। जूता फट गया। जेब मे पैसे

नहीं थे। पैर के तलवे कट चुके थे। इसी समय उन्हें एक किसान मिला, जिसने माओ को पहचानकर बुलाना चाहा। लेकिन माओ को क्या पता था। वह भागने लगे। किसान ने दौड़कर कहा कि तुमने और तुम्हारे दोस्त ने मेरे घर भोजन किया था, भागो नही। माओ ने पीछे फिरकर देखा, तो वह वही किसान मालूम हुआ, जिससे चांगशा में पढ़ते वक्त परिचय हुआ था। किसान माओ को अपने घर ले गया। उसने उन्हें सान्त्वना और मदद ही नहीं दी, बल्कि लाल इलाके के पास तक उसे पहुँचाने ले गया।

(3) सेनापति और पार्टी-मोर्चा कमेटी के 'अध्यक्ष'—माओ के पास, जान बचाकर भागते समय सात डालर थे, जिनसे उन्होंने जूते, छाता और खाने की चीजें खरीदी। जब वह किसान गारदों की छावनी के पास पहुँचे, तो उनके खीसे में ताँबे के दो पैसे रह गये थे।

यद्यपि चेन की अवसरवादी नीति खतम हो चुकी थी, लेकिन उसकी जगह अब नया नेतृत्व 'वामपक्षी' गलती कर रहा था। छठी कांग्रेस के समय माओ चे-तुग वहाँ मौजूद नही थे, तो भी कांग्रेस ने उन्हे पार्टी की केन्द्रीय कमेटी मे चुन लिया। अक्टूबर, 1927 मे माओ मजूरो और किसानो की नव-निर्मित लाल सेना को हटाकर क्याग-सी और हूनान प्रदेश की सीमा पर चिग-काग के पहाडी इलाके मे ले गये, जहाँ पर, उन्होंने मजूरो और किसानो की हूनान क्याग सी सीमान्त प्रदेशी सरकार कायम की, भूमि-वितरण मे हाथ बँटाया और दुश्मनो के निरन्तर होते आक्रमणो का मुँहतोड़ जवाब दिया। चिग-काग पहाडी इलाका प्रतिरक्षा के ख्याल से भी बहुत अच्छा था।

1927 के नवम्बर मे हूनान प्रदेश के चालिन स्थान मे माओ ने प्रथम सोवियत की स्थापना की और सोवियत के पहले अध्यक्ष ताउ तुग-पिग चुने गये। सोवियत का जो कार्यक्रम माओ ने बनाया था, वह गणतन्त्री आधार पर था। सोवियत की स्थापना के बाद अब सगठन और शक्ति को मजबूत करने का काम माओ ने जोर शोर से करना शुरू किया। इसके थोड़े समय बाद दो डाकू नेताओ वांग-चो और युवान वेन चाइ ने लालसेना मे शामिल होने की इच्छा प्रकट करते कहा कि अब से हम पार्टी के हुकुम मे चलेगे। वे जितने समय तक कम्युनिस्टो के साथ रहे, उतने समय तक उन्होने लूटमार नही की। चालिन मे सोवियत के स्थापित होने की खबर पाकर और कितने ही इलाको मे भी सोवियते कायम होने लगी, किसानो मजूरो की सेना सगठित होने लगी। हो लुग ने पश्चिम मे और सु हाइ तुग ने पूर्व मे लालसेना सगठित करके सोवियत स्थापित की। फू कियान के नजदीक क्याग सी की उत्तरी पूर्वी सीमा पर भी एक सोवियत की नीव पड़ी। हेलन-फेंग मे बनी सोवियत ज्यादा दिनो तक नही टिक सकी, हाँ, इसकी सेना माओ से जा मिली, जो 11वी लालसेना की अकुर बनी।

1928 के मई महीने मे चू तेह अपने आदमियो के साथ आकर माओ से मिल गये। फिर पग तेह-ह्वाई भी अपने दल के साथ आ मिला। शक्ति सचय के साथ साथ सोवियत शासित प्रदेश का धीरे-धीरे विस्तार होने लगा। इतना सुन्दर नेतृत्व पाकर किसानों की बिखरी शक्ति एकताबद्ध हो और मजबूत हुई। वह छापेमार लड़ाइयाँ करने लगे। जमीन के लिए किसानो के सघर्ष अब क्याग सी, फूकियान, हूनान, हूपेइ, क्यागसी और अन्य प्रदेशो मे जोर पकड़ने लगे, कितने ही दूसरे क्रान्तिकारी अड्डे और लालसेना की टुकड़ियाँ संगठित हुई। 1929 ई. मे माओ और चू तेह के नेतृत्व मे लालसेना क्यागसी के दक्षिण और फूकियान प्रदेश के पश्चिम मे घुस गई, और जुइचिन (क्यागसी) स्थान को केन्द्र बनाकर वहाँ केन्द्रीय क्रान्तिकारी अड्डे कायम किये। देहातो मे क्रान्तिकारी अड्डो का निर्माण करके अपने शक्ति और सगठन को मजबूत करने मे किस तरह सफल हुए, इसका जवाब माओ चे तुग ने अपने दो लेखो मे सैद्धान्तिक दृष्टि से दिया है। अक्टूबर, 1928 में उन्होने इस विषय का एक लेख 'चीन मे लाल राजसत्ता का कायम रहना क्यों सम्भव है ?' लिखा, और जनवरी 1930 मे दूसरा लेख 'एक चिनगारी ही लपटो की रचना कर देगी' लिखा। पहले लेख मे उन्होंने लालशासन के लिए अनुकूल पाँच मुख्य परिस्थितियो को बतलाया।

"(1) चीन के स्थानिक (सीमित) कृषि-अर्थतत्र के साथ-साथ देश को अपने-अपने प्रभाव-क्षेत्रो में बाँटकर शोषण करने और उसे मुट्ठी मे रखने की साम्राज्यवादियो की नीति ने प्रतिक्रियावादी शासन में दरारों की रचना कर दी है। इन दरारो से क्रान्तिकारी ताकते फायदा उठा सकती हैं।

(2) देश के व्यापक इलाकों के लोगो मे प्रथम क्रान्तिकारी गृह-युद्ध का असर अभी तक मौजूद है।

(3) समूचे देश में क्रान्तिकारी स्थिति बराबर विकसित होती जा रही है।

(4) लाल राज्य-सत्ता की मदद के लिए लालसेना मौजूद है।

(5) लाल राज्य-सत्ता के निर्देशन के लिए कम्युनिस्ट पार्टी मौजूद है, जिसका सगठन शक्तिशाली और जिसकी नीति सही है।"

अपने दूसरे लेख मे साथी माओ ने चीन की लालसेना द्वारा सचालित युद्ध के महत्त्व का विस्तार से लेखा-जोखा करके बतलाया कि "लालसेना और क्रान्तिकारी अड्डो का निर्माण और विस्तार अर्ध-औपनिवेशिक चीन में मजदूर-वर्ग के नेतृत्व मे किसान-सघर्षो का सबसे ऊँचा रूप है" और "वह आनेवाले राष्ट्रव्यापी क्रान्तिकारी संघर्ष की गति को तेज बनाने का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण साधन है।" माओ चे-तुग की राय थी कि लालसेना द्वारा किए जानेवाले युद्ध को, किसान-क्रान्ति को और क्रान्तिकारी राज्यसत्ता के निर्माण को ज्यादा से ज्यादा आगे बढ़ाना चाहिए। "केवल ऐसा करने पर ही हम समूचे देश की क्रान्तिकारी जनता के विश्वास और आदर को प्राप्त कर सकेगे, जैसाकि सोवियत सघ समूची दुनिया मे कर चुका है। केवल इसी रास्ते पर चलकर हम शासक-वर्ग के लिए भारी कठिनाइयाँ खड़ी कर सकेंगे, उसकी नींव को हिला सकेंगे, और उसके छिन्न-भिन्न होने की गति को तेज कर सकेंगे। केवल ऐसा करके ही हम सही अर्थो मे वैसी लालसेना का निर्माण कर सकेंगे, जो आनेवाली महान् क्रान्ति मे महत्त्वपूर्ण हथियार का काम देगी। सक्षेप में यह कि केवल इसी प्रकार हम क्रान्ति की आनेवाली लहर की गति को तीव्र बना सकेंगे।"

साथी माओ चे-तुग ने इस प्रकार बलशाली प्रतिक्रियावादियो के मुकाबले मे क्रान्ति की शक्तियों को सचित करने और बढ़ाने का काम किया। च्याग काइ शेक और कुओ मिन्-ताग के कसाइयो ने नगरो पर काबू करके चाहा था कि सर्वहारा-किसानों-मजूरो की क्रान्ति को चीन मे सदा के लिए दबा दे। लेकिन, माओ ने इसी समय क्रान्ति की लड़ाई का एक नया नियम निकाला, जो था "प्रतिक्रान्ति के हाथ में गये नगरों पर हथियारबन्द क्रान्तिकारी देहाती जिलो के द्वारा घेरा डाला जाय और फिर उन पर कब्जा किया जाय।" अगले बीस साल के क्रान्ति के इतिहास ने साथी माओ की इस नीति की पुष्टि की। हू चियाओ मू के अनुसार* .

"इस काल मे साथी माओ चे-तुग ने पार्टी के लिए, द्वितीय क्रान्तिकारी गृह-युद्ध के दौर में क्रान्ति के विकास के आम रास्ते का सिर्फ मानचित्र ही नही पेश किया, बल्कि ठोस नीतियो के विभिन्न पहलुओं को उभारकर रखने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण रचनात्मक योग दिया—मिसाल के लिए किसान-क्रान्ति-सम्बन्धी नीति को निर्धारित करने में, बीच के वर्गो के बारे मे, जबर्दस्त दुश्मन को हरानेवाली सैनिक रणनीति और कार्यनीति के बारे में, सैनिको के बीच मे काम करने और देहाती जिलो में तथा युद्ध की परिस्थितियों में पार्टी-निर्माण का काम करने के बारे में बतलाया। इन तथ्यों को ध्यान में रखा कि देहाती जिलो मे गरीब किसान और खेत-मजूर सबसे ज्यादा क्रान्तिकारी ताकत है, दृढ़ता से क्रान्ति का समर्थन करते है, पूँजीवादी जनवादी क्रान्ति की मजिल में धनी किसानों के अर्थतत्र को अभी भी कायम रखने और बीच के दर्जे के तथा छोटे पैमाने के उद्योग और व्यापार की अभी भी रक्षा करने और आगे बढ़ाने की जरूरत है। कृषि-क्रान्ति में साथी माओ चे-तुग ने सही तौर पर मजबूती के साथ गरीब किसानो और खेत-मजूरो को आधार बनाने की, मझोले किसानो के साथ एका करने की, धनी किसानो को नियन्त्रित करने की, और मझोले तथा छोटे उद्योगपतियों और व्यापारियो की रक्षा करने की तथा केवल जमींदार-वर्ग का खत्म करने की नीति को अपनाया। चूँकि चीन की क्रान्ति में सघर्ष का मुख्य रूप, और सगठन का मुख्य रूप फौज थी, और चूँकि उस काल में क्रान्तिकारी युद्ध की स्थिति यह थी कि दुश्मन ताकतवर था और हम कमजोर, वह आकार में बड़ा था और हम छोटे और यह कि दुश्मन जनता से अलग पड़ गया है और हम जनता के साथ घनिष्ट रूप मे गुँथे हुए थे, साथी माओ चे-तुग ने सही तौर पर निम्न बुनियादी सिद्धान्तो को निर्धारित किया, जैसे—लालसेना को पार्टी के बारे मे, जनता की

---

* चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के तीस वर्ष, पृष्ठ 33-35

राज्यसत्ता के बारे में, कृषि-सुधार और अन्य सब प्रकार के स्थानिक कार्यों के बारे मे, प्रचारको और सगठनकर्त्ताओ के रूप में काम करना चाहिए, लालसेना को जबर्दस्त राजनीतिक काम को आगे बढ़ाना और अपने बीच जन-आन्दोलन को कड़ाई के साथ कायम करना चाहिए। लालसेना का युद्ध जनता का युद्ध हो जाना चाहिए और जनता या छापेमार लड़ाई की खासियत रखनेवाले गतिशील युद्ध को जो कि उस काल मे लड़ाई का मुख्य रूप था—अपना आधार बनाना चाहिए। लालसेना का लम्बे युद्ध की रणनीति पर अमल करना चाहिए, लेकिन कार्यनीति मे उसे फौरन फैसला होनेवाली लड़ाइयो में ही हिस्सा लेना चाहिए, साधारण काल मे लालसेना के सैनिकों को आम जनता को सगठित करने के लिए उनके बीच जाना चाहिए और युद्ध के समय में उसे अपनी श्रेष्ठ ताकतों को दुश्मनों को घेरने और नष्ट करने के लिए लगा देना चाहिए। ये सब बुनियादी सिद्धान्त और कुछ दूसरे सैनिक सिद्धान्त चीन के क्रान्तिकारी युद्ध की सैनिक नीति के ही भाग थे। इन सब बातों को देखकर कहा जा सकता है कि चीन की क्रान्ति के इस कठिन दौर मे साथी माओ चे-तुग के काम ने मुख्य रूप से चीन की क्रान्ति को जीत की ओर ले जाने के लिए जमीन पक्की कर दी।"

10

माओ के साथी

1. चू तेह

माओ चे तुग और चू तेह का सम्बन्ध बहुत कुछ वैसा ही है, जैसे मार्क्स और एगेल्स का था। चू तेह से माओ 13 वर्ष छोटे हैं, लेकिन चू तेह माओ के बड़प्पन को स्वीकार करते हैं। चू तेह की सैनिक प्रतिभा अद्भुत है, और उसी के कारण आज भी वह चीन गणराज्य के प्रधान सेनापति है। लेकिन माओ की प्रतिभा सर्वतोमुखी है। सैनिक विज्ञान के भी वह अद्भुत तत्त्वदर्शी है यह उनकी 1935 ई में लिखी पुस्तक 'चीन के क्रान्तिकारी युद्ध की दाँव पेच सम्बन्धी समस्याएँ' से मालूम होगा। माओ और चू का प्रेम भी अद्भुत है, जिसका दर्शन मार्क्स और एगेल्स में ही पाया गया था। चू तेह का जन्म जेचुआन प्रदेश में एक छोटे-मोटे जमींदार के घर में 1888 ई. में हुआ था, लेकिन परिवार भारी था और जमींदारी छोटी, इसलिए उसे वैभवशाली जमीदार-घर नही कहा जा सकता था। थोड़े ही दिनों बाद परिवार मे अलगी-बिलगी हो गई और चू तेह को चचा ने अपने पास रख लिया। जेचुआन के पास के प्रदेश युन्ननफू में उसी समय सैनिक विद्यालय खुला था। चचा के प्रभाव के कारण चू तेह को प्रारंभिक शिक्षा समाप्त करने के बाद इस विद्यालय मे दाखिल होने में दिक्कत नही हुई। वहाँ रहकर चू तेह ने सैनिक शिक्षा समाप्त की। उसके बाद उन्हे लेफ्टिनेंट बना दिया गया। पहले ही से चू तेह के विचार राष्ट्रवादी थे। 1909 ई में वह कुओ-मिन ताग के सदस्य बन गये। 1911 ई. की क्रान्ति मे तरुण अफसर ने क्रान्ति का साथ दिया। 1916 ई म युवान शि-काइ की गद्दारी के समय चू तेह की फौजी टुकड़ी ने बड़ा काम किया, जिससे उन्हे 'चार भयकर सेनानायकों' मे गिना जाने लगा। 1915 ई. में अब वह एक रेजिमेंट के अफसर थे। जब त्सा मुन और युवान शि-काइ में समझौता हो गया, तो चू तेह की नई जिन्दगी का दौर शुरू हुआ। उन्हें युन्ननफू के प्रादेशिक अर्थ-सचिव का पद मिला। उस समय के चीनी अधिकारियों मे घूसखोरी, अफीम और लम्पटता आम पाई जाती थी। चू तेह भी उसमे फँस गये। उनके पास कई स्त्रियाँ और रखैलियाँ थीं। यून्नन नगरी में अपने लिए उन्होंने महल भी बना लिया और अफीम भी खाने लगे। लेकिन चू तेह को पुस्तकों को पढ़ने का शौक तथा स्वतन्त्र और तीव्र बुद्धि मिली थी। देश की आजादी और उसको शक्तिशाली देखने का उन्होंने जवानी में स्वप्न देखा था। रह-रहकर वह स्वप्न फिर उनके मन में उभड़ने लगा। एक समय वह अपने किसी काम मे तिब्बत में गये हुए थे। उस समय उनके हाथ मे रूसी-क्राति-सम्बन्धी कुछ

पुस्तकें आई, जिनके पढ़ने से उनकी सुषुप्त भावनाएँ फिर जाग उठी और अपने ऊपर घृणा होने लगी। उनका मन कीडे-मकोडे के जीवन से बागी हो गया।

1922 ई. मे चू तेह ने सुख का रास्ता छोड कॉटो का रास्ता स्वीकार करने का निश्चय कर लिया। देश और उसकी साधारण जनता की भलाई के लिए अपने इस लज्जाजनक जीवन को उन्होने तिलाजलि दे दी। उन्होने अपने हरम में रुपये-पैसे बॉटकर महल को छोडा। शाघाइ उस समय कम्युनिस्टो का केन्द्र माना जाता था, इसलिए वह वहाँ पहुँचे। राष्ट्रवादी कुओ-मिन्-तागी अब गले तक भ्रष्टाचार मे डूबे विदेशी साम्राज्यवादियो के दलाल बनकर जनता का खून चूस रहे थे, इसलिए चू तेह केवल कम्युनिस्ट पार्टी के ही साथ रहकर कुछ काम करने की आशा रखते थे। लेकिन और सब बुरी आदतो के छोडने के बाद भी अफीम उनसे छूटी नही थी। जब तक अफीम पीछे पडी हुई थी, तब तक कम्युनिस्ट उन पर विश्वास कैसे कर सकते थे ? चू तेह के पास दृढ मनोबल था। उन्होंने अफीम छोडने का पक्का निश्चय कर लिया। लेकिन, अफीम का छोडना शारीरिक तौर से भी आसान नही है। सात दिन तक चू तेह तडफडाते रहे, लेकिन उन्होने अफीम को नही छुआ; उनका डर था कि एक बार छोड देने पर कही अफीम फिर अपने फन्दे मे न जकड ले। शाघाइ से हाग-काउ अग्रेजी स्टीमर आया-जाया करता था, जिसमे अफीम खाने की सख्त मनाही थी। चू तेह उसी स्टीमर पर सवार हो गये, और अब हफ्ता वह उसी स्टीमर पर बैठ शाघाइ और हाग काउ के बीच आते-जाते रहे। एक महीने के बाद स्टीमर से उतरने पर चू तेह अब दूसरे ही आदमी थे उनका स्वास्थ्य फिर पहले जैसा हो गया था।

1922 ई. मे चीन की कम्युनिस्ट पार्टी को कायम हुए अभी एक ही साल हुआ था, और अभी उसकी अवस्था चेन के नेतृत्व के कारण बहुत मजबूत नही थी। साम्यवादी साहित्य भी अभी चीनी भाषा मे नाममात्र था, और चू तेह कोई दूसरी विदेशी भाषा नही जानते थे। शाघाइ से चू तेह पहले पेकिंग गये। वहाँ उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी के सम्पर्क मे आने की कोशिश की, किन्तु उसमे सफलता नही मिली। फिर शाघाइ लौटकर उन्होंने डा सुन यात सेन से मुलाकात की। डा सुन ने भी सलाह दी ओर चे तेह चालीस वर्ष की उमर मे अपने ज्ञान को बढाने के लिए जर्मनी पहुँचे। बर्लिन मे चाउ एन लाइ से उनकी मुलाकात हुई। यही उनके हाथ मे लेनिन की पुस्तक 'राज्य और क्रान्ति' तथा दूसरी पुस्तके मिली, जिसे पढकर चीनी विद्यार्थियो के जर्मनी मे कम्युनिस्ट पार्टी कायम करते समय चू तेह उसके मेम्बर बन गये। बर्लिन मे ही उन्हे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी मिली। बर्लिन मे उस समय भारतीय तथा कितने ही ओर भी एशियाई कम्युनिस्ट रहते थे। चू तेह उनके साथ काम किया करते थे। इसके फलस्वरूप उन्हे पुलिस ने एक बार गिरफ्तार भी किया। फिर वह फ्रास चले गये। कुछ समय तक वह वहाँ रहे, फिर रूस के लिए रवाना हुए, जहाँ 'पूर्वी' यूनिवर्सिटी मे दाखिल होकर वह कितने ही समय तक पढते रहे। प्राय. तीन वर्ष बाहर रहने के बाद 1925 ई मे चू तेह शाघाइ लौटकर फिर क्रान्ति-सेना मे सम्मिलित हो गये।

क्रान्ति-सेना के उत्तरी अभियान का समय आया। चू तेह भी अपनी टुकडी के साथ उसमे शामिल थे। चू तेह का बडा अफसर चू पी त च्याग की सेना का एक बहुत बडा प्रभावशाली अफसर था, जो चू तेह से बहुत प्रभावित हुआ था, जिसके कारण चू तेह की पदवृद्धि होती गई। किन्तु, जब च्याग काइ शेक ने कम्युनिस्टो पर 1927 ई मे प्रहार करना शुरू किया, तो फिर चू तेह के लिए वहाँ स्थान नही रह गया। उनके साथ बहुत से सैनिक तथा कितने ही सेनानायक—जिनमे लिन् पियाओ भी था—निकलकर माओ के पास चले गये। लिन् पियाओ आगे लालसैनिक विद्यालय के अध्यक्ष बने।

नवीन चीन के इतिहास के लिए माओ-चू जोडी का मिलन अद्भुत घटना है। क्रान्ति के युद्ध मे बहुत से उतार-चढाव आये, लेकिन यह जोडी उसी तरह दृढ रही। ऐसा भी समय आया, जब कि जनरल चू तेह की सेना मे हजार से भी कम सैनिक ओर उसमे से भी आधे के पास ही बन्दूके रह गई, लेकिन उनका उत्साह अदम्य था, भविष्य के प्रति उनका विश्वास अटूट था। चिग-काग शान् मे एक समय दोनो के सैनिको की सभा हो रही थी। माओ ने कहा .

"साथियो ! हमे आसपास की जमीन किसानो मे बाँटनी है, यहाँ सोवियत-शासन को मजबूत करना है।

यह कैसे हो सकता है ? पहली बात यह, कि जनता को अपने राज्य की स्वयं रक्षा करना सीखना होगा। दूसरी बात यह है कि इस राज्य के संदेशवाहकों को चारो तरफ फैल जाना चाहिए। यह बात असंभव नहीं है। कुओ-मिनू-तांगी शत्रु-सेना के पास से छीने गये हथियारों को गाँव के गरीबों मे बाँट दो। उनके साथ समझदारी के साथ बर्ताव करो। उन्हें सैनिक-शिक्षा दो। यह भी करने की बात है कि हम अपने आसपास के प्रदेशों के साथ व्यापार-सम्बन्ध स्थापित करें। आज व्यापारी हमारे नाम से भड़कते हैं। यह भी करना होगा, कि जो कुओ मिन्तांगी सैनिक अपने हाथ में पड़ें, उनके साथ हमे अच्छा प्रेमपूर्वक सलूक करके प्रभावित करना चाहिए, फिर वह जहाँ चाहे, वहाँ जाने की छूट देनी चाहिए। इससे क्या होगा ? ये लोग जायँगे, दूसरे लोगों मे हमारे प्रति विश्वास पैदा करेंगे।"

इसी समय एक सैनिक बोल उठा : "लेकिन, इस तरह के कूडा करकट अगर राज्य मे भर जायँगे, तो हमारे सोवियत राज्य का विकास नही होगा। हम चागशा पर सीधे हमला करके इस शहर को अपना मुख्य-केन्द्र बनाना चाहिए। पार्टी की आज्ञा हमें माननी चाहिए।" इस समय पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की यही नीति थी, और इसका प्रधानमन्त्री च्यू-पाई 'वामपथी' उग्रता म फँसन की गलती कर रहा था।

इस पर माओ ने अपने भावों को और भी स्पष्ट करते हुए कहा : "पार्टी के अनुशासन को तोडने की बात मे नही कहता, लेकिन पार्टी की नीति क्रान्ति की अहिरन पर गढ़ी जाती है, अनुभव की कसौटी पर चढकर पक्की होती है। आज की स्थिति क्या कह रही है ? दुश्मन हमारी अपेक्षा बहुत अधिक बलवान् है। क्रान्ति का ज्वार उतरने लगा है। आज हम दो ज्वारों के बीच में है। इस वक्त हमें अपनी शक्ति को सँभाल के रखना चाहिए। एक सफल क्रान्तिकारी का केवल आक्रमण करना ही नही, बल्कि सुव्यवस्थित रीति से पीछे हटने की कला भी सीखनी चाहिए। आज नगरों म दुश्मन का जोर बहुत है। हम यदि बहुत नुकसान उठाकर शहरों को हाथ में कर भी लें, तो भी उन्हें देर तक हम अपने हाथ में नही रख सकेंगे। हमे शहर के आसपास के गाँवों को घेर लेना चाहिए। क्रान्ति का ज्वार जब आयेगा, तो प्रतिक्रान्ति की यह बाढ़ पलक मारते ही खतम हो जायगी।"

अब जेनरल चू तेह बोलने लगे। उनके मुँह पर स्नेह, कोमलता और वात्सल्य जिस तरह मुस्करा रहा था, उससे इस रणवीर के शौर्य का पता नही लगता था। लेकिन, नानचांग का विद्रोह प्रसिद्धि पा चुका था, जिसके नेता यही चू तेह थे। चू तेह ने कहा "साथी माओ ठीक कह रहे हैं। हमारा आज तक का अनुभव भी यही बतला रहा है। इस समय बेकार का साहसवाद हमे नही करना चाहिए। एक दूसरी बात कहूँ। कल हमारे एक सैनिक ने मुझसे कहा कि हम इस पहाडी सोवियत को बचा नही सकेंगे, इसलिए यहाँ से खिसक जाना चाहिए। नही, साथियो, इस प्रकार का पीछे-हटो-वाद भी क्रान्ति के लिए ठीक नही है : यदि हमारी सेना किसानों के हृदय को जीत सके, तो विजय हमारी ही होगी।"

उस समय क्रान्ति सेना म अनुशासन की कमी थी, सभा ने उनके बारे मे तीन नियमो को स्वीकार किया : (1) आज्ञा को तन्देही से पालन करना, (2) गरीब किसानों से कोई चीज नही लेना, (3) जमीदारो के पास मे जो कुछ जब्त किया जाय, उसे सरकारी भंडार में जमा करना।

चू-माओ की सेनाओं को मिलाकर प्रसिद्ध चौथी लालसेना का निर्माण हुआ, जिसके सेनापति चू-तेह हुए और राजनीतिक सलाहकार माओ—ठीक अर्जुन और कृष्ण की जोडी। इस बीच मे कुओ-मिन्-ताग की सेनाओं ने दो बार उनके ऊपर चढाई की, लेकिन दोनों बार उसे मुँह की खानी पडी। एक बार रात को चालिन् मे चू तेह पडाव डाले पड़े थे, अकस्मात् कुओ मिन तागी सेना ने हमला कर दिया, और चू-तेह दुश्मन के हाथ में पड़ गये। दुश्मन के सैनिक ने पूछा

"बतला, तेरा कमाडर कहाँ भाग गया ?"

"मुझे मालूम नही, हुजूर मै अभी जगा।" चू-तेह एक गरीब की बोली मे बोल रहे थे। उनके शरीर पर दूसरे सिपाहियों जैसा ही कपडा था, इसलिए दुश्मन यह नही पहचान सका कि वह किससे बात कर रहा है। जब शत्रु सैनिको ने अपने हथियार उनकी तरफ ताने, तो चू-तेह ने गिड़गिडाकर कहा : "मुझे मत मारो, मैं

रसोइया हूँ। मारने से क्या फायदा, मैं तुम्हारे लिए खाना बनाऊँगा।"

सैनिकों ने हथियार रोक लिया, किन्तु सहज मे ही न छोड रसोइये को अच्छी तरह देखने के लिए वह बाहर ले गये। एक ने पहचानते हुए चिल्लाकर कहा—"यह तो चू-तेह है", लेकिन तब तक चू-तेह ने अपनी रिवाल्वर सँभाल ली थी और चिल्लानेवाले को उन्होंने पहले ठडा कर दिया, फिर दूसरों को पटककर वह वहाँ से नौ-दो-ग्यारह हो गये।

इस घटना के कारण कितनी ही बार लालसैनिक अपने जेनरल को 'रसोइया सरदार' कहकर प्यार से पुकारते थे।

मई, 1928 से चू-माओ की सेनाएँ मिलकर एक हुई। भोले भाले किसान चू-तेह की करामात की बहुत-सी कथाएँ कहते-सुनते है। कोई कहता है : चू तेह को ऐसी दृष्टि प्राप्त है, कि वह सौ कोस तक देख सकता है। कोई उनमे उडने की सिद्धि मानता है, और यह भी बतलाता है कि दुश्मन के रास्ते को रोकने के लिए वह आँधी और धूल का तूफान उठा सकते है। किसी-किसी का कहना है कि चू-तेह का शरीर कर्ण की तरह अभेद्य है, हजारो गोलियाँ चलाई जायँ, किन्तु उनके शरीर तक को भी नही छू सकती, इसीलिए वह आज तक कभी घायल नही हुए। कोई-कोई यह भी विश्वास रखते है कि चू-तेह को फिर जी जाने का मत्र मालूम है। च्याग काइ-शेक के लोगो ने कितनी ही बार उनके मरने की खबरे उडाई। यदि वह इस मत्र को नही जानते, तो अब तक जीवित कैसे रह सकते! चू-तेह शब्द का अर्थ है 'लाल पुण्य' जो किसानो के लिए भारी भावगर्भित है, इसे कहने की आवश्यकता नही।

चीन के यह प्रधान सेनापति अपने स्वभाव मे बहुत शान्त और विनीत है। उनकी आवाज मीठी और आँखे स्नेह और करुणाभरी बडी-बडी है। कद कुछ ठिगना तथा मोटा भी है, लेकिन शरीर की गठन बडी मजबूत है। आज वह 70 वर्ष से ऊपर हो गये है, लेकिन अब से कुछ ही वर्षो पहले कोई उनको 50 वर्ष का भी नही कहता था। चू-तेह हँसकर कहते है : "जब से मुझे याद है, मैं अपने को 46 वर्ष ही का बतलाता हूँ।" चू-तेह की पहली स्त्री लडाई मे लडते-लडते मरी, दूसरी भी एक किसान कन्या है, जो किसान स्त्रियो की सेना स्वय बनाकर लडती और कन्धे पर घायल सैनिकों को ढोया करती। वह बडी साहसी और हाथ-पैर से पुरुषों जैसी मजबूत स्त्री है।

सादगी मे तो चू-तेह का सानी नही मिलेगा। साधारण सैनिको की पोशाक ही नही, बल्कि बहुत दिनो तक वह नगे पैर रहते और अपने सिपाहियो की तरह उनके साथ मिलकर साग पात खाते थे। साधारण सैनिकों मे घुलमिल जाना उनके स्वभाव में है। वह उनके साथ चहलकदमी करते, ताश खेलने या कहानियाँ कहते-सुनते रहते, जिसे देखकर भला कौन उन्हे रसोइया छोडकर और कुछ कह सकता था। टेनिस और बास्केटबाल के वह अच्छे खिलाडी है। कोई भी सिपाही उनके पास सीधे पहुँच सकता है। सैनिकों से बात करते समय वह अपनी टोपी को उतारकर हाथ मे ले लेते है। महान् अभियान के समय कितनी ही बार वह अपने घोडे को किसी थके सैनिक को दे स्वय पैदल चलते।

2. छठी पार्टी-काँग्रेस (1928 ई.)

1928 ई. के जाडा मे छठी कांग्रेस बैठी। इसने च्यू-पाइ की 'वामपक्षी' भूल को हटाया, मजूरो और किसानो की एकता के महत्त्व को स्वीकार किया, तथा सोवियत-राज्य की स्थापना, जमीन का किसानो मे बाँटना तथा लालसेना सगठित करने का आदेश दिया। इसी कांग्रेस ने यह भी निश्चय किया कि इस समय आक्रमण की नीति अच्छी नही है, बल्कि जनता को अपनी ओर खीचने की बडी आवश्यकता है। कांग्रेस ने अनुभव किया कि लडाई लम्बे अर्से तक चलती रहेगी, जिसके बीच किसान और मजूर दो ही वर्ग क्रान्ति के अचल-अटल अनुयायी बने रहेगे। कांग्रेस ने कुओ-मिन ताग के भीतर के लडाई-झगडो से फायदा उठाने का भी निर्णय किया और यह भी कि इस समय हमे शहरो की अपेक्षा गाँवों को अपना मुख्य कार्यक्षेत्र बनाना चाहिए। केन्द्रीय कमेटी पर अब भी उग्रवादियों का ही हाथ रहा। माओ उपस्थित नही थे, तब भी उनको केन्द्रीय कमेटी मे लिया

गया। धीरे-धीरे पार्टी समझने लगी। माओ और चू-तेह को छठी कांग्रेस की नीति मान्य थी। धीरे-धीरे पार्टी के भीतर के मतभेद हटते जा रहे थे, जगह-जगह नई-नई सोवियतें स्थापित हो रही थीं। पश्चिमी हू-पेड प्रदेश में हो-लुंग ने, पूर्वी हू-पेड में शू हाइ-चुंग ने लालसेना और सोवियत की स्थापना की थी। क्यांग-सी में भी अब इस तरह का काम शुरू हो चला था।

इसी समय हो चिन् नाम के एक सैनिक डाकू के खिलाफ हो उसके सैनिक चू-माओ की सेना में आ मिले, जिनसे पाँचवीं लालसेना का निर्माण हुआ। इतनी बड़ी सेना का भरण-पोषण वहाँ कैसे हो सकता था ? जाड़े के दिनों में उनके पास गरम कपड़ा नहीं था, सागपात खाते उन्होंने कितने ही महीने काटे। इन आजादी के दीवाने सैनिकों ने नारा लगाया था : 'पूँजीवाद मुर्दाबाद ! मटर खाके हो आजाद !' जिस वक्त भूख और कपड़े के अभाव में सैनिक कष्ट भोग रहे थे, उस समय उनका शंका और भ्रम में पड़ना आसान था। सैनिकों को कहा जाने लगा : "हमारी छोटी-सी टुकड़ी थी, तब भी हम अपने लिए काफी खुराक जमा कर लेते थे। हम तुम्हारी देशभक्ति को स्वीकार करते हैं, लेकिन जमीन बाँटना तथा इस तरह की और हवाई बातों को छोड़ो, तो हम सबको खिलाने का इन्तजाम कर सकते हैं।"

माओ ने सैनिकों को समझाते हुए कहा : "देखो भाई, हम लूटमार करने के लिए घर-बार छोड़ हथेली पर सिर लिए नहीं फिर रहे हैं। सभी देशभक्तों और जनता के सेवकों के लिए लालसेना में स्थान है, लेकिन जनता के शत्रुओं के लिए हर्गिज नहीं।"

3. पथप्रदर्शन

1929 ई. में चू-माओ के नेतृत्व में लालसेना ने दक्षिणी क्यांग-सी और पश्चिमी फू-कियान प्रदेश में प्रवेश कर जुइचिन् (क्यांग-सी) में अपना अड्डा कायम किया, यह हम बतला आये हैं।

(1) उतार-चढ़ाव–1928 ई. की परिषद् ने लालसैनिकों के पथ-प्रदर्शन के लिए कई बातों का निर्णय किया था। इसी में सैनिकों के लिए आठ नियम, गोरिल्लों के लिए चार नारे स्वीकार किये। नारे थे :

1. जब शत्रु आगे बढ़े, तो हम पीछे हटें,
2. जब शत्रु रुके और डेरा डाल दे, तो हम उसे परेशान करें,
3. जब शत्रु लड़ाई से बचना चाहे, तो हम उस पर हमला करें,
4. जब शत्रु पीछे हटे, तो हम उसका पीछा करें।

जनता के साथ भाईचारा स्थापित करने के लिए परिषद् ने निम्न आठ नियम बनाये थे, जिन्हें बड़ी कड़ाई से पालन करने की आदत सैनिकों में पड़ गई थी :

1. जब तुम जाने लगो, घरों की किवाड़ पहली जगह पर लगा दो।
   (चीन में किवाड़ निकालकर उन पर रात मे सोया जाता है।)
2. उन सभी चटाइयों को, जिन पर तुम रात में सोओ, समेट कर लौटा दो।
3. लोगों के साथ तुम्हारा व्यवहार नरम और शिष्ट होना चाहिए और जहाँ तक बन पड़े उनकी मदद करने से मत चूको।
4. उधार ली हुई सभी चीजें वापस कर दो।
5. टूटी हुई चीजों के बदले में अच्छी दे दो।
6. किसानों के साथ लेन-देन करने में पूरी ईमानदारी से काम लो।
7. खरीदी हुई चीजों का पूरा-पूरा दाम दो।
8. सफाई से रहो और पाखाने को लोगों के घर से काफी दूरी पर बनाओ।

(2) वंश-संहार (1930 ई.)–1929 के अप्रैल में चिंग-कान्-शान् छोड़कर लालसेना ने अपनी कारवाइयों से अपनी शक्ति और प्रभाव को खूब बढ़ाया। 1930 के अप्रैल में अब उनका मुख्य केन्द्र यूचेन् था, यहीं एक बैठक में निश्चय किया गया कि पंग के नेतृत्व में तीसरी सेना क्यांग-सी हूनान प्रदेशों की सीमा पर सैनिक

कार्रवाई करे और चू-माओ फूकियान-प्रदेश पर। 1930 के जून महीने में पहली कोर (सेना) और तीसरी कोर फिर एक जगह मिली और दोनों ने मिलकर चांगशा नगर के ऊपर दूसरा हमला किया। पहली और तीसरी सेना कोर को एक करके पहली मोर्चा-सेना का नाम दिया गया, जिसके मुख्य सेनापति चू-तेह और राजनीतिक कमीसर (सलाहकार) माओ हुए।

इस समय किसान-कमकर-क्रान्तिकारी कमेटी संगठित की गई, जिसके 'अध्यक्ष' (चू-शी) साथी माओ चे-तुंग बनाये गये। शक्तिशाली चीन गणराज्य के स्थापित होने के बाद आज भी माओ चे तुंग माओ चू-शी (अध्यक्ष माओ) के नाम से ही प्रसिद्ध है और लाख-लाख जनगण के कंठों से माओ चू-शी वान् स्वइ (अध्यक्ष माओ जिंदाबाद) का नारा सुनाई देता है। जब माओ नवीन चीन के प्रतीक बनते जा रहे थे, उसी समय दुश्मन उनके साथ नीचता की पराकाष्ठा करने के लिए उतारू थे। च्याग ने लालशक्ति को बढ़ते देख माओ, चू-तेह और उनके साथियों के सिर पर लाखों के इनाम ही नहीं घोषित कर रखे थे, बल्कि उनके सगे-सम्बन्धियों के सर्वनाश करने के लिए भी वह तैयार था। शियांग तान् में माओ की जो जमीन थी, उसे कुओ मिन् तांग ने जब्त कर लिया। माओ की वीर पत्नी, उनकी बहन, उनके दोनों भाइयों (माओ चे-हुंग और माओ चे-तान्) की बीवियों तथा माओ के लड़के को हो चि यन् ने गिरफ्तार कर लिया। माओ की पत्नी को बहुत फोड़ने की कोशिश की गई, लेकिन जब उसमें सफलता नहीं हुई, तो उसे तथा माओ की बहन को फाँसी दे दी गई। जन्मभूमि के किसानों का माओ के ऊपर अटल विश्वास था। एक दिन माओ के खेतों के ऊपर से कोई हवाई जहाज उड़ा, तो किसानों ने कहना शुरू किया—"माओ अपना खेत देखने आये है, खेती कैसी हो रही है, इसे अपनी आँखों से देखना चाहते है। वह च्याग काइ शेक से हरजाना लिए बिना नहीं रहेंगे।"

1929 के दिसम्बर में चौथी लालसेना की नवी पार्टी काग्रेस फूकियान प्रदेश में हुई, जिसमें कितने ही दोषों पर विचार करके उन्हें दूर किया गया। इसी परिषद् में क्याग-सी प्रदेश में सोवियत-शासन स्थापित करने का निश्चय किया गया। 7 फरवरी 1930 को दक्षिणी क्याग सी प्रदेश में एक महत्त्वपूर्ण स्थानीय पार्टी-परिषद् बैठी, जिसमें सोवियत के भावी कार्यक्रम पर विचार विमर्श हुआ। इस परिषद् में कम्युनिस्ट पार्टी, लालसेना और सरकार तीनों के स्थानीय प्रतिनिधि मौजूद थे। इसमें जमीन सम्बन्धी कार्यक्रम पर भी विस्तारपूर्वक विचार करके उसे मंजूर किया गया।

4. भीतरी संघर्ष

'दक्षिणपक्षी' गलती पार्टी से बहुत पहले ही निकल चुकी थी, 'वामपक्षी' गलती भी बहुत कुछ हटाई जा चुकी थी, लेकिन अभी उसका बिलकुल सफाया नहीं हो पाया था। इसी समय ली ली सान् ने एक गलत रास्ता पकड़ाने की कोशिश की।

(1) **फुकियेन-प्रकरण**—शत्रु का मुकाबला करने में लालसेना की नीति ज्वार-भाटे जैसी थी : जन-समुद्र के भीतर से उठते ज्वार की लहरों की तरह तेजी से आकर शत्रु को पूरी तौर से छाप लेना और उसके सँभलने से पहले उसी तरह तेजी से जन समुद्र में विलीन हो जाना। माओ की दूसरी नीति थी, अपने पिछवाड़े को मजबूत किये बिना आगे न बढ़ना, अर्थात् शत्रु से छूटे इलाके में अपना पैर अच्छी तरह जमाकर ही उसे अड्डा बना आगे बढ़ो। ली ली-सान् की नीति इससे उलटी थी। वह कहता था कि च्याग के खिलाफ सीधे जमकर लड़ाई लो, दुश्मन की भूमि में दूर तक घुसते जाओ। बड़े-बड़े शहरों पर आक्रमण करके उन पर अधिकार कर लो, गाँवों में अचानक हमला करके वहाँ के जमींदारों को भयभीत कर दो। ली ली-सान् किसानों में काम करने का विशेष महत्त्व नहीं मानता था। वह शहरों में मजूरों के विद्रोह तथा संघर्ष करने पर अधिक जोर देता था। यह 'वामपक्षी' पथभ्रष्टता थी, इसमें सन्देह नहीं। माओ और चू-तेह शत्रु की शक्ति को समझते थे और हर जगह उसके ऊपर आक्रमण करने को ठीक न समझ उसके कमजोर स्थान पर ही प्रहार करना चाहते थे। च्याग काइ-शेक की सत्ता शहरों में मजबूत थी, इसलिए वह शहरों में जाकर उससे भिड़ना गलत समझते थे। ली ली-सान् छापामार लड़ाई का विरोधी था। वह चाहता था कि गोरिल्ला टुकड़ियों को तोड़कर उनकी बाकायदा

सेना बना दी जाय। संक्षेप में "वह आक्रमण करना, आगे बढ़ना, शहरो पर हमला करना, विद्रोह कराना आदि कार्मों को ही मुख्य मानता था। सेना जगली सूअर की भाँति केवल आगे बढ़ती जाय, इधर-उधर की खबर न रक्खे कि पीछे क्या हो रहा है, इसकी पर्वा न करे, कि रसद-माल आदि पहुँच सकेगा या नही, इसे भी न सोचे, अर्थात् पिछवाडी मजबूत किये बिना आगे बढ़ती जाय। इस प्रकार ली ली-मान् रणनीति के सीधे-सादे नियमो को भी मानने के लिए तैयार नही था।"

पार्टी का मुख्य केन्द्र शाघाइ म था। सोवियत क क्षेत्रो से बाहर पार्टी मे अभी ली ली-सान् की बात ही मानी जाती थी। उसी के दबाव के कारण चागशा पर आक्रमण करना पडा था। हाँ, गुरिल्ला टुकडियो को तोड़ने से माओ-चू ने साफ इन्कार कर दिया, क्योकि ऐसा करने मे आगे बढ़नेवाली सेना का पिछवाड खतरे में पड जाता। जून, 1930 मे माओ और चू तेह के सचालन म लालसना चागशा नगर क प्राकारो के पास पहुँच गई। नगर मे उस समय शत्रु की काफी सेना थी, जिसके पास रसद ओर गोला बारूद की भी कमी नही थी। पहली ही मुठभेड मे लालसेना ने शत्रु क दो दस्तो का सफाया कर दिया। लेकिन वीरता और रणकौशल मे आगे बढ़ी होने पर भी लालसना नगर पर अधिकार न कर सकी और कुछ सप्ताहो की घेराबन्दी के बाद उसे अपने प्रयत्न को छोडना पडा। इस असफलता ने ली ली-सान् की नीति को गलत बतला दिया। ली ली-सान् वूहान पर भी हमला करने के लिए जोर द रहा था, लेकिन इस असफलता के बाद उस मनसूबे को छोड देना पडा। यद्यपि ली ली-सान की नीति गलत साबित हुई, और उस नीति का छोड दिया गया, लेकिन उसका असर, जो सेना के भीतर घुस गया था, जल्दी समाप्त नही हुआ। लालसेना की तीसरी कोर के कुछ सैनिक ली की नीति को माननेवाले थे। उन्होने माँग की, कि हमारी टुकडी को लालसेना से अलग कर दिया जाय। सेनानायक ने इसका विरोध किया। पीछे सैनिको ने भी उसकी बात मान ली। पर ल्यू ती-साउ के नेतृत्व मे बीसवी सेना ने ली की नीति मानते हुए खुले विद्रोह की घोषणा कर दी। उसने क्याग सी सोवियत के प्रधान तथा अन्य अधिकारियो को गिरफ्तार कर लिया और माओ तथा उसके समर्थको को चुनौती दी। यह 'फूकियेन-प्रकरण' था जिसके कारण थोडे समय के लिए लालसेना मे गडबडी मच गई, लेकिन तीसरी वफादारी पार्टी-मेम्बरो और लालसैनिको की एकता तथा किसानो के सहयोग से विद्रोह का जल्दी ही दबा दिया गया। ल्यू ती-साउ को गिरफ्तार कर लिया गया दूसर विद्रोहियो से हथियार रखाकर उन्हे फोज से निकाल दिया गया। इस प्रकार ली ली-सान् की नीति का अन्तिम तोर स खातमा हुआ।

मार्क्सवाद सिद्धान्त और व्यवहार के हरेक क्षेत्र म द्वन्द्वात्मक दृष्टि–परिस्थिति क अनुसार हर चीज का पुनः मूल्याकन और अपने रवैये मे तबदीली-प्रदान करता है, उसका ठीक तोर से इस्तेमाल करना आसान काम नही है। कठमुल्लापन दिखलाते हुए मार्क्सवादी श्रुतियो को तोते की तरह दोहराना केवल अपनी बेवकूफी और अयोग्यता साबित करना है। ऐसे ही कठमुल्लो के कारण क्याग सी जैसा गढ़ कम्युनिस्टो के हाथ स चला गया। फूकिएन प्रदेश मे चाइ तिग काइ एक सेनापति था। वह च्याग की नीति से असतुष्ट हो क्याग-सी के कम्युनिस्टो से सहयोग करना चाहता था, किन्तु कट्टरपथी नेता लोग उस 'पूँजीवादी-सामन्तवादी' सेनापति के साथ सयुक्त मोर्चा बनाना बुरा समझते थे। उन्होने ऐसा नही किया, च्याग ने दोनो को बारी-बारी से खतम करने का निश्चय कर पहले चाइ तिग-काइ को परास्त किया।

(2) लालसेना की शक्ति–1930 ई मे लालसेना के सैनिको की सख्या 60 हजार तक पहुँच गई थी। इनमे से 30 हजार से ज्यादा क्याग-सी प्रदेश के केन्द्रीय इलाके म थे। 1930 ई मे और उसके कुछ बाद फूकियेन, अन्-ह्वेइ, हूनान, शेन्शी, कासू और दूसरे प्रदेशो मे क्रान्तिकारी अड्डे फैल गए थे, साथ ही हैनान द्वीप तथा क्वान्तुग प्रदेश मे भी उनका प्रभाव था। लालसेना को इतनी तेजी से बढ़ते हुए देखकर च्याग काइ-शेक का होश गुम हो गया। उसने अब उसके उच्छेद करने का सकल्प किया।

11
च्यांग के आक्रमण (1930-35 ई.)

च्यांग ने जब चीन से साम्यवाद को उखाड फेंकने का निश्चय किया, तब तक कम्युनिस्ट पार्टी नौ साल की हो चुकी थी। उसकी शक्ति काफी बढ चुकी थी और कितनी ही लडाइयो मे उसने च्याग के दॉत खट्टे किये थे। उसकी शक्ति जितनी बडी थी, उससे कही अधिक कम्युनिस्टो का प्रभाव चीन मे बढ़ चुका था। च्याग के शैतानी शासन से मुट्ठीभर लोगो को छोड बाकी सभी 'त्राहि-त्राहि' कर रहे थे। यह सारा 'त्राहि-त्राहि' केवल अरण्यरोदन होता, यदि च्याग के खिलाफ विशृंखलित शक्ति को एकत्रित करने का प्रयत्न न किया जाता। इस प्रयत्न के लिए माओ के नेतृत्व मे चीनी कम्युनिस्ट काफी काम कर चुके थे। इसमे सन्देह नही कि च्याग की शक्ति अभी भी बहुत बडी थी, लेकिन कम्युनिस्टो के साथ शक्ति का अक्षय भडार—जनता और उसकी सद्भावना—मौजूद थी, जब कि च्याग के लिए वह स्रोत सूखता जा रहा था। 1930 मे जूचिन मे सभी सोवियतों के प्रतिनिधियो की प्रथम काग्रेस हुई, जिसमे माओ की नीति को स्वीकार किया गया। इस प्रकार जहॉ तक दृष्टि का सम्बन्ध था, बहुत-सी बुराइयॉ कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर से दूर हो गई। पर, वह इससे अपरिचित नही थी कि च्याग भीषण हमले की तैयारी कर रहा है।

1. प्रथम आक्रमण (1930-31 ई.)

1930 ई. के आखिर मे च्याग काइ-शेक ने सात डिवीजनो (कुल मिलाकर एक लाख सैनिको) को सोवियत के केन्द्रीय इलाके मे लालसेना को घेरने के लिए भेजा। उस समय लालसेना के पास केवल 40 हजार सैनिक थे। लालसेना के पास जन-बल कम था, लेकिन उसके पास माओ-चू जैसे सेनानायक थे। लालसेना ने अपने से ढाई गुनी बडी सेना को कुछ ही दिनो मे बुरी तरह से हराकर तितर-बितर कर दिया। उसने डेढ़ डिवीजन तो वही साफ कर दिए और च्याग काइ-शेक का फील्ड-कमाडर लालसेना के हाथ मे बन्दी बना। शत्रुओ ने इसी समय (नवम्बर, 1930 मे) क्याग सी पर चढाई की। दो महीने बाद जब हारकर पीछे हटा, तो इसी समय माओ की पत्नी तथा उनकी छोटी बहन का उसने वध कर दिया। यही नही, सारे हूनान प्रान्त मे चू-माओ पदवीवाले दस हजार आदमियो का सिर काट लाने के लिए दस-दस हजार का इनाम घोषित किया। इस समय लालसेना का दॉवपेच था : (1) शीघ्रतापूर्वक एक स्थान पर जमा होकर जोरदार हमला करना और फिर तुरन्त तितर-बितर हो जाना, (2) शत्रु की हर टुकडी पर अपनी पूरी ताकत से प्रहार करना, (3) पहले शत्रु की टुकडियों को सोवियत क्षेत्र मे दूर तक घुस आने का अवसर देना, फिर अधिक फौज लेकर अचानक टूट पडना तथा इस प्रकार उसकी छोटी-छोटी टुकडियो को घेरकर खतम कर देना।

जनवरी, 1931 तक च्याग का प्रथम आक्रमण पूरी तौर से असफल हो गया। अमेरिकन पत्रकार एडगर स्नो से इस आक्रमण के बारे मे माओ ने कहा था : "मेरी राय है कि हमारे लिए च्याग को हराना कभी सभव न होता, यदि उसके आक्रमण से पहले ही लालसेना ने तीन शर्तो को पूरा न कर लिया होता : (1) पहली और तीसरी सेना को एक केन्द्रीय सचालन मे सगठित करना, (2) ली ली-सान्-नीति का सफाया करना, (3) लालसेना तथा सोवियत के क्षेत्रो मे सभी सक्रिय प्रतिक्रियावादियो तथा बोल्शेविक-विरोधी गुटो पर पार्टी की विजय।"

2. द्वितीय आक्रमण (1931 ई.)

इस घोर पराजय से च्याग जैसा क्षुद्र आदमी कितना बौखलाया होगा, इसे आसानी से समझा जा सकता है। उसने इसका बदला लेने के लिए फिर तैयारी की, और एक महीने बाद (फरवरी, 1931 मे) हो यिग-चिन् (नानकिंग के युद्ध-मन्त्री) के नेतृत्व में दो लाख सेना लालसेना को घेरकर खतम करने के लिए भेजी। लालसेना ने पीछे

हटते हुए हो को अपने देश के भीतर घुसने दिया। हो ने समझा, उसकी भारी विजय हो रही है, और दुश्मन हार खाकर भाग रहा है। बहुत भीतर ले जाकर जब लालसेना ने मरम्मत करनी शुरू की, तब उसको अक्ल आई, लेकिन अब बचने का कोई रास्ता नहीं था। इस लड़ाई में लालसेना ने च्याग के 30 हजार से अधिक सैनिकों और 20 हजार से अधिक हथियारों को अपने कब्जे में किया।

3. तृतीय आक्रमण (1931 ई.)

हो यिग-चिन् जैसे अपने प्रधान-सेनापति की भीषण हार से च्याग और बौखला उठा। अंग्रेज, जापानी और जर्मन बड़े-बड़े जेनरल उसके सलाहकार थे, सेना की भी कमी नहीं थी। अन्त में उसने उसी साल की जुलाई में 3 लाख सेना का सचालन स्वय अपने हाथ में लेकर तीन दिशाओं से लालसेना को घेरना शुरू किया। सोवियत-क्षेत्र के बहुत भीतर घुसते हुए उसने वही गलती की। लालसेना की संख्या इस समय केवल 30 हजार थी, अर्थात उसके एक सैनिक पर च्याग के दस सैनिक थे। पूँजीवादी दुनिया के बड़े-बड़े जेनरल उसे सलाह-मशविरा दे रहे थे, नये-से नये हथियारों से उसकी सेना लैस थी। लेकिन, इस बार भी उसके आक्रमण को कुचल दिया गया, सितम्बर में उसे पूरी हार खाकर पीछे लौटना पड़ा। केन्द्रीय इलाके में ही नहीं, दूसरी जगहों पर भी लालसेना ने महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त की। पहले हुपे हूनान, अन हुई में और बाद में उत्तरी जनुआन में भेजी गई सू स्याग-चियेन् के नेतृत्ववाली लालसेना तथा हो लुग के नेतृत्ववाली पश्चिमी हूनान और पश्चिमी हू पेइ की लालसेनाओं ने इस युद्ध में भारी वीरता दिखलाते हुए अनेक सफलताएँ प्राप्त कीं। लालसेना की जीतों से बल पाकर कुओ-मिन्ताग की 26वीं रूट सेना के 10 हजार से ज्यादा सैनिक विद्रोह करके लालसेना से आ मिले। यह सेना निग तू (क्याग-सी प्रदेश) से लालसेना को कुचलने के लिए भेजी गई थी, जिसने दिसम्बर, 1931 में साथी चाओ शेग, तग चेन-ताग तथा दूसरे साथियों के नेतृत्व में विद्रोह किया।

शू सुग-लिन द्वितीय क्रान्तिकारी गृहयुद्ध के समय (1927-36 ई.) चीनी कमकर किसान लालसेना के जेनरल-हेडक्वार्टर में काम करते थे। जनवरी, 1930 से सितम्बर, 1932 तक दो वर्ष नौ महीने उन्होंने माओ चे तुग और चू तेह के साथ काम करते युद्धों में भाग लिया। 1953 में शू हूनान सैनिक क्षेत्र के रसद सेवा के हथियार विभाग के मुखिया थे। उन्होंने अपने संस्मरणों में माओ चे-तुग के उस समय के जीवन के बारे में लिखा है* :

"उस समय साथी माओ चे-तुग बहुत पतले थे। नित्य शिविर में आने के समय वह तुरन्त सैनिक कार्रवाई और कूच-सम्बन्धी समस्याओं के बारे में साथी चू तेह और चीफ आफ स्टाफ से सलाह करते। मेज, कुर्सी या चट्टान पर बैठकर वह स्वय हुक्म लिखते थे। रात के वक्त वह अपने कमरे में टहलते थे, जिसमें एक सैनिक नक्शा छोटे-छोटे लाल और सफेद झडियों के निशान के साथ दीवाल पर टँगा था। कभी अकेले और कभी साथी चू तेह के साथ वह सैनिक कार्रवाई के बारे में विचार करते। वह तब तक सोने नहीं जाते, जब तक कि योजना नहीं बन जाती और करणीय ठीक नहीं हो जाते।

"क्रान्तिकारी अड्डे क्षेत्र के बाहर से जब कभी अखबार आते, तो वह उन्हें आदि से अंत तक फिर-फिर पढ़ जाते और महत्त्वपूर्ण बातों को काट लेते। कभी-कभी अखबारों को पढ़कर समाप्त करने के लिए वह सारी रात बैठे रहते। घोड़े पर चढ़कर भी वह अपने समय की योजनाओं के बारे में पढ़ने, सोचने अथवा अधमुँदी आँखों से रात की नींद को पूरा करते। साथी चू-तेह के साथ वह प्रत्येक लड़ाई की योजना का नक्शा बनाते। उस पर राय देने के लिए भिन्न भिन्न कमांडिग अफसरों को बुलाने के पहले वह प्रत्येक युद्ध की योजना को बनाते और विस्तार के साथ उस पर बहस और अध्ययन करते। उनकी अच्छी तरह बनाई योजना बराबर विजय प्रदान करती। जब स्थिति प्रतिकूल हो जाती, तो वह तुरन्त अपनी सेनाओं को अपनी जगह छोड़ने और आगे की कार्रवाई के लिए, अधिक अनुकूल समय और स्थान को खोजने के लिए आज्ञा देते।

---

* 'Peoples China' 1953

" मई 1921 में द्वितीय विरोधी घिरावे का अभियान शुरू हुआ। जेनरल हेडक्वार्टर क्याग-सी प्रदेश के तुग कू जिले के च्याओ-ताउ-काउ स्थान मे परिवर्तित किया गया। साथी माओ चे-तुग और चू तेह छोटी-सी सडक के किनारे के झोपडे मे विश्राम के लिए गये। पॉच मिनट बाद पता लगा कि शत्रु नजदीक आ रहा है, वह केवल एक किलोमीटर दूर है। मै कुछ अर्दलियो के साथ पता लगाने गया, मेरे पीछे साथी चू तेह भी थे। हम आधा किलोमीटर से कम ही गये थे, जब कि हमे शत्रु की सेना का एक बडा कालम मिला। स्थान मे हटने के समय जेनरल हेडक्वार्टर की रक्षा के लिए हमारे पास केवल पचास के करीब राइफले थी। तो भी साथी चू तेह ने कहा, 'कोई पर्वाह नही, वह हमे पकड नही सकते।' फिर वह और साथी माओ चे-तुग अपनी सेनाओ को लिए दो भिन्न दिशाओ मे हो एक ऊँचे पर्वत की ओर चल दिये।

" द्वितीय विरोधी घिरावे के अभियान मे शत्रु के पास दो लाख सेनाएँ थी, जब कि लालसेना की सख्या 20 हजार से थोडी ही अधिक थी। साथी माओ चे तुग ने लालसेना की मुख्य फौजो को शत्रु की बिखरी हुई टोलिया मे लडने के लिए जमा किया और लगातार तीन दिशाओ मे लडाइयाँ जीती। 10 हजार से ऊपर राइफले पकडी गई। हमारी मुख्य सेनाएँ क्याग सी प्रदेश के निगतू, युगफंग और शिगकुओ के तीन जिलो की सन्धि पर अवस्थित थी। हमे पूरी तौर से घेर लेने के लिए शत्रु ने अपनी सारी फौजो को साढे सात किलोमीटर के घेरे मे जमा कर दिया था। तो भी साथी माओ चे तुग ओर चू तेह के नेतृत्व के कारण रात के वक्त बडी तेजी से चलकर शत्रु के घिराव के ढाई किलोमीटर चौडे एक स्थान मे पाँती तोडने मे सफल हुए। दूसरे दिन जब शत्रु ने घिराव को और घना किया, तो उसने देखा कि लालसेना हाथ से निकल गई है।

" इस विरोधी घिरावे के अभियान मे दस दिन से अधिक (16 से मई के अन्त 1931) साथी माओ चे-तुग और चू तेह बहुत कम सो पाये थे। हर रात को दोनो अपनी योजनाओ के ऊपर सिर रखकर लेट जाते। बहुत-सी कठिनाइयो मे उन्हे गुजरना पडा। गर्मियो के दिन थे और क्याग सी प्रदेश मे परेशान करनेवाले मच्छर बहुत होते है। साथी माओ चे तुग, चू तेह या लालसेना के किसी कर्मी के पास मसहरी नहीं थी। रात के वक्त वह घर के भीतर भूसी या घास जलाकर धुएँ से मच्छरो को भगाने की कोशिश करते जिससे कोठरियाँ सदा धुएँ से भरी रहती। उनके पास पखा भी नही था। मच्छरो को भगाने के लिए वह अपनी टोवलो या ताड के पत्तो का इस्तेमाल करते थे। रात के वक्त मच्छरो के मारे जागकर कभी कभी वह घूमते-टहलते रहने के लिए मजबूर होते। एक बार उनको मच्छर भगानेवाली धूप खरीदने का सौभाग्य मिला था। मई से अगस्त तक चार महीने यही स्थिति बनी रही।

" जाडो मे हमारी लालसेना बाहर पडाव डाले हुए थी। हमारे दोनो नेता साथी पतले कपडे मे जाडे से अक्सर ठिठुरते आधी रात तक काम करते। मार्च मे जब वर्षा हो रही थी, तब वह अपने भीगे कपडो को पहने रहते।

" 1931 की जुलाई मे तीसरे विरोधी घिरावे के अभियान के समय शत्रु सेना की सख्या बढ गई थी। भीषण स्थिति मे लालसेना को पहले से भी ज्यादा कठिनाई के साथ काम करना और लडना पड रहा था। वह रात को कूच करती और दिन मे पहाडो मे छिप जाती, कोई भी निशाना दिखलाई देने पर शत्रु के हवाई जहाज बम और गोलियों की वर्षा करते। साथी माओ चे-तुग और सभी लडनेवाले योद्धाओ को अपने सिरो मे पत्तियाँ लगाकर अपने को छिपाना पडता। साथी माओ चे-तुग के पास पहनने की एक जीर्ण-शीर्ण रुईदार कोट भर थी। जब वह रात को सोने लगते, तो पुआल का एक पूला, ईट अथवा चौडा पत्थर उनकी तकिया का काम करता। उनके पास पेबद लगे केवल दो जामे थे। कुछ साथी उन्हे नया जामा बना देना चाहते थे, किन्तु उन्होने इन्कार कर दिया। वह उसी तरह कठोर और सीधा-सादा जीवन बिताते थे जैसे कि आम योद्धा।

" तीसरे विरोधी घिरावे के अभियान मे जीवन बहुत कठिन हो गया था। जेनरल-हेडक्वार्टर के साथी मोटे-झोटे अनाज पर गुजारा कर रहे थे। चावल के साथ खाने के लिए यदि सब्जी खरीदने का मौका मिल जाता, तो वह इसे बडे भाग्य की बात मानते, अन्यथा वह बॉस के करील, जगली साग या पिसे हुए चावल को खाते। कभी-कभी ऐसा भी होता कि कुछ चावल के दानो के साथ उबला हुआ पानी ही उन्हे मिलता।

हम सभी लोग जो खाते, वही साथी माओ चे-तुग और चू-तेह भी खाते।"

(1) प्रथम सोवियत कांग्रेस (1931 ई.)–11 दिसम्बर, 1931 को प्रथम सोवियत कांग्रेस का अधिवेशन शुरू हुआ, और साथी माओ चे-तुग की अध्यक्षता में केन्द्रीय सोवियत सरकार की स्थापना हुई। चू तेह सोवियत सरकार के प्रधान सेनापति बनाये गये। तुग चेन्-तान् पीछे लालसेना के कमाडर हुए और चाउ पू-शेन क्याग-सी प्रदेश की लडाई मे वीरगति को प्राप्त हुए।

(2) जापान का प्रहार (1931 ई.)–जिस समय च्याग काइ-शेक देश मे गृह-युद्ध की आग भडका कम्युनिस्टो का उच्छेद करने मे अपनी सारी शक्ति लगा रहा था, उस समय 18 सितम्बर 1931 को जापानियो ने बड़े पैमाने पर उत्तर-पूर्वी चीन (मचूरिया) पर हमला शुरू कर दिया। 1894 ई. के चीन-जापान-युद्ध के दिनो से ही उसकी आँख चीन के इस भूभाग पर लगी हुई थी। 1929 ई. मे विश्वव्यापी मन्दी का वज्र गिरा। उससे जापानी पूँजीवाद की भी स्थिति भयकर हो उठी। ब्रिटेन, अमेरिका और दूसरे पूँजीवादी देश अपनी घरेलू समस्याओ मे बुरी तरह उलझे हुए थे। जापान जानता था कि इस समय सोवियत की सीमा के पासवाले चीन के इस विस्तृत भूभाग पर हाथ साफ करने मे दूसरे हरीफ बाधा नही डाल सकते। वह यह भी देख रहा था, कि च्याग काइ शेक लालसेना से लडने मे बुरी तरह से फँसा हुआ है, और वह साम्राज्यवादियो के हाथ का पूरा कठपुतली बना हुआ है। जापान को विश्वास था, कि इस समय च्याग हमारे विरुद्ध खडे होने की हिम्मत नही कर सकता। जापान केवल मचूरिया लेकर सतुष्ट होनेवाला नही था, बल्कि उसको अड्डा बनाकर वह धीरे-धीरे पैर फैलाते सारे चीन को हडपना चाहता था। उपरोक्त अनुकूल अवसर से फायदा उठाकर जापान ने 1931 ई मे सारे उत्तर-पूर्वी चीन पर अधिकार कर लिया। यही नही, 1931 के जनवरी मे उसने शाघाइ पर भी हमला किया। 1933 ई मे मचूरिया के पश्चिमवाले जेहोल प्रदेश तथा चहार प्रदेश के उत्तरी हिस्से पर भी अधिकार कर लिया। 1935 ई. मे हो पेइ प्रदेश का पूर्वी भाग भी जापानियो के हाथ मे था। 1931-37 ई तक जापानी साम्राज्यवाद जिस तरह निर्द्वन्द्व हो चीन को दबाता रहा, उसका एक मुख्य कारण था च्याग काइ-शेक का गृहयुद्ध की आग मे घी डालते हुए भ्रातृ-वध करना।

लेकिन, जापानी आक्रमण से अब चीन की सारी जनता मे भयकर प्रतिरोध का भाव पैदा हो गया था। मजदूरो, किसानो और छात्रो ने सारे देश मे जापान के खिलाफ जबर्दस्त आन्दोलन करना शुरू कर दिया। 1927 ई मे पूँजीपति वर्ग के ऊपरी हिस्से और राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग ने, क्रान्ति से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया था। अब चीन को जापानी राहु के मुख मे जाते देख उसने अपना रुख बदल दिया, और राजनीतिक प्रगतिशील भावना उसके भीतर काम करने लगी। उन्होंने च्याग काइ शेक की सरकार से अपना रुख बदलने की माँग की। कुओ-मिन्ताग और कुओ-मिन्तागी सैनिक तक मे राजनीतिक मतभेद हो गया। जनवरी, 1932 मे कुओ मिन्ताग की 19वी रूट सेना ने शाघाइ की जनता के जापान-विरोधी आन्दोलन से प्रभावित होकर वहाँ जापानी सैनिको का बड़ी बहादुरी के साथ मुकाबला किया। 1933 के नवम्बर मे इस सेना के नेताओ ने कुओ मिन्ताग के दूसरे सदस्यो के साथ मिलकर फूकियेन् प्रदेश मे जनता की सरकार कायम कर ली। इस सरकार ने च्याग की सरकार का विरोध करते कम्युनिस्टो के साथ सहयोग किया। 1933 के मई महीने मे जेनरल फेग यू-स्याग ने कम्युनिस्टो के साथ मिलकर चहार प्रदेश के कलगन स्थान मे जनता की जापान-विरोधी मित्रसेना सगठित की।

चीन पर जापान के आक्रमण के बाद सबसे पहले जिसने जापान से मुकाबला करने के लिए आवाहन किया, वह थी चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी। उसने ऐसा करके भारी दूरदर्शिता का परिचय दिया। यही वह हथियार था, जिसके कारण कम्युनिस्टो की शक्ति और प्रभाव चीन मे दिन-दूना रात-चोगुना बढता गया, और च्याग का प्रभाव खतम होते होते उसे त्रिशकु बनना पड़ा। जापान-विरोधी राष्ट्रव्यापी आन्दोलन मे कम्युनिस्ट सबसे आगे थे। उत्तर-पूर्व मे जनता की छापेमार लडाई का पथ-प्रदर्शन करने में कम्युनिस्ट पार्टी ने सक्रिय भाग लिया। जनवरी 1933 मे चीन की मजूर-किसान लालसेना ने घोषित किया कि जापानी हमले का मुकाबला करने के लिए लालसेना देश की अन्य सेनाओ के साथ होने को तैयार है। इसके लिए अपनी घोषणा में लालसेना ने

तीन शर्तें रक्खी थीं—(1) लालसेना के खिलाफ आक्रमणों को बन्द किया जाय, (2) जनता के जनवादी अधिकारों की रक्षा की जाय, (3) जनता को हथियारबन्द किया जाय।

ऐसा होने पर भी 1931 से 1934 ई. के बीच पार्टी के नेताओं ने बड़ी-बड़ी 'वामपक्षी' गलतियाँ कीं, जिसके कारण पार्टी उतनी सफलता नही प्राप्त कर सकी, जितना कि उसे प्राप्त करना चाहिए था। पहले क्रान्तिकारी गृह-युद्ध की हार और उसकी घटनाओं से पार्टी ने जो सबक सीखे थे, उसके होते भी छठी पार्टी-कांग्रेस (1928 ई.) के बाद से अब तक प्रति-क्रान्ति के गढ़ शांघाइ मे ही पार्टी के प्रमुख संगठन थे। पार्टी के नेताओं का ध्यान लालसेना की गतिविधि पर केन्द्रित नही था और न ही साथी माओ चे-तुग अभी तक उसका केन्द्र बन पाये थे। पार्टी के केन्द्रीय संगठनों के प्रमुख पदों पर निम्न पूँजीवादी वर्ग की अहमन्यता रखनेवाले लालसेना की युद्धप्रणाली के महत्त्व तथा नियमों से अपरिचित वामपक्षी अवसरवादी बैठे हुए थे, जो प्रतिक्रियावाद के घोर आतक से घिरे नगरों में विद्रोह सगठित करने की झूठी लालसाओं को लिये बैठे थे। ली ली-सान् के नेतृत्व में केन्द्रीय प्रमुख संगठनो ने 1930 ई. के जून से अक्टूबर तक यही माँग रक्खी थी कि प्रमुख नगरों में आम विद्रोहों को सगठित किया जाय और बड़े नगरों के खिलाफ लालसेना अपनी सारी शक्ति लगाकर हमला शुरू करे। इस गलती के कारण कुओ-मिन्-तागी इलाके में छिपकर काम करनेवाले सगठनो को भारी नुकसान पहुँचा, लेकिन लालसेना के वह क्षेत्र इससे बचे रहे, जहाँ साथी माओ चे-तुग ने दृढ़ता के साथ ठीक नीति पर काम किया था। छठी कांग्रेस द्वारा चुनी गई केन्द्रीय कमटी के तीसरे विस्तारित अधिवेशन मे (सितम्बर, 1930 मे) ली ली-सान् की गलतियों का मार्जन किया गया। तो भी जनवरी, 1931 मे साथी वाग मिग (चेन् शाओ-यू) और पो कू (चिन् पिग-सियेन्) की अगुवाई में एक नया 'वामपक्षी' गुट खड़ा हो गया जो फिर अपना सैद्धान्तिक कठमुल्लापन दिखलाने लगा। मार्क्सवाद लेनिनवाद के 'सिद्धातों' की चादर ओढ़कर इस गुट ने तीसरे विस्तारित अधिवेशन पर वामपक्षी हमला शुरू कर दिया। इस गुट के सदस्यों का मत था : "साथी ली ली-सान की मुख्य गलती सुधारवादी थी, और उस काल में चीनी पार्टी के भीतर मुख्य खतरा वामपक्षी गलतियो का नहीं, बल्कि सुधारवाद का था। उन्होंने इल्जाम लगाया कि तीसरे विस्तारित अधिवेशन मे ली ली-सान् द्वारा अपनी नीति मे बराबर अनुसरण किये जाते सुधारवादी अवसरवाद के सिद्धान्त और आचरण का पर्दाफाश करने के लिए कुछ नही किया। आखिर में, इन्होंने छठी कांग्रेस द्वारा चुनी गई केन्द्रीय कमेटी के चौथे विस्तारित अधिवेशन मे पार्टी के केन्द्रीय सगठनो के प्रमुख पदो पर अधिकार कर लिया। इस नये 'वामपक्षी' गुट ने वाग मिग और पो कू की अगुवाई मे उन महत्त्वपूर्ण परिवर्तनो की ओर ध्यान रखने से बिल्कुल इन्कार कर दिया, जो कि जापानी आक्रमण के फलस्वरूप चीन की घरेलू राजनीति मे उत्पन्न हुए थे। उन्होंने कुओ-मिन्-ताग के भीतर भिन्न-भिन्न गुटों तथा बीच के दलों को एक समान ही प्रतिक्रियावादी मानकर माँग की कि पार्टी को बिना भेदभाव के सभी के खिलाफ जीवन-मृत्यु का सघर्ष छेड देना चाहिए। लालसेना की युद्ध-प्रणाली के मसले पर इस 'वामपक्षी' दल ने साथी माओ चे-तुग के छापेमार तथा गतिशील युद्ध सम्बन्धी विचारों का विरोध किया और इस माँग पर अड गया कि लालसेना को सभी बड़े नगरों पर कब्जा करना चाहिए। गलत पथ-प्रदर्शन के कारण कुओ-मिन् ताग के कब्जेवाले इलाके मे पार्टी के प्रायः सारे सगठन नष्ट हो गये, यद्यपि भारी कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने कई सघर्ष बड़ी वीरता से चलाये थे। 1933 ई. मे पार्टी के अस्थायी केन्द्रीय सगठन को—जिसमें 'वामपक्षियों' का ही जोर था—मजबूर होकर लालसेना के केन्द्रीय अड्डों मे जाना पड़ा। यहाँ आने के बाद पार्टी के अस्थायी केन्द्रीय सगठन का साथी माओ चे-तुग तथा केन्द्रीय-कमेटी का उन सदस्यों के साथ एका कायम हो गया, जो लालसेना और क्रान्तिकारी अड्डो मे काम करते थे। आगे चलकर केन्द्रीय प्रमुख सगठनो को बाकायदा कायम किया गया। लेकिन फिर भी एक बड़ी गलती यह की गई कि साथी माओ चे-तुग को—खास कर लालसेना मे इनके नेतृत्व को—अलग कर दिया गया, और इस प्रकार लालसेना की जीतो तथा कुओ-मिन्-तागी इलाकों मे जन-आन्दोलन के उत्थान के रूप में क्रान्ति के फिर से पनपने की जो स्थिति प्रकट हुई थी, उसे कमजोर कर दिया गया।

4. चतुर्थ आक्रमण (1933 ई.)

जापान के आक्रमण ने देश में नई स्थिति पैदा कर दी। पार्टी में भी अभी दृष्टिकोण साफ नहीं था, और साथी माओ चे-तुंग की दूरदर्शिता से पूरी तोर से फायदा उठाने का मौका नहीं मिल रहा था। च्यांग का अपने प्रतिक्रियावादी अनुयायियों से हमेशा यह कहना था कि जापान को हम चुटकी बजाते-बजाते भगा सकते हैं, पहले हमें कम्युनिस्टों को खतम करना है, जो देश के सबसे बडे शत्रु हैं। इस अभियान के लिए च्यांग ने शाघाइ में जापान-विरोधी युद्ध को बन्द कर 5 लाख सेनावाले 90 डिवीजनों को लेकर कम्युनिस्टों के ऊपर जून, 1932 में चौथा आक्रमण कर दिया। यह आक्रमण फरवरी, 1933 तक चलता रहा। लालसेना ने च्याग के दो डिवीजनों को नष्ट कर उनके कमाडरों को कैद कर लिया। 59वी डिवीजन को अशतः 52वीं डिवीजन को भी पूर्णतः नष्ट कर दिया। लोआन जिले के ता-लुग पिग और यच-चियाओ-हुइ मे एक लड़ाई में माओ की सेना ने शत्रु के 13 हजार सैनिक कैद किये। च्याग काई-शेक की सर्वोत्तम फौज को भी लालसेना ने उसी समय खतम कर दिया तथा उसके बहुत-से सैनिक पकडे-मारे गये और कमाडर पर भारी विपत् पडी। इस समय की पराजय के बारे मे च्याग काइ शेक ने अपने सेनापति चेन् चेग को लिखा था : "यह पराजय मेरी सारी उम्र के सभी अपमानों मे सबसे बडा अपमान है।" चेन् चेग ने कहा था कि "कम्युनिस्टों से लडना जीवन-भर का काम है, यह एक उमरकैद है।"

च्याग चूँकि अन्धा और बेशर्म था, उसे अपनी लालसाओं को पूरा करने के लिए सारे देश की बलि देने मे भी आनाकानी नहीं हो सकती थी, तभी तो बिल्ली के सामने कबूतर की तरह वह जापानी हमलो के सामने आँख मूँदना चाहता था। उसके इस रुख के कारण कुओ-मिन् ताग की 19वी सेना ने बिगडकर फूकियेन प्रदेश मे नवम्बर, 1933 मे जनता की सरकार स्थापित कर ली। इसी साल के मई महीने मे जेनरल फेग यू शेग ने भी च्याग के विरुद्ध हो चहार प्रदेश के कलगन नगर मे जापान-विरोधी जनसेना का सगठन शुरू किया था, यह हम पहले बतला आये है।

5. पचम आक्रमण (1933 ई.)

च्याग काइ-शेक को आदमी कहना गलत होगा, वह दानव है और बड़ा मूढ। विदेशी साम्राज्यवादियों को चीन के भीतर कोई मोटा आदमी चाहिए था, जो कि उनके हाथो मे पूरे तौर से बिकने के लिए तैयार हो। इसी खयाल से उन्होंने च्याग को सिर पर चढ़ाया। च्याग जैसा पतित, नीच, क्रूर राजनीतक नेता दुनिया में शायद ही किसी देश को किसी समय मिला हो। जनता चाहती थी कि च्याग अपनी शक्ति को कम्युनिस्टो के खिलाफ बरबाद न करके उसे जापान के विरोध मे लगाये। 5 लाख सेना के साथ आक्रमण करके अभी अभी वह पूरी तौर से विफल हो चुका था, लेकिन उसने फिर कम्युनिस्टो के खिलाफ ही मुहिम शुरू की। शांघाइ-निवासी उससे जापानियो से प्रतिरोध करने की माँग कर रहे थे। उसने शाघाइ के इन जापान विरोधियो को कतल करके उनका मुँह बन्द करना चाहा, वहाँ के बैकर, प्रोफेसर आदि जैसे प्रतिष्ठित लोगों द्वारा स्थापित 'मुक्ति आन्दोलन संघ' के सदस्यो को पकड़कर जेल मे भर दिया। बस, उसका एक ही कहना था : "पहले लाल डाकुओं को खतम करो, फिर दूसरी बात। इसके पहले जो जापान-विरोध की बात करता है, वह देशद्रोही है।"

अब की बार (अक्टूबर, 1933) च्याग ने 10 लाख सेना लेकर कम्युनिस्टो के ऊपर आक्रमण किया, जिसमे से 5 लाख केन्द्रीय लालसेना पर आक्रमण करने के लिए झोक दिये गये। दुश्मन की शक्ति के अधिक होने पर डटकर मुकाबला करना साथी माओ की रणनीति के विरुद्ध था, लेकिन पार्टी के केन्द्रीय सगठन अभी भी माओ के पथ-प्रदर्शन को पूरी तरह से मानने के लिए तैयार नही थे। एक समय केवल रक्षात्मक युद्ध लड़ने की गलती की गई, जिसके कारण इस बार लालसेना दुश्मन के घेरे को चकनाचूर करने में सफल नहीं हो सकी।

1933 के अक्टूबर मे हमला शुरू हुआ था। 1934 की फरवरी में सोवियत चीन की राजधानी जुइचिन मे दूसरी अखिल चीन सोवियत काग्रेस का अधिवेशन हुआ। इसी काग्रेस मे महान् अभियान का निश्चय

किया गया।

च्यांग की सेना ने पाँचवे आक्रमण मे नये हथियारो और नये साज-सज्जा से सज्जित होकर आक्रमण किया था। उसने अपनी आधी शक्ति द्वारा सीमेंट की फौजी चौकियो को कायम करते आगे बढना शुरू किया। सीमेंट की दीवालोवाली मोर्चाबन्दी के साथ यह फौजी चौकियाँ मील-मील पर कायम की गई थीं। च्याग अब नये रूप मे चीन की महादीवाल का अनुकरण कर रहा था। महादीवाल विदेशी हूणों के आक्रमण से बचने के लिए खडी की गई थी, और च्याग की इन फौजी चौकियों की दीवाल कम्युनिस्टों की सबसे बड़ी शक्ति जनता थी, जिनके ही हित के लिए वह लड रहे थे। च्याग ने उनके इस शक्तिस्रोत और रक्षास्थान को नष्ट करने का निश्चय कर लिया। जिस गाँव मे भी कुओमिन्ताग की सेना पहुँचती, वहाँ के पुरुषों को वह कत्ल कर स्त्री-बच्चों को बेच डालती। जिस गाँव मे फौज मुकाम करती, वहाँ की स्त्रियों को पहले वह दो भागो मे बाँट देती : एक भाग उन स्त्रियो का होता, जिन्होंने बचपन में अपने पैर नहीं बाधे, इसलिए वह 'बडे पैरवाली' होती तथा वह स्त्रियाँ भी जो 'बालकटी' होती। इन्हें कुओमिन्तागी कम्युनिस्ट कहकर फाँसी पर चढा देते। बाकी स्त्रियो मे से रूपवतियों को सैनिक सरदार अपने लिए रख लेते, दूसरों को आम सैनिको मे बाँट देते, जो पीछे उन्हें वेश्याखानो में बेच देते—1934 ई मे कुओमिन्ताग ने वेश्यालयो का स्त्री बेचने का यह नया व्यापार शुरू किया।

इस समय दुर्भाग्य से लालसेना का सूत्र सचालन माओ के हाथ नहीं था, पार्टी के 'उग्र' नेताओं ने अपने कामों मे च्याग को मदद दी।

12

महान् अभियान (1934 ई.)

1934 ई की दूसरी सोवियत काग्रेस ने देख लिया था कि सोवियत का तत्कालीन प्रदेश अनुकूल नही है। वहाँ बाहर से किसी तरह का सम्बन्ध स्थापित करके सहायता नही प्राप्त की जा सकती। इसकी अपेक्षा चीन के उत्तर पश्चिमी भूभाग ज्यादा सुरक्षित थे, जहाँ पर कम्युनिस्टों ने अपनी सोवियत भी कायम कर ली थी। च्याग के लिए अपनी सेना को उत्तरी दूर ले जाना आसान नहीं था। अब वह समय आ गया, जबकि लालसेना को क्याग-सी और अपने दूसरे अधिकृत स्थानो को छोडना था, 'अर्ध तजे बुध सरबस जाव' की नीति को स्वीकार किया गया। इस वक्त तो किसी तरह भी अपने अस्तित्व को कायम रखना बहुत जरूरी था। यदि साथी माओ चे तुग की चली होती, तो उतनी हानि न उठानी पडती और न च्याग को अपने मनसूबे मे सफलता मिलती।

इस महान् प्रयाण के समय घर-घर ऐसे दृश्य देखे जा रहे थे। माओ चे-तुग की पत्नी यग काइ माइ को च्याग काइ-शेक के सैनिको ने मार डाला था, उसके बाद माओ ने सोवियत शिक्षा-विभाग में काम करनेवाली महिला हो चे-नियें से ब्याह किया था। माओ ने पत्नी से कहा, "तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है। यहाँ किसी किसान-परिवार मे रह जाओ।" पत्नी ने जवाब दिया : "जिससे मेरे साथ उसे भी कतल होना पडे। नहीं, मै अपने बच्चो को लिए साथ चलूँगी।" गाँव मे घर-घर मे तैयारी हो रही थी। बूढे-बूढियाँ भी कसाई च्याग काइ शेक के शासन में रहने के लिए तैयार नहीं थे। लेकिन, माओ के छोटे-छोटे बच्चे कैसे पैदल चल सकते थे? इसलिए माओ ने कम-से-कम बच्चों को वहीं किसी विश्वासपात्र परिवार मे रख देने के लिए आग्रह किया। पत्नी ने ज्वाब दिया : "अभी तो मै साथ ही ले चलूँगी, रास्ते मे फिर देखा जायगा। छोटे को मै अपनी पीठ पर बाँध लूँगी, और बडे को हाथ से पकडे चलूँगी।" पत्नी ने हँसते हुए यह भी कहा—"तुम्हारे लिए मैंने सौ सिगरेट भी बाँध लिये है।"

कम्युनिज्म के प्रपितामह कार्ल मार्क्स तम्बाकू के पाइप बहुत पिया करते थे, पितामह लेनिन ने सिगरेट

पीते न मदिरा, कुछ समय तक तो वह घासहारी भी हो गये थे। पिता स्तालिन भी प्रपितामह की तरह ही पाइप के शौकीन थे। माओ चे-तुग सिगरेट के बडे प्रेमी थे। हाँ चे-निये के सौ सिगरेट कितने दिनों तक चलते ? जब सिगरेट खतम हो गये, तो माओ ने रास्ते मे धूम्रपान के नये-नये तजर्बे किये, तम्बाकू की जगह दूसरे पत्तों के सिगरेट बनाकर पिये।

1. प्रस्थान (1934 ई)

16 अक्तूबर 1934 को दक्षिण क्याग सी के यूतू ग्राम में सन्ध्या के समय माओ एक टेकरी पर खडे थे, जहाँ 90 हजार लाल सैनिक जमा थे। उन्होंने कारखाना की मशीन उखाड ली थी, जिनके ढोने के लिए बहुत-से खच्चर तथा हजारो आदमी हाजिर थे। हथियारखाना और कोष भडार की सारी चीज खाली करके उसी जगह लाई गई थी। क्याग सी प्रदेश मे जो कुछ भी उखाडकर लाया जा सकता था उसे उखाडे नर-नारी, बाल-वृद्ध सारी जनता तैयार थी। अपने महान् देश ही मे, किन्तु एक अज्ञात भूभाग मे उन्हे जाना और अपने सब घर बार पूर्वजो की जन्मस्थली को छोडकर। इस समय उनके हृदय भारी थे, लेकिन क्षितिज मे दूर तक देखनेवाली माओ की आँख बतला रही थी कि यह प्रस्थान सदा का नही है। फिर लालसेना और क्रान्तिकारी जनता सबल होगी और क्याग सी ही नही, बल्कि अपने सारे महादेश को देशी और विदेशी आततायियो से मुक्त करने मे समर्थ होगी। जिस समय यात्रा शुरू की जा रही थी, उस समय यह मालूम नही था कि कितनी दूर की यात्रा करके वह अपने लक्ष्य स्थान पर पहुँचेंगे। उन्हे अन्त मे 25 हजार ली (8 हजार मील से भी ज्यादा) की यात्रा करनी पडी, जिसमे अनगिनत सैनिक और राजनीतिक कठिनाइयो तथा भयकर प्राकृतिक रुकावटो, बर्फ से ढँके दुर्गम पहाडो और उच्च मैदानो से गुजरना था। पूरे एक साल के सफर के बाद अक्तूबर, 1935 मे केन्द्रीय लालसेना उत्तरी शेन्सी मे पहुँचनेवाली थी।

प्रस्थान बहुत गुप्त रीति से करना था, जिससे च्याग काइ शेक को पता न लगे। सचमुच ही दुश्मन को सप्ताहो बाद मालूम हो सका कि कम्युनिस्ट क्याग सी छोडकर चले गये। लेकिन क्याग सी के किसान च्याग के हाथ मे अपनी जन्मभूमि को बेखटके जाने देने को तैयार नही थे। वह छापामार बनकर कुओमिन्तागी सेना के नाको दम करते रहे। 1937 ई तक उनकी अन्तर्धान सत्ता मौजूद रही, जबकि च्याग को सयुक्त मोर्चे की शर्तो पर हस्ताक्षर करना पडा।

माओ टेकरी पर से उतरे। उसी रात दुनिया के इतिहास का अद्वितीय महान् अभियान शुरू हुआ। इसके सामने ग्रीक सेना का दुर्गम पहाडो के भीतर से कालासागर के रास्ते पीछे लौटना हानिबाल की सेना का आल्प्स पार करना या नेपोलियन का मास्को से भागना भी कुछ नही था। 18वी सदी मे वोल्गा किनारे से लाखो कलमक मगोलो का अपनी जन्मभूमि की ओर प्रस्थान कुछ कुछ उसकी तुलना मे आ सकता है, लेकिन इस महान् अभियान की प्राकृतिक और मानवी बाधाएँ उससे कही अधिक थी।

(1) **आगे बढ़ो**–तीन रात तक पश्चिम दिशा मे सेना बढती रही। उन्हे दुश्मन को धोखा देना था, इसलिए दिशाओ को परिवर्तित करते चलना था। पहिले पश्चिम जाकर फिर वह दक्षिण की तरफ मुडी। 21 अक्तूबर को क्याग सी मे, 3 नवम्बर को हूनान मे, फिर एक सप्ताह तक हूनान मे ही, 29-30 नवम्बर को भी इसी तरह लडाई लडकर च्याग काइ शेक के व्यूह को तोडना पडा। फिर जेचुआन के रास्ते मे चलने लगे। समूची सेना को दो भागो मे बाट दिया गया था। तीन रात तक एक सेना पश्चिम की ओर और दूसरी दक्षिण की ओर बढती रही। चौथी रात को दोनो सेनाओं ने मिलकर हूनान और क्वान्तुग की किलेबन्दी पर अकस्मात आक्रमण कर दिया, दुश्मन को इसका पता नही लगा और वह रास्ता छोडने के लिए मजबूर हो गया। यह पहली किलाबन्दी था। अभी आगे चार किलाबन्दियाँ और तोडनी थी, तभी कम्युनिस्ट कुओमिन्तागी सेना के पजे से निकल सकते। च्याग सी की पहली किलाबन्दी को लालसेना ने 21 अक्तूबर को तोडा, हूनान की दूसरी पक्ति को 3 नवम्बर को। तीसरी किलाबन्दी भी हूनान मे थी, जिसके तोडने के लिए एक सप्ताह तक भयकर लडाई लडनी पडी। 29 नवम्बर को च्याग की सेना चौथी पक्ति को छोडने के लिए मजबूर हुई। अब लालसेना

सीधे उत्तर में हूनान की ओर बढ़ी। वहाँ से जेचुआन होते सोवियत जिलो मे प्रवेश करके चौथा मोर्चा सेना से मिलना था। लेकिन च्याग काइ-शेक की सेना भी चौकन्नी थी, उसकी 110 रेजिमेन्टे वहाँ तैयार थी, जिनके साथ 16 अक्तूबर से 29 नवम्बर तक नौ बडी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी।

क्यांग-सी, क्वान्तुंग, क्वागसी और हूनान को पार करने में इतनी हानि पहुँची, कि सेना की सख्या एक तिहाई रह गई। इस अभियान के समय भी पार्टी के केन्द्रीय सगठनों ने कितनी ही सैनिक गलतियाँ कीं। दुश्मन पीछे से बढ़ता आ रहा था, आगे का रास्ता भी उसने रोक दिया था। ऐसे भीषण सकट में पडी लालसेना और अपने क्रान्तिकारी लक्ष्य को बचाने के लिए साथी माओ चे-तुंग और उनके साथियो ने दृढता के साथ संघर्ष किया।

(2) चू-नाई-कान्फरेंस (1935 ई)–गलतियों को दूर करने के लिए जनवरी 1935 मे क्वे-प्रान्त के चू-नाइ स्थान मे केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो की विस्तारित कान्फरेस बुलाई गई। जो समस्याएँ सामने थी, उनमे से अधिकाश को साथी जानते थे। उनकी सतर्कता और मदद से 'वामपक्षी' अवसरवादियो को यही पार्टी से अलग कर दिया गया, और सारी पार्टी ने एकमत हो साथी माओ चे-तुग के तपे नेतृत्व को मान लिया। 1935 ई. का आरम्भ था, जबकि पार्टी ने यह जबर्दस्त निर्णय किया। तब से 'चीन की कम्युनिस्ट पार्टी' और चीन की क्रान्ति लगातार इस असाधारण, महान् और विश्वसनीय नेता के मार्क्सवादी-लेनिनवादी नेतृत्व में रही है, जो यही चीनी-क्रान्ति की जीत के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण कारण हुआ।

क्वे-चाउ पहुँचकर अब यात्रा के लिए कुछ और भी निर्णय करने पडे। साथ चलनेवाले सामान को ढोने के लिए पांच हजार आदमी लगे रहते, जिसके कारण चलने की गति भी धीमी होती। लालसेना को अपना अभियान गुप्त रखने के लिए रात मे चलना पडता। साथ के सामान को कम किया गया, क्याग-सी से उन्होंने उत्तर मुंह यात्रा शुरू की थी, जिसका पता लगाना शत्रु को आसान हो गया था। क्वे-चाउ से अब उन्होंने टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता लिया। नानकिंग (कुओ मिन्ताग की राजधानी) के हवाई जहाज बराबर लालसेना का पता लगाने के लिए उड़ा करते थे। उनके लिए अब यह मालूम करना मुश्किल हो गया कि कम्युनिस्ट वाहिनी किधर जा रही है। उसे धोखा देने के लिए सैनिक टुकडियाँ किसी दूसरी दिशा को चल पडती, और मुख्य सेना चुपचाप आगे बढ़ती। अगल-बगल में बहकाने के लिए छोटी टुकडियाँ हल्ला मचाती चलती। दुश्मन के हवाई जहाज जहाँ-तहाँ गोला गिराने की भी कोशिश करते। वह खास तौर से इस बात की कोशिश करते, कि हथियार बनानेवाली मशीनें साथ न जाने पायें।

च्याग को विश्वास था कि जेचुआन मे कम्युनिस्ट याग-त्सी नदी पार करेंगे। इसी ख्याल से उसने हू-पे, अन-ह्वेइ और क्याग-सी में बहुत-सी सेनाएँ मँगाकर जहाजों द्वारा उन्हें पश्चिम की ओर भेज रास्ता रोकना चाहा था। नदी के सभी घाटों और उतार-स्थानों पर उसने किलाबन्दी कर रक्खी थी। समझते थे कि कम्युनिस्ट नदी के दक्षिणी तट से आएँगे, इसलिए नदी की सारी नाव कुओ मिन्तागी सेनाओ ने उत्तरी तट पर जमा कर ली थी। सभी सडको पर सैनिक घेरे पडे हुए थे, जिसमे कम्युनिस्टों को अन्न न मिल सके। इसके लिए बहुत बडे इलाके से अनाज हटा लिया गया था। जेचुआन के राज्यपाल की मदद के लिए भी सेनाएँ भेजी गई थी, और युन्नान् प्रदेश की सीमा पर भी सेनाएँ तैनात थी।

शतरज के चतुर खिलाडी की तरह से च्याग की सभी मोहरे और चालें माओ को साफ दीख रही थी। उनके नेतृत्व में विश्वास रखनेवाली सेना को घबराने की आवश्यकता नही थी। चार महीने तक कम्युनिस्ट कभी एक ओर बढ़ते, कभी दूसरी ओर हटते, कभी एक जगह लुप्त होते और कभी दूसरी जगह प्रकट होते। साथ-साथ वह शत्रु की सेना पर आक्रमण भी करते रहते, जिसमे च्याग के पाँच डिवीजन खतम हो गये। लालसेना ने प्रादेशिक राजधानी पर भी अधिकार कर लिया। इन लगातार होनेवाले सघर्षो मे लालसेना केवल खर्च ही नही बल्कि आमदनी भी करती रही। इसी सघर्ष के दौरान में उसने अपने लिए 20 हजार नये सैनिक भरती किए। गाँवो और शहरो में जहाँ भी कम्युनिस्ट जाते, वह सभाएँ करके बतलाते कि किसानों और गरीबों के लिए हम क्या करना चाहते हैं, और क्यो च्याग की बालू की भीत बहुत दिनो तक टिक नही सकती। इस तरह

वह जहाँ लोगों में भविष्य के प्रति विश्वास तथा अदम्य उत्साह भरते, वहाँ साथ ही कम्युनिस्ट पार्टी स्थापित करते तरुणों को लाल सैनिक भी बनाते।

अब यांग-ची नदी पार किये बिना शेन्शी में अपने गतव्य स्थान में पहुँचना संभव नहीं था। च्याग काइ-शेक दूसरों पर कैसे विश्वास कर सकता था, जबकि वह जानता था कि उसका रास्ता पाप और स्वार्थ का है। यांग-ची पार न हो जायें, इसके लिए उसने खुद आकर स्वेचाउ-जेचुआन की सडक को इस तरह घेर लिया, कि उस पर आगे बढ़ने का केवल एक ही रास्ता था, जिससे महान् नदी के तट पर पहुँचा जा सकता था। च्यांग ने समझा था कि इस रुकावट से कम्युनिस्ट दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ने के लिए मजबूर होंगे, जहाँ तिब्बत की निर्जनप्राय भूमि में जाकर वह मर खप जायेंगे।

लेकिन, च्याग की यह सारी चाल बेकार गई। मई, 1935 को अचानक लालसेना दक्षिण की ओर मुड़ पड़ी और वर्मा तथा हिन्दचीन की सीमा पर अवस्थित युन्नान प्रदेश में पहुँची। वह इतनी तेजी से चली थी, कि चार दिन के भीतर ही राजधानी युन्ननफू से दस मील पर पहुँच गई। फ्रांसीसी रेलवे लाइन को जल्दी-जल्दी ठीक कराया गया। साम्राज्यवादियों द्वारा दिये हुए उसके हवाई-जहाज जगह जगह बम गिराने लगे। कितने ही समय शत्रु यही समझता रहा, कि हमने यहाँ अब लालसेना को घेर लिया है। पर आखिर में उसे पता लगा, कि कम्युनिस्टों ने उसे धोखा दिया। उस समय युन्ननफू में च्याग अपनी पत्नी के साथ हवाखोरी के लिए आया हुआ था। कम्युनिस्टों के आने की खबर पाते ही दोनो वहाँ से प्राण लेकर फ्रेंच रेलवे द्वारा भागे।

चीन में कम्युनिस्ट जहाँ नहीं पहुँच पाये थे, वहाँ के भी किसान, और गरीब जनता जानती थी कि हमारे उद्धारक यही है, और वह सारी कुर्बानियां हमारे ही लिए कर रहे है। लालवाहिनी के स्वागत के लिए जगह जगह आते थे। अनपढ़ किसान नहीं समझ पाते थे कि उनका उद्धारक सोवियत कोई आदमी है या कुछ और। वह अपनी मण्डली बनाकर सोवियत साहब से मिलने आते। उनकी सीधी सादी बातों से प्रसन्न हो माओ और उनके साथी सीधे सादे शब्दों में सोवियत तंत्र की बातें बतलाते। गाँववाले पहले ही से लालसेना को 'गरीबों की फौज' कहकर पुकारते थे। वह आकर माओ से कहते—हमारे गाँव को भी मुक्त कर दो। लालसेना हर जगह जमींदारों की जमीन को किसानों में बाँटती, यही नहीं, बल्कि नई पाई हुई जमीन की रक्षा के लिए किसानों को हथियार देती।

(3) माओ के बच्चे—यांग ची नदी पार करने का भारी संकट सामने था। क्वेचाउ प्रदेश के गाँव चू नाइ में पहले ही इतनी यात्रा करने के बाद माओ के दोनों बच्चे बीमार हो गये। उनकी पत्नी हो चे-नियें भी बहुत परिश्रांत हो गई थी। एक दिन रात में लेटने के लिए पुआल फैला रहे थे कि इसी समय गाँव की एक स्त्री आई। उसने माओ की स्त्री से कहा :

"बहिन, मैंने सुना है, तुम्हारे बच्चे बीमार है। मुझे थोड़ी सी घरेलू दवाई करना आता है, लाओ, जरा नाड़ी देख लूं।"

नाड़ी देखकर स्त्री ने कहा—"यह कोमल फूल इस यात्रा में नहीं निभ सकेंगे। इन्हें मेरे पास रख जाओ।"

माओ पत्नी ने कहा : "बहन, यह मैं कैसे कर सकती हूँ? ऐसा करने में तुम्हारे ऊपर आफत आयेगी। मैं बच्चों को लेकर यदि तुम्हारे पास रहूं, तो क्ओमिन्तांगी सेना मुझे पहचाने बिना नहीं रहेगी।"

"तो बच्चों को मेरे पास रख जाओ। ये मेरे बच्चों के साथ रहेंगे, नहीं तो मैं उन्हें अपने पीहर भेज दूँगी। जैसे भी होगा, मैं इनके ऊपर आंच नहीं आने दूँगी। जब फिर तुम लौटोगी, तो ले लेना।"

हो चे-नियें बच्चों को लेकर उस बहन के घर गई। छोटा बच्चा सो रहा था, बड़े को ज्वर चढ़ा हुआ था। बड़े बच्चे को कुछ देकर बहला दिया। उसे क्या पता था कि मेरे माँ-बाप मुझे यहाँ छोड़े जा रहे है—हाँ, उसी की जान को बचाने के लिए। माँ का कण्ठ भर आया। आकरण-बन्धु स्त्री ने बच्चे को अपनी गोद में ले लिया, और उसे खिलौना देने के बहाने दूसरी ओर ले गई। हो चे-नियें ने आँसू भरकर ऊँघते छोटे बच्चे से विदाई ली।

2. भीषण बाधाएँ

(1) यांग-ची पार—युन्नान की पहाड़ियों मे बहती यांग-ची दो ही तीन जगहो में पार की जा सकती है, और उन सभी जगहों पर च्यांग ने जबर्दस्त पहरा बैठा रक्खा था। लालसेना तीन दलो मे विभक्त होकर अब बढ़ रही थी। पथ-प्रदर्शक सेना याग-ची के किनारे पहुँची। वहाँ नावें जला दी गई थी। सेना ने बाँसों का पुल बनाना शुरू किया। च्यांग के हवाई जहाजो को पता लगा, तो उन्होंने यह समझकर सतोष कर लिया कि पुल बनाने में अब हफ्तो लगेगे, लेकिन एक शाम लालसेना की एक बटालियन वहाँ से चुपचाप रवाना हो एक रात दिन में 85 मील चलकर बेर ढलते समय चाउ-पिंग स्थान में पहुँच गई। यही एक मात्र स्थान बचा हुआ था, जहाँ से नदी पार की जा सकती थी। च्यांग की सेना यहाँ भी पड़ी थी, लेकिन वह निश्चिन्त थी। उसको लाल डाकुओं के इतनी जल्दी यहाँ आ धमकने का खयाल नही था। लाल सैनिकों के पास च्यांग-सेना की वर्दियाँ भी थी, उनका इस वक्त उपयोग लाभदायक हुआ। कुओ मिन्तांगी सेना की वर्दी में शाम के वक्त वह किनारे के एक गाँव में घुसे। लोग धोखे म आ गये। छावनी मे पहुँचकर उन्होंने च्यांग के सैनिकों को चुपचाप आत्म समर्पण करने के लिए बाध्य किया, लेकिन नदी के इस पार कोई नाव न थी। च्यांग ने नावो को जलाने का हुकुम दे दिया था, किन्तु उसके आदमियों ने उन्हे परले पार ले जाकर सुरक्षित रख छोड़ा था। आखिर उन्हे भी कभी-कभी नावो की जरूरत पड़ती थी, और इधर लाल डाकुओं के आने की कोई सम्भावना न थी। लाल सैनिक च्यांग के एक अफसर को पकड़कर नदी के किनारे ले गये और उन्होंने उसे गोली से उड़ा देने का भय दिखाकर आवाज देने के लिए मजबूर किया। अफसर ने दूसरे तट से सैनिकों को आवाज दी—"हो हो सरकारी सैनिक पार जाना चाहते है, नाव जल्दी लाओ।" 'सरकारी सैनिको' के लिए एक नाव भेज दी गई। कुछ 'सरकारी सैनिक' नाव पर बैठकर उस पार पहुंचे। च्यांग के सैनिक ताश खेल रहे थे। नये 'सरकारी सैनिकों' ने हथियार दिखाकर हाथ उठाने का हुकुम दिया। उन्हे आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा। दूसरे दिन एक घुमघुमौव रास्ते से लालसेना का मुख्य भाग भी यहाँ पहुँच गया, जिसमें माओ और दूसरे नेता थे। और भी कुछ नावें वहाँ मिलीं। फिर ढुलाई शुरू हुई। छह बड़ी बड़ी नावें दिन रात यह काम करती रहीं। नौ दिनों मे सारी सेना पार हो जेचुआन प्रदेश की भूमि में पहुँच गई। जब सब लोग पार हो गये तो च्यांग काइ-शेक की आज्ञा को पूरा करते हुए नावों को बरबाद कर दिया गया।

(2) लोलो-प्रदेश में—लालसेना लोलो प्रदेश में पहुँची। यह चीन की भिन्न जाति जगलों में घिरी भूमि में रहती है। जाति से यह तिब्बती है, किन्तु संस्कृति में पिछड़ी हुई। पर बड़ी लड़ाकू जाति* है। चीनी कभी इस पूरी तरह पराजित नहीं कर सके। लोलो देश के पश्चिम म तिब्बत है। च्यांग को यह समझकर बहुत सन्तोष हुआ, कि लोलो पग पग पर लाल डाकुओं पर हमला करेंगे, और इस भूमि मे निकलने म उन्हे बहुत समय लगाना पड़ेगा। लेकिन, च्यांग को क्या मालूम था कि लोलो के लिए भी कम्युनिस्टो के पास मोहिनी मंत्र है। लोलो के सीमान्त पर पहुँचते पहुँचते लालसेना ने कई कुओमिन्तांगी सेनापतियों को हराया और उनके हाथ से कितने ही लोलो सरदार को मुक्त किया। अपने मुक्तिदाताओं के प्रति लोलो-सरदारों का सद्भाव का होना स्वाभाविक था। कम्युनिस्टों ने उन्हे समझाया, कि चीन के यह सफेद डाकू तुमपर हमपर सबपर जुल्म करते है, हम भी इसीलिए उनसे लड़ रहे है। उन्होंने बतलाया, जैसे तुम्हारे यहाँ काले और सफेद लोलो होते है, वैसे चीनी भी लाल और सफेद चीनी है। सफेद चीनी डाकू शैतान है, इसीलिए हम उनसे लड़ रहे है। लोलो-सरदारो ने अपने आदमियो से बात की। वह चीनी मात्र से पुश्तैनी की शत्रुता को इतनी जल्दी भूल कैसे सकते थे ? उनको कैसे विश्वास हो सकता था कि यह लाल चीनी सचमुच ही हमारे शत्रुओं के शत्रु हैं। उन्होंने कहा : "क्या सफेद चीनियो से लड़ने के लिए तुम हमें बन्दूके दे सकते हो ?" एक क्षण की भी देर न करते हुए लालसेना नायक लियो ने कहा—"अवश्य।" उन्होने लोलो के हाथों में बन्दूकें दे दी। लोलो और लाल सैनिकों

* लो लो तिब्बती भाषा मे म्लेच्छ या वर्वर को कहते है

ने धर्म-भाई की शपथ ली : "जो कायर इस शपथ को तोड़े, वह कुत्ते की मौत मरे।" सारी लोलो जातिवाले लाल सैनिकों के धर्म-भाई बन गये। उन्होंने हर तरह से अपने धर्म भाइयों की मदद करनी शुरू की। केवल वह पथ-प्रदर्शन ही नहीं बने, बल्कि सैकड़ो की तादाद में लोलो-तरुण लालसेना मे भरती हो गये।

(3) **तातू पार**—लालसेना का सेनापति लिन् पियाओ लोलो लोगों की सहायता से निर्विघ्न सबसे पहले तातू नदी के तट पर अवस्थित आन्-जेन्-चाग शहर में पहुँचा। वह इतनी तेजी के साथ वहाँ पहुँचा कि च्याग के हवाई-जहाजों को पता नहीं लगा। लोलो लोगों के पथ-प्रदर्शन में लालसेना की एक टुकड़ी ने चुपचाप पहाड़ी रास्तों से पहुँच इस छोटे शहर मे घुसकर उस पर कब्जा कर लिया। ऊँची जगह से तातू नदी की ओर देखने पर उस पार की तीन नावों में से एक पार आ रही है। नावों के लिए कड़ा हुकुम था, लेकिन च्याग के हुकुम को कड़ाई से पालन करने के लिए उसके सैनिक अपने को मजबूर नहीं समझते थे। तातू पार च्याग की जो सेना छावनी डाले पड़ी हुई थी, उसके तरुण सेनापति का घर कहीं आसपास ही था। उसकी पत्नी का पीहर नदी के इस पार था। पत्नी की इच्छा पीहर हो आने की हुई। पति ने देखा, अभी लालसेना का तो कहीं पता भी नहीं है, हो सकता है, हफ्तों बाद वह इधर आये, फिर पत्नी की इच्छा क्यों न पूरी कर दी जाय ? बस, पत्नी सदलबल पीहर के लिए यात्रा करती नाव पर इस पार आ रही थी। लिन् पियाओ ने नाव को अपने हाथ में कर लिया। फिर अपनी सेना की पाच कम्पनियों में से प्रत्येक में से सोलह सोलह आदमी ले 80 सैनिकों को नाव पर सवार कर उस पार भेजा। उसने अपनी मशीनगनों को भी पार के दुश्मनों की ओर करके पहाड़ पर लगा वह प्रतीक्षा करने लगा। मई का महीना था, बर्फ पिघल रही थी, जिसके कारण नदी की धार बढ़ी हुई थी। तातू की धार याग-ची से अधिक चौड़ी ही नहीं, बल्कि अधिक तेज भी थी, जिसको पार करने मे नाव को दो घंटे लगे। उस पार भी पहाड़ी शहर था। आन जेन चाग से नाव को अपलक दृष्टि से देख रहे थे। 80 आदमी बलि के बकरे बनकर जा रहे थे। नाव से नीचे उतरे शत्रु की तोपों के नजदीक से ही वह आगे बढ़े। इसी समय इस पार से लालसेना की मशीनगन गर्जन करने लगीं। उनके धुएँ में भी सैनिक आगे बढ़े। बात की बात में 80 वीर पहाड़ की टेकरी पर पहुँच गए और वहाँ अपने हाथ की मशीनगन बैठाकर दुश्मन पर गोली बरसाने तथा हाथों से बम फेंकने लगे। कुआमिन्तागी सेना इसके लिए तैयार नहीं थी, जरा ही देर में उसके सैनिक भागने लगे। पहली, दूसरी, फिर तीसरी पाँति भी काई की तरह फट गई, तातू पार लाल झंडा फहराने लगा, विजयघोष होने लगा। पहली नाव के साथ अब दो और नावें इस पार भेजी गई। तीनों पर अस्सी अस्सी सैनिक सवार हो उस पार चले। अब च्याग की सेना को आस-पास कहीं ठहरने की हिम्मत नहीं रही। तीन दिन तीन रात तक लगातार ढुलाई लगी रही, और लालसेना का एक पूरा डिवीजन उस पार उतर गया। बर्फ के अधिक पिघलने के कारण धार अधिक तेज होती गई। तीसरे दिन एक बार आने जाने में चार घंटे लग गए। ऐसा होने पर तो सारी सेना, उसके सामान और पशुओं को पार करने में हफ्ता लग जायगा। च्याग काइ-शेक को अब तक पता लग गया था कि तातू के किनारे क्या हो रहा है। लिन पियाओ ने कान्फरेन्स बुलाई। माओ-त्से-तुङ, चू-तेह, चाउ-एन्-लाइ, पंग-ते-हाइ आदि सभी नेताओं ने इकट्ठा होकर परिस्थिति पर विचार किया। मालूम हुआ, यहाँ से करीब सवा सौ मील पर तातू के किनारे एक और जगह है, जिस पर लिउ नामक एक पुराना पुल है। तिब्बत से पूर्व नदी पार करने का यही एक स्थान है, जहाँ नदी को पार किया जा सकता है। साथ ही यह भी मालूम हुआ कि यदि वहाँ तातू पार न हो पाय, तो फिर पीछे लौट लोलो देश में होकर तिब्बत की सीमा पार करनी पड़ेगी। नदी के दाहिने किनारे पड़ी लालसेना ने अब पश्चिम की ओर अपना मुँह मोड़ दिया। उसी समय नदी पार की लालसेना भी किनारे-किनारे पश्चिम की ओर बढ़ी। दोनों के बीच में प्रखरवाहिनी तातू चल रही थी। कहीं कहीं नदी की धारा इतनी सँकरी हो जाती कि दोनों किनारे के लालसैनिक आपस मे बात कर लेते। रात को भी दस हजार मशालें जलाकर लालसैनिको की पंक्ति आगे बढ़ती। दिन और रात कूच जारी रहा। केवल दस मिनट खाने और आराम करने के लिए मिला। एक एक मिनट का भारी मूल्य था, च्याग की सेना कहीं लिउ-पुल को तोड़ न दे। दूसरे दिन दाहिने तट की सेना को रुक जाना पड़ा, क्योंकि जचुआन की सफेद सेना ने उसका रास्ता रोक दिया, पर

दाहिने तट की लालवाहिनी उसी तरह आगे बढ़ती रही। इतने में ही उत्तरी (बायें) तट पर एक और सेना दीख पड़ी। वह सफेदसेना थी, जो पुल की ओर तेजी से बढ़ती जा रही थी। दिन भर दोनों तटों पर दोनों सेनाओं में होड़ लगी रही, किन्तु आखिर में लालसेना ही पुल के पास पहुँचने मे सफल हुई। च्याग के भाड़े के टट्टू भला इतनी परेशानी उठाने के लिए क्यो तैयार होते ?

सदियों पहले जंजीरो को दोनों किनारो पर बाँधकर यह पुल बनाया गया था। तिब्बत और दूसरे देशो मे भी ऐसे झूलेवाले कितने ही पुल देखे जाते है। दोनो किनारो पर पत्थर के दो-दो पाये खड़े किये गये थे, जिनसे लोहे की सोलह मोटी-मोटी जंजीरे बीच के सौ गज मे लटकी हुई थी। इन जजीरो से लटकती जजीरों मे तख्ते बँधे हुए थे। इन्ही पर होकर नदी पार करना था। पुल झूले ही की तरह हिलता था, इसे कहने की आवश्यकता नही। लालसेना जब नजदीक पहुँची, तो उसने देखा कि इस तरफ के आधे पुल के तख्तो को हटा दिया गया है, और पहले तट के पाये के नजदीक मशीनगन लगी हुई है, जिसके पीछे च्याग की सेना का एक पूरा डिवीजन बैठा हुआ है। पुल नष्ट कर देना चाहिए था, लेकिन 'अठारह प्रदेशो के धन' से बने पुल का उनको लोभ था। उन्होंने समझा, तख्ता हटा देने से काम हो गया लाल डाकू अब इस पार नहीं आ सकते।

लालसेना के पास एक भी मिनट बरबाद करने के लिए समय नही था, क्योंकि च्याग की और भी सेनाएँ दौड़ी आ रही थी। तुरन्त पुल पार करना है। ऐसे वीरो की वहाँ कमी कहाँ हो सकती थी, जो हथेली पर सिर रखकर जजीरो से नदी पार करने को तैयार होते ? बहुत से तैयार हो गये, जिनमे से तीस को चुन लिया गया। उन्होंने हथबमो और पिस्तौलो को पीठ पर बाँध एक के बाद एक हाथ से जजीर पर लटकते आगे बढ़ना शुरू किया। नीचे नदी गरज रही थी, सामने दुश्मन की मशीनगन गोलियो की बौछार कर रही थी। इस पार की लाल मशीनगनो ने भी परले पार गोलियाँ छोड़नी शुरू की। इस आग और गोली की वर्षा के बीच तीस वीर बन्दर की तरह जजीर मे लटकते, झूलते आगे बढ़ रहे थे। दुश्मन अपनी बन्दूको से ताक-ताककर निशाना लगा रहा था। एक वीर को गोली लगी, वह धड़ाम से नदी के खौलते पानी मे गिर पड़ा, दूसरा भी, तीसरा भी। लेकिन बाकी वीर बचे हुए तख्ते की ओर बढ़ रहे थे। गोलियाँ अब उनसे चूककर सामने की चट्टानो मे टकरा रही थी। च्याग के भाड़े के टट्टू कैसे विश्वास कर सकते थे कि ये लाल-डाकू आदमी है। जरूर यह मनुष्य है। उनकी वीरता ने भी शत्रु सैनिको पर प्रभाव डाला, और कितने ही जान-बूझकर अपनी गोलियों को इधर-उधर बहकाने लगे। अन्त मे एक लालसैनिक तख्ते के ऊपर पहुँच गया। पीठ पर से बम निकालकर उसने दुश्मन के अड्डे पर फेंका। शत्रु अब घबरा चुके थे। उन्होंने बाकी तख्तों को भी उखाड़ना चाहा, लेकिन जल्दी-जल्दी मे वैसा करने के लिए समय नही रह गया था। दूसरे लाल सैनिक भी तख्त की ओर बढ़े आ रहे थे। सफेद सैनिको ने तख्ते पर पराफीन छिड़ककर आग लगा दी, तख्ते जलने लगे, लेकिन तब भी बाकी लाल सैनिक घुटने और हाथ के सहारे लगातार आगे बढ़ते रहे। उनके हथबम लगातार दुश्मन के मशीनगन के घोंसले पर फटते रहे। सफेद सेना के पैर उखड़ गए। दूसरे तट से 'क्रान्ति चिरजीव', 'लालसेना की जय', 'तातू के बहादुरो की जय' की आवाज आने लगी। आग की कोई भी परवा न करके ये वीर दुश्मन की मशीनगन के नजदीक पहुँच गये। उन्होंने उसका मुँह भागती हुई कायरो की पल्टन की ओर फेर दिया। तब तक लाल सैनिको की दूसरी टुकड़ी भी जजीरो को पकड़कर झूलते बढ़ते तख्तो पर आ पहुँची। तख्तों की आग बुझा दी गई। पुल पर जल्दी जल्दी नये तख्ते लगाये जाने लगे। इसी समय एनजन-चाग मे तातू पार की हुई लालसेना भी च्याग की सेना की बाधा को हटाकर आ पहुँची। घंटे-दो घंटे मे पुल तैयार हो गया और दाहिने तट की लालसेना तातू पार करने लगी। च्याग काइ-शेक के हवाई जहाजो ने बम गिराकर लालसेना के रास्ते में बाधा डालने और पुल को तोड़ने की बहुत कोशिश की, किन्तु उनके अधिकतर बम तातू की धारा मे गिरकर ठडे हो गये।

इस प्रकार लाल वीरो ने तातू को पार किया। लालसेना ने भारी बाधाओं पर विजय पाई, लेकिन अभी बाधाएँ समाप्त नही हुई थी।

(4) दुर्लंघ्य हिमालय—तातू पार करने के बाद लालसेना अब पश्चिमी जेचुआन प्रदेश में प्रविष्ट हुई। च्यांग सुदूर जेचुआन प्रदेश में अपनी घेराबन्दी पूरी नहीं कर पाया था, लेकिन उसकी बाधाओं के कम होने पर भी लालवीरों के अभी सात दुर्लंघ्य पहाडी डाँडों को पार करते हुए तिब्बत की ऊँची पठारो से दो हजार मील का रास्ता पार करना था। तातू से उत्तर 16000 फीट ऊँचे 'महागिरि' डाँडे (खइ-छेन्-ला) को पार करना पड़ा। डाँड के ऊपर से उन्हें पश्चिम की तरफ तिब्बत की भूमि दिखाई दे रही थी. जान पडता है, बर्फ से ढँकी चोटियो का सफेद जगल फैला हुआ है। जून का महीना था, जब कि वह ताइ-स्वे-शान (महाश्वेतगिरि, कर-छेन्-री) को पार कर रहे थे। इस ऊँचाई पर सर्दी भयकर थी। लोगों के पास कपडे का अभाव था और दक्षिणी चीन के निवासी होने से वह इतनी सर्दी बर्दाश्त करने के आदी नही थे। कितने ही लाल सैनिक सर्दी के मारे ठिठुरकर मर गये। पाव-तुग-काग के नगे डाँडे को पार करना और भी कठिन हुआ। कमरभर वर्फीली कीचड पर लट्ठा रखकर उन्हे अपने लिए रास्ता बनाना पडा। इस डाँडे मे सेना के दो तिहाई पशु मर गये, जो एक बार गिरे, वह फिर नही उठ सके। इसके बाद भी तीन डाँडे आये जहाँ पर भी बहुत-से मनुष्यो और पशुओ की बलि देनी पडी। सारे महान् अभियान मे बेतार ने लालसेना की बडी मदद दी। भिन्न-भिन्न दल उसी के द्वारा अपने सम्बन्ध को स्थापित किये हुए थे।

जिस समय च्याग सी की केन्द्रीय लालसेना ने अभियान आरभ किया था, उसी के बाद दूसरे सोवियत-क्षेत्रो की सेनाओ ने भी कूच शुरू कर दिया। मावर काउ इलाके मे मुख्य लालसेना 20 जुलाई, 1935 को पहुँची, और यही दूसरी ओर से कूच करके आती चौथी मोर्चा फौज भी उससे आ मिली। इस जगह पर शू शेग चेन् और चेग काउ ताउ के नेतृत्व मे आकर लाल सैनिको ने सोवियत राज्य स्थापित किया था। सारी सेना बहुत थकी मादी थी, इसलिए उसे विश्राम करने की बडी आवश्यकता थी। तीन सप्ताह तक उसने यही विश्राम किया। जब क्याग सी से आई लालसेना के पास 90 हजार की जगह 45 हजार सैनिक रह गये थे। बाकी सभी मर नही गये थे, बल्कि जान बूझकर अपनी छोटी छोटी टुकडियो को जहाँ तहा छोड दिया था, जिससे कि वह पीछा करनेवाली च्याग की सेना को तग कर, किसानो मे अपने सिद्धान्तो का प्रचार करके उन्हे अपने शत्रुओ से लडने के लिए तैयार करे क्याग सी से जेचुआन तक जो प्रचार किया गया था, उसके फलस्वरूप अब जगह जगह विद्रोह हो रहे थे। उत्तरी हूनान मे हो लुग के नेतृत्व मे इस समय भी सोवियत शासन कायम था, और वह तब तक वहाँ से नही रवाना हुआ, जब तक कि उसे तिब्बत होकर आ मिलने का हुकुम नही दिया गया।

रास्ते मे लालसेना को रसद की जरूरत पडती थी। उसको जुटाने के लिए उन्होने ऐसा उपाय सोच निकाला था, जिससे अधिकाश जनता उनकी भक्त बनती गई। लाल सैनिक जिस स्थान पर पहुँचते जमीदारो, नौकरशाहो और बडे बडे अमीरो की सम्पत्ति जब्त कर लेते। यह लूट पाट नही थी, बल्कि बाकायदा जब्ती विभाग एक-एक चीज को सभालकर अपने हाथ मे लेता। जब्ती के बाद बेतार द्वारा हुकुम पाते ही चीजो का बँटवारा किया जाता। लालसेना अपने काम भर की चीज अपने पास रख लेती बाकी गरीबो मे बाँट देती। बाँट की चीजो को पाने के लिए मीलो से चलकर गरीब लोग आते। साधारण विचवाले किसानो को जरा भी नही छेडा जाता। जब्ती माल के अतिरिक्त लालसेना अपने साथ जो चाँदी सोना लाई थी, उसे भी वह गरीबो मे बाँटती चली। जमीदारो और महाजनो के पजे से छुडाने के लिए वह कर्ज या दूसरी तरह के कागजो को फाडकर फेक देती, कर के भार को कम करके गरीब किसानो को बन्दूको से हथियारबन्द भी करती।

3. खतरे से बाहर

मावँर काउ और मा कुग मे लालसेना ने विश्राम किया। यहाँ पर चौथी मोर्चा फौज ने सोवियत शासन स्थापित किया। चौथी फौज का सगठन हूनान हू, प आन् हेइ के सोवियत जिलो मे हुआ था। 1933 ई. मे ही आकर उसने जेचुआन मे अपनी जड जमा ली थी। जिस समय लालसेना क्याग-सी केन्द्रीय लालसेना इससे आकर मिली, उस समय इसकी सख्या 50 हजार थी। इस प्रकार अब लालसेना में प्रायः एक लाख सैनिक थे।

(1) सलाह-मशविरा—शू शेग चेन् और चाग कुओ ताउ ने इस सुदूरस्थ सोवियत-शासन को काफी मजबूत

कर रक्खा था। यहाँ विश्राम लेते आगे का कार्यक्रम निर्धारित करना था, जिसके लिए स्थानीय सोवियत के प्रतिनिधियों और केन्द्रीय नेताओं का सम्मेलन हुआ। चांग कुओ ताउ का रवैया इस वक्त अनुकूल नहीं था। लालसेना को अभी अपना अभियान खतम नहीं करना था, बल्कि उसे और दूर जाकर अपने को जमाना था। लेकिन चांग कुओ-ताउ का कहना था, हमें यहाँ जम जाना चाहिए, फिर धीरे-धीरे यांग-ची के दक्षिण में भी सोवियत का विस्तार करना चाहिए। माओ और उनके साथियों ने बहुत समझाया : "तुम जापान को भूल रहे हो। इस समय कुओमिन्तांग से लड़ने से अधिक महत्त्व का काम है जापान से लड़ना। जैसे भी हो, हमें राष्ट्रीय एकता स्थापित करनी है। हमें च्यांग काइ-शेक को जापान-विरोधी संयुक्त मोर्चा में लाना है, और जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी जापानी मोर्चे के नजदीक पहुँचना है। यदि हम जापानी फौज को एक-दो लड़ाइयों में पराजित कर सकें, तो देश-भाइयों की हिम्मत बहुत बढ़ जायगी।"

शू शेंग-चेन् ने भी चांग को समझाने की बहुत कोशिश की, किन्तु उसने एक नहीं मानी। यहीं से चांग कुओ-ताउ साथी सू स्यांग-चेन् के नेतृत्व में चलनेवाली लालसेना की टुकड़ी में काम करता था। चांग कुओ-ताउ का वस्तुतः वह बहाना था। क्रान्ति के भविष्य के बारे में उसका विश्वास अब निर्बल हो चुका था। वह फूट डालकर पार्टी के साथ गद्दारी करने मे जुट गया था। उत्तर-पश्चिमी जेचुआन से केन्द्रीय लालसेना के साथ उत्तर की दिशा में बढ़ने से इन्कार करके वह सैनिकों के एक हिस्से को जबर्दस्ती पीछे हटाकर सी-कांग प्रदेश की ओर ले गया, और वहाँ उसने अवैधानिक तरीके से एक दूसरा केन्द्रीय संगठन कायम कर लिया। लेकिन, माओ चे-तुंग की ठीक नीति एवं चू-तेह, जेन् पी-शी, हो लुंग, क्वान स्यांग-मिन् और दूसरे साथियों की दृढ़ता के कारण गद्दार चांग कुओ ताउ के फूट डालनेवाले षड्यन्त्रों का जल्दी ही पूरी तौर से पर्दाफाश हो गया, तो भी इन षड्यन्त्रों के कारण लालसेना को भारी नुकसान उठाना पड़ा।

लालसेना को अब अपने अन्तिम लक्ष्य-स्थान की ओर बढ़ना था।

(2) लक्ष्य स्थान को–1 अगस्त को लालसेना का जन्मदिवस था। माओ ने उसके सम्बन्ध में रेडियो द्वारा एक वक्तव्य दिया, जिसमें च्यांग काइ-शेक को जापान-विरोधी संयुक्त मोर्चे में शामिल होने के लिए निमंत्रण देते हुए कहा : "घरेलू युद्ध को बन्द करो। जापान के विरुद्ध लड़ने के लिए एक हो जाओ।" उसी दिन आगे की यात्रा फिर शुरू हो गई। शेन्शी में पहुँचने से पहले अभी उन्हें एक बीहड़ घास के मैदान से गुजरना था। चू-तेह जेचुआन की सेना के सेनापति बनाकर वहीं छोड़ दिये गये थे, माओ अपने दूसरे सेनापतियों तथा 30 हजार सेना के साथ अब आगे के बीहड़ रास्ते मनूजू और तिब्बत के पूर्वी हिस्से से होकर चले। इस समय लालसेना का वास्ता खम्पा लोगों से पड़ा, जो कि लाल-सफेद का कोई भेदभाव न करते सभी चीनियों के साथ अपार घृणा रखते थे। पैसा रहने पर भी यहाँ कुछ खरीदा नही जा सकता था। रास्ता जंगल से था, जहाँ मजू लोग छिपे रहते और मौका पाते ही लाल सैनिकों पर टूट पड़ते। घाटियों और दर्रों को पार करते वक्त वे ऊपर से चट्टानों को गिराते। मंजुओं की रानी चीनियों से सख्त घृणा करती थी। उसने हुकुम दे रक्खा था कि जो कोई चीनी सेना को मदद देगा, मै उसे जिन्दा खौलते कड़ाह में भून डालूँगी। बड़ी बीहड़ घासवाली भूमि आई, जिसमे दस दिनों तक किसी भी आदमी की सूरत नहीं दिखाई पड़ी। दिन-रात वर्षा होती रही, दलदली भूमि के बीच से पहला रास्ता था, जरा भी इधर-उधर हटने पर आदमी का पता नहीं लगता था। ईंधन के लिए नहीं। तिब्बत से जो हरे गेहूँ वह अपने साथ लाये थे, उसी को वच्चे चबाते अपनी भूख शान्त करते। पेड़ भी नहीं थे। हलका रहने के लिए तम्बू भी साथ नहीं लाया गया था। तो भी लालसेना फौलाद की बनी थी, उसे उतनी क्षति नहीं हुई, जितना कि उसका पीछा करनेवाली च्यांग काइ-शेक की सेना को–जो रास्ता भूलकर कभी की नष्ट हो चुकी थी।

लालसेना कान्सूकी सीमा पर पहुँची, लेकिन यहाँ नानकिंग, तुंग-पे और सी-निंग की मुसलमानी सेना उनके मुकाबले के लिए तैयार थी, सी-निंग (सी-लिंग) के मुसलमान घुड़सवार बड़े जबर्दस्त लड़ाके समझे जाते थे। इनका सरदार शासक, मुल्ला, जमींदार और व्यापारी सब कुछ था। वह कम्युनिस्टों को फूटी आँखों नहीं देखना चाहता था। उसने सभी मुसलमानों को भड़का रक्खा था कि लाल-डाकू इस्लाम के भारी दुश्मन हैं। लालसेना

को कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं, जिनमें से एक की भी हार मे सब किये-कराये के चौपट होने का डर था, लेकिन विजय सदा लालसेना के साथ रही। मुसलमानी सेना से छीने हुए घोडो से लालसेना ने अपना रिसाला तैयार किया। अन्त में 20 अक्टूबर, 1935 को 20 हजार ली (8 हजार मील से ऊपर) की यात्रा करके लालसेना शेन्शी प्रदेश में महादीवाल के ठीक नीचे पहुँच गई। महान् अभियान का सफल अन्त हुआ। उस समय लालसेना के पास 20 हजार सैनिक रह गये थे। महाभियान एक दूसरी दृष्टि में सफल रहा : अपने सिर को दे-देकर इन क्रान्तिवीरों ने क्रान्ति के सन्देश को चीन के बहुत भारी भाग तक पहुँचा दिया।

माओ चे-तुंग ने इस महान् अभियान के बारे मे कहा था :

"1935 के जनवरी मास में चुन-यी और क्वे चाउ मे लालसेना के पहुँचने के बाद अगले महीने का समय लगातार चलते रहने और बहादुरी के साथ बराबर लडते रहने म बीता। अनेक मुसीबतो, बीहड भयकर विशाल जगलो, खाइया, दर्रों और ऊँचे पर्वतों को लाँघते कठिन सर्दी, गर्मी, वर्षा और तूफानो मे, दूर दूर तक फैले मैदानों और जगली प्रदेशो को पार कर लालसेना को चलना पडा—सामने नदियाँ, वनो और पर्वतो की प्राकृतिक बाधाएँ थी, और पीछे लगातार पीछा करती चीनी सफेद सेना थी। किन्तु, लालसेना इनसे टक्करें लेती बढती गई। अक्तूबर, 1935 में लालसेना शेन्शी पहुँची। आगे चलकर उसको केन्द्र बना पश्चिमोत्तर इलाको का विस्तार किया गया। चीनी जनता, लालसेना और पार्टी के इस सफल अभियान और अपनी सगठित ताकत के साथ कान्सू और शेन्सी में पहुँच सकने के दो कारण थे—(1) कम्युनिस्ट पार्टी का सफल पथ प्रदर्शन, (2) सोवियत इलाकों की जनता और उसके पुत्रो का साहस, बुद्धिमानी लगन, अनोखी वीरता और क्रान्तिकारी प्रसार। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी हमेशा मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तो पर चल रही है और आगे भी चलती रहेगी, वह हर तरह की अवसरवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ लड़ती रहेगी। इसी विश्वास पर, इसी राह पर हमारी अजेय शक्ति और अन्तिम विजय निश्चित है।"

अभियान मे लालसेना को 20 करोड जनसंख्यावाले 12 प्रदेशो से गुजरना पडा। 368 दिनों में 235 दिन की यात्रा में और 18 रात की यात्रा मे बीते। सौ दिन पडाव डाले गये, किन्तु इनमें भी अधिकतर छोटी-मोटी लड़ाइयाँ लडनी पड़ी। जेचुआन प्रदेश के सौ मील के रास्ते मे सौ विश्राम दिनो मे से 56 बीते। बाकी सारे रास्ते मे मिलाकर केवल 44 दिन डेरे डाले गये, अर्थात् डेढ सौ मील से ऊपर चलने के बाद ही लालसेना जरा देर के लिए विश्राम लेती। उसे प्रतिदिन औसतन 24 मील चलना पडा। इस यात्रा मे अठारह पहाडो को लाँघना पडा, जिनमे पाँच हिमाच्छादित थे। जिन 24 नदियो को पार करना पडा, उनमे से कुछ चीन की सबसे बडी तथा भयानक नदियाँ है। लड़ाइयों और मुठभेडो के बीच जिस-जिस शहर या गाँव पर लालसेना ने अधिकार किया, वहाँ बड़ी-बड़ी सभाएँ की, नाट्य मडली ने अभिनय दिखलाते हुए मनोरंजन और प्रचार किया।

(3) वीर लिउ जू-तान्—लालसेना जिस भूमि में पहुँची थी, वह उसके लिए अजनबी परदेश नही था। माओ ने-तुग ने जिस शासन की नीव डाली थी, वह क्याग-सी, फूकियेन् और हूनान तक ही सीमित नही था। दूसरे साहसी कम्युनिस्ट वीरों ने और स्थानो मे सोवियतें कायम की थी, जिनमे एक थी हूनान-हूपे-आन्-ह्वे का और दूसरा शेन्शी-शान्शी कान्सू निग स्याकी। शेन्शीवाली सोवियत को ही लक्ष्य करके क्यागसी की केन्द्रीय लालसेना चली थी। यहाँ पहुँचकर वह मानो अपने घर मे पहुँच गई। लेकिन, आने के बाद उसे मालूम हुआ कि यहाँ सोवियत-शासन के नाम पर कुछ अन्धेरखाता-सा चल रहा है, सोवियत के सस्थापक लिउ जू-तान को तग करके हटाकर मनमानी की जा रही है।

ल्यु जू-तान् सोवियत और आधुनिक चीन के यशस्वी वीर है। उनका जन्म शेन्शी के उत्तरी भाग के पाओ-आन् नामक एक पहाडी स्थान में एक मध्यवित्त किसान के घर मे हुआ था। यूलिन में शिक्षा समाप्त कर वह कान्तन् के वाम्पा सैनिक विद्यालय मे दाखिल हुआ, जहाँ से 1926 ई. में उसने पूरी सैनिक-शिक्षा समाप्त की। इसी जगह वह कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर हो गया। शिक्षा समाप्ति के बाद कुओ-मिन्ताग की सेना मे वह एक छोटा सैनिक अफसर बन गया। 1927 ई. मे जब च्याग काइ-शेक ने कम्युनिस्टों के साथ खून की होली खेलनी शुरू की, तो ल्यु ने वहाँ से भागकर शाघाइ मे जा पार्टी का काम शुरू किया। 1928 ई. मे शेन्सी

लौट उसने अपने कुछ पुराने साथियों से मिलकर किसानों में क्रान्तिकारी भावना पैदा करके विद्रोह कराया। यद्यपि इस विद्रोह को बडी निष्ठुरता से दबा दिया गया, किन्तु साथ ही शहीदो के खूनों की बूँदों में शेन्सी की लालसेना का जन्म हुआ। 1929-32 ई. तक ल्यु जू-तान् बराबर मौत के मुँह से बचता जय-पराजय के बीच से गुजरता रहा। उसकी सेना नष्ट कर दी गई। ऐसे काम न बनते देख साम से काम लेने की कोशिश की। इस पर उसे पाओ-आन की सरकारी रक्षा-समिति का अध्यक्ष बना दिया गया। लेकिन ल्यु सर्वहारा के लिए अपने जीवन को दे चुका था, वह प्रलोभन मे कैसे पड सकता था ? उसने अपने पद का उपयोग जमीदारों और साहूकारों को पकडकर फाँसी पर चढाने मे किया। जब यह रहस्य खुला तो पाओ-आन् के कितने ही अफसर नौकरी से निकाल दिये गये और ल्यु अपने तीन साथियो के साथ निकल भागा। एक बार एक सैनिक अफसर ने ल्यु को भोज खाने का निमन्त्रण दिया। ल्यु गया, लेकिन भोज खाने नही। अफसर और उसके आदमियों को पकडकर वहाँ से 20 बन्दूके छीनकर वह पहाड मे लोप हो गया। कुछ ही समय बाद अब ल्यु द्वारा सगठित लालसेना में 300 सैनिक थे। यह छोटी सेना एक बार घिर गई। ल्यु ने सुलह करने के लिए सदेश भेजा। च्याग के लोगों ने समझा कि इस शेर को पद के प्रलोभन मे हाथ मे किया जा सकता है। कुओमिन्तागी सेना मे कर्नल बना दिया गया। कर्नल बनकर फिर उसने जमीदारो की खबर लेनी शुरू की। फिर उसे गिरफ्तार किया गया। बडी मुश्किल से जान बची और उसके प्रभाव का खयाल करके उसे एक छोटा सा दर्जा दे दिया गया। तीसरी बार भी उसने अपने पुराने रवैये को दोहराया। उसकी सेना घिर गई, किन्तु वह निकल भागने में सफल हुआ। उसके सिर पर भारी इनाम घोषित किया गया।

ल्यु प्राण बचाने के लिए नही भागा था, वह अपनी धुन में मस्त घूमता रहा। धीरे-धीरे उसके इर्द-गिर्द क्रान्तिकारियों की टोली इकट्ठी होती गई। इस टोली ने 1931 ई. में पाव आन और न्युग यान पर लाल झडा गाडा और शेन्सी के उत्तर में फैलना शुरू किया। उसके खिलाफ जो भी सेना भेजी गई, सभी को भारी हानि उठाकर निष्फल होना पडा। दो साल तक ल्यु की लालसेना शेन्सी में अफसरो, कर उगाहनेवालों और जमीदारों को चुन चुनकर मारती रही। सदियो से उत्पीडित किसान अब ल्यु की प्रेरणा और प्रोत्साहन से निडर हो चले थे, हथियारबन्द होते ही वह दुश्मनो को लूटना मारना शुरू कर देते। डाकुओ की तरह लूट पाट के लिए ल्यु ने अपना जीवन अर्पित नही किया था, उसे वहाँ सुव्यवस्थित सोवियत शासन की नींव डालनी थी। 1932 ई. तक ल्यु और उसके साथियो ने शेन्सी के उत्तर के ग्यारह हल्को पर अधिकार कर लिया, यु-लिन मे कम्युनिस्ट पार्टी का भी सगठन कर लिया। 1933 ई. मे शेन्सी में क्यागसी के सोवियत के कार्यक्रम के अनुसार पहली सोवियत कायम हुई। 1934-35 ई. वह खूब बढती रही। शेन्सी में प्रादेशिक सोवियत सरकार कायम की गई। पार्टी शिक्षण शिविर कायम हुआ, आन्-तिन में सेना का केन्द्र बनाया गया। शेन्सी की सोवियत-सरकार ने अपने सिक्के ढाले, अपने टिकट चलाये, बैक और डाकखाने कायम किये। जमीदारो की जमीन जब्त करके सोवियत ने उसे किसानो मे बाँट दिया, कितने ही कर उठा दिये, सहयोग समितियाँ स्थापित की, निरक्षरता और अ-शिक्षा को दूर करने के लिए शिक्षको की टोलियाँ तैयार की जाने लगीं।

ल्यु जू-तान् का अब सीमा विस्तार करते चीन की प्राचीन राजधानी सियानफू (छांग-अन्) पर अधिकार करने का इरादा था। कई दिनो तक उसने सियानफू पर घेरा भी डाले रक्खा लेकिन उसे वहाँ से हटना पड़ा। लालसेना का एक दस्ता शेन्सी के दक्षिण की ओर गया और वहाँ उसने कई हलको मे सोवियते कायम कीं। अनुशासन को बढाते हुए ल्यु ने सैनिको की लूट पाट की आदत को खतम किया। 1935 ई. के मध्य शेन्सी और कान्सू के 22 हलको पर सोवियत सरकार स्थापित हो चुकी थी। उस समय वहाँ की लालसेना मे 500 सैनिक थे। उनके पास अपना रेडियो भी था, जिससे वह दूसरे भागो के साथियो से सम्बन्ध रखते थे। जिस समय क्याग-सी फूकियेन की केन्द्रीय लालसेना ने माओ के नेतृत्व में महान् अभियान शुरू किया था, उस समय ल्यु का सफेद सेना से घमासान युद्ध हो रहा था, जिसके मारे च्यांग काइ-शेक को अपने उप-प्रधान सेनापति मार्शल चाग स्यो-लियाग के नेतृत्व में एक बडी सेना उसके खिलाफ भेजनी पडी। इसी समय ल्यु को भी एक बडा बहादुर साथी मिला, वह था कुम्हार-पुत्र, पीछे प्रसिद्ध कम्युनिस्ट जेनरल सू हाइ-तुग। वह 1934 ई. के

[illegible] हूनान प्रदेश से शेन्सी में पहुँच ल्यु की सेना से मिल गया। शक्ति बढ [illegible] की हार पर हार खानी पड़ी। शेन्सी की लालसेना का सेनापति सू हाइ-तुंग और उप-सेनापति ल्यु [illegible] बनाये गये। शेन्सी-कान्सू-शान्सी की क्रान्तिकारी सेना कमेटी बनाकर ल्यु को उसका अध्यक्ष चुना गया। 1935 के अगस्त में इस सेना ने चाग स्यो-लियाग की तुग पी सेना के दो बड़े-बड़े डिवीजनो को भरती करके अपनी शक्ति को और बढाया।

लेकिन इसी समय दूध मे मक्खी पड गई। च्याग चिग फू नामक एक हट्टे कट्टे तरुण ने शेन्सी मे आकर अपने को पार्टी केन्द्रीय कमेटी का प्रतिनिधि बताते हुए स्थानीय पार्टी और सेना का पुन सगठन शुरू किया। च्याग बडा चालाक और धोखेबाज था। उसने कितने ही लोगो को अपनी बात मे फँसा पार्टी के परम भक्त ल्यु के खिलाफ शिकायत जमा करके उस पर अभियोग लगाया। ल्यु चुपचाप फैसले को मान अपने पद से इस्तीफा दे पाव आन की अपनी पहाडी गुफा मे जाकर रहने लगा। च्याग चिग फू ने इतना ही करके दम नही लिया, बल्कि ल्यु के सौ प्रमुख साथियो को भी क्रान्ति विरोधी कहकर उसने बाहर निकाल दिया।

यही समय और यही स्थिति थी, जब कि 1935 के अक्टूबर मे शेन्सी मे माओ चे-तुग अपनी लालसेना के साथ पहुँचे। उनको जब यह बात मालूम हुई, तो उन्होने नये सिर से जाँच पडताल करवाई, फिर च्याग चिग-फू की बदमाशियो का पता लगा। उस पर अभियोग लगाया गया और पीछे निम्न दर्जे के काम पर लगा दिया गया। ल्यु और उसके साथियो को माओ ने बडे आदर के साथ बुलाया और उन्हे फिर उनके पहले के स्थान पर रख दिया।

ल्यु के एक साल के अवशिष्ट जीवन को भी यहा कह देना अच्छा होगा। अगले साल 1936 ई मे जब माओ चे तुग के नेतृत्व मे जापान के विरुद्ध लालसेना ने चढाई शुरू की तो प्रथम सेना का सेनापति ल्यु जू तान् बनाया गया। उसने दो महीने के भीतर 18 जिलो (शियान) पर अधिकार किया। जापानी उसके नाम से घबराते थे। उसी साल वह दुश्मन की एक मोर्चेबन्दी पर चढाई करते समय घायल हो गया। सेनापति घायल हो गया लेकिन उसकी सेना ह्वाग हो (पीत नदी) पार हो गई, यह जानकर उसे बडा संतोष हुआ। घायल वीर को शेन्सी लाया गया। उसने आखिरी बार उन पहाडो को अपनी आँखो से देखा जिनमे वह जन्मा पला और बढा था। उस वीर के सम्मान मे सोवियत सरकार ने एक जिले का नाम उसके नाम पर रख दिया। बाप के सम्मान मे उसके छह वर्ष के बच्चे को अफसर का पद दे उसे सेनापति की तरह रक्खा गया।

एक वर्ष बीतते बीतते उत्तर-आन मे सू तह की सेना भी आकर केन्द्रीय लालसेना से मिल गई।

4 शेन्सी कान्सू शान्सी प्रदेश

चीन के उत्तर पश्चिमी सीमान्त मे अवस्थित लेकिन ह्वाग हो (पीत नदी) की कछार का यह विशाल भूभाग चीनी जाति और उसकी संस्कृति का गहवारा है इसलिए इसे निरा देहाती इलाका नही समझना चाहिए। इस भूमि मे सैकडो मील तक चारो ओर चरागाह ही चरागाह दिखाई पडती थी। आधुनिक सभ्यता के चिह्न रेल, तार या बिजली का वहाँ पता नही था। लोग बिजली के चिरागो की जगह चर्बी के चिराग जलाया करते थे। पेकिंग, नानकिग शांघाइ कान्तन् के बाद चागशा हान्कोउ आदि का बोलबाला था। प्रतापी थाग वंश की राजधानी छागआन् (सिआन) के इस विशाल भूभाग की किसको पर्वाह थी वह बडी मेहनत के साथ कितनी ही मशीने ढोकर लाये थे। उन्हे वह कैसे बेकार छोड सकते थे? मशीनो के साथ मिस्त्री और इंजीनियर भी आये थे। थोडे ही दिनो मे यहाँ कारखाने खुलने लगे। पावन् और हालिनवान् (कान्सू) मे कपडे, वर्दियो, जूते और कागज के कारखाने खुल गये। तिग पिग मे कम्बलो के कारखाने चलने लगे। प्राय हर जिले मे ऊनी और सूती कपडो के छोटे-छोटे कारखाने खुले। यग पिग की कोयले की खान चालू कर दी गई। महादीवाल के नजदीक की नमक की झीलो के किनारे येन ची मे बडे भारी पैमाने पर नमक तैयार होने लगा, जो सारे चीनभर मे सबसे बढिया और सस्ता था। नमक के व्यापार द्वारा मगोलो से कम्युनिस्टो ने दोस्ती कायम की। यग पिग और एन्-चान् मे तेल की खाने थी, कम्युनिस्टो ने वहा पट्रोल, पैराफिन, वैसलिन मोमबत्ती और दूसरी चीजें तैयार करने के कारखाने

खोल दिये। चीन में यहीं एक मात्र तेल की खाने थीं, जिनका ठेका एक अमेरिकन कम्पनी ने ले रक्खा था। कम्युनिस्टों ने अमेरिकनों को भगाकर उन्हें राष्ट्रीय सम्पत्ति बना दिया। उन्होंने दो नये कुएँ धँमाये, जिनसे तेल का उत्पादन तीन महीने के अन्दर ही 40 सैकड़ा बढ़ गया। अफीम की खेती बन्द करके उसकी जगह कपास की खेती की जाने लगी। बुनाई सीखन के लिए स्कूल खोल दिया गया। सीखनेवाली अधिकतर स्त्रियाँ थीं, जो तीन महीने की शिक्षा पाती थीं। वू-ची-चेन् में गोला-बारूद का कारखाना खोला गया, साथ ही वहाँ कपड़े, वर्दियाँ, जूते-मोजे के कारखाने तथा औषधि के लिए रसायनशाला भी कायम कर दी गई। च्यांग के बमबार जिसमें उसका कुछ बिगाड न सके, इसके लिए गोला-बारूद का कारखाना पहाड खोदकर भीतर बनी गुफाओ में रक्खा गया। यहाँ राइफलें, मशीनगनें, मॉर्टर तथा छोटे-बड़े हथियार तैयार होने लगे। आज से डेढ़ हजार वर्ष पहले इसी भूभाग में पहाड़ खोदकर कितनी ही गुफाएँ बनाई गई थी, लेकिन उनका उद्देश्य था बौद्ध-धर्म की अभिवृद्धि के लिए विहार और मूर्तियों को स्थापित करना। उस समय वे गुफाएँ एक नये युग को लाने के लिए बनाई गई थी। किन्तु ये नई गुफाए मानवता का कहीं अधिक कल्याण करनेवाली थी। चीन के भिन्न-भिन्न स्थानों से प्रतिभाशाली आदर्शवादी विद्वान, विशेषज्ञ, सलाहकार शेन्सी की तरफ चुम्बक की तरह खिचते आने लगे।

5. संयुक्त मोर्चा का आम्वान

माओ अपनी सेना लेकर साथियों सहित च्याग से बचन के लिए शेन्सी की गुफाओ मे वारा करने नही आये थे, बल्कि उनका उद्देश्य था जापानी राहु से देश की रक्षा करना। वह इससे पहले अगस्त मे च्याग और उसकी सरकार के सामने मिलकर जापानियों का मुकाबला करने का प्रस्ताव रख चुके थे, लेकिन च्याग ने उसका मजाक उड़ाया। पेकिग के 800 विद्यार्थियों ने माओ के प्रस्ताव का स्वागत किया और विद्यार्थियों तथा जनता ने समर्थन मे एक विराट प्रदर्शन किया। जापान के साथ सारे चीन को मिलकर सघर्ष करने और उसके सफल होने पर पूरा विश्वास रखते माओ ने इस सम्बन्ध मे अपने विचारों को अमेरिकन पत्रकार निम वेल्स के सामने निम्न रूप से प्रकट किया था :

" चीनी क्रान्ति के स्वरूप को समझने के लिए चीनी समाज के स्वरूप को समझ लेना जरूरी है।

" चीनी समाज के स्वरूप को एक वाक्य मे व्यक्त किया जा सकता है : वह एक अर्ध-सामन्तवादी अर्ध-औपनिवेशिक समाज है। यहाँ विभिन्न आर्थिक व्यवस्थाएँ प्रचलित है, किंतु मुख्यतया ग्राम्य अर्थ-नीति पर आधारित सामन्तवादी छोटी तिजारती व्यवस्था प्रधान है। छोटी तिजारती अर्थनीति से मेरा मतलब स्वतः पर्याप्त अर्थनीति की उस अवस्था मे है, जो पूँजीवाद से ठीक पहले से लेकर बहुत पीछे की अवस्थाओं तक जाती है जब कि चीजों का उत्पादन जिन्स की शकल मे बेचने के लिए नही, बल्कि अपने इस्तेमाल के लिए होता है।

" चीन पूँजीवादी अर्थनीति की अवस्था मे भी है। इस बात से इन्कार करना गलत होगा कि चीन मे पूँजीवादी अर्थनीति भी प्रचलित है। इस पूँजीवादी अर्थनीति के तीन अग हैं : (1) व्यक्तिगत पूँजीपति, (2) राष्ट्रीय सरकार, (3) साम्राज्यवादी। यह तीनों तत्त्व मिलकर चीनी अर्थनीति का पूँजीवादी ढाँचा खड़ा करते हैं।

" यह पूँजीवादी व्यवस्था चीन की अर्थनीति मे एक नई व्यवस्था है, जो चीन की सामन्तवादी आर्थिक व्यवस्था से टकराती है। इसकी शक्ति बडे-बडे शहरों, गमनागमन के साधनों, उद्योगों, खानों आदि मे है। फिर भी चीन की अर्थनीति मे पूँजीवाद का प्रधान स्थान नही है, क्योंकि वह साम्राज्यवाद से दबा है, जो व्यक्तिगत और राष्ट्रीय-सरकारी पूँजीवाद के और अधिक विकास मे बाधाएँ खडा करता है। उत्पादन के कई क्षेत्रों मे चीनी तत्त्वों के मुकाबले साम्राज्यवादी तत्त्व प्रधान हैं। राष्ट्रीय सरकार के कारोबारों—रेल तथा दूसरे उद्योग—से भी प्राथमिक पूँजी साम्राज्यवादियों से आती है। इस सबके अतिरिक्त साम्राज्यवादी चीन की चुंगी पर भी रोक लगाकर उसे सीमित रखते हैं।

" यदि हम सारे चीन की आर्थिक व्यवस्था को लें तो उसमे सामन्तवादी आर्थिक व्यवस्था की प्रधानता

है, पूँजीवादी विकास के दृष्टिकोण से औपनिवेशिक अर्थनीति प्रधान है; इसलिए साम्राज्यवादियों और व्यक्तिगत पूँजी के राजनीतिक सम्बन्धों के स्वरूप को औपनिवेशिक अर्थनीति निर्धारित करती है, जैसे चुंगी का नियन्त्रण।

" ऊपर की बातों से हम इसी परिणाम पर पहुँचते हैं कि चीनी समाज अर्ध-सामन्तवादी और अर्ध-औपनिवेशिक समाज है।

" चूँकि यह चीनी समाज की विशेषताएँ हैं, इसलिए चीनी क्रान्ति का स्वरूप क्या होगा, यह समझना बड़ा आसान हो जाता है। यह एक साम्राज्यवाद सामन्तवाद विरोधी जनवादी राष्ट्रीय क्रान्ति होगी।

" चीन से सामन्तवादी और साम्राज्यवादी शक्तियो को उखाड़ फेंकने के लिए चीनियों को लम्बा संघर्ष करना पड़ेगा : इन कामो के पूरे हो जाने पर निस्सन्देह पूँजीवाद के विकास के लिए रास्ता खुल जायगा। किन्तु साथ ही हमारा यह भी कहना है : सम्भव है कि चीनी क्रान्ति पूँजीवादी विकास काल को छोड जाय और जन-क्रान्ति के बाद वह समाजवादी क्रान्ति की ओर मुड जाय।

" अब सवाल उठता है–चीनी क्रान्ति की चालक शक्ति का स्वरूप क्या होगा ? चीनी क्रान्ति की मुख्य शक्तियाँ हैं सर्वहारा, किसान और टुटपुंजिया वर्ग। कुछ हालतों मे राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग के भी क्रान्ति मे भाग लेने की सम्भावना है। किन्ही दूसरी परिस्थितियो में वह ढुलमुलायेगा। चीनी साम्राज्यवादी और सामन्तवादी चीनी क्रान्ति के शत्रु हैं। राष्ट्रीय पूँजीपति कभी क्रान्ति के शत्रु हैं, और कभी नही।

" चीनी क्रान्ति का नेता सर्वहारा है। पूंजीवादी क्रान्ति मे पूँजीपति वर्ग के बजाय सर्वहारा-वर्ग क्यो नेतृत्व करेगा ?... चूँकि चीन अर्ध औपनिवेशिक अवस्था मे है, इसलिए तुलनात्मक दृष्टि से सर्वहारा की शक्ति पूँजीपति वर्ग से अधिक है। इसका कारण यह है कि चीन के बडे-बडे उद्योगो पर हमारे राष्ट्रीय पूँजीपतियो के बजाय साम्राज्यवादियो का नियन्त्रण है। इन बडे-बडे साम्राज्यवादी उद्योगों के मजदूरों और राष्ट्रीय सरकार तथा व्यक्तिगत पूँजीपतियो के उद्योगों के मजदूरों की सम्मिलित शक्ति कमजोर है, अतः सर्वहारा की शक्ति पूँजीपति वर्ग के स्थान पर नेतृत्व की बागडोर अपने हाथों मे लेने के लिए पर्याप्त है।

" थोडे शब्दो में हम कह सकते है कि चीन में सर्वहारा और कम्युनिस्ट शक्तियाँ दोनो मिलकर संख्या मे बहुत कम होते भी, सबसे अधिक शक्तिशाली और क्रियाशील है।

" सौभाग्यवश चीनी सर्वहारा के पास क्रान्ति मे एक बहुत शक्तिशाली मित्र है–किसान। चीन की कुल जनसख्या मे किसान 80 प्रतिशत से भी अधिक है और चीनी सामन्तशाहो तथा साम्राज्यवादियो के दोहरे बोझ के कारण उनका क्रान्तिकारी मनोबल बहुत तगडा है।...

" किसानों के सामने पहली समस्या है जमीन पाने की और दूसरी समस्या है साम्राज्यवादी शोषण के अन्त करने की। किसानो की समस्याएं पूँजीपति-वर्ग द्वारा हल नही हो सकती। चीनी किसानो की समस्याएँ सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व मे सामन्तवाद और साम्राज्यवाद से डटकर संघर्ष लेने से ही हल हो सकती है। इसलिए हमारा कहना है कि किसान चीनी सर्वहारा के मजबूत और दृढ मित्र हैं।

" क्रान्ति की तीसरी वाहक शक्ति है शहरों का टुटपुंजिया (निम्नमध्यम) वर्ग। इसमे विद्यार्थी, सांस्कृतिक बुद्धिजीवी, छोटे उत्पादक, छोटे सौदागर और अनेक स्वतंत्र पेशेवाले शामिल है। इन शक्तियो का बहुत बडा भाग साम्राज्यवाद-सामन्तवाद-विरोधी क्रान्ति का साथी बन खडा हो सकता है।

" चीन के राष्ट्रीय पूँजीपति-वर्ग की एक विशेष स्थिति है। वे क्रान्ति के शत्रु भी बन सकते है और उसके अंग भी। कभी वे ढुलमुलाते है और साम्राज्यवाद तथा उस जैसी अन्य प्रतिक्रियावादी ताकतो के साथ होते हैं। कभी वे सामन्तो के साथ खडे हो जाते है और कभी टुटपुँजियो के साथ। कारण यह है कि अधिकाश पूँजीपति अर्ध जमीदार और साम्राज्यवादी पूँजी पर निर्भर रहनेवाले पूँजी-एजेंट हैं। इन पूँजीपतियो को हम राष्ट्रीय पूँजीपतियों मे शामिल नही करते। चीन के राष्ट्रीय पूँजीपतियों के पास अधिकतर अपनी पूँजी है, किन्तु इनका साम्राज्यवादियो से और भूमि से विशेष सम्बन्ध है। जो साम्राज्यवादी पूँजी पर निर्भर करते हैं, उन्हे हम कम्प्रेडोर कहते या कही जमीदारो में गिनते हैं। कम्प्रेडोर पूंजीपति और सामन्तवादी साम्राज्यवादियो पर निर्भर है, इसलिए उसका स्थान क्रान्ति के मुख्य शत्रुओ मे है।

" नानकिंग सरकार का स्वरूप है जमींदार पूँजीपति और कम्प्रेडोर-पूँजीपतियों का गठबन्धन।

" साम्राज्यवाद के चीन पर सीधा अधिकार कर लेने पर यदि उसके कारण जमींदारों और कम्प्रेडोर-पूँजीपतियों के अपने स्वार्थों पर आँच आने की सम्भावना उठी, तो सम्भव है, वे साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष का विरोध न करे या किसी विशेष स्थिति मे उसका साथ भी दें—हाँ, उन लोगों को छोड़कर जिनके स्वार्थों पर कि इस साम्राज्यवादी आक्रमण से आँच नही आती या जिनके स्वार्थ आक्रमणकारी से मिले हुए हैं।

" ऊपर की बात से स्पष्ट हो जाता है कि हमारा साम्राज्यवाद-विरोधी राष्ट्रीय सयुक्त मोर्चा वास्तव मे राष्ट्रीय है—अर्थात् उसमे देशद्रोहियो को छोडकर बाकी सब आ सकते है। जन-मोर्चे की तुलना मे हमारे राष्ट्रीय मोर्चे की यह विशेषता है।

" सयुक्त मोर्चे की दूसरी विशेषता यह है कि उसकी पहल सर्वहारा की राजनीतिक पार्टी ने की है और आगे चलकर केवल सर्वहारा की राजनीतिक पार्टी के नेतृत्व मे ही उस मोर्चे का सगठन हो सकता है और उसके काम पूरे किये जा सकते है। यह इसलिए कि चीन मे केवल सर्वहारा ही सजग और पक्की तौर से क्रान्तिकारी शक्ति है। इस काम क पूरा करने की जिम्मेदारी पूँजीपति-वर्ग नही उठा सकता।

" चीन की आर्थिक और राजनीतिक हालतों के कारण यह सम्भव है कि साम्राज्यवाद-विरोधी, सामन्तवादी-विरोधी, पूँजीवादी-जनवादी-राष्ट्रीय क्रान्ति के कुछ हद तक सफल हो जाने के बाद जनवादी क्रान्ति एक ऐसी अवस्था पर पहुँच जाय, जब वह अपनी जीत को समाजवादी क्रान्ति मे बदलकर पूरा करे।...

" क्रान्ति की पहली अवस्था सर्वहारा, किसान और टुटपुँजिया-वर्ग की पूँजीवादी जनवादी क्रान्ति की अवस्था है। अपने सक्रमण-काल मे यह किसानों, मजदूरों की जनवादी लोकशाही की अवस्था से गुजरेगी। "

13

सियान-कांड (1936 ई.)

माओ चे-तुग अपने दलबल सहित निकलकर दूर चीन के पश्चिमोत्तर भूभाग म चले गये। च्याग काइ-शेक ने हाथ मलते घोषित किया था : यदि कोई माओ का सिर काटकर ला दे, तो उसे ढाई लाख डालर इनाम मिलेगा। लेकिन, माओ का सिर इतना सस्ता नही था। वह एक ऐसा सूर्य था, जिसके किनारे अनगिनत चीन के भव्य ग्रह घूमते हुए उसकी रक्षा कर रहे थे। वह सूर्य अपने सभी साथियो के साथ मिलकर काम म हाथ बँटा रहा था। वह मजूरो मे मजूर था, विद्वानो मे विद्वान, साहित्यकारो मे साहित्यकार—माओ अच्छे कवि हैं, लेकिन उनकी कविताएं उनके सकोची स्वभाव के कारण प्रकाश मे नही आने पाती · अध्यक्ष माओ की चीज समझकर कही लोग उसका जरूरत से अधिक मूल्याकन न करने लगे। नई जगह मे आकर अब सोवियत जनता अपने नेता को माओ चे-तुग न कहकर माओ चू-शी (माओ अध्यक्ष) के नाम से ही अधिक पुकारती थी। आज भी हरेक चीनी इसी नाम से उन्हे याद करता है। शेन्सी मे पहुँचने के बाद और कामो के साथ माओ चू-शी ने जमीन-व्यवस्था-सम्बन्धी सुधार मे हाथ लगा दिया। बडे जमीदारो की जमीन गरीब किसानो या बेखेतवाले लोगो मे बॉट दी गई। बडे जमीदारो और बडे व्यापारियो को छोडकर बाकी सब स्त्री-पुरुषो को वोट देने का अधिकार दिया। हाँ, सोवियत (पचायत) के पचो मे गरीब किसानो, खेत-मजूरो तथा दूसरे कमकरो को जिसमे ज्यादा स्थान मिले, इसका प्रयत्न किया गया था। लगान और कर की भी व्यवस्था ऐसी की गई कि जिससे बोझ धनियो पर अधिक और गरीबो पर कम पडे। इसके कारण बडे-बडे जमीदार भागकर च्याग काइ-शेक के राज्य मे चले गये, और पूँजीवादियो ने अपने चिर-अभ्यस्त कायदे के अनुसार दुनिया मे हल्ला करना शुरू किया कि कम्युनिस्ट-राक्षस सभी लोगो का घर-बार छुडाकर देश मे भगा रहे है। लेकिन, अब दुनिया दो दलो मे बँट गई है, और तीसरा दल हो ही नहीं सकता, तो ऐसे प्रोपेगंडा के शिकार होनेवाले भी वही हो सकते हैं, जो

मूढ़ या फरेबी हैं। पश्चिमोत्तर भूभाग में जिसमें खाने-पीने की कोई तकलीफ न रह जाय, इसके लिए वहाँ अधिक अन्न उपजाने के लिए मैत्रीपूर्ण होड होने लगी, अधिक परिश्रम करनेवाले पुरुषों को 'श्रमवीर' की गौरवपूर्ण उपाधि दी जाने लगी। श्रमवीरों का नाम बात की बात में सारे लाल चीन में फैलने लगा। अभी यह लाल चीन केवल 90 लाख की आबादी का था। लेकिन, तुलसी के कथानुसार –

"रविमण्डल देखत लघु लागा। उदय तासु त्रिभुवन तम भागा।"

माओ को भी गुफा की दो कोठरियाँ मिली थी, जिसकी दीवालों पर चारों तरफ नक्शे टँगे हुए थे। वहाँ कोई कीमती चीज अगर थी, तो मच्छरदानी। माओ को च्याग काई-शेक के हाथ मे जैसे नही पडना था, वैसे ही मलेरिया के मच्छरों से भी बचना था। उनकी कीमत चीन के लिए और इतिहास के लिए अनमोल थी। उनकी पत्नी हो चे नियें नई लालभूमि मे आकर अब पार्टी संगठन में लग गई थी। एक दिन माओ ने अपनी पत्नी को पहले से आकर लेटी देखकर पूछा-"तू आज मुझसे भी पहले आ गई ?"

"आज से मेरी सगर्भावस्था की छुट्टी शुरू हो गई है।"

लालचीन मे स्त्री भी पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करती थी, दोनो के पद और वेतन मे कोई भेदभाव नहीं रक्खा गया था, लेकिन गर्भिणी स्त्री को प्रसव दिन के प्रायः दो महीने पहले से वेतन-सहित छुट्टी मिल जाती थी। हो ने काम करने की जिद करते हल्का फुल्का काम ले रक्खा था, लेकिन चीनी कम्युनिस्टो के अनुसार अमेरिकन डाक्टर ने आज हो चे-नियें को काम करने की इजाजत नहीं दी–"तुम्हें पूर्ण आराम करना होगा।" उक्त अमेरिकन डाक्टर को अब यहाँ चीनी नाम से दाक्तर मा कहा जाता था। इसी गुफाओ की नगरी मे जैसे माओ के लिए दो कोठरियाँ मिली थी, उसी तरह अस्पताल के लिए भी कोठरियाँ थी। रास्ते के कितने ही घायल अब भी इन गुफा कोठरियों मे देखे जा सकते थे। माओ क्या सचमुच ही कर्ण कवच पहने थे, जो इतनी गोलियो की बौछार मे उनको एक भी गोली नहीं लगी ? च्याग और उसके आदमी कितनी बार माओ को मरा घोषित कर चुके थे, कितनी बार अखबारो मे यह भी लिख चुके थे कि कम्युनिस्ट भगोडे एक लाश को साथ साथ ढोये लिये जा रहे है, और यह लाश माओ की है। गाँव के सीधे-सादे लोग तो विश्वास करते थे कि माओ ने दैवी कवच पहन जन्म लिया है, वह दिव्य पुरुष है।

1. पारिवारिक जीवन

हो चे नियें अपने दोनों बच्चों को रास्ते मे एक सहृदय महिला को दे आई थी। बाहर से काम से लौटने के बाद माओ ने पत्नी की सगर्भावस्था की छुट्टी की बात जानकर नहाने-धोने की तैयारी करी। फिर पत्नी जब चीनी कायदे के अनुसार दूध-चीनी की चाय प्याले में लेकर आई, तो उन्होंने चे-नियें से पूछा–"बच्चो की क्या खबर है ?" लेकिन पत्नी भी उतनी ही उदारहृदया है। चे नियें ने जवाब दिया : "फिर वही बात : हमारे जैसे कितने माँ-बाप है, हमारे बालक तो सही सलामत होंगे, लेकिन हमारे देश के असख्य बालको की क्या हालत है ?"

माओ ने माता के हृदय का ख्याल करके बात पूछी थी, लेकिन उत्तर पाकर अपने देश के लाखों बालकों, अनाथ बालको, दानव च्याग काइ शेक के निष्ठुर प्रहार से विपद्ग्रस्त बालको का ध्यान करके उनका मन खिन्न हो गया। माओ और उनकी पत्नी उन सभी कष्टो और आफतों में से जाने के लिए तैयार थे, जिनसे कि उनके लाखों साथी गुजर रहे थे।

2. जापान का प्रतिरोध करो

नवम्बर, 1935 मे केन्द्रीय लालसेना ने और उत्तरी शेन्सी की लाल-टुकडियों ने, और हूपे, होनान तथा अन्-ह्वेइ प्रदेशों से उत्तर मे चली आई लाल-टुकडियो ने मिलकर उत्तरी शेन्सी के क्रान्तिकारी अड्डे के खिलाफ कुओमिन्तांगी हमले को कुचल दिया, जिससे उत्तरी शेन्सी के सैनिक अड्डे बहुत मजबूत हो गये और साथ ही लालसेना की धाक जम गई। उत्तरी चीन पर जापानी हमलो के कारण आगे चलकर '9 दिसम्बर-आन्दोलन' समूचे देश में

फैल गया। इसका आरम्भ 9 दिसम्बर, 1935 को पेकिंग के छात्रों के 'जापान का प्रतिरोध करो और चीन को बचाओ' के प्रदर्शन से हुआ। इस आन्दोलन द्वारा कम्युनिस्ट पार्टी के नारे 'गृह-युद्ध बन्द करो. जापान का मुकाबिला करने के लिए एकता कायम करो' का बहुत व्यापक रूप से समर्थन होने लगा।

(1) राजनीतिक ब्यूरो के निर्णय (1935 ई.)–तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति को देखते हुए आगे के अपने कार्यक्रम को ठीक करने के लिए पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो की बैठक 25 दिसम्बर को हुई। माओ ने 27 दिसम्बर को 'जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ने की नीति' के शीर्षक से एक रिपोर्ट कान्फरेंस मे पेश की, जिसमें इस बात की सम्भावना का जिक्र किया कि राष्ट्रीय पूँजीपति-वर्ग का वामपक्षी तत्त्व जापानी साम्राज्यवाद के खिलाफ होनेवाले सघर्ष मे शामिल हो सकता है, उसका बाकी हिस्सा ढुलमुलपन छोडकर तटस्थ रह सकता है, कुओ-मिन्-तॉग के भीतर फूट पड सकती है, एव उसके भीतरवाले अग्रेज-अमेरिकी-पूँजी के पत्तलचट दलालो का गुट कुछ खास परिस्थितियो मे जापान के खिलाफ होनेवाले सघर्ष मे भाग लेने के लिए मजबूर हो सकता है।" माओ ने महान् अभियान के बारे मे कहने के वाद पार्टी के सामने के कामों के बारे मे कहा :

"पार्टी के सामने काम है लालसेना की गतिविधि को समूचे देश के मजूरो, किसानो, छात्रो, निम्न पूँजीपति-वर्ग की तमाम गतिविधियां और कार्यकलापों के साथ एकाबद्ध करना और इस एकाबद्ध गतिविधि के बीच से सयुक्त राष्ट्रीय, क्रान्तिकारी मोर्चे का निर्माण करना।"

माओ ने 'वामपक्षी' दलीलों को रद्द करते हुए बतलाया कि मजूरो और किसानो के गणराज्य की जगह हम जनता के गणराज्य को कायम करना है, और राष्ट्रीय पूँजीपति-वर्ग के प्रति आर्थिक और राजनीतिक दोनो ही दृष्टियों मे ठीक नीति का प्रतिपादन करना है। उन्होंने कहा कि पूँजीवादी जनवादी क्रान्ति के काल मे, जनता का गणराज्य राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग के उन सदस्यों की और उनके उद्योग और कारोबार की रक्षा करेगा, जो साम्राज्यवाद और उसके गुर्गो की नही करेंगे। साथ ही उन्होंने यह भी बतलाया कि जनता के गणराज्य का मुख्य आधार मजूर किसान होंगे। वह ऐसा गणराज्य होगा, जो साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के विरोध करनेवाले सभी स्तरो के लोगों के हितों का प्रतिनिधित्व करेगा। उन्होंने तत्कालीन सयुक्त मोर्चे तथा 1924-27 ई. के सयुक्त मोर्चे का अन्तर बतलाते हुए कहा कि वर्तमान सयुक्त मोर्चे मे पहले से कही अधिक दृढ और शक्तिशाली कम्युनिस्ट पार्टी और क्रान्तिकारी सेना शामिल है। दोनों कालो के भेदो की तुलना करते हुए साथी माओ ने कहा

"लेकिन, आज स्थिति बदल गई है। केवल इतना ही नही कि आज एक दृढ और शक्तिशाली कम्युनिस्ट पार्टी तथा एक मजबूत लालसेना मौजूद है, बल्कि यह भी कि आज लालसेना के पास अपने अड्डे भी मौजूद है। न केवल यही कि कम्युनिस्ट पार्टी और लालसेना वर्तमान काल मे राष्ट्रीय जापान विरोधी सयुक्त मोर्चे की पहल करनेवाली शक्ति है, बल्कि लाजिमी तौर से भविष्य मे भी बननेवाली जापान-विरोधी सरकार और सेना का वह मजबूत आधार-स्तम्भ बन जायगी; इस प्रकार जापान-विरोधी राष्ट्रीय मोर्चे को छिन्न भिन्न करने की जापानी साम्राज्यवादियों और च्याग काइ शेक की साजिशों को अन्तिम रूप से धूल मे मिला वह पत्थर लकीर बन जायगी।"

(2) प्रचार-कार्य–कम्युनिस्ट किसी काम को भी आधे दिल से करना नही जानते, और न उस समय की स्थिति मे कर सकते थे। वह सारे देश को जापान विरोधी भावनाओं से भर देना चाहते थे, और इसके लिए सभी साधनों को इस्तेमाल कर रहे थे। उन्होंने पहले ही से रगमच को एक सजीव और सुन्दर कला के रूप मे अपने प्रचार के लिए साधन बनाया था। अब 'जापान-विरोधी लोक-नाट्य-सघ' इस दिशा मे बहुत काम कर रहा था। यह नाट्य-सघ सचमुच ही जनता का नाट्स-सघ था। इसमे खच्चरो और घोडो के साईस, बोझा ढोनेवाले, जूता सीनेवाले, कारखानो की लडकियाँ, डाकखानों और सहयोग-समितियों के कर्मी, बढई, लोहार–पाओ-चेन के बालवृद्ध सभी स्त्री-पुरुष नाटक देखने आते। यहाँ के लाल सैनिक विद्यालय के विद्यार्थियो के सिर पर च्याग काइ-शेक ने 20 लाख डालर इनाम घोषित कर रक्खा था। माओ तथा दूसरे सोवियत नेताओ के सिर पर

जो इनाम घोषित थे, उन्हे मिलाने पर तो वह करोडो तक पहुँचता। तो भी वहाँ नाट्यघर के पास कोई सशस्त्र पहरेदार नही था। नाट्यशाला मे माओ पहुँचे। किसी ने उनकी तरफ खास ध्यान नही दिया। लेकिन, जब नाटक शुरू होने को हुआ, तो दर्शको मे से आवाज आने लगी माओ च्-शी और लिन पियाओ मिलकर गीत गाये।" लेकिन, उससे पहले ही मच का पहला पर्दा उठ गया। लाल रगमच बहुत सीधा सादा था, इतना सीधा-सादा कि उसे गाँवो मे भी आसानी से तैयार किया जा सके। लालसेना की हरेक पलटन मे नाट्यमडली होनी जरूरी थी। हरेक जिले मे अपनी अपनी सास्कृतिक मडलियाँ कायम हो गई थीं। सैनिको और गाँववालो मे जिस स्त्री-पुरुष मे प्रतिभा देखी जाती उन्हे क्याग सी से आये चतुर कलाकारो की देखरेख मे शिक्षा दी जाती। क्याग सी मे 1921 ई मे नाट्य आन्दोलन आरम्भ हुआ था। जु शिन (लाल राजधानी) मे गार्की नाट्यशाला स्थापित की गई थी, जिसमे हजार विद्यार्थी थे, जिनमे साठ मडलियाँ तैयार की गई थीं। पाओ आन् (वर्तमान लाल राजधानी) के नाट्य सघ की मुख्य सचालिका कुमारी वाई कग ची क्याग सी से महान् अभियान के साथ सारी मुसीबतो को बर्दाश्त करते यहाँ पहुँची थी। वाई ने यहाँ आते ही अपने काम को शुरू कर दिया और थोडे ही दिनो मे जापान विरोधी लोक नाट्य सघ चमक उठा। दूर दूर से लोग इसे देखने के लिए आते। यहाँ तक कि कुओ मिन् ताग के सिपाही भी बाज वक्त अपने अफसरो से नजर बचाकर अभिनय देखने चले आते।

नाटक शुरू हुआ मचूरिया पर आक्रमण करनेवाली जापानी सेना का एक सिपाही एक किसान कन्या से छेडखानी करता है। इतने ही मे जापानी फेरीवाला आकर लडकी के भाई को अफीम खरीदने के लिए कह रहा है। भाई के इन्कार करने पर पहला सैनिक उसका गला पकडकर धमका रहा है– हरामखोर अफीम लेने से इन्कार करता है मचुकुओ के शाही कानून को भग करना चाहता है। अफीम खरीद ले ले जा। यह कहकर फिर वह उसे मारने लगता और कहता जाता है तू जापान विरोधी डाकू है तुझे मौत की सजा होनी चाहिए। और तुरन्त उसे फाँसी दे दी जाती है। नाटक के दूसरे अक मे दिखलाया गया था एक जापानी बाजार मे माल खरीदता है। चीनी दुकानदार दाम माँगता है। इस पर जापानी जवाब देता है–"तू हमसे दाम माँग रहा है? च्याग काइ शेक ने तो हमसे कुछ भी नहीं लिए बिना हम जहाज, नहरें, ताग कुकी सन्धि, हू माल्ग का करारनामा और हो पे चहार परिषद प्रदान कर दी। तू साला सुअर पैसा माँग रहा है? डाकू।

लोग जापानियो पर जुल्म सहते सहते जागे। जो भी हाथ मे आया उसे लेकर वह जापानियो पर टूट पडे– जापानी राक्षसो को खतम करो। मरते दम तक लडो शत्रु दुश्मन को मारकर मरो आदि नारे लगने लगे। नाटक के पात्रो के साथ साथ दर्शको ने भी नारा लगाया। दर्शक और अभिनेता भेद मिट गया। फिर याग फू नृत्य शुरू हुआ। यह शेन्सी का सीधा सादा नाचनृत्य था जो लाल कलाकारो के हाथ मे पडकर चमक उठा। फिर राष्ट्रगायक निय उरह द्वारा रचित मचूरिया के स्वयसेवको का कूच गीत गाया जाने लगा।

इस प्रकार नई लाल राजधानी और लाल चीन के दूसरे स्थानो मे अभिनयो गीतो द्वारा आक्रमणकारी जापान के विरुद्ध लोहा लेने के लिए जबर्दस्त प्रचार किया जा रहा था। ऐसे ही एक अभिनय मे उस दिन माओ लिन् पियाओ और दूसरे नेता मौजूद थे जब कि किसी ने आकर उन्हे खबर दे दी कि सियान मे च्याग काइ शेक गिरफ्तार हो गया।

3 सियान काड से पूर्व

मचूरिया का तानाशाह चाग सो लिन् शक्तिशाली युद्धपति प्रदेशपति बनकर तीन करोड के मचूरिया प्रदेश का सर्वेसर्वा बन गया। जिस समय कुओ मिन् ताग की राष्ट्रीय सेना ने चीन को एकताबद्ध करने के लिए उत्तर की ओर अभियान किया था -यह 1927 मे कम्युनिस्टो से च्याग के उलझने से पहले की बात है–उस समय च्याग सो लिन् को दबाना सबसे मुश्किल जान पडा और रेल की ट्रेन मे धोखे से उसे मारने मे सफल होने के बाद ही मचूरिया पर राष्ट्रीय झडा गाडा जा सका। उसके लडके च्याग स्यो लियाग को बाप के स्थान पर राज्यपाल नियुक्त किया गया जो कि अपने बाप से अधिक उदार तथा आधुनिक विचारोवाला था। खेलकूद

का भी उसे शौक था। अफीम तथा स्त्री-लपटता तो सामन्तो के लिए एक स्वाभाविक चीज थी। 1931 ई. मे जापान ने जब मचूरिया के ऊपर आक्रमण कर उसे ले लिया, उस समय टाईफाइड मे बीमार हो पेकिंग के अस्पताल मे पडे रहने के कारण वह बच गया। च्याग काइ-शेक ने उसे अपना छोटा भाई बनाया था, लेकिन छोटे भाई के गुहार करते रहने पर भी बडे भाई ने मचूरिया के बचाने के लिए कुछ नही किया, और इसकी जगह उसने मचूरिया का मामला राष्ट्रसघ म पेश कर जापान को पराजित करना चाहा।

मचूरिया की फौज 'तुग-पी' (उत्तर-पूर्वी) सेना के नाम से पुकारी जाती थी, जिसे जापानी आक्रमण के बाद अपने देश से निकल अब महादीवाल के नजदीक भाग आना पडा था। उसे आशा थी कि हमारा तरुण-मार्शल आकर जापानियो को देश से भगा देगा और हम फिर अपने देश मे लौट जाएँगे। लेकिन च्याग तो जापान से अधिक अपने देश के कम्युनिस्टो को अपना शत्रु मानता था। जापान ने मचूरिया से आगे बढकर जेहोलक भी ले लिया। च्याग स्या-लियाग उदास हो यूरोप चला गया। बाप के जमा किये हुए करोडो रुपये उसके पास थे। उसने चाहा कि यूरोप की शक्तिया से कुछ सहायता प्राप्त करे। वह मुसोलिनी हिटलर और इग्लैड के प्रधानमन्त्री रैमजे मेकडानल्ड से भी मिला। रूस जाने की बडी इच्छा थी लेकिन किसी गलती के कारण वह वहाँ नही पहुँच सका। तरुण मार्शल का पैतृक तोर से अफीम की आदत लग गई थी लेकिन जापान की इतनी चपत खाने के बाद उसने यूरोप म पहुचकर उसे छोड दिया और अपने शोहदे साथियो को भी दूर कर दिया। 1934 ई म वह चीन लौटा तो लोगो ने उसके शरीर को ही स्वस्थ और मजबूत नही देखा बल्कि उसके दिमाग म भी परिवर्तन था। लौटते ही उसने तुग पी सेना की बागडोर सँभाली और मचूरिया के उद्धार के लिए प्रयत्न करने की ठानी।

(1) तुग-पी सेना का आक्रमण–च्याग काइ शेक ने तरुण मार्शल को दिलासा देते हुए कहा कि अपने कलेजे म घुसे कम्युनिस्ट बर्छे को बस उखाड फेकने दो फिर हम सारी शक्ति लेकर जापान के ऊपर टूट पडेगे। बडे भैया की बात मानकर तरुण मार्शल अपनी 1 लाख 40 हजार सेना ले कम्युनिस्टो के ऊपर चढा। कम्युनिस्टो से लडते समय धीरे धीरे उसे मालूम होने लगा कि कम्युनिस्ट न डाकू है न निर्बल। 1935 ई मे जब लालसेना ने तुग पी को दो बार बुरी तरह से हराया और उसके बहुत से सैनिक लालसेना से जा मिले, तो उसकी ऑखे खुली। उसे डर लगने लगा कि कही तुग पी को मचूरिया लौटना कभी नसीब हो न हो और लालसेना उसे यही खतम न कर दे।

कम्युनिस्टो ने अपनी नीति के अनुसार तुग पी के बन्दी सैनिको को अपनी बात बतलाने का प्रयत्न किया और फिर उन्हे मुक्त रक्खा। ये सैनिक लोटकर सियान आये जहाँ पर कि उस समय तरुण मार्शल का अड्डा था। तरुण मार्शल ने उनसे कम्युनिस्टो के बारे म पूछा। उन्होने सोवियत इलाको की सुख समृद्धि की बाते बतलाईं, लालसेना के अनुशासन और शक्ति के बारे म लेखा जोखा दिया और साथ ही यह भी कहा कि वह सयुक्त मोर्चा बनाकर हमारे दुश्मन जापानियो से लडने के लिए तैयार हो रहे है "चीनी चीनी से क्या लडे ! लडना हो तो मिलकर जापानियो से लडो और मचूरिया को लौटा लो।" बेचारे तुग पी सैनिक पॉच पॉच वर्ष से अपना देश छोडे मारे मारे फिर रहे थे। तरुण मार्शल भी च्याग काइ शेक से निराश हो चला था, कम्युनिस्टो के जापान विरोधी नारे मे उसे आशा की किरण दिखलाई पडने लगी। च्याग काइ शेक हू पेइ, मचूरिया और जेहोल ही नही, हो पइ, चहार तथा करीब करीब सारे उत्तरी चीन को जापान की भेट चढाने के लिए तैयार दिखाई पड रहा था। तरुण मार्शल का झुकाव अब धीरे धीरे कम्युनिस्टो की ओर हुआ। वह उनका मित्र बन गया। उनके साथ छिपे तोर से उसने सुलह भी कर ली। तुग पी तथा लालसेना म लडाई बन्द हो गई। लालसेना के अफसर तुग पी सेना की वर्दी पहनकर तरुण मार्शल के सैनिक विद्यालयो म गये। उन्होने वहाँ के अफसरो को अपनी युद्धकला साम्राज्य-विरोधी मोर्चे की राजनीतिक नीति को सिखाया। मचूरिया के सम्बन्ध मे ऑकडो को जमा करके बतलाया कि उसे खो देने से चीन की कितनी हानि हुई है।

(2) च्याग काइ-शेक–च्याग काइ-शेक चीन का राहु बनकर पैदा हुआ। अपने देशभाइयो के खून से इतना हाथ शायद ही किसी ने रँगा हो। वैयक्तिक और वर्गगत स्वार्थ आदमियो को कहाँ तक पतित कर सकता है,

च्यांग इसका अच्छा उदाहरण है। उसका जन्म दक्षिणी चीन के चेकियाग प्रदेश के फेनू-हुआ कस्बे मे 1887 (माओ चे-तुंग से सात वर्ष पहले) में हुआ था। च्याग का पिता बनिया था। वह अपने बेटे को नौ वर्ष की उम्र में छोड़कर ही मर गया। माँ ने सिलाई-कढाई करके बच्चे को पढाया-लिखाया। युद्धपति युवान् शि-काइ ने अपना एक सैनिक स्कूल पाओ-तिंग मे खोल रखा था। च्याग उसमे दाखिल हो गया। यद्यपि वह मुँह से अपने को डा. सुन् यात-सेन् का शिष्य कहता है, लेकिन वह वस्तुतः स्वार्थी तानाशाह युवान् शि-काइ का चेला था। उसी से उसने स्वार्थ-सिद्धि के लिए हरेक कल-बल-छल करना सीखा और उसी से धन और शक्ति बटोरने की चरम सीमा की महत्त्वाकाक्षा उसमे पैदा हुई। लेकिन वह जानता था कि युवान् शि-काइ जैसो का जमाना गुजर गया है, अब राष्ट्रीयता का चोला पहनने मे ही काम चलेगा। 20 वर्ष की उम्र मे पाओ-तिग सैनिक स्कूल से निकलकर 1907 ई मे वह जापान चला गया, जहाँ तीन वर्ष तक सैनिक शिक्षा प्राप्त करता रहा। 23 वर्ष की उम्र मे युवान शि काइ जापानी धूर्तो मे शिक्षा प्राप्त करके अब च्याग चीन लौटा। 1911 ई. की क्राति मे डा सुन यात सेन् के नेतृत्व मे जब मचू वश को हटा दिया गया, तो च्याग भी सुन् यात्-सेन् का अनुयायी बन गया, और जल्दी ही उनका विश्वासपात्र बनने म भी उसे सफलता प्राप्त हुई। अभी उसको अपनी महत्त्वाकाक्षा दिखलाने की आवश्यकता नही थी। सुन यात् सेन इस आस्तीन के साँप को क्या जानते थे, जब जून 1924 मे व्हाम्पू (ह्वम्पुआ, वम्पा) सैनिक स्कूल खुला, तो च्याग को उसका अध्यक्ष बना दिया गया। इससे पहले 1923 ई मे डा सुन यात सेन ने च्याग को सैनिक स्थिति के अध्ययन के लिए मास्को भी भेजा था। 1925 ई के बसन्त मे सुन यात सन मर गये और अगले साल च्याग जनक्रान्ति-सेना का सेनापति नियुक्त हुआ। अब सुन यात सेन नियन्त्रण के लिए मोजूद नही थे, इसलिए च्याग ने खुलकर खेलना शुरू किया। कम्युनिस्ट और कुओमिन्ताग दोनो का जो सयुक्त मोर्चा कायम हुआ था और जिसके कारण ऐसा मालूम होने लगा था कि चीन एकताबद्ध होकर एशिया की सबसे बड़ी शक्ति होने जा रहा है, उसके बारे मे च्याग ने सब किये कराये पर पानी फेर दिया। कान्तन, शाघाइ और दूसरे शहरो म उसने कम्युनिस्टो का कत्लेआम किया। जरा सा सदेह हो जाने पर स्त्री या पुरुष किसी की जान की खैरियत नही थी। 1927 ई मे च्याग ने तीनो सुग बहनो मे से एक सुग मेइ-लिग से ब्याह किया, जिसकी बड़ी बहन का ब्याह डा. सुन यात् सेन् से हुआ था। च्याग को अब एक चट सहायिका मिल गई। 1930-34 तक च्याग ने कम्युनिस्टो का उच्छेद करने के लिए कितना प्रयत्न किया, इसे हम बतला चुके है। च्याग ने जापान के सामने घुटने टेककर दया की बहुत भिक्षा माँगी, लेकिन जापान तो चीन को हड़पना चाहता था, वह कैसे दया दिखलाता ? अन्त म किस तरह माओ चे तुग के नेतृत्व मे जन मुक्ति सेना न च्याग को खदेड़कर समुद्र के भीतर अमेरिका-सरक्षित ताइयुवान (फारमूसा) मे शरण लेने के लिए मजबूर किया, यह हम आगे बतलाएँगे।

पेकिंग के हाथ से निकल जाने पर, नानकिंग च्याग काइ-शेक की राजधानी बनी। च्याग पूरा घाघ था, वह तरुण मार्शल क्या अपने बाप पर भी विश्वास नही कर सकता था। सियान् मे उसने अपनी भी कुछ सेना रख छोड़ी थी, जिसमे और लालसेना मे कभी कभी लड़ाइयाँ हुआ करती थी। च्याग के खुफिया-विभाग के अफसर भी वहाँ थे। लेकिन उन्हे पता नही लग पाया कि तुग पी और लालसेना मे भीतर ही भीतर क्या हो रहा है। कुछ गड़बड़ी उन्हे जरूर मालूम होती थी, क्योंकि उसी समय वहाँ उपस्थित एक अमेरिकन महिला पत्रकार ने लिखा था :

"सियान (इलाके) की राजधानी सियानफू मे एक अजीब हालत है। तरुण-मार्शल च्याग स्यु-लियान् की जो सेना यहाँ लालसेना के दमन के लिए रक्खी गई है, उसमे एक नई हवा बह रही है। उसके सैनिक अपने देश के लिए अधीर हो रहे है, गृह-युद्ध से ऊब उठे है और नानकिग सरकार जिस तरह जापान को बढ़ने दे रही है, उससे उन्हे घृणा हो रही है। छोटे छोटे अफसरों मे तो बगावत के चिह्न स्पष्ट दिखलाई पड़ते है। अफवाह यहाँ तक है कि चाग स्यु-लियान् अपने पहले के व्यक्तिगत सम्बन्ध को छोड़कर च्याग काइ-शेक से खिच रहा है, और लालसेना से सुलह करके जापान विरोधी सयुक्त-मोर्चा को काम मे लाने के लिए छटपटा रहा है।" अक्टूबर, 1936 मे ये पक्तियाँ लिखी गई थी, जिस महीने मे कि च्याग काइ-शेक सियान्

में पहुँचा था।

तरुण-मार्शल आया। च्याग काई-शेक उसका बन्दी था। उसने अगले दिन सूच देश के लिए सूचना निकाली : "प्रधान सेनापति की मारी गई बुद्धि मे चेतना लाने के लिए हमने उन्हे सियान मे आग्रह करके रोक लिया है, उनके प्राण सुरक्षित हैं।"

च्याग काइ-शेक ने अधीरता प्रकट करने पर तरुण मार्शल का अपमान करते हुए एक दिन गरजकर कहा—"मैं तब तक कोई बात नही सुनूँगा, जब तक कि लालसेना का एक-एक सैनिक कतल नही कर दिया जाता और एक-एक कम्युनिस्ट जेल के सीकचो मे बन्द नही हो जाता।" यही नही, उसन अपनी तूफानी पहली सेना को कान्सू पर चढाई करने के लिए रवाना कर दिया। नवम्बर के भीतर ही शेन्सी की सीमा पर च्याग की दस डिवीजन सेना पहुँच गई। गोली-बारूद से भरी ट्रेने, सियान् पहुँचने लगी। टैक, बख्तरदार गाडियाँ, मशीनगन और राइफलों के ढोने का ताँता लग गया। सियान् और लन चाउ के शहरो मे एक सौ हवाई जहाजों के उतरने लायक अड्डे बनाये गये, टारपिडो का प्रबन्ध किया गया, विषैली गैस के इस्तेमाल करने की बातचीत भी की जाने लगी। च्याग ने अपनी डायरी में गर्व से लिखा था—"पन्द्रह दिनो मे नही, तो एक महीने के अन्दर तो जरूर ही इन लाल डाकुओं को खतम कर दिया जायगा।"

इसी समय जापान ने सुइ युवान प्रदेश (शेन्सी से उत्तर) पर चढाई कर दी, लेकिन च्याग ने उस ओर कोई ध्यान नही दिया। तरुण मार्शल ने बड़े विनय के साथ एक पत्र च्याग के पास लिखा—"हमने अपनी सेना के सैनिको से यह प्रतिज्ञा की थी कि जब कभी अवसर मिलेगा, तुम्हें जापानियो से लडने की आज्ञा देंगे। अब तो हमें उस प्रतिज्ञा का पालन करना ही होगा, नही तो वे हमें तथा आपको भी धोखेबाज और बेईमान समझेंगे। और न हो तो हमें आप आज्ञा दे दे कि हम अपनी सेना के एक हिस्से को सुइ युवान के मोर्चे पर भेजे। हम आशा है कि हम एक लाख की सेना तैयार कर सकेंगे, जो आपके नेतृत्व में जापानियों के दाँत खट्टे कर डालेंगे।" इस पत्र का कोई फल न हुआ तो तरुण मार्शल स्वय बडे भैया की सेवा मे पहुँचा। जापान-विरोधी योजना को उसके सामने रखते हुए उसने यह भी प्रार्थना की कि शघाइ के राष्ट्रमुक्ति सघ के सात विशिष्ट राजबन्दियों को छोड दिया जाय।" इसी समय उसके मुँह से यह भी निकल गया—"आप जिस निर्दयता से देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन को कुचल रहे है, उसे देखते आपमें और युवान शि काइ की सैनिक तानाशाही में कोई फर्क नही रहता।" इस पर च्याग काइ-शेक ने बिगडकर कहा—"तुम्हारी राय चाहे जैसी हो, किन्तु सरकार तो मै हूँ। मै जो कर रहा हूँ, वह एक क्रान्तिकारी के लिए बिलकुल उचित है।"

अन्त मे च्याग काइ-शेक ने तरुण मार्शल को यह कहकर लौटाया कि मै सियान आ रहा हूँ, उस समय अपनी योजना बतलाऊँगा। किन्तु इसी समय ऐसी बातें घटी, जिनके कारण तुग पी सेना का रवैया बिलकुल बदल गया :

(1) जर्मनी और जापान मे साम्यवाद-विरोधी मुलहनामा हो गया, जिस पर इतालो ने मोहर कर दी। इताली ने जापान पर मचूरिया की विजय को स्वीकार कर लिया, जिसके बदले में जापान ने उसके अबीसीनिया-विजय को मान लिया। जब इताली ने जापानी खिलौने मचू-कुओ को स्वतन्त्र राष्ट्र मानकर उसके साथ राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया, तो तुग पी सेना के धैर्य का बाँध टूट गया। तरुण-मार्शल ने खुलेआम प्रतिज्ञा की—"हम चीन से फासिस्तवाद की जड उखाडकर ही दम लेंगे।" च्याग काइ-शेक के सैनिक-विशेषज्ञों मे जर्मन और इतालियन भी थे, जिसका अर्थ था, च्याग काइ-शेक खुद फासिस्तों के गुट में शामिल था।

(2) च्याग ने अपनी प्रथम तूफानी सेना को हू सग नान नामक एक प्रसिद्ध सेनापति के अधीन भेजा था, जो कि नानकिंग का बड़ा युद्धविशारद समझा जाता था। उसने आते ही लालसेना पर धावा बोल दिया। लालसेना पीछे हटी। हू की हिम्मत बढ़ी और वह बड़े जोर से आगे बढ़ने लगा। लालसेना और हटी। हटते हुए भी उसने हू की सेना में सयुक्त-मोर्चे की नीति का प्रचार करना जारी रक्खा। हू की सेना और उसका मन बढ़ता ही गया। एकाएक एक रात को लालसेना ने मुड़कर चढ़ाई कर दी। सख्त जाड़ो के दिन थे, हथबम की खोल को हटाना भी मुश्किल था, लेकिन लालसेना ने अपना काम बडी बहादुरी से किया। हू की दो पैदल

पलटनें और एक रिसाला नष्ट हो गया, एक पलटन लालसेना में जा मिली। बहुत भारी युद्ध-सामग्री लालसेना के हाथ आई। हू बची-खुची सेना लेकर च्यांग के हुकुम की प्रतीक्षा करने लगा। तुग-पी सेना सोचने के लिए मजबूर हुई ! "क्या यही नानकिंग का सबसे बड़ा युद्धविशारद और यही प्रथम तूफानी सेना के रणबाँकुरे हैं, जो कि कम्युनिस्टों का नाश करेंगे ?" उसको विश्वास हो गया कि ये सारे बहाने हैं। कम्युनिस्ट ठीक कह रहे हैं, च्यांग चीन को जापान के हाथ बेच रहा है।

तुंग-पी की आँखें खुल चुकी थीं। उसने अब सयुक्त मोर्चे कायम करने का निश्चय कर लिया था। इसके लिए जेनरल यांग हू चेंग से मिलकर सब बात ठीक कर ली गई। यांग की सेना में 40 हजार सैनिक थे, जिसे सी-पी (उत्तर-पश्चिमी) सेना कहा जाता था। इस सेना को भी च्यांग काइ-शेक ने लाल-डाकुओं के दबाने के लिए शेन्सी भेजा था। वह भी तुग पी की तरह ही इस गृहदाह से ऊब गई थी। तरुण-मार्शल की 1 लाख 30 हजार सेना के साथ उसके मिल जाने पर अब सयुक्त मोर्चे की नई सेना की सख्या 1 लाख 70 हजार पहुँच गई थी। च्यांग काइ शेक को कुछ भनक लग गई थी। उसने अपने भतीजे को वहाँ पहले भेज दिया। लेकिन तुग-पी और सी पी ने उससे बात करने से इन्कार कर दिया। इस पर वह उन्हे अलग बुलाकर डराता धमकाता रहा।

7 दिसम्बर, 1936 को च्यांग काइ-शेक अपने खास विमान से सियान पहुँचा। 10 दिसम्बर को उसने जेनरल-स्टाफ की बैठक बुलाई, और किसी की सलाह या चेतावनी पर ध्यान न दे छठे आक्रमण की घोषणा करते हुए आम कूच का हुकुम लिखकर कह दिया कि 12 तारीख को तुग-पी, सी-पी और नानकिंग की सेनाएँ तैयार हो जायें। च्यांग ने यह भी साफ कह दिया कि यदि तरुण-मार्शल हुकुम मानने मे जरा भी आनाकानी करे, तो उसकी सेना के हथियार छीन लिये जायें और उसे सेनापति के पद से हटा दिया जाय। तरुण-मार्शल के स्थान के लिए एक आदमी भी ठीक कर लिया गया था। यह भी पता लगा कि च्यांग की खुफिया पुलिस ने तरुण-मार्शल और जेनरल यांग की सेना के उन सभी आदमियो के नाम नोट कर लिये है, जिनका झुकाव साम्यवादियो की ओर था। कूच का डंका बजते ही उन्हे गिरफ्तार कर कोर्ट-मार्शल किया जानेवाला था।

यह सभी बाते मालूम हो जाने के बाद तरुण मार्शल ने तुग-पी और सी-पी के सैनिक अफसरो की 11 दिसम्बर के 10 बजे रात को एक बैठक की। इसके पहले ही दोनों सेनाओं के एक सैनिक डिवीजन को चुपके से खबर दे दी गई कि नगर के निकट आकर हुकुम की प्रतीक्षा करो।

(3) च्यांग की गिरफ्तारी (1936 ई.)—कम्युनिस्ट नई जगह पर आकर अपनी शक्ति को मजबूत करते जापान के बढ़ाव से उत्तेजित चीनी जनता को सयुक्त मोर्चे और जापानी प्रतिरोध की क्रियात्मक शिक्षा दे रहे थे, जिसके कारण उनकी शक्ति और बढ़ती जा रही थी। च्यांग क्यांग सी मे पाँच बार कम्युनिस्टो पर आक्रमण करके उनका सर्वनाश नही कर पाया था। वह छठे आक्रमण की तैयारी को देखने अपने निजी विमान मे 7 दिसम्बर को एक जगह उतरा। वहाँ के विद्यार्थियों ने जापान-विरोधी प्रदर्शन किया। तरुण-मार्शल ने विद्यार्थियों के बीच मे पड़कर उन्हे शान्त किया था। इस समय अक्ल के अन्धे गाँठ के पूरे च्यांग काइ-शेक ने तरुण-मार्शल को दोनो बाँहो से ढकेलते हुए देशद्रोही कहा, और लाल चीन पर हमला करने का हुकुम दिया।

सियान्‌फू (प्राचीन छाग-अन्) से 10 मील दूर लिन्-तुग का तप्तकुण्ड है। यहाँ एक मचू-सम्राट ने अपनी चहेती रानी के लिए एक महल बनाया था। च्यांग इसी महल मे उतरा। 12 दिसम्बर, 1936 को सबेरे च्यांग सोकर उठा। उसकी दो पलटनो ने सियान् मे विद्रोह कर दिया था। सियान् के अफसर अपने-अपने घरों में नजरबन्द कर दिये गये। राज्य के दफ्तरो पर विद्रोहियो के पहरे लग गये। 290 चुने हुए सैनिकों के साथ 26 साल के कप्तान सुन् मिग-च्यु ने रात को 3 बजे आकर महल को घेर लिया। 5 बजने पर 50 सैनिको के साथ वह महल के भीतर गया। सुन् के आदमियों ने नाम के लिए गोली चलाई, जिसकी आवाज सुनकर च्यांग की नीद टूट गई। कप्तान सुन् शयनकक्ष में दाखिल हुआ। देखा, चारपाई खाली है। उसके आदमियों ने चारो ओर खोज-तलाश शुरू की। महल के पिछवाड़े बर्फ से ढँकी एक टेकरी पर कप्तान चढ़ने लगा। कुछ दूर पर च्यांग का अंगरक्षक मिला, जिसे अपने सैनिकों के हाथ में देकर वह आगे बढ़ा। देखता है, रात का

कपड़ा पहने नंगे पैर, खुले सिर च्यांग काइ-शेक कड़कड़ाती सर्दी में गोलमटोल होकर बैठा है। उसका शरीर थर-थर काँप रहा था। उसने कप्तान को देखते ही कहा—"यदि तेरे दिल मे मेरे लिए जरा भी दया हो, तो मुझे इसी समय गोली मारकर इस सारे मामले को खतम कर दे।"

कप्तान ने बड़ी शान्ति से जवाब दिया : "हम आपको मारने नही आये। हम इतना ही चाहते हैं कि आप अपने देश के जापान-विरोधी लड़ाई के मोर्चे में शामिल हो जायँ।"

च्यांग ने थोडी देर रुककर कहा : "तरुण मार्शल को बुला लाओ, तब मैं इस टेकरी से उतरूँगा।" कप्तान सुन् तरुण-मार्शल का अंगरक्षक है, यह च्याग काइ-शेक को मालूम था।

च्यांग के यह कहने पर कप्तान सुन् ने कहा :

"मार्शल च्याग स्यु-लियाग यहाँ नही है। वह शहर मे है, जहाँ सेना ने विद्रोह कर दिया है। हम लोग आपकी रक्षा करने आये हैं।

इस पर च्याग काइ-शेक ने सतोष की साँस लेते हुए कहा—"अच्छा, घोड़ा लाओ, मै चलता हूँ।"

कप्तान सुन् ने कहा : "घोड़ा कहाँ है ? आप मेरी पीठ पर चढ़िये, मै आपको ले चलता हूँ।" इतना कहकर वह बर्फ पर बैठ च्याग काइ-शेक के पैर के नीचे झुक गया। जरा-सी हिचकिचाहट के बाद च्याग का नौकर जूता लेकर पहुँच गया। सब पैदल चलकर पहाड के नीचे खड़ी मोटर के पास पहुँचे। मोटर उन्हे सियान् नगर की ओर ले चली। रास्ते मे कप्तान ने पूछा : "जो बीता सो बीता। अब चीन के लिए एक नई नीति स्वीकार करनी चाहिए। आप क्या करने जा रहे है ?" चीन के सामने इस समय सबसे आवश्यक प्रश्न है जापान के विरुद्ध लड़ना। उत्तर-पूर्व के लोगो की यही एक खास माँग है। आप जापान से क्यों नही लड़ते ? उलटे हमे लालसेना से लड़ने को क्यो कहते है ?"

च्याग ने चिल्लाकर कहा—"मै चीन की जनता का नेता हूँ। मै चीनी राष्ट्र का प्रतिनिधि हूँ। मै समझता हूँ, मेरी नीति ठीक और दुरुस्त है।"

इस तरह च्याग काइ-शेक अब भी गुस्सा निकालता सियान् नगर मे पहुँचा, लेकिन अब वह तरुण मार्शल और जेनरल याग का जबर्दस्ती बनाया मेहमान था।

(4) **बातचीत**—उसी दिन तुग-पी और सी पी सेनाओ के सभी डिवीजन कमाडरो के हस्ताक्षरो से एक विज्ञप्ति निकली और उसे केन्द्रीय (नान किंग) सरकार और प्रादेशिक नेताओ के पास भेज दिया गया, साधारण जनता मे भी उसे वितरित किया गया। विज्ञप्ति मे लिखा था : "सेनापति च्याग काइ-शेक से कुछ दिनो तक सियान्फू मे आराम करने के लिए प्रार्थना की गई है। उनकी जान पर कोई खतरा नही आवेगा।" इसी समय राष्ट्र की मुक्ति के लिए आठ शर्ते भी प्रचारित की गई :

"(1) नानकिंग सरकार का फिर से सगठन हो, और सभी दलो को राष्ट्र की मुक्ति मे अपनी जिम्मेवारी पूरा करने के लिए मौका दिया जाय,

(2) गृह-युद्ध का खतम किया जाय और जापान के विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध की नीति अख्तियार की जाय,

(3) शाघाइ के सात देशभक्त राजबन्दियों को छोड़ दिया जाय,

(4) सभी राजबन्दियो को क्षमा प्रदान की जाय,

(5) जनता को सभा-समिति करने-बनाने की स्वाधीनता दी जाय,

(6) देशभक्तिपूर्ण सगठन और राजनीतिक स्वतत्रता के जनता के हक का स्वीकार किया जाय,

(7) डाक्टर सुन यात्-सेन की अन्तिम वसीयत को कार्यरूप मे परिणत किया जाय,

(8) शीघ्र ही राष्ट्र-मुक्ति-सम्मेलन बुलाया जाय।"

1 दिसम्बर को तरुण-मार्शल और कम्युनिस्टो मे जो शर्ते तै हुई थी, उनमे चीन की लालसेना, सोवियत सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी ने उक्त बातो पर सहमति प्रकट की थी।

तरुण-मार्शल ने एक विमान सोवियत सरकार के पास अपने प्रतिनिधियों को भेजने के लिए भेजा, जिसमे जो तीन प्रतिनिधि आये, उनमे चाउ एन्-लाइ भी थे। तुग-पी, सी-पी और लालसेना के प्रतिनिधियों की बैठक

हुई। तीनों ने मिलकर एक जापान-विरोधी सयुक्त सेना के निर्माण करने की घोषणा 14 दिसम्बर को की। इस सेना मे तुंग-पी की 1 लाख 30 हजार, सी-पी की 40 हजार और लालसेना की 90 हजार सेना सम्मिलित हुई। इस प्रकार 2 लाख 60 हजार की एक महासेना तैयार हो गई। इस सेना की सैनिक समिति का अध्यक्ष च्यांग स्यु-लियाग और उपाध्यक्ष च्याग चू-चेग चुने गये।

सियान्फू में हुआ विद्रोह वहीं तक सीमित नहीं रहा। कान्सू की राजधानी लन्-चाउ मे तुग-पी की एक टुकडी पड़ी हुई थी। उसने 12 तारीख को अपनी जिम्मेवारी पर वहाँ मौजूद नानकिग की सरकारी सेना पर हमला करके उसके हथियार छीन लिये कान्सू के दूसरे भागों पर भी लाल और तुग-पी सेनाओ ने अधिकार कर नानकिग की 50 हजार सेना को घेरकर उसे बेकार कर दिया। 14 दिसम्बर के इस सम्मेलन के बाद ही तुग-पी, सी-पी और लालसेना पूर्व म शेन्सी-शान्सी और शेन्सी-होनान् की सीमा की ओर बढी। दक्षिण मे भी वह एक सप्ताह के भीतर ही पूरे उत्तरी शेन्सी पर चढ दौड़ी। पंग ते-ह्वाइ ने मान्-युवान् नगर पर अधिकार कर लिया और यू हाइ तुग ने शेन्सी हूनान् सीमा प्रदेश को अपने हाथ मे कर लिया। चारो ओर ऐसी जबर्दस्त मोर्चा बन्दी कर ली गई कि च्याग काइ-शेक को छुडाने के लिए किसी भी सैनिक-प्रयत्न का ठीक तरह से मुकाबला किया जा सके।

(क) नानकिंग में दाँवपेंच–आठो शर्तें और दूसरी बातें जब नानकिंग और प्रादेशिक नगरो मे पहुँची, तो उन्हे दबा दिया गया। लेकिन, सयुक्त-मोर्चा-समिति ने अपने क्षेत्रों मे उन्हे काम मे लाना शुरू किया। लालसेना ने जमीदारों की सम्पत्ति को जब्त करना बन्द कर और दूसरो ने साम्यवादियो के खिलाफ जितने हुक्म निकाले थे, उन्हे हटा दिया गया। सियानफू के जेल मे 400 राजबन्दियो को छोड दिया गया, अखबारो से सेंसर हटा लिया गया। हजारो विद्यार्थियों को मुक्त करके उन्हे जापान-विरोधी सयुक्त-मोर्चे की बात जनता तक पहुँचाने के लिए नगरों और देहातों में भेज दिया गया। सब जगह प्रतिदिन बड़ी-बड़ी सभाएँ होने लगी। एक सभा मे तो एक लाख आदमी सम्मिलित हुए थे।

लेकिन, उधर नानकिंग मे क्या हो रहा है ? सियान् की घटना को वहाँ प्रकाशित नही होने दिया गया। सरकारी अखबारो पर भी रोक लगा दी गई, जिससे कि यह बाहर न जाने पाये। खबर पहुँचते ही नानकिग सरकार की केन्द्रीय समिति की बैठक हुई। उसने च्याग स्यु लियाग को विद्रोही घोषित करके उसे पदच्युत कर दिया और च्याग काइ शेक की रिहाई की माँग की तथा यह भी तै किया कि देर होने पर सियान् पर चढाई की जाय। नानकिग के तानाशाह चाहे जो भी कोशिश करे, लेकिन किसी-न किसी तरह च्याग के गिरफ्तार होने की खबर जनता तक पहुँच गई। च्याग के दुश्मन खुश हुए, कुछ लोग गृहयुद्ध को भारी भीषण रूप लेते देख त्रस्त हुए। च्याग का क्या हुआ इसे ठीक मे तीन दिन तक कोई नही जान सका। हाँ, विदेशी तार-एजेंसियाँ (एसोसियेटेड प्रेस, अमेरिका) तार पर तार दे रहे थे कि च्याग काइ-शेक को मार्शल च्याग ने मार डाला, सियान् मे लूट मार मची हुई है, कम्युनिस्ट स्त्रियों का सतीत्व नष्ट कर रहे है। जापान का इसमे हाथ है, मास्को का भी हाथ इसमे मालूम होता है।

लेकिन, च्याग काइ शेक का तो लुटेरा का गुट था। जहाँ भ्रष्टाचार अपनी पराकाष्ठा को पहुँचा हो, च्याग उसके तीन साथी परिवार देश को लूटकर अपना घर भर रहे हो, वहाँ 'जब कि दो मूजियो मे हो खटपट' से लाभ उठाने मे दूसरे क्यों पीछे रहने लगे ? च्याग के युद्ध-मन्त्री हो पिग-चिग ने अब च्याग के जूते मे अपना पैर डालने का निश्चय किया। जापानियो ने भी उसकी पीठ ठोकी। सियान पर चढाई करने के लिए जोर दिया जाने लगा। हो ने 20 डिवीजन सेना को सियान की ओर बढने का हुक्म दिया। विमानो के दस्ते भेजे गये, जो जब-तब मँडराते हुए गोले गिराने लगे।

लेकिन, च्याग की पत्नी सुग माइ लिग हो से कही चतुर थी। वह बात समझ गई। उसने तुरन्त हो को बुलाकर फटकारते हुए कहा : "यह क्या हो रहा है ? यदि लडाई शुरू हो गई, तो क्या तुम उसे रोक सकोगे ? क्या तुम फिर मेरे पति को बचा सकोगे ? या तुम उन्हे मरवा डालना चाहते हो ?" च्यांग-पत्नी ने युद्ध मन्त्री को डॉट-फटकारकर उसे रोका, फिर अपनी बहन (डा. सुन् यात्-सेन् की विधवा पत्नी) के थसा

रकलमि नानकिंग और शाघाइ के प्रतिक्रियावादियो को भी उनके मनसूबो से रोका।

च्यांग काइ-शेक की गिरफ्तारी के दो दिन बाद 14 दिसम्बर को तुग-पी, सी-पी, लालसेना तीनों के प्रतिनिधियों ने आस्ट्रेलियन डोनाल्ड को बुलाकर च्यांग काइ-शेक से उसकी मुलाकात कराई। डोनाल्ड तरुण-मार्शल और च्यांग काइ-शेक दोनो का दोस्त था। उसको दिखलाने का मतलब यही था कि दुनिया जान ले कि च्यांग काइ-शेक अब भी जिन्दा है और उसके साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया जा रहा है। सुलह की बात जारी रखने के लिए उसे नानकिग भेजा गया। डोनाल्ड ने च्याग-पत्नी से सारी बातें जाकर कही। 18 दिसम्बर को एक सेनापति च्याग के हाथ का लिखा कुशल मगल का एक पत्र भी नानकिग लेकर गया, जिसमें च्याग ने हुक्म दिया था, अपनी फौज को आगे मत बढ़ाओ। तरुण-मार्शल के पत्र में था, बातों को जल्दी तै करने के लिए किसी जिम्मेवार आदमी को बुलाया गया था।

(ख) च्यांग का पारा नीचे–च्याग काइ शेक के गिरफ्तार होने के बाद उससे भारी घृणा रखनेवाले सयुक्त मोर्चे के कितने ही लोगों विशेषकर तुग पी और सी पी के नौजवान अफसरों ने प्रस्ताव पास किया कि देशद्रोही च्याग पर खुला मुकदमा चलाया जाय और उसे दण्ड दिया जाय। लोग उसे तोप के मुँह मे बाँधकर उड़ा देने के लिए भी कह रहे थे। किन्तु, माओ और उसके साथी वैयक्तिक क्रोध उतारने के पक्षपाती कब हो सकते थे? वह जानते थे, च्याग काइ-शेक एक स्वार्थ का प्रतिनिधि है, जब तक वह स्वार्थ खतम न कर दिया जाय, तब तक च्याग न रहे तो दूसरा कोई उसका स्थान लेगा। च्याग इस वक्त ऐसी हालत में है कि वह हमारी बातों को मान लेने पर सयुक्त मोर्चे के लिए भारी सहायक सिद्ध होगा, जिसकी सम्भावना च्याग के न रहने पर मुश्किल हो जायगी। वह च्याग को दण्ड देने ही के विरोधी नहीं थे, बल्कि यह भी कहते थे कि च्याग का किसी तरह से अपमान नहीं करना चाहिए। अपमानित होने से उसकी इज्जत कम हो जायगी, जिससे उसका प्रभाव जापान विरोधी मोर्चे के पक्ष मे कम हो जायगा।

चाउ एन-लाइ जिस दिन सियान पहुँचे, उसी दिन तरुण मार्शल के साथ च्याग काइ-शेक से मिले। च्याग ने उस पुरुष को देखा, जो कि कान्तन के सैनिक विद्यालय में उसका सेक्रेटरी था, जिसने शाघाइ में मजदूरों की शक्ति को सगठित कर नया शासन कायम करके उसके स्वागत की तैयारी की थी, और वर्ग स्वार्थ में अंधे च्याग ने जिसके [illegible] के लिए 80 हजार डालर इनाम रक्खा था। चाउ ने जब अपने घातक शत्रु के सामने बहुत शिष्टता के साथ प्रणाम किया और नम्रता दिखलाई [illegible] च्याग को और भी आश्चर्य हुआ होगा, इसमें सन्देह नहीं। चाउ ने कम्युनिस्टों की नीति को सक्षेप में [illegible] पहले तो च्याग चुपचाप सुनता रहा, फिर दस वर्षों के सघर्ष के बाद पहली बार कम्युनिस्टों की विचारधारा को उनके मुँह से सुनने के लिए उसने अधिक उत्सुकता दिखलाई 17-25 दिसम्बर तक कम्युनिस्ट तथा विद्रोही नेता (च्याग याग) च्याग काइ शेक से बात करते रहे। पहले वह कुछ खिचा खिचा सा रहा। इसी बीच नानकिग में जो षड्यन्त्र उसके विरुद्ध हो रहा था, उसका उसे पता लगा। इस पर वह धीरे धीरे जापान विरोधी मोर्चे की ओर झुका।

5. समझौता

20 दिसम्बर को नानकिग सरकार के प्रतिनिधि के तौर पर टव सुग सियान पहुँचा। सुग की तीनों बहनों में एक डा. सुन यात्-सेन से ब्याही थी, दूसरी च्याग काइ शेक से और तीसरी एक और कगकुग से। सारा चीन राष्ट्र इन्ही चारों परिवारों की निजी सम्पत्ति था। सुग की शिक्षा-दीक्षा अमेरिका में हुई थी, और वह इस समय च्याग-सरकार की वित्त-समिति का प्रधान था। सुग यूरोपीय शक्तियों का पक्षपाती तथा जापान का विरोधी समझा जाता था। सुग के सियान पहुँचने से पहले ही च्याग काइ-शेक के साथ बहुत-सी बाते तै हो चुकी थीं। 10 दिसम्बर का तरुण-मार्शल ने निम्न वक्तव्य प्रकाशित किया था :

"ज्योंही मिस्टर डोनाल्ड गत सोमवार को यहाँ पहुँचे, प्रधान सेनापति अपने तथाकथित अपमान को भुलाने मे समर्थ हो गये। वह हम लोगो से बड़ी शान्ति से बातें करने लगे, और दूसरे ही दिन एक राष्ट्रीय नीति तै कर ली गई, जिसके अनुसार शासन में परिवर्तन करने का निश्चय भी हो चुका। हमने इसके बाद ही नानकिग

तार भेजा। यदि वहाँ से कोई आ गये होते, तो प्रधान-सेनापति कब के यहाँ से रवाना हो गये होते।"

जिस वक्त इस तरह यह समझौते की बातचीत हो रही थी, उसी समय तुग-पी सेना के सैनिक और अफसर च्याग काइ-शेक को सजा देने की खुलआम माँग कर रहे थे। च्याग ने अपने ऊपर पहरा देनेवालो को स्वय बातचीत करते सुना था, "फैसला करना जनता का काम है, कुछ अफसर समझौता कर ले तो इससे क्या ?" यह सुनकर च्याग ने अपनी डायरी मे लिखा था– 'मै समझ गया कि यह मेरी जान लेना चाहते हैं, जनता का नाम तो बहाना है।" इन सैनिको और अफसरो को जब समझाने की कोशिश की जाती, तो कुछ तो अधीर होकर रोते हुए कहने लगते– तब तो आप हमे भी धोखा देना चाहते है।"

सुग के पहुँचने पर बातचीत होकर बाहर से कहा गया कि आठो शर्ते नामजूर की गई, किन्तु भीतर से उन्हे व्यावहारिक रूप मे निम्न प्रकार स्वीकार किया गया

(1) गृह युद्ध बन्द किया जाय कुओ मिन ताग और कम्युनिस्ट पार्टी आपस मे सहयोग से काम करे।

(2) जापानियो के खिलाफ स्पष्ट रवैया अख्तियार करते हुए उनका मुकाबला किया जाय।

(3) नानकिंग के उन पदाधिकारियो को हटा दिया जाय जो जापानियो के पक्षपाती है, और इग्लैड अमरिका और रूस के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जाय।

(4) तुग पी और सी पी सेनाओ का दर्जा नानकिंग सेना के समान माना जाय।

(5) जनता को राजनीतिक स्वतन्त्रता दी जाय।

(6) सरकार को गणतान्त्रिक ढग पर फिर से सगठित किया जाय।

च्याग पत्नी 22 दिसम्बर को सियान पहुच गई थी। इन शर्तो को मनवाने मे उसका बडा हाथ था।

समझौता हो जाने के बाद 25 दिसम्बर को च्याग काइ शेक तरुण मार्शल को साथ लिये नानकिंग लौट गया। सयुक्त मोर्चा कायम हो गया उसका कार्यक्रम बना जिसकी स्वीकृति भी दे दी गई। लेकिन बाहर मे च्याग काइ शेक की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए कुछ अभिनय भी किया गया। नानकिंग मे पहुँचकर तरुण मार्शल ने सबके सामने स्वीकार किया मै शर्म से मरा जा रहा हू। मुझसे भारी अपराध हुआ। मै इसीलिए साथ आया हूँ कि मुझे सजा दी जाय जिससे मेरे पापो का प्रायश्चित्त हो जाय।' च्याग काइ शेक ने बडी उदारता दिखलाते हुए कहा नही अपराध मेरा था जो मैने अपने अधीन लोगो को अच्छी तरह शिक्षा नही दी और वह विद्रोह करने के लिए उतारू हो गये। अच्छा किया जो तुमने अपना कसूर मान लिया मै केन्द्रीय अफसरो से तुम्हे क्षमा कर देने के लिए कहूगा।'

तरुण मार्शल पर मुकदमा चला कर दस वर्ष की सजा दी गई लेकिन दूसरे ही दिन उसे माफ भी कर दिया गया। शेन्सी मे जो नानकिंग की सेना मौजूद थी उसे हटा लिया गया जापान पक्षपाती अफसर चान चुन को हटाकर उसकी जगह जापान विरोधी अफसर को दी गई। च्याग काइ शेक ने अपनी भूलो को स्वीकार कर तीन बार उसे दोहराते इस्तीफा दे दिया और उसके स्वीकार या अस्वीकार किये जाने से पहले ही तरुण मार्शल के साथ दो महीने के विश्राम के लिए वह अपने देहाती घर मे चला गया। वस्तुत इस समय मे वह तुग पी, सी पी और लालसेना के प्रतिनिधियो से सलाह मशविरा कर रहा था।

15 फरवरी को कुओमिन्ताग की बैठक हुई। इसके पहले 10 फरवरी को कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने प्रस्ताव मे चार बातो के लिए प्रार्थना की गृहयुद्ध बन्द हो व्याख्यान, अखबार और सभासगठन की स्वतन्त्रता हो राजनैतिक कैदी छोडे जाय जापान के विरोध के लिए एक सयुक्त योजना बने और डा सुन यात् की वसीयत के तीन सिद्धान्त कार्यरूप मे परिणत किये जायें। पार्टी ने यह भी कहा कि यदि ये बाते स्वीकार कर ली जायें तो हम निम्न बातो को करने के लिए तैयार है

(1) लालसेना का नाम बदलकर क्रान्तिकारी सेना रख दिया जायगा और उसे सैनिक समिति के मातहत कर दिया जायगा।

(2) सोवियत प्रदेश का नाम बदलकर 'चीन गणराज्य का विशेष क्षेत्र कर दिया जायेगा।

(3) सोवियत प्रदेशो मे पूर्ण जनतान्त्रिक सरकार कायम कर दी जायगी।

(4) जमीन की जब्ती रोक दी जायगी और सारी ताकत जापान के खिलाफ लडने मे लगाई जाएगी।

कुओमिन्ताग की बैठक ने पहले इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया, किन्तु यह मजूर किया कि कम्युनिस्टों के साथ तब तक बात जारी रह सकती है, जब कि वह निम्न बातो पर विचार करने को तैयार हैं :

(1) लालसेना तोड दी जाय और उसे राष्ट्रीय सेना मे मिला दिया जाय,

(2) सोवियत गणराज्य खतम कर दिया जाय,

(3) सुन् यात्-सेन् के तीन सिद्धान्तो के विरुद्ध कोई प्रचार न किया जाय, और

(4) वर्ग-युद्ध का ढग छोड दिया जाय।

वस्तुतः इन सारी बातो मे यही दिखलाने की कोशिश की गई कि कुओमिन्ताग नही, बल्कि कम्युनिस्ट दबे।

15 मार्च, 1937 को कम्युनिस्ट पार्टी, सोवियत सरकार और लालसेना ने नानकिग सरकार से सुलह की प्रार्थना की, और जून तक करीब-करीब सारी बाते तै हो गई। च्याग भी समझौते के लिए उत्सुक था। उसने हवाई-जहाज भेजकर जून मे चाउ एन्-लाइ को अपनी ग्रीष्म राजधानी कुलिग मे बुलाया। कुछ दिनो की बातचीत के बाद कम्युनिस्ट पार्टी के भेजे प्रस्ताव के अनुसार ही करीब करीब सुलह हो गई। इससे पहले अप्रैल से ही दोनों पक्षों मे सद्भाव पैदा हो गया था। कम्युनिस्टो के दमन के लिए भेजी गई सेनाएँ लौटा ली गई थी। च्याग ने अपने उस विभाग को भी तोड दिया, जो लाल डाकुओं को मटियामट करने के लिए दस सालो से काम कर रहा था। सोवियत-इलाको के ऊपर से घेरा हटा लिया गया, और माल और लोगो का यातायात बेरोक-टोक होने लगा। सोवियत-इलाके ने जल्दी ही बाहर के प्रदेशो से व्यापार करना शुरू किया, सडके और तार का प्रबन्ध हुआ, एक नगर से दूसरे नगर लारियाँ आने लगी, उद्योग धन्धो के लिए मशीने मँगाई जाने लगी, बडे परिमाण मे किताबे मँगाकर एक अच्छा पुस्तकालय कायम कर दिया गया। चीन के भिन्न-भिन्न भागो मे अन्तर्धान रहते कम्युनिस्ट सोवियत की नई राजधानी येनान् मे चले आये। जापान-विरोधी सैनिक युनिवर्सिटी के नाम से अब लाल सैनिक विद्यालय काम करने लगा। उसके पास भरती होने के लिए हजारो दरख्वास्तें आने लगी और कितने ही विद्यार्थी तो सैकडो मील पैदल चलकर उसमे दाखिल होने आये। मई (1936 ई) मे सोवियत इलाके का नाम विशेष भूभाग रख दिया गया। कम्युनिस्टो का डा सुन् के तीन सिद्धान्तो को मानने मे कोई आपत्ति नही थी, क्योकि गणराज्य, राष्ट्रीयता और आजीविका के बारे मे इन तीनों सिद्धान्तो की व्याख्या साम्यवादी ढग से भी की जा सकती थी। कम्युनिस्टो ने जमीदारो की सम्पत्ति जब्त करना छोड दिया, किन्तु उसके बदले मे च्याग ने 50 लाख डालर की पहली भेट उनके पास भेजी। अब सोवियत इलाके की सीमाओं पर कम्युनिस्ट और कुओमिन्ताग के झडे साथ साथ फहराये जाते, सोवियत के दफ्तरो पर भी दोनो ही झण्डे लहराते।

इतना सद्भाव दिखलाते हुए भी माओ चे तुग ने अपनी नीति को स्पष्ट करके बतलाया था :

"इस पारस्परिक समझोते की एक सीमा है। सोवियत जिला और लालसेना का नेतृत्व कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने हाथ मे रक्खा है। कुओमिन्ताग से सम्बन्ध रखते हुए भी अपने अस्तित्व को अलग बनाये रखने तथा एक सीमा तक कुओमिन्ताग की आलोचना करने का भी हम हक है, इन बातो मे कोई जरा भी रियायत नही की जा सकती। कम्युनिस्ट पार्टी अपने साम्यवाद की स्थापना के ध्येय को कैसे छोड सकती है ? किन्तु इसके लिए पहले जनतात्रिक क्रान्ति की जरूरत है, जिसके लिए ही हमने नई नीति स्वीकार की है। कम्युनिस्ट पार्टी अपने कार्यक्रम और नीति को छोड नही सकती।"

14

जापान-प्रतिरोध (1936-39 ई)

1 दाँवपेच'

जापान के आक्रमण ने देश के सामने एक नई समस्या पेदा कर दी थी जिसे हल करते हुए सयुक्त मोर्चे के पथ प्रदर्शन के लिए साथी माओ त्से तुग ने 1936 ई की शरद मे लाल सैनिक अकादमी के लिए 'चीन क्रान्तिकारी युद्ध की दाँव पेच सम्बन्धी समस्याएँ' के नाम से एक पुस्तिका लिखी। इसमे चीन के महान नेता का एक महान् युद्धविशारद के रूप मे देखा जा सकता है। पुस्तिका मे सिद्धान्त प्रतिपादन की वह शैली देखी जाती है जिसे कि पुराने भारतीय विचारक अपने ग्रथो के लिखने मे इस्तेमाल किया करते थे। यह कोई आकस्मिक घटना नही है क्योकि हजारो वर्षो तक भारतीय आचार्यो की कृतिया चीन मे बड़े आदर के साथ पढी जाती रही। माओ ने आरम्भ मे ही पुस्तिका का आरम्भ करते हुए लिखा है युद्ध के विधान (मानव निर्मित विधानो से भिन्न प्राकृतिक अर्थो मे)—एक ऐसी समस्या है युद्ध सचालन करनेवाले हरेक आदमी को जिसका अध्ययन करना और हल करना है।

क्रान्तिकारी युद्ध के विधान—यह ऐसी समस्या है जिसे हरेक क्रान्तिकारी युद्ध के सचालन करनेवाले का अध्ययन करना और हल करना है।

चीन के क्रान्तिकारी युद्ध के विधान—यह एक ऐसी समस्या है जिसे चीन के क्रान्तिकारी युद्ध के हरेक सचालन करनेवाले को अध्ययन करना और हल करना है।

इस समय हम एक युद्ध मे—क्रान्तिकारी युद्ध मे लगे हुए है जिसे अर्धउपनिवेशी चीन मे विद्यमान राजनीतिक और आर्थिक स्थितियो मे लड़ा जा रहा है। इस प्रकार हम केवल युद्ध के सामान्य कानूनो का ही अध्ययन नही करना है बल्कि क्रान्तिकारी युद्ध के विशेषकर चीनी क्रान्तिकारी युद्ध के विशेष कानूनो का भी अध्ययन करना है।

इसके बाद युद्ध की (परिभाषा) बतलाते हुए माओ ने लिखा है

युद्ध, वर्ग समाज के आरम्भ से ही विकास की एक खास अवस्था मे वर्गो राष्ट्रो राज्यो या राजनीतिक गुटो के बीच के विरोधो को फैसला करने के लिए किये जानेवाले सघर्ष के सर्वोच्च रूपो मे से एक है। बिना युद्ध और युद्ध की स्थितियो और विशेषताओ तथा बाहरी वस्तुओ के साथ उसके सम्बन्धो को जाने बिना युद्ध के कानूनो को नही जाना जा सकता न उसके सचालन करने के उपायो और साधनो को जाना जा सकता है और उसके बिना विजय प्राप्त करना असभव है।

क्रान्तिकारी युद्ध—क्रान्तिकारी वर्ग युद्ध अथवा क्रान्तिकारी राष्ट्रीय युद्ध मे युद्ध की सामान्य स्थितियो और विशेषताओ के अतिरिक्त अपनी विशेष स्थितियाँ और स्वभाव होते है। इस प्रकार युद्ध के आम कानूनो के अतिरिक्त इस पर इसके अपने निजी विशेष कानून लागू होते है। इस विशेष स्थितियो विशेषताओ और कानूनो को जाने बिना क्रान्तिकारी युद्ध के सचालन करने का कोई उपाय नही या इस युद्ध मे विजय प्राप्त करने का कोई रास्ता नही है।

इसलिए हम आम युद्ध के आम कानूनो का अध्ययन करना चाहिए साथ ही क्रान्तिकारी युद्ध आम कानूनो को भी और अन्त मे हम चीन के क्रान्तिकारी युद्ध के कानूनो का अध्ययन करना चाहिए।'

इसके बाद माओ चे तुग युद्ध को मार्क्सवादी दृष्टि से अध्ययन करने पर जोर देते हुए कहते है

इस गलत धारणा का बहुत पहले हमने खण्डन किया है कि युद्ध के आम कानूनो का अध्ययन करना पर्याप्त है अर्थात् चीनी सरकार या सैनिक अकादमी द्वारा जारी किये गये सैनिक नियमो और व्यवस्थाओ का अनुसरण करना पर्याप्त है। वह लोग जो ऐसी धारणा रखते है वह नही जानते कि यह नियम युद्ध के आम

कानूनो पर आधारित है, और विशेषकर वह केवल दूसरे देशो की पूरी तौर से नकल है। यदि हम रूप या विषय मे जरा भी परिवर्तन किये बिना ऑख मूँदकर उनका अनुकरण करेगे, तो छोटे जूते मे ठीक होने के लिए हम अपने पैर काटेग, जिसका परिणाम पराजय होगी। ता भी य लाग तर्क करते है कि चूँकि यह कानून अतीत के खूनी तजर्बो क परिणाम हैं, फिर वह क्यो नही उपयोगी है ? किन्तु, ये लोग यह नही जानते कि अतीत के खूनी तजर्बो का मम्मान करते हुए भी, हमे अपनी निजी खूनी तजर्बो का भी मम्मान करना होगा।

"इस गलत धारणा का भी हमन बहुत पहल खण्डन किया है कि रूसी क्रान्तिकारी युद्ध का अध्ययन करना पर्याप्त है। वह नही जानते कि सोवियत तजर्बा का सम्मान करते हुए बल्कि दूसरे ऐतिहासिक अथवा विदेशी युद्धो की अपेक्षा अधिक मम्मान करते हुए भी उसकी अपक्षा हमे चीनी क्रान्तिकारी युद्ध के तजर्बो के प्रति अधिक मम्मान प्रदर्शित करना होगा क्योकि चीनी क्रान्ति और चीन लालसेना को बहुत सी विशेष स्थितियो म गुजरना पडा है।

मार्क्सवादी दृष्टि से निष्कर्ष निकालते हुए माओ चे तुग कहते है

ऊपर की बातो से यह देखा जा सकता है कि युद्ध की स्थिति के भेदो की विशेषता पर भिन्न भिन्न देश काल और स्वभाव के अनुसार युद्ध के कानूनो के सचालन करने मे भेद होता है। काल के विचार से युद्ध और उसके सचालन करनेवाले कानून विकासशील है जिनका प्रत्यक ऐतिहासिक मजिल पर विशेष स्वभाव होता है जिसका परिणाम होता है युद्ध के विशेष कानून जिनका कि भिन्न भिन्न मजिल पर बिना परिवर्तन किये अनुसरण नही किया जा सकता। युद्ध के स्वभाव की दृष्टि से देखने पर क्रान्तिकारी या प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध म क्रान्तिकारी वर्ग या क्रान्तिकारी राष्ट्रीय युद्ध म अपने ऐसे विशेष स्वभाव होते है, जिनके कारण विशेष विशेष स्वभाववाले अपने निजी कानून होते है जिन्हे पका पकाया एक स दूसरे मे स्थानान्तरित नही किया जा सकता। देश की दृष्टि से विचार करन पर भी वही बात है, क्योकि हरेक राज्य या राष्ट्र का युद्ध के कानूनो के विषय म अपने निजी विशेष स्वभाव होते है जिन्हे कि एक स दूसरे के लिए नकल नही किया जा सकता। भिन्न भिन्न ऐतिहासिक मजिलो, भिन्न भिन्न स्वभावो भिन्न भिन्न भूभागो और भिन्न भिन्न राष्ट्रो के युद्ध कानूनो के अध्ययन के समय हमे अपना ध्यान उनके अपने अपने स्वभावो और विकासो पर केन्द्रित करना चाहिए और युद्ध विज्ञान म यान्त्रिक सिद्धान्तो का प्रत्याख्यान करना चाहिए।'

पहले अध्याय म 'युद्ध का अध्ययन कैसे करना चाहिए' इस बतलाकर दूसरे अध्याय म माओ ने चीनी क्रान्तिकारी युद्ध और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सम्बन्ध म अपने सिद्धान्तो का निरूपण किया है, तीसरे अध्याय म उन्होने चीनी क्रान्तिकारी युद्ध की विशेषताओ को बतलाया चौथे अध्याय म इस युद्ध के मुख्य रूपो आदि की विवेचना की फिर दाव पेच सम्बन्धी प्रतिरक्षा (अध्याय ५) के सम्बन्ध म कहते हुए, उन्होने बतलाया है

शत्रु को सीमा म पर रोकने के पक्षपाती और दॉव पेच सम्बन्धी पीछे हटने के विरोधी कहते है कि पीछे हटने का अर्थ है भूमि को हाथ से देना लोगो के लिए खतरा पैदा करना और बाहरी दुनिया मे अनुकूल प्रभाव पैदा करना। पाचवे आक्रमण के दिनो म वह तर्क करते थे जब हम एक कदम पीछे हटते है, तो शत्रु के चार्का... को पानी एक कदम आगे बढती है जिससे सोवियत क्षेत्र का भूभाग लगातार कम होता जाता है और उसे फिर से पाने की सम्भावना नही रहती।

साथी माओ चे तुग की यह छोटी सी पुस्तिका चीन म सर्वहारा की विजय के लिए बहुमूल्य साबित हुई है और दूसरे देशो के सर्वहारा भी बहुत शिक्षा ले सकते है।

2 दूसरे युग का लेखा-जोखा

इस दूसरे क्रान्तिकारी गृह युद्ध के ऊपर सिंहावलोकन करते हुए हू चियाओ मू* ने लिखा है

* 'पार्टी के तीस वर्ष' पृष्ठ 47 48

" दूसरे क्रान्तिकारी गृह-युद्ध का काल एक ऐसा काल था, जिसमें चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने, अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में राजनीतिक परिपक्वता प्राप्त की और क्रान्ति को नई ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया। इस काल में मुख्य रूप से साथी माओ चे-तुग की कोशिशों की बदौलत, पार्टी ने गहराई के साथ सैनिक काम और गाँवों के काम के महत्त्व को समझा-बूझा, क्रान्तिकारी सेना और देहातों में क्रान्तिकारी अड्डों का निर्माण किया, क्रान्तिकारी लड़ाई को चलाने के तरीके सीखे, भूमि-सुधार को लागू करने और अन्य दूसरे कामों को—ऐसे कामों को जो राज्यसत्ता के अन्तर्गत आते थे—करना सीखा। इस काल के दौरान में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने साथी माओ चे-तुग को अपने असल मार्क्सवादी-लेनिनवादी नेता के रूप में अपनाया और इसी के साथ-साथ, निम्न पूँजीपति-वर्ग के 'वामपक्षी' विभिन्न प्रकार के सिद्धान्तों के खतरे और हानिकारक रूपों को भी पहचाना। विभिन्न प्रकार की गलत निम्न पूँजीवादी विचारधाराओं के खिलाफ संघर्ष के दौरान में पार्टी ने साथी माओ चे-तुग की रहनुमाई में अपने नेतृत्व को कायम किया।

" पहले क्रान्तिकारी युद्ध के दौरान में कुओमिन्ताग कम्युनिस्ट सहयोग के सिलसिले में सुधारवादी गलतियों का मुख्य खतरा सामने था। लेकिन, इस काल में पार्टी के नेतृत्व ने मुख्य तौर पर 'वामपक्षी' गलतियाँ कीं। 'वामपक्षी' गलतियों ने पार्टी और लालसेना को भारी आघात पहुँचाया और नई ऊँचाइयों की ओर क्रान्ति को न बढ़ने दे, उसके पैर को पीछे की ओर घसीटा। फिर भी पार्टी और लालसेना ने—जो कितनी ही उथल-पुथलों और पेचीदा संकटों से मूल्यवान् अनुभव प्राप्त कर बाहर निकली थी—बाद के दिनों में प्रतिरोध-युद्ध और जनता के मुक्ति संग्राम की मुख्य शक्ति का रूप धारण कर लिया। इन तथ्यों की रोशनी में कहा जा सकता है कि द्वितीय क्रान्तिकारी गृह युद्ध के दौरान में ही वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राजनीतिक तैयारियाँ हुईं और वैसे कार्यकर्ता तैयार किये गये, जिनकी वजह से आज चीनी क्रान्ति विजयी हुई है।

" 1927 से 1937 तक के अत्यन्त प्रतिक्रियावादी काल को पार्टी ने पार किया। इस काल में एक ओर तो दुश्मन ने हमारी पार्टी को पूर्णतया खतम करने की कोशिश की और हमारी पार्टी को दुश्मन के खिलाफ अत्यन्त कठिन, पेचीदा और वीरतापूर्ण लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी, और दूसरी चेन तू स्यू के सुधारवादी अवसरवाद पर काबू पाने के बाद पार्टी को कई बार 'वामपक्षी' अवसरवाद के आघातों को सहना पड़ा। इन आघातों ने पार्टी को भारी खतरे में डाल दिया। फिर भी साथी माओ चे तुग की सही, रचनात्मक, मार्क्सवादी-लेनिनवादी रहनुमाई की बदौलत, असाधारण धीरज और अनुशासन को मानने की भावना की बदौलत अन्त में अच्छे फलों के साथ पार्टी ने अवसरवादी गलतियों पर काबू पाने और अपने को अत्यन्त खतरनाक परिस्थितियों में से बाहर निकालने में सफलता प्राप्त की। इस प्रकार प्रतिक्रिया के दस साल के काल में बावजूद दुश्मनों के भीतरी और बाहरी आक्रमणों के, पार्टी देशभर की आम जनता को क्रान्तिकारी भावना में दीक्षित करने में समर्थ हो सकी, व्यापक जन-समूह के बीच पार्टी ने अपने क्रान्तिकारी फरहरे को ऊँचा उठाये रखा, लालसेना की शक्ति के मुख्य हिस्से को और क्रान्तिकारी अड्डों के कुछ इलाकों को बचाये रखा। भारी संख्या में पार्टी के प्रमुख कार्यकर्ताओं को और पार्टी के दसियों हजार सदस्यों को सुरक्षित रखने में पार्टी ने सफलता प्राप्त की। साथ ही पार्टी ने इस काल में क्रान्तिकारी अनुभव की बहुमूल्य निधि भी प्राप्त की—खास तौर से युद्ध और क्रान्तिकारी अड्डे कायम करने के बारे में पार्टी ने अनुभव हासिल किये। साथ ही पार्टी ने जापानी आक्रमण के खिलाफ देशव्यापी देशभक्तिपूर्ण प्रतिरोध के नये उठान में अपना कर्तव्य पूरा करने और कुओमिन्ताग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बीच नया सहयोग कायम करने के बारे में बहुमूल्य अनुभव हासिल किया।'

3. भावी युद्ध

साथी माओ चे-तुग ने जुलाई, 1936 में ही युद्ध के तरीके के बारे में एक पत्रकार से कहा था :

" कुछ लोग समझते हैं कि ज्यों ही जापान ने तटीय नगरों पर कब्जा कर बाहर से युद्ध-सामग्री ले जाने का रास्ता रोक दिया, त्यों ही चीन के लिए लड़ते रहना असम्भव हो जायगा और जापान जीत जायगा। यह बिलकुल बेवकूफी की बात है। ऐसे लोगों का ध्यान हम सिर्फ लालसेना के इतिहास की ओर खींचना चाहते

हैं। ऐसे मौके आये, जब कुओमिन्तांग की सेना हमारी सेना से दस गुनी थी और उसके पास युद्ध-सामग्री भी हमसे बहुत अधिक थी। आर्थिक दृष्टि से उसकी साधन-सम्पन्नता का क्या कहना है ? उसे बाहर से भरपूर सहायता मिलती थी। किन्तु, इन सब बातों के होते हुए भी क्यो लालसेना विजय-पर-विजय प्राप्त करती रही और क्यो वह आज सिर्फ जिन्दा ही नही, बल्कि उसकी ताकत कही अधिक बढ गई है ?

" इसका कारण स्पष्ट है। लालसेना और सोवियत-सरकार ने अपनी सेना के अन्दर की जनता को सुदृढ एकता के सूत्र मे आबद्ध कर लिया था। वह चट्टान की तरह मजबूत और ठोस बन गई थी। उसका हरेक आदमी समझता था कि यह लडाई हमारी 'अपनी' लडाई है—अपने घरबार की लडाई, अपने स्वार्थ की लडाई, अपने अधिकार की लडाई है। दूसरी बात यह थी कि जो लोग लालसेना का सचालन करते थे, वे योग्य व्यक्ति थे, उनमे ताकत और बलिदान भावना थी। वे युद्ध कला के जानकार थे और अपनी राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक स्थिति को भली भांति समझते थे। लालसेना की जिन्दगी चन्द राइफलो मे शुरू हुई, किन्तु, शुरू से ही वह सफेद सेना को हराती रही। क्यो ? इसलिए कि वह जनता की थी, सफेद सेना मे भी उसके हिमायती थे और सरकारी अफसर भी उसकी निःस्वार्थ नीति से प्रभावित थे। हमारे दुश्मनो की सैनिक शक्ति असीम थी, किन्तु राजनीतिक दृष्टि मे वे विशृंखलित थे।

" जापान विरोधी युद्ध छिडने पर चीन की संयुक्त सेना को लालसेना से भी अधिक सहूलियते होगी। चीन एक देश नही महादेश है और जब तक उसकी इंच इंच भूमि को जीत न लिया जाय, तब तक चीन को विजित नही कहा जा सकता। अगर जापान ने चीन के एक बडे हिस्से को भी जीत लिया-मान लीजिए, उसने 10 करोड या 20 करोड की आबादी पर भी अपना शासन जमा लिया, तो भी उसकी विजय पूरी नही कही जायगी। उस समय भी हमारे पास काफी बडी ताकत होगी और हमारे दुश्मनो को बहुत बडे और फैले हुए मोर्चो पर हमसे लगातार लडते ही रहना पडेगा।

" सवाल उठाया जा सकता है : हमारे पास युद्ध-सामग्री कहाँ से आवेगी ? उत्तर है : जापान हमारे उन कारखानो और शस्त्रागारो पर कब्जा नही कर सकता, जो देश के बहुत भीतर, बिलकुल सुरक्षित स्थानो मे स्थापित है। उनमे हम इतने अस्त्र शस्त्र तैयार कर सकेगे, कि हम वर्षो तक लडते रहे। फिर, जापान हमे उसके हाथो से ही अस्त्र-शस्त्र छीनने से कैसे रोक सकता है ? हमारी लालसेना तो नौ वर्षो तक कुओ-मिन्तांग से छीने अस्त्र-शस्त्रो पर ही मुख्यतः निर्भर रही—हमारे दुश्मन ही हमारे 'शस्त्र वाहक' साबित हुए। जिस समय समूचा चीन जापान के खिलाफ एक होकर खडा होगा उस समय इसकी सम्भावना कितनी अधिक हो जायगी, जरा इसकी कल्पना कीजिए।

" यह ठीक है कि आर्थिक दृष्टि से अभी चीन मे एकसूत्रता नही है। किन्तु, चीन की अविकसित आर्थिक स्थिति भी जापान विरोधी युद्ध के लिए एक वरदान ही सिद्ध होगी; क्योकि शघाइ को चीन से छीन लेने पर भी चीन की वह दयनीय स्थिति नही हो जायगी, जो न्यूयार्क के छीन लेने से अमरिका की हो सकती है। फिर, जापान कितना बडा घेरा डालेगा ? वह हमारे उत्तर पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम मे तो कुछ कर ही नही सकेगा। आखिर जापान की सबलता तो समुद्र पर ही है।

" एक बात और भी ध्यान मे रखना है। जापान की जनता भी इतनी बडी लडाई का बोझ अधिक दिनो तक बर्दाश्त नही करेगी। ज्यो ही चीन ने जापान को दो-तीन अच्छी 'पटक' दी, उसे जरा जोर से हराया कि जापान की शोषित जनता कब्र फडफडाकर खडी होगी और तब जापान हमसे लडेगा या घर सम्हालेगा ? जापान मे क्रान्ति होना अनिवार्य है। फिर बाह्य मगोलिया और रूस—हमारे ये दो पडोसी राष्ट्र कब तक अलग खडे तमाशा देखते रहेगे ? रूस अपने को ज्यादा दिनो तक अलग नही रख सकेगा। क्योकि, चीन पर कब्जा होने से तो जापान को एक ऐसी भूमि मिल जायगी, जिस पर पैर जमाकर वह रूस के छक्के छुडा सकता है। रूस ऐसी गलती कभी नही करेगा। इंग्लैड और अमरिका भी चीन के अपने स्वार्थो को जापान के हाथ मे सौप अपने पैर मे कुल्हाडी नही मारेगे।

" इस लडाई मे हमारी युद्ध-कला क्या होगी—यह भी विचारणीय है। हम उसी नीति का अवलम्बन करेगे,

जिसे लालसेना करती रही है। एक विस्तृत. परिवर्तनशील, और असीम मोर्चे पर लुक-छिपकर लड़ना—कभी पीछे हटना, कभी आगे बढ़ना, कभी निकल भागना, कभी जबर्दस्त धावे करना—यही नीति हम अख्तियार करेंगे। एक जगह जमकर बड़े पैमाने पर लड़ना—खाइयाँ खोदना, घेरे बनाना, मजबूत किले बनाना, यह गलती हम नहीं करेंगे। पर, इसका मतलब यह भी नहीं होगा कि हम मोर्चे की महत्त्वपूर्ण जगहों को यों ही हाथ से निकल जाने देंगे। ऐसी जगहों पर हम जमकर लड़ेंगे भी—किन्तु, ऐसा लड़ना हमारी तात्कालिक युद्ध-कला होगी, स्थायी युद्धकला तो हमारी वही लुक-छिप की लड़ाई होगी।

" भौगोलिक दृष्टि से युद्ध का रंगमंच इतना विस्तृत होगा कि इस पद्धति से हम बहुत बड़े फायदे में रहेंगे। जब कि जापानी सेना सोच-समझकर, रुक-रुककर, भारी युद्ध सामग्रियों के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ेगी, उस समय हम इधर-उधर दौड़ते जैसे उसे तबाह और बर्बाद करेंगे। जमकर लड़ना या किसी प्रमुख स्थान की रक्षा में अपनी ताकत को बिलकुल बरबाद करना, तो उस सहूलियत को ठुकराना है, जो हमारे देश की भौगोलिक स्थिति हमें देना चाहती है। अबिसीनिया ने जो गलती की, हमें उसे दुहराना नहीं है। किसी निर्णयात्मक महान् युद्ध की भूल-भूलैया में हम लड़ाई के प्रारम्भ में नहीं पड़ेंगे। हमारा काम होगा धीरे-धीरे दुश्मन को थकाना, उसके युद्ध-साहस को तोड़ना, उसकी लड़ाई की योग्यताओं को खतम करना।

" बेचारे अबिसीनियावाले दो गलतियों के शिकार हुए : एक तो उनमें राजनीतिक कमजोरियाँ थीं, दूसरे वे एक जगह मोर्चा बाँधकर डट गये और इस प्रकार उन्होंने हत्यारे दुश्मनों को बम गिराने, जहरीली गैस छोड़ने और दूसरे शक्तिशाली युद्ध साधनों का प्रयोग करने का मौका दे दिया। वे कहीं के नहीं रहे।

" फिर, हम बाकायदा सेना पर ही निर्भर नहीं रहेंगे। हम अपने किसानों के अन्दर से स्वयंसेना बनाएँगे, गोरिल्ला-सैनिकों की सृष्टि करेंगे, राजनीतिक और सैनिक दोनों तरह की शिक्षा देंगे। वे हमारे तत्त्वावधान में अपना कमाल दिखाएँगे। किसानों की स्वयंसेना कैसा कमाल कर सकती है, इसका सबूत इस गृह युद्ध में ही नहीं मिला है, बल्कि मचूरिया में जापानियों को भी उसकी एक झलक मिल चुकी है। हमारी यह स्वयंसेना दुश्मनों को चौबीसों घंटे तंग करती रहेगी—उन्हें उलझाकर मार डालेगी।

" यह याद रखना है कि लड़ाई चीन में होगी। इसका मतलब यह है कि दुश्मनों को चौबीसों घंटे हमारे घेरे के अन्दर रहना पड़ेगा—उनके चारों ओर एक ऐसी जमात रहेगी, जो मौका पाते ही उन्हें निगल जाना चाहेगी। उन्हें एक जगह से दूसरी जगह बहुत सावधानी से जाना पड़ेगा। अपने कैम्प, अपनी रसद, अपने रास्ते, सबकी रक्षा में दिन-रात चौकस रहना पड़ेगा। इन सबके साथ मचूरिया और जापान में भी उन्हें अपने आधारों की रक्षा करनी पड़ेगी।

" ज्यों ज्यों लड़ाई के दिन बीतते जायेंगे, हम उनसे अस्त्र-शस्त्र छीनकर अपने को ज्यादा-से-ज्यादा सशस्त्र बनाते जायेंगे। एक समय ऐसा भी आयेगा, जबकि हम उनसे जमकर लड़ाई ले सकेंगे, हम खाइयाँ खोदेंगे, किला बनायेंगे। लड़ाई करते करते हमारी फौज युद्ध-कला में निपुण होती जायगी। विदेशी मदद को भी हम बन्द नहीं कर सकते। ज्यादा दिन तक लड़ाई चलने पर, जापान के लिए उसका खर्च बर्दाश्त करना मुश्किल पड़ जायेगा। उसकी अर्थनीति ताश के घर की तरह ढह पड़ेगी। लड़ते-लड़ते उसकी फौज भी ऊब उठेगी—जिस लड़ाई की कोई सीमा नहीं हो, उसमें कहाँ तक कोई जान खपाता रहेगा ? चीन की जनसंख्या इतनी अधिक है कि हमें नये-नये लड़ाके सदा मिलते जायेंगे। जिन जापानी सैनिकों को हम पकड़ेंगे, उनके साथ हमारा अच्छा सलूक होगा। हम उन्हें बतायेंगे कि भाइयो, आप भी गरीब के ही लड़के हैं। इन फासिस्तों के फेर में क्यों पड़े हैं ? आओ, मिलकर हम इन मुट्ठीभर तानाशाहों का सामना करें।

" ये और दूसरी हालतें वह सूरत पैदा करेंगी, जब कि हम जापान के किले और मोर्चे पर आखिरी धावा कर जापान को अपने देश से भगाकर ही दम लें। जापानी जहाज चीन की चट्टान पर आकर टूटेगा ही—यह निश्चय है ! निश्चय है !! निश्चय है !!! "

4. लोक-युद्ध

देश की स्थिति जितनी गम्भीर होती जाती थी, उसी तरह साथी माओ चे-तुंग की प्रतिभा भी अपनी करामात दिखला रही थी। 1937 के अगस्त में लोचुआन में पार्टी की छठी कांग्रेस हुई, जिसका माओ ने लोक-युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिए दससूत्री कार्यक्रम उपस्थित किया जिनमें से कुछ ये हैं : (1) दुश्मन के मोर्चे की पिछाड़ी स्वतन्त्र रूप से गोरिल्ला युद्ध शुरू करने में पार्टी को अगुवाई करना, (2) इन गोरिल्ला दलों की जिम्मेवारी है कि वह अपने रणमोर्चे के साथ अपने काम का सम्बन्ध जोड़ें, (3) दुश्मन के पीठ के पीछे नया मोर्चा खोलना और जापान-विरोधी मुक्त इलाकों की स्थापना करना, (4) कुओमिन्तांग के इलाके में भी जापान-विरोधी आन्दोलन को पूर्ण रीत्ति से विकास करने के लिए पार्टी का प्रयत्न करना, (5) जनता के राजनीतिक और आर्थिक हितों के लिए लड़ते हुए उसे जापान-विरोधी मोर्चे में सम्मिलित होने के लिए उत्साहित करना, (6) लोक-युद्ध के समय किसान-समस्या को हल करना, (7) लगान घटाना, (8) ब्याज घटाना···

माओ ने लोक-युद्ध की परख ठीक तौर से करके कहा :

"आज मजूर-वर्ग, व्यापारियों तथा जमींदारों के बीच में मतभेद है, यह ठीक है। यह मतभेद दोनों राजकीय दलों—कम्युनिस्ट पार्टी और कुओमिन्तांग—की नीति में भी दिखलाई पड़ता है। जापान के विरुद्ध लड़ना चाहिए, अब यह बहस की बात नही रह गई है। आज इसे कुओमिन्ताग के बड़े व्यापारियों और जमींदारों ने भी स्वीकार कर लिया है। जापान के विरुद्ध किस तरह लड़ा जाय, इसके बारे मे दोनों दलों में अब भी मतभेद है। पर यदि च्याग की 'सीमित युद्धनीति' पर काम किया गया, तो जापान जीतेगा और चीन हारेगा, यह भी बात पक्की है। लोक-युद्ध के नेतृत्व का इजारा च्याग ने अपने हाथ मे रक्खा है, किन्तु जापान के विरुद्ध लड़ने के लिए देश में जिन लोकतान्त्रिक सुधारो की आवश्यकता है, उसे करने के लिए वह राजी नही है। च्याग चाहता है कि जनता की शक्ति न बढ़े। वह चाहता है, जापानियों के साथ लड़कर कम्युनिस्ट कमजोर बन जायँ और मैं दूर खड़ा तमाशा देखते अपनी सेनाओं को सुरक्षित रख अपनी शक्ति को अक्षुण्ण रखूँ। इस प्रकार जब हम जापानियो को हराने में लगे रहें, उस समय वह हमारे ऊपर हमला करने की नियत रखता है। उसकी धारणा है कि मेरी ताजी तैयार सेना थके-माँदे कम्युनिस्टों को तुरन्त दबोच लेगी। अमेरिका च्यांग की योजना का पूर्ण तौर से अनुमोदन करता है। लेकिन, हम च्यांग की इच्छा पूरी नहीं होने देंगे। हम उसके जन-विरोधी पैंतरे को बेकार कर देंगे। च्याग जनतांत्रिक सुधार करना नहीं चाहता। हम स्वतन्त्र इलाके में स्वतन्त्र रूप से जनतांत्रिक सुधारों को कार्यरूप में परिणत करेंगे। वह जनता को हथियार नहीं देना चाहता, हम जैसे भी हो तैसे जनता को हथियारबन्द करेंगे। च्यांग विजय-यात्रा में जनता को प्रविष्ट होने नहीं देना चाहता, हम जनता को जागृत करके उसे जापान के विरुद्ध सक्रिय तौर से लड़ने के लिए कहेंगे। यह लोक-युद्ध है, और इसे लोक-युद्ध की रीति से लड़ा जायगा। लोगों के पूरे सहयोग के साथ ही इसमें विजय प्राप्त की जा सकती है।"

इस प्रकार साथी माओ के नेतृत्व में कम्युनिस्ट जापान-विरोधी युद्ध को पूरी तौर से लोक-युद्ध के रूप में परिणत करने के लिए तुले हुए थे।

5. जापान की विजय-यात्रा

(1) शांघाइ पर जापानी आक्रमण (1936 ई.)—सियान्-काड के बाद चीन की राजनीतिक शक्ति का सबसे बड़ा केन्द्र येनान् हो गया—पाओ-एन् से अब लाल राजधानी येनान में आ गई थी। वहाँ से उत्तरी चीन और मंचूरिया में फैले जापानी पंजे पर प्रहार करने की जोर-शोर से तैयारी होने लगी। इसी समय 13 अगस्त (1936 ई.) को जापानियों ने शाघाइ पर आक्रमण कर दिया। कम्युनिस्टों ने लोगों में उत्साह पैदा करने के लिए जो प्रयत्न किये थे, वह विफल कैसे हो सकते थे ? शाघाइ के निवासी जापान के खिलाफ लड़ाई में कूद पड़े। 1935 ई. से ही लियो शाउ-ची के नेतृत्व में छिपे हुए क्रान्तिकारी कार्रवाइयाँ कुओमिन्तागी इलाको में भी हो रही थीं। सियान् के समझौते के बाद जब छिपे नेता ऊपर प्रकट होने और जेलों से निकलकर काम करने लगे,

तो जापान-विरोधी आन्दोलन बहुत जोर से होने लगा। जापान-विरोधी मुक्ति संघ के एक नेता चाउ ताउ-फेंग ने शांघाइ में देशमुक्ति के सम्बन्ध में प्रचार करने के लिए एक दैनिक निकाला, जिसकी ग्राहक-संख्या एक लाख तक पहुँच गई। 'विश्व-संस्कृति', 'नारी जीवन', 'जनता-साप्ताहिक' जैसे पत्र बड़े लोकप्रिय थे, और वह बड़ी संख्या में निकल रहे थे। छापेखाने जब नष्ट हो गये, तो हाथ से लिखे दीवाल-पत्र निकलने लगे। मार्क्सवादी पुस्तकों का प्रचार भी बड़े जोर से हो चला। पामदत्त की पुस्तक 'विश्व की राजनीति' के दो महीनो के भीतर तीन-तीन हजार के कई संस्करण खतम हो गये। माओ की कृतियो को खरीदने के लिए लोग दूकानो के सामने लम्बी कतार बाँधकर खड़े हो जाते।

इस तरह नवचेतना-प्राप्त शांघाइ की जनता अपनी नगरी की रक्षा में बहादुरी के साथ तत्पर थी। 'यह देश हमारा है', 'यह धरती हमारी है', 'हम मरेंगे, किन्तु दुश्मनों को मारकर, हम जियेंगे, किन्तु शत्रु को हराकर' जैसे नारे देश में सर्वत्र गूँज रहे थे। पतित च्याग काइ-शेक इस नारा को कैसे पसन्द कर सकता था? वह जनता का शत्रु नही चाहता था कि जिस युद्ध में वह कायरता दिखला रहा है, उसमे जनता अपनी वीरता दिखलाकर उसके भविष्य के मनसूबे को तोड़ दे। लेकिन, सियान काण्ड के बाद उसकी अब इतनी हिम्मत नही थी कि जन-आन्दोलन पर प्रहार करे। च्याग द्वारा गैर कानूनी बनाये राष्ट्रकवि निय-इर्ह के राष्ट्रगीतो को नानकिंग के मुख्य सभागृह मे गाया गया, जिन्हें सुनने के लिए खुद च्याग के अफसर भी आये। बड़े बड़े शहरो में 'राष्ट्रमुक्ति संस्कृति कार्यकर्ता मंडल' की शाखाएँ कायम की जा रही थी। खुद नानकिंग में स्थापना के पहले ही मास मे उसके एक लाख से अधिक सदस्य हो गए। मोहल्ले मोहल्ले और गाँव गाँव में उसकी शाखाएँ खुली।

(2) पहली कम्युनिस्ट सफलता–सियान के समझौते के बाद लालसेना ने अब 'आठवी सेना' का नाम धारण किया था। महान् अभियान के समय माओ ने दक्षिणी प्रदेशो में लालसेना की जो टुकड़ियाँ छोड़ दी थी, उन्होंने गोरिल्ला दल का रूप लिया था, जिसका नाम 'नई चौथी सेना' पड़ गया था। इस सेना के निर्माण की इजाजत नानकिंग की सरकार को देनी पड़ी थी। 'आठवी सेना' जापान के खिलाफ उत्तरी चीन में लड़ने के लिए रवाना हो गई और उसने पहली बार जापान को जबर्दस्त हार दी। इस खबर से सारी जनता में बिजली की तरह उत्साह की भावना दौड़ गई–हम जापानियो को हरा सकते हैं। 'नई चौथी सेना' का कार्यक्षेत्र याग-त्सी के दक्षिण पूर्व चीन में था। जापान से लड़ने का काम यही दोनो सेनाएँ कर रही थी। जापानी सेनाएँ जब आगे बढ़ती, तो यह पीछे से गोरिल्ला-युद्ध छेड़ उनके यातायात को भंग कर उन्हे भारी क्षति पहुँचाती। इनके कारण जापान देहात में अपनी शक्ति कायम करने में असमर्थ था। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में ये दोनो सेनाएँ बराबर अपने काम में आगे बढ़ रही थी। इन्होने चीन के उत्तर, पूर्व, मध्य और दक्षिण के प्रदेशो में जनता को हथियार दे जापान के विरुद्ध बाकायदा गोरिल्ला वाहिनी का संगठन करके देहात मे जनतात्रिक इलाके कायम किये। इस लड़ाई के कारण कम्युनिस्टो की शक्ति और प्रभाव कितना अधिक बढ़ा, यह इसी से मालूम होगा कि लोक-युद्ध के तीसरे स्मृतिदिवस (1940 ई.) तक कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में लड़नेवाले सैनिकों की संख्या 40 हजार से 5 लाख हो गई, और पार्टी सम्बरो की संख्या 48 हजार से 8 लाख पर पहुँच गई। उनसे लड़ने के लिए जापान की आधी सेनाएँ फँस गई। दुश्मन से 150 जिले छीन लिये गये, मुक्त इलाकों तथा गोरिल्ला-इलाके मे 10 करोड़ आदमी रहते थे।

जापान ने 1931 ई. में मंचूरिया को लेकर फिर जेहोल, चहार, आदि प्रदेशों की ओर हाथ फैलाया। अभी सारे चीन पर हाथ साफ करने की उसको हिम्मत नही थी। वह समझता था, पश्चिमी साम्राज्यवादी हमे अकेले चीन को निगलने नही देगे और दखलदाजी जरूर करेगे। यह निश्चय ही था कि पश्चिमी देश यदि रूस से मिलकर पूर्व और पश्चिम के फासिस्तो को रोकना चाहते, तो उसमे सफल हो सकते थे। जब जापान को उनकी कमजोरियो का पता लग गया, तो उसने चीन को निगल लेने का निश्चय किया।

(3) पेकिंग पर अधिकार (1937 ई.)– 7 जुलाई, 1937 को जापानियो ने पेकिंग के दक्षिण में अवस्थित ल्यू को चाउ (मार्को पोलो पुल) पर हमला कर दिया। जापान को युद्धघोषणा की न कोई जरूरत थी, न युद्ध के कारण बतलाने की। उसके लिए, यह पर्याप्त था कि मुल्क फरोश कायर च्याग काइ-शेक के किये-कराये

कुछ नहीं होगा, और हमारा आक्रमण किसी तरह भी असफल नहीं होगा। चीनी कम्युनिस्टों की कार्रवाइयों को देखकर वह समझने लगा था कि चीन की रक्षा के लिए एक दूसरी शक्ति पैदा हो रही है, जिसके सफल हो जाने पर मुख्य चीन के उत्तरी और दक्षिणी भूभाग पर अधिकार नहीं हो सकेगा। च्यांग काइ-शेक की सरकारी राजधानी नानकिंग थी, जो पेकिंग से दक्षिण काफी दूर थी। जापान ने मचूरिया में अपनी कठपुतली सरकार (मचू-कुओ) तैयार कर ली थी, जहाँ पुराने मन्चू-सम्राट फूइ के दरबार में चीन के बहुत-से गद्दार जा पहुँचे थे। पेकिंग किस तरह अपने को बचा सकती थी ? लेकिन, जापान की शक्तिशाली सेना के सामने पेकिंग के नागरिकों ने च्यांग की तरह कायरता नहीं दिखलाई। चीनी सैनिक वहाँ लड़े, फिर वह और पेकिंग के विद्यार्थी गोरिल्ला बन गये। 7 जुलाई से यदि जापान की यह यात्रा शुरू हुई, तो उसके साथ ही अब वस्तुतः जनता के सारे भागो मे देश-उद्धार की तीव्र भावना भी पैदा हो गई।

पेकिंग के पतन के दूसरे दिन एक बुढ़िया भाजी की टोकरी ले नगर-द्वार से भीतर घुसी। उसने शत्रु की गतिविधि का अच्छी तरह पता लगाया। फिर एक गन्दी गली मे छिपकर हथियार खरीदे और टोकरी मे रखकर दूसरे दरवाजे से पहाड़ी का रास्ता लिया जहाँ उसने गोरिल्लो की एक टुकड़ी तैयार की। धीरे-धीरे गोरिल्लों की एक पलटन बन गई, जिसने जापानियो के खिलाफ हथियार उठा लिया। गोरिल्ला-माता चाउ अपनी बहादुरी के लिए सारे चीन में प्रसिद्ध हो गई। चाउ-माता के पुत्रो की सख्या एक साल बीतते बीतते एक हजार हो गई, जिन्होंने 7वी जुलाई, 1938 को फिर ल्यु को चाउ पुल पर चीन का राष्ट्रीय झडा गाड़कर जापानियो को बतला दिया कि चीन की भूमि वीरहीन नही है। 29 जुलाई (1937) को जापानियो ने जब नगर पर हमला किया था, तो नागरिक दल के 600 वीरों ने छह घंटे तक उनका अकेले मुकाबला किया। च्यांग काइ-शेक का देशद्रोही जेनरल चंग चे जापानियों से मिल गया, लेकिन उसकी सेना ने उसका अनुसरण करने से साफ इन्कार कर दिया। यह सेना जाकर राष्ट्रीय सेना में मिल गई। जापानी जब नानकाइ के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय को जलाने आये, तो विद्यार्थियो ने अपने अध्यापकों के साथ हाथ में सिर लेकर उनसे लड़ाई की। फिर जो अध्यापक और विद्यार्थी बचे, वह विद्यालय की चीजों को लेकर लाल राजधानी येनान को भाग गये।

6. दार्शनिक और विचारक माओ

साम्यवाद के अमर विचारक और पथ-प्रदर्शक लेनिन और स्तालिन जानते थे, कि पूर्व के जगने मे बहुत देर नहीं होगी। 1918 ई. मे स्तालिन ने 'अक्तूबर की क्रान्ति और जातियो का सवाल' नामक अपने लेख मे लिखा था :

"अक्तूबर-क्रान्ति का विश्व के लिए सबसे बड़ा महत्त्व इस बात मे है कि :

(1) इसने जातियों के सवाल के दायरे को बढ़ा दिया, यूरोप में जातीय उत्पीड़न के खिलाफ सघर्ष की एक समस्या विषय को बदलकर, उसे उत्पीड़ित जातियों, उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों की साम्राज्यवाद से मुक्ति की आम समस्या बना दिया।

(2) इसने इस मुक्ति की व्यापक सम्भावनाओं और असली रास्तो को खोल दिया, एव पश्चिम और पूर्व की उत्पीड़ित जातियों की मुक्ति के कामों को, उन्हे साम्राज्यवाद के खिलाफ विजय सघर्ष की आम धारा में खीचकर, आसान बना दिया है।

(3) इस प्रकार इसने समाजवादी पश्चिम और गुलामी मे जकड़े हुए पूर्व के बीच नाता कायम करके विश्व साम्राज्यवाद के खिलाफ एक नया क्रान्तिकारी मोर्चा कायम कर दिया—ऐसा मोर्चा जो पश्चिम के सर्वहारा-वर्ग से लेकर रूसी क्रान्ति के जरिये पूर्व की उत्पीड़ित जातियो तक फैला हुआ है।"

स्तालिन ने चीनी-क्रान्ति की सम्भावनाओं को पहले ही से अच्छी तरह समझ लिया था, जब कि उन्होंने कहा था :

"पहले, अठारहवी और उन्नीसवी सदियों के दौरान में, क्रान्तियाँ आम तौर से लोगों के विद्रोह के साथ शुरू होती थी जिनका ज्यादातर हिस्सा निहत्था या कमजोर तौर से हथियारबन्द होता था और पुरानी व्यवस्था

की सेना से उनकी टक्कर होती थी। इस सेना में वे फूट डालने या कम-से-कम आंशिक रूप में उसे अपनी ओर करने की कोशिश करते थे। उस जमाने में क्रान्तिकारी विस्फोटो का यही विशेष रूप होता था। 1905 में रूस में हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ था। चीन मे घटनाएँ दूसरे रूप मे घटीं। चीन मे जनता निहत्थी नहीं थी, बल्कि अपनी क्रान्तिकारी सेना के रूप मे सशस्त्र क्रान्ति, सशस्त्र प्रतिक्रान्ति के खिलाफ लोहा ले रही है, यह चीनी क्रान्ति की एक विशेषता और उसका एक गुण है। चीनी क्रान्तिकारी सेना का खास महत्त्व भी इसी बात में है।"

इन संभावनाओ को अब माओ के नेतृत्व मे साकार रूप धारण करने का अवसर आया था। माओ सर्वतोमुखीन प्रतिभा के धनी हैं, इसे हम अब तक अच्छी तरह जान गये हैं। उन्हे अपने कार्यों और भाषणों द्वारा ही क्रान्ति का पथ-प्रदर्शन करना नही था, बल्कि इसके लिए उन्हें अपनी शक्तिशाली लेखनी का भी उपयोग करना पड़ा। उन्होंने जहाँ युद्ध-विज्ञान पर अपनी कलम उठाई, वहाँ मार्क्सवाद के दार्शनिक सिद्धान्तो की भी क्रियात्मक रूप में व्याख्या की, और चीन के क्रान्तिकारियों के सामने भावी प्रोग्राम रक्खा। 1937 और 1938 ई. मे उन्होंने कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तके लिखी, जिनका थोड़ा सा परिचय यहाँ दे देना आवश्यक होगा।

(1) **'व्यवहार'**–इस पुस्तिका को माओ ने जुलाई, 1937 में लिखा था, और इसमे वह एक व्यवहारवाद दार्शनिक के रूप में हमारे सामने आते है। उन्होंने प्रमाण (प्रमा, ज्ञान) की जो विवेचना की है, उसमें हमें उसी शैली की झलक मिलती है, जिसमें भारत के प्रमाणशास्त्रियो ने अपने गम्भीर विचारो को रक्खा है। वह कहते है :

"प्राग मार्क्सीय भौतिकवाद ने ज्ञान की समस्या को मनुष्य के सामाजिक स्वरूप से अलग करके परीक्षा करनी चाही, उसके ऐतिहासिक विकास से अलग करके परीक्षा करनी चाही, इसलिए वह यह नही समझ सका कि ज्ञान (प्रमाण) का आधार सामाजिक व्यवहार* है, अर्थात ज्ञान निर्भर करता है उत्पादन और वर्ग-संघर्ष पर।"

"मार्क्सवादी मनुष्य के उत्पादन-सम्बन्धी क्रियाकलाप को अत्यन्त मौलिक व्यावहारिक क्रियाकलाप के तौर पर, दूसरे सभी क्रियाकलापो पर मुख्यतः निर्भर करते मनुष्य प्रकृति के प्राकट्य (बाह्य रूप), प्रकृति की विशेषताओं, प्रकृति के कानूनो एवं मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्ध को क्रमशः समझता है और उत्पादन-सम्बन्धी क्रियाकलापों द्वारा मनुष्य और मनुष्य के कतिपय पारस्परिक सम्बन्धों के बारे मे भिन्न भिन्न मात्रा मे ज्ञान प्राप्त करता है। उत्पादन-सम्बन्धी क्रियाकलाप से अलग रहकर इस प्रकार का कोई भी ज्ञान प्राप्त नही किया जा सकता। एक ओर वर्गहीन समाज में समाज के व्यक्ति के तौर पर प्रत्येक आदमी अपने प्रयत्न मे दूसरे व्यक्तियो से सहयोग करता, और उत्पादन के कुछ सम्बन्धों का निर्माण करता है, तथा मनुष्य के भौतिक जीवन की समस्या को हल करने के लिए उत्पादन सम्बन्धी क्रियाकलापो मे लग जाता है। दूसरी ओर, वर्गयुक्त समाज के भिन्न-भिन्न प्रकारो में, दूसरे सभी वर्गो के समाज के भी व्यक्ति भिन्न भिन्न तरीके से बनते है। मनुष्य के भौतिक जीवन की समस्या को हल करने के लिए उत्पादन सम्बन्धी क्रियाकलाप मे वह लगते है और उत्पादन के सम्बन्ध मे कुछ सम्बन्ध कायम करते है। यह प्रारंभिक स्रोत है, जिससे कि मानव ज्ञान (प्रमा) विकसित होता है।

"मनुष्य का सामाजिक व्यवहार उत्पादन सम्बन्धी क्रियाकलाप तक ही सीमित नही है। क्रियाकलाप के दूसरे भी कितने ही रूप है, जैसे–वर्ग संघर्ष, राजनीतिक जीवन, विज्ञान और कला-सम्बन्धी क्रियाकलाप–संक्षेप मे मनुष्य अपने समाज के वास्तविक जीवन के सभी क्षेत्रों मे भाग लेता है। इस प्रकार, मनुष्य भौतिक जीवन द्वारा वस्तुओं के जानने के अतिरिक्त राजनीतिक जीवन और सांस्कृतिक जीवन–जो कि भौतिक जीवन से घनिष्ठतया सम्बद्ध है–के द्वारा भिन्न-भिन्न मात्रा मे मनुष्य और मनुष्य के बीच के भिन्न-भिन्न आकार मनुष्य के ज्ञान के विकास पर बहुत व्यापक प्रभाव डालते हैं। वर्ग-समाज मे हरेक व्यक्ति एक विशेष वर्ग की स्थिति के भीतर रहता है और विचार की हरेक शैली पर उसके वर्ग की मुहर की छाप अवश्य लगी रहती है।"

'प्रामाण्य व्यवहारेण' के कहने का यह मतलब नही है कि 7वी सदी के आरम्भ मे धर्मकीर्ति को ज्ञानस्रोत का ठीक-ठीक पता लग गया। उससे इतना ही मालूम होता है कि अँधेरे में टटोलते-टटोलते उनका हाथ जबर्दस्त

* यहाँ यह उल्लेखनीय बात है कि सातवीं सदी के पूर्वार्ध के महान् प्रमाणशास्त्री धर्मकीर्ति ने कहा, "प्रामाण्य व्यवहारेण।"

रत्न पर जा पड़ा, लेकिन अभी बाकी परिस्थितियाँ यथा धर्मकीर्ति की अपनी मानसिक तैयारी इतनी नहीं थी कि उस रत्न की वह पूरी तौर से परख कर सकते।

दार्शनिक माओ ने अपने प्रमाण-सम्बन्धी विचारो को और भी स्पष्ट करते हुए यहाँ कहा है :

"मार्क्सवादी मानते हैं कि मनुष्य का, केवलमात्र मनुष्य का, सामाजिक व्यवहार ही बाह्य जगत्-सम्बन्धी उसके ज्ञान की सच्चाई की कसौटी है। वस्तुतः मनुष्य के ज्ञान की प्रामाणिकता केवल तभी सिद्ध होती है, जबकि सामाजिक व्यवहार (भौतिक उत्पादन, वर्ग-सम्बन्ध तथा वैज्ञानिक तजर्बे) के दौरान मे अपने विचारों में जिस परिणाम की वह संभावना रखता था, उसे प्राप्त करता है। यदि मनुष्य अपने काम में सफलता प्राप्त करना चाहता है, अर्थात् अपेक्षित परिणामो को प्राप्त करना चाहता है, तो उसे अपने विचारो को बाह्य जगत् के कानूनों के अनुकूल बनाना होगा। अगर वह अनुकूल नही है, तो वह व्यवहार मे सफल नही होगा। असफल होने पर वह अपनी असफलता से सबक सीखेगा, अपने विचारों मे इस प्रकार सशोधन करेगा कि वह बाह्य जगत् के कानूनो के अनुसार हो, और इस प्रकार वह अपनी असफलता को सफलता में परिणत कर सके। ... द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के ज्ञान का सिद्धान्त (प्रमाणशास्त्र) व्यवहार को प्रथम स्थान देता है और मानता है कि मानव-ज्ञान व्यवहार में जरा भी अलग नही किया जा सकता। वह उन सभी गलत सिद्धान्तों (अपसिद्धान्तों) का प्रत्याख्यान करता है, जो कि व्यवहार के महत्त्व से इन्कार करते अथवा व्यवहार से ज्ञान को पृथक् करने है। जैसा कि लेनिन ने कहा है : "व्यवहार (सैद्धान्तिक) ज्ञान से ऊँचा है, क्योंकि इसमे केवल विश्वजनीनता का ही गुण नही मौजूद है, बल्कि यह वास्तविकता के गुण को भी अपने मे रखता है।" मार्क्सवादी दर्शन—द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद—के दो सबसे बढ़कर स्वरूप है : एक है उसका वर्ग-सम्बन्धी स्वभाव, जो कि द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद सर्वहारा के पक्ष में अपने को खुलकर घोषित करता है, और दूसरा है उसका व्यवहार पर सिद्धान्त के निर्भर होने पर जोर देना—व्यवहार सिद्धान्त का आधार है, सिद्धान्त व्यवहार की सेवा करता है। किसी का ज्ञान या सिद्धान्त सच्चा है या नही, इसका निर्णय करते वक्त आदमी को उसके सम्बन्ध में अपने भीतर अनुभूत होनेवाली मानसिक भावनाओ पर निर्भर नही रहना चाहिए, बल्कि यह देखना चाहिए, कि वस्तुगत्या सामाजिक व्यवहार में उसका क्या फल है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के ज्ञान-सिद्धान्त (प्रमाणशास्त्र) म सर्वप्रथम और मौलिक दृष्टिकोण है व्यवहार का दृष्टिकोण।"

आगे चलकर फिर इसी बात की ओर स्पष्ट व्याख्या करते हुए माओ कहते है :

"सभी सच्चे ज्ञान (प्रमा) का स्रोत प्रत्यक्ष अनुभव है। लेकिन, मनुष्य हरेक चीज का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं कर सकता। वस्तुतः, हमारा अधिकाश ज्ञान अप्रत्यक्षः अनुभूत वस्तु है, प्राचीन काल और दूसरे देशो-सम्बन्धी हमारा सारा ज्ञान इसी तरह का है। मनुष्य का ज्ञान निम्न दो भागों को छोड़कर और कुछ नहीं। प्रत्यक्ष अनुभव का ज्ञान और अप्रत्यक्ष अनुभव का ज्ञान*। जो मेरे लिए अप्रत्यक्ष अनुभव है, हो सकता है वह दूसरे के लिए प्रत्यक्ष अनुभव से पृथक नही किया जा सकता हो। सभी ज्ञानो का स्रोत है मनुष्य की भौतिक इन्द्रियो द्वारा बाह्य दुनिया का प्रत्यक्षीकरण। यदि कोई आदमी इस तरह के प्रत्यक्षीकरण से इन्कार करता है, तो वह प्रत्यक्ष अनुभव से इन्कार करता है, और वास्तविक स्थितियो के परिवर्तन के व्यवहार मे वैयक्तिक भाग लेने से इन्कार करता है। ऐसी हालत मे वह भौतिकवादी नही है।" चीनियो में पुरानी कहावत है : 'बाघ की माँद में घुसे बिना कैसे कोई बाघ-बच्चो को प्राप्त कर सकता है ?' यह कहावत मनुष्य के व्यवहार तथा ज्ञान-सिद्धान्त के बारे मे सच उतरती है। व्यवहार से पृथक् ज्ञान (प्रामाण्य) सम्भव नही है।"

ज्ञान की प्रक्रिया के बारे में कहते हुए आगे माओ लिखते हैं :

"ज्ञान की प्रक्रिया में पहला कदम है बाह्य जगत् की चीजों के सम्पर्क (सन्निकर्ष) मे आना। यह प्रत्यक्ष

* यहाँ यह भी उल्लेखनीय बात है कि दिङ्नाग आदि बौद्धप्रमाण-शास्त्रियों ने प्रमाण के इन्हीं दो रूपों को प्रत्यक्ष और अनुमान का नाम देते हुए ज्ञान के स्रोत केवल दो ही बतलाये हैं। चीनी भाषा में दिङ्नाग और वसुबन्धु के प्रमाणशास्त्रो के अनुवाद है। हो सकता है उन्हीं के कारण माओ की व्याख्या मे यहाँ इतनी समानता दीख पड रही है।

की स्थिति है। दूसरा कदम है, प्रत्यक्ष के आँकडों को सश्लेषित करना, उन्हें फिर से क्रमबद्ध और पुनर्निर्मित करना, यह प्रत्यक्षीकरण निर्णय (उपनय) और अनुमान की मंजिल से सम्बन्ध रखता है। जब प्रत्यक्ष द्वारा प्राप्त सामग्रियाँ अत्यन्त समृद्ध (अर्थात अपूर्ण या खण्ड खण्ड नही) हैं और वह वास्तविकता (अर्थात् अकाल्पनिकता) के अनुसार हैं, केवल तभी ऐसी सामग्रियों के आधार पर हम निर्भ्रान्त विचार निर्मित कर सकते है और ठीक तरह से विचार कर सकते हैं, बुद्धि का प्रयोग कर सकते हैं।"

बौद्धिक ज्ञान के बारे मे वह कहते है :

"बौद्धिक ज्ञान प्रत्यक्षीकृत ज्ञान पर निर्भर करता है और प्रत्यक्षीकृत ज्ञान को अभी बौद्धिक ज्ञान के रूप मे विकसित करना बाकी रहता है : यह है द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी ज्ञान सिद्धान्त।"

मार्क्सवादी दर्शन को केवल दिमागी शौकीनी अथवा 'स्वान्तः सुखाय' मानकर उसे स्वाध्याय करके खूँटी पर रखने की बात न मानते हुए, उसका प्रयोग करते हुए माओ लिखते हे :

"अक्सर देखा जाता है कि विचार वास्तविक घटनाओं से पिछड जाते है। यह इसीलिए कि मनुष्य का ज्ञान बहुतेरी सामाजिक स्थितियों द्वारा सीमित है। हम क्रान्तिकारियों की पक्ति में रूढिवादियों का विरोध करते हैं, जिनके विचार बदलती हुई वास्तविक परिस्थितियों के साथ आगे नही बढ पाते और अपने को वह ऐतिहासिक तौर से दक्षिणपथी अवसरवादी प्रकट करते है। ये लोग यह नही देख पाते कि विरोध का सघर्ष वस्तुगत प्रक्रिया को आगे ले जा चुका है, जबकि हमारा ज्ञान पुरानी जगह पर ही रुका हुआ है। सभी रूढिवादियों के विचारो मे यही विशेषता देखी जाती है। उनके विचार सामाजिक व्यवहार से पृथक्कृत हैं, और वह समाज के रथ के मुख्य स्थान पर सारथी बनने के लायक नही है, वह केवल रथ के पीछे पीछे और उसके बहुत तेज चलने पर भुनभुनाते हुए घसिट सकते है अथवा उसे पीछे खीचने या जबर्दस्ती पीछे लौटाने का प्रयत्न कर सकते है।

"हम 'वाम' पक्ष की खयाली बातों का भी विरोध करते है। वस्तुगत प्रक्रिया के विकास की एक निश्चित स्थिति से उनके विचार आगे हे : उनमे से कुछ अपनी कल्पनाओं को सत्य समझते है, दूसरे इस समय एक ऐसे आदर्श को कार्यरूप मे परिणत करने मे जोर से प्रयत्नशील है, जो कि भविष्य मे ही कार्यरूप मे परिणत किया जा सकता है। वह उस समय के बहुसख्यक लोगो के व्यवहार से अपने को अलग रख सामने उपस्थित वास्तविकता से अपने को अलग करते अपनी कार्रवाइया मे अपने को दुस्साहसी प्रकट करते है।"

माओ ने हरेक सत्य सिद्धान्त के मुख्य आधार 'व्यवहार' के बारे मे अपने विचारों को इस सारगर्भित किन्तु सक्षिप्त ग्रथ मे उक्त प्रकार से प्रकट किया है।

(2) 'विरोध'–अगस्त, 1937 मे दार्शनिक माओ चे-तुग ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दर्शन के एक मुख्य तत्त्व 'विरोध' पर अपने विचार प्रकट किये हे। वेदान्तियो, ईश्वरवादियो और दूसरे उन जैसे दार्शनिकों ने विश्व के निर्माण मे विश्व से पृथक एक दूसरी शक्ति का होना आवश्यक माना है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद द्वन्द्वो विरोधियों के समागम का इस सारे निर्माण का कारण मानकर विषय मे 'विरोध' (द्वन्द्व) के नाम से एक गम्भीर किन्तु सरल पुस्तक लिखी है। वह कहते है

"वस्तुओ मे विरोध का नियम–अर्थात् विरोधियो की एकता का नियम–भौतिकवादी द्वन्द्ववाद का अत्यन्त मौलिक नियम हे। लेनिन ने कहा हे "अपने मुख्य अर्थ मे द्वन्द्ववाद वस्तुओ के मुख्य निजी सार के भीतर विरोध का अध्ययन है।" लेनिन ने अक्सर इस नियम को द्वन्द्ववाद का सार कहा हे, उन्होंने इसे द्वन्द्ववाद की गरी भी कहा है, इसलिए इस नियम का अध्ययन करते हुए विस्तृत विषयो, दर्शन के बहुसख्यक समस्याओ को हम छुए बिना नही रह सकते। अगर हम इन सभी समस्याओं को स्पष्ट कर सके, तो भौतिकवादी द्वन्द्ववाद के मूल ज्ञान को समझ सकेंगे। ये समस्याएँ है : विश्व-सम्बन्धी दो दृष्टिकोण, विरोध की विश्वजनीनता, विरोध की विशेषता, मुख्य विरोध और विरोध का मुख्य स्वरूप, विरोध के रूपों को पहचानना और सघर्ष, विरोध मे द्वन्द्व का भाग।" इसके बाद माओ इनमे से एक-एक को लेकर उनका विवेचन करते हैं, जिसे सक्षेप में भी यहाँ देना कठिन है।

वह आगे बतलाते हैं :

"अतिभौतिक विश्व-दृष्टिकोण के विरुद्ध भौतिकवादी द्वन्द्वात्मक विश्व-दृष्टिकोण वस्तुओं के विकास के अध्ययन का उनके भीतर से पक्षपाती है, एक वस्तु का दूसरी वस्तुओ के सम्बन्ध से अध्ययन करने का पक्षपाती है। अर्थात्—वस्तुओ के विकास को उनकी अपनी आवश्यक स्वयगति समझनी चाहिए, और कि वस्तु को, अपनी गति और उसके आसपास की वस्तुओ को परस्पर-सम्बद्ध और एक-दूसरे पर काम करनेवाली समझना चाहिए। वस्तुओं के विकास का मूल कारण उनके बाहर नही, बल्कि उनके आन्तरिक विरोधो में निहित है। वस्तुओं की गति और विकास इसीलिए होता है, उन सबके भीतर इस तरह के विरोध मौजूद हैं। वस्तु के भीतर वह विरोध उसके विकास का मूल कारण है, जब कि एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ सम्बन्ध और उसके द्वारा परस्पर-प्रभावित करना उसके विकास के गौण कारण है। इस प्रकार भौतिकवादी द्वन्द्ववाद बड़े जोर के साथ बाह्य कारणों के सिद्धान्त या (बाहर से) सचालन के सिद्धान्त का प्रत्याख्यान करता है, जिसे कि अतिभौतिक, यांत्रिक भौतिकवाद और भद्दा विकासवाद प्रतिपादित करता है। यह स्पष्ट है कि शुद्ध बाह्य कारण वस्तु में केवल यांत्रिक गति कर सकते हैं, अर्थात् वस्तु को वह आकार और मात्रा मे परिवर्तित कर सकते हैं, लेकिन वह इस बात की व्याख्या नही कर सकते, क्यो चीजें गुणात्मक रूप में हजारो प्रकार से भिन्न भिन्न है, और क्या वस्तुएँ एक दूसरे के रूप में परिवर्तित होती है। वस्तुत., किसी बाह्य शक्ति द्वारा चालित वस्तुओ की यांत्रिक गति भी उनके आन्तरिक विरोधो द्वारा ही उपस्थित होती है। वनस्पतियों और प्राणियों मे प्ररोह (वृद्धि) और उनका परिमाणात्मक (मात्रा मे) विकास मुख्यत. उनके आन्तरिक विरोधों द्वारा ही होता है। इसी प्रकार सामाजिक विकास मुख्यतः बाह्य नही, बल्कि आन्तरिक कारणों से होता है। बहुत से देश करीब-करीब एक ही तरह के भौगोलिक और जलवायुवाली स्थितियों में विद्यमान हैं, तो भी उनमें भेद तथा विकास की असमानता अत्यधिक देखी जाती है। एक ही देश में अपने भीतर जबर्दस्त सामाजिक परिवर्तन होते है, जब कि उसके भौगोलिक और जलवायु सम्बन्धी स्थिति में कोई परिवर्तन नही हुआ है। साम्राज्यवादी रूस समाजवादी सोवियत सघ मे परिवर्तित हो गया और सामन्तवादी" जापान साम्राज्यवादी जापान मे बदल गया, जब कि इन दोनो देशो की भौगोलिक और जलवायु सम्बन्धी स्थिति में कोई परिवर्तन नही हुआ। दीर्घकाल से सामन्तवाद के नीचे कराहते चीन मे पिछले सौ वर्षो म बहुत स परिवर्तन हुए, और अब वह स्वतन्त्र और मुक्त नवीन चीन की दिशा मे बदल रहा है, तो भी उसके भूगोल और जलवायु में परिवर्तन नही हुआ।" भौतिकवादी द्वन्द्वात्मक दृष्टिकोण (दर्शन) के अनुसार प्रकृति मे परिवर्तन होता है, मुख्यत. प्रकृति के आन्तरिक विरोधो के विकास के कारण ही। सामाजिक परिवर्तन मुख्यतः समाज के आन्तरिक विरोधो अर्थात् उत्पादक शक्तियों और उत्पादन के सम्बन्धों के विरोध, वर्गो के बीच के विरोध और प्राचीन तथा नवीन के बीच के विरोध—के कारण होते है। क्या भौतिकवादी द्वन्द्ववाद बाह्य कारणों को कोई महत्त्व नही देता ? नही, यह बात नही है। भौतिकवादी द्वन्द्ववाद बाह्य कारणो को परिवर्तन का हेतु, परिस्थिति मानता है और आन्तरिक कारणो को परिवर्तन का आधार। हेतु, परिस्थिति, बाह्य कारण आन्तरिक कारणो द्वारा कार्यकारी होते है। एक अनुकूल तापमान मे अंडा चूजे के रूप में परिवर्तित होता है, लेकिन ऐसा कोई तापमान नही है, जो कि पत्थर को चूजे के रूप मे परिणत कर दे, क्योंकि दोनो वस्तुओ के मूल भिन्न है।"

चीन के अपने विचार का खूब अवगाहन करनेवाले माओ जिस तरह मार्क्सवाद को चीनी जीवन के हरेक भाग में इस्तेमाल करने मे दक्ष है, उसी तरह वह चीनी की दार्शनिक परम्परा का भी विश्लेषण करना जानते है। उन्होंने आगे कहा है : •

"सुन् जू ने सैनिक विज्ञान की विवेचना करते हुए कहा है : 'जानो शत्रु को और जानो अपने को, तब बिना सर्वनाश के तुम सौ युद्धों को लड सकते हो।' यहाँ वह युद्ध के दो पक्ष के बारे मे कह रहा था। थाग-वंश के विचारक वेइ चेंग ने कहा है . 'दोनो का सुनना तुम्हें उद्‌बुद्ध बनाता है, और केवल एक पक्ष को सुनना तुम्हें दुर्बुद्ध बनाता है।'·· तो भी हमारे साथी अक्सर समस्याओं को देखते हुए एकांगी दृष्टि की तरफ झुकते है।···"

उपसंहार में माओ लिखते हैं :

"वस्तुओं में विरोध का नियम, विरोधि-समागम का नियम, प्रकृति और समाज का आधारभूत नियम है, और इसलिए वह विचार का भी आधारभूत नियम है, जो अतिभौतिक विश्व-दृष्टिकोण से उलटा है। इसका अर्थ है मानवज्ञान के इतिहास में एक महान् क्रान्ति। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के दृष्टिकोण के अनुसार विषयगत वस्तुओं और भावगत विचार की सभी प्रक्रियाओं में विरोध मौजूद है, वह आदि से अन्त तक सभी प्रक्रियाओं में जारी रहता है—अर्थात् विरोध विश्वजनीन और परमार्थ तत्त्व है। विरोधी वस्तुएँ और उनके प्रत्येक रूपों के क्रमशः अपने विशेष आकार होते हैं—विरोध में विशेषता और सापेक्षता अन्तर्हित है। विरोधी वस्तुएँ खास स्थितियों में समानता रखती हैं, और इसीलिए एक चीज में साथ-साथ वर्तमान रह सकती हैं, एवं प्रत्येक वस्तु अपने विरोधी के रूप में अपने को रूपान्तरित कर सकती है—यह भी विरोध की विशेषता और सापेक्षता है। लेकिन, विरोध के भीतर संघर्ष निरन्तर मौजूद रहता है। चाहे उस समय, जब कि विरोधी साथ वर्तमान हों या अथवा एक-दूसरे के रूप में अपने को रूपान्तरित कर रहे हों, विरोध मौजूद रहता है। संघर्ष उसी समय विशेष तौर से आविर्भूत होता है, जब कि विरोधी वस्तुएँ अपने को एक दूसरे के रूप में रूपान्तरित करती हैं, यह फिर विरोध की विश्वजनीनता (सामान्य) और परमार्थता है। विरोध की विशेषता और सापेक्षता का अध्ययन करते समय हमें विरोध में क्या मुख्य है और क्या अमुख्य (गौण) तथा दोनों के बीच के विधेय तथा विरोधी पहलुओं का भी ध्यान रखना चाहिए। विरोध की विश्वजनीनता (सामान्य) और उसके भीतर के संघर्ष का अध्ययन करते समय हमें विरोध के भीतर संघर्ष के भिन्न-भिन्न रूपों के बीच के भेद का ध्यान रखना चाहिए, नहीं तो हम भूल करेंगे। यदि अध्ययन के बाद हमने वस्तुतः उपरोक्त सारभूत बातों को समझ लिया, तो हम उन मतवादी विचारों को चकनाचूर कर देंगे, जोकि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आधारभूत सिद्धान्तों का प्रत्याख्यान करते हमारे क्रान्तिकारी लक्ष्य में बाधा पहुँचानेवाले हैं। साथ ही, यह हमारे अनुभवी साथियों को अपने अनुभवों को इस तरह व्यवस्थित करने में सहायता करेगा, जिससे कि मुख्य का स्वरूप उनको मालूम हो जायगा, और वह प्रयोगवाद* की भूलों को दोहराने से बाज आएँगे। विरोध के नियम के अध्ययन से हम इन थोड़े-से सीधे-सादे निष्कर्षों पर पहुँचते हैं।"

(4) 'लम्बी लड़ाई' (1938 ई.)—1938 के मई महीने में माओ ने अपनी/इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक को लिखकर चीन और जापान की तत्कालीन राजनीतिक और सैनिक स्थिति का विश्लेषण करके यह बतलाया कि हमारी लड़ाई लम्बी होगी, लेकिन चीन की विजय निश्चित है। इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कोई छोटा रास्ता नहीं है। यह लड़ाई तीन रूपों और कालों में होगी : (1) पहले काल में जापान चीन के सारे शहरों पर अधिकार कर लेगा, क्योंकि दुश्मन हमसे ज्यादा शक्तिशाली है। इस समय हमें लगातार पीछे हटना पड़ेगा। लेकिन, चीन हमारी भूमि है, हमारी शक्ति का अटूट भण्डार, हमारी जनता हमारे साथ है, दुश्मन दूसरे की भूमि में है और चीनी जनता उसके प्रति पूरी तौर से घृणा रखती है। जापान की यह कमजोरी है। (2) इस स्थिति से लाभ उठाकर हम लोग गोरिल्ला युद्ध करते हुए दूसरे काल में दाखिल होंगे। मातृभूमि के लिए सिर से कफन बाँधे हुए गोरिल्लों के आक्रमण से दुश्मन का आगे बढ़ना रुक जायगा। कभी वह जीतेगा और कभी हम जीतेंगे। युद्धों का कोई निर्णय न होने पर भी दिन-दिन हमारी शक्ति बढ़ती जायगी। (3) अन्त में दुश्मन से हम अधिक शक्तिशाली हो जायँगे और इस प्रकार तीसरा तथा अन्तिम काल शुरू होगा। उस समय हम अपनी बढ़ी हुई शक्ति से दुश्मन पर प्रत्याक्रमण करेंगे और उसे चीन की सीमा से बाहर निकाल देंगे। यह लोक-युद्ध है, लोक-युद्ध की व्यूह-रचना ही हमें विजय प्रदान करेगी।

माओ की इस गम्भीर पुस्तक ने पार्टी के बाहरवालों को भी उनके विचारों पर गम्भीरतापूर्वक सोचने के लिए बाध्य किया। इसकी विश्लेषण-शैली बड़ी तीक्ष्ण और ऊँचे दर्जे की थी। पुस्तक के लिखे जाते समय चीन में भारी निराशा फैली हुई थी। कुछ लोग जुआरी की तरह अन्धे होकर सर्वस्व दाँव पर रखकर तुरन्त

---

* Empirism

भारी प्रत्याक्रमण की बात कर रहे थे। च्याग चुपचाप अमेरिका, इग्लैंड और रूस के युद्ध में पड़ने की प्रतीक्षा कर रहा था। यह पुस्तक एक तत्त्वदर्शी की दूरदर्शिता का प्रमाण थी, उसके पढते समय यह नहीं मालूम होता, कि हम कोई भविष्य की बात पढ रहे हैं, बल्कि जान पडता है कि हम एक बीती हुई लड़ाई का इतिहास पढ रहे है। इस पुस्तक ने शत्रुओं-जापानी रणनीतिज्ञो-को भी यह मानने के लिए मजबूर किया कि माओ चे तुग रणविद्या के महान् पडित है।

(5) 'नया दौर' (1938 ई)-उसी साल (1938 के अक्तूबर मे) माओ की यह पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तक मे जापान-विरोधी युद्ध मे कुओमिन्ताग के सामने सहयोग के तरीको के तीन सुझाव रक्खे थे : (1) कम्युनिस्ट कुओमिन्ताग मे सम्मिलित हो जायें, (2) यदि यह सम्भव न हो, तो दोनो की सम्मिलित कमेटियाँ बना दी जायें, (3) यदि यह भी न हो सके, तो दोनो के सम्मिलित सम्मेलन जल्द-जल्द होते रहे, जिसमे सब बाते तय कर ली जाया करे। माओ के इन सुझावो का कोई प्रभाव नही पड़ा, कुओमिन्ताग और च्याग दिन-पर-दिन प्रतिक्रियावादी बनते गये-च्याग ने बाकी सभी दलों और पार्टियो को गैर कानूनी बना दिया।

7. द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले

द्वितीय विश्वयुद्ध के लक्षण चारो ओर दिखाई पड रहे थे। जापान उसका आरम्भ सात वर्ष पहले 1931 मे मचूरिया पर हाथ मारकर कर चुका था। इताली ने अफ्रीका मे अबीसीनिया को उदरसात् करके उसी ओर कदम बढाया। फिर हिटलरी जर्मनी ने चेकोस्लोवाकिया को दबोचा। यदि विश्वयुद्ध कुछ दिनो और रुका रहा तो यह पश्चिमी साम्राज्यवादियो की दब्बू नीति तथा उनके रूस के प्रति अपार द्वेष के कारण ही। जिस तरह चीन के भीतर च्याग कम्युनिस्ट विरोध मे अन्ध हो बाहरी शत्रु जापान से लडने की जगह उधर आँख मूँदे रह अपना सब कुछ खो रहा था, उसी तरह पश्चिमी साम्राज्यवादी भी फासिस्त इताली और जर्मनी को अपनी दब्बू नीति के फलस्वरूप बढते हुए देखते भी रूस से मिलकर इस नई जगबाज शक्ति से लडने के लिए तैयार नही थे।

(1) केन्द्रीय कमेटी विस्तारित अधिवेशन (1938 ई)-इस साल के अक्तूबर महीने मे छठी पार्टी-काग्रेस मे निर्वाचित केन्द्रीय समिति का विस्तारित खुला अधिवेशन येनान् मे हुआ। इस अधिवेशन ने माओ चे-तुग के नेतृत्व मे राजनीतिक ब्यूरो द्वारा उपस्थित की गई जापान-विरोधी राष्ट्रीय सयुक्त मोर्चे और रक्षात्मक युद्ध की नीति को स्वीकार कर लिया। सयुक्त मोर्चे के सवाल पर ढील देने की गलत नीति, तुष्टि की नीति की आलोचना की गई और निश्चय किया गया कि सारी पार्टी का किसी भी निर्बन्ध के बिना आजादी के साथ जापान के खिलाफ जनता के सशस्त्र सघर्ष को सगठित करना चाहिए। यह भी निश्चय किया गया कि पार्टी का मुख्य कार्य है युद्ध के क्षेत्रो और दुश्मन के पिछले भागो मे सघर्ष करना। पार्टी ने रक्षात्मक युद्ध मे विजय पाने के लिए कुओ-मिन्तागी सेना पर भरोसा रखने तथा कुओमिन्तागी शासन की छत्रछाया मे होनेवाले कानूनी आन्दोलन के हाथो मे जनता के भाग्य को सौपना गलत बतलाया।

उधर च्याग काइ शेक अपनी नीति के कारण हार पर हार खा रहा था, जापान उसे पीछे ढकेलता जा रहा था। 1938 के अक्तूबर तक उसकी सेनाएँ कान्तन् और वूहान से हटने के लिए मजबूर हुई। इसके बाद च्याग ने अपनी सेनाओ को चुग किग और सियान् को आधार बनाकर दक्षिण पश्चिम और उत्तर-पश्चिम मे केन्द्रित कर दिया। इसी ख्याल से कि इतनी दूर भाग जायें, जिसमे जापान से लडने की नौबत न आये। जिस वक्त च्याग इस तरह कायरता दिखला रहा था, उसी समय कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे आठवी मोर्चा-सेना और नई चौथी सेना ने उत्तरी, पूर्वी, केन्द्रीय और दक्षिणी चीन की जनता को हथियारबन्द करके जापान के खिलाफ बडे जोर-शोर से गोरिल्ला युद्ध को बढाया और जापान विरोधी कितने ही जनवादी अड्डो को कायम कर दिया।

(2) जापान का नाकों दम-केन्द्रीय लालसेना ने सियान् समझौते के बाद आठवी मोर्चा सेना नाम धारण किया था। जापान इस सेना का नाम सुनकर कॉपता था। 1937 की जुलाई मे जापान ने नया आक्रमण शुरू किया, और च्याग की कायरता के कारण वह इतनी तेजी के साथ आगे बढा कि जान पडने लगा थोडे ही

दिनों में सारा चीन उसके हाथ में चला जायगा। कान्तन् और वूहान् को उसने ले लिया था और च्यांग देश के बहुत भीतरी हिस्से में चुग-किंग और सियान् में जा छिपा था। इसी समय फरवरी. 1929 के आखिरी सप्ताह में जापानियों के हाथ से चहार जैसे बड़े प्रदेश के छिन जाने की खबर आई, और उत्तर-पूर्व प्रदेश मे जापानियो की हार पर हार होने लगी। 17 फरवरी, 1939 के 'स्टेट्समैन' (कलकत्ता) के अग्रलेख में इसके बारे में निम्न बातें लिखी थीं :

"पूर्वी चीन में जो घटनाएं घट रही है, उनकी खबर ससार को बहुत कम मिलती है—जो खबरें आती भी है, वह जापान के ही द्वारा। लेकिन, इन खबरों के नक्शे को देखते हुए पढ़ने मे कई बातें स्पष्ट हो जाती है। यह साफ है कि चीन की गोरिल्ला सेना ने जापान का नाकों दम कर रक्खा है। जिन प्रदेशो पर जापान का अधिकार है, उनमे भी गोरिल्ला का प्रहार जारी है। हाग-काउ और कान्तन् के पतन के बाद लोगों को विश्वास हो गया था कि अब चीन का समृद्ध और धनधान्यपूर्ण भूखण्ड सदा के लिए चला गया। किन्तु, जाड़े के आरम्भ होते ही 1937 में ही जापान के हाथ मे चला गया उत्तरी चीन फिर चीन के हाथ मे आ गया। जापान ने 1934 ई. में ही जिसे जीत लिया था, उस होपेइ प्रान्त में चीनी सेना फिर लड़ने लगी, शान्सी और दक्षिणी होपेइ में भी जापान को हटने के लिए मजबूर होना पड़ा और उसके पास केवल दो बड़े-बड़े शहर रह गये। जापानियों ने इधर ही कई छोटी छोटी विजयों को बहुत महत्त्व देने की कोशिश की, लेकिन नक्शे को देखने और पिछली घटनाओं को समझने से वह महत्त्व खतम हो जाता है। छापामारों ने उसके नाकों दम कर रक्खा है। शहरों और रेलवे लाइनों के बीच में उनकी कार्रवाइयों से जापानी परेशान है। वैसे जापानी भी अब चीन का विजय करना आसान नही समझते। इस सुदृढ़ मुकाबले को देखने और जापान की आर्थिक निर्बलताओं पर विचार करने में यह बात असम्भव नही जान पड़ती, कि चीन एक न एक दिन जरूर विजयी होगा।"

यह कहने की आवश्यकता नही कि जापान के मन से विजय की आशा हटाने का पहला काम आठवीं मोर्चा-सेना और वीर गोरिल्ले कर रहे थे, जिनका सचालन माओ चे तुग और उनके साथी सेनापति चू तह, पेग ते हाइ, लिन् पियाओ, चाउ एन् लाइ कर रहे थे। आठवीं मोर्चा सेना का सचालन इस समय पग ते हाई के हाथ मे था। आठवीं सेना की वीरता को देखकर फासिस्तों के बढ़ाव से परेशान पश्चिमी साम्राज्यवादियों और उनके सवाददाताओं का भी ध्यान उधर जाना जरूरी था। जनरल पेग ने एक पत्र प्रतिनिधि से बात करते हुए अपनी युद्ध प्रणाली के बारे में कहा था :

"हमारी युद्ध प्रणाली की मूल बात यह है कि हम लड़ाई को इस तरह लुक छिपकर लड़े कि शत्रु का सर्वनाश किया जा सके, और उसके छोटे मोटे दस्तों को बिलकुल समाप्त कर दिया जाय। जहाँ हम स्वय आगे भी बढ़े, वहाँ भी अपनी सेना को छोटी छोटी टुकड़ियों में विभक्त कर दी। आम तौर से आमने सामने जमकर लड़ने से हम बचते हैं, यद्यपि ऐसे भी समय आये है, जब हमें लड़ना पड़ा।" एक अमेरिकन पत्रकार ने भी आठवीं मोर्चा सेना के गोरिल्ला ढग के बारे में लिखा था :

"मै उस वक्त पहुंचा, जब कि उस नगर पर चीन के किसानों की गोरिल्ला सेना आक्रमण कर रही थी। उसने शहर को चारो ओर से घेर लिया था और उसकी प्राचीन दीवाल पर जब तब गोलाबारी भी होती रहती थी। एक रात चीनी गोरिल्ले नगर के फाटक के नीचे सेंध लगाकर जापानी सेना के पास भीतर पहुँच गये और कितने ही सोये हुए सन्तरियों को मारकर चम्पत हो गये।" शहर मे जापानी मशीनगनो और तोपों द्वारा दिन-रात आग बरसाते रहते थे, लेकिन गेहूँ के खेतों में छिपे गोरिल्लों का वह कुछ बिगाड नही सकते थे। आकाश मे मँडराते जापानी हवाई जहाज भी बेकार थे, क्योंकि अन्तर्धान गोरिल्लों को वह देख नही पाते थे। शहर को जानेवाली रेल की पटरी उखाड़ दी गई थी, एक सैनिक ट्रेन उलटी जा चुकी थी। जापान के आधुनिक ढग के अस्त्र-शस्त्र कम्युनिस्ट लड़ाकों के सामने बेकार साबित हो रहे थे। गोरिल्लो की सख्या इतनी अधिक थी कि वह नगर पर कब्जा कर सकते थे, लेकिन उनका उद्देश्य तो जापानियों का सफाया करना था। टेलीफोन और रेडियो द्वारा गोरिल्ले अपने केन्द्र से सम्बद्ध थे, खाने पीने की उनके पास कमी नही थी। अपने देहाती कारखानो से उन्हे बन्दूक, तलवार और बम बारूद मिलते थे। रेलों की पटरियों के उखाड़ने में ये बड़े दक्ष थे।

उक्त पत्रकार ने ही लिखा है :

" एक गाँव में मेरी मुलाकात दो प्रोफेसरो से हुई, जो क्लास में लेक्चर देने की जगह चीनी तरुणों को ट्रेन उलटने की विद्या सिखला रहे थे। अभी अभी एक जापानी सैनिक ट्रेन को वह उलटकर आये। डिनामाइट के न होने से प्रोफेसरों ने अपने विद्यार्थियों को मेखों और कीलों के निकालने की युक्ति सिखलाई थी। जैसे ही गाडी वहाँ पहुँचती, मेखों-कीलों के निकाल लेने के कारण लाइन फैल जाती और ट्रेन उलट जाती। जापानियों ने इससे बचने के लिए ट्रेन से पहले खाली इजन चलाने का क्रम जारी किया, तो भी तीन महीने के भीतर तीन ट्रेनें केवल इस इलाके मे उलट चुकी। ऐसी भी छापामार टोलियाँ सगठित की गई है, जो चुपचाप लाइनों को उखाड़कर दूर ले जाकर छिपा देती हैं और टेलीफोन के तार को काटकर उसके खम्भों को भी गायब कर देती हैं। जापानियों ने इससे बचने के लिए चीनी किसानो की टोलियो को रेलवे लाइन पर रात-दिन गश्त लगाने के लिए मजबूर किया और धमकाया कि अगर ठीक से पता नहीं देंगे तो गोली मार दिये जायँगे। ये किसान ठीक से पता अवश्य देते है, किन्तु साथ ही रेल हटाने मे खूब सहायता देकर अपराधी को निकल जाने में मदद भी करते है।

" जापानियो को छकाने के लिए ये चीनी सैनिक एक और ढग इस्तेमाल करते है। वह जापानी अफसरो की पोशाक पहनकर उनकी सेना मे धुसकर भेद लाते या उन पर अचानक धावा बोल देते है। इस तरह के चीनी सैनिक जापानी भाषा भी अच्छी तरह बोल सकते है। लेकिन, यह भारी खतरे का काम है। एक बार जापानी पोशाक पहने छह सौ सैनिकों को लेकर जेनरल लिन पियाओ जापानी पक्ति के भीतर घुस गये, किन्तु पता लग गया और पहली बार उन्हें जीवन में आहत होना पड़ा।

" जापानी भाषा बोलनेवाले और उनकी पोशाक मे रहनेवाले ये चीनी सैनिक प्राय: जापानी टेलीफोन को इस्तेमाल करते और जापानी हेडक्वार्टर को झूठी खबर देते कि फलां स्थान पर सेना चाहिए, उसे भेजिए। जैसे ही सेना वहां पहुँचती, पहले ही से घात मे बैठी चीनी सेना टूटकर उनका सर्वसंहार कर देती। "

दक्षिणी शान्सी मे लालसेना ने किस तरह एक नगर को वापस लिया, इसके बारे मे एक पत्रकार का लिखना है :

"जापानियों ने इस शहर पर अधिकार कर लिया। नगर की आबादी 15 हजार थी। जापानियों ने उसमें 20 हजार सेना रख दी। खाने-पीने की सामग्री की भी कमी नही थी। पर, गोरिल्ला सैनिकों ने नगर को चारो ओर से घेरकर जापानी सैनिकों का रसद का भीतर जाना बिलकुल रोक दिया। जापानी सेना ने कई सप्ताहों तक देहात मे घुसकर वहाँ के लोगों के बल तो तोड़ना चाहा, लेकिन जो भी सेना देहात मे जाती, अपने में से बहुतो को खोकर लौटती। अन्त मे दो महीने बिताकर अपनी आधी सख्या खो सेना को भाग जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। "

जहाँ इस तरह जापानी सैनिको को मारने के लिए, जापान के सैनिक बल को खतम करने के लिए कम्युनिस्ट हर तरह की कोशिश करते थे, वहाँ वह हाथ मे पड़े जापानी सैनिकों मे अपने विचारों का प्रचार भी करते थे : " आज हम युद्धभूमि मे तुम्हारे ऊपर बन्दूकें तानते और गोली छोडते हैं, यह हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है। आप और हम दोनों किसान-मजूर हैं। आपके सैनिक अफसरों ने सेना मे भरती कर तुम्हें घर-द्वार, बाल बच्चों को छोडने के लिए मजबूर किया। इधर हमे भी अपने देश और जनता की रक्षा करनी है। जापानी जनता और वहाँ के मजूर-किसानों से हमारी कोई शत्रुता नही है। हम तो जापानी किसानों-मजूरों से हमेशा हाथ मिलाने के लिए तैयार है। जापानी सैनिकों, जरा इस बात पर सोचो।

" क्योकि जापानी किसानों और मजूरो को चीन मे मरने के लिए भेजा जाता है ? बताओ, प्राणसंहार से तुम्हें क्या मिलेगा ? जापानी सैनिको, अपनी बन्दूकें अपने अफसरों की ओर घुमाकर हमसे आ मिलो। अगर लड़ना ही है, तो जनता की आजादी के लिए लड़ो, चीनी जनता के लिए लड़ो। आओ, हम सब एक हो जायें। इस युद्धक्षेत्र में एक-दूसरे का गला न काटें।··· जापानी सैनिकों, जरा हमारे नारे लगाओ : 'जापानी तानाशाही के लिए प्राण मत दो', 'जापानी और चीनी सैनिको, एक हो और इस युद्ध को समाप्त करो', 'जापानी सैनिको,

चीन की जनता के इस राष्ट्रीय युद्ध में सहायता करो', 'अपने भाइयो की हत्या मत करो', 'जापानी साम्राज्यवाद का नाश हो', 'जापान के किसान-मजूरो की स्वतन्त्रता विजयी हो।' "

आठवीं मोर्चा-सेना ने शत्रु-विभाग के नाम से अपना एक विभाग खोल रक्खा था, जिसका काम था हत या आहत जापानियों की डायरियाँ पढना। एक जापानी ब्रिगेड-कमांडर ने अपनी डायरी मे लिखा था :

"लालसेना का नाम सुनते ही मुझे सिरदर्द होने लगता है। हम जापानी दिन में ही लडने के आदी हैं, किन्तु ये लाल सैनिक रात-दिन आठो पहर कमर कसे तैयार रहते हैं। यहाँ कम्युनिस्टो का बडा जोर है, डेढ सौ के करीब मोटर-ट्रकों को इन्होने बरबाद कर दिया और 50 सैनिको को मार डाला। हमें आज्ञा दी गई है कि यहाँ जिसे पाओ, उसे मार डालो।"

एक दूसरे जापानी अफसर ने अपनी डायरी में लिखा था :

"हम सेनापतियों के लिए सेना सचालन कठिन हो रहा है। कुछ सैनिक घोडों पर दुनिया-भर की बेकार चीजे लाद लेते है। कितने खाई खोदने से इन्कार करते है। हमें पानी की जगह कीचड पीना पडता है, खाना तो और भी दुर्लभ है। मोर्चे पर दियासलाई और मोमबत्ती तक नही मिलती। और, ये चीनी सैनिक विचित्र है। घायल हो जाने पर भी ये कुछ कारतूस अपने पास रख लेते है, और जैसे ही कोई उनके पास पहुँचता है, उसे गोली मार देते है। आत्महत्या के लिए भी एक कारतूस अलग रख लेते है। ये हमारे शत्रु हैं, किन्तु है महापुरुष।"

एक और डायरी मे लिखा था :

"कल मेरी एक कम्पनी एक गाँव म गुजर रही थी। हमने अपना सामान चीनी कुलियो पर लाद रक्खा था। पहले तो सीधे से चलते रहे, परन्तु गाँव म पहुँचते ही उन्होंने बगावत कर दी। उनके पास कोई हथियार नही था। उन्होने हमारे मे से कई की राइफले छीन ली और राइफल चलाना न जानने के कारण कुन्दो से ही उन्होंने हमारे तीन आदमियों का सफाया कर दिया। कभी कभी वृक्षो, पत्थरो या दीवालों पर हम विशेष प्रकार का चिह्न देखते है, जिसका अर्थ है कि नजदीक में ही चीनी तोपे खडी हमे मौत के घाट उतारने को तैयार है।"

एगनेस स्मेडले ने आठवी मोर्चा सेना के साथ बहुत समय बिताया था। इस अमेरिकन लेखिका ने अपने एक मित्र के पास भेजे पत्र मे लिखा था :

" आप समझ नही सकते कि किस स्थिति मे हमारी सेना को काम करना पड रहा है ? जापानियो के पास ट्रकें हैं, लारियाँ है, हवाई जहाज है, दूसरे भी जल्द पहुँचानेवाले वाहन है, किन्तु हमारे पास सिर्फ गदहे, घोडे और खच्चर है। करीब-करीब हमारी सारी सेना पैदल ही चलती है, मोटरवाली टुकडी हमारे पास कहाँ है ? मेरे पास चाँदी के करीब सौ डालर है, लेकिन मेरे साथियो के पास फूटी कौडी नही है। इस सेना मे मैं सबसे धनी हूँ। मेरे पास एक वर्दी, एक जाडे का कोट और अडरवियर का एक सेट है, दो जोडे जूते भी है, लेकिन मेरे साथियो को एक ही जोड जूते पर गुजर करना पड रहा है, और सो भी अब समाप्त होने को है। हमारी सेना के अधिकाश सैनिको के पास मोजे बिलकुल है ही नही।

" यहाँ कागज मिलना कठिन है, तेल-घी की तो बात ही मत कीजिए, जब कि नमक भी दुर्लभ है। जलाने के लिए लकडियाँ भी कटिनाई से मिलती है। जाडे की आधी रात को मैं यह पत्र लिख रही हूँ, किन्तु हमे गरमाने के लिए एक अँगीठी भी नसीब नही है। पूरे भोजन के बिना पेट भी कुलबुला रहा है–कभी एक तरकारी मिल गई, तो गनीमत। आज शलगम, कल शलगम, सो भी प्रायः नही। चीनी तो सपने की चीज बन गई है। लेकिन, इसका अर्थ यह नही कि मै तुम्हारे सामने अपना दुखडा रो रही हूँ। यह तो मेरे जीवन के सबसे आनन्द और काम के दिन हैं। एक कटोरे भर भात पर गुजर होनेवाले इस जीवन पर सभ्यता द्वारा प्रदत्त सारे सुखो को मैं वार देती हूँ। पीठ की टूटी हुई रीढ़ लेकर भी मैं इन्ही के साथ घूमना, दौड़ना, और काम करना पसन्द करती हूँ। डर यही है कि कही दर्द ऐसा न बढ जाय कि काम मे बाधा हो। "

उस समय भारतीय कांग्रेस ने चीन मे घायलो की सेवा के लिए अपना डाक्टरी मिशन भेजा था, जो

आठवीं मोर्चा-सेना के साथ काम कर रहा था। 27 अक्टूबर, 1928 को मिशन के एक भारतीय डाक्टर ने अपने पत्र में लिखा था :

"हम लोग आठवी मोर्चा-सेना के साथ काम करने जा रहे हैं। वह सेना एक दिन मे 150 ली (50 मील) दौड जाती है, इसलिए हमे उससे मिलने के लिए काफी दौड-धूप करनी पड़ेगी—किन्तु इस सेना के साथ काम करना कम सौभाग्य की बात नही है। इस सेना के युद्धकौशल के पँवाडे सुने जाते है, रात मे उत्तर और दक्षिण की विरोधी दिशाओं मे आग जला दी जायगी, स्काउट बिगुल बजाते विचित्र-विचित्र सकेत करने लगेगे। जापानी सेना समझ न सकेगी कि दुश्मन का मुख्य अड्डा कहाँ है। उसके भौचक होने से फायदा उठाकर एक छोटी टुकडी बडे वेग से चढ दौडेगी, और सजग होने से पहले ही जापानी सेना के एक हिस्से का सहार कर निकल भागेगी। पहाडो पर खाइयाँ और खोह बनाये हुए है। आठवी मोर्चा-सेना के पास राज-मिस्तरियो और खाई खोदनेवालो का एक जबर्दस्त दल है, जो लडाई से दूर रह केवल निर्माण का काम करता है। सचमुच इस सेना को 'चीन की रक्षक सेना' कहा जा सकता है। यह चीन की सबसे अधिक सुसगठित, मुस्तैद, लडाकू और अनुशासन-सम्पन्न सेना है।"

15

द्वितीय महायुद्ध के समय (1939-45 ई.)

1939 ई मे पहुँच आठवी मोर्चा-सेना की सफलताओ को देखकर लोगो मे आशा का सचार होने लगा था, किन्तु अभी मजिल बहुत दूर थी।

1. कठिनाइयाँ

(1) च्यांग की नीयत (1939 ई.)—चीन के सबसे घने भाग को जापान के हाथ मे सौप च्याग ने अब चुग-किग मे भागकर शरण ली थी। एक तरह से उसने जापान के सामने हथियार डाल दिया था। वाग चिग-वेइ जैसे कितने ही चोटी के कुओमिन्ताग नेता देश के साथ विश्वासघात करके जापान से मिल गये। उत्तरी चीन मे कुओमिन्ताग की सेना के सेनापति ने पेकिग के सेनापति जेनरल चेग चे का अनुकरण करते हुए जापान के हाथ मे अपने को बेच दिया। अब वह जापानियों से मिलकर लाल राजधानी येनान् पर उत्तर मे आक्रमण करने लगे थे। जापानियो के सामने पूँछ दबाकर भागा च्याग इसी समय 1939 ई के अन्त मे दक्षिण से कम्युनिस्टों पर आक्रमण करने लगा। च्याग अपनी प्रतिक्रियावादी नीति से एक इच भी हटने के लिए तैयार नही था। वह अपने नेतृत्व को बनाये रखना चाहता था, लेकिन जनता का साथ म लिए विना; इसीलिए वह सियान-समझौते म जनतात्रिक सुधारो को मानकर भी उन्हे कार्यरूप मे परिणत नही करना चाहता था। जनता की ताकत के हरेक उभार को वह कुचलने के लिए तैयार था, और कम्युनिस्ट पार्टी को तो वह फूटी आँखो भी देखना नही चाहता था। प्रतिरोध के युद्ध के काल मे उसने गुप्त रीति से षड्यन्त्र करके जापानी सैनिको द्वारा आठवी रूट (मोर्चा) सेना, नई चौथी-सेना तथा अन्य जापान-विरोधी शक्तियो को खतम कराकर अपनी शक्ति को सुरक्षित करना चाहा। च्याग को यह विश्वास नही था कि चीन केवल अपनी ताकत के भरोसे पर विजय प्राप्त कर सकता है। जनशक्ति के अक्षय भडार पर उसे विश्वास नही था, बल्कि वह थैलीशाहो, सामन्तो का मुखिया उसको सबसे भय की चीज समझता था। उसकी सारी उम्मीदें विदेशी मदद पर लगी हुई थी। समझता था, इग्लैंड और अमेरिका जल्दी ही जापान के खिलाफ लडाई मे उतरेंगे—विशेषकर अमेरिका पर उसे बहुत भरोसा था, लेकिन बाद की घटनाओं ने बतला दिया कि इग्लैड और अमेरिका ने जापान के विरुद्ध दखल देने मे सुस्ती से काम लिया और वह बार-बार जापान से ही समझौता करते रहे। लेकिन, आठवी रूट सेना और नई चौथी

सेना जापानियों से किस तरह मुकाबला कर रही थी, यह हम देख चुके हैं। सारी चीनी जनता अपनी इन अजेय वाहिनियों पर अभिमान और विश्वास करने लगी। उन्होंने च्याग काइ-शेक द्वारा लगाये सारे बन्धनों को तोड फेंका। जनशक्ति इतनी बढ़ी, कि च्याग काई-शेक की सेनाएँ जब उसमें बाधा डालने लगीं, तो उन्हें भारी हानि उठाकर मुँह की खानी पड़ी। इसके कारण च्याग की प्रतिष्ठा धूल में मिल गई।

इसके बाद च्याग ने जापान के खिलाफ 'निष्क्रिय प्रतिरोध की नीति' अपना ली, पर वह कम्युनिस्ट पार्टी तथा जनता का सक्रिय रूप से विरोध करने लगा। जापान के विरुद्ध लडी जानेवाली लड़ाइयो से मुँह चुरा वह दूसरों को लड़ते देखना चाहता था। अपनी हथियारबन्द शक्ति को बचा-बटोरकर वह इस बात की ताक में था कि पश्चिमी शक्तियाँ जब जापान को पराजित कर दें, तो उसका फल मै बटोरूँ और अपनी सुरक्षित सेना को लेकर कम्युनिस्ट पार्टी तथा जनता की ताकत को खतम कर दूँ। जापान के खिलाफ प्रतिरोध युद्ध के समय च्याग काइ शेक के गुट की यही आधारभूत स्थिति और नीति थी, जिसका समर्थन अमेरिकी साम्राज्यवाद भी पूरी तोर से कर रहा था, यद्यपि प्रतिरोध-युद्ध के अन्तिम काल मे च्याग की इस स्थिति और नीति से अमेरिकन जनता में असतोष और नाराजगी फैल गई। जापान के खिलाफ लडनेवाली जनता की माँग थी कि एक हो सकनेवाली देश भर की सारी शक्तियों को एकताबद्ध किया जाय, और प्रतिरोध युद्ध को चलाने के लिए जनता की ताकतों को एकजुट किया जाय। इसके लिए किसी हद तक एक ओर तो यह जरूरी था कि च्याग काइ-शेक के साथ एका किया जाय, जिससे कि उसके अधीनस्थ सेना को जापान के खिलाफ खडा किया जा सके, और साथ ही दूसरी ओर च्याग काइ शेक की प्रतिक्रियावादी नीति के खिलाफ पक्के तौर पर सघर्ष करना भी जरूरी था, ताकि विजय प्राप्त करने के लिए जनता की शक्तियो को कायम रक्खा तथा एकजुट किया जा सके। इसका उद्देश्य यह था कि जनता की शक्तियाँ कमजोर न पड़ें, न पस्त हो; बल्कि वह स्वय च्याग काइ शेक और उसके मालिक अमरिकी साम्राज्यवादियों की साजिशों को विफल करने योग्य बन सके।

प्रतिरोध युद्ध के दिनों में ही साथी माओ चे-तुग ने उस समय की पेचीदा राजनीतिक परिस्थितियो का ठीक से लेखा-जोखा किया। उन्होंने बतलाया कि कम्युनिस्ट पार्टी और कुओमिन्ताग के बीच, सर्वहारा और उन बड़े जमीदारों और बड़े पूँजीपतियो (च्याग काइ-शेक के गिरोह) के बीच जो प्रतिरोध युद्ध में हिस्सा ले रहे थे, उनके बीच के झगड़े अब इस बात पर नही होते कि प्रतिरोध युद्ध को चलाना चाहिए या नही, बल्कि वह इस बात के लिए होते थे कि विजय कैसे हासिल की जाय। साथी माओ ने बतलाया कि प्रतिरोध युद्ध में दो विरोधी नीतियाँ मौजूद है : एक बड़े जमीदारों और पूँजीपतियों की नीति, जिसका प्रतिनिधित्व च्याग काइ शेक कर रहा है, और दूसरी सर्वहारा वर्ग तथा चीन की सारी जनता की नीति, जिसका प्रतिनिधित्व कम्युनिस्ट पार्टी कर रही थी। साथी माओ ने आगे चलकर बतलाया, कि अगर च्याग काइ-शेक की, कुओमिन्तांग की 'आंशिक युद्ध' की नीति को अमल में लाया गया, तो युद्ध में निश्चय ही हमारी हार होगी। 'आंशिक युद्ध' का मतलब था प्रतिरोध-युद्ध को अकेले कुओमिन्ताग सरकार को लडना चाहिए और चीन की सारी जनता को उससे अलग रखना चाहिए। केवल एक ही नीति थी, जिसे अमल में लाकर जीत हासिल की जा सकती थी, और वह नीति थी जनता के युद्ध की, 'सर्वस्व युद्ध की'।

च्याग उधर बटाधार कर रहा था, लेकिन दूसरी ओर जनता के स्रोत से सख्या और बल मे कम्युनिस्ट और भी मजबूत होते जा रहे थे। तीन साल पहले उनके पास 40 हजार सेना थी, जो 1940 मे 5 लाख हो गई। चीन मे रक्खे हुए जापान की सारी सेना के आधे भाग को इस सेना ने फँसा रक्खा था। अपनी तीन साल की लड़ाइयों में इसने 150 नगरों को फिर से अपने अधिकार मे कर लिया। मुक्त भूभाग और गोरिल्ला इलाकों की आबादी बढ़कर 10 करोड हो गई। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की सख्या तीन साल पहले 40 हजार थी, जो अब बढ़कर 8 लाख हो गई। लियाओ-निंग से लेकर जेहोल और चहार तक और सुइयान् से लेकर क्वान्तुग और हैनान् द्वीप तक सभी मोर्चो पर कम्युनिस्टो के पथ-प्रदर्शन में जनता की जापान-विरोधी सेनाएँ मौजूद थी। प्रतिरोध-युद्ध सचमुच अब एक महान् राष्ट्रीय क्रान्ति का रूप ले चुका था।

(2) पार्टी के भीतर–प्रतिरोध-युद्ध में च्याग और कम्युनिस्ट पार्टी की दो नीतियो का असर पार्टी के भीतर

भी दिखाई पडा। वाग मिग चन् शाओ यू–जिसने द्वितीय क्रान्तिकारी गृह युद्ध के काल म गम्भीर वामपक्षीय गलतियों की थी–तथा उमक अनुयायी कुछ साथियो न अब सुधारवादी अवमरवादी दृष्टिकोण मे पार्टी की आलोचना और विरोध शुरू कर दिया। इससे भी आगे बढ़कर उन्होंने पार्टी के अनुशासन का ताक पर रख मनमाने ढग से अपनी नीति का पार्टी द्वारा सौपे कार्यो मे बरतन लगे। उन्होंने देखा कि कम्युनिस्ट पार्टी और उमकी ताकतें इम समय कमजोर है और कुओमिन्ताग बाहर स मजबूत दीखता है इसलिए उन्होंने यह गलत निष्कर्ष निकाला कि प्रतिरोध युद्ध मे जीत कुओमिन्ताग द्वारा ही प्राप्त की जा मकती है और ऐमी जीत अवश्य ही कुओमिन्ताग की जीत होगी, जनता की नही। इस प्रकार कुओमिन्ताग ही इस युद्ध म अगुवा हो मकती है कम्युनिस्ट पार्टी नही। कम्युनिस्टो द्वारा सचालित गुरिल्ला युद्ध के महत्त्व को भी वह हलकी नजर मे देखते थे और इस भ्रम क शिकार थ कि कुओमिन्तागी सेना पर भरोसा करके जल्दी जीत हासिल की जा सकती है। सयुक्त मोर्चे म आजादी और पहल करने की शक्ति को सुरक्षित करन की कारकारी नीति को उन्होंने ठुकरा दिया था और उस क्रान्तिकारी नीति को भी ठुकरा दिया था कि एकता क साथ साथ सघर्ष और सघर्ष के द्वारा एकता। प्रतिरोध युद्ध के विषय म कम्युनिस्ट पार्टी और कुओमिन्ताग के बीच के सैद्धान्तिक भेद को भूलकर उन्होंने माग पेश की थी कि कुओमिन्ताग की जन विरोधी नीति के बारे मे कम्युनिस्ट रियायते दे और वह अपनी गतिविधि को उसी सीमा के भीतर रखने जिसकी कि कुओमिन्ताग ने इजाजत दे रखी है। वह यह भी चाहते थे कि आठवी रूट सेना तथा नई चौथी-सेना को पूरो तौर से कुओमिन्तागी सेना मे मिला दिया जाय ताकि कमान मे सगठन म साज और सामान म अनुशासन मे हमले की योजना बनाने और युद्ध काम म लाने म एकता कायम की जा सके। सघर्ष मे समूची जनता को पूरी तौर स खीचन बटोरने के मुक्त इलाको और जापानी कब्जे के इलाको म जनता की सशस्त्र ताकतो को बढाने और फैलाने के भी वे विरोधी थ। उन्हे यह डर था कि इस कार्रवाई स च्याग काइ शक की कुओमिन्ताग जापान विरोधी सयुक्त मोर्चे स हट जायगी। उन्होंने गलत गलत मतो से भरी मनमानी घोषणाएं फैसले और लेख केन्द्रीय कमेटी की स्वीकृति के बिना ही जारी कर दिये और केन्द्रीय समिति के ठीक निर्देशो को रद्दी की टोकरी म फेक दिया। इन गलत विचारो और कामो ने 1938 ई म वूहान म पार्टी के काम पर भी असर डाला जिसके लिए वाग मिग जिम्मेदार थे। जनवरी 1941 म हुई दक्षिणी आनह्वेई घटना म पहले नई चौथी सेना के साथी स्याग मिग का काम भी इन गलत विचारो और कामो के असर मे आ गया था जिसके परिणामस्वरूप याग ची नदी के इलाके म जनता के प्रतिरोध युद्ध का विकास रुक गया और इसीलिए इस घटना के दौरान म नई चौथी-सेना को हार खानी पडी। जिस तरह पहली क्रान्तिकारी गृह युद्ध के काल म चन तू स्यू ने सुधारवादी अवसरवादिता का परिचय दिया था नई परिस्थिति मे वही अवसरवादिता अब फिर दोहराई जाने लगी। साथी माओ ने जमकर इन गलत धारणाओं के विरुद्ध सघर्ष किया और बहुत भारी नुकसान के बिना उन पर काबू पा लिया। मई 1938 म अपनी लम्बा युद्ध नामक पुस्तक म साथी माओ ने इन्ही गलतियो की आलोचना करते हुए ठीक रास्ता बतलाया और जनयुद्ध की नीति को अपनाने पर जोर दिया।

2 च्याग के फिर हमले

च्याग की मनोवृत्ति के बारे म हम पहले काफी बतला चुके है। माओ के नेतृत्व म कम्युनिस्टो की शक्ति को बढ़ती देख जापान के सामने मे मुँह छिपाकर भग इस कायर ने फिर गृहयुद्ध आरम्भ कर दिया।

(1) प्रथम जिहाद (1939-40 ई)–जिस समय जापान के हाथ मे बिके च्याग के जेनरलो ने लाल राजधानी (येनान्) पर उत्तर म हमला शुरू किया था उसी समय 1939 के अन्त म च्याग काइ शेक ने पहला कम्युनिस्ट विरोधी जिहाद बोल दिया और कुओ मिन्तागी सेना ने शेन्सी कान्सू, निगस्या के सीमान्ती इलाके पर आक्रमण कर दिया। यह वह भूभाग था जिस पर कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व चल रहा था। इस इलाके के पाँच नगरो पर कब्जा करके उन्होंने पश्चिमी शान्सी म कम्युनिस्टो द्वारा सचालित 'करो या मरो नामक जापानी सेना पर आक्रमण कर दिया था। शान् सी के दक्षिण पूर्वी हिस्से म अवस्थित कम्युनिस्ट पार्टी की आठवी रूट सेना पर भी हमला

होने पर उसने कुओमिन्तांगी हमलो का मुँहतोड जवाब दिया–कुओमिनूतागी हमले सयोगवश उसी समय हो रहे थे, जबकि जापानी भी कम्युनिस्टो पर हमला कर रहे थे।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी जापान के खिलाफ युद्ध का असली नेता है, सिद्ध हो चुका था। अब उसका ही एक काम था कि समूची जनता के सामने चीन की क्रान्ति और नये चीन के निर्माण के बारे में अपने सारे विचारों को रक्खे, जिसमें कि कुओमिन्तागी प्रतिक्रियावादियों और उसके पुछल्लो को नैतिक बल से पूर्णतया कमजोर करके चीन के मजूर वर्ग तथा क्रान्तिकारी जनता को समुचित नैतिक हथियारों से लैस किया जा सके। यह काम साथी माओ चे-तुग ने अपनी पुस्तक 'नई जनतन्त्रता' को लिखकर किया, जो जनवरी, 1940 मे प्रकाशित हुई। इसमें उन्होंने बतलाया कि चीनी राष्ट्र नष्ट नही हो सकता, उसका भविष्य उज्ज्वल है। कुओ-मिन्-तांग के प्रतिक्रियावादियों के खुले देशद्रोह करके जापान से मिल जाने पर भी जनता के पास शक्ति का इतना अक्षय भण्डार है कि अन्त में उसकी विजय निश्चित है। विश्व की कोई शक्ति अजेय चीनी जनता को पराजित नही कर सकती। माओ ने चीन और विश्व के इतिहास को बतलाते हुए इस बात को खोलकर रख दिया कि रूस में अक्टूबर की महान् क्रान्ति के बाद चीन की क्रान्ति का नेतृत्व अनिवार्यतया चीन के मजूर-वर्ग को करना है। चीन की क्रान्ति को दो मजिलो में विभाजित होना जरूरी है–(1) नई जनवादी मजिल, और (2) समाजवादी मजिल। नये जनवाद (लोकशाही) का भविष्य अवश्य ही मजूर-वर्ग के नेतृत्व में समाजवाद होगा। नई जनवादी क्रान्ति के दौरान में पार्टी के लिए आवश्यक है कि वह उन नये जनवादी राजनीतिक, आर्थिक और सास्कृतिक कार्यक्रमों को अपनाये, जो पूँजीवाद और समाजवाद–इन दोनों कार्यक्रमों से भिन्न हो। इस पुस्तक के प्रकाशन से पार्टी और चीन के सभी क्रान्तिकारी लोगो की सैद्धातिक एकता मे भारी वृद्धि हुई, इससे जनता के सभी मुक्त इलाको की कार्यनीति मे एकता कायम करने मे मदद मिली।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने इस समय जापानियो के साथ मुकाबला करते हुए अपनी राजनीतिक सूझ से जनता की एकता को बढ़ाकर अपनी शक्ति को मजबूत किया। उसने साफ कहा कि जब तक कुओ-मिन्ताग जापानी आक्रमणकारियों के सामने घुटने नही टेकती, तब तक कुओ मिन्ताग प्रतिक्रियाओ के विरुद्ध नाता न तोडने की सीमाओ के भीतर रहकर हमे सघर्ष चलाना है। जहाँ तक मझोले पूँजीपति-वर्ग और जाग्रत भद्र-वर्ग का सम्बन्ध है, उनके साथ एकता स्थापित करने पर खास तौर से ध्यान देना है। इसलिए पार्टी को चाहिए कि प्रगतिशील शक्तियों को आगे बढ़ाने, मझोली शक्तियो को आगे बढाने,'मझोली शक्तियों को अपनी ओर करने और प्रतिक्रियावादियो को छाँटकर उनके प्रभाव को खतम कर दे। माओ ने इस आम नीति का खाका तैयार किया। उन्होंने यह बात भी सामने रक्खी कि कुओ मिन्तागी प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ सघर्ष करना 'उचित, लाभदायक और बुद्धिमत्तापूर्ण' है। पार्टी ने तीन तीन प्रतिनिधि प्रणाली भी स्वीकार की, अर्थात् सभी मुक्त इलाको में राज-काज चलाने के लिए ऐसी प्रणाली मजूर की, जिसमे एक-तिहाई मेम्बर कम्युनिस्ट (मजूर-वर्ग और गरीब किसानो का प्रतिनिधित्व करनेवाले), एक तिहाई प्रगतिशील तत्त्व (निम्न पूँजीपति-वर्ग के प्रतिनिधि) और एक-तिहाई मझोले (मझोले पूँजीपति वर्ग और सजग भद्र वर्ग के प्रतिनिधि) हो।

पहले हमले मे विफल होने के बाद च्याग काइ शेक ने जनवरी, 1941 में कम्युनिस्टो के विरुद्ध दूसरा जिहाद शुरू किया। उसने चौथी सेना के प्रधान दफ्तर और उसके 10 हजार से अधिक सैनिकोवाले एक भाग–जो अब तक अनहुई प्रदेश के दक्षिणी इलाके मे तैनात था–के नाम याग-ची नदी के उत्तरी तट की ओर कूच करने का मनमाना फरमान जारी कर दिया। 7 जनवरी को कूच के समय ही उसने नई चौथी-सेना पर 80 हजार कुओ-मिन्तागी सैनिकों से घेरकर हमला कर दिया। इस हमले से नई चौथी सेना को भारी नुकसान उठाना पड़ा। उसके कमाडर येह तिग कैदी बने और उप कमाडर स्याग इग लड़ाई में काम आये। इसके बाद तुरन्त ही च्याग काइ-शेक ने नई चौथी-सेना को तोड देने की भी घोषणा कर दी और उसके अन्य भागो पर आक्रमण करने का हुक्म दिया। यह घटना 'अन् हेइ-घटना' के नाम से प्रसिद्ध है। कम्युनिस्टों ने नई चौथी-सेना के तोडने के फरमान का तेजी के साथ मुँहतोड जवाब दिया और जवाबी हमलो से च्याग के जिहाद को चकनाचूर कर दिया। यही नही, बल्कि घटना से पहले की अपेक्षा नई चौथी-सेना का मुख्य भाग पहले से भी अधिक सुसगठित बन

गया और पूर्वी चीन के इलाको में उसकी ताकत और भी ज्यादा मजबूती के साथ बढ़ने लगी।

इस घटना के बाद कम्युनिस्टो ने प्रयत्न किया, किन्तु च्याग काइ-शेक की बदमाशी के कारण सयुक्त मोर्चे को कायम करने मे सफलता नही मिली। लेकिन, इससे च्याग ने अपने ही प्रभाव को खतम कर दिया और लोगों की आँखे खुल गईं। वह समझने लगे कि च्याग से कोई आशा नही हो सकती। 'अन्-ह्वेइ-घटना' से चीन की जनता की कठिनाइयाँ खतम नही, बल्कि शुरू हुईं। 1941 के शुरू से ही जापान ने अपनी सेना के 60 प्रतिशत हिस्से को अपने पिछले भाग के मोर्चों मे स्थित मुक्त इलाको के ऊपर तैनात करके हुकुम दिया था कि इन इलाको के घावो को गहरा बनाते सब कुछ जलाकर खाक कर दो, सबको बीन-बीनकर खतम कर दो, सबको लूट लो। जापानी पाती के पिछले भागो मे छूटे हुए अधिकतर कुओ-मिन्-तागी सैनिक दुश्मन के सामने घुटने टेककर उसके कठपुतली सैनिक बन गये थे। इन कठपुतली सैनिकों मे से 90 प्रतिशत से भी ज्यादा सैनिक जापानी अफसरो के सचालन मे कम्युनिस्ट, स्वतन्त्र इलाको पर हमल करने लगे। च्याग काइ-शेक ने खुफिया तौर से अपनी कितनी ही टुकडियो के नाम आदेश जारी किया था कि वह जापान के सामने आत्मसमर्पण कर दे, और फिर जापानियो की कमान में आठवी मोर्चा-सेना तथा नई चौथी-सेना मे लड़े।

यह वह समय था, जब कि जून, 1941 में हिटलर ने सोवियत सघ पर हमला कर दिया था। इसी साल के जाडो मे जापान ने प्रशान्त महासागर मे अमेरिका और ब्रिटेन के अधिकृत भूभाग पर आक्रमण कर दिया था। युद्ध के आरम्भिक काल मे फासिस्तों की जीत-पर-जीत होने लगी थी। च्याग के कुओ मिन्तागी प्रतिक्रियावादियो ने शत्रु के सामने घुटना टेक उसके साथ सहयोग किया, मुक्त इलाकों का घेरने, कम्युनिस्टो तथा जनता के ऊपर आक्रमण करने की लज्जाजनक कार्रवाइयो को और भी अधिक प्रोत्साहन दिया। इस समय मुक्त इलाके अपनी आबादी और सैनिक सख्या तथा आकार मे भी काफी घट गये थे। भारी आर्थिक कठिनाइयाँ सामने थी, जिन पर काबू पाने के लिए पार्टी का और भी ज्यादा जी-जान से कोशिश करनी पडी। पार्टी ने मुक्त इलाको के सभी सरकारी दफ्तरो, स्कूलो और सैनिकों की सख्या घटा उनके गुण को बढ़ाने, उन्हे ऊँचा उठाने और शासन-यन्त्र मे सादगी लाने की नीति पर अमल किया, जिससे कि जनता के बोझ को हलका किया जा सके। इसी के साथ पार्टी ने अधिक अन्न उपजाने के लिए अपने-आपको सगठित करने की दिशा मे लोगो की अगुवाई करने के काम पर जोर दिया, जिससे प्राकृतिक आफतों के समय सहायता मिल सके। उत्पादन बढ़ाने के सघर्ष के साथ साथ पार्टी ने मालगुजारी और सूद को कम करने के व्यापक आन्दोलन मे किसानो का पथ-प्रदर्शन किया। नई परिस्थिति में दुश्मन से लोहा लेने के लिए मुक्त इलाकों ने जन-सेना को भारी मात्रा मे विकसित किया। "बीन-बीनकर खतम करनेवाले घावो के खिलाफ जवाबी सघर्ष के सिवा शत्रु के पिछले भाग के मोर्चे की गहराइयो मे घुसकर मुक्त इलाको को फिर से कायम करने और उन्हे बढ़ाने के सघर्ष को चलाने के लिए मुक्त इलाको की सेना और जनता ने हथियारों से सुसज्जित दल भेजे। इन सब कोशिशो से सारी कठिनाइयो पर काबू पा लिया गया। मुक्त इलाके पहले से भी अधिक गठित बन गये और वह 1943 से लेकर आगे के काल मे दृढ गति से फैलने और बढ़ने लगे।"

इस काल की अपेक्षाकृत कम परिवर्तन होनेवाली स्थिति का सारी पार्टी को मार्क्सवाद लेनिनवाद की शिक्षा देने में इस्तेमाल किया गया। तेजी के साथ बढ़ते युद्ध और क्रान्ति की परिस्थितियों मे बड़े पैमाने पर शिक्षा के काम का बीडा उठाना अत्यन्त कठिन था। काम मे अध्ययन और लेखन मे गलत तरीकों को ठीक करने की पद्धति के द्वारा पार्टी ने कार्यकर्ताओं और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की चादर ओढ़कर पार्टी मे फैले पूँजीवादी विचारों और काम करने के पूँजीवादी तरीकों की पहचान करना और उन पर काबू पाना सिखलाया—खास तौर से चेतनावादी और सकीर्णतावादी प्रवृत्तियों और उनकी अभिव्यक्ति के रूपो की पार्टी-सम्बन्धी तोता रटन शब्दाडम्बर की पहचान और परख करना बताया। उसने कहा कि अध्ययन के ढग में सुधार करो, पार्टी के काम करने के ढग को ठीक करो, पार्टी के बारे मे तोतारटन्त शब्दाडम्बर का विरोध करो। येनान मे हुई साहित्य और कला-सम्बन्धी गोलमेज-कान्फरेंस मे दिये गये साथी माओ चे-तुग के भाषणों एव अच्छे कम्युनिस्ट बनने के ढग तथा पार्टी के भीतर सघर्ष के बारे मे साथी ल्यू शाओ-ची के भाषणों ने अध्ययन-आन्दोलन में महत्वपूर्ण

सहायता दी। इनसे 1931 मे पार्टी मे घर कर गये मतवादी तूफानो क बुरे प्रभाव खतम हो गये, और निम्न पूँजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियो मे से आये पार्टी के नये मदस्यो को अपने पहले के निम्न पूँजीवादी दृष्टिकोण को छोडने और सर्वहारा दृष्टिकोण को अपनान मे मदद मिली। फलत पार्टी का सैद्धान्तिक दृष्टि से लम्बा डग भरते आगे बढने और पहले से ज्यादा एकताबद्ध होने मे सहायता मिली।

जिस समय कम्युनिस्ट पार्टी इस प्रकार कठिनाइयो और सघर्षो के बीच आगे बढ रही थी, उसी समय कुओ-मिन्ताग सरकार दिन पर दिन भ्रष्टाचार के दलदल मे बुरी तोर से धँसती जा रही थी। अपनी राजनीतिक स्थिति और खास कर प्रतिरोध युद्ध एव मुद्रा प्रसार आदि से फायदा उठाकर कुओ मिन्तागी नेताओ ने भारी सम्पत्ति बटोरी चीन की पूँजी पर और व्यापार पर उद्योग और खती पर उन्होने अपना एकाधिपत्य कायम कर लिया, एव अन्धाधुन्ध लूट शुरू कर तेजी के साथ विदेशी पूँजी के पत्तलचट तथा फौजी इजारेदारीवाले पूँजीवाद 'नौकरशाही पूँजीवाद'–को विकसित कर दिया। इस नौकरशाही पूँजीवाद के अगुवा और प्रमुख सूत्रधार थे चार परिवार–च्याग (काइ शेक) सुग (टी ई) कुग (एच एच) और चन (ली फू)। देश की सारी लूटी हुई सम्पत्ति का सबसे अधिक भाग इन चार घरानो के हाथ मे चला गया।

ऐसा होने पर मजूर वर्ग किसान वर्ग, नगर के निम्न पूँजीपति वर्ग और कुओ मिन्ताग के कब्जेवाले भूभाग मे राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग के हितो से तेजी के साथ टक्कर होनी स्वाभाविक थी। एक ओर जीवन की परिस्थितियाँ अत्यन्त दुखद हो गई दूसरी और जापान के खिलाफ युद्ध करने मे राजनीतिक आजादी के अभाव होने से लोगो मे असतोष और शिकायते जोर पकडने लगी। कितनी ही जगहो मे जनता ने विद्रोह कर दिया। अब भ्रष्टाचार मे नाक तक डूबा च्याग काइ शेक जनता से और अलग हो गया। जून 1943 ई मे मुँह से झाग उगलते हुए च्याग ने कम्युनिस्टो पर एकता तोडने का दोष लगाकर उन्हे दण्ड' देने के लिए अभियान शुरू कर देने के लिए कहा और शेन सी कान्सु निग स्या के सीमान्ती इलाको पर आक्रमण करने की तैयारी के लिए बडी सख्या मे सैनिको को रवाना कर दिया।

(2) द्वितीय जिहाद (1941 ई)–च्याग ने कम्युनिस्टो पर दूसरा हमला किया किन्तु इस आक्रमण या जिहाद को उस बीच मे ही रोक देना पडा। पार्टी ने पहले ही खुले तोर से जिहाद का पर्दाफाश कर दिया था जिससे सारे देश की जनता ने इसका घोर विरोध किया था। स्पष्ट ही युद्ध काल मे अछूता बचाकर पिछले भाग के मोर्चो मे रख छोड अपने कई लाख सैनिको पर उस समय भी च्याग काइ शेक का भारी भरोसा था। अभी तक उसकी यह तथ्य समझ मे नही आया था कि मेरी प्रतिक्रियावादी नीति खुद मेरे सैनिको को काफी समय पहले ही से पस्त हिम्मत कर चुकी है। यह तथ्य 1944 मे पूरी तौर से प्रकट हो गया जब जापानियो ने अपना नया हमला शुरू कर दिया।

(3) नया जनवाद–1940 मे साथी माओ च तुग ने नया जनवाद (नई लोकशाही) नामक पुस्तक लिखकर उस समय की निराशापूर्ण स्थिति मे पथ प्रदर्शन किया और बतलाया कि चीनी राष्ट्र नष्ट नही हो सकता। कुओ मिन्ताग के प्रतिक्रियावादियो की खुली गद्दारी और विश्वासघात करके जापान से मिल जाने पर भी चीनी जनता के पास शक्ति का इतना अक्षय भण्डार है कि अन्त मे जापान विरोधी लडाई और क्रान्ति मे उसकी विजय निश्चित है। चीनी जनता की अन्त मे विजय होगी लेकिन उसे स्थायी बना लोगो को खुशहाल करने के लिए नये जनवाद' को अपनाना होगा–सभी क्रान्तिकारी वर्गो अर्थात् मजूरो किसानो मध्य वर्ग एव सामन्तवाद विदेशी साम्राज्यवाद के विरोधी पूँजीपतियो की मिली जुली सरकार कायम करनी होगी। इस पुस्तक के निकलने के पाँच साल बाद अप्रैल 1945 मे सातवी पार्टी काग्रेस के सामने रिपोर्ट करते हुए नये जनवाद के सिद्धान्त को और आगे बढाया गया। यह रिपोर्ट 'मिली जुली सरकार' के नाम से प्रकाशित हुई।

(4) भीतरी सुधार (1942)–1 फरवरी, 1942 को नये प्रदेश मे पार्टी-स्कूल आरम्भ करते हुए माओ ने एक बडा ही महत्त्वपूर्ण भाषण दिया था जिसमे उन्होने मार्क्सवाद के सिद्धान्त और व्यवहार को समझने के महत्त्व को बतलाया था

' आज पार्टी स्कूल का उद्घाटन दिन है। मै स्कूल को उसकी सफलताओ के लिए अभिनन्दन करता हूँ।

" आज मैं हमारी पार्टी की कार्यशील-सम्बन्धी समस्या के बारे मे सक्षेप से विचार करना चाहता हूँ।

" एक क्रान्तिकारी पार्टी का होना क्यों जरूरी है ? एक क्रान्तिकारी पार्टी का होना इसलिए जरूरी है कि हमारे शत्रु अब भी मौजूद हैं। पर साधारण क्रान्तिकारी पार्टी मात्र ही नहीं, बल्कि वह कम्युनिस्ट (क्रान्तिकारी) पार्टी होनी चाहिए, क्योंकि अगर कम्युनिस्ट (क्रान्तिकारी) पार्टी नही होगी, तो शत्रु की पूरी तौर से पराजय असम्भव होगी। शत्रु की पूरी तौर से पराजय के लिए हमारी पॉती को सुव्यवस्थित होना होगा, हमे कदम से कदम मिलाकर चलना होगा, हमारी सेनाओ को तपी और हमारे हथियारो को सक्षम होना होगा। जब तक ये शर्ते पूरी नही होती, तब तक शत्रु को पराजित नही किया जा सकेगा।

" अब भी हमारी पार्टी के सामने कौन-सी समस्याएँ है ? इसमे सन्देह नही, हमारी पार्टी की साधारण कार्यप्रणाली ठीक है और हमारी पार्टी के काम के अच्छे परिणाम निकले हैं। हमारे कई लाख पार्टी-सदस्य है, जो जनता के साथ एक हो हमारे राष्ट्रीय शत्रुओं के विरुद्ध कड़े और अद्वितीय सघर्ष में लगे हुए है। जनता की सेवा मे उनके वीरतापूर्ण बलिदान और सफलताओं को सभी देख सकते है, उनके बारे मे सन्देह करना असम्भव है।

" लेकिन, इस सबके बाद भी क्या पार्टी के सामने अब भी समस्याएँ मौजूद है ? क्या अब भी उसमे खामियॉं है ? मै कहता हूँ, समस्याएँ अब भी है, खामियॉं अब भी है और कुछ बातो मे यह समस्याएँ अपेक्षाकृत अधिक गम्भीर है।

" कौन-सी वह समस्याएँ है ? कुछ साथियो के दिमागो की कितनी ही बाते बिल्कुल ठीक या बिलकुल सिद्धान्तानुमोदित नही है।

" कौन सी ये बाते है ? विचार का प्रश्न पार्टी के आभ्यन्तरिक और बाह्य सम्बन्धों का प्रश्न तथा साहित्य का प्रश्न। इन तीन बातो मे हमारे कुछ साथी अब भी सिद्धान्त-अननुमोदित प्रवृत्तिया से मुक्त नही हुए है। कितनी ही बातो में शिक्षा के बारे में हमारी मनोवृत्ति, हमारी पार्टी मनोवृत्ति और हमारी साहित्य-सम्बन्धी मनोवृत्ति अब भी ठीक नही है। शिक्षा मे बेठीक मनोवृत्ति को हम मनोमयवाद (सब्जेक्टिविज्म) कहते है, पार्टी सम्बन्धी बेठीक मनोवृत्ति को सम्प्रदायवाद और साहित्य-सम्बन्धी बेठीक मनोवृत्ति को पार्टी लकीरवाद (फार्मलिज्म)। ये बेठीक मनोवृत्तियाँ जाडो में उत्तरहिया हवा की तरह आकाश को भर नही देती। मनोमयवाद, सम्प्रदायवाद और पार्टी लकीरवाद वर्तमान मे हावी होनेवाली मनोवृत्तियाँ नही है। वह केवल हवाई हमले के रक्षास्थान के बाहर वाली प्रतिकूल और विपथगामिनी मनोवृत्तियाँ है (हैंगी)। तो भी यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारी पार्टी मे अब भी ऐसी मनोवृत्तियाँ मौजूद है। हमे इन शरणस्थानों को मूँदना होगा, सारी पार्टी को इस मूँदने के काम को करना होगा। हमारे पार्टी-स्कूल को इसमे हिस्सा लेना होगा। मनोमयवाद, सम्प्रदायवाद और पार्टी लकीरवाद–इन सभी विपथगामिनी मनोवृत्तियों की अपनी ऐतिहासिक उत्पत्ति है। यह विचार सारी पार्टी नही रखती तो भी वह लगातार हमे तग करती रहती है; इसलिए यह आवश्यक है कि हम उनका प्रतिरोध और सुधार करे, यह आवश्यक है कि उनका विश्लेषण और स्पष्टीकरण करे, और यह आवश्यक है कि उनका अध्ययन करे।

" अतः हमारे कर्तव्य है : शिक्षा-सम्बन्धी मनोवृत्ति का सुधार करने के लिए मनोमयवाद-विरोध, पार्टी-मनोवृत्ति को सुधारने के लिए सम्प्रदायवाद-विरोध, साहित्य की मनोवृत्ति को सुधारने के लिए पार्टी-लकीरवाद-विरोध।

" यदि हम शत्रु को पराजित करना चाहते है, तो हमे पार्टी के भीतर की इन मनोवृत्तियो के सुधार के काम को पूरा करना होगा। शिक्षा-सम्बन्धी मनोवृत्तियाँ साथ ही पार्टी शिक्षा सम्बन्धी मनोवृत्तियाँ है, साहित्य-सम्बन्धी मनोवृत्तियाँ साथ ही पार्टी-साहित्य-सम्बन्धी मनोवृत्तियाँ है। इस प्रकार, दोनो ही पार्टी मनोवृत्तियाँ है। अगर हमारी पार्टी-मनोवृत्तियाँ पूरी तौर से सिद्धान्तानुमोदित है, तो सारे राष्ट्र के लोग हमसे सीख ग्रहण करेंगे और इन बेठीक मनोवृत्तियोवाले पार्टी के बाहर के लोग, अगर वह सदिच्छा रखनेवाले है, हमसे सीखेंगे, अपनी भूलों को दुरुस्त करेंगे। इस प्रकार हम सारे राष्ट्र को प्रभावित करने मे सफल होगे। यदि कम्युनिस्ट पार्टी की कर्मी-पक्ति अच्छी तरह व्यवस्थित है, यदि हम कदम से कदम मिलाकर चलनेवाले है, यदि हमारी

सेनाएँ सधी हैं और हमारे हथियार सक्षम हैं, तो शत्रु चाहे जितना भी शक्तिशाली हो, **वह हमारे हाथों हार खाने से नहीं बच सकता।**

" **मैं अब मनोमयवाद** की विवेचना करता हूँ।

" **मनोमयवाद शिक्षा में** *एक सिद्धान्त-अननुमोदित मनोवृत्ति है। वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद-विरोधी **है, और** **कम्युनिस्ट पार्टी के साथ-साथ कायम** नही रह सकता। हमे आवश्यकता है मार्क्सीय-लेनिनीय वृत्ति की शिक्षा **की। यह** शिक्षा-सम्बन्धी मनोवृत्ति केवल स्कूलो म ही अपेक्षित मनोवृत्ति नही है, बल्कि सारी पार्टी मे उसकी जरूरत **है। यह** संगठनों, सभी कर्मियों और सभी पार्टी-मेम्बरो का नेतृत्व करने मे विचार-सम्बन्धी एक समस्या **है। यह** मार्क्सवाद-लेनिनवाद की ओर पग बढाने एव अपने कामो की ओर मारी पार्टी मे माथियो के पग बढाने* **की समस्या है।** चूँकि वह इम स्वभाव की है, इमलिए शिक्षा-मम्बन्धी मनोवृनि की समस्या अपवादरूपेण प्रथम **महत्त्व रखती है।**

" **वर्तमान** ममय मे सिद्धान्तियो के स्वभाव, बुद्धिजीवियो के स्वभाव, सिद्धान्त और व्यवहार के बीच के सम्बन्ध इत्यादि जैसे प्रश्नो के विषय मे कितने ही अस्त व्यस्त खयाल काम कर रहे हैं।

" पहला प्रश्न है : क्या पार्टी का मैद्धान्तिक तल ऊँचा है या नीचा ? हाल मे मार्क्सवाद-लेनिनवाद-सम्बन्धी बहुत-सी पुस्तका का अनुवाद हुआ है, और बहुत-सी पढी भी गई है। यह बहुत अच्छा है। लेकिन, क्या हम इसके कारण कह मकते है कि पार्टी ऊँचे सैद्धान्तिक तल पर पहुँच गई है ? निश्चय ही, पहले की अपेक्षा हमारा तल कुछ ऊँचा है, तो भी चीनी क्रान्तिकारी आन्दोलन क मूल्यवान अनुभव का देखते हमारे सैद्धान्तिक तल की प्रगति असाधारण रूप म मन्द और पिछडी हुई है, और आम तौर से हमारा मिद्धान्त हमारे क्रान्तिकारी अनुभव के साथ साथ नही चल सका है। यह कहना तो और भी गलत है कि हमारा मिद्धान्त अनुभव मे आग बढ गया है। अभी हम इस मूल्यवान अनुभव का आवश्यक मैद्धान्तिक तल तक नही उठा पाये है। अभी तक हम क्रान्ति के मभी या अत्यन्त आवश्यक प्रश्ना की परीक्षा नही कर मके है, और न उन्हे मैद्धान्तिक तल पर उठा सके है।

" चीन की आर्थिक, राजनीतिक सैनिक व्यवस्था और सम्कृति का ही ले लो, हममे मे कितने ऐसे है, जिन्होने इनके सम्बन्ध म ऐसे सिद्धान्त निकाले है, जो वस्तुतः सिद्धान्त है, जिनम वैज्ञानिक रूप है और जो सुसगठित ढाँचेवाले है, और जो कवल सिद्धान्तो क ककाल मात्र नही है ? यह बात आर्थिक व्यवस्था पर भी विशेष तौर मे लागू होती है। अफीम युद्ध का बीत एक मौ वर्ष हो गय, तो भी चीनी पूँजीवाद के विकास के सम्बन्ध मे अभी तक वास्तविक तौर मे वैज्ञानिक और चीनी आर्थिक विकास की वास्तविकताओ के अनुरूप कोई मैद्धान्तिक कृति नही तैयार की जा सकी है। चीनी अर्थशास्त्र के सम्बन्ध म क्या हम कह सकत है कि उसका सैद्धान्तिक तल ऊँचा हो चुका है ? क्या हम कह सकते है कि हमारी पार्टी मे ऐसे अर्थशास्त्री सिद्धान्ती मौजूद है, जो कि उचित मान पर ठीक उतरते है ? यह मचमुच ही नही कहा जा सकता। क्या हम मिद्धान्तियो के होने का दावा मिर्फ इसलिए कर मकत है कि हमने मार्क्सवाद लेनिनवाद के ऊपर बहुत सारे ग्रथ पढ लिये है ? इनमे से एक बात भी हम नही कह सकते।

" मार्क्सवाद-लेनिनवाद वह सिद्धान्त है, जिसे कि मार्क्स, एगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने वास्तविक तथ्यों के आधार पर निर्मित किया है। वह एतिहासिक तथा क्रातिकारी अनुभव क आधार पर निकाले साधारण निष्कर्ष के रूप मे है। अगर हमने इस सिद्धान्त को केवल पढा मात्र है और उसे ऐतिहासिक तथा क्रातिकारी वास्तविकता के सम्बन्ध मे अनुसन्धान का आधार नही बनाया, चीन की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप ऐसा सिद्धान्त नही निर्मित किया, जो कि हमारा निजी और एक खास स्वभाव का है, तो यह कहना गैर-जिम्मेदारी की बात होगी कि हम मार्क्सवादी सिद्धान्ती है। अगर कोई व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर के रूप मे काम करता है, लेकिन चीनी समस्याओ को इस तरह देखने का आदी है, तो वह उन्हे देख नही सकता। रोज देखना है, लेकिन जानता कुछ नही है, चश्मा लगाता है, तो भी कुछ नही देखता। अगर कोई व्यक्ति मार्क्स, एगेल्स, लेनिन और स्तालिन की सम्पूर्ण ग्रथावलिया को अलमारी मे ही देखता है, तो उसकी कामयाबियाँ अत्यन्त दरिद्र छोड

और कुछ नही हो सकती। यदि हम मार्क्सवादी अर्थशास्त्र या दर्शन को केवल दोहराना जानते है, पहले से दसवे अध्याय तक दोहराते रहना जानते हैं, यहाँ तक कि वह अत्यधिक पक जाती है (हँसी), किन्तु उनको व्यवहार मे लाने मे बिल्कुल असमर्थ है, तो क्या हम मार्क्सवादी सिद्धान्ती समझे जा सकते हैं ? शायद नही। यह अच्छा होगा, यदि इस तरह के सिद्धान्ती हमारे यहाँ कमतर हो। यदि कोई आदमी मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की दस हजार जिल्दो को पढता है और हरेक जिल्द को हजार बार पढता है और इस प्रकार प्रत्येक वाक्य को स्मृति मे दोहरा सकता है, तो भी वह सिद्धान्ती नही समझा जा सकता।

"किस प्रकार के सिद्धान्तियो की हम आवश्यकता है ? हमे ऐसे सिद्धान्ती चाहिएँ, जोकि अपने चिन्तन को मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के दृष्टिकोणो, विचारो और शैलियो पर आधारित करे, जो इतिहास और क्रांति मे पैदा होनेवाली वास्तविक समस्याओ की ठीक व्यवस्था कर सके, चीनी अर्थनीति, राजनीति, सैनिक व्यवस्था और संस्कृति सम्बन्धी भिन्न भिन्न समस्याओ की वैज्ञानिक व्यवस्था, विश्लेषण और सैद्धान्तिक व्यवस्था कर सके। इस प्रकार के सिद्धान्ती की हमे आवश्यकता है। इस प्रकार के सिद्धान्ती होने के लिए आदमी को मार्क्सवाद लेनिनवाद एवं मार्क्सवाद लेनिनवाद के दृष्टिकोणो, विचारो और शैली को ठीक तौर से समझना होगा। उन्हे चीन की वास्तविक समस्याओ के गम्भीर तथा वैज्ञानिक विश्लेषणो को इस्तेमाल करने मे समर्थ होना चाहिए, जिससे कि वह उनके विकास के नियमो का आविष्कार कर सके। वस्तुत हम इस तरह के सिद्धान्ती की आवश्यकता है।

"केन्द्रीय कमेटी ने अभी अभी एक प्रस्ताव निकाला है, जिसमे स्पष्ट मे बतलाया गया है कि हमारे साथियो को सबसे पहले मार्क्सवाद लेनिनवाद के दृष्टिकोणो, विचार और चिन्तन शैली पर अधिकार करना चाहिए, फिर चीनी इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, सैनिक व्यवस्था और संस्कृति के सम्बन्ध मे तत्परतापूर्वक अनुसन्धान मे लगना चाहिए तब और प्रत्येक समस्या का परीक्षण और अनुसन्धान करने के बाद सिद्धान्त निर्मित करना चाहिए। हमारे कन्धो पर यह जिम्मेवारी है।

"हमारे पार्टी स्कूल को मार्क्सवाद लेनिनवाद के सिद्धान्तो को पढ लेने मात्र से संतुष्ट नही होना चाहिए, बल्कि पहले उन पर अधिकार प्राप्त करके फिर उन्हे व्यवहार मे लाना चाहिए। अधिकार-प्राप्ति का मुख्य लक्ष्य है व्यवहार। हम योग्यता के तल को गिनने के लिए प्रति सैकडा का इस्तेमाल करते है, हमे योग्यता का कौन सा तल प्राप्त होगा, यदि हम हजार दस हजार पुस्तको मे से प्रत्येक को हजार बार पढे, लेकिन उसका व्यवहार बिलकुल न कर सके ? मै कहूँगा, हम एक प्रतिशत नम्बर भी नही मिलना चाहिए (हँसी)। किन्तु, यदि मार्क्सवाद लेनिनवाद के विचारो को एक या दो वास्तविक समस्याओ की व्याख्या करने मे इस्तेमाल करने मे समर्थ हो, तो तुम्हे प्रशंसा प्राप्त होगी और साथ ही कुछ नम्बर भी अधिक योग्यता के परिचयस्वरूप मिलेगे। जितनी ही बहुसंख्यक, अधिक व्यापक और गम्भीर व्याख्याएँ होगी, उतना ही तुम्हारा वर्ग ऊँचा होगा। हमारे पार्टी स्कूल को मार्क्सवाद लेनिनवाद के अध्ययन कर लेने के बाद, चीनी समस्याओ के निरीक्षण के सम्बन्ध मे आदमी के निर्णय का दर्जा निश्चित करने मे इस मान को स्वीकार करना चाहिए। कुछ ऐसे होगे, जो उन्हे स्पष्ट देखते है और कुछ नही, कुछ देखने मे समर्थ हैं और कुछ नही, उच्चतर और निम्नतर, भले और बुरे का वर्गीकरण इन विशेषताओ के अनुसार होना चाहिए।

"तथाकथित बुद्धिजीवियो की समस्या के बारे मे क्या कहना है ? चूँकि हमारा चीन अर्ध उपनिवेशीय, अर्ध सामन्ती देश है, और इसकी संस्कृति अविकसित है, इसलिए बुद्धिजीवी वर्ग का यहाँ खास मूल्य है। केन्द्रीय कमेटी के प्रस्ताव के अनुसार हमे एक विस्तृत बुद्धिजीवी वर्ग तैयार करने की कोशिश करनी होगी। यह बिल्कुल ठीक है कि हम उनकी तरफ स्वागत का हाथ बढाना चाहिए, शर्त केवल यही है कि वह क्रान्तिकारी और प्रतिरोध-युद्ध मे हिस्सा लेने के लिए इच्छुक हो। हम इसे बिलकुल आवश्यक समझते है कि बुद्धिजीवियो को सम्मानित किया जाय, क्योकि बिना क्रान्तिकारी बुद्धिजीवी वर्ग के क्रान्ति सफल नही हो सकती।

"तो भी, हम जानते हैं कि कितने ही ऐसे ही बुद्धिजीवी हैं, जो अपने को भारी पंडित समझते हैं, जो अपने ज्ञान का भारी प्रदर्शन करते हैं और यह अनुभव नही करते कि इस तरह का मनोभाव उनकी प्रगति

के लिए हानिकारक और बाधक है। उन्हें इस सच्चाई को अनुभव करना चाहिए कि बहुतेरे तथाकथित बुद्धिजीवी वस्तुतः अत्यन्त अशिक्षित है, और कमकरों और किसानों का ज्ञान उनकी अपेक्षा कभी-कभी कितनी ही बातों में बढ़-चढ़कर होता है। इसके बारे में कोई कह सकता है : "आहा ! तुम इसे तर-ऊपर कर रहे हो। यह ऊल-जलूल शब्दाडम्बर है !" (हँसी) किन्तु साथियो, उत्तेजित मत होओ। मै जो कह रहा हूँ, वह कुछ हद तक बुद्धिपूर्वक है।

" *ज्ञान क्या है ? प्राचीन काल से आज तक केवल दो प्रकार के ही ज्ञान है : एक प्रकार का ज्ञान है उत्पादन-सम्बन्धी संघर्ष का ज्ञान और दूसरा है वर्ग-संघर्ष सम्बन्धी ज्ञान।* राष्ट्रीय संघर्ष-सम्बन्धी ज्ञान भी *इन्हीं मे सम्मिलित है। इससे बाहर कौन-सा ज्ञान है ? कोई नही।* प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान इन दोनों प्रकारों के ज्ञानों के स्फटिकीकरण (परिमार्जित रूप) के अतिरिक्त और कुछ नही है।

" अब जरा उन विद्यार्थियों के सम्बन्धों मे विचार कीजिए, जो कि पढाई समाप्त करके अपने स्कूलो को छोडते है, किन्तु जो उस सारे समय समाज की व्यावहारिक कार्रवाइयों से बिलकुल अलग-अलग रहे है। वह अपने को उस समय कैसी स्थिति मे पाते है ? किसी आदमी ने स्कूल के दर्जो से यूनिवर्सिटी तक पढाई की है, वह ग्रेजुएट बना है और शिक्षित समझा जाता है, तो भी पहली बात यह है कि वह खेत नही जोत सकता, दूसरी बात यह कि उसे कोई व्यापार मालूम नही है, तीसरी बात यह कि वह लड नही सकता, चौथी यह कि वह एक काम को भी ठीक से कर नहीं सकता। इन क्षेत्रों मे से किसी मे उसे अनुभव नही और न उसे जरा भर भी व्यावहारिक ज्ञान है। उसके पास जो कुछ है, केवल किताबी ज्ञान। क्या ऐसे आदमी को पूर्ण बुद्धिजीवी समझा जा सकता है ? यह बहुत कठिन है, अधिक से अधिक मै उसे अर्ध बुद्धिजीवी समझ सकता हूँ, यह इसीलिए कि उसका ज्ञान अभी अपूर्ण है।

" कौन सा ज्ञान अपेक्षाकृत पूर्ण है ? सभी अपेक्षाकृत पूर्ण ज्ञान दो सीढियों मे तैयार होता है : प्रथम यह, कि तुरन्त के प्रत्यक्ष द्वारा हुआ ज्ञान, दूसरे, तर्क द्वारा हुआ ज्ञान, चिन्तन द्वारा हुआ ज्ञान। चिन्तन द्वारा हुआ ज्ञान तुरन्त प्रत्यक्ष द्वारा हुए ज्ञान के विकास की उच्चतर सीढी है। विद्यार्थियों का किताबी ज्ञान किस श्रेणी का है ? यदि हम यह भी समझ ले कि उनका ज्ञान ठीक है, तो भी वह उनके पूर्वजों के उत्पादन सम्बन्धी संघर्ष और वर्ग-संघर्ष के अनुभव से प्राप्त वाद भर है, वह अपने वैयक्तिक अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान नही है। इस प्रकार का वाद-सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करना उसके लिए अत्यन्त आवश्यक है; लेकिन उन्हे यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि यह ज्ञान उनके लिए उल्टा पुल्टा, पिछडा और एकागी है। दूसरों ने उसे सिद्ध किया है, लेकिन विद्यार्थियों ने स्वयं उसकी मन्यता को परखा नही है। उन्हे समझाना चाहिए कि इस प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करना बिलकुल कठिन नही, बल्कि अत्यन्त आसान है। इसकी तुलना मे भोजन तैयार करने मे रसोइये का काम अधिक कठिन है। कोई खाने लायक चीज तैयार करने के लिए उसे ईंधन, चावल, तेल, नमक, चटनी, सिर्का और दूसरी सामग्री के मिश्रण को इस्तेमाल करना होगा। निश्चय ही यह आसान नही है, और बढिया भोजन पकाना तो और भी मुश्किल है। यदि हम भोजनशाला के रसोइया के कामो की तुलना अपने घरो के रसोइयो से करे, तो हमे भारी भेद मालूम होगा। यदि अत्यधिक ईंधन लगा दिया गया, तो भोजन जल जायगा, अत्यधिक सिर्का डाल दिया, तो वह अधिक खट्टा हो जायगा (हँसी)।

" भोजन पकाना, अनेक प्रकार के थालो का तैयार करना सचमुच ही एक कला है। लेकिन किताबी ज्ञान कैसा है ? अगर पढना छोडकर तुम और कुछ न करो, तो तुम्हें तीन से पाँच हजार अक्षरो को केवल पहचानना है, उन्हें एक कापी से लेकर रख लेना है, अपने हाथ मे कोई पुस्तक पकड लेनी है। फिर तुम अपने सिर को लगातार हिलाते पढना शुरू करते हो। लेकिन, किताबे चल-फिर नही सकती, किसी किताब को तुम अपनी इच्छा से खोल वा बन्द कर सकते हो। दुनिया मे यह सबसे आसान काम है, उससे कही अधिक आसान, जितना कि एक रसोइये को भोजन तैयार करने मे होता है और उससे तो अत्यन्त ही आसान, जितना कि उसे एक सूअर के मारने से पडता है। उसे सूअर पकडना होता है... सूअर दौड सकता है... (हँसी)... वह उसे मारता है... सूअर चिल्लाता है (हँसी)। मेज पर रक्खी किताब भाग नहीं सकती और न वह चिल्ला सकती

है (हँसी)। तुम जैसे चाहो वैसे ढंग से उसको काम में ला सकते हो। करने की क्या कोई दूसरी चीज इससे आसान है ? इसीलिए मै तुममे से उन लोगों–जिनके पास केवल किताबी ज्ञान है और अभी भी उनका वास्तविकता से सम्पर्क नहीं हुआ है, जिनके पास व्यावहारिक अनुभव बहुत कम है–को सलाह देता हूँ कि वह अपनी कमियो को, खामियो को अनुभव करे और अपनी मनोवृत्ति को थोडा और नम्र बनाएं।

" किस तरह एक अर्ध-बुद्धिजीवी को वास्तविक उपाधिवाले बुद्धिजीवी के रूप में परिणत किया जा सकता है ? इसका केवल एक ही रास्ता है : जो केवल किताबी ज्ञान रखनेवाले है, वह व्यावहारिक कार्यो में लगे, व्यावहारिक कमकर बन जायें, और सैद्धान्तिक काम करनेवाले व्यावहारिक अनुसन्धान करनेवालों के रूप मे परिणत हो जायें। इस प्रकार हम अपने लक्ष्य पर पहुँच सकते है।

" यह सुनकर कुछ लोग अपना होश-हवाश खो गर्म हो उठेंगे और कहेंगे : 'तुम्हारी व्याख्या के अनुसार मार्क्स भी अर्ध बुद्धिजीवी अर्ध-शिक्षित थे।' मै कहूँगा कि यह बिलकुल ठीक है। पहली बात यह है कि मार्क्स एक सूअर को मार नही सकता था; दूसरी बात यह है, कि वह खेत जोत नहीं सकता था। पर उसने क्रान्तिकारी-आन्दोलन मे भाग लिया, और सौदे के उत्पादन के सम्बन्ध मे अनुसन्धान किया। करोड़ो आदमी प्रतिदिन इन सौदों को देखते और इस्तेमाल करते है, लेकिन उन पर दृष्टिपात नही करते। केवल मार्क्स ने उन्हे हर रूप मे अध्ययन किया, सभी पहलुओ से उनका परीक्षण किया, और उस तरह की एक भी असावधानी नही की, जैसाकि हम 'सोवियत संघ कम्युनिस्ट पार्टी इतिहास' के अध्ययन मे करते है। उसने सौदा उत्पादन के वास्तविक विकास का विश्लेषण किया, और विश्वव्यापी विद्यमान परिदर्शन (फेनोमेना) के परीक्षण से एक सिद्धान्त निकाला। उसने प्राकृतिक विज्ञान, इतिहास और क्रान्ति के सम्बन्ध मे वयक्तिक अनुसन्धान किया, और उसके अनुसार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद और सर्वहारा क्रान्ति के सिद्धान्तो का निर्माण किया। इस प्रकार मार्क्स को पूर्ण बुद्धिजीवी (शिक्षित) मानना पड़ेगा। उसमे और अर्ध बुद्धिजीवी के भीतर यही भेद है कि उसने वास्तविक क्रान्तिकारी आन्दोलन मे भाग लिया, सर्वान्तरग्राही वास्तविकता के सम्बन्ध में शोध और अनुसन्धान किया। इस प्रकार का सर्वान्तरग्राही ज्ञान सिद्धान्त कहा जाता है।

" हमारी पार्टी को ऐसे बहुत से साथियों की आवश्यकता है, जो सैद्धान्तिक काम कर सकें। वर्तमान मे हमारे बहुत से साथी सैद्धान्तिक अनुसन्धान करने की योग्यता रखते है, और उनमे अधिकांशतः समझदार और मेहनती है। हमे ऐसे साथियो की कदर करनी चाहिए, उनका भारी मूल्य मानना चाहिए। लेकिन उन्हे कार्यारम्भ ठीक तौर से करना होगा, पहले की भूलें नही दोहरानी होंगी। उन्हे मतवाद को दूर हटाना चाहिए और किताबो के पढ़ने तक अपने काम की इतिश्री नही समझनी चाहिए।

"सच्चा सिद्धान्त केवल एक ही प्रकार का है : वही जोकि पदार्थतन्त्र वास्तविकता के परीक्षण से निकाला गया है, और जो पदार्थतन्त्र वास्तविकता द्वारा सिद्ध है। जिस सिद्धान्त के बारे मे हम कह रहे है, उसके बराबर कोई दूसरी चीज नही हो सकती। स्तालिन ने साबित किया है, बतलाया है कि वास्तविकता से सम्बन्ध न रखनेवाला सिद्धान्त खोखला है। एक खोखला सिद्धान्त बेकार और बेठीक है, उसे फेंक देना होगा। हमें उन लोगो को पहचानकर लज्जित करना चाहिए, जोकि इस प्रकार के खोखले सिद्धान्तो के सम्बन्ध मे वाद-विवाद करने में आनन्द अनुभव करते है। पदार्थतन्त्र वास्तविकता से निकाला और पदार्थतन्त्र वास्तविकता द्वारा सिद्ध मार्क्सवाद-लेनिनवाद अत्यन्त ठीक, वैज्ञानिक और क्रान्तिकारी सत्य है। लेकिन बहुत-से लोग मार्क्सवाद लेनिनवाद को एक मुर्दा मतवाद के तौर पर पढते है और इस प्रकरर वह अपने निजी सैद्धान्तिक विकास को नुकसान पहुँचाते है, अपने और अपने साथियो की हानि करते है। दूसरी ओर, व्यावहारिक काम में लगे हुए वे साथी भी गलतियाँ कर सकते है, जोकि अपने अनुभव का बेठीक इस्तेमाल करते है। यह बिलकुल सच है कि ऐसे आदमियों के पास बहुत भारी मात्रा मे अनुभव है, और उनका ऊँचा मूल्य स्वीकार करना चाहिए। लेकिन, यदि वह अपने अनुभव मे ही सतुष्ट हो जायें, तो भारी खतरे की सम्भावना है। उन्हे समझना चाहिए कि उनके ज्ञान का अधिकाश तुरन्त के प्रत्यक्ष द्वारा प्राप्त हुआ है, इसलिए वह सीमित है, इसीलिए चिन्तन तथा व्यापक ज्ञान के सामने वह कच्चे उतरते है, अर्थात सिद्धान्त मे वह कच्चे है। इस प्रकार, उनका ज्ञान भी

अपेक्षाकृत अपूर्ण है। और, बिना अपेक्षाकृत पूर्ण ज्ञान के क्रान्ति को पूरा करना असम्भव है।

" इस प्रकार अपूर्ण ज्ञान दो प्रकार के हैं : एक है किताबों से लिया हुआ ज्ञान, और मुझे यह कहना पड़ेगा कि मार्क्सीय-लेनिनीय किताबे भी आदमी को चिन्तन मे खोखला रख सकती है। दूसरे प्रकार का ज्ञान है, तुरन्त के प्रत्यक्ष के पहलू से परिमाण से अधिक और इसलिए सीमित। बुद्धिसगत और व्यापक रूप मे विकसित नही हुआ है। दोनों ही प्रकार के ज्ञान एकागी हैं। यह तभी उपयोगी, और अपेक्षाकृत पूर्ण हो सकते हैं, जब कि दोनों मिला दिये जायें और उनमें उपयोगी तथा अपेक्षाकृत पूर्ण ज्ञान पैदा किया जाय।

" अच्छा, यदि हमारे कमकर और किसान-कर्मी सिद्धान्त का अध्ययन करना चाहते हैं, तो पहले उन्हे संस्कृति का अध्ययन करना चाहिए, क्योकि यदि संस्कृति न हो, तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अवगाहन नही किया जा सकता। ठीक समय पर संस्कृति के अच्छी तरह अध्ययन कर लेने के बाद वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन कर सकते हैं। जब मै तरुण था, तो मै किसी मार्क्सवादी लेनिनवादी स्कूल में नही गया, मैंने बहुत-सी चीज पढ़ी हैं। कन्फूशी ने कहा है, 'क्या यह आनन्द की चीज नही है कि तुम अपने पाठ पढ़ो और उन्हे लगातार व्यवहार में लाओ ?' मैने ठीक इसी तरह पढ़ना सीखा। उदाहरणार्थ, 'अध्ययन' के लिए अक्षरो को सीखा, और अब मैं उन्हे मार्क्सवाद लेनिनवाद के 'अध्ययन' में इस्तेमाल कर सकता हूँ। किन्तु, आजकल लोग कन्फूशी को नही, बल्कि नई राष्ट्रभाषा, इतिहास, भूगोल और प्राकृतिक विज्ञान-सम्बन्धी साधारण ज्ञान को पढ़ते है। पूरी तौर से अध्ययन कर लेने के बाद यह सांस्कृतिक पाठ सभी जगह इस्तेमाल में आ सकते है। हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी बड़े जोर के साथ कमकर और किसान कर्मियो को सांस्कृतिक अध्ययन में लगने के लिए कह रही है, क्योंकि उनके अध्ययन कर लेने के बाद राजनीति, सैनिक व्यवस्था और अर्थनीति सभी का अध्ययन किया जा सकता है। नही तो, चाहे उनके पास अनुभव की सम्पत्ति हो या न हो, अनुभव अधिक मात्रा में हो या न हो, कमकर किसान कर्मी बढ़कर उस स्थिति म नही पहुँच सकेंगे, जहाँ पर सिद्धान्त निकालना सम्भव है।

" इस प्रकार यदि हम मनोमयवाद विरोधी है, तो हम यह भी ध्यान रखना होगा कि उपरोक्त दोनो प्रकार का ज्ञान उन क्षेत्रों में विकसित हो, जहाँ पर उनकी कमी है, और यह भी कि यह दोनो प्रकार के ज्ञान एक दूसरे से मिलाये जायें। किताबी ज्ञानवाले यदि व्यावहारिक क्षेत्रों मे विकसित हो सकें, तभी उनके लिए अपनी पुस्तकों से आगे बढ़ना सम्भव हो सकेगा, तभी उनके लिए मतवाद की भूल से बचना मुमकिन हो सकेगा। काम के अनुभव रखनेवाले आदमियों को सिद्धान्त का अध्ययन करना और पढ़ने के मूल्य को समझना होगा· तभी उनके लिए अपने अनुभव को बुद्धि और विश्लेषण के तल तक, सिद्धान्त के तल तक उठाना सम्भव होगा। केवल तभी उनके लिए अपने व्यावहारिक अनुभव को व्यापक सत्य मानने से बचना और प्रयोगवाद (इम्पाइरिकिज्म) की गलती से बचना सम्भव होगा। मतवाद और प्रयोगवाद दोनो मनोमयवाद के रूप है, यद्यपि वे दो भिन्न-भिन्न चरम पंथिताओं में उत्पन्न होते है।

" इस प्रकार हमारी पार्टी में दो प्रकार के मनोमयवाद है जिनमें एक प्रकार है मतवाद और दूसरा प्रयोगवाद। दोनो भूले तस्वीर के सारे नही, बल्कि केवल एक पहलू को दखती है। यदि तुम इस एकांगिता की उपेक्षा करते हो, और इसकी भूलो को समझने म असमर्थ हो, और साथ ही आगे बढ़ने की इच्छा रखते हो, तो तुम्हारे लिए भूल के पथ पर चलना आसान होगा।

" हमारी पार्टी के भीतर के इन दो प्रकारों के मनोमयवादो मे से अधिक ध्यान देने लायक और खतरनाक मतवाद है, क्योकि यह आसानी से मार्क्स एंगेल्स-लेनिन स्तालिनवाद का चोला पहनकर कमकर-किसान कर्मियो को डरा सकता है और स्थानीय घास के दानो को अपने वैयक्तिक नौकर के तौर पर अपने कब्जे मे कर सकता है। कमकर-किसान कर्मियो के लिए इसके चेहरे के असली रूप को पहचानना मुश्किल है। यह भोले-भाले तरुणो को भी डराकर अपने हाथों मे कर सकता है। यदि मतवाद पर विजय प्राप्त कर ले, तो हम किताबी ज्ञानवाले कर्मियो मे अनुभव रखनेवाले कर्मियो के साथ सहयोग रखने मे उत्साह पैदा करने और उन्हे व्यावहारिक बातो के अध्ययन मे लगने की ओर प्रेरित कर सकेंगे। तब अनुभव और सिद्धान्त दोनो से सयुक्त बहुत-से

अच्छे कर्मियों को पैदा कर सकेंगे और बहुत-से सच्चे सिद्धान्तों का पैदा करना सम्भव हो सकेगा। यदि हम मतवाद पर विजय प्राप्त कर लें, तो अनुभव रखनेवाले साथी अच्छे शिक्षको को प्राप्त कर सकते हैं और सिद्धान्त के तल तक ऊपर उठ सकते हैं, जिससे प्रयोगवाद की भूल से वह बच सकते हैं।

"... हमारे साथियों को यह समझ लेना चाहिए कि हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद का इसलिए अध्ययन नहीं करते कि वह हमारी आँखो को अच्छा लगता है, या उसमें शैतान और भूत-प्रेत पर विजय करने की सीख के लिए माओ शान्-पर चढ़नेवाले चाववादी साधुओ के सिद्धान्तों की तरह कोई रहस्यपूर्ण मूल्य है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद मे न सौंदर्य है न उसका कोई रहस्यपूर्ण आध्यात्मिक मूल्य है। वह केवल अत्यन्त उपयोगी है। ऐसा मालूम होता है कि आज तक कितने ही लोगों ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को रामबाण औषध समझा है : अगर एक बार तुमने उसे पा लिया, तो थोड़े से प्रयत्न मे तुम अपने सारे रोगो को उससे दूर कर सकते हो। यह एक प्रकार की बच्चों जैसी मूर्खता है। हमें ऐसे लोगो को होश मे लाने के लिए एक आन्दोलन आरम्भ करना चाहिए। जो लोग मार्क्सवाद-लेनिनवाद को एक धार्मिक मतवाद समझते है, वह इस प्रकार की अन्धी अज्ञानता दिखलाते है। हमें साफ तौर से उन्हें कहना चाहिए : 'तुम्हारा मतवाद बेकार है,' अथवा कुछ कठोर वाक्य कहने पर 'तुम्हारा मतवाद पाखाने से भी कम उपयोगी है।' हम देखते है कि कुत्ते का पाखाना खेतों को उर्वर कर सकता है, और मनुष्य का कुत्ते का भोजन हो सकता है। और मतवाद ? न वह खेतो को उर्वर कर सकता है और न कुत्ते का भोजन हो सकता है। फिर उसका क्या उपयोग है ? (हँसी)

" साथियो ! तुम जानते हो कि इस तरह की बात का उद्देश्य है मार्क्सवाद लेनिनवाद को मतवाद समझनेवालों का उपहास करना, उन्हें डराना और जागृत करना, उनके भीतर मार्क्सवाद लेनिनवाद के प्रति ठीक मनोभाव पैदा करना। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने बार बार कहा है : 'हमारा सिद्धान्त मतवाद नही है, यह काम करने के लिए पथ दर्शक है।' वे लोग इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वाक्य को सबसे अधिक भूलते हैं। सिद्धान्त और व्यवहार को केवल तभी मिलाया जा सकता है, जब कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के आदमी मार्क्सवाद-लेनिनवाद के दृष्टिकोणों, विचारों और शैलियों को लेकर उनका प्रयोग चीन पर करें, और चीनी इतिहास की वास्तविकताओं के आधार पर सोच समझकर अनुसन्धान करके सिद्धान्त का निर्माण करें। अगर हम केवल सिद्धान्त और प्रयोग के सम्मिलन के बारे मे शब्दाडम्बर-भर करें, और अपने कामो मे उस सम्मिलन का व्यवहार न करें, तो चाहे हम सौ सालो तक बातें क्यों न बघारते रहे, उससे कोई फायदा नही होगा। चूँकि हम समस्याओ के सम्बन्ध मे मनोमयता और एकांगिता के विरुद्ध हैं, इसलिए हमें मतवाद के और एकांगी स्वभाव के जाल को तोड़ फेंकना होगा।

" सारी पार्टी के शिक्षा सम्बन्धी मनोभाव के सुधारने के उपाय के तौर पर मनोमयवाद विरोध के बारे मे मुझे यही कहना था। अब मे साम्प्रदायिकता-सम्बन्धी समस्या को लेता हूँ।

" बीस वर्षो के तापन और घर्षण के बाद हमारी पार्टी सम्प्रदायवाद के पूरे पूरे प्रभाव मे नही है, लेकिन अन्तर्पार्टी और बहिःपार्टी सम्प्रदायवाद के अवशेष अब भी मौजूद जरूर है। अन्तर्पार्टी सम्प्रदायवाद भीतरी विरोध पैदा करना चाहता है, और पार्टी के एकताबद्ध तथा घनीभूत करने मे बाधा पहुँचाता है। बहिःपार्टी सम्प्रदायवाद बाहर से विरोध पैदा करता तथा सारे राष्ट्र के साथ पार्टी के एकताबद्ध होने मे बाधा पहुँचाता है। सारे पार्टी के साथियो और सारे राष्ट्र के लोगो के एकताबद्ध करने के पार्टी के महान कार्य को स्वतन्त्रतापूर्वक और निर्बाध रूप से तब तक पूरा नहीं किया जा सकता, जब तक कि इन दोनो मनोवृत्तियों की ध्वंसक जड़ो को हटा नहीं दिया जाता।...

" मैं जानता हूँ कि हमें काम को ईमानदारी से करना चाहिए। दुनिया मे बिना ईमानदारीवाली मनोवृत्ति के किसी काम को पूरा करना बिलकुल असम्भव है। ईमानदार आदमी कौन है ? मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ईमानदार आदमी हैं। पाखण्डी कौन है ? त्रोत्स्की, बुखारिन और चाग कुओ-ताओ पाखण्डी थे, वैसे ही जैसा कि ली ली-सान। जो आदमी अपने वैयक्तिक और विशेष हितों के लिए आजादी की माँग करते है, वह भी पाखण्डी हैं। जो लोग चालबाज हैं, जो अवैज्ञानिक मनोवृत्ति के साथ काम करना चाहते हैं, अथवा

जो अपने को चालबाज और चालाक समझते हैं, वह वस्तुतः अत्यन्त मूर्ख है, उनमें कोई भलाई नहीं हो सकेगी। हमारे पार्टी-स्कूल के विद्यार्थियो को इस समस्या की ओर अपना ध्यान जरूर देना चाहिए। हमें ऊपर से नीचे तक शुद्ध और साफ एक केन्द्रबद्ध तथा एकताबद्ध पार्टी स्थापित करने में नहीं चूकना चाहिए। सिद्धान्त के प्रश्नों पर टोली-संघर्षों को हटाकर हमें देखना होगा कि सारी पार्टी के कूच करने की व्यवस्था नियमित और एक जैसी हो और उसके संघर्ष का लक्ष्य एक हो। व्यक्तिवाद और साम्प्रदायिकता का विरोध करना परम आवश्यक है।

" हमें बाहरी (विशेष) और स्थानीय कर्मियो के बीच के सम्बन्धों को मजबूत बनाना होगा और दोनों का कुछ सम्प्रदायवादी मनोवृत्तियो का विरोध करना होगा। चूँकि जापान-विरोधी युद्ध अड्डे आठवी रूट-सेना और नवीन चतुर्थ-सेना के बाद ही स्थापित हुए, इसलिए बाहर से कर्मियो के आने के बाद ही बहुत-से स्थानो में काम का विकास हो सका। इसीलिए बाहरी (विशेष) और स्थानीय कर्मियों के बीच के सम्बन्ध के बारे में बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। यह समझ लेना चाहिए कि ऐसी स्थितियों में युद्ध के अड्डे मजबूत तभी हो सकेंगे और हमारी पार्टी अड्डों में जड़ तभी जमा सकेगी, जब कि बाहरी और स्थानीय कर्मियो के बीच एकता और मजबूत मित्रता स्थापित हो, नहीं तो यह होना असम्भव है।

" बाहरी और स्थानीय दोनो तरह के कर्मियों में अपने-अपने गुण है और दोनों में अपने-अपने दोष है। उन्हें अपने गुणों को कायम रखने में मजबूती दिखलानी चाहिए और अपनी गलतियों को सुधारना चाहिए; तभी प्रगति हो सकेगी। स्थानीय कर्मियो से बाहरी कर्मी भिन्न भिन्न परिस्थितियों और जनता के साथ अपने सम्बन्धों के अनुभावों में अवश्य भेद रक्खेंगे।

" उदाहरणार्थ, मुझे ही ले लो, पाँच या छः वर्ष हुए, जबकि मैं उत्तरी शन्सी में आया, तो भी इस भूभाग की स्थितियों और लोगों के सम्बन्ध का मेरा ज्ञान काओ काग जैसे साथियों की तुलना में नहीं लाया जा सकता। चाहे अनुसन्धान और शोध के बारे में मैं कितनी ही प्रगति करूँ, मैं सदा उत्तरी शन्सी के कर्मियों से कुछ घटकर ही रहूँगा। हमारे जो साथी शान्सी, हो पह, शानतुग और दूसरे जापान विरोधी युद्ध अड्डो में जाते है, उन्हें इस समस्या की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। साथ ही, यह भी ख्याल रखना चाहिए कि युद्ध अड्डे के भीतर के भू भागो के विकास की भिन्न भिन्न अवस्थाओं के कारण एक अकेले युद्ध अड्डे के एक भाग के भीतर भी बाहरी और स्थानीय कर्मियो के बीच में भिन्नताएँ है। अपेक्षाकृत पिछड़े हुए भूभाग में आये उस क्षेत्र के लिए बाहरी कर्मियों का एक प्रकार है, उन्हें स्थानीय कर्मियो की सहायता की समस्या पर खास ध्यान देना होगा। इस प्रकार, आम तौर से, जहाँ कहीं भी बाहरी कर्मी नेतृत्व की जिम्मेवारी लेते है, उन्हें स्थानीय कर्मियो के सम्बन्ध के कम विकास होने के दोष का अधिक भाग अपने सिर पर लेना होगा। इस प्रकार, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नेताओ की जिम्मेवारी सबसे अधिक है।

" वर्तमान में इस समस्या के ऊपर काफी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। कितने ही साथी है, जो स्थानीय कर्मियों को हलकी नजर से देखते है और उन पर हँसते है : 'स्थानीय लोग क्या समझते है ? गंवार !' इस तरह का आदमी स्थानीय कर्मियो के महत्त्व को बिलकुल नहीं समझता, नहीं उनके गुणों को समझ सकता है और न अपनी खामियो को ही। इस प्रकार वह साम्प्रदायिकता की गलत मनोवृत्ति को स्वीकार करता है। बिना किसी भी अपवाद के विशेष कर्मियो को स्थानीय कर्मियो का स्वागत करना चाहिए, रक्षा करनी चाहिए और बराबर उनकी सहायता करनी चाहिए। उनका उपहास हर्गिज नहीं करना चाहिए, न चोट पहुँचानी चाहिए।

" स्थानीय कर्मियों के गुणों को समझना चाहिए, विशेष कर्मियों के साथ पूर्ण और अविभक्त एकता स्थापित करने के लिए उन्हें अयुक्त और संकीर्ण दृष्टिकोणों से अपने को मुक्त करना चाहिए और उनके साथ एक होकर साम्प्रदायिकता की मनोवृत्ति से बचना चाहिए।

" यही बात सेना के कामवाले कर्मियों और स्थानीय कामवाले कर्मियो के आपसी सम्बन्ध के बारे में है। दोनो को पूर्णतया घनिष्ठ एकता में बँधना चाहिए और साम्प्रदायिक मनोवृत्तियो का विरोध करना चाहिए। सैनिक कर्मियो को स्थानीय कर्मियों की सहायता करनी चाहिए और स्थानीय कर्मियों को सैनिक कर्मियो की।

" यही बात सेना के कुछ भागो, कुछ इलाको और काम के कुछ भागो के ऊपर भी लागू है। यहाँ भी

केवल अपना-अपना ख्याल करने और दूसरों का कोई ख्याल न करने की मनोवृत्ति का विरोध करना चाहिए। ··· पुराने और नये कर्मियों के बीच का सम्बन्ध भी एक दूसरी समस्या उपस्थित करता है। जब से प्रतिरोध-युद्ध आरम्भ हुआ, तब से हमारी पार्टी का भारी विस्तार हुआ और भारी सख्या मे नये कर्मी पैदा हुए। यह बहुत अच्छा है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की अठारहवी कांग्रेस में साथी स्तालिन ने अपनी रिपोर्ट में कहा : 'पुराने कर्मियां की मात्रा कभी पर्याप्त नही है, वह आवश्यकता से कही कम है और विश्व के प्राकृतिक नियमों के चपेट मे पड़कर वह अशतः मुरझाने और नष्ट होने लगे है।' यहाँ पर वह कर्मियों पर प्रभाव डालनेवाली परिस्थितियों की एक और व्याख्या करते हैं, और दूसरी ओर प्राकृतिक विज्ञान की व्याख्या कर रहे हैं। अगर हम अपनी पार्टी के पुराने और नये कर्मियो के बीच सविस्तार और एक-सा सहयोग नहीं कर पाते, तो हमारा काम पूरा नही होगा। इसलिए पुराने कर्मियों का दिल से स्वागत करना चाहिए और उनकी ओर ध्यान देना चाहिए।

" निश्चय ही, नये कर्मियों मे दोष होगे। उन्होंने चिरकाल तक क्रान्ति में भाग नही लिया, उनमे अनुभव की कमी है। उनमे अब भी ऐसे आदमी मौजूद हैं, जोकि पुराने समाज के अवाछनीय विचारों की पृष्ठ में घिसटने से बचे नही है, जो निम्न-मध्यमवर्ग के उदार विचारों के अवशेषों को छोड़े नही है, किन्तु यह दोष शिक्षा और क्रान्तिकारी स्थितियों द्वारा धीरे-धीरे हटाये जा सकते है। उन (नये कर्मियों) का गुण, जैसाकि स्तालिन ने कहा है, यह है कि नई बातो के सम्बन्ध मे उनकी दृष्टि बडी तीक्ष्ण और ग्राहिका है, जिसके परिणामस्वरूप उनमे ऊँचे दर्जे का जोश और मनोबल है। ठीक इन्ही बातों में पुराने कर्मी घाटे में है। पुराने और नये कर्मियों को एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए, एक दूसरे से सीखना चाहिए, अपने गुणों को मजबूती से कायम रखना चाहिए और अपनी खामियों को दूर करना चाहिए, जिससे कि वह एक टोली की तरह एकताबद्ध और दृढ़ हो एकसाथ अपने कामो मे आगे बढ़ सके। सम्प्रदायवादी मनोवृत्तियों का विरोध करना होगा, साधारण परिस्थितियों मे, जब कि नेतृत्व की मुख्य जिम्मेवारी पुराने कर्मियो के ऊपर है, नये कर्मियों के साथ ठीक से सम्बन्धों के विकसित न होने का मुख्य दोष उन्हे स्वीकार करना पड़ेगा।

" अवयवों और सम्पूर्ण, व्यक्तियो और पार्टी, बाहरी और स्थानीय कर्मियां, सेना और स्थानीय कर्मियों, सैनिक इकाइयों और सैनिक इकाइयां, इलाकों और इलाकों, इस काम की टुकडी और उस काम की टुकड़ी के बीचवाले उपरोक्त सभी सम्बन्ध अन्तर्पार्टी सम्बन्ध है। इन सभी सम्बन्धों में साम्यवाद के भावों को आगे बढ़ाना चाहिए और साम्प्रदायिक मनोवृत्तियों का विरोध करना चाहिए, जिससे कि पार्टी के सदस्य सुन्दर व्यवस्था मे रहें, हम एक होकर कदम बढ़ाएँ और हमारे युद्ध के लक्ष्य दूरे हो। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समस्या है, अगर हमें पार्टी के मनोबल को सुधारना है, तो इसे पूरी तौर से हल करना होगा। अगर हम मनोमयवादी नहीं होना चाहते है, और मार्क्सवादी-लेनिनवादी तथ्य के द्वारा सत्य को प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें पार्टी के भीतर सम्प्रदायवाद के अवशेषों को अलग बहा देना होगा, और पार्टी के हितों को वैयक्तिक तथा खास हितो के ऊपर उठाते हुए पार्टी को पूर्ण और सुदृढ़ एकता की ओर बढ़ाना चाहिए।

" सम्प्रदायवाद के अवशेषों को अन्तर्पार्टी सम्बन्धों में से नष्ट करना तो है ही, साथ ही उन्हें पार्टी के बाहरी सम्बन्धों में से भी नष्ट करना होगा। वहाँ पर भी वह पार्टी की एक मनोवृत्ति है, जिसके सुधार की आवश्यकता है। सारी पार्टी के साथियों को एकताबद्ध करने मात्र से शत्रु को हराना सम्भव नही है। सारे राष्ट्र के लोगों को भी एकताबद्ध करना होगा, तभी शत्रु को हराना सम्भव होगा। बीस सालों में हम राष्ट्र के लोगों को एकताबद्ध करने के विशाल और कठिन काम मे लगे हुए हैं। जब से प्रतिरोध-युद्ध आरम्भ हुआ, तब से इस काम में हमारी सफलताएं पहले से कहीं अधिक हुई है। लेकिन, इसका यह अर्थ नहीं कि सभी साथियों के मनोभाव ठीक है अथवा वह सभी साम्प्रदायिक मनोवृत्तियां से मुक्त हैं। ऐसा कहना ठीक नही होगा, क्योंकि हमारे साथियो के एक समूह में ऐसी मनोवृत्ति है, कुछ की तो मात्रा मे गम्भीर है। बहुत-से साथी अ-पार्टी पुरुषों से बात करते समय अपने को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देते हुए दूसरों को नीची नजर मे देखते हैं, उनको हलका समझते हैं, एव दूसरों का सम्मान करने या दूसरों के गुणों को समझने की इच्छा नही रखते।

यह एक प्रकार की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति है। थोड़े-से मार्क्सवादी-लेनिनवादी वाक्यों के सीख लेने के बाद विनम्र होने की जगह ये साथी अभिमानी हो जाते है, और आम तौर से दूसरो को बेकार समझते हैं। वह स्वयं नही समझते कि वस्तुतः हम आधा ही समझते हैं।

" एक बात हमारे साथियों को अवश्य गाँठ बाँध लेनी चाहिए : पार्टी के बाहरवालों की तुलना में पार्टी के सदस्यों की संख्या हमेशा कम होगी। अगर प्रति सौ आदमी पर कम्युनिस्ट पार्टी का एक मेम्बर हो, तो 45 करोड़ के सारे देश में 45 लाख पार्टी-मेम्बर होंगे। मान लीजिए कि इतनी भारी सख्या मेम्बरो की हो सकती है, तो भी कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर सौ मे एक होंगे और 99 पार्टी से बाहर होंगे। फिर अ-पार्टी पुरुषों के साथ असहयोग करने के क्या कारण हो सकते हैं ? हमारा कर्तव्य है कि जो हमारे साथ सहयोग करने की इच्छा और क्षमता रखते हैं, उनके साथ सहयोग करें। उनका प्रत्याख्यान करने का हमें कोई अधिकार नही है। पर पार्टी-सदस्यों का एक समूह इस अर्थ को नही समझ पाता। जो हमारे साथ सहयोग करना चाहते है, उनको नीची निगाह से देखने या उनका प्रत्याख्यान करने का कोई कारण नही है। क्या मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन या स्तालिन ने ऐसे कारण हमें बतलायें ? नही। बल्कि इसके विरुद्ध उन्होंने बराबर जोर देकर कहा कि हम जनता से अपने को अलग अलग न करें, बल्कि उसके साथ घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करें। क्या चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमटी ने हमें ऐसे कारण बतलाए ? नही, केन्द्रीय कमेटी का एक भी काम ऐसा नही है, एक भी सुझाव ऐसा नही कहता कि हम जनता से अपने सम्बन्ध को काटकर अपने को अलग अलग कर लें। इसके विरुद्ध उसने हमेशा जोर देकर कहा है कि हम जनता से पृथक नही, बल्कि उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करें।

" इसलिए ऐसी कार्रवाई का कोई कारण नही है, जिसके द्वारा जनता से विलगाव हो जाय। गड़बड़ी का कारण हमारे साथियो के एक गिरोह द्वारा पैदा किया हुआ साम्प्रदायिक विचार है। चूँकि इस प्रकार की साम्प्रदायिकता पार्टी मेम्बरों के एक गिरोह के साथ अब भी गम्भीर समस्या के रूप में मौजूद है, और वह अब भी पार्टी की नीति को कार्यरूप मे परिणत करने में बाधक है; इसलिए हमें अन्तर्पार्टी शिक्षा को एक बड़े पैमाने पर काम में लाना चाहिए। हमें इस बात का निश्चय करके अपने कर्मियों से आरम्भ करना चाहिए कि वह समस्या की गम्भीरता को ठीक तौर से समझते है, यह निश्चय करके कि वह इस बात को समझते है कि यदि कम्युनिस्ट अपने को कर्मियों और पार्टी के बाहर के आदमियो के साथ एकताबद्ध नही करते, तो शत्रु को हराना और हमारे क्रान्तिकारी लक्ष्यो की प्राप्ति सर्वथा असम्भव होगी।

" सभी तरह के साम्प्रदायिक विचार मनोमय तथा क्रान्ति की वास्तविक आवश्यकताओ से अनुकूल है। इस प्रकार साम्प्रदायिकता का विरोध करते हुए हम मनोमयवाद का भी विरोध करते है।...

" अगर हम मनोमयवाद का विरोध करने जा रहे है, तो हमें भौतिकवाद और द्वन्द्वात्मक नियमों का प्रचार करना होगा। अब भी पार्टी के भीतर ऐसे बहुत-से साथी है, जो कि भौतिकवाद अथवा द्वन्द्वात्मक नियमो के प्रचार की ओर बिलकुल ध्यान नही देते। कुछ तो बल्कि दूसरो को मनोमयवाद का प्रचार करते सुनकर उसकी पर्वाह नही करते। ये साथी मार्क्सवाद को मानते है, लेकिन तो भी भौतिकवाद के प्रचार की कोशिश नही करते। जब वह मनोमयवाद की कोई चीज देखते या सुनते है, तो वह उस पर विचार नही करते और न उसकी आलोचना करते है। कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर का ऐसा रुख नही होना चाहिए। यही कारण है, जो कि हमारे बहुत से साथी मनोमयवादी विचार का विष पीते है, और उनमें मूर्छा के चिह्न प्रकट होते है।

" इसलिए हमे पार्टी के भीतर उद्‌बोधन का एक आन्दोलन आरम्भ करना ही चाहिए, जोकि हमारे साथियों के भावों को मनोमयवाद के अन्धकार से मुक्त करें और उन्हें मनोमयवाद, सम्प्रदायवाद और पार्टी-लकीरवाद के विरुद्ध लोहा लेने के लिए प्रेरणा दें। ये बाते बहुत कुछ जापानी माल की तरह हैं, क्योंकि अन्धकार में लगातार डूबे रखने की आशावाला ही एकमात्र हमारा शत्रु है, जोकि इस अवांछनीय खुराफात में हमें रोक रखना चाहता है। इसलिए हम उसके विरुद्ध प्रतिरोध करने का आवाहन करते है, जैसे कि जापानी माल के विरुद्ध। हमे मनोमयवाद, सम्प्रदायवाद और पार्टी लकीरवाद जैसी हरेक बात का विरोध करना चाहिए, पार्टी के निम्न

सैद्धान्तिक तल से फायदा उठाकर उन्हे अपने सौदो को बेचने नही देना चाहिए। इस प्रकार की मनोवृत्ति रखनेवालों को बाजार मे अपना माल बेचना कठिन कर देना चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमे अपने साथियों की घ्राण-शक्ति को तीव्र करना चाहिए, और केवल तभी उसे ग्रहण या त्याग करने का निश्चय करना चाहिए। कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरो को हरेक चीज के लिए 'क्यो' पूछना चाहिए। अपने दिमाग मे इस बात को बार-बार दोहराना चाहिए और पता लगाना चाहिए कि क्या वह वास्तविकता के अनुरूप है ? उन्हे कभी किसी चीज का अन्धानुसरण नहीं करना चाहिए। उन्हे दासता को आगे बढ़ने नही देना चाहिए।

" अन्त मे, मनोमयवाद, सम्प्रदायवाद और पार्टी लकीरवाद के विरोध करने मे दो नियमो का पालन करना चाहिए। पहला है, 'पुरानी भूलो को मत दोहराओ' और दूसरा है, 'दोषो की चिकित्सा करके आदमियो को बचाना चाहिए।' पुरानी भूलो को वैयक्तिक आग्रह या भावना का विना विचार किये नगा करना चाहिए। अतीत से क्या अवाछनीय बात हुई, उसके विश्लेषण और आलोचना करने मे हमे वैज्ञानिक रुख को अख्तियार करना चाहिए, जिसमे कि आगे के काम मे अधिक सावधानी रक्खी जाय और काम बेहतर ढग से पूरा किया जा सके। 'पुरानी भूलो को मत दोहराओ' का यही अर्थ है।

" किन्तु, भूलो को नगा करने, खामिया की आलोचना करने मे हमारा लक्ष्य रोग की चिकित्सा करनेवाले एक डाक्टर जैसा हो। उद्देश्य है लोगो को बचाना, न कि उन्हे मारकर चिकित्सा करना। किसी आदमी को एपेंडिसाइटिस (ऑत का फोडा) है, डाक्टर आपरेशन करता है, और आदमी बच जाता है। अगर कोई आदमी भूल करता है, चाहे वह कितनी ही बडी हो और उसे छिपाकर तथा अपनी भूल पर दृढ रहते अपने रोग को चिकित्सा के अयोग्य स्थिति मे नही पहुँचा देता, और साथ ही वह पक्का और ईमानदारी के साथ नीरोग होने की इच्छा रखता है, सुधार करना चाहता है, तो हम उसका स्वागत करेगे। इसलिए कि उसका रोग दूर हो जाय और वह एक अच्छा साथी बन जाय। एक बार के प्रहार से समस्या का हल करना निश्चय ही सम्भव नही है। विचार और राजनीति विषयक व्याधिया के प्रति हम निष्ठुर रुख नही अख्तियार करना चाहिए, बल्कि 'बीमारियों की चिकित्सा द्वारा आदमियो के बचाने' का रुख अख्तियार करना चाहिए, यही ठीक और कार्यकारी तरीका है।

" पार्टी-स्कूल के उद्घाटन के अवसर का आज मैंने बहुत-सी बातो को कहने के लिए इस्तेमाल किया। मुझे आशा है, तुम उन पर विचार करोगे। " (जोर की हर्षध्वनि)*

5. कला और साहित्य की समस्याएँ : विश्वयुद्ध शुरू हो गया था, येनान् लाल राजधानी बन चुका था। जापान शाघाइ और नानकिग पर अधिकार कर चुका था, कम्युनिस्ट सेनाएँ और गोरिल्ला जापानियों से लड रहे थे और च्याग काइ-शेक लात खाते हुए भी पीछे हटते चुग-किग मे इस विचार को लेकर बैठा था कि जापानी चीनी कम्युनिस्टो को खतम कर दे, फिर पश्चिमी शक्तियाँ जापान को खतम कर दे, तब चीन का पका पकाया शासन हमारे हाथ मे आ जायगा, तब भी अगर चीनी कम्युनिस्ट रहेगे तो बहुत निर्बल रहेगे, जिनका नाश हम आसानी से कर सकेगे। इसी समय 2-23 मई, 1942 मे येनान् मे चीन के सभी भागो के साहित्यकारो और कलाकारो का एक सम्मेलन हुआ था जिसमे जापानी और कुओ-मिन्तागी प्रदेशो के भी प्रतिनिधि पहुँचे थे।

माओ चे-तुग, यदि केवल कवि और साहित्यकार रहते, तब भी वह साहित्य-क्षेत्र के चमकते तारे होते। लेकिन, उनकी प्रतिभा बहुमुखी है, यह हम देख चुके हैं। अपने साहित्यकार और कलाकार बन्धुओं को देने के लिए उनके पास सन्देश की कमी नही थी, क्योकि वह उनके सधर्मा थे। इसी समय उन्होने 'कला और साहित्य की समस्याएँ' के नाम से 2 मई को एक भाषण दिया, जिसमे मुक्ति सघर्ष और कलाकारो तथा साहित्यकारो के पार्टी के बारे मे कहा। 23 मई को सम्मेलन की समाप्ति के समय उन्होंने विस्तारपूर्वक इन्ही समस्याओं के बारे में कहा। इससे पॉच महीना पहले जापान ने अचानक पर्ल बन्दरगाह पर आक्रमण करके अमेरिका पर

Mao's China (Washington University Press, Seattle, 1952)

प्रहार कर दिया था।

इन दोनों भाषणों में माओ ने जहाँ साहित्य और कला के तत्त्वदर्शी की सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया, वहाँ चीन ही के नहीं, बल्कि दूसरे देशो के साहित्यकारो और लेखको के लिए भी मार्ग-निर्देश किया। 2 मई के उद्घाटन-भाषण मे उन्होंने कहा था :

" साथियो ! आप लोग इस बैठक मे इसलिए निमन्त्रित हुए हैं कि हम एक ओर कला और साहित्य और दूसरी ओर क्रान्तिकारी काम इन दोनो के बीच के ठीक सम्बन्ध पर विचार करे। इस अभिप्राय से कि हमारा क्रान्तिकारी साहित्य और कला ठीक से विकसित हो सके और हमारी दूसरी क्रान्तिकारी कार्रवाइयों को उनसे और अधिक प्रभावशाली रूप मे सहायता मिल सके। इन तरीकों से हम अपने राष्ट्रीय शत्रुओ को पराजित कर सकेंगे और राष्ट्रीय मुक्ति के लिए अपने कर्तव्य को पूरा कर सकेंगे। चीनी राष्ट्र की मुक्ति के लिए कितने ही सास्कृतिक तथा सैनिक मोर्चों पर हमारे सघर्ष हो रहे हैं। यद्यपि अपने शत्रुओ पर विजय पाना मुख्यतः हाथ में बन्दूक लिये हुए सैनिकों पर ही निर्भर करता है, तो भी केवल सेनाएं काफी नही हैं। हमें राष्ट्र को एकताबद्ध करने तथा शत्रु की पराजय के अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए एक सास्कृतिक सेना रखनी होगी। वह सास्कृतिक सेना—जिसने कि चीनी क्रान्ति मे भारी सहायता की—चतुर्थ मई-आन्दोलन के समय से तैयार हो गई।

" इस बैठक को एक आवश्यक उद्देश्य से हमने बुलाया है, जिसमें साहित्य और कला को अपनी क्रान्तिकारी मशीन का इस तरह एक अग बनाया जाय, कि वह हमारी जनता को एकताबद्ध और शिक्षित करने, शत्रु को आक्रान्त और नष्ट करने एव एक शत्रु से हमारी जनता के लडने में सहायता करने मे एक शक्तिशाली हथियार बन जाय। "

आगे साथी माओ, किसके साथ कैसा रुख लेना चाहिए, इसके बारे में बतलाते हुए कहते है :

" तीन प्रकार के लोग है—हमारे शत्रु, हमारे मित्र और हम स्वय, अर्थात् सर्वहारा और उसका हरावल। हमे इन तीनो मे से प्रत्येक के प्रति भिन्न भिन्न रुख रखना होगा। क्या हमे अपने शत्रुओ—जापानी फासिस्तो और जनता के दूसरे सारे दुश्मनो—की प्रशसा करनी चाहिए ? हर्गिज नही, क्योंकि वह दुष्ट और प्रतिक्रियावादी है, चाहे उनमे कहने के लिए कुछ गुण भी हो। हमारी सास्कृतिक सेना को हमारे शत्रुओं के आततायीपन और विश्वासघात का नगा करने उनकी पराजय अनिवार्य है यह साफ बतलाने और सारी जापान-विरोधी शक्तियों को एक हृदय और मन से शत्रुओ के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक युद्ध करने मे उत्साहित करने के अपने कर्तव्यों को पालना होगा।

" हमारे मित्रों और हमारे भिन्न भिन्न सहकारियो के सम्बन्ध मे हमारा रुख सहयोग और समालोचना का होना चाहिए। सहयोग भी और समालोचना भी भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं। जापान के विरुद्ध उनके प्रतिरोध का हम समर्थन करते है, उनके इस काम की हमें प्रशसा करनी होगी। लेकिन, साथ ही हमे उन लोगो की आलोचना करनी होगी, जो कि प्रतिरोध-युद्ध में सक्रिय नही है, जो कम्युनिस्टों और जनता के विरुद्ध काम करनेवालो का विरोध करते है, और जो धीरे-धीरे प्रतिक्रियावाद के रास्ते को पकड रहे है। "

आगे अपने पाठकों के बारे में माओ चे तुग बतलाते है :

" साहित्य और कला किसके लिए सृजन करनी चाहिए ? इसका उत्तर शेन्सी-कान्सू-निग स्या सीमान्त भूभाग में और उत्तरी तथा केन्द्रीय चीन के हमारे जापान विरोधी अड्डों के आधार-स्थानों के लिए एव पश्चात्-भाग वाले (कुओ-मिन्तागी) इलाके तथा युद्धपूर्व शाघाइ मे बिलकुल अलग होगा। युद्ध के पहले साहित्य और कला की क्रान्तिकारी कृतियां की पाठकमण्डली शाघाइ मे मुख्यतः विद्यार्थियो, डाक्टर-वकील आदि पेशावरों और सफेदपोश कमकरो की थी। युद्ध के बाद आम पश्चात्-भाग के इलाके मे पढ़नेवाली जनता की सख्या कुछ बढी है, लेकिन अब भी मुख्यतः वह उन्ही समुदायो की है, क्योंकि यहाँ कुओ-मिन्तागी सरकार क्रान्तिकारी साहित्य और कला को कमकरों, किसानो और सैनिको के पास पहुँचने नही देती।

" हमारे भूभाग मे स्थिति बिलकुल भिन्न है। यहाँ कमकर, किसान और सैनिक, पार्टी-सेना-सरकार के

भीतर के हमारे कर्मी क्रान्तिकारी साहित्य और कला की पाठक जनता और दर्शकमण्डली है। हमारे अड्डों में विद्यार्थी भी हैं, लेकिन वह पुराने ढंग के विद्यार्थी नही हैं। अगर वह अभी हमारे कर्मी नहीं हैं, तो भविष्य में होंगे। नाना प्रकार के कर्मी–सेना के सिपाही, कारखानों के कमकर और गाँवों के किसान–सभी साक्षर होने के साथ ही पुस्तको और अखबारों को पढना चाहते है। जो पढ नही सकते, वह भी नाटको और तस्वीरों को देखना चाहते हैं, सगीत को सुनना और गाना चाहते है। हमारे साहित्य और कला के लिए यह जनता है।"

एक कवि और साहित्यकार के तौर पर माओ चे-तुंग जनता सम्बन्धी अपने अनुभवो को बतलाते हुए अपने सधर्मियों के उनके प्रति क्या रुख रखना चाहिए, इसे बतलाते है :

" मुझे अपने अनुभव के बारे में आपसे कहना है। मै यह कहना चाहता हू कि कैसे मेरा रुख जनता के प्रति बदला। एक समय मै विद्यार्थी था और स्कूल में मैंने विद्यार्थियों की आदतों और तरीको को सीखा था। उदाहरणार्थ, मुझे बडी झेंप लगी, जबकि अपने साथी विद्यार्थियों के सामने बास की बँहगी को कन्धे पर लटकाकर अपना असबाब ढोना पडा। हमारे विद्यार्थी इतने भद्र है कि वह अपने कन्धो पर कोई बोझ ले जाना सहन नही कर सकते। अपने हाथ में किसी चीज को ले जाने का ख्याल भी उनको झेंप मे डाल देता है। उस समय मेरी धारणा थी कि केवल बुद्धिजीवी ही स्वच्छ और साफ है, कमकर, किसान और सिपाही गन्दे है। इसीलिए मै पहनने के लिए एक बुद्धिजीवी से कपडा खुशी से माँग सकता था, किन्तु कमकर, किसान या सिपाही से हर्गिज नही, क्योंकि मै समझता था, उनके कपडे गन्दे होंगे।

" क्रान्ति के जमाने में मै कमकरों, किसानो और सिपाहियों के बीच रहने लगा। धीरे-धीरे मै उन्हे जानने लगा और वह भी मुझे जानने लगे। केवल तभी बूर्ज्वा स्कूलों द्वारा मन में घुस आये बूर्ज्वा और निम्न-बूर्ज्वा भाव जड-मूल से बदलने लगे। तब से जब कभी भी मै असुधारित बुद्धिजीवियों की कमकरो, किसानो और सिपाहियों से तुलना करता हूँ तो मुझे पता लगता है कि इन बुद्धिजीवियों का केवल दिमाग ही नहीं गन्दा है, बल्कि इनके शरीर भी गन्दे है। दुनिया में सबसे अधिक स्वच्छ जन है कमकर और किसान। चाहे उनके हाथ मैल हो, उनके पैरों में गोबर लिपटा हो, लेकिन तो भी वह बूर्ज्वाजी और निम्न-बूर्ज्वाजी से अधिक स्वच्छ है। भावो के रूपान्तरित होने से मेरा मतलब यही है–एक वर्ग से दूसरे वर्ग के मूल रूप मे उनका परिवर्तन होना। अगर बुद्धिजीवी वर्ग से आये हमारे लेखक और साहित्यकार चाहते है कि उनकी कृतियों का जनता स्वागत करे, तो उन्हे अपनी विचारधारा और अपने भावों में इस प्रकार का रूपान्तरीकरण करना होगा। नही तो वह कोई प्रभावशाली काम नही कर सकेंगे, क्योंकि कृतियाँ जनता में नही फैल सकेंगी। "

आगे साथी माओ लेखकों और कलाकारों के लिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद एवं समाज के सिद्धातो के अध्ययन की आवश्यकता बतलाते कहते है :

"मार्क्सवाद हमे यह सिखलाता है कि समस्याओं पर विचार करते समय हम वस्तु-सत्ता (वास्तविक तथ्य से) काम को आरम्भ करें, न कि निराकार परिभाषाओं से।"

साहित्य और कला का सृजन किसके लिए होना चाहिए, इसे बतलाते हुए माओ कहते है :

" हमारा साहित्य और कला किसी विदेशी समुदाय के लिए नही, बल्कि हमारी जनता के लिए है। हम पहले बतला चुके है कि चीन की नई संस्कृति अपने विकास की आधुनिक मंजिल में साम्राज्यवाद विरोधी, सामन्तवाद-विरोधी तथा सर्वहारा का नेतृत्व माननेवाली जनसाधारण की संस्कृति है।

" जनता (जनसाधारण) क्या है ? हमारी आबादी का 90 सैकडा कमकर, किसान, सिपाही और निम्न-मध्यवर्ग (निम्न-बूर्ज्वाजी)। इसलिए हमारे साहित्य और कला को सबसे पहले (1) मजूर-वर्ग की सेवा करनी होगी, जोकि क्रान्ति का नेतृत्व करता है, फिर (2) किसानों की सेवा करनी होगी, जोकि क्रान्ति में मजूर-वर्ग का अत्यन्त दृढ़ सहकारी तथा सबसे अधिक सख्या रखते है, (3) कमकरो-किसानो की हथियारबन्द सेनाओं–आठवीं मोर्चा सेना, नई चतुर्थ-सेना और दूसरी जनता की मिलिसिया की सेवा करनी होगी, जोकि हमारी लडनेवाली शक्तियों के मुख्य आधार है, चौथे (4) निम्न-मध्य-वर्ग की सेवा करनी होगी, जोकि क्रान्ति में एक सहकारी है और दूर तक के प्रोग्राम मे हमारे साथ सहयोग कर सकता है। यही चार प्रकार के जन-समूह हैं चीनी जनता

"*हमारा साहित्य और कला हमारे विशाल जन-समूह—इन चार जन-समूहो के लिए हैं। कमकर, किसान और सिपाही सबसे अधिक महत्त्व रखते हैं। निम्न-मध्य-वर्ग का चाहे सांस्कृतिक तल दूसरों की अपेक्षा ऊँचा हो, लेकिन वह संख्या और क्रान्तिकारी जीवन दोनों मे सबसे कमजोर समूह है। इसीलिए, हमारे साहित्य और कला को मुख्यतः किसानों, कमकरों और सिपाहियो के उद्देश्य से होना चाहिए, निम्न-मध्य-वर्ग के लिए केवल गौण रूप से ही। इससे उलटा करना गलत होगा।*"

साहित्य और कला के लिए उत्पादन-सामग्री का स्रोत कहाँ है, इसके बारे मे माओ बतलाते हैं :

" जन-जीवन साहित्य और कला के लिए उपयोगी कच्चे माल (उपादान-सामग्री) का एक समूह स्रोत है। यह उपादान-सामग्री यद्यपि अपने प्राकृतिक अनगढ़ रूप मे है, लेकिन अत्यन्त सजीव, समृद्ध और मूलभूत है। उसके सामने बनावटी साहित्य और कला को लज्जित होना पड़ता है। सृजनात्मक साहित्य और कला के लिए उपयुक्त सामग्री का अनन्त भण्डार केवल जन-जीवन है, क्योंकि यही एकमात्र मुख्य भण्डार है, वैसा दूसरा भण्डार हो नही सकता।

" कुछ लोग प्रश्न कर सकते हैं कि 'क्या साहित्य और कला की प्रकाशित कृतियाँ, प्राचीन शिष्ट साहित्य, विदेशी साहित्य तथा कला मुख्य स्रोत नही हो सकते ?' इसका जवाब यही है कि उन्हे स्रोतभूत सामग्री माना जा सकता है, लेकिन गौणतः ही, मुख्यतः वह स्रोत-सामग्री नही। यदि आप उन्हे प्रथम श्रेणी की सामग्री मानेगे, तो यह सुलटा को उलटा कर देना है। पुस्तके और प्रकाशित कृतियाँ मुख्य नही, बल्कि स्रोत से निकला प्रवाह है। वह हमारे बाप-दादो, विदेशी लेखकों और कलाकारो की कल्पना तथा कृति है, जिन्होने कि अपने समसामयिकों के जीवन, अपने समय के समाज मे उस साहित्य और कला को ढूँढ़ा और पाया। हम उनकी कृतियो का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन विवेक के साथ ही साहित्य और कला की ऐसी शिल्प चातुरी के उदाहरण के तौर पर, जिसमे कि हम आज की जनता के जीवन को चित्रित करते हैं।··· प्राचीन शिष्ट या विदेशी साहित्य तथा कला की अविवेकपूर्ण स्वीकृति या नकल तथा किसी की जगह पर इनके इस्तेमाल से हम साहित्य और कला के विषय मे अत्यन्त फजूल और हानिकारक मतवाद की ओर खिच जाएँगे, वैसे ही, जैसे कि सैनिक, राजनीतिक, दार्शनिक या आर्थिक क्षेत्र मे वैसा करने से।

" इसलिए चीन के क्रान्तिकारी और सच्चे योग्य लेखको और कलाकारो को जनसाधारण के भीतर जाना होगा। बिना शर्त के और दिलोजान से उनके लिए काम करना होगा, देर तक उनके भीतर रहना होगा, धधकते सघर्ष मे सम्मिलित होना होगा। अनुसन्धान, निरीक्षण, अध्ययन तथा भिन्न-भिन्न व्यक्तियो, भिन्न भिन्न वर्गो, भिन्न-भिन्न सामाजिक समूहो, जीवन-मरण के भिन्न-भिन्न सक्रिय आकारो, साहित्य और कला के सभी प्राकृतिक स्रोतो के अनुसन्धान, निरीक्षण, अध्ययन और विश्लेषण के लिए उन्हे एकमात्र विद्यमान अक्षय भण्डार—जनता के पास जाना होगा। केवल तभी वह सृजनात्मक या उत्पादन-प्रक्रिया का आरम्भ कर सकते है। "

जन-सम्पर्क पर और भी जोर देते हुए आगे वह कहते है :

" हम विशेषज्ञो का अत्यन्त सम्मान करते हैं, क्योकि उनकी कृति हमारे लिए मूल्यवान् है, लेकिन, हम उनको स्मरण दिलाना चाहते है कि क्रान्तिकारी लेखक और कलाकार तभी महत्त्वपूर्ण कृति प्रदान कर सकते है, जबकि वह जनता के विश्वासपात्र वक्ता हो।

" जनता को उसका प्रतिनिधित्व करते ही आप शिक्षित कर सकते हैं। आप जनता के शिष्य होकर ही उसे शिक्षा दे सकते है। यदि आप अपने को जनता के स्वामी, निम्न-प्राणियो से बहुत ऊँचे प्रभु मानते हैं, तो जनता आपको अपने किसी काम का नही समझेगी, चाहे कितनी ही बड़ी आपकी प्रतिभा और आपकी कृति हो, उसका कोई भविष्य नही होगा। "

"क्या इसे 'उपयोगितावाद' कहा जा सकता है ?"

"भौतिकवादी स्वय उपयोगितावाद के विरोधी नही है। हाँ, सामन्ती बूर्ज्वा और निम्न-बूर्ज्वा वर्ग के उपयोगितावाद के जबर्दस्त विरोधी है। वह उन लोगो के विरोधी है, जोकि जीभ से उपयोगितावाद को दुतकारते

हैं, पर दिल में उसके पुजारी हैं, अत्यन्त स्वार्थी और सकुचित दृष्टिवाले उपयोगितावादी है।"

बुद्ध ने 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' को अच्छापन का लक्षण बतलाया था। माओ भी उसी तरह श्रेष्ट या भद्र होने की व्याख्या करते हुए कहते है :

"बहुसख्यक जनता की अधिकतर भलाई के लिए जो चीज होती है, उसे श्रेष्ट समझना होगा। आपकी कलाकृति 'याग छुन् पाइ शियेह' जैसी हो सकती है, जिसका आनन्द केवल अमीर लोग ले सकते है जबकि जनसाधारण 'शिया ली पा जेन' को अब भी गा रहे है। यदि आप जनता के सांस्कृतिक तल को ऊँचा नही कर सकते, और उसकी जगह और कुछ न कर केवल आप उनके पिछड़ेपन को दोष देते है, तो आप बेकार की बात बघार रहे है।"

उक्त दोनो गीत करीब दो हजार वर्ष पुराने है, और दोनो से प्रेम करनेवाले लोग दो वर्ग के है। माओ सर्वहारा के साहित्य ओर कला के बारे मे बतलाते है :

" सभी सस्कृति अथवा आज का सभी साहित्य ओर कला किसी खास वर्ग, खास पार्टी अथवा खास राजनीतिक दृष्टिकोण लिए होता है। दुनिया मे 'कला कला के लिए' जैसी कोई चीज नही है, अथवा ऐसा साहित्य और कला नही है, जोकि वर्गभेद के ऊपर या पक्षपात रखनेवाले हितो के ऊपर हो। ऐसा कोई साहित्य और कला नही है, जोकि राजनीति के समानान्तर चल रहा हो अथवा राजनीति से स्वतन्त्र हो। वर्ग और पार्टी-भेद रखनेवाले समाज मे साहित्य ओर कला भी एक वर्ग या पार्टी का होता है।

" सर्वहारा का साहित्य और कला सर्वहारा के क्रान्तिकारी प्रोग्राम का अग है, जैसाकि लेनिन ने कहा है, वह मशीन के स्क्रू है।

" हम साहित्य ओर कला के महत्त्व को बढ़ा चढ़ाकर कहने के पक्ष मे नही है, लेकिन साथ ही हम उसे घटाकर भी नही कहना होगा। यद्यपि साहित्य और कला राजनीति के अधीन है लेकिन साथ ही वह राजनीति पर जबर्दस्त प्रभाव डालते है। क्रान्तिकारी साहित्य और कला एक क्रान्तिकारी प्रोग्राम का अग है। वह उपरोक्त स्क्रू की तरह है। चाहे मशीन मे दूसरे अगो की तुलना मे वह बड़ा या छोटा महत्त्व रखते हो, मुख्य या गोण मूल्य रखते हो, किन्तु तो भी मशीन के लिए उनकी अनिवार्य आवश्यकता है। सम्पूर्ण क्रान्तिकारी आन्दोलन के वे अनिवार्य अग है। यदि हमारे पास, अत्यन्त साधारण किस्म का ही सही, साहित्य और कला नही है, तो हम क्रान्ति को आगे नही बढ़ा सकते और न उसके लिए विजय प्राप्त कर सकते हैं। तथ्य को न स्वीकार करना गलती होगी।

" साथ ही, जब हम कहते है कि साहित्य ओर कला राजनीति के अधीन है, तो राजनीति से हमारा अभिप्राय वर्ग-राजनीति ओर जन राजनीति से है, न कि कुछ राजनीतिज्ञो की तथाकथित राजनीति। क्रान्तिकारी हो या क्रान्ति-विरोधी, राजनीति दो परस्पर-विरोधी वर्गो के सघर्ष, न कि अलग अलग व्यक्तियो के रवैये का प्रतिनिधित्व करती है। विचारधारा का युद्ध साहित्य कला का युद्ध, विशेषकर क्रान्तिकारी विचारधारा का युद्ध और क्रान्तिकारी साहित्य-कला का युद्ध अवश्य राजनीतिक युद्ध के अधीन होगा, क्योंकि वर्ग और जनता की आवश्यकताएँ अपने घनीभूत रूप मे केवल राजनीति के द्वारा ही प्रकट की जा सकती है।"

माओ इस प्रकार बतलाते है कि साहित्य-कला मे तटस्थता की बात करना केवल ढोग है, और वह किसी न-किसी रूप मे परस्पर-विरोधी वर्गो या स्वार्थो मे एक का सहायक होता है। लेकिन ऐसा कहते हुए भी वह साहित्य मे साम्प्रदायिक दृष्टि का विरोध करते है :

"साहित्य-कला के सम्बन्ध मे हमारी आलोचना साम्प्रदायिक नही होनी चाहिए। प्रतिरोध युद्ध और राष्ट्रीय एकता के सामान्य सिद्धान्तो को ध्यान मे रखते हुए हमे साहित्य-कला की उन सारी कृतियो को सहन करना चाहिए, जोकि राजनीतिक रुखो के हर प्रकार और हर रग को प्रकट करते है। लेकिन, साथ ही जब हम आलोचना करते है, तो अपने सिद्धान्त और स्थिति पर हम दृढ भी रहना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि हम उन सभी साहित्य-कला-कृतियो की तीव्र आलोचना करनी चाहिए, जोकि राष्ट्रीय, वैज्ञानिक, जनता और कम्युनिस्ट स्वार्थो के विरुद्ध है, क्योंकि ऐसे तथाकथित साहित्य-कला का उद्देश्य और प्रभाव हमारे प्रतिरोध युद्ध को खतरे मे

डालता और हमारी राष्ट्रीय एकता को ध्वस्त करता है।"

माओ साहित्य-कला का बहुत सस्ता होना भी पसन्द नहीं करते और वह उसके मान को स्वीकार करते है :

" अब हम जानते हैं, दो मॉंगें है एक राजनीतिक मॉंग है और एक कला सम्बन्धी मॉंग।

" कला-सम्बन्धी मॉंगों के दृष्टिकोण से उच्च कलात्मक गुण रखनेवाली सभी कृतियॉं अच्छी या अपेक्षाकृत अच्छी हैं, और निम्न कलात्मक गुणवाली बुरी या अपेक्षाकृत बुरी। लेकिन यह कसौटी इस बात पर निर्भर करती है कि किसी कलाकृति का समाज के ऊपर क्या प्रभाव होता है। ऐसे बहुत कम लेखक और कलाकार है, जो अपनी कृतियो को बढ़िया नहीं समझते।

" अब हम जानते है कि मान दो प्रकार के होते है राजनीतिक और कलात्मक। तो इनके बीच का ठीक सम्बन्ध क्या है ? राजनीतिक पर कला नहीं, आम तौर से विश्व दृष्टिकोण, पर कलात्मक सृजन की शैली नहीं। यहॉं हम केवल निराकार और जकड़बन्द कला-सम्बन्धी मानों का भी प्रत्याख्यान नहीं करते, बल्कि निराकार और जकड़बन्द कला सम्बन्धी मानो का भी प्रत्याख्यान करते है। किसी वर्ग समाज के भीतर के भिन्न भिन्न वर्गो की तरह भिन्न भिन्न वर्ग समाजो के अपने भिन्न भिन्न राजनीति और कला सम्बन्धी मान होते है। किन्तु, किसी वर्ग समाज या समाज के भीतर के किस वर्ग में राजनीतिक मान पहले आते है और कला सम्बन्धी बाद में। "

माओ ने तुंग राजनीति और कला के सम्बन्ध में अपने विचारो को प्रकट करते है .

" हम राजनीति और कला में एकता चाहते है, हम विषय और रूप के बीच समन्वय चाहते हैं–क्रान्तिकारी राजनीतिक विषय का सभाव्य उच्चतम तलवाले कला सम्बन्धी रूप का पूरी तौर से सम्मिश्रण चाहते है। जिन साहित्य कला की कृतियो में कला सम्बन्धी गुण नहीं है, वह बेकार है, चाहे राजनीतिक तौर से कितनी ही प्रगतिशील हो।

" इस प्रकार हम केवल हानिकारक प्रतिक्रियावादी विषयवाली कलाकृतियों की ही निन्दा नहीं करते, बल्कि उन कृतियो की निन्दा करते हैं, जो 'विज्ञापन और नारा शैली' में निर्मित की गई है। "

प्रेम और मानवता-प्रेम का साहित्य कला के साथ क्या सम्बन्ध है इसके बारे में वह बतलाते है

" सभी साहित्य का मूल साहित्य कला का मूल प्रेम मानवता प्रेम है। प्रेम आरम्भ बिन्दु हो सकता है, लेकिन उससे भी अधिक मूलभूत आरम्भ बिन्दु है। प्रेम वस्तुगत अनुभव की उपज एक धारणा है। हम एक धारणा या विचार से मूलत आरम्भ नहीं कर सकते हमें वस्तुगत साकार अनुभव से आरम्भ करना होगा।

' हम साहित्यकार और कलाकार अपनी बौद्धिक पृष्ठभूमि के साथ सर्वहारा के प्रति जो प्रेम रखते हैं, वह इस कारण ही कि समाज ने हमारे ऊपर उसी भवितव्यता को लाद दिया है, जिसे कि उसने सर्वहारा के ऊपर लादा है, और यह कि हमारे जीवन सर्वहारा के जीवन के साथ एक हो गये है। जापानी साम्राज्यवादियो द्वारा होनेवाले हमारे उत्पीडन का परिणाम है। दुनिया मे कही भी न प्रेम अकारण होता है, और न घृणा ही।

" जहॉं तक मानवता के प्रेम का सम्बन्ध है, जब से मानव-जाति वर्गों में विभक्त हुई, तब से इस तरह का सर्वव्यापी प्रेम कभी भी नहीं रहा। शासक वर्ग ने विश्वप्रेम का उपदेश दिया, कन्फूशी ने उसी तरह इसके बारे मे कहा जैसे तात्स्ताय ने, लेकिन एक भी उसे आचार मे कभी नहीं ला सका, क्योकि वर्ग-समाज मे वैसा हो नहीं सकता।

" मानवता का सच्चा प्रेम तभी सम्भव हो सकता है, केवल उसी भविष्य काल में सम्भव हो सकता है, जबकि सारी दुनिया से वर्ग विभेद को खतम कर दिया जाय। वर्ग विभक्त समाज की सेवा करते है। जब वर्ग हटा दिये गये, तो समाज फिर एक हो जायगा। उस समय मानवता का प्रेम फूले-फलेगा, वह आज नहीं फूल-फल सकता। आज हम फासिस्तो मे प्रेम नहीं कर सकते और न अपने शत्रुओ से प्रेम कर सकते है। समाज मे जो कुछ बुरा और विद्रूप है, उस सबसे हम प्रेम नहीं कर सकते। हमारा उद्देश्य है, इन सभी बुराइयो को हटाना। जनता जानती है तो क्या हमारे लेखक और कलाकार इसे नहीं जान सकते ? "

मार्क्सवाद-लेनिनवाद साहित्य-कला की सृजनकारी भावना को नष्ट करता है, इसका सक्षेप मे जवाब देते हुए माओ कहते हैं :

"तो क्या मार्क्सवाद लेनिनवाद सृजनकारी आत्मा को नष्ट नही कर देगा ? हाँ जरूर, नष्ट करेगा। वह सामन्ती, बूर्ज्वा और निम्न-बूर्ज्वा सृजनकारी आत्मा को, उदारवाद, व्यक्तिवाद, निराकारवाद के भीतर मूलबद्ध सृजनकारी आत्मा, 'कला कला के लिए' कहनेवालो के समर्थक, अमीरी, पराजयवादी और निराशावादी सृजनकारी आत्मा को नष्ट करेगा। वह उस सभी तरह की सृजनकारी आत्मा को नष्ट करेगा, जो जनता की नही है, जो सर्वहारा की नही है।"

3. अमेरिका की चाले

1941 मे प्रशान्त महासागर मे युद्ध छिड़न से पहले अमेरिकन साम्राज्यवादियों ने उसी तरह चीन की बलि देकर जापान से समझौता करने की कोशिश की, जैसा इससे कुछ माला पहले ब्रिटिश और फ्रेंच साम्राज्यवादियों ने चेकोस्लोवाकिया की बलि चढ़ाकर हिटलर से समझौता करना चाहा था। लेकिन, अब वे जापानी हमले के खिलाफ प्रतिरोध-युद्ध से फायदा उठाकर चीन मे अपने प्रभाव को ज्यादा बढ़ाना चाहते थे। उनका उद्देश्य था, युद्ध के बाद चीन के बाजारों पर अपना एकाधिपत्य कायम करना और चीन को अपना एक उपनिवेश बनाते जापान की जगह को अमेरिका का लेना। इसीलिए उन्होंने कुओमिन्तागी प्रतिक्रियावादी सरकार को बनाये रखने की जी जान से कोशिश की। एक ओर अमेरिकन साम्राज्यवादियो ने च्याग के सैनिको को सुशिक्षित और सुसज्जित करने के लिए बड़ी सख्या मे अफसरो को भेजा और कितने ही दूसरे विशेषज्ञो को च्याग की सरकार मे घुसाकर अपने लिए जगह बनाने को छोड़ दिया। साथ ही, दूसरी ओर उन्होंने कुओ मिन्ताग और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के बीच 'फैसला' करने 'ईमानदार दलाल' का भी पार्ट अदा किया। लेकिन, अमेरिकन साम्राज्यवादियों ने इस तथ्य को प्रकट करने मे देर नही लगाई, कि हम और च्याग एक ही थैली के चट्टे बट्टे है। अमेरिकन प्रतिनिधि और च्याग काइ शेक दोनो ने ही प्रतिक्रियावादी कुओ मिन्तागी सरकार मे हिस्सा लेने के लिए 'एकीकरण' और 'जनतत्रीकरण' प्राप्त करने की दुहाई देते हुए कम्युनिस्टो के पास बुलावे भेजे; और इस तरह उन्होंने सरकार को ... लेकर मिली जुली जनवादी सरकार बनाने की माग को खतम करने की कोशिश की। इतना ही नही, बल्कि अपने इस खयाल के द्वारा उन्होंने आठवी मोर्चा-सेना, नई चौथी-सेना और मुक्त इलाको को भी नष्ट करने की कोशिश की। जब चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने अमेरिका और च्याग के इस नीचतापूर्ण सुझाव को ठुकरा दिया, तो च्याग काइ-शेक ने यहाँ तक कहा कि मुक्त इलाके की सेना के 'पुनर्गठन' के लिए चुने तीन आदमियो की एक कमेटी बनाई जाय जिसमे एक अमेरिकन सदस्य भी रहे। इसी के साथ साथ अमेरिकन प्रतिनिधि पैट्रिक जे हर्ले ने धमकी के स्वर मे घोषित किया कि अमेरिका केवल च्याग काइ-शेक के साथ ही सहयोग करेगा, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ नही।

पर कम्युनिस्ट इतने कच्चे गोइयाँ नही थे कि वह अमेरिका और च्याग की चालो को न समझ पाते और उनकी बन्दरघुड़कियो मे आकर उनके सामने सिर नवाते। इसीलिए इन धमकियो और धोखेबाजी से न प्रभावित हो अपने उन्मुक्त और स्वतन्त्र होने के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने से पार्टी और चीनी जनता रुक न सकी।

(1) च्यांग फूला न समाया (1943 ई.)–1942 ई मे पश्चिमी साम्राज्यवादियों ने च्याग काइ-शेक को बिल्कुल अपनी मुट्ठी मे पाया, तो भी 12 जनवरी, 1943 को च्याग ने गद्गद हो रेडियो भाषण मे कहा था* :

"मेरे देश भाइयो,

"गत वर्ष 10 अक्टूबर को सयुक्त राष्ट्र अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन ने अपनी इच्छा से उन विशेष अधिकारो और सुविधाओं को छोड़ दिया, जो उन्हे असम सन्धियों के कारण चीन मे प्राप्त थी। कल हमारी सरकार ने सयुक्त राष्ट्र और ग्रेट ब्रिटेन की सरकार के साथ चुग-छिंग (चुकिंग) और वाशिंगटन मे नई सन्धि की है, जो

* चीन का भाग्य पृष्ठ 82

समानता और पारस्परिक सहयोग पर आधारित है। मेरे देश भाइयो, छिंग राजवंश के समय चीन और विदेशी राष्ट्रों के बीच हुई असम-संधियों में से जो प्रथम संधि हुई थी, उसे पिछले वर्ष एक सौ वर्ष पूरा हो गया था। पचास वर्षों की खूनी-क्रान्ति और साढ़े पाँच वर्षों के आक्रमण विरोधी संघर्ष के बाद–जिनमें जनता ने महान् बलिदान दिया है–हम लोगों ने अन्त में असम-सन्धियों को रद्द कर उनके एक सौ वर्षों के दुःखद इतिहास को शानदार कहानी में बदल दिया है। यह पुनरुत्थान चुंग ह्वा (चीन) राष्ट्र के इतिहास का एक नया पृष्ठ ही नहीं, बल्कि संसार के मार्ग निर्देशन के लिए ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और अन्य देशों द्वारा समानता और स्वतन्त्रता का प्रकाश स्तम्भ स्थापित करना भी है। ऐसा करके संयुक्त राज्यों ने जोकि इस युद्ध में हमारे सहयोगी हैं, यह सिद्ध कर दिया कि वे मानवता और न्याय के लिए लड़ रहे हैं। यह कार्य वास्तव में अमेरिका और अंग्रेजी सरकार तथा उनकी जनता के लिए बहुत बड़ी प्रतिष्ठा और सम्मान का है। खासकर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का व्यवहार तो इतना प्रशंसनीय है कि वह हमारी आशा आकांक्षा के साथ मिलकर एक हो गया है, और उसने अपने लिए किसी तरह का संरक्षण नहीं रखा है।"

(2) तरुणों का 'उपदेश'–च्यांग और उसके सम्बन्धी चार परिवार आँख मूँदकर चीनी जनता को लूट रहे थे, सारे देश में घूस रिश्वत और चोरबाजारी चल रही थी। तरुण भला च्यांग के शासन को कैसे बर्दाश्त कर सकते थे? और जब तरुण हाथ से बाहर निकल गये, तो च्यांग और उसके कुओ मिन्तांग को क्या आशा हो सकती थी? च्यांग ने युवकों को फुसलाने के लिए कम कोशिश नहीं की। उसने बड़े बड़े उपदेश दिये, जिन्हें ज्ञानी तरुण तरुणियाँ और कम्युनिस्ट "छप्पन चूहा खाके बिलाई भई भक्तिन" कहकर उसे घृणा की निगाह से देखते थे। योगी च्यांग गद्दी पर बैठकर बोल रहा था।*

"हमारा राष्ट्रीय और सामाजिक पुनर्निर्माण आसानी से पूरा हो सकता है, अगर सम्पूर्ण राष्ट्र के युवक इस बात के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हों कि दूसरे लोग जिस काम को करने का साहस नहीं कर सकते, उसे हम करेंगे, दूसरे लोग जिन क्लेशों को नहीं सह सकते, उन्हें हम सहेंगे, तथा राष्ट्रीय और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के एवं जनता के जीवन को सुखी बनाने के लिए हम खतरे और कठिनाइयों को झेलते हुए भी सीमाप्रान्तों तथा देश के भीतरी भागों में जाकर लोगों का मार्ग प्रदर्शन करेंगे।"

च्यांग और उसके लग्गू भग्गुओं को लूटकर करोड़ों अरबों की सम्पत्ति जमा करते हुए देखकर कौन सा समझदार तरुण निःस्वार्थ भाव से इन लुटेरों की बात पर तपस्वी होने के लिए तैयार होकर मल्लू बनता? च्यांग कहता ही रह गया–

"आज जो हमारे नवयुवकों में तरह तरह की बुराइयाँ घुस गई हैं, उनका जीवन बेकार जा रहा है, उन्हें किसी काम में सफलता नहीं मिलती है, इसका बुनियादी कारण यह है कि उन्हें बड़ी गड़बड़ शिक्षा मिली है। चूंकि वे अपने अध्यापकों के बताये मार्ग पर नहीं चलते, अपने जीवन की सफलता या असफलता के लिए संगठन के महत्त्व को नहीं समझते और यह भी नहीं समझते कि 'स्वतंत्रता' और 'अनुशासन' का क्या अर्थ है, इसलिए वे अपने व्यवहार में गैर जिम्मेवार होते हैं, उनका सोचना अव्यावहारिक होता है। समाज में जब प्रवेश करते हैं, तो अपने में किसी व्यावहारिक कार्य के करने की क्षमता तथा विश्वास का अभाव पाते हैं। फिर सामाजिक और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य की बात तो दूर रह जाती है। वे कठिनाई तथा उत्तरदायित्व उठाने की क्षमता प्राप्त कर सकें तथा सामाजिक और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण कार्य के योग्य बन सकें, इसके लिए आवश्यक है कि वे अपने विचारों का विकास वैज्ञानिक ढंग से करें और अपने आचरण को कड़े अनुशासन में रखें। इसीलिए प्रतिरोध युद्ध प्रारम्भ होने के तुरन्त ही बाद मैंने 'सान् मिन् चु इ युवक संघ' का संगठन किया ताकि संपूर्ण देश के युवक युवतियों की आवश्यक माँगों की पूर्ति हो, कुओ मिन्तांग को नवजीवन प्राप्त हो और चुंग-ह्वा राष्ट्र में एक नई वर्धिष्णु शक्ति पैदा हो।"

कुओ मिन्तांगी तानाशाह ने नेहरू की तर्कशैली में अपनी आँखों के सामने के शहतीर को न देखते हुए

* चीन का भाग्य, पृष्ठ 202-204

कम्युनिस्टों को भी उपदेश देने की धृष्टता करते हुए कहा था* :

"मैं पहले अपने उन मित्रों से पूछता हूँ, जो कुओ-मिन्तांग के विपक्ष में हैं—क्या आप कुओ मिन्तांग का इसलिए विरोध करते हैं, कि उसके सिद्धान्त लचर हैं ? या इसलिए कि उसकी नीति ठीक नहीं है ? अगर हम कुओ-मिन्तांग को वास्तविकता की दृष्टि से देखे, उसके अतीत के कामों की छानबीन ऐतिहासिक दृष्टि से करें, उसके वर्तमान के कामो की ससार की बदलती परिस्थितियों की दृष्टि से जाँच करें, उसके भविष्य को अपनी राष्ट्रीय सभावनाओं की दृष्टि से आँकें; तो मुझे विश्वास है कि हम सभी एकमत होंगे कि चीन के लिए 'जनता के तीन सिद्धान्त' ही एकमात्र ऐसे सिद्धान्त हैं, जो एकसाथ ही व्यापक तथा ठोस भी है और हम लोगो के अनुसरण करने के लिए क्रान्ति ही एकमात्र महान् और प्रशस्त पथ है। हम सबो को यह समझना चाहिए कि कुओ-मिन्ताग ही क्रान्तिकारी कामों की प्रमुख संस्था है, जिसने प्रजातन्त्रात्मक राज की स्थापना की है तथा वह हमारे राष्ट्रीय पुनरुद्धार और पुनर्निर्माण की प्राणशक्ति है। अगर आप मानते है कि इसकी नीति ठीक है और इसके सिद्धान्त ठोस हे; अगर आप स्वीकार करते है कि इसने जो क्रान्ति प्रारम्भ की है, वह राष्ट्र की भलाई के लिए है; तो आपको कुओ-मिन्ताग मे सम्मिलित होकर उसके सिद्धान्त की पूर्ति और उसकी नीति के उत्कर्ष के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। अगर आप समझते है कि इसके काम और रुख मे कुछ दोष है, तो आपको सुझाव देकर उसे ठीक करने का प्रयत्न करना चाहिए। केवल इतने के लिए ही आपको कुओ-मिन्ताग का विरोध नही करना चाहिए या इसे मिटाने की कोशिश नही करनी चाहिए; क्योंकि कुओ मिन्तांग को मिटाने की कोशिश करना चुग-हा राष्ट्र के सपूर्ण जीवन को मिटाने की कोशिश होगी। अपने राष्ट्र के जीवन को नष्ट करना अपने जीवन तथा भविष्य की अपनी सन्तानो के जीवन को नष्ट करना है। इस प्रकार के फल की कामना करना बड़ा ही खतरनाक है।"

अमेरिका च्याग की पीठ ठोकते हुए भी उसकी भ्रष्टाचार और अयोग्यताओं को अच्छी तरह जानता था, इसलिए वह च्याग की लगाम को खुली छोड़ देने के लिए तैयार नही था, इसलिए च्याग ने जब चौथी से नई चौथी-सेना पर आक्रमण करके गृहयुद्ध को पूरी तौर से भड़काना चाहा, तो तत्कालीन अमेरिकन राज्यसेक्रेटरी सुमनर वेल्स ने कहा कि अमेरिकन सरकार चीन के सभी दलों और गुटों में विचार विनिमय द्वारा शान्ति स्थापित करना चाहती है, और वहाँ के सभी दलों और सगठनों मे पूर्ण एकता देखना चाहती है। इसी एकता को कायम करने के लिए रूजवेल्ट ने अपने एक सबसे बड़े जेनरल स्टिलवेल को चीन वर्मा के मोर्चे पर अमेरिकन सेना का सेनापति और मित्र-राष्ट्रों की ओर से च्याग काइ शेक का चीफ-आफ स्टाफ (सेना का मुख्य सचालक) बनाकर भेजा। स्टिलवेल ने कुछ ज्यादा ईमानदारी दिखलानी चाही, और वह ऐसा करने के लिए मजबूर भी था, क्योंकि वह देख रहा था, कुओ-मिन्तागी सेना जापान पर जवाबी हमला करने मे असमर्थ है। उसने इस सेना के भ्रष्टाचार और सैनिक अयोग्यता को निकालने की कोशिश की। इसी समय हूनान और होनान मे च्याग की पराजय के कारण चुग किग का पतन नजदीक दिखलाई पड़ने लगा, इसलिए जरूरी हो गया कि कम्युनिस्टों के साथ मेल किया जाय।

अमेरिकन उप राष्ट्रपति वालेस के चुग किग पहुँचने पर उसके कहने से च्याग ने एक छोटे से अमेरिकन मिशन को लाल-राजधानी येनान जाने की आज्ञा दी। मिशन के लोगो ने मुक्त इलाको की अच्छी तरह छानबीन की। कम्युनिस्टो के शासन, सैनिक-शिक्षा और गोरिल्ला-युद्ध को देखकर वह बहुत प्रभावित हुए। कर्नल बरेट ने स्वीकार किया कि शत्रु की पाँती के पीछे सात वर्ष तक सफलतापूर्वक लड़नेवाले इन लोगों से हमे शिक्षा लेनी चाहिए। इसी प्रकार अमेरिकन डाक्टर दल के मेजर केसबर्ग ने कहा कि साधनों के अभाव मे भी घायलों की चिकित्सा का जो प्रबन्ध यहाँ है, वह अत्यधिक साधनवाले हम लोगों के लिए एक चुनौती है। अमेरिकन पत्रकार और दूसरे सैनिक भी येनान और मुक्त इलाके को देखकर बड़े प्रभावित हुए। इन्ही दिनो जापान के कब्जेवाले चीनी शहरो पर बमवर्षा करनेवाले अमेरिकन वैमानिको को लाचार होकर जब पैराशूट से नीचे कूदना

* 'चीन का भाग्य', पृष्ठ 211 212

पड़ा, तो कम्युनिस्ट गोरिल्लों ने उनकी रक्षा करते हुए, उन्हें चुंग-किंग में सुरक्षित पहुँचा दिया। इन लोगों ने उनकी आँखों से कम्युनिस्ट सेना और मुक्त इलाकों को देखा और उसकी प्रशंसा उन्होंने अपनी छावनियों में की।

इसी परिस्थिति में सितम्बर, 1944 में कम्युनिस्टों और कुओ-मिन्तांग के बीच बातचीत हुई, और च्यांग ने मजबूर होकर 'जनता की राजकीय सभा' बुलाई थी, जिसमें कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ से लिन् पो-युए ने माँग की थी कि सभी राजकीय दलों की एक सलाहकार परिषद् जल्दी बुलाई जाय, सर्वदली सरकार बनाई जाय, मुक्त इलाकों की सरकारों को स्वीकार किया जाय, सभी चीनी सेनाओं के साथ समान व्यवहार और सेना के संचालन में हमारे लिए भी स्थान दिया जाय। लेकिन, च्यांग ऐसा समझौता क्यों करने लगा ? वह मुक्त इलाकों को नहीं स्वीकार करना चाहता था। आठवीं मोर्चा-सेना और नई चौथी-सेना को भी तभी स्वीकार करने को तैयार था, जब वह अपनी संख्या दो-तिहाई कर दें, और गोरिल्ला टुकड़ियों तथा सशस्त्र किसानों को बेहथियार कर दे। बातचीत टूट गई।

इस पर अमेरिका की ओर से स्टिलवेल ने सुझाव रक्खा कि जिस तरह आइजेनहोवर यूरोप में सभी मित्रराष्ट्रों की सेनाओं का सेनापति है, उसी तरह स्टिलवेल को चीनी युद्ध का सर्वोच्च सेनापति माना जाय, जिसमें कि कुओ-मिन्तांग कम्युनिस्ट की और अमेरिका की सेनाओं का जापान के विरुद्ध संगठित इस्तेमाल किया जा सके। चीन के सभी जनतन्त्रवादी दलों ने सुझाव को पसन्द किया। कम्युनिस्ट सेना के महा-प्रधान सेनापति चू-तेह ने भी स्टिलवेल के अधीन काम करना स्वीकार किया, और दूसरे प्रादेशिक जेनरलों ने भी। लेकिन च्यांग ऐसा स्वीकार क्यों करने लगा, जबकि वह जानता था, कि ऐसा करने पर मुक्त इलाकों को घेरकर पड़ी अपनी सबसे अच्छी सेना को लड़ाई के मोर्चे पर भेजना पड़ेगा, और युद्ध के बाद उपयोग करने के लिए अमेरिकन हथियारों को वह अच्छी तरह जमा नहीं कर सकेगा, साथ ही अमेरिकन सहायता को दूसरी सेनाओं में भी बाँटना पड़ेगा। च्यांग के दूसरे सेनापति भी इस प्रस्ताव से अपनी भारी क्षति देख रहे थे। वह अमेरिकन युद्ध-सामग्री और दवाइयों को काले बाजार में बेचकर लाखों अपनी जेब में भर रहे थे। च्यांग और इन प्रतिक्रियावादी चीनी जेनरलों ने अपने अमेरिकन मित्रों द्वारा रूजवेल्ट पर जोर डाला, और च्यांग ने सीधे भी रूजवेल्ट से माँग की कि स्टिलवेल को हटा लिया जाय, क्योंकि उसका व्यवहार बहुत बुरा है। उसने धमकी दी कि ऐसा नहीं करेंगे, तो मैं अमेरिकन प्रोग्राम पर बातचीत नहीं करूँगा। च्यांग का समर्थन रूजवेल्ट के चीन में स्थित विशेष प्रतिनिधि तथा तेल के व्यापारी पैट्रिक हरले ने भी किया। इन दबावों के कारण रूजवेल्ट ने स्टिलवेल को चीन से हटा लिया। सभी प्रगतिशील तत्त्वों ने इसका विरोध किया और चीन में अमेरिका के राजदूत गास ने तो अपने पद से त्यागपत्र भी दे दिया। इसके थोड़े ही समय बाद रूजवेल्ट की मृत्यु हो गई, और अमेरिकन प्रतिक्रियावादियों के सरदार राक्षस ट्रूमन ने अमेरिकन राष्ट्रपति पद को सँभाला, वही ट्रूमन जिसने हार से गये जापान के ऊपर दो दो अणुबमों को फेंकवाकर हिरोशिमा और नागासाकी के लाखों निरीह आदमियों के प्राण लिए। अब हरले चीन का राजदूत बना दिया गया, और स्टिलवेल की जगह वेडमेयर को अमेरिकन जेनरल नियुक्त किया गया। च्यांग और चीन के प्रतिक्रियावादियों की अब पाँचों घी में थीं।

स्टिलवेल ने जो प्रस्ताव अमेरिका की ओर से रक्खा था, उसके लिए अब च्यांग पर दबाव डालने की जरूरत नहीं थी। जर्मनी को भी हार हो चुकी थी और कम्युनिस्टों के साथ समझौता किये बिना ही जापान को परास्त किया जा सकता था। च्यांग ने स्टिलवेल के सुझाव का हवाला देकर जोर दिया कि कम्युनिस्ट सेनाएँ संयुक्त कमान में रख दी जायँ, लेकिन कम्युनिस्ट ऐसा क्यों करने लगे ?

हरले येनान् और चुंग-किंग के बीच कितने ही दिनों तक उड़ता-फिरता रहा। उसके और वेडमेयर के सामने ही च्यांग ने येनान् के मुक्त इलाके पर 1945 के वसन्त में आक्रमण कर दिया, लेकिन अमेरिकन अस्त्रों से सुसज्जित उसकी सेना को असफल हो पीछे हटना पड़ा, और बहुत-सा अमेरिकन हथियार पहली बार कम्युनिस्टों के हाथ में गया, जिनकी सूची उन्होंने प्रकाशित कर दी। पत्रकार सम्मेलन में पूछे जाने पर हरले ने बतलाया कि वह शायद चुरा लिये गये हैं।

4. सातवीं पार्टी कांग्रेस (1945 ई.)

इसी समय 24 अप्रैल को येनान मे कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं काग्रेस हुई, जिसमे पार्टी के 12 लाख 10 हजार मेम्बरो ने अपने 544 प्रतिनिधि भेजे थे।

(1) मुक्तियुद्ध पर चू-तेह की रिपोर्ट–इस काग्रेस के सामने सेनापति चू-तेह ने सैनिक प्रगति का विवरण देते हुए कहा था :

" साथियो ! हमारी पार्टी की सातवी काग्रेस ऐसे समय हो रही है, जबकि महान् चीनी जनता जापानी आक्रमणकारियो के विरुद्ध अपने वीरतापूर्ण प्रतिरोध-युद्ध को करीब आठ वर्ष तक चला चुकी है। यह मेरे लिए बडे सम्मान की बात है कि मुझे यहाँ अपनी पार्टी काग्रेस के सामने आठवी-मोर्चा सेना के 9 लाख सैनिको, नई चौथी सेना, दक्षिण-चीन जापान विरोधी कालम और 2 लाख से अधिक वीरतापूर्वक लड़नेवाले मिलिसिया ज्वानो की ओर से बोलने का मौका मिला है। मुझे यह बतलाना है कि इन आठ सालो में हमारी महान् चीनी जनता ने एक जापान विरोधी राष्ट्रीय सयुक्त मोर्चा बनाया और जवान-बूढे, नर नारी सभी ने सभी युद्ध मोर्चो पर आक्रमणकारी जापान के खिलाफ जबर्दस्त जीवन मरण का सघर्ष जारी रक्खा। जैसे ही एक आदमी गिरा, उसकी जगह लेने के लिए दूसरा आगे बढा। इससे सन्देह की कोई गुजाइश नही रह जाती, कि चीनी जनता अन्त में विजयिनी होगी। इन आठ वर्षो में हमारी महान् चीनी जनता की सेनाएँ–आठवी मोर्चा सेना, नई चौथी सेना और दक्षिण-चीन जापान-विरोधी कालम–जापान विरोधी मित्र सेनाओं से कन्धे से कन्धा मिलाकर अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए लडी। युद्ध के मैदानो मे, उत्तर के मुक्त इलाको मे, केन्द्रीय और दक्षिणी चीन मे चीनी जनता के साथ हम कम्युनिस्टो ने विशेष तौर से बहुत भारी परिमाण में अपना खून बहाया। हम चीनी कम्युनिस्ट यह कहने में अभिमान कर सकते है कि हमने अपने को चीनी जाति के सर्वश्रेष्ठ पुत्र और पुत्री कहने के अयोग्य नही साबित किया, क्योंकि हम उस कर्तव्य का पालन कर रहे है, जोकि चीनी जनता के हृदय मे सबसे अधिक प्रिय है, और जिसे हम बराबर इसे करते रहेंगे।

" साथियो ! हमारी वर्तमान काग्रेस इस उद्देश्य से बुलाई गई है कि हम प्रतिरोध युद्ध के अनुभवो का लेखा जोखा ले और उसमे अन्तिम विजय के लिए प्रयत्न करने मे सारी चीनी जनता और आगे सभी जापान विरोधी मित्र सेनाओ के साथ सहयोग करने के लिए तैयारी करे। हमारी पार्टी के नेता साथी माओ चे तुग की राजनीतिक रिपोर्ट 'मिली जुली सरकार' के साथ मै पूरी तौर से सहमत हूँ। यह ऐतिहासिक महान् दस्तावेज साकार रूप मे चीना स्वतन्त्रता आजादी जनतन्त्रता, एकता और समृद्धि के लिए चीनी जनता के अद्वितीय सघर्ष के अनुभवो का सार है। इसमे जापानी आक्रमणकारियो का हराने तथा नवीन चीन के निर्माण करने के लिए साकार उपाय और प्रोग्राम बतलाये गये है।

" बिना ठीक राजनीतिक नीति के ठीक सैनिक नीति नही हो सकती। ठीक राजनीतिक नीति के पथ-प्रदर्शन मे और जनता के साथ जनतांत्रिक मिली जुली सरकार के आधार पर ही लोकयुद्ध की विजय हो सकती है। आठ सालो तक हमारी महान् चीनी जनता की सेनाओ ने अद्वितीय, वीरतापूर्ण, कठोर, भव्य और विजयी युद्ध को जारी रक्खा और वह चीन के प्रतिरोध-युद्ध का मेरुदण्ड बन गई। यह इसलिए कि साथी माओ चे-तुग की राजनीतिक और सैनिक नीति ठीक है। साथी माओ चे तुग की ठीक राजनीतिक नीति उनकी ठीक सैनिक नीति से मिलकर जनता की सेना, मुक्त इलाके, तीन व्यवस्थाओ के अनुसार जनतात्रिक मिलीजुली सरकार के अस्तित्व और एक सच्चे लोकयुद्ध को लाने मे सफल हुई और मुक्त इलाको के युद्धक्षेत्रों मे एक के बाद एक हमे कितनी ही महान् विजय प्राप्त करने मे सफलता मिली। "

सेनापति चू-तेह ने साला पहले लिखी माओ की महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'लम्बा युद्ध' की ओर सकेत करते हुए आगे कहा :

" चाहे परिवर्तन कितने ही पेचीदा क्यो न हुए हो, लेकिन उनका विकास साथी माओ चे तुग की पुस्तक 'लम्बे युद्ध' मे की गई वैज्ञानिक भविष्यवाणी की सीमा से बाहर नही गया, जिसमे कहा गया था कि प्रतिरोध

की तीन मंजिलें होंगी : शत्रु का आक्रमण, शिथिलता और हमारा जवाबी हमला। हम इन तीनों मंजिलों से अभी पार नहीं हो सके हैं। इस समय हम तीसरी मंजिल के आरम्भ में हैं।

"पहली मंजिल 7 जुलाई, 1937 के लकोउ चियाओ (पकिंग के पुल) में शुरू हुई और उसका अन्त अक्तूबर 1938 में वूहान के पतन के साथ हुआ। इस मंजिल के दौरान में कुओ मिन्ताग के अधिकारियों ने अप्रतिरोध की ओर होकर घरेलू पालिसी में कुछ प्रगतिशील कदम उठाये थे, चीनी की स्थानीय सेनाओं में से काफी ने जापानी आक्रमणकारियों के विरुद्ध सक्रिय और वीरतापूर्ण प्रतिरोध किया, यद्यपि कुओ मिन्ताग सेना के दूसरे भाग घबराकर शत्रु के मुकाबले में कोई प्रतिरोध किये बिना भाग गये।"

दूसरी मंजिल के बारे में बतलाते हुए चू तेह ने कहा :

"दूसरी मंजिल : वूहान के पतन के बाद आरम्भ हुई पहले अक्तूबर 1938 में वूहान के पतन से 1944 तक के साढ़े पाँच साल के लम्बे अर्से में जापानियों ने एक बार फिर कुओ मिन्ताग युद्धक्षेत्र में दाँव पेच का आक्रमण शुरू किया और चीन में स्थित जापानी आक्रमणकारियों की मुख्य सेनाएँ मुक्त इलाकों के विरुद्ध लड़ने में लगी रहीं। 1943 तक चीन में अवस्थित जापान की सारी आक्रमणकारी सेना का 64 सैकड़ा और कठपुतली सेना का 94 सैकड़ा मुक्त इलाकों को दबाने में लगा था। इस लम्बे समय में कुओ मिन्ताग के कब्जेवाले भूभाग के युद्धक्षेत्र में एक भी बड़ी लड़ाई नहीं हुई। जहाँ तक कि कुओ मिन्ताग का सम्बन्ध था, यह सुस्ती का समय था।

साढ़े पाँच साल के लम्बे अर्से में कुओ मिन्ताग सरकार को प्रगति के लिए प्रयत्न करने तथा जवाबी हमले की तैयारी करने के लिए काफी अवसर मिला था। लेकिन उसने हमले की तैयारी करने की जगह कम्युनिस्ट विरोधी तीन अभियान भेजे, प्रतिरोध युद्ध की शक्तियों का मुकाबला करने की जगह उन्हें कमजोर किया, दृढ़तापूर्वक युद्ध को जारी रखने के बदले नारा लगाया 'राष्ट्रीय मुक्ति घुमावदार तरीके से' और शत्रु के साथ मेल मिलाप बढ़ाया। फलतः युद्ध के पिछले भाग में कुओ मिन्ताग की सेनाएँ परीक्षा में पास नहीं हो सकीं। वह या तो अपनी स्थिति को कायम रखने में विफल रहीं या शत्रु के हाथ की कठपुतली सेना बन गईं। जब जापानी आक्रमणकारियों ने 1944 में इस अभिप्राय से आक्रमण किया कि प्रधान भूमि के साथ यातायात और संचार स्थापित किया जाय तो होनान, हूनान, क्वान्तुंग और क्वान्सी के कुओ मिन्ताग शासित प्रदेशों के विशाल भूभाग थोड़े से समय में ही शत्रु के हाथ में चले गये। जब शत्रु ने कुओ मिन्ताग वाले इलाकों पर आक्रमण किया तो हमने मुक्त इलाकों के युद्धक्षेत्रों में शत्रु पर आक्रमण किया। 1944 से ही यह नई स्थिति चली आ रही है।

इस प्रकार हरेक आदमी समझ सकता है कि कुओ मिन्ताग के अधिकारियों ने वह काम नहीं किया जो उन्हें करना चाहिए था और वह काम बड़े जोर शोर से किया जो उन्हें नहीं करना चाहिए था। फलतः कुओ मिन्ताग की सेनाएँ अधिक और अधिक निर्बल होती गईं। मुक्त इलाकों की स्थिति इससे बिल्कुल उलटी है। आठवीं मार्चा सेना, नई चतुर्थ-सेना और दक्षिण चीन जापान विरोधी कालम लड़ाई करते-करते अधिकाधिक मजबूत होते गये। उन्होंने खोये हुए इलाकों को फिर से अपने हाथ में कर लिया, अत्यन्त गम्भीर कठिनाइयों को पार किया और अब विकास और विस्तार की नई मंजिल में दाखिल हो रहे हैं। इस समय प्रतिरोध युद्ध का केन्द्र कुओ मिन्ताग अधिकृत इलाके में नहीं, बल्कि मुक्त इलाकों के युद्धक्षेत्रों में है।

"आठवीं मार्चा सेना, नई चतुर्थ सेना और दक्षिण चीन जापान विरोधी कालम चीनी जनता की सेनाएँ हैं, जिनकी पूर्वज चीनी लालसेना थी। महान् जनता की इस सेना का निर्माण करते समय हमारी पार्टी और साथी माओ चे तुग ने—जो चीनी जनता की इच्छा का प्रतिनिधित्व करते हैं—जनता की सेवा और मातृभूमि की प्रतिरक्षा का पवित्र कर्तव्य उसके सामने रक्खा, और राष्ट्र और जनता की मुक्ति के लिए संघर्ष करना उसका लक्ष्य बतलाया। 18 सितम्बर, 1931 के मुकदन दुर्घटना के बाद हमारी पवित्र भूमि को जापानी आक्रमणकारियों के पैरों तले रौंदी जाती देख खून का घूँट पीती महान् जनता की सेना जापानी आक्रमणकारियों के विरुद्ध लड़ने के लिए पूर्णतया उत्साहित हो गई।

" कितने ही वर्षों तक अगणित कठिनाइयों का सामना करते, भारी परिमाण में खून देते, महान् अभियान को पूरा करते इस सेना ने गृह युद्ध को खतम करने और जापानी आक्रमणकारियों के विरुद्ध एकताबद्ध हो लड़ने के महान लक्ष्य को पूरा करने के लिए हर सम्भव तरीके से कोशिश की। शेन्सी-कान्सू-निग स्या सीमांत भूभाग में पहुँचने के बाद हमारी सेना ने प्रतिरोध-युद्ध के सम्बन्ध में काफी तैयारी का काम पूरा किया। तीनो मोर्चों की सेनाओं का विलयन, सियान्-दुर्घटना का शान्तिपूर्ण समझौता, कर्मियों की शिक्षा की तैयारी और सारे चीन में अनेक मित्र सेनाओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करना। यह सभी बातें अच्छी तरह से की गईं।

" लुकोउचियाउ-दुर्घटना (1937 ई) के तुरन्त ही बाद हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और महान जनता की सेना के अफसरों और सैनिकों ने तुरन्त एक अपील निकालकर प्रार्थना की कि जनता की सेना को राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना के रूप में पुनः संगठित किया जाय, और उसे जापानियों से लड़ने के लिए युद्धक्षेत्र में भेजा जाय।

" सितम्बर, 1937 में आठवीं मोर्चा-सेना साथी माओ चे-तुग की श्रेष्ठ सैनिक सूझ के अनुसार उत्तरी चीन में शत्रु के पीछे की ओर पश्चात् भाग में घुस गई। हमारा 115वाँ डिवीजन शान्सी चहार होपेइ भूभाग में दाखिल हुआ, हमारा 120वाँ डिवीजन उत्तर पश्चिमी शान्सी प्रदेश में और हमारा 129वाँ डिवीजन दक्षिण पूर्वी शान्सी प्रदेश में घुसा। 1938 में हमारी सेना पूर्व की ओर और भी आगे बढ़ी। इसका एक भाग होपेइ शान्तुग होनान् के मैदानों और शान्तुग के मैदान में, दूसरा भाग केन्द्रीय होपेइ मैदान में और एक भाग और भी आगे बढ़ते हुए ऐसे पूर्वी होपेइ में पहुँचा, कि दो लाख जनता के जापान विरोधी महान विद्रोह के साथ मिल गया। 1938 के वसन्त में नई चतुर्थ-सेना ने युद्धक्षेत्र में आठवीं मोर्चा-सेना का अनुगमन किया। शत्रु के पश्चात भाग में केन्द्रीय चीन में घुसकर उसने याग-ची नदी के दोनों तटों पर जापान विरोधी गोरिल्ला युद्ध शुरू कर दिया। इसी साल के जाड़ों में क्वान्तुग प्रदेश के तुगकियाग कालम ने कान्तन के पतन के बाद तुग कियाग में विद्रोह आरम्भ किया। 1939 में जब हेनान द्वीप का पतन हुआ, तो हमारी पार्टी के नेतृत्व में स्थानीय लोगों ने जापान से लड़ने के लिए गोरिल्ला सेनाएँ संगठित की। युद्धक्षेत्र में पैर रखने के समय आठवीं मोर्चा-सेना ने शान्सी प्रदेश के पिग शिग कुआन में राष्ट्रव्यापी प्रतिरोध युद्ध में शत्रु के विरुद्ध उसके सत्यानाश की प्रथम लड़ाई लड़ी।"

प्रतिरोध युद्ध के तीन मंजिलों के बारे में कहते जेनरल चू तेह ने बतलाया :

"सितम्बर, 1937 में पिग शिग कुआन युद्ध की विजय से 1944 के 100 रेजिमेंट युद्ध तक आठवीं मोर्चा-सेना और नई चतुर्थ-सेना ने जापानी आक्रमणकारियों के 'बीन बीनकर मारने' के दाँव-पेच को पहले बेकार कर दिया। फिर 'चारों तरफ से घेरकर एक बिन्दु पर आक्रमण करने' के दाँव-पेच को बेकार कर दिया। 1939 के बाद आठवीं मोर्चा-सेना और नई चतुर्थ-सेना ने जापानी कमांडिंग जेनरल होबुन यमाशिता और डिवीजन-कमांडर कूवा के द्वारा तैयार की गई 'गिराने', 'छिन्न-भिन्न करने' और 'बीन बीनकर मारने' के सम्मिलित नये दाँव-पेच को सफलतापूर्वक चूर्ण कर दिया। लगातार होनेवाली इन विजयों ने एक नई स्थिति पैदा कर दी, और उत्तरी तथा केन्द्रीय चीन में बहुत से मुक्त इलाके पैदा कर दिये। आठवीं मोर्चा सेना हजारों से अब 5 लाख 40 हजार जवानों की सेना हो गई और मुक्त इलाके की आबादी 4 करोड़ तक पहुँच गई। नई चतुर्थ-सेना 15 हजार से 1 लाख की हो गई और उसने 1 करोड़ 30 लाख की आबादी को मुक्त कर दिया। यह शत्रु के पश्चात्-भाग में मुक्त इलाकों के निर्माण और विस्तार का समय था।

" 1940 के वसन्त में 100 रेजिमेन्ट लड़ाई में आठवीं मोर्चा-सेना की जबर्दस्त विजय से घबराकर शत्रु (जापान) ने उत्तरी चीन में अपनी अभियान-सेना के मुख्य सेनापति को बर्खास्त करके उसकी जगह यासुतसुगु ओकामुरा को सेनापति बनाया। हमारी सेना पर आक्रमण करने के अपने तरीके को इसने पूरी तौर से बदलकर, 'वृहत्तर-पूर्व एशिया में नवीन व्यवस्था' के स्थापित करने का प्रस्ताव रखा।

" जहाँ भी शत्रु ने पैर रक्खा, वहाँ उसने एक ओर से जलाना-मारना शुरू किया और इस प्रकार 'निर्जन भूमि' बनाकर हमारी सेना के अस्तित्व के लिए आवश्यक स्थितियों को हटाने की कोशिश की। विशेषकर जापानी आक्रमणकारियों ने करीब 1 लाख सेना को काम में ला 'बीनकर मारने' के अभियान को लगातार एक के बाद

...तीन या चार महीने तक चलते। इसके कारण स्थिति अत्यन्त गम्भीर ... इसलिए कि उसी समय सारे उत्तरी-चीन के बहुतेरे स्थानों में अकाल पड गया, और सेना और जनता दोनों ही वृक्षों की पत्तियों और घास की जड़ों को खाने के लिए मजबूर हुई। इसके कारण स्थिति और भी भयंकर हो गई। किन्तु हमारी सेना ने जनता के साथ एकताबद्ध हो दृढ़तापूर्वक बडी वीरता के साथ संघर्ष जारी रक्खा।

" 1942 तक रहनेवाले इस काल में उत्तरी चीन में मुक्त इलाकों की जनसंख्या कम होकर ढाई करोड रह गई और आठवी मोर्चा-सेना तीन लाख। केन्द्रीय चीन के मुक्त इलाके में यद्यपि उत्तरी चीन की अपेक्षा छोटे-छोटे कितने ही संघर्ष हुए, किन्तु नई चतुर्थ सेना बढ़कर 1 लाख 80 हजार जवानों की हो गई और उसने 2 करोड की आबादी को मुक्त किया। इस सारे कठिन समय में हमारी सेना और मुक्त इलाके की आबादी यद्यपि संख्या में कम हो गई, लेकिन गुण में वह फौलादी तथा और भी अधिक मजबूत हो गई। "

महान् और शानदार कुर्बानियों के बारे में जनरल चू तेह ने आगे कहा :

" सितम्बर, 1937 से मार्च, 1945 के साढ़े सात वर्षों में आठवी मोर्चा-सेना, नई चतुर्थ सेना और दक्षिण चीन-जापान-विरोधी कालम ने शत्रु के विरुद्ध 1 लाख 15 हजार से अधिक छोटी बडी लडाइयाँ लडी और शत्रु तथा कठपुतली सेना के 9 लाख 60 हजार आदमियों को हताहत किया और 2 लाख 80 हजार को बन्दी बनाया। इनके अतिरिक्त 1 लाख शत्रु तथा कठपुतली सेना आत्मसमर्पण करके हमारी ओर मिल गई। सब मिलाकर शत्रु और कठपुतली सेना को 13 लाख 60 हजार आदमियों की हानि उठनी पड़ी। हमारी सेना ने अपने हाथ में जो मुख्य-मुख्य युद्ध सामग्री की, उसमें 1,028 तोपें 7,700 मशीनगन और 4,30,000 राइफल तथा कारबीन थी। हमने 34,000 मोर्चाघरों और 11,000 मजबूत मोर्चा स्थानों पर अधिकार प्राप्त किया।

" जनता के जापान विरोधी युद्ध की उल्लेखनीय सफलताओं को शत्रु की अपनी स्वीकारोक्तियों में भी देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ जून, 1943 में उत्तरी चीन की जापानी अभियान सेना के हेडक्वार्टर ने एक कम्यूनिक निकाला था "इस साल जनवरी से मई तक सेना ने 5,67,424 आदमियों की कम्युनिस्ट सेना के साथ युद्ध किया। "

1943 में निम्न रिपोर्ट दी

" शत्रु सेना का अधिकांश भाग च्यांग काइ-शेक की नहीं, बल्कि कम्युनिस्ट सेना है। इस साल जो 15 हजार लडाइयाँ लडी गईं, उनमें 75 सैकडा कम्युनिस्ट सेनाओं के साथ थी और जिन 20 लाख सेनाओं से हम लडे, उनमें आधे से अधिक कम्युनिस्टों की थी। 1 लाख 99 हजार मृत सैनिकों में आधे से अधिक चीनी कम्युनिस्ट सेना के थे। लेकिन, जिन 74 हजार सैनिकों को हमने बन्दी बनाया, उनमें चीनी कम्युनिस्ट सेना के केवल 15 सैकडा थे। यह च्यांग की सेना के हल्केपन को बतलाता है, और साथ ही प्रकट करता है, कि चीनी कम्युनिस्ट सेना के लड़ने की हिम्मत बढ रही है। इसके कारण उत्तरी चीन में साम्राजी सेना के काम का महत्त्व और भी बढ जायगा। उत्तरी चीन की साम्राजी सेना का मुख्य काम केवल यही है कि वह उत्तरी चीन में हमारे भयंकर शत्रु चीनी कम्युनिस्ट सेना के विरुद्ध सर्वनाश के युद्ध को जारी रक्खे।

" इतने महान् बलिदानों को देकर चीनी जनता ने निम्न सफलताएँ प्राप्त की : उन्होंने ऐसे मुक्त इलाके बनाये, जोकि उत्तरी, केन्द्रीय और दक्षिणी चीन के उन्नीस प्रदेशों के क्षेत्रों में फैल गये, और जिनकी आबादी 9 करोड 55 लाख है। हमारी आठवी मोर्चा सेना, नई चतुर्थ-सेना और दक्षिण चीन-जापान विरोधी कालम में 9 लाख 10 हजार बाकायदा सैनिक और 22 लाख से ऊपर मिलिसिया के जवान है। यह आँकडे साफ तौर से मुक्त इलाके के युद्धक्षेत्रों में लोकयुद्ध के भारी विकास को बतलाते है और यह कुओ-मिन्तांग युद्धक्षेत्रों की नाशकारी पराजयों से बिल्कुल उलटे है। "

चू-तेह की इस रिपोर्ट से इसका पता लग जाता है, द्वितीय विश्वयुद्ध के समय माओ चे-तुग के नेतृत्व मे कम्युनिस्ट सेना और चीन की जनता ने कितनी सफलता प्राप्त की, और यह भी मालूम हो जाता है कि च्यांग की सडी शक्ति को उखाड फेकने के लिए वह कहाँ तक तैयार हो चुकी थी।

(2) माओ की राजनीतिक रिपोर्ट—साथी माओ ने कांग्रेस के सामने अपनी रिपोर्ट में बतलाया :

" आपने साथी चू-तेह की रिपोर्ट से समझ लिया होगा कि कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के नीचे लोकयुद्ध के मध्य में चीनी जनता ने उन्नीस मुक्त इलाके स्थापित किये, जिनमे कुल 9 करोड 55 लाख आदमी बसते हैं। जनता की मुक्तसेना मे 9 लाख 10 हजार सैनिक, और हमारी मिलिशिया (सशस्त्र लोक-सेवक दल) में 22 लाख स्वयमेवक काम करते हैं।

" अब हम लोकयुद्ध की तीसरी और अन्तिम मजिल मे प्रवेश करने की तैयारी कर रहे हैं। ऐसे समय राष्ट्रीय मुक्ति और अपनी भावी सरकार के बारे मे हमारे विचार स्पष्ट होने चाहिएँ। पहले की अपेक्षा हम बहुत अधिक मजबूत हैं, तो भी अभी चीन का भारी भाग कुओं-मिन्ताग के अधिकार में है। अमरिकन साम्राज्यवाद जापान-विरोधी युद्ध से लाभ उठाकर चीन को अपना उपनिवेश बनाने की चाल चल रहा है, उसकी मदद पाकर कुओं मिन्ताग का सैनिक बल हमारी अपेक्षा बहुत अधिक है। च्याग काइ शेक फिर घरेलू युद्ध शुरू करना चाहता है। लोकयुद्ध के दौरान मे उसने हमारे विरुद्ध तीन लड़ाइयाँ करके हार खाई, फिर यदि ऐसी मूर्खता करेगा तो फिर हारेगा, इसमे सन्देह नही। लेकिन, हम व्यर्थ बरबादी नही होने देना चाहिए, ऐसा करना समझ की बात भी है; क्योंकि चीन की सभी जनवादी शक्तियाँ सयुक्त सरकार की स्थापना करना चाहती है। "

साथी माओं ने सावधान करते हुए कांग्रेस मे बतलाया :

"कुओं मिन्ताग मे भी एक बदनाम गुट की तानाशाही है, जोकि न केवल प्रतिरोध युद्ध में तथा जनता की एकता और सगठन में भारी बाधा रही, बल्कि वह गृहयुद्ध और तानाशाही की नीति को ही मानता है। वह गृहयुद्ध आरम्भ करने की तैयारी कर रहा था और अब विशेष तौर में कर रहा है। वह केवल मित्र सेनाओं द्वारा चीन के कुछ भागों से जापानियों के भगाने की बाट जोह रहा है। उसे यह भी आशा है कि मित्र सेनापति वही पार्ट अदा करेंगे, जोकि ग्रीस मे जनरल स्कार्बी ने। ये लोग ग्रीस में प्रतिक्रियावादी सरकार और जनरल स्कार्बी द्वारा किये गये खूनी काण्ड का समर्थन और स्वागत करते है।"

माओं ने सामने के करणीयों को बतलाते हुए कहा :

" (1) जापानी आक्रमणकारियों को हमे पूरी तरह से हराना है, इसमें कोई बीच की बात नही हो सकती,

" (2) चीन में फासिस्तवाद के अन्तिम स्वरूप को नष्ट करके उसके अवशेष को भी कही नही रहने देना होगा,

" (3) चीन में जनतांत्रिक शान्ति स्थापित करनी है, और गृहयुद्ध नहीं होने देना चाहिए,

" (4) कुओमिन्ताग की तानाशाही को समाप्त करना होगा। उसकी समाप्ति के साथ साथ सबसे पहले उसके स्थान पर ऐसी अस्थायी जनवादी सयुक्त सरकार स्थापित करनी है, जिसका समर्थन सारा राष्ट्र करता हो। खोये हुए प्रदेशों पर फिर अधिकार करने के बाद एक स्वतन्त्र और मुक्त चुनाव द्वारा जनता की इच्छा का प्रकट करनेवाली बाकायदा सयुक्त सरकार बनाई जाय।

" हम मित्र राष्ट्रों से विशेषकर अमरिका और इग्लेण्ड की सरकारों से प्रार्थना करते है कि वह चीनी जनता के विस्तृत अश की आवाज को गम्भीरतापूर्वक सुने और अपनी नीतियों को चीनी जनता की इच्छा के विरुद्ध न बनावें, नहीं तो वह चीनी जनता की मित्रता को धक्का पहुचा उसे खोकर रहेगी। यदि कोई विदेशी सरकार चीनी जनता के प्रगतिशील लक्ष्य के विरुद्ध यहाँ प्रतिक्रियावादी दलो की मदद करेगी, तो वह भारी गलती करेगी। "

सातवी पार्टी कांग्रेस ने एकमत हो पार्टी के और नई जनवादी-क्रान्ति के काल में पार्टी के आम तथा ठोस कार्यक्रमों को मजूर किया। इस कांग्रेस ने तत्कालीन विश्व और घरेलू परिस्थितियों का ठीक-ठीक लेखा-जोखा किया और समूची पार्टी का तथा प्रतिरोध-युद्ध में अन्तिम जीत प्राप्त करने एव मिली-जुली जनवादी सरकार कायम करने के सघर्ष में शामिल होने के लिए सारे देश की जनता का आह्वान किया। राष्ट्रव्यापी विजय की तैयारी करने के लिए खास तौर से नगरो मे और सबसे अधिक मजूर-वर्ग मे काम को मजबूत करने की और ध्यान देने के लिए समूची पार्टी पर जोर दिया। उसने अपने सेनाबल, जनबल, और भूभाग के बल को

[illegible] वह सारी शक्ति युद्ध के साथ-साथ उत्पादन का भी काम कर रही है। [illegible] के बाद जनमुक्ति-सेना ऐसी स्थिति मे हो गई थी कि वह दुश्मन पर आंशिक जवाबी हमला कर सके। चीन के अधिकांश बड़े नगरों, रेल, डाक-तार की लाइनो और समुद्र-तटो पर जन-मुक्ति-सेना का घेरा या कब्जा कायम हो गया था।

5 जापान की हार (1945 ई)

सातवी पार्टी-कांग्रेस के बाद जन मुक्ति सेना का जवाबी हमला जापानियो के विरुद्ध बडी तेजी से आगे बढ़ने लगा। जर्मनी के पराजित होने के बाद 8 अगस्त (1945 ई) को सोवियत संघ ने जापान के खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया। सोवियत सेना उसी वेग से मंचूरिया मे जापानी सेना को रौदकर बन्दी बनाने लगी जिस तरह उसने पूर्वी जर्मनी मे किया था। जापान की सर्वश्रेष्ठ क्वान्तुंग सेना को नष्ट कर उसने मंचूरिया को मुक्त कर दिया। जन मुक्ति सेना ने भी लालसेना के साथ कदम से कदम मिलाते जापानियो के संहार मे हाथ बँटाया, और उसके अधिकार से चीन के भूभाग को मुक्त किया। अन्त मे सोवियत रूस के युद्ध घोषित करने के छ दिन बाद 14 अगस्त को जापान ने भी जर्मनी की तरह बिना शर्त हथियार रख दिये। लेकिन जापान का हथियार रखना निश्चित होने पर भी अमेरिकन थैलीशाही के सरदार ट्रूमन ने जापान के दो नगरो पर दो अणुबमो को गिरवाकर भीषण नर संहार करते हुए पूंजीशाही के भविष्य के मनसूबे और काले इरादो को घोषित कर दिया।

16

जनमुक्ति युद्ध (1945-49 ई)

जापान के भी पराजित हो जाने पर अब द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया था, लेकिन अमेरिकन थैलीशाही इस विजय से सारे भूमण्डल पर अपनी थैलीशाही का अकण्टक राज्य कायम करना चाहते थे। जापान जर्मनी और इताली की पराजय के कारण उन्होने समझा था कि अब बाकी राष्ट्र भी इस स्थिति मे नही हैं कि दुनिया के सारे बाजारो को हमारे हाथ मे आने मे रुकावट पैदा करेगे। 47 करोड़ आबादीवाला चीन उनके लिए बहुत बड़ा बाजार था और उसे वह अब बिलकुल अपना समझने लगे थे। युद्धकाल मे अमेरिका ने उधारपट्टा सहायता देते बहुत से अपने सलाहकार और चर यहा भेज दिये थे। चीन के प्रतिक्रियावादी अपने निजी स्वार्थो के कारण अमेरिका के हाथ मे पूरी तौर से बिकने के लिए तैयार थे।

1 लुटेरो के चार परिवार

1927 से ही च्याग चीन के प्रतिक्रियावादी स्वार्थो का अगुवा था। सभी प्रतिक्रियावादी निरीह चीनी जनता की लूट मे हाथ मार रहे थे लेकिन कुछ ही वर्षो मे इस लूट के सबसे अधिक भागीदार चीन के चार परिवार हो गये। इनमे च्याग काइ शेक का च्याग परिवार एक था उसके बाद बल्कि उससे भी बढ़कर हाथ मारनेवाला सुग परिवार था जिसकी तीन बहनो मे से एक च्याग काइ शेक दूसरी डा सुन यात् सेन् और तीसरी कुग के साथ ब्याही थी। चौथा परिवार चेन् का था। इन चारो परिवारो ने च्याग के शासन के बीस वर्षो मे अमेरिकन डालरो मे दस से बीस खरब तक की सम्पत्ति लूटी और सारे देश मे अपना एकच्छत्र आर्थिक शासन कायम कर दिया। च्याग काइ शेक के शासन ने एक ओर इन चारो परिवारो के हाथ मे देश की सबसे अधिक सम्पत्ति लाकर रख दी, तो दूसरी तरफ उसके प्रतिक्रियावादी शासन के आर्थिक स्तम्भ भी यही चारो परिवार हुए। इन चारो परिवारो से केवल मजूर और किसान ही नही तंग आ गये थे, बल्कि इनके शोषण के शिकार निम्न पूँजीपति और मझोले पूँजीपति वर्ग भी थे। जापान विरोधी युद्ध के समय और जापान के आत्मसमर्पण

के बाद तो यह परिवार और भी अधिक फूले-फले। 1944 मे कुओ-मिन्ताग अधिकृत इलाके मे उद्योग-धन्धे में लगी पूँजी का 70 सैकडा इन चारो परिवारो के हाथ में था। युद्ध की समाप्ति के बाद और भी तेजी के साथ पूँजी और उद्योग-धन्धे इनके हाथ मे आने लगे। 1947 में सरसरी तौर से लिये गये ऑकडो के अनुसार इन चार परिवारो के पास चीन मे बिजली उत्पादन का 65 सैकड़ा, कोयले की खानों का 36 सैकडा, टिन की खानो का 37 सैकडा, सूत-उद्योग का 39 सैकडा, और कपडा मिलो का 57 सैकडा था। इनके चार बैंक चीन के 4 हजार 7 सौ 34 बैको पर नियन्त्रण करते थे। देश की सारी अर्थनीति, मुद्रा, राष्ट्रीय वित्त और बजट इनके हाथों मे था। इसी तरह चीन के भीतरी जहाजी-व्यापार और विदेशी व्यापार के भी सर्वेसर्वा यही थे। ये चारों परिवार स्वय अमेरिकन पूँजी के साथ बहुत मजबूती से बँध चुके थे, क्योकि दोनो ने एक-दूसरे के सहारे चीन को लूटा-खसोटा था और आगे भी वैसा करने की तैयारी कर रहे थे।

2. अमेरिका का जाल

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय और उसके बाद के तीन वर्षो मे अमेरिका ने च्याग काइ शेक की सरकार को 6 अरब डालर दिये, जिसमे युद्धकालीन कर्ज 62 करोड डालर, उधारपट्टा सहायता 78 करोड 20 लाख, युक्त राष्ट्र सघ सहायता 46 करोड 60 हजार डालर थे। इसके साथ युद्ध समाप्त होने पर अमेरिका ने च्याग को 2 अरब 40 करोड डालर की और भी युद्ध सामग्री दी। अमेरिकन आयात निर्यात बैंक ने 8 करोड 30 लाख डालर अलग उधार दिये थे। अमेरिकन सेनाओं और खुफिया विभाग के ऊपर चीन मे कितना खर्च हुआ, वह अलग है। केवल 1940 म चीन मे रखी अमेरिकन सेना के ऊपर 11 करोड डालर खर्च हुए। पूंजीवाद के चरम और आततायी रूप अमेरिकन थैलीशाही यह सारा काम किसी उदार भावना में नहीं कर रही थी, बल्कि वह ऐसा करके च्याग काइ शेक के द्वारा चीन को खरीदने का प्रयत्न कर रही थी। युद्ध समाप्ति के एक साल बाद 1946 में अमेरिका ने चीन के साथ मित्रता व्यापार सामुद्रिक यातायात के सम्बन्ध में जो सन्धि की, उससे उसे चीन मे असीम और अनियन्त्रित अधिकार मिल गये। अब वह चीन मे सभी तरह की व्यापार कम्पनियाँ अबाध गति से खोल सकता था, व्यापार और उद्योग में मनमानी कर सकता था, खानों पर अधिकार, जमीन खरीदने और इमारते बनाने का हक रखता था। द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले भी विदेशियों को चीन के भीतर कितने ही विशेषाधिकार प्राप्त थे, लेकिन अमेरिका की इस अधिकारों की लूट के सामने वह कुछ नही थे। 1946 से 1948 तक व्यापारिक सन्धि, वैमानिक यातायात सन्धि, आर्थिक सहायता सन्धि, शिक्षा पुनर्निर्माण सन्धि के नाम से अमेरिका ने चीन के सारे भविष्य को खरीद लिया था। लेकिन, चीन के भविष्य का बेचना च्याग के हाथ में नहीं था। उसका यह सारा इकरार कुछ ही साला तक चल सका। इस समय सलाहकारो के रूप मे चीन के वास्तविक शासक अमेरिकन थे। चीन के एक महाद्वीप फारमूसा को अमेरिका ने माना बिलकुल अपने हाथ में कर लिया था। वहाँ का यातायात पोतसचार (जहाज चलाना), अलमूनियम उद्योग, तेल शोधनी और चीनी के कारखानों और बन्दरगाहों के अमेरिकन ही सर्वेसर्वा थे। अमेरिका के इस तरह से अकेले छा जाने से इग्लेड के व्यापार को बहुत घाटा लगा, और वह बहुत बौखलाया भी, लेकिन उस वक्त एटली की तथाकथित समाजवादी मजूर पार्टी द्वारा शसित इग्लैण्ड अमेरिका के टुकडों पर जी रहा था। अमेरिका ने चीन के बाजारो को अपने फाजिल माल से भर दिया। उसके सामने चीनियों के उद्योग धन्धे टाट उलटने लगे। केवल 1943 मे नानकिंग की पाँच सौ व्यापारिक सस्थाओ ने अपना काम बन्द कर दिया। तियानचिन् में 70 सैकडे उद्योग-धन्धे बन्द हो गये और बाकियो ने अपने काम को बहुत कम कर दिया। युद्ध से पूर्व शाघाइ मे 5,418 कम्पनियाँ कारबार कर रही थीं, उनमे से केवल 582 बाकी बच रही, और इनमे से भी अधिकाश ने 1948 में अपना कारबार बन्द कर दिया। युद्धकाल मे पश्चिमी चीन मे जो कारखाने बने थे, माल की माँग के कम होने से उन्हे भी अपना उत्पादन घटाना पडा।

अमेरिका के इस धावे से चीन के निम्न और मझोले पूँजीपति त्राहि-त्राहि करने लगे, और बेकारी के मारे मजूरो की हालत बहुत बुरी हो गई। चारों परिवारों ने अमेरिकन पूँजीपतियों से मिलकर जो लूट-खसोट

जारी की थी, उसके कारण चीनी डालर का मूल्य दिन-पर-दिन गिरने लगा, भोजन का अकाल पडने के कारण शहरों में चावल के लिए विद्रोह होने लगे, जिसमें मध्य वर्ग का असंतोष भी शामिल हो गया। च्याग काइ-शेक की सरकार असंतोष प्रकट करने के लिए प्रदर्शनकारियों पर खूनी आघात करके अपना शासन कायम रखना चाहती थी, जिसमें अमेरिका उसका पूरी तौर से साथ दे रहा था।

3. तीसरा क्रान्तिकारी गृहयुद्ध

जापानी आक्रमण के विरुद्ध प्रतिरोध युद्ध के खतम होने के बाद चीन मे वर्गो की स्थिति और उनके सम्बन्धो में नये परिवर्तन हो गये। प्रतिरोध युद्ध के दौरान बडे जमींदारो और बडे पूँजीपतियों का प्रतिनिधित्व करनेवाले कुओ-मिन्तागी प्रतिक्रियावादियो ने जापान के विरुद्ध निष्क्रिय प्रतिरोध और कम्युनिस्ट पार्टी के विरुद्ध सक्रिय विरोध की नीति पर अमल किया था। उन्हे उम्माद थी कि ऐसा करके हम कम्युनिस्ट पार्टी की ताकत को खतम कर देंगे और अपनी ताकत को बचा बटोर सकेगे। सोवियत सघ, इग्लैण्ड, अमेरिका और चीनी जनता-जिसकी प्रतिनिधि कम्युनिस्ट पार्टी थी-के हाथो जब जापान की हार हो जायगी, तो जीत के फल को हथियाने और कम्युनिस्ट विरोधी युद्ध के द्वारा कम्युनिस्ट पार्टी का नामोनिशान मिटाकर समूचे देश पर अपना शासन करने मे समर्थ हो सकेगे। अपने इसी इरादे को पूरा करने के लिए कुओ मिन्तागी प्रतिक्रियावादियो ने कम्युनिस्टो के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए उन सारे हथियारो को बटोरकर रख छोड़ा था, जिन्हे जापान के खिलाफ काम में लाने के लिए विदेशी ताकतो ने दिया था। इस प्रकार महायुद्ध के खतम होते ही चीन की सारी जनता के लिए गृहयुद्ध का सकट आन उपस्थित हुआ। जापान के युद्ध के अन्त मे जहाँ तक हथियारो और सेना की सख्या का सम्बन्ध था, कम्युनिस्टो की शक्ति से कुओ मिन्तांग की शक्ति कही अधिक थी, इसे हम बतला आये है। यह भी कह चुके है कि जापान के आत्मसमर्पण के बाद च्यांग काइ शेक, टी वी सुग, एच एच कुग और चेन् ली फू-इन चार बडे परिवारो ने जापानियो से 'अपने हाथो में बागडोर लेने' की ओट मे अनदेखी अनसुनी लूट खसोट और हडपा घप्पी का परिचय दिया था। नये युद्ध के दौरान मे उन्होने मुद्रा प्रसार कर अनाज की वसूली और दूसरे आर्थिक कदमो द्वारा जनता का रक्त चूसा और देखते देखते उनकी सम्पत्ति और कुछ नही तो 20 अरब अमेरिकन डालर तक पहुच गई।

(1) जनता की माँगें—चार परिवारो को छोडकर बाकी सारी जनता महाविपद् मे फँसी हुई थी। युद्ध के बाद उसकी माँग थी कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और राजनीतिक जनतन्त्रता कायम हो। किसानो की माँग थी कि जमीन हमे मिले। सभी वर्गो के लोग इतने साला से विपद् भोगते भोगते अब अपने पैरो पर खडे होना चाहते थे। बाहरी सकट जब तक भयकर रूप मे देश के ऊपर था, उस वक्त इन भावनाओ को दबाया जा सकता था, लेकिन अब जनता इस भयकर जुए को और ढोने की शक्ति नही रखती थी। अमेरिकन पूँजी और उसके पिट्ठू चार परिवार उसी तरह गुलछर्रे उडा रहे थे, जिस तरह आज के भारत मे कुछ-कुछ देखा जाने लगा है।

(2) च्यांग की चालें—च्याग जनता की मागो का जवाब इसके सिवा और कोई दूसरे तरीके से नही दे सकता था कि वह लोगो के मुह को जबर्दस्ती बन्द कर दे। कुओ-मिन्तागी भूभाग मे राष्ट्रीय उद्योग और व्यापारिक धधे अमेरिकन पूँजी और चार परिवारो तथा उनके लगू-भग्गुओं की चक्की के दोहरे पाट के भीतर पडकर पिस रहे थे। ऊपर से चीन मे अमेरिका के सिपाही तथा दूसरे कर्मचारी चीनी जनता का और नुकसान करते, साथ ही उसकी तरह तरह से बेइज्जती करते थे। कुओ-मिन्तांग के खुफिया विभाग की सस्थाएँ हर तरह से आतक मचाये हुए थी और जनता का दमन कर रही थी। कुओ मिन्तागी इलाको के किसानो को जबर्दस्ती पकडकर सेना मे भरती किया जाता और उनके जबर्दस्ती अनाज वसूल किया जाता। मुक्त इलाको मे किसानो को प्राप्त हुई जमीन को छीनने के लिए कुओ मिन्तागी सरकार ने जमीदारो को सगठित किया था।

माओ चे तुग की बराबर कोशिश रही कि गृहयुद्ध न हो, भाई-भाई के खून से चीन की धरती लाल न हो। इसके लिए युद्ध-समाप्ति के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने सारे देश की जनता को युद्ध से बचाने, शान्ति तथा एकता के रास्ते पर ले जाने के लिए भारी प्रयत्न किया और बहुत धैर्य से काम लिया।

4. कम्युनिस्ट पार्टी की नीति

गृहयुद्ध से बचाने के खयाल से प्रतिरोध-युद्ध की समाप्ति के बाद ही पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने 25 अगस्त, 1945 को 'वर्तमान स्थिति के बारे में एक घोषणा' जारी करके शान्ति, जनतंत्रता और एकता के लिए इच्छा प्रकट की।

देश में गृहयुद्ध की आग भड़काने के लिए केवल च्याग काइ-शेक और उसके प्रतिक्रियावादी कुओ मिन्तागी ही उतारू नही थे, बल्कि ट्रूमन के नेतृत्व मे अमेरिकन थैलीशाह भी वही चाहते थे। जब जापान ने बिना शर्त हथियार डाल दिये तो च्याग काइ-शेक ने 23 अगस्त को तुरन्त चीन मे अवस्थित जापानी सेनापतियों के नाम आदेश निकालकर कहा कि तुम हमारी ही सेनाओं के सामने शस्त्र डालो, यदि दूसरी अनधिकृत सेनाओं के सामने हथियार डालोगे तो तुम इसके लिए जिम्मेवार होगे। उसने कम्युनिस्ट सेनाओं को भी चुपचाप रहने का आदेश दिया। लेकिन, कम्युनिस्ट सेनापति चू तेह भला ऐसे आदेश को क्यो मानने के लिए तैयार होते ? उन्होंने जापानियों से हथियार लेने नगरों और यातायात के मुख्य मार्गो पर अधिकार करने के लिए अपनी सेना को आदेश दिया। च्याग काइ-शेक की सेना एक कोने मे जाकर छिपी हुई थी, जबकि कम्युनिस्ट सेनाएँ शत्रु के पश्चात भाग में बाकायदा सैनिको या गुरिल्लों के रूप में हर जगह मौजूद थी, इसलिए शत्रु से हथियार लेना उनके लिए आसान था। जापान अधिकृत शहरो और गांवों की सेना जनमुक्ति सेना का स्वागत करने के लिए तैयार थी, तो भी च्याग के आदेश को मानकर कई जगहों पर जापानी सेना खुशी से अपने हथियार न दे, वह जनमुक्ति सेना से लड़ने लगी। कम्युनिस्टों ने इस लड़ाई को बन्द करने तथा मुक्ति सेना के अपने स्थानों पर उसके अधिकार को स्वीकार करने की च्याग से मॉग की।

(1) अमेरिका की दुरंगी—कम्युनिस्ट खतरे को अमेरिका ने सामने देखा। उसे साफ मालूम हुआ कि चीन की सारी जनता कम्युनिस्टों के साथ है और वह हर जगह मौजूद है, और हारे हुए जापान की जगह सारे ग्रामो और नगरो मे छा जाएँगे। इसलिए अमेरिका ने अपनी सेनाएं तुरन्त चीन के तटवर्ती स्थानो मे उतारी और जापानियो को आत्मसमर्पण करा उनसे छीन गये हथियारों को च्याग काइ-शेक के हवाले करना शुरू किया। यही नही, मुक्त इलाको के चारो ओर च्याग की सेना के दस लाख से भी अधिक सैनिको को उतारने में अमेरिका के हवाई विमानों और जहाजो ने बड़ी मुस्तैदी से काम किया। चुपचाप अपनी इच्छा पूरी करने या दिखावे के तौर पर च्याग काइ-शेक ने कम्युनिस्ट पार्टी और दूसरी जनतात्रिक पार्टियों तथा समूहों की मॉगों को मान लिया और 10 जनवरी, 1946 को एक विराम आदेश जारी कर उसने सभी पार्टियों तथा समूहो का एक राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाने का आवाहन किया। इसी के साथ-साथ अमेरिकी सरकार ने भी दिखावे के लिए युद्धविराम का प्रतिपादन किया और चीन के गृहयुद्ध में 'बीच-बिचाव' करने के लिए पैट्रिक हर्ले की जगह जेनरल जार्ज सी. मार्शल को भेजा। मार्शल जैसे दक्ष सेनापति को भेजने का मतलब बीच बिचाव कराना नही, बल्कि च्याग काइ-शेक की शक्ति को और मजबूत तथा सगठित करना था। यह सारा दिखावा था। 23 अगस्त को च्याग ने पराजित जापानी सेना को किसी दूसरे के हाथ मे हथियार न देने के लिए जो आदेश दिया था, काम उसी के अनुसार होता रहा। अमेरिकन, जापानी और च्याग की सेनाएँ अब एक हो गई थी, मचूरिया और उत्तरी चीन मे च्याग की सेनाओ को अमेरिकन जलसेना और वायुसेना ढो रही थी, जिसमे अमेरिका के 30 करोड़ डालर खर्च हुए। जापानियो से हथियार लेने के बहाने उत्तरी चीन के बन्दरगाहो, रेलवे केन्द्रो और मुख्य स्थानों पर अमेरिकन सेना पहुँची और उसने कुओ मिन्तागी आक्रमण के लिए अड्डे तैयार किये। कुओ-मिन्ताग के पास 12 लाख के 127 डिवीजन थे, अमेरिका के हथियारो द्वारा सुशिक्षित चीनी सेनाओं के अतिरिक्त 5 लाख जापानी सैनिक भी शामिल कर लिये गये थे। इतना ही नही, कितने ही स्थानों पर अमेरिकन जलसेना और वायुसेना ने भी कुओ-मिन्ताग के आक्रमण में भाग लिया। यह करके भी जब देखा गया कि जन-मुक्ति-सेना को पराजित नही किया जा सकता, तब भुलावे में डालकर उन्हे कमजोर करने की नीति अपनाई गई। अमेरिकन राजदूत हर्ले समझौता कराने के बहाने स्वय येनान गया और अमेरिका की ओर से गारटी

देकर वह माओ चे-तुंग को अपने साथ चुंग-किंग ले गया। माओ अठारह वर्षों बाद पहली बार लालभूमि से बाहर निकले थे। चुंग-किंग में च्यांग काइ-शेक के साथ छः सप्ताह तक उनकी बातचीत होती रही। एक समझौता हुआ।

सम्मेलन में च्यांग काइ-शेक ने जब 'युद्ध रोको' की आज्ञा सुनाई और जनतांत्रिक स्वतन्त्रता, भाषण-प्रकाशन, सभाओं के लिए आजादी तथा सभी राजनीतिक दलों को समानता देने और राजबन्दियों के रिहा करने की घोषणा की, तो प्रतिनिधियों में बड़े उत्साह का सचार हुआ। तीन सप्ताह के विचार-विमर्श के बाद सम्मेलन ने सर्वसम्मति से पाँच प्रस्ताव स्वीकार करके अन्तरिम काल की सरकार, शान्तिपूर्ण निर्माण, राष्ट्रीय परिषद् बुलाने और सभी सेनाओं को एक राष्ट्रीय सेना के रूप में बदलने के सम्बन्ध में निश्चय किये। इसकी खबर सुनकर सारे चीन में आनन्द और उत्साह मनाया जाने लगा।

कम्युनिस्टों ने इसके बदले में शांघाइ और कान्तन के आसपास के 1 करोड़ 70 लाख की आबादी तथा 41 हजार वर्गमीलवाले मुक्त इलाकों को खाली करना स्वीकार कर लिया।

अमेरिकन और कुओ-मिन्तांगी प्रतिक्रियावादी यही चाहते थे कि लोगों का ध्यान युद्ध की ओर से हट जाय। अमेरिका जिस तरह अरबों डालर चीन की भूमि में डाल चुका था, और 20 अरब डालर के मालिक चार परिवारों के जो स्वार्थ थे, उन्हें देखते हुए यह कब हो सकता था कि च्यांग देश में एक नये दौर का आरम्भ होने दे। कुओ-मिन्तांगी अधिकारियों ने समझौते पर हर्ष प्रकट करनेवाले लोगों की पिटाई से ही अपने काम को शुरू कर दिया। मार्च में कुओ-मिन्तांग की कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई, जिसने सम्मेलन में सम्मिलित होकर पाँच प्रस्तावों के समर्थन करनेवाले अपने सदस्यों को खूब झाड़ा और उसके निर्णयों को मानने से इन्कार कर दिया। 1 अप्रैल, 1946 ई. को च्यांग ने घोषित किया कि समझौता और उसका विधान स्वीकार नहीं किया जा सकता और सरकार मचूरिया को जरूर लौटायेगी।

लेकिन च्यांग काइ-शेक और अमेरिकन पूँजीशाही तो विश्वासघात का साकार रूप थी। हस्ताक्षर की स्याही अभी सूखी भी नहीं थी कि च्यांग ने कम्युनिस्टों पर हमला कर दिया और हस्ताक्षर होने के दो दिन बाद ही उसने अपने सेनापतियों के पास आक्रमण करने के लिए छपे हुए आदेश भेज दिये। यागची के दक्षिणी तट से लौटती जन-मुक्ति-सेना पर आक्रमण हुआ। होनान में च्यांग ने कम्युनिस्टों के विरुद्ध तीन सेनाएँ भेजी थीं, जिनमें दो हार गईं और तीसरी ने गृहयुद्ध से हाथ हटा लिया। च्यांग की नई, आठवी सेना अपने हथियारों और अफसरों सहित मुक्तिसेना से मिल गई—चार परिवारों और अमेरिकन थैलीशाहो के लिए कौन-सा चीनी देशभक्त अपना प्राण देने के लिए तैयार होता। इस हार ने बतला दिया कि उत्तरी चीन में कम्युनिस्टों को परास्त करना च्याग के वश की बात नही है।

अमेरिका ने अब चाल को बदलना उचित समझा। हरले और जेनरल वेडमेयर को वापस बुला लिया और ट्रूमन के व्यक्तिगत दूत के तौर पर जेनरल जार्ज सी. मार्शल चीन में शान्ति-स्थापना करने के लिए भेजे गये।

(क) मार्शल की करामातें—मार्शल के सम्मान मे शांघाइ के विद्यार्थियों ने भारी जलूस निकाला और 'गृहयुद्ध बन्द करो' के नारे लगाये। इस पर च्यांग की पुलिस ने विद्यार्थियों की खूब खबर ली। मास्को में अमेरिका, इग्लैड और रूस के विदेश मन्त्रियों का जो सम्मेलन हुआ था, उसमें स्वीकार किया गया था कि न चीन की एकता में और न उसके भीतरी मामलों में ही हस्तक्षेप किया जायगा। ट्रूमन ने इसके समर्थन में अपना एक वक्तव्य भी दिया। कुछ लोग मार्शल को शान्तिदूत मानने लगे थे। मार्शल ने ही च्यांग काइ-शेक से विराम-आदेश पर हस्ताक्षर करवाया था। समझौते के अनुसार सभी दलों की राजनीतिक परामर्शदात्री समिति की बैठक प्रारम्भ हुई।

(2) गृह-युद्ध आरम्भ—च्यांग काइ-शेक ने राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावों को फाड़कर रद्दी की टोकरी में फेंक जुलाई, 1946 से अपनी सारी ताकत लगाकर मुक्त इलाकों के खिलाफ चारों ओर से हमला शुरू कर दिया और एक के बाद एक वहाँ के कितने ही नगरों और विस्तृत देहाती जिलों पर कब्जा कर लिया।

इन इलाकों के ही नहीं, बल्कि कुओ-मिन्तांगी इलाकों के किसानों ने भी माओ चे-तुंग के नाम को वर्षों से सुन रक्खा था। वह बराबर मनाया करते थे : "एक दिन हमारा माओ आयेगा और तब निश्चय ही हमें इस नरक की जिन्दगी से छुटकारा मिल जायेगा।" चीन के अनपढ़ किसान माओ चे-तुंग और चे-तूह के नामों को एकसाथ जोड़कर चू-माउ कहा करते थे। एक बार च्यांग काइ-शेक ओमेइ पर्वत पर गर्मियों में विश्राम के लिए गया था। उस वक्त उन्होंने एक विश्वस्त अमेरिकन हितैषी को अपनी राइफलें दिखाकर कहा था : "उपयुक्त समय के लिए हम तैयार हैं। हमारे चू-माउ के नीचे जिन्दगी अच्छी है।" लाल इलाके के किसानों के दिलों में माओ कितने प्रिय थे, यह इसी से मालूम होगा, कि जब हरले माओ को अपने साथ हवाई जहाज मे बैठाकर समझौते की बातचीत करने के लिए चुंग-किंग ले गया, उस समय एक किसान ने अमेरिकन महिला पत्रकार अन्ना लुइस्ट्रांग से कहा था : "जब हमारा माओ काफी दिनों तक चुग-किग से नही लौटा, तो हम सबको बड़ी चिन्ता हुई। यदि बदमाश च्यांग उसे वही रख ले, तब तो बडा ही अनर्थ हो जायेगा। हमारे माओ ने हमें जमीनें दी है, काम करना सिखलाया है और बताया है कि हम एक-दूसरे की किस प्रकार सहायता कर सकते हैं। माओ के बिना न हमारे जैसे किसान रहेंगे और न चुनाव होगा। सम्भव है जमीदार भी फिर लौट आये। जब हम इस तरह चिन्ता मे डूबे हुए थे, उसी समय हमारा एक दोस्त येनान् से दो दिन की यात्रा करके केवल हमें यह खुशखबरी सुनाने के लिए हमारे गॉव मे आया कि हमारा माओ वापस आ गया है। उस दिन हमारी खुशी का ठिकाना न था। मैंने जाकर गॉव की पचायत के सामने प्रस्ताव रक्खा कि हमे माओ और चू-तेह के लिए अलग कुछ जमीन रखनी चाहिए, क्योंकि हमारे चू माउ दूसरे कामो मे इतने व्यस्त रहते है, कि वह खेत में मेहनत करके अपने लिए अन्न नही पैदा कर सकते। सरपच ने यह कहकर मुझे टाल दिया कि यह काम हमारा नहीं है। तब मैंने और गाँव के कमकर बिग्रेड ने कुछ फाजिल जमीन बोई, जिसमे ग्यारह बुशेल (6 मन के करीब) गेहूँ पैदा हुआ; आधा माओ के लिए और आधा चू-तेह के लिए। अब हमे सतोष है कि यह उन दोनों के लिए साल-भर के वास्ते पर्याप्त होगा।"

1947 मे चू-निग गॉव के किसानों ने जब सुना कि माओ के निवासस्थान येनान पर च्याग काइ-शेक हमला करने की सोच रहा है, तो उन्होने माओ को लिखा :

"हमने सुना है कि गद्दार च्याग तुम्हारे बासे येनान् पर हमला करने आ रहा है। किन्तु, उसे इसमे सफलता नही मिल सकेगी, क्योंकि धडो से अलग हो जाने पर भी हम लोगो के सिर उछल उछलकर उससे टक्करे लेते रहेंगे। हमारे गांव के बूढ़े और जवान सब तुमको अभिवादन भेजते है और तुम्हारे लिए एक लम्बे अत्यन्त स्वस्थ तरुण जीवन की कामना करते है।"

जुलाई, 1946 के आरम्भ मे च्याग ने जो एकाएक जन-मुक्ति-सेना पर हमला किया था, उसमे अमेरिकन सैनिक विशेषज्ञो की देखरेख मे अमेरिकन हथियारो से सुसज्जित च्याग की सेना ने कम्युनिस्टों के ऊपर अपना आक्रमण शुरू किया था। अब च्याग काइ-शेक को खतम करने के सिवा और कोई चारा नहीं था, जिसके लिए गृहयुद्ध करना अनिवार्य हो पडा। कम्युनिस्ट जानते थे कि यह च्याग नही, बल्कि अमेरिकन साम्राज्यवाद आक्रमण कर रहा है, इसलिए हमे अमेरिका से भी लोहा लेना पड़ेगा। अमेरिका के इस तरह खुलकर मदद देने से चीन के लोगों को भी च्याग का देशघाती रूप प्रकट हो गया, जोकि अभी उसके यहाँ तक जाने की आशा नही रखते थे। जहाँ तक देश की भीतरी शक्तियो का सम्बन्ध था, अब च्याग उनसे अलग हो गया था। दुश्मन की सैनिक श्रेष्ठता और अमेरिकन मदद का असर स्थायी नही होगा, यह बात कम्युनिस्टों को मालूम थी। साथी माओ चे-तुग ने च्याग को हराने के लिए एक ठीक सैनिक नीति निर्धारित की, जिसका मुख्य उद्देश्य था नगरों और इलाकों की रक्षा करने की जगह दुश्मन की सैन्यशक्ति को खतम करना। ऐसा करने के लिए यह जरूरी था कि हरेक लडाई के लिए पूरी तरह से तैयारी की जाय, जिसमे जीत निश्चित हो जाय। दुश्मन को घेरकर पूरी तरह उसका सफाया करने के लिए बहुत भारी तथा जबर्दस्त—दुश्मन की सेना मे कई गुना ताकतवाली—सेना की जरूरत थी; इसलिए जिन लड़ाइयों के लिए पूरी तौर से तैयारी नही की गई हो, और जिनमें जीत संदिग्ध हो, उनसे बचना था। इस नीति पर अमल करते हुए जन-मुक्ति-सेना गृहयुद्ध के आरम्भ

मे कितने ही नगरों और बस्तियो से हट गई, लेकिन साथ ही उसने कुओ-मिन्तांग की सेना को भारी संख्या में नष्ट कर दिया। प्रतिमास आठ पलटनो की औसत से उसने सैनिकों का सफाया किया और युद्ध-बन्दियों को फिर से शिक्षित करने के बाद उन्हें अपनी सेना मे ले अपनी शक्ति को बढ़ाया। इस प्रकार, जन-मुक्ति-सेना दिन पर दिन मजबूत होती गई और कुओमिन्तागी सेना कमजोर। आठ महीनो के सग्राम के बाद जब च्यांग ने अपनी सैनिक शक्ति का भारी नुकसान देखा, तो उसने चारो ओर से हमला करने की नीति को छोड़कर 'घने और गहरे' हमलों की नीति अपनाई। शान्तुग और उत्तरी शान्सी में 'घने' हमले किये गये। लेकिन भारी लड़ाई के बाद जन-मुक्ति सेना ने शान्तुग और उत्तरी शान्सी मे इन हमलो को चकनाचूर कर दिया। साथ ही, उसने उत्तर-पूर्वी चीन मे, शान्सी-चहार-होपेइ क्षेत्र मे, शान्सी-होपेइ-शान्तुग-होनान क्षेत्र मे जन-मुक्ति-सेना ने रक्षात्मक युद्ध के बदले जवाबी आक्रमण पहले-पहल शुरू किया। वह ह्वाग हो (पीली नदी) को पार कर उसके दक्षिण तट पर पहुँच याग ची नदी के उत्तरी तट की ओर बढ चली। उसके बाद उत्तर-पूर्वी चीन के दूसरे मोर्चों पर भी जन-मुक्ति-सेना ने बडे पैमाने पर हमले शुरू कर सभी मोर्चों पर युद्ध की स्थिति मे मौलिक परिवर्तन कर दिया।

(3) **भीषण आक्रमण**—1946 की जुलाई मे अमेरिकन सहायता के बल पर च्याग ने बडी तत्परता के साथ कम्युनिस्टो पर आक्रमण किया। सख्या और हथियार दोनो मे अपनी सेना को कम्युनिस्टो से चौगुनी देखकर वह फूला नही समाता था। एक वर्ष तक वह उसी तरह ऑख मूँदकर अपनी सेना को मरवाता हमले करता रहा। एक वर्ष के बाद च्याग की सेना 43 लाख से 37 लाख और उसमे भी बाकायदा सेना 20-30 लाख मे 15 लाख रह गई। उसके 248 ब्रिगेडो म स लड़नेवाली मार्च पर 40 ही रह गये। लेकिन, जन-मुक्ति-सेना बढकर 19 लाख हो गई, जिसमे 10 लाख बाकायदा सैनिक थे। यद्यपि च्याग की सेना की सख्या अब भी अधिक थी, लेकिन वह सेना क्या लड सकती है, जो हिम्मत हार चुकी है, जिसे भविष्य की आशा नही। कुओ-मिन्ताग के पश्चात् भाग के इलाको मे लोगो को दबाने को अब उसकी कोई सेना नही रह गई। जगह-जगह गोरिल्ला छापे मारने लगे, और जनता मे असतोष की आग भडकने लगी। सिवा नौकरशाही पूँजीपतियो के चीनी जनता के सभी वर्ग च्याग को अब फूटी ऑखो नही देखना चाहते थे। सभी लोग कम्युनिस्टो की जय मनाते थे, इसलिए उनके पश्चात भाग की रक्षा करन के लिए जनता स्वय तैयार थी। च्याग और अमेरिका की कृपा से अब जन-मुक्ति सेना के पास नये स नये अमेरिकन हथियार भारी परिमाण मे मिल गये थे। जन-मुक्ति सेना को जनता से कोई खतरा नही, बल्कि पूरी सहायता की आशा थी, इसलिए वह निडर थी। वह जनता को और हथियार दे देकर हथियारबन्द कर रही थी।

युद्ध के आरम्भ मे जो जीते प्राप्त हुई थी, उनके कारण अमेरिकन साम्राज्यवादियो और च्याग काइ-शेक का दिमाग सातवें आसमान पर पहुँच गया था। 11 अक्टूबर, 1946 को च्याग की सेना ने उत्तरी चीन के मुक्त इलाको के महत्त्वपूर्ण नगर कलगन पर कब्जा कर लिया। उसी दिन दोपहर को च्याग काइ-शेक ने राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रस्तावो को रद्द कर एक तानाशाही झूठी 'राष्ट्रीय एसेम्बली' के आयोजन पर फरमान जारी कर दिया। विशेष अमेरिकन-दूत मार्शल और अमेरिकन राजदूत लैटन स्टुअर्ट की मदद से 15 नवम्बर को इस नकली राष्ट्रीय एसम्बली का उद्घाटन हुआ, जिसने एक नकली 'विधान' मजूर किया। च्याग काइ-शेक ने यह कदम उठाकर अपने हाथो अपने पैरो मे कुल्हाडी मारी। अब जनता की जनतत्रता की मॉग के पूरा होने की कोई आशा नही रह गई।

दिसम्बर, 1946 मे पार्टी की केन्द्रीय समिति ने नई जीत की तैयारी के लिए उत्तरी शेन्सी मे एक कान्फरेस बुलाई, जिसमे साथी माओ चे तुग ने 'वर्तमान स्थिति और हमारे कार्य' के बारे मे एक रिपोर्ट पेश करते हुए कहा : "चीन की जनता का क्रान्तिकारी जीवन एक मोड पर पहुँच गया है—ऐसे मोड़ पर, जिसका आरम्भ चीन मे सौ साल से भी पुराने साम्राज्यवादी शासन के विकास की समाप्ति से होता है।" माओ ने सैनिक, आर्थिक और कृषि-सम्बन्धी समस्याओं और जवाबी हमले की स्थिति मे पहुँचे क्रान्तिकारी युद्ध के काल मे पार्टी के सामने आये सयुक्त मोर्चे की समस्याओ का बारीकी से विश्लेषण किया। उन्होने उन गलतियो को जिन्होने

भूमि-सुधार-आन्दोलन के समय उद्योग और व्यापार पर क्षति पहुँचाई थी, ध्यान में रखते हुए अपनी रिपोर्ट में पार्टी के आर्थिक कार्यक्रम की जोरों के साथ पुष्टि की। वह कार्यक्रम था : "सामन्ती वर्ग की जमीन को जब्त करके किसानों में बाँटना, नौकरशाही पूँजी को जब्त करके उसे नई जनवादी सरकार की पूँजी में बदल देना और तमाम राष्ट्रीय उद्योगों तथा व्यापार की रक्षा करना।" उन्होंने पार्टी के उन कार्यकर्ताओं की कड़ी आलोचना की, जिन्होंने मझोले और निम्न पूँजीवादी तत्त्वों के प्रति अत्यन्त 'वामपक्षी' नीति अपनाई थी। माओ ने बताया कि जब्त हुई नौकरशाही-पूँजी से बना और सारे राष्ट्र के आर्थिक-संचालन का नियंत्रक समाजवादी स्वरूपवाला विराट् राजकीय अर्थतंत्र निर्णायक महत्त्व की चीज होगा, और वह जनता के राज्य के आर्थिक जीवन में अत्यन्त प्रमुख स्थान रखेगा। इसलिए, मझोले और निम्न-पूँजीवादी आर्थिक तत्त्वों का रहना जरूरी ही नहीं, बल्कि उनसे डरने का भी कोई कारण नहीं है। इस कान्फरेंस और इस काल में पार्टी के बहुमुखी कार्यों के कारण पार्टी अपनी ओर से राष्ट्रव्यापी विजय के वास्ते जनता का पथ-प्रदर्शन करने के लिए अच्छी तरह से तैयार हो गई।

मार्च, 1947 में कुओ-मिन्तांगी प्रतिक्रियावादियों ने नानकिंग, शांघाइ और तुंग-किंग से अपने प्रतिनिधिमण्डलों को वापस बुलाने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी को बाध्य कर दिया।

इसके बाद कुओ-मिन्तांगी सेनाओं ने आक्रमण करके येनान् पर अधिकार कर लिया। लाल राजधानी पर अधिकार करने के बाद च्यांग ने घोषित किया : "चीन में साम्यवाद का अन्त अब हाथ में है।"

लेकिन, इस तरह गाल बजाकर च्याग कई बार साम्यवाद का अन्त कर चुका था और हर दूसरी बार जब उसे मुकाबला करना पड़ा, तो उसे कम्युनिस्ट पहले से भी अधिक शक्तिशाली मिले। शायद वह जानता ही होगा कि माओ चे-तुंग नगरो और कस्बों की रक्षा करने की चिन्ता नही कर रहे हैं, वह च्याग के हाथ-पैरों को काटना चाहते हैं, और वह काटना बराबर हो रहा है।

जिस समय च्यांग अपनी विजय-दुन्दुभी बजाने में लगा था, उसी समय चार महीनों में कम्युनिस्टों ने उसकी सेना पर ताबडतोड़ हमले किये। जुलाई, 1946 से फरवरी, 1947 तक के आठ महीनों में च्यांग के 7 लाख 10 हजार सैनिकों का सफाया हो गया। उसने एक सौ पाँच नगरों पर अधिकार कर लिया था। इसके कारण उसे प्रत्येक नगर पर औसतन 7 हजार सैनिको को मरवाना पडा। अब उसके पास आक्रमण करने के लिए 117 ब्रिगेडो मे केवल 85 ही बच रहे थे। इस पराजय का असर उसके सैनिकों पर बुरा पडा। कुओ-मिन्तागी सेना के अफसर और सिपाहियो के सम्बन्ध भी अच्छे नही थे।

(4) **उतार-चढ़ाव**—चीनी जनता, जिसमें राष्ट्रीय पूँजीपति-वर्ग भी शामिल था, अब केवल कम्युनिस्ट पार्टी से ही भलाई की आशा रख सकती थी। राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग अभी कम्युनिस्ट और कुओ-मिन्ताग से अलग एक नई तीसरी शक्ति पर आशा लगाये बैठा था। इस विचारधारा के समर्थक थे राष्ट्रीय पूँजीपति-वर्ग के दक्षिणपथी। कुओ-मिन्ताग के क्रान्तिकारी दलों, चीन की जनतांत्रिक लीग, चीन के जनवादी राष्ट्र-निर्माण सघ तथा दूसरी जनतात्रिक पार्टियों, समूहों तथा जननायको ने कुओ-मिन्तांगी प्रतिक्रियावादियों के साथ सहयोग देने से इन्कार कर दिया। उन्होंने नकली राष्ट्रीय-सभा (एसेम्बली) में हिस्सा लेने या च्यांग की सरकार में शामिल होने के बुलावे को ठुकरा दिया। अमेरिकन सैनिको ने एक चीनी छात्रा पर बलात्कार किया था, जिसके कारण 1946 के अन्त और 1947 के प्रारम्भ में सारे छात्रों ने जबर्दस्त प्रदर्शन किया। मई, 1947 में उन्होंने भुखमरी, गृहयुद्ध और दमन के खिलाफ प्रदर्शन किये। भिन्न-भिन्न जगहो के मजूरों और किसानो ने कुओ-मिन्तांग के खिलाफ संघर्ष को और आगे बढ़ाया।

1947 की जुलाई से मुक्ति-सेना ने रक्षात्मक-युद्ध की नीति को छोडकर आक्रमणात्मक युद्ध की नीति अपनाई। अमेरिकन भी च्याग की हारों से चिन्तित हो गये, क्योकि उन्होंने च्याग के बल पर अरबों डालर दाँव पर लगा रक्खे थे। उन्होंने जेनरल वेडमेयर के नेतृत्व मे एक 'चीन मिशन' भेजा। इस सैनिक सलाहकार मिशन ने संकट से पार करने के लिए एक गुप्त योजना बनाई। च्यांग की सेना की मदद के लिए और भी अधिक अमेरिकन सैनिक विशेषज्ञ आये। इन नये सर्वज्ञों ने च्यांग को सलाह दी : प्रत्येक युद्ध में इतने सिपाही लगा दो कि शत्रु की ताकत एकदम कम हो जाय—जिसका अर्थ है शत्रु की सेना से दुगुनी, तिगुनी, चौगुनी

और कभी-कभी पाँच या छह गुनी सेना लगाकर शत्रु को चारों ओर से घेर लो, फिर ऐसा प्रयत्न करो कि जाल में से शत्रु का एक भी आदमी बचकर निकलने न पाये और सब-के-सब खतम हो जायँ। ऐसी लड़ाई न लड़ो, जिसमें अपना नुकसान ज्यादा हो और दुश्मन का कम या हानि-लाभ बराबर हो। लड़ाई छेड़ने से पहले बड़ी मेहनत के साथ तैयारी और ऐसी स्थिति पैदा कर दो, जिसमें शत्रु के विरुद्ध हमारी शक्ति इतनी रहे कि हमारी जीत निश्चिंत हो जाय।

गृह-युद्ध के पहले चार महीनों की अस्सी लड़ाइयों में कम्युनिस्टों ने कुओ-मिन्तांग के तीन लाख सैनिकों को बेकार कर दिया, लेकिन च्यांग ने अपनी आरम्भिक जीतों की खुशी में हमला करनेवाले सैनिकों की संख्या बढ़ा दी, उसका 150 शहरों पर अधिकार हो गया। मारे खुशी के उसने नकली राष्ट्रीय सभा को बुलाकर देश का नया संविधान बनाने के लिए कहा।

10 अक्तूबर, 1947 को जन-मुक्ति-सेना ने एक घोषणा जारी की, जिसमें च्यांग काइ-शेक के तख्ते को उलटने और नये चीन के निर्माण के लिए चीनी जनता का आवाहन किया गया था। उसी दिन किसानों की युगो पुरानी जमीन की माँग को पूरा करने के लिए पार्टी ने कृषि व्यवस्था का आधारभूत कार्यक्रम जनता के सामने रक्खा, जिसमें सामन्ती शोषण पर आधारित जमीन की मिलकियत की पुरानी प्रणाली को खतम करने और जोतनेवालों को जमीन देने की नई प्रणाली को चालू करने की घोषणा की गई। भूमि-सुधार की प्रगति ने मुक्त इलाकों के किसानों को पूरी तरह सजग कर दिया। जमींदार वर्ग को खतम कर देने के कारण इन इलाकों की मजबूती बहुत बढ़ी और मुक्ति-युद्ध में उनसे बड़ी सहायता मिली।

च्यांग ने बौखलाकर अपनी 80 सैकड़ा सेना को मुक्त इलाकों के ऊपर भेज दिया। वह समझता था, इस प्रकार एक ही धावे में वह जन-मुक्ति सेना का गला घोट देगा। च्यांग की 16 लाख सेना मुक्त इलाकों में घुसने लगी। जन-मुक्ति-सेना ने तुरन्त रक्षात्मक लड़ाई की नीति स्वीकार की : "अगर तुम सैनिकों को बचाकर जमीन को खो देते हो, तो भूमि पुनः प्राप्त की जा सकती है, किन्तु यदि तुम भूमि को बचाने में सैनिकों को खो देते हो, तो तुम भूमि और सैनिक दोनों को खो दोगे।" जन-मुक्ति-सेना ने हर छोटे-बड़े नगर की रक्षा के लिए लड़ना नहीं अच्छा समझा। उसने इस प्रकार च्यांग की सेना को विशाल भूभाग में फैल जाने दिया, और फिर इस पतली तह पर बारी-बारी से आक्रमण करना शुरू किया। माओ ने कहा था : "पहले शत्रु के फैले हुए छिटपुट दस्तों पर आक्रमण करो, बाद में उनकी खबर लो, जो ज्यादा शक्तिशाली मालूम होते हैं।" च्यांग की सेना को गोरिल्ले भी दिन-रात हैरान करते रहते थे। इसके कारण अब च्यांग को आक्रमण की नीति छोड़ हाथ में आये स्थानों के बचाने की कोशिश करनी पड़ी। इसी समय मार्च में (1947 ई.) च्यांग ने लाल राजधानी येनान् पर अधिकार कर लिया। च्यांग और उसके अमेरिकन संरक्षक और गुरु विजय के उपलक्ष्य में प्याले पर प्याले ढाल रहे थे; लेकिन इससे पहले ही लाल-सेनापति पेंग ते-ह्वाइ ने कह दिया था कि यदि "च्यांग का येनान् पर अधिकार होता है, तो उससे उसका पतन आरम्भ होता है। यदि हम इसी चाल से सेनाओं को घेरते और नष्ट करते रहेंगे, तो शरद् तक हम सारे मोर्चों पर जवाबी हमला आरम्भ कर देंगे।"

लड़ाई अब गोरिल्ला लड़ाई की जगह दाँव-पेंच की लड़ाई हो चुकी थी। च्यांग के शिक्षित सैनिक अपने अमेरिकन हथियारों को लिये हुए भारी संख्या में जन-मुक्ति-सेना से मिलते गये और वह जमकर लड़ने लगी।

5. विजय-प्रवाह (1947-49 ई.)

जन-मुक्ति-सेना सैलाब की तरह बढ़ने लगी। वह जमकर लड़ने, शहरों को घेरने और शत्रु का भीषण संहार करने लगी। शान्तुग प्रदेश की विजय के समय लाल-जेनरल चेन् यी ने एक अमेरिकन पत्रकार से कहा था, "हमारे पास राइफलें ही थीं, इसीलिए हम उन्हीं का सब तरह से उपयोग करते रहे। अब हमारे पास अमेरिकन टैंक और तोपें भी आ गई हैं, जिनका हम इस्तेमाल सीख रहे हैं। अगर हमारे पास केवल छुरी ही होती, तो उनके बहुत बढ़िया और सभी तरह से इस्तेमाल करने का ढंग सीखते। यद्यपि हम उन्हें आजकल कै आधुनिक शस्त्रास्त्रों से लैस सेना के विरुद्ध युद्धभूमि में इस्तेमाल नहीं कर सकते, लेकिन अन्त में तो शत्रु को छोटी-छोटी

टुकड़ियों में ही हमारे गाँव में आना पड़ता, जहाँ हम छुरों का भी इस्तेमाल कर सकते थे।"

(1) पासा पलटा—च्यांग की सेना के सहार के साथ-साथ अब जन-मुक्ति-सेना ने फिर नगरो और कस्बों पर अधिकार करना शुरू किया। जिन बड़े-बड़े शहरों में शत्रु की सेना बचाव की पूरी तैयारी के साथ मौजूद थी, उन्हे चारों ओर से घेर लिया गया। च्यांग के हाथ में चले गये प्रदेशों को फिर मुक्त किया जाने लगा। जुलाई से दिसम्बर (1947 ई.) तक के सात महीनों मे ही च्याग के साढे सात लाख सैनिक खतम कर दिये गये। अमेरिकन सैनिक गुरुओं के सारे दाँव-पेंच विफल गये। अब उनकी सलाह पर च्याग ने अपने युद्धवाले इलाको को बीस भागो मे बॉटकर हरेक भाग की रक्षा के लिए सेनापति नियुक्त कर दिये—जो वहाँ कुओ-मिन्ताग, राज्य और सेना के संयुक्त तानाशाह थे। च्याग की सेना ने घिरे हुए बहुत-से नगरो को छोडने मे ही खैरियत समझी, और उसने महत्त्ववाले नाको तथा यातायात के केन्द्रों को अपना अड्डा बनाया। सात महीने तक यह नई युद्धनीति चलती रही, लेकिन जन-मुक्ति-सेना के सामने उसका भी दिवाला निकल गया। च्याग ने इसी समय अपनी नकली राष्ट्रीय सभा के सामने गाल बजाते हुए कहा : "मैं छह महीने के भीतर ह्वाग हो नदी के दक्षिण मे कम्युनिस्टो का एक भी आदमी रहने नही दूँगा।" हारो पर हार खाती हुई अपनी सेना से क्रुद्ध होकर वह स्वय युद्ध-सचालन के लिए मोर्चे पर गया, और पहली लडाई मे ही उसके 54 हजार सैनिक जन-मुक्ति-सेना के बन्दी बन गये। कुछ ही दिनो बाद उसकी सेना येनान् खाली करके भाग गई।

1947 मे जेनरल लिन् पियाओ के नेतृत्व मे जन-मुक्ति सेना ने मचूरिया मे भी जबर्दस्त प्रत्याक्रमण कर दिया। मचूरिया मे अपने जहाजो और विमानो द्वारा ढो-ढाकर अमेरिका ने कुओ मिन्ताग की सेनाओं को पहुँचाया था, और समझा था कि इस तरह चीन का यह अत्यन्त समृद्ध प्रदेश अब कम्युनिस्टो के हाथ मे नही जाने पायेगा। लेकिन, लिन् पियाओ के आक्रमण से वहाँ कुओ-मिन्ताग की सेना का सर्वनाश होने लगा। पहले 90 दिनो मे ही डेढ लाख सेना खतम कर दी गई, 17 नगर मुक्त कर लिये गए, 61 लाख आबादीवाली 19 हजार वर्ग-किलोमीटर धरती पर लालझडा फहराने लगा। च्याग के हाथ मे अब मचूरिया का चौथा हिस्सा ही रह गया। चाग चुन और मुकदन् नगर को जन-मुक्ति-सेना ने घेर लिया। सितम्बर मे इन नगरो की ओर जानेवाले रास्तो पर अधिकार करके हमला करके 2 नवम्बर को मचूरिया के इन दो महान नगरो को ले लिया। अब सारे मचूरिया से च्याग की गुड्डी कट गई, जिसको अपने हाथ मे करने के लिए च्याग ने अपनी पौने 5 लाख सेना नष्ट की।

अब च्याग के पास 29 लाख ही सैनिक रह गये थे, जबकि जन-मुक्ति सेना की सख्या 30 लाख से ऊपर हो गई थी।

अगले दो महीनो मे च्याग ने अपने पाँच लाख सैनिक और खोये और फिर याग-ची से दक्षिण भागने लगा। दिसम्बर 5 से 21 जनवरी, 1948 तक पेकिग, कलगन और तियान्चिन् के बीचवाले चीन के महत्त्वपूर्ण प्रदेश के लिए जबर्दस्त युद्ध हुए। च्याग की उत्तरी चीनी सेना का सेनापति फू चो यी स्वय जन-मुक्ति-सेना से जा मिला। पेकिग मे बिना खून-खराबी के ही लालझडा गाड दिया गया, तियान्चिन् और कलगन जन-मुक्ति-सेना के हाथ मे आ गये। इसी युद्ध मे च्याग की 5 लाख से ऊपर सेना नष्ट हुई। अब च्याग की सैनिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति खराब हो गई। कुओ-मिन्तागी नेता इन हारो के लिए एक दूसरे को जिम्मेवार ठहराने लगे। अपनी आपसी फूट बहुत बढ़ गई और उधर सारे मचूरिया, उत्तरी चीन और मध्य चीन को मुक्त करके अब जन-मुक्ति-सेना याग-ची नदी के उत्तरी तट पर पहुँचकर जयनाद करते हुए बोलने लगी : "तातू के वीरो ! याग-ची पार करो, चलो नानकिग।"

(2) फिर समझौते का ढोंग—च्याग और उनके देवता कूच बोल गये। अमेरिकन सैनिक सर्वज्ञ और नये-से-नये हथियार बेकार गये। हथियारो के बारे मे कहना चाहिए, वह अब ठीक हाथो मे आ गये। कोई दूसरी आशा न देख फिर भाई का खून न बहाने तथा शान्तिपूर्वक नये चीन के निर्माण के लिए आँसू बहाया जाने लगा। च्याग ने सरकार के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया, फिर पहले डा. सुन् फौ फिर ली सुग जेन् की अध्यक्षता मे नई सरकार बनी। डा. सुन् ने जनता से अपील करते हुए कहा कि गृहयुद्ध को समाप्त करके शान्ति स्थापित

की जाय। इसके साथ ही उसने च्यांग काइ-शेक और अमेरिका के शान्ति-दूतों मार्शल और वेडमेयर की प्रशंसा करने में भी कोई कसर नहीं रक्खी। उसने चीन की स्वाधीनता और जनता के हितों की रक्षा के लिए कम्युनिस्टों से सुलह करने के वास्ते सैनिक कार्रवाई बन्द करने के लिए अपील की। कम्युनिस्ट अनेक बार धोखा खा चुके थे, लेकिन वह पक्के खिलाडी थे। कुओ-मिन्तांगी प्रतिक्रियावादी और अमेरिकन थैलीशाह उनको धोखा नही दे सकते थे। शान्ति के लिए बातचीत करके वह जनता को और भी अपने पक्ष में करने की आशा रखते थे। उन्होंने जनतांत्रिक शान्ति के लिए आठ शर्तें रक्खीं, जिनमें से पहली शर्त थी च्यांग और दूसरे युद्ध-अपराधियों को हमारे हाथ में दे दो। लेकिन, च्यांग और उनके अमेरिकन सलाहकार जनतांत्रिक शान्ति क्यों पसन्द करने लगे। चार महीने की बातचीत के बाद प्रयत्न विफल गया। इस मारे समय को जन-मुक्ति-सेना ने यों ही न खो अपनी तैयारियाँ और भी ज्यादा मजबूत कीं।

जिस ममय कुओ-मिन्तागियों ने फिर सुलह का अभिनय शुरू किया, उस समय किसी तरुण सैनिक ने याग-ची के किनारे माओ से बात करते हुए कहा : "यह तो उनका धोखा है।" "अध्यक्ष माओ, दुश्मन साँस लेना चाहता है, जिसमे अपनी टूटी-फूटी हरावल को ठीक करके फिर आक्रमण शुरू करे।"—दूसरे जवान ने भी कहा।

"तो क्या हम भी इससे फायदा उठा अपने को ताजा नही कर लेगे ?" माओ ने कहा और फिर पहले जवान की पीठ पर थपथपाते हुए वह गम्भीरता से बोले :

"पार्टी इनके धोखे मे नही आयेगी। लेकिन, उसे तुम्हारे जैसे नौजवान के साथ अत्यन्त प्रेम है। तीन-तीन क्रान्तियों के भीतर से तपकर निकले जवानों की जान बहुत कीमती है। इसे राष्ट्र के नव-निर्माण मे खर्च करना है। हम रण मे उन्हें झोंकने के लिए तैयार नही हैं; यद्यपि जरूरत पड़ने पर चीन एक नही, बहुत-से सपूतो की बलि देने को तैयार है।"

एक बार माओ के सेना मे आने से जवानो में सब जगह बड़ी स्फूर्ति दिखाई पड रही थी। सभी अनिमिष नयन से अपने नेता के लिए श्रद्धा के फूल चढा रहे थे। इसी समय माओ बोल उठे :

"देखो महादानी अमेरिका ने अपने क्वार्टर-मास्टर जेनरल (महाभण्डारी) के हाथो तुम्हारे लिए क्या भेट भेजी है ?"

फिर 'लकी स्ट्राइप' नामक अमेरिकन सिगरेट का पुलिन्दा मोटर मे से निकालकर माओ ने सैनिको के सामने रक्खा। जन-मुक्ति-सेना च्याग काइ-शेक की सेनाओ को हराते समय जहाँ तरह-तरह के हथियार प्राप्त करती, वहाँ सिगरेट और खाने-पीने की चीजो का भी भारी भण्डार उसके हाथ मे आता। जन-मुक्ति सैनिक मजाक करते हुए च्याग काइ-शेक को अपनी सेना का क्वार्टर-मास्टर जेनरल कहा करते। सिगरेट सैनिको मे बँटने लगे। इसी समय माओ ने अपनी जेब में से अमेरिका का बना लाइटर निकालकर सिगरेट सुलगाते हुए कहा, "हम बहुत जल्दी अप-टु डेट बनने लगे।" फिर लाइटर को सैनिको को दे माओ चले गये।

कुछ दिनो बाद नानकिंग से आये प्रतिनिधियो से बातचीत करके सुलह का मसौदा तैयार हुआ, जिसे दोनो पक्षों ने मजूर किया।

(3) च्यांग-ची के दक्षिण—17 अप्रैल, 1947 को माओ चे-तुग ने मुक्ति-सेना को आदेश दिया—"मारे चीन को मुक्त करो।" याग ची के किनारे साढे तीन सौ मील तक सेना उतारने की तैयारी होने लगी। इस महानदी का पाट कही-कही दो मील चौडा था। मुक्ति-सेना के पास नदी पार करने के साधन नाममात्र के थे—लकड़ी बाँधकर बने बेडे, मछुओ की पुरानी नावे और बजरे। लेकिन उससे क्या, जन-मुक्ति-सेना के पास अपार साहस और उसके नेताओ के पास अद्भुत प्रतिभा थी। वह एक मिनट भी देर करने के लिए तैयार नहीं थी। 20 अप्रैल को सूर्य उधर क्षितिज से नीचे डूब गया और इधर याग-ची की धारा पर से पार होनेवाले मुक्ति-सैनिकों का ताँता बँध गया। तिंग से उन्होने पार उतरना शुरू किया। आकाश में से शत्रु के विमान एकाध बम गिराकर चले गये। उन्हे क्या पता था कि साढे तीन सौ मील तक सारी नदी पर माओ की सेना ही बड़ी तेजी से दक्षिणी तीर पर उतर रही है। एक दिन मे माओ की 32 लाख की सेना यांग-ची पार हो उसके दाहिने किनारे

पर पहुँच गई। वह एक के बाद एक शहरों को लेते च्यांग की सेना का सर्वसंहार करने लगी। माओ की जन्मभूमि दक्षिणी चीन की जनता ने स्वयं अपना जबर्दस्त अभियान खूनी च्यांग काइ-शेक के खिलाफ शुरू कर दिया था। वहाँ के शोषक जमींदार और दूसरे अत्याचारी जान लेकर भाग रहे थे। च्यांग के कितने ही जेनरल अपनी सेना सँहित आकर मुक्ति-सेना में मिल गये।

(क) नानकिंग पर अधिकार–23 अप्रैल को च्यांग की राजधानी और चीन का एक ऐतिहासिक महानगर नानकिंग पर लाल ध्वजा फहराने लगी। फिर अन्-ह्वेई प्रदेश की राजधानी आनकिंग पर अधिकार हुआ। फिर वू-सी, वू-हू, कियान्-गिन् मुक्त किये गये। आठ महीने में सारा दक्षिणी चीन च्यांग की काली छाया से मुक्त हो गया।

(ख) शांघाइ की मुक्ति–28 अप्रैल, 1949 का दिन आया। शाघाइ के हवाई-अड्डे लुनदुआ मे भागनेवालों की असाधारण भीड़ थी। स्टेशन के आसपास सैनिकों ने घेरा डाल दिया था। जन-मुक्ति-सेना शांघाइ के पास पहुँच गई थी। सेठ और धनी लोग देश छोड़कर भाग रहे थे। इनमें से कितने ही पिछले साल उत्तर चीन से भागकर चुंग किंग गये थे, फिर वहाँ से नानकिंग भागे। वहाँ भी जब लाल खतरा मालूम हुआ, तो कान्तन् और शांघाइ पहुँचे थे। अब चीन की खूँखार जोंकों के लिए देशो में स्थान नहीं रह गया था। च्यांग काइ-शेक के हुकुम के अनुसार शांघाइ छोड़कर भागनेवाले मिल-मालिकों ने कारखानों की मशीनों को तुड़वाने की कोशिश की, लेकिन वहाँ के मजूरो ने कोई न कोई उपाय करके मशीनों को दुरुस्त रक्खा, क्योंकि अब मिलें मालिकों की नहीं, बल्कि राष्ट्र की थीं। अखिल चीन मजूर-संघ का वचन मानकर शांघाइ से मजूरों ने शहर के यातायात के साधनों, डाक-तार, टेलीफोन आदि को चालू रखा। कुओ-मिन्तांगी अफसर बैंको मे से सोना-चाँदी, रतन-जवाहर लेकर चम्पत हो गये थे। पोत या तो फारमोसा (ताइवान्) चले गये थे या नदी के गर्भ में डुबा दिये गये थे, लेकिन मजूरों ने बन्दरगाह को तोड़ने नही दिया। तीसरे दिन मुक्ति-सेना शहर में दाखिल हुई। वहाँ के बचे हुए व्यापारी मिठाई और उपहार लेकर मुक्ति-सेना के सामने उपस्थित हुए। लेकिन वे च्यांग काइ-शेक के लुटेरे सैनिक नहीं बल्कि माओ के सर्वस्वत्यागी रणबाँकुरे थे। इन्होंने इन भेंटों को नजर तक उठाकर नहीं देखा। शाघाइ के बनियों को आश्चर्य हुआ। अगले दिन मुक्ति-सेना ने सारी शांघाइ में घोषणा कर दी : "सभी नागरिकों के जान-माल की रक्षा की जाएगी। निजी मिलो, व्यापारिक कोठियों, सार्वजनिक उपयोग की चीजो, विद्यालयों, अध्यापकों, पूजा-स्थानो और पुरोहितों की रक्षा की जाएगी। देशद्रोहियो के साथियो तथा चीन के कानून को तोड़नेवालों को छोड़कर बाकी सभी परदेसियों की रक्षा की जायगी।

"च्याग, सुंग, कुंग तथा चेन् की चण्डालचौकडी की मिलकियत तथा कुओ-मिन्तांग सरकार की मिलकियत जब्त की जायगी। हथियार और गोला-बारूद जमा करना मना है। मुक्ति-सैनिकों को जनता के पास से बिना दाम के कोई चीज लेना मना है।"

पहले जो आतक छाया हुआ था, वह मुक्ति-सेना के रवैये से जल्दी ही हट गया। फिर तो व्यापारियों ने अपनी दुकानें खोल दी, टूटी-फूटी मोटरों मे बैठ लड़के खेल खेलने लगे, सड़कों पर बँधे हुए मोर्चे हटा दिये गये और वहाँ मुक्ति-सेना अपने लोकप्रिय नृत्य 'यंग-को' करके जनता का मनोरंजन करने लगी।

शांघाइ पहले से भी सजीव हो उठी, वहाँ के करोड़पति सेठों और धनी गद्दारो के भाग जाने से उसकी चहल-पहल में कोई कमी नहीं आई। च्यांग काइ-शेक के शासन में एक जोड़ा बूट का दाम पाँच लाख डालर तक हो गया था, उसके सिक्के की कीमत कौड़ी के बराबर हो गई थी। नई सरकार ने कुओ-मिन्तांग के एक लाख डालर के बदले में अपना नया एक डालर देना स्वीकार किया।

चू-तेह का सिंहावलोकन–जन-मुक्ति-सेना के प्रधान-सेनापति चू-तेह ने 1951 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के 30वे जन्मोत्सव के समय भाषण देते हुए च्यांग काइ-शेक को किस तरह माओ चे-तुंग के नेतृत्व में कम्युनिस्ट वाहिनी ने पराजित किया, इसका बहुत प्रामाणिक और सारगभिंत वर्णन किया है :

"इस समय हम चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के वीरतापूर्ण संघर्ष के 30वें वार्षिकोत्सव को उस समय मना रहे हैं, जबकि चीनी-क्रान्ति ने राष्ट्रव्यापी विजय प्राप्त कर ली है। चीनी जनता के शक्तिशाली शत्रु

साम्राज्यवाद-सामन्तवाद-नौकरशाही पूँजीवाद का सयुक्त प्रतिक्रियावादी शासन अन्तिम रूप से खतम हो चुका है।

(1) " मार्क्सवाद-लेनिनवाद के हथियार से सुसज्जित तथा महान् साथी माओ चे-तुग और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में 1924-27 ई. की क्रान्ति की पराजय के बाद चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने चीनी जनता का दस साल के गृहयुद्ध (1927-36 ई.) मे नेतृत्व किया, और एक जनता की क्रान्तिकारी सेना तथा चीनी क्रान्तिकारी सघर्षों की व्यावहारिक स्थिति मे राजनीतिक और सैनिक नीति अपनाई। जापान-विरोधी युद्ध के आठ वर्षों (1917-35 ई.) में उसने जनता की क्रान्तिकारी सेना को और भी मजबूत किया और प्रायः 10 करोड़ आबादीवाले मुक्त इलाकों को तैयार करते हुए 10 लाख जन-मुक्ति-सेना और 22 लाख मिलिसिया (सशस्त्र सेवक दल) को सगठित किया। यह वह ठोस नींव थी, जिसके आधार पर चीनी जनता ने च्याग काइ-शेक के उस प्रतिक्रियावादी कुओ-मिन्तांगी गुट को हराया, जिसे कि अमेरिकन साम्राज्यवाद ने हथियारबन्द किया था।

" द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के समय मे दुनिया की जनता ने शान्ति को बचाये रखने की तुरन्त माँग की। युद्ध के लम्बे सालो मे सकट सहने, तथा नये गृहयुद्ध के खतरे से भयभीत चीनी जनता ने विशेषतः शान्ति को वास्तविक रूप मे देखने की इच्छा की। लेकिन, द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद से अमेरिकन साम्राज्यवाद ने फासिस्ट जर्मनी, इताली और जापान का स्थान लेते हुए दुनिया को दास बनाने की अपनी योजना को बडी हठधर्मी के साथ आगे बढाने, दुनिया की जनता को युद्ध की धमकी देने तथा चीन एव दूसरे स्थानो म सीधे युद्ध भडकाने का जी-जान से प्रयत्न किया।

" दिसम्बर, 1945 मे मास्को मे हुए सोवियत सघ, इग्लैंड और युक्त-राष्ट्र के विदेश-मन्त्रियो के सम्मेलन मे अमेरिकन साम्राज्यवाद ने चीन के भीतरी मामलो मे हस्तक्षेप न करने को स्वीकार किया था, और चीन मे शान्ति और जनतत्रता के स्थापित होने के लिए इच्छा प्रकट की थी। लेकिन, वस्तुत: जापानी साम्राज्यवाद के हथियार रख देने के बाद से ही अमरिकन साम्राज्यवाद ने अपनी स्थलसेना, जलसेना और वायुसेना एव सैनिक-मिशन को चीन भेज सारे देश के अत्यन्त सैनिक महत्त्व के अधिकाश स्थानो पर अधिकार कर लिया। उसने विश्वासघाती च्याग काइ-शेक के गुट को बडे भारी परिमाण मे सैनिक सामान और युद्ध-सामग्री दी। भिन्न भिन्न प्रकार से उसने च्याग काइ-शेक को, उसकी सेना को समुद्र तट के बडे-बडे शहरो तथा जनता के खिलाफ गृहयुद्ध के मोर्चों पर भेजने मे सहायता की। ऐसा करके अमेरिकन साम्राज्यवाद ने च्याग काइ-शेक द्वारा युद्ध के फल को चीनी जनता के हाथ से छीनकर चीन को अमेरिका का दास-देश बनाना चाहा।

" 1946 के जून के आरम्भ मे अमेरिका की जबर्दस्त सहायता के साथ चीनी जनता के विरोध तथा सारी दुनिया के लोकमत की परवाह न करके च्याग काइ-शेक ने सब कुछ दाँव पर लगाकर जन-मुक्ति-सेना के विरुद्ध ऐसा भारी गृहयुद्ध छेडा, जो चीनी इतिहास में अपने परिमाण मे अभूतपूर्व था।

" आरम्भिक समय मे गृहयुद्ध की स्थिति चीनी जनता के लिए गम्भीर थी। दुनिया का सबसे बडा साम्राज्यवाद दुनिया के सबसे बडे देशघाती गुट को अपनी पूरी मदद दे रहा था। देशद्रोही च्याग काइ-शेक गुट के पास उस समय विमानो, टैंको, आधुनिक युद्ध-साधनो और सामग्री—जिसे अमेरिकन साम्राज्यवाद ने उसे प्रदान किया था, और जो चार अरब अमेरिकन डालर की थी—के साथ 43 लाख सेना थी। उसके शासन के नीचे 30 करोड आबादीवाली भूमि थी। बडे-बडे शहर, समृद्ध प्राकृतिक स्रोत, आधुनिक उद्योग और आधुनिक यातायात के साधन उसके हाथ मे थे। चीनी जन-मुक्ति-सेना के पास जो सेनाएँ थीं, वह कुओ-मिन्तागी सेनाओं की एक-तिहाई से भी कम थीं। साधनो और आगम के स्रोतो मे वह और भी निम्न स्थिति रखती थी। मुक्त इलाको की आबादी च्याग काइ-शेक के इलाके से एक-तिहाई से भी कम थी। दोनो पक्षो की सैनिक-शक्ति की तुलना करने से सभी बातें जन-मुक्ति-सेना के पक्ष मे नही थी, सिवा इसके कि राजनीतिक गुण और जनता के साथ अपने घनिष्ठ सम्बन्ध मे वह च्याग काइ-शेक की सेना से बढ-चढकर थी। इसी कारण च्याग काइ-शेक ने युद्ध के बिलकुल आरम्भ मे ही अपनी 18 लाख नियमित सेना को बड़े विशाल रूप में इस्तेमाल करके उत्तर-पूर्व, केन्द्र, पश्चिम और उत्तर चीन के इलाको पर आक्रमण करके एक ही प्रहार में जन-मुक्ति-सेना को खतम कर देने की कोशिश

की। लेकिन, जैसाकि साथी माओ चे-तुंग ने कहा :

" मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विज्ञान के आधार पर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने अन्तर्राष्ट्रीय तथा घरेलू स्थिति का ठीक तौर से मूल्यांकन किया और अनुभव किया कि घर और बाहर के सभी प्रतिक्रियावादियों के सभी प्रहार बेकार ही नहीं होंगे, बल्कि उन्हें बेकार किया जा सकेगा।···सैनिक शक्ति में शत्रु का अधिक होना केवल क्षणिक बात है। यह ऐसा तत्व है, जोकि क्षणिक तौर से थोड़े ही समय तक ही काम आयेगा। अमेरिकन साम्राज्यवाद से मिली सहायता भी थोड़े ही समय तक काम करनेवाली बात है। लेकिन च्यांग काइ-शेक के युद्ध का जनता-विरोधी रूप और उसके प्रति जनता के विरोध का समर्थन ऐसी बातें हैं, जोकि बराबर काम करनेवाली हैं। इस बारे में जन-मुक्ति-सेना बढ़-चढ़कर है। जन-मुक्ति-सेना जिस देशभक्तिपूर्ण, न्यायोचित और क्रान्तिकारी स्वभाव के युद्ध को लड़ रही है, उसमें सारे देश की जनता की सहायता और समर्थन अवश्य प्राप्त होगा। च्यांग काइ-शेक के ऊपर विजय प्राप्त करने के लिए यह राजनीतिक आधार है।" युद्ध की प्रगति और उसके परिणाम ने साथी माओ चे-तुंग के निर्णय के ठीक होने को पूरी तौर से साबित कर दिया।

" युद्ध के आरम्भिक दिनों में, जबकि च्याग काइ-शेक सर्वस्व की बाजी लगाकर आक्रमण शुरू कर हमारे मुक्त-इलाकों में घुस आया, उस समय यद्यपि हमने बहुत-से नगर और विशाल देहाती इलाके खो दिये, लेकिन तो भी जन-मुक्ति-सेना ने प्रतिमास औसतन कुओं-मिन्तागी सैनिक-शक्ति के आठ ब्रिगेडों को नष्ट किया। आठ महीने के बाद, जब उसकी शक्तियाँ बहुत कमजोर हो गईं, तो च्यांग काइ-शेक सर्वस्व की बाजी लगा, आक्रमण करने की नीति को छोड़ने के लिए मजबूर हुआ। वह केवल शान्तुंग और उत्तर शेन्सी के तथाकथित 'मर्म स्थानों पर आक्रमण' कर सका।···च्याग काइ-शेक ने शान्तुंग के मुक्त इलाकों पर आक्रमण करने में 60 ब्रिगेडों को इस्तेमाल किया, जोकि इन आक्रमणों में लगी सारी सेना का एक-तिहाई था। उत्तर शेन्सी के मुक्त इलाके पर आक्रमण करनेवाली शत्रु की सेना जन-मुक्ति-सेना से दस गुनी थी। तो भी, चूँकि जन-मुक्ति-सेना हरेक लड़ाई में ठीक दाँव-पेंच की नीति इस्तेमाल करती रही, और किसी नगर या स्थान की प्रतिरक्षा को मुख्य लक्ष्य न बना एक के बाद एक अलग-अलग··शत्रु की सेनाओ को नष्ट करने में लगी। चीनी जन-मुक्ति-सेना ने केवल च्याग काइ-शेक के 'मर्मस्थानो के आक्रमणों' को ही बडी तेजी के साथ चूर-चूर नहीं कर दिया, बल्कि इस काल में उत्तर-पूर्व और उत्तर चीन के युद्ध-मोर्चों पर च्यांग काइ-शेक के विरुद्ध आंशिक तौर से जवाबी हमले भी शुरू कर दिए।

" युद्ध के प्रथम वर्ष के अन्त मे जन-मुक्ति-सेना ने शत्रु के 11 लाख 20 हजार सैनिकोवाले साढ़े 97 ब्रिगेड नष्ट कर दिये और अपनी 12-13 लाख सेना को बढ़ाकर 20 लाख कर दिया। इस प्रकार, युद्ध की स्थिति में एक मौलिक परिवर्तन हुआ : देशद्रोही च्यांग काइ-शेक गुट अपनी पुरुष-शक्ति में भयंकर क्षति उठाकर दाँव-पेंच के आक्रमण की जगह दाँव-पेंच के रक्षात्मक युद्ध को स्वीकार करने के लिए मजबूर हुआ।

" (2) चीनी जनता के मुक्ति-युद्ध के द्वितीय वर्ष के आरम्भ होने के साथ चीनी जन-मुक्ति-सेना ने दाँव-पेंच-सम्बन्धी रक्षात्मक लड़ाई की जगह दाँव-पेंच-सम्बन्धी आक्रमणात्मक ढग स्वीकार किया। यह सबसे बड़ा परिवर्तन था, जिसने चीनी जनता की क्रान्ति के इतिहास को बहुत प्रभावित किया। उस समय साथी माओ चे-तुंग ने घोषित किया था :

"यह च्यांग काइ-शेक के बीस साल के क्रान्ति-विरोधी शासन के अन्त का मोड़ है। साथ ही, यह चीन में साम्राज्यवाद के एक सौ से अधिक सालों के शासन के विकास और अन्त का भी मोड़ है।

" च्यांग काइ-शेक के प्रतिक्रियावादियों के विरुद्ध आक्रमण आरम्भ करते हुए जन-मुक्ति-सेना की शक्तिशाली फौजों ने ह्वांग-हो नदी पार कर दक्षिण में पहुँच कुओ-मिन्तांगी सेना की प्रतिरक्षा-व्यवस्था को चूर-चूर कर दिया। कुओ-मिन्तांगी शासन के इलाको में वह घुस गई और उसने पंक्ति को नीचे यांग-ची नदी पर ढकेल दिया। उसने जनता के विरुद्ध गृहयुद्ध छेड़कर चीनी जनता के मुक्त-इलाकों को नष्ट करने की च्यांग काइ-शेक की क्रान्ति-विरोधी योजना को उलट दिया। उसने उन अड्डों में भी क्रान्ति की ज्वाला फैला दी, जहाँ से च्यांग काइ-शेक ने जनता के विरुद्ध गृहयुद्ध आरम्भ किया था। इस प्रकार उसने कुओ-मिन्तांगी प्रतिक्रियावादी शासन

को उसकी जड़ों से बिलकुल हिला दिया और सारे देश में जनता के क्रान्तिकारी संघर्ष की बाढ को आगे बढ़ाया।

" कुओ-मिन्तांगी सेना के लगातार नष्ट करने के साथ-साथ जन-मुक्ति-सेना ने युद्ध-क्षेत्र के भिन्न-भिन्न भागों में उत्तर-पूर्व, शान्तुग, उत्तर शेन्सी और उत्तर चीन जैसे मुक्त इलाको के अधिकांश भाग को अपने हाथ में करके जन-मुक्ति-सेना ने कुओ-मिन्ताग के मजबूत मोर्चाबन्द नगरो—जिनकी आबादी एक लाख से कई लाख तक की थी—पर कामयाबी से आक्रमण करना शुरू किया। उसने प्रत्येक अभियान मे कितने ही सदियो हजारो से लाख तक कुओ-मिन्तागी सेना को नष्ट किया। कुओ-मिन्तागी सेना को नष्ट करते हुए जन-मुक्ति-सेना ने बार-बार शत्रु से भारी परिमाण मे आधुनिक हथियारो को छीनकर अपने साधनों को मजबूत किया और अपने मजबूत तोपखाने और इजीनियरी पलटने तैयार की।

" इससे पीछे दृढ स्थानों और शत्रु की प्रतिरक्षा-व्यवस्था को नष्ट करने के लिए सर्वनाशी बडे युद्धों के लड़ने मे जन-मुक्ति-सेना सक्षम हो सकी।

"जहाँ तक सेना की क्षतिपूर्ति का सवाल था, जन-मुक्ति-सेना मुख्यतः युद्धबन्दियो और आत्मसमर्पण करनेवाले बहुसख्यक कुओ-मिन्तागी सैनिकों पर निर्भर करती थी। वह श्रमिक वर्ग मे से आये थे। सुधार और शिक्षा के बाद वह जल्दी ही जन-मुक्ति-सेना के ईमानदार और बहादुर योद्धाओं के रूप मे परिणत किये जा सके।

" इन सघर्षो और प्रयत्नों के द्वारा युद्ध के शुरू से ही लगातार भयकर लडाइयो मे फँसी रहने पर भी, अमेरिकन साम्राज्यवाद और उसके गीदडो की आशा के अनुरूप कमजोर नही हुई, बल्कि इसके विरुद्ध और शक्ति पाकर वह तेजी के साथ बढती गई।

" (3) नवम्बर, 1948 मे—अमेरिकन साम्राज्यवाद के समर्थन के साथ कुओ-मिन्तागी प्रतिक्रियावादियो के युद्ध आरम्भ के करीब ढाई साल बाद युद्ध की स्थिति मे दूसरा एक और मौलिक परिवर्तन हुआ : कुओ-मिन्तागी सेनाओ के विरुद्ध करीब एक सौ नाशक अभियानो के बीच से गुजरते हुए उत्तर-पूर्व चीन के ल्याओ निग प्रदेश से पश्चिम वाले अभियान मे जन-मुक्ति-सेना ने एक महाविजय प्राप्त की, और उसने उत्तर-पूर्व चीन मे कुओ-मिन्तागी प्रतिक्रियावादियों की सेनाओं का अकेले अभियान मे पैर उखाड दिया, और अमेरिकन साम्राज्यवाद द्वारा हथियारो से सुसज्जित और सुशिक्षित च्याग काइ-शेक की फौलादी फौजो मे से अधिकाश को नष्ट कर दिया। इस अभियान के बाद कुओ मिन्तागी सेना की दर से चली आती सख्या-बल की अधिकता अब सख्या-बल की हीनता मे बदल गई और जनमुक्ति-सेना की सख्या की हीनता अब अधिकता मे बदल गई। इस समय कुओ-मिन्तागी सेना की सख्या 29 लाख रह गई, जब कि जन-मुक्ति-सेना बढकर 30 लाख हो गई। इसके बाद सारे देश मे युद्ध का पाशा बडी तेजी से पलटा।

" जनवरी, 1949 मे चीनी जन-मुक्ति-सेना ने फिर दक्षिणी मोर्चे की कुओ-मिन्तागी सेना की मुख्य फौजो पर शू चाउ के आसपास के इलाके मे एक निर्णायक युद्ध लडकर विजय प्राप्त की और अमेरिकन साधनो द्वारा मुख्य तौर से सुसज्जित च्याग काइ-शेक की सबसे मजबूत सेना के सात सैनिक समूहो को नष्ट कर दिया। अब च्याग काइ-शेक गुट के देशद्रोहियों का शासन-केन्द्र नानकिंग हमारी महाशक्तिशाली आक्रामक सेनाओ के सीधे प्रहार के लिए नगा हो अरक्षित हो गया था। इसी समय जन-मुक्ति-सेना ने कलगन, तियान्-चिन् तथा उत्तरी चीन के युद्ध मोर्चे के दूसरे नगरो को ले लिया, शान्तिपूर्वक पेकिंग को मुक्त करने मे सफलता पाई, एव उत्तर-चीन क्षेत्र मे कुओं-मिन्तागी सेनाओ का सफाया कर दिया। इस प्रकार पश्चिम-ल्याउ निग-मुकदेन्, हाइहाइ शूचाउ-पेग पू क्षेत्र और पेकिंग-तियान्-चिन् के अभियानो के बाद चीनी जनता की क्रान्ति की राष्ट्रव्यापी विजय निश्चित हो चुकी।

" इस समय अमेरिकन साम्राज्यवाद के भडकाने पर कुओ-मिन्तागी क्रान्ति-विरोधी गुट के यांग-ची नदी के दक्षिणवाले अवशेषो ने फिर से साँस लेने का सपना पूरा करने के खयाल से जन-मुक्ति-सेना को यांग-ची पार करने से रोकने की कोशिश की। उसने देर कराने का दाँव-पेच चलाते हुए च्याग काइ-शेक को अस्थायी तौर से राजनीति से अवकाश ग्रहण करने और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सुलह की बातचीत करने

के लिए आगे बढनेवाले ली चुग-जेन् को आगे किया। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने नानकिग की कुओ-मिन्तांगी सरकार के साथ शान्ति की बातचीत करना स्वीकार किया। लेकिन, नानकिग के प्रतिनिधियो के साथ मिलकर बातचीत के दौरान मे चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने शान्ति के समझौते का जो मसौदा तैयारी किया था, उसे नानकिग की कुओ-मिन्ताग सरकार ने मानने से इन्कार कर दिया।

"21 अप्रैल, 1949 को चीनी जन-मुक्ति-सेना सारे चीन को स्वतन्त्र करने के लिए दक्षिण और उत्तर-पश्चिम मे बढी। चीनी जनता के विरुद्ध च्याग काइ-शेक गुट के 22 साल के प्रतिक्रियावादी शासन के नानकिग को मुक्त करने मे केवल तीन दिन लडाई करनी पडी। फिर अप्रैल के अन्तिम भाग से 1949 के दिसम्बर के अन्त तक तइयुवान, ह्याग चाउ, वूहान्, चेग, सियान्, शाघाइ, लान्चाउ, कान्तव्, चग किग, चे तू क्वेई याग तथा दूसरे महत्त्वपूर्ण नगर सफलतापूर्वक मुक्त कर लिये गये। हूनान्, सुइयुवान, सिग-कियाग, सी-क्याग युन्नान् तथा दूसर स्थानो को शान्तिपूर्ण तरीके से मुक्त किया गया। च्याग काइ-शक गुट के देशद्रोहियो का प्रतिक्रियावादी शासन पूरी तौर से नष्ट हो गया। उसके अवशेष चूहो की तरह ताइवान (फारमोसा) द्वीप मे भाग गये, जोकि अमेरिका के हथियारबन्द सरक्षण मे था।

"1950 म चीनी जन-मुक्ति-सेना ने हेनान् द्वीप और चूशन प्रायद्वीप को मुक्त कर तिब्बत की ओर अपना विजयपूर्ण बढाव शुरू किया। 1951 की मई म केन्द्रीय लोकसरकार ने स्थानीय सरकार के प्रतिनिधियो के साथ तिब्बत की शान्तिपूर्ण मुक्ति क उपाय के सम्बन्ध मे सुलहनामे पर दस्तखत किया।

"युद्ध के करीब चार वर्षो मे जन मुक्ति सेना ने कुओ-मिन्ताग की 80 लाख 70 हजार सेना को नष्ट किया। विद्रोह करके हमारी तरफ आनेवाले या आत्मसमर्पण करने तथा पुनर्सगठन स्वीकार करनेवाली कुओ-मिन्ताग की 17 लाख 70 हजार सेनाओ को हमने अपनी ओर किया। हमने कुओ-मिन्ताग के ऊँचे दर्जे के 1668 सैनिक अफसरो को मारा या बन्दी बनाया अनेक प्रकार की 50 हजार तोपो, 3 लाख से अधिक मशीनगनो, हजार से अधिक टैंको और बख्तरदार गाडियो, 20 हजार से अधिक मोटरो और इनके अतिरिक्त और बहुत-से हथियार तथा युद्ध सामग्री को छीना। यह स्पष्ट है कि यह परिणाम अमेरिकन साम्राज्यवाद के लिए कम परेशानी का कारण नही है।

"यह सयोग की बात नही है, जो अमेरिकन साम्राज्यवाद का पिछलग्गू कुत्ता च्याग काइ-शेक इतनी तेजी और भयकर रूप से खतम हुआ। उन सभी प्रतिक्रियावादियो का यह अनिवार्य अन्त है, जोकि जनता की इच्छा और शक्ति की उपेक्षा करते हैं। यह उन साहसवादियो का अनिवार्य अन्त है, जोकि अपने राजनीतिक बिलगाव को न देखते हुए जनता के विरुद्ध काम करते अपनी खुद की हथियारबन्द सेना की क्षणिक और दिखावेवाली शक्ति को ही देखत है। च्याग काइ-शेक के खूनी प्रतिक्रियावादी बाईस वर्षो के शासन और चीन मे साम्राज्यवादियो क खूनी तथा प्रतिक्रियावादी एक शताब्दी से अधिक के शासन के सम्बन्ध मे देर तक रुके इतिहास का यह फैसला है।

"लेकिन, चीनी जनता का मुक्ति-युद्ध अभी पूरी तरह समाप्त नही हुआ, क्योकि जैसाकि मैंने कहा, चीनी जनता के गणराज्य का एक भूभाग ताइवान (फारमोसा) प्रदेश अभी भी मुक्त नही हुआ है। 1950 के जून मे अमेरिकन आक्रमणकारियो ने हमारे ताइवान पर अपना हथियारबन्द नियत्रण घोषित किया और साथ ही उन्होने कोरिया के विरुद्ध हथियारबन्द पाशविक दखलन्दाजी आरम्भ की। यह उसी तरह का बर्बर, निर्लज्जतापूर्ण आक्रमण है, जैसाकि 1931 मे जापानी साम्राज्यवाद ने उत्तर-पूर्व चीन पर कब्जा करके किया था। निस्सन्देह, वीर चीनी जनता अमेरिकन साम्राज्यवाद के हाथो मे ताइवान को अवश्य मुक्त करेगी और अपने ताइवान के 67 लाख देशभाइयो को अपनी महान् मातृभूमि की गोद मे लौटने के योग्य बनायेगी।

6. नई व्यवस्था

भारतीयों को भी चोरबाजारी और भ्रष्टाचार का पिछले छह वर्षो से काफी परिचय मिल रहा है, और जितना ही माला फेरते हमारे भक्त नेता भ्रष्टाचार हटाने के लिए उपदेश दे रहे हैं, उतना ही वह बढता जा रहा है।

[illegible] के चीन के सामने कांग्रेसी भारत की गति अभी काफी मन्द है, यद्यपि [illegible] के साथ [illegible] कदम को उसी तरफ बढ़ाये जा रहा है। पूँजीवादी विचारक और प्रचारक दिल में यह बात बैठाना चाहते हैं कि पापपूर्ण लाभ-लोभ और भ्रष्टाचार मनुष्य के स्वभाव में है। माओ के चीन ने इसे झूठा साबित कर दिया। शांघाइ के विदेशी व्यापारियों तक ने भी इसे मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया कि माओ के पास भ्रष्टाचार हटाने का अमोघ मन्त्र है। गली-गली मे प्रचार होने लगा, चोरबाजारी के खिलाफ भाषण होने लगे, गीतें गाई जाने लगीं, अभिनय किये जाने लगे। चोरबाजारी बनिये और घूसखोर पहले ही से डर गये थे। उनमें से दस-पाँच ही को कड़ा दण्ड देने के बाद सबने अपना पुराना रास्ता छोड़ दिया। शाघाइ में चोरबाजारी बन्द हो गई।

कम्युनिस्टो के आते ही एक और भी नई बात शाघाइ-निवासी देखने लगे। बड़ी-बड़ी कचहरियों मे कुर्सियो पर अब लाटसाहबी ठाट से अफसर नही बैठे हुए थे। जहाँ बालकटी छोकरियाँ हाथ मे कलम लिये लिख रही थीं। शाघाइवासियो को पहले तो विश्वास नही हुआ कि च्याग के बड़े-वड़े अफसरो का काम छोकरियाँ और इन्हीं की उम्र के छोकरे ठीक तरह से कर पाएँगे, लेकिन तजर्बे ने उन्हे इसे मानने के लिए मजबूर किया। च्याग के शासन मे भला अफसरों की बिना भेट-पूजा किये व्यापारियों का कोई काम हो सकता था ? लेकिन भेट-पूजा का आरम्भ च्याग और उसके मन्त्रियो से होता था। हम अपने यहाँ के तजर्बे से जानते हैं कि जब ऊपर के बड़े-बड़े लोग करोड़ो की रिश्वत खुलकर डकार जाने के लिए स्वतन्त्र है, तो वह किस मुँह से छोटो को वैसा करने में रोक सकते है। लेकिन, यहाँ माओ चे तुग, चाउ एन लाइ और चू-तेह जैसे लोग राष्ट्र के कर्णधार थे, इसलिए सबको वैसा ही होना पड़ा और सबको वैसा ही होने की उन्होने शिक्षा भी दी थी। माओ के शिष्य तरुण-तरुणी लाखो की सख्या में जिस तरह बन्दूक लेकर दुनिया की एक बहुत बडी शक्तिशाली सेना को मार भगाने मे चतुर थे, जिस तरह वह भाषण देकर जनता को अपनी तरफ खीच सकते थे, उसी तरह वह शासन के हरेक विभाग को चलाने मे भी कुशल थे। माओ ने पहले ही से इन्हे राजकाज और व्यापार-व्यवहार चलाने की शिक्षा दी थी। इसलिए च्याग के अफसरो के भागते ही उन्होंने उनकी जगहो मे बैठकर चीन मे नई व्यवस्था चालू कर दी।

माओ त्सू-शी के सिद्धान्तो का लोग गम्भीरतापूर्वक अध्ययन और अनुसरण करने लगे, जिनमे कहा गया है :

" (1) सब कुछ जनता के लिए है। वे सारे सिद्धान्त गलत है, जिनके अनुसार किसी व्यक्ति या दल के हित के लिए जनता के हित को न्योछावर किया जाता है,

" (2) जनता के प्रति अपनी पूर्ण जिम्मेवारी समझनी चाहिए,

" (3) जनता के प्रति अपनी जिम्मेवारी निभाने के बहाने पार्टी के अनुशासन और एकता को तोड़ना अनुचित है, किन्तु साथ ही नेतृत्व करनेवाले कमेटी या व्यक्ति की कमी या भूल को सुधारना आवश्यक है, क्योकि इस प्रकार की कमियाँ और गलतियाँ जनता और पार्टी के लिए हानिकारक है। पार्टी मे आत्मालोचना–अपनी गलतियो की स्वय आलोचना–और अपने नेताओ की गलतियो की आलोचना करने, पार्टी के अनुशासन को मानने का अर्थ है, जनता के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझना,

" (4) जनता के स्वय उद्धार करने की शक्ति मे हमारी आस्था होनी चाहिए। जनता महान् है। उसकी रचनात्मक शक्ति असीम है। हम उसके ऊपर भरोसा करके ही अजेय हो सकते हैं। केवल जनता ही इतिहास की रचना करती है और जनता का इतिहास ही वास्तविक इतिहास है। जनता का उद्धार कोई सम्राट, देवता या जननायक नही करता, बल्कि जनता स्वय अपना उद्धार करती है। जनता के अपने सघर्षो और प्रयत्नो द्वारा ही उसकी मुक्ति होती है, उसकी स्वतन्त्रता की रक्षा होती है, और वह कायम रह सकती है। जनता के सिवा कोई दूसरा दान के रूप मे जनता को मुक्ति नही दे सकता। इसलिए जनता के प्रति दया करके उसके उद्धार के लिए लड़ने की धारणा गलत है।

" कम्युनिस्टो का उद्देश्य केवल जनता के हितो को पूरा करना है। हमारे कार्यक्रम और नीति चाहे कितने ही अच्छे हों, किन्तु जनता के सहयोग और जनता द्वारा लगातार किये जाते सघर्ष के बिना उनमें सफलता

नहीं हो सकती। हमारे कार्यक्रम और नीति की सभी बातों का आधार जनता की चेतना है। जनता में चेतना की कमी होने पर कम्युनिस्टों का यह कर्तव्य है कि किसी काम को हाथ में लेने के पहले जनता में सभी उपयोगी और सम्भव उपायों से चेतना पैदा करें। यह काम चाहे जितना भी कठिन हो, और इसमें चाहे जितना भी समय लगे; किन्तु इस काम को सबसे अधिक महत्त्व देकर सबसे पहले इसकी ओर ध्यान देना चाहिए। "

" ऊपर कहा गया है कि पहला कदम जमा लेने के बाद हम दूसरा कदम उठा सकते हैं, अर्थात् जब जनता की चेतना आवश्यक स्तर पर पहुँच जाय, तब हमारा कर्तव्य होता है कि उसे सगठन और सघर्ष के लिए मार्ग दिखलायें। इस मजिल पर पहुँच जाने के बाद हमारा कर्तव्य हो जाता है कि स्वय जनता के अनुभव से उसकी चेतना को आगे बढ़ाएँ। जनता को कदम-कदम आगे बढाते उसकी माँगो को अपने नारो का रूप देवे। सघर्ष की ओर ले जाने का यही तरीका है। हम कम्युनिस्ट जनता के उद्देश्य की पूर्ति के लिए यही सबसे बडा काम कर सकते है। सभी प्रकार की गलतियाँ–उदाहरणार्थ महापुरुष बनने की इच्छा, हुकुमरानी मनमानी चलाने और जनता के कल्याण कर देने की इच्छा का दिखावा–तभी पैदा होती है, जब लोग इससे बढकर कुछ कर दिखाने की चेष्टा करते है। जनता की मुक्ति के सघर्ष मे कम्युनिस्ट केवल पथ-प्रदर्शन का काम कर मकता है और यही उसे करना चाहिए। कार्यकर्ताओं को जनता की जगह लेकर विश्व-विजय करने का प्रयत्न नही करना चाहिए, न ही वे ऐसा कर ही सकते है। क्रान्तिकारी सघर्ष मे सफलता के लिए जनता को दूरदर्शी और दृढ-निश्चयी नेताओ तथा पथ-दर्शको की अनिवार्य आवश्यकता प्रतिक्षण रहती है। जनता के कार्य को महापुरुष पूरा नही कर सकते, क्योंकि जनता से दूर रहते महापुरुष जनता की मुक्ति के लिए कुछ भी नही कर सकते।

" चौथा सिद्धान्त है : जनता से शिक्षा ग्रहण करना। हम लोग मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तो और दूसरे देशो के जन-सघर्षो के इतिहास का अध्ययन करके शिक्षा ले सकते है। हम अपने शत्रुओ से भी शिक्षा ले सकते हैं। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात है जनता से शिक्षा लेना, क्योकि जनता का ज्ञान और अनुभव सबसे भारी अधिक क्रियात्मक है और उसकी रचनात्मक शक्ति सबसे बडी है। इसलिए जनता को शिक्षा देने से पहले हम जनता से शिक्षा लेनी चाहिए। "

17

जनवादी गणराज्य की स्थापना (1949)

1. नया मार्ग-प्रदर्शन

हम देख चुके है कि हर समय की समस्याओ के हल करने मे साथी माओ चे-तुग पथ-प्रदर्शन के वास्ते सिर्फ मौखिक ही नही, बल्कि लेखबद्ध करके भी देते रहे है। 1949 मे उन्होंने 'जनता की जनतात्रिक अधिनायकता' के नाम से आगे के लिए मार्ग-निर्देश किया।

'लोकशाही जनतात्रिक अधिनायकता' कम्युनिस्ट पार्टी के 28वे जन्मोत्सव के समय 1 जुलाई, 1949 को माओ ने इस नाम से एक सारगर्भित भाषण दिया था।

(1) **नई सरकार की तैयारी**–देश का शासन चलाने के लिए शासन-यत्र की आवश्यकता थी। इसके लिए चीनी जनता को राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के बुलाने की आवश्यकता थी, जिसकी तैयारी करने के लिए 15 जून, 1949 को एक कमेटी बैठी, जिसमे उसी दिन साथी माओ चे-तुग ने कहा था :

" सहकारी प्रतिनिधियों,

" हमारे राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की तैयारी करनेवाली बैठक आज शुरू हो रही है। इस बैठक

[illegible] सभी आवश्यक तैयारियों को पूरा करना, जिसमें कि राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन तुरन्त बुलाया जा सके और एक जनतांत्रिक सम्मिलित सरकार बनाई जाय। इससे सारे देश की जनता को कुओ-मिन्तांग प्रतिक्रियावादी गुट की अवशिष्ट शक्तियों का यथासम्भव शीघ्र सफाया किया जा सकेगा, सारे चीन को एकताबद्ध और राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र मे राष्ट्रव्यापी पैमाने पर सुव्यवस्थित रीति से निर्माण-कार्य किया जा सकेगा। सारे देश के लोग चाहते हैं कि हम इन कामो को करे और हमे करना होगा।

" 1 मई, 1948 को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने देश की जनता के मामने नये राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का प्रस्ताव किया था। इस प्रस्ताव को तुरन्त देश की सभी जनतात्रिक पार्टियो और समुदायो, सार्वजनिक सगठनो, सभी विचारो के जनतात्रिक व्यक्तियो, देश के भीतर की अल्पमख्यक जातियो और समुद्र-पार के चीनियो ने तुरन्त पसन्द किया। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और सभी उपरोक्त समुदाय और लोग यह आवश्यक समझते हैं कि साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, नौकरशाही पूँजीवाद और कुओ-मिन्ताग प्रतिक्रियावादी गुट के शामन को उखाड फेका जाय। वह यह भी आवश्यक समझते हैं कि सभी जनतात्रिक पार्टियों, समुदायों, सभी सार्वजनिक सगठनो, सभी विचारो के जनतात्रिक व्यक्तियो, देश के भीतर की अल्पसख्यक जातियो और समुद्र पार के चीनियो का एक राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाया जाय और चीन की जनता के जनतात्रिक गणराज्य की स्थापना की घोषणा और उस गणराज्य के प्रतिनिधि के तौर पर एक जनतात्रिक सम्मिलित सरकार का निर्वाचन किया जाय। केवल इमी प्रकार हमारी महान् पितृभूमि अपन को अर्ध उपनिवेशी और अर्ध मामन्ती पाश से निकलकर मुक्ति, शान्ति, एकता, शक्ति और समृद्धि के रास्ते को प्राप्त कर सकती है।

" सारे देश की जनता अपनी स्वकीय जन मुक्ति-सेना का समर्थन करती है, जिससे उसने युद्ध मे विजय प्राप्त की। जुलाई, 1946 मे आरम्भ हुए महान् जन-मुक्ति युद्ध को पूरे तीन वर्ष बीत चुके है। इस युद्ध को विदेशी साम्राज्यवाद की मदद से कुओ-मिन्तागी प्रतिक्रियावादियों ने आरम्भ किया। कुओ-मिन्तागी प्रतिक्रियावादी गुट ने 1946 की जनवरी मे राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन द्वारा स्वीकार की गई युद्ध विराम सन्धि और प्रस्तावो को विश्वासघात के साथ तोड फेका और जनता के विरुद्ध गृहयुद्ध आरम्भ किया। किन्तु केवल तीन वर्षो के भीतर ही वीर जन-मुक्ति-सना न प्रतिक्रियावादियो को हरा दिया। कुओ मिन्तागी प्रतिक्रियावादियो के गुट के प्रयत्न का पर्दाफाश होने के थोडे ही दिनो बाद जन मुक्ति सेना हिम्मत के साथ आगे बढती याग ची नदी को पार कर गई। कुओ-मिन्तागी प्रतिक्रियावादी गुट की राजधानी नानकिग पर अधिकार किया जा चुका है हग चाउ, नानचाग, वूहान् और सियान् मुक्त किये जा चुके है। इमी क्षण जन मुक्ति सना की भिन्न भिन्न मेदानी वाहिनियॉ दक्षिणी और उत्तर पश्चिमी प्रदेशो मे इतने जोर से आगे बढ रही हे, कि जैसा बढाव चीन के इतिहास मे इससे पहले कभी नही हुआ।

" तीन वर्ष के भीतर जन मुक्ति सेना ने 55 लाख 90 हजार प्रतिक्रियावादी कुओ-मिन्तागी सेनाओ का सफाया कर दिया। इस समय नियमित अनियमित वाहिनिया तथा पश्चात् भाग के सैनिक सगठनो एव सैनिक स्कूलो को लेते हुए कुओ-मिन्तागी सेना के अवशेष केवल 15 लाख आदमियो के करीब हैं। इस अवशिष्ट सेना का सफाया करने के लिए कुछ समय जरूर लगेगा, लेकिन वह बहुत लम्बा नही होगा।

" यह सारी चीनी जनता की विजय है, और साथ ही यह सारी दुनिया की जनता की विजय है। सिवा भिन्न-भिन्न देशो के साम्राज्यवादियों और प्रतिक्रियावादियो के सारी दुनिया मे कोई एसा व्यक्ति नही है, जोकि चीनी जनता के इस प्रचण्ड विजय पर बडे जोश के साथ आनन्द न मानता हो। अपने शत्रुओ के विरुद्ध चीनी जनता का सघर्ष और अपने शत्रुओ के विरुद्ध दुनिया के दूसरे लोगो का सघर्ष एक सा ही महत्त्व रखता है। सारी चीन की जनता तथा सारी दुनिया की जनता ने निम्न बाते देखी हैं। चीनी जनता के विरोध करते भी क्रान्ति-विरोधी युद्ध करने के लिए साम्राज्यवादियो ने चीनी प्रतिक्रियावादियो का सचालन किया, चीनी जनता ने विजय के साथ प्रतिक्रियावादियो का टाट उलटने के लिए क्रान्तिकारी युद्ध किया।

" यहॉ मै जनता का ध्यान एक बात की ओर दिलाना चाहता हूँ · साम्राज्यवादी और उनके पिट्ठू चीनी

प्रतिक्रियावादी चीनी भूभाग में अपनी पराजय को स्वीकार नहीं करेंगे। चीनी जनता का विरोध करने के लिए हर तरह के सम्भव साधनों को इस्तेमाल करते वह एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करेंगे।

" चीन को अवश्य स्वतन्त्र होना है, चीन को अवश्य आजाद होना है, चीन की सभी बातों का निर्णय और संचालन स्वयं चीनी जनता को करना है। हम किसी साम्राज्यवादी देश की जरा भी दखलंदाजी फिर नहीं होने देंगे।

" साथ ही हम सारी दुनिया के सामने घोषित करते हैं : हम जो विरोध कर रहे हैं, वह केवल साम्राज्यवादी व्यवस्था और चीनी जनता के विरुद्ध उसकी षड्यन्त्री योजनाओं का विरोध करते है। समानता के सिद्धान्तों, परस्पर लाभ और भूमिका सर्वप्रभुत्व के प्रति पारस्परिक सम्मान के आधार पर हम किसी भी विदेशी सरकार के साथ दौत्य सम्बन्ध स्थापित करने के प्रश्न पर बातचीत कर सकते है, यदि वह सरकार चीनी प्रतिक्रियावादियों से सम्बन्ध तोड़ने के लिए इच्छुक है, यदि वह फिर चीनी प्रतिक्रियावादियो को सहयोग या सहायता नहीं देगी, एवं जनता के चीन के प्रति झूठी नहीं, सच्ची मित्रता का रवैया अख्तियार करेगी। चीनी जनता दुनिया के सभी देशों की जनता के साथ मित्रतापूर्ण सहयोग और उत्पादन के बढ़ाने तथा आर्थिक समृद्धि के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को पुनःस्थापित और प्रसारित करने के लिए तैयार है।

" एक बार जब जनतांत्रिक सम्मिलित सरकार बन गई, तो इसका मुख्य काम केन्द्रित होगा : (1) प्रतिक्रियावादियों के अवशेषो का सफाया करना और उनकी तोड-फोड की कार्रवाइयां को खतम करना, (2) जनता के आर्थिक, सांस्कृतिक और शिक्षा-सम्बन्धी कार्यो की पुनः स्थापना और वृद्धि करते हुए जनता के आर्थिक उद्योगों की पुनः स्थापना और वृद्धि के लिए सभी सम्भव प्रयत्न करना।

" एक बार जब चीन का भविष्य जनता के अपने हाथों में आ गया, तो चीनी जनता चीन को उदीयमान सूर्य की तरह चमकते सारी भूमि के ऊपर अपने प्रकाश को बिखेरती और प्रतिक्रियावादी सरकार द्वारा पीछे छोड़े कीचडवाले गड़हों को जल्दी से सुखाती दीखेगी। युद्ध के घाव भर जायेंगे। केवल नाम के लिए ही नहीं, बल्कि वस्तुतः हम एक बिलकुल नये, मजबूत और समृद्ध चीन जनतान्त्रिक गणराज्य का निर्माण करेंगे।

चीन जनता जनतांत्रिक गणराज्य चिरंजीव !

जनतांत्रिक सम्मिलित सरकार चिरजीव !

सारे देश की जनता की महान् एकता चिरजीव। "

(2) जनता की जनवादी अधिनायकता (1949 ई.)–तैयारी कमेटी की बैठक के बाद चीनी राष्ट्र के पथ-प्रदर्शन के लिए चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के जन्मोत्सव मनाने के समय 1 जुलाई, 1949 को साथी माओ चे-तुंग ने अपने लिखित भाषण में कहा था :

" 1 जुलाई, 1949 का आज का दिन बतला रहा है, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी अपने जीवन के 28 साल बिता चुकी है। मानव प्राणी की तरह इसके भी अपने शैशव, तारुण्य, प्रौढता और वार्धक्य हैं। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी अब शिशु या अबोध बालक नहीं है। वह वयस्क हो चुकी है। जब कोई आदमी बूढ़ा होता है, तो वह मरेगा, यही बात राजनीतिक पार्टियो पर भी लागू होती है। जब वर्ग समाप्त होंगे, तो वर्ग-संघर्ष के सारे हथियार–राजनीतिक पार्टियाँ और राज्य-यन्त्र–अपने अस्तित्त्व के आधार को खो देंगे, अनावश्यक हो धीरे-धीरे मुरझा जायँगे। वह अपने ऐतिहासिक कर्तव्य को पूरा कर चुकेंगे और मानव-समाज और भी ऊँची मंजिल की ओर अग्रसर होगा।

" हमारी पार्टी बूर्ज्वा की राजनीतिक पार्टियो से ठीक उलटी है। वह पार्टियाँ वर्गों, राज्य-शक्ति और पार्टियों के लोगो के बारे में कहने से डरती है। इसके विरुद्ध हम खुलेआम घोषित करते है कि हम अपनी सारी शक्ति से ठीक उन स्थितियो को पैदा करने के लिए कोशिश कर रहे हैं, जोकि इन बातों के ख़ात्मे को जल्दी सामने लायंगी। कम्युनिस्ट पार्टी और जनता की अधिनायकता की राज्य-शक्ति ऐसी ही स्थितियाँ हैं।

" जो कोई इस सत्य को नहीं स्वीकार करता, वह कम्युनिस्ट नहीं है।

" जैसा कि हम जानते हैं, हमारी पार्टी के जो 28 साल गुजरे हैं, वह शान्तिपूर्ण नहीं रहे, बल्कि कठिनाइयों

से भरे रहे। हमें विदेशी और स्वदेशी शत्रुओ से लडना पडा, तथा पार्टी के भीतर और बाहर के शत्रुओं से लडना पडा। हम अपने हथियार के लिए मार्क्स, एगेल्स, लेनिन और स्तालिन के ऋणी हैं। ये हथियार मशीनगन नहीं हैं, बल्कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद।

" 1840 ई के अफीम-युद्ध मे पराजित होने के बाद चीन के प्रगतिशीलो ने कष्ट और मुसीबत सहते पश्चिमी देशो मे सत्य की खोज करते रहे। हुग शिउचुआन काग यू-वेइ, येन् फू और सुन यात् सेन् उन्हीं आदमियो मे हैं, जिन्होने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के जन्म म पहले सत्य के लिए पश्चिम का मुँह ताका। इस काल मे प्रगति का लक्ष्य रखनवाले सभी चीनी पश्चिम की नई शिक्षावाली हरक पुस्तक हा पढा करते थे। जापान, इग्लैण्ड, सयुक्त राष्ट्र अमरिका, फ्रास और जर्मनी मे आश्चर्यकर सख्या म विद्यार्थी भेजे जाते रहे। पश्चिम से शिक्षा प्राप्त करने के लिए हर तरह की कोशिश की जाती थी। साम्राजी प्रतियोगिता परीक्षाओ की प्राचीन व्यवस्था बन्द कर दी गई और वसन्त की वर्षा के बाद बाँस के अकुरो की तरह आधुनिक स्कूल उग आये। अपनी तरुणाई म मैंने भी नई शिक्षा प्राप्त करन की कोशिश की।

' आधुनिक पश्चिमी बूर्ज्वा जनतान्त्रिकता की सस्कृति तथाकथित 'नवीन शिक्षा' के भीतर उस काल की सामाजिक विचारधाराएँ और प्राकृतिक विज्ञान भी सम्मिलित थ जो चीनी सामन्ती सस्कृति, तथाकथित 'प्राचीन शिक्षा के विरुद्ध थ।

" काफी लम्बे अर्से तक नवीन शिक्षा के अनुयायी विश्वास करते थ कि इससे चीन की मुक्ति होगी। प्राचीन शिक्षा के अनुयायियो को छोड नवीन शिक्षा क बहुत ही कम अनुयायी उसके प्रति सन्देह प्रकट करते थे। चीन की रक्षा के लिए केवल एक ही उपाय था कि उसे आधुनिक बनाया जाय और आधुनिक बनाने का रास्ता था बाहर के देशो मे सीखना।

उस समय बाहर के देशो मे केवल पश्चिमी पूँजीवादी देश ही प्रगतिशील थे। वह आधुनिक बूर्ज्वा राज्य कायम करने मे समर्थ हुए थे। जापानियो से पश्चिम म बहुत काम की बात सीखी और चीन ने अब जापान से सीखने की इच्छा की। जैसाकि उस समय उस चीनी देखते थ एक पिछड़ा देश था उससे बहुत कम ही लोग कुछ सीखना चाहते थे।

इस तरह 1840 ई से 20वी सदी के आरम्भ तक के समय म चीनियो ने बाहरी देशो म सीखना चाहा।

साम्राज्यवादी आक्रमणो न पश्चिम म शिक्षा प्राप्त करन के भ्रम का ताड दिया। क्या यह अचरज की बात नही थी कि गुरु अपने शिष्यो का ही सिर मूडना चाहे ?

' चीनियो ने पश्चिम म काफी सीखा लेकिन उन्होने जो कुछ सीखा उसे वह काम मे नही ला सकते थ अपन आदर्श को जीवन मे अनुभूत नही कर सकते थे। उनके बहुत से सघर्ष जिनम 1911 ई की क्रान्ति जैसा राष्ट्रव्यापी आन्दोलन भी सम्मिलित है अन्त म असफल हुए। दिन पर दिन देश की अवस्था बहुत बुरी होती गई यहाँ तक कि अन्त म जीवन असम्भव हो गया। सन्देह पैदा हुआ बढा और फैला। प्रथम विश्वयुद्ध के सारे भूमण्डल को कम्पित कर दिया। रूसियो न अक्तूबर क्रान्ति को सफलतापूर्वक पूरा कर दुनिया मे प्रथम समाजवादी राज्य का निर्माण किया। लेनिन और स्तालिन क नेतृत्व मे महान् रूसी सर्वहारा और कमकर जनता की क्रान्तिकारी शक्ति–जोकि अब तक बाहरवालो के लिए अन्तर्हित और अदृश्य थी–ज्वालामुखी की तरह एकाएक फूट निकली। चीनी जनता और सारी मानवता रूसियो को नई रोशनी मे देखने लगी।

' तभी और केवल तभी चीनी विचार और जीवन दोनो के सम्बन्ध म एक बिलकुल नये युग मे चीनियो ने प्रवेश किया। उन्होने मार्क्सवाद लेनिनवाद का विश्वव्यापी सत्य पाया जिसको हर जगह इस्तेमाल किया जा सकता है। चीन का चेहरा बदलने लगा।

" यह रूसी ही थ जिनके द्वारा चीनियो ने मार्क्सवाद का परिचय प्राप्त किया। अक्तूबर-क्रान्ति के पहले केवल लेनिन और स्तालिन ही नही बल्कि मार्क्स या एगेल्स का भी चीनियो को पता नही था। अक्तूबर-क्रान्ति के गोलो की आवाज ने हमे मार्क्सवाद लेनिनवाद के लिए जगा दिया। अक्तूबर क्रान्ति ने चीन और सारी दुनिया के प्रगतिशीलो को किसी जाति के भविष्य का दूर तक देखने और अपनी अपनी समस्याओ को नई तरह से

सोचने के लिए एक हथियार के तौर पर सर्वहारा के विश्व दृष्टिकोण को स्वीकार करने मे सहायता दी। निष्कर्ष निकला 'रूसियो के रास्ते पर चलो।' 1919 ई. मे चीन में चतुर्थ मई-आन्दोलन आरम्भ हुआ, 1921 ई. मे चीन की कम्युनिस्ट पार्टी स्थापित हुई। निराशा के गडहे मे पडे सुन-यात्-सेन ने अक्तूबर क्रान्ति और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को देखा। उन्होंने अक्तूबर-क्रान्ति का स्वागत किया, चीन के लिए रूसी सहायता का स्वागत किया, और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सहयोग का स्वागत किया।

" सुन्-यात्-सेन् की मृत्यु पर शक्ति च्याग काइ-शेक के हाथ मे गई। 22 साल के लम्बे अर्से तक च्याग काइ-शेक चीन को निराशापूर्ण खड्ड मे घसीटता रहा।

" इसी काल मे फासिस्त-विरोधी द्वितीय विश्वयुद्ध हुआ, जिसमें सोवियत सघ मुख्य शक्ति था। इसके कारण तीन बडी साम्राज्यवादी शक्तियों का पतन और दो दूसरी का निर्बल होना हुआ। केवल एक बडी साम्राज्यवादी शक्ति–सयुक्त राष्ट्र–अक्षत निर्लेप बच निकला। किन्तु सयुक्त राष्ट्र का घरलू सकट बहुत भयकर है, इसलिए वह दुनिया को गुलाम बनाना चाहता है। च्याग काइ शेक को हथियार देकर उसने करोडो चीनियो की हत्या करने में सहायता की है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चीनी जनता ने जापान साम्राज्यवादियों को मार भगाने के बाद तीन साल तक मुक्ति-युद्ध को जारी रक्खा और मौलिक रूप से विजय प्राप्त की।

" यही बात है, जो चीनी जनता की आंखो में पश्चिमी बूर्ज्वा सभ्यता, बूर्ज्वा जनतांत्रिकता, बूर्ज्वा ढग का गणराज्य सभी दिवालिया दीख पड़े। बूर्ज्वा जनतात्रिकता का स्थान जनता की जनतन्त्रता ने, मजूर-वर्ग के नेतृत्व ने लिया और बूर्ज्वा गणराज्य का स्थान जनता के गणराज्य ने। जनता के गणराज्य ने समाजवाद और साम्यवाद, वर्गों में और विश्वव्यापी समन्वय करने की सम्भावना पैदा की।

" काग यू वेइ ने 'विश्वव्यापी समन्वय' पुस्तक लिखी, लेकिन उसे विश्वव्यापी समन्वय का रास्ता न मिला न मिल सकता था। बूर्ज्वा-गणराज्य जैसी चीज दूसरे देशों में मौजूद रही, किन्तु चीन में वह नहीं कायम रह सकती थी; क्योंकि वह साम्राज्यवाद द्वारा उत्पीडित देश था। विश्वव्यापी समन्वय का एकमात्र रास्ता है मजूर-वर्ग के नेतृत्व मे जनता का गणराज्य।

" हमारे 28 वर्ष के अस्तित्व में हम उसी निष्कर्ष पर पहुँचे, जिसे कि सुन यात सेन् ने अपनी वसीयत में अपने चालीस साल के अनुभव द्वारा बतलाया था, अर्थात्, 'इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हम अपनी जनता को पूरी तौर से जाग्रत करना होगा, और उन लोगों के साथ सम्मिलित सघर्ष में हम सहयोग देना होगा, जो हमारे साथ समानता के आधार पर बर्ताव करते है।' सुन यात सेन का विश्व-दृष्टिकोण हमसे भिन्न था। समस्याओं का अध्ययन और अनुशीलन उन्होंने वर्ग दृष्टिकोण से आरम्भ किया था तो भी साम्राज्यवाद के विरुद्ध केसे सघर्ष किया जाय, इस प्रश्न पर 1920 ई में आधाररूपेण वह उसी निष्कर्ष पर पहुँचे, जिस पर कि हम।

" सुन् यात सेन को मरे बाईस वर्ष हो गये। इस बीच चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चीनी क्रान्तिकारी सिद्धान्त और प्रयोग प्रचण्ड रूप में आगे बढ़े और उन्होंने चीन के चेहरे का मौलिक रूप से बदल दिया।

" अपने जीवन-काल में सुन् यात सेन ने अनगिनत बार पूंजीवादी देशों से सहायता के लिए प्रार्थना की, लेकिन सब बेकार ही नहीं गया, बल्कि उनकी ओर से हृदयहीन दुत्कार भी मिली। अपने जीवन में डा. सुन यात-सेन् ने एक ही बार अन्तर्राष्ट्रीय सहायता प्राप्त की और वह सोवियत सघ से। "

इस प्रकार चीन के अतीत का सिंहावलोकन करने के बाद नये चीन के भावी काम के बारे में माओ त्से-तुग ने कहा :

" हमारा वर्तमान कार्य है जनता के राज्य-यन्त्र–मुख्यतः जनता की सेना, जनता की पुलिस और जनता की अदालतों को मजबूत करना, ताकि राष्ट्रीय प्रतिरक्षा को ठीक रक्खा जा सके और जनता के हितो की रक्षा की जा सके। इन स्थितियों में मजूर-वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चीन एक कृषि प्रधान देश से उद्योग-प्रधान देश और एक नवीन जनतात्रिक देश में समाजवादी और अन्त में साम्यवादी समाजवाले देश के रूप मे दृढ़तापूर्वक वस्तुसत्य बनेगा।

" सेना पुलिस और अदालते राज्य की मशीनें है, वह हथियार है, जिसके द्वारा एक वर्ग दूसरे वर्ग को

उत्पीडन करता है। वह हिंसात्मक है और निश्चय ही 'कल्याणकारी' नहीं है।

" तुम कल्याणकारी नहीं हो।" बिल्कुल ठीक, निश्चय ही हम प्रतिक्रियावादियों या प्रतिक्रियावादी वर्गों के क्रान्ति-विरोधी कार्यों के प्रति कल्याणकारी नीति को नहीं स्वीकार करते। हमारी कल्याणकारी नीति केवल जनता के लिए है। वह उन कार्रवाइयों अथवा उन व्यक्तियों के लिए नहीं है, जोकि जनता की पाँती से बाहर हैं।

" जनता का राज्य जनता की रक्षा के लिए है। एक बार जब जनता का राज्य हो गया, तो जनता के लिए राष्ट्रव्यापी तौर से व्यापक पैमाने पर अपने को शिक्षित करने और सुधारने के लिए जनता के वास्ते उसका इस्तेमाल करना सम्भव है। इस प्रकार वह अपने को देशी और विदेशी प्रतिक्रियावादियों के प्रभाव से मुक्त कर सकती है। (यह प्रभाव आज भी बहुत मजबूत है और भविष्य में एक लम्बे अर्से तक रहेगे, उन प्रभावों को जल्दी खतम नहीं किया जा सकता।) इस प्रकार लोग पुराने समाज में प्राप्त अपनी बुरी आदतों और विचारों को फिर से ढाल सकते हैं प्रतिक्रियावादियों के बहकावे से बचकर समाजवादी और फिर साम्यवादी समाज की ओर बढ़ने और विकास करने को जारी रख सकते हैं।

' इसके बारे में हम जिन तरीकों का इस्तेमाल करते हैं वह जनतांत्रिक है अर्थात् जबर्दस्ती नहीं बल्कि समझाने बुझाने के तरीके। यदि कोई कानून तोड़ता है तो उसको दण्ड मिलेगा जेल अथवा मृत्युदण्ड भी दिया जायगा। लेकिन यह वैयक्तिक मामले होंगे, जो वर्ग के तौर पर प्रतिक्रियावादियों के ऊपर लादी अधिनायकता से सिद्धान्ततरूपेण भिन्न होंगे।

' प्रतिक्रियावादी वर्गों और समुदायों से सम्बन्ध रखनेवालों का जहाँ तक सम्बन्ध है हम उन्हें भी भूमि देंगे और उनकी राजनीतिक प्रभुता के उखाड़ जाने के बाद उन्हें जीविका कमाने एवं श्रम द्वारा अपने को नये व्यक्तियों के रूप में फिर से ढालने का अवसर देंगे लेकिन केवल एक शर्त पर कि वह विद्रोह न करें तोड़ फोड़ या अशान्ति न पैदा करें। अगर वह काम करना नहीं चाहते तो जनता का राज्य उन्हें मजबूर करेगा। साथ ही उनके सम्बन्ध में प्रचार और शिक्षा सम्बन्धी काम उसी सावधानी और गम्भीरता के साथ किया जायगा जैसे कि हमने बन्दी बनाये सैनिक अफसरों के साथ किया। इसे भी कल्याणकारी नीति समझा जा सकता है लेकिन इस शत्रु वर्गों से आनेवालों के ऊपर जबर्दस्ती लादा जायगा यह उस तरह का काम नहीं होगा जिसे कि हम आत्मशिक्षण के ढंग पर क्रान्तिकारी जनता के आदमियों के बीच करते हैं।

प्रतिक्रियावादी वर्ग के फिर से ढालने के काम को केवल एक जनता का जनतांत्रिक अधिनायकतावाला राज्य ही कर सकता है। जब यह काम पूरा हो जायगा तो चीन का प्रधान उत्पीड़क वर्ग—जमींदार वर्ग और नौकरशाही पूँजीवादी वर्ग अर्थात् इजारादार पूँजीपति वर्ग—अन्तिम रूप से खतम हो जायगा।

तब केवल राष्ट्रीय बुर्ज्वाजी (पूँजीपति वर्ग) बाकी रह जायगा। आज की अवस्था में उनमें से बहुतों के भीतर तुरन्त काफी उपयुक्त शिक्षा सम्बन्धी काम आरम्भ किया जा सकता है। जब समाजवाद को जीवन में लाने अर्थात् निजी उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का समय आयगा, तो हम उनकी शिक्षा और फिर से ढालने के काम में एक कदम और आगे जायेंगे। जनता के हाथ में एक शक्तिशाली राज्य यन्त्र है और वह राष्ट्रीय बुर्ज्वाजी की ओर से विद्रोह का भय नहीं रख सकती।

किसानों का शिक्षण एक गम्भीर समस्या है। किसानों का आर्थिक जीवन बिखरा हुआ है। सोवियत संघ के तजर्बे के अनुसार इसमें काफी समय लगेगा और पर्याप्त मेहनत करनी पड़ेगी तब कृषि को समाजवादी बनाया जा सकेगा। बिना कृषि के समाजवादीकरण के पूर्ण और दृढ़ताबद्ध समाजवाद नहीं स्थापित हो सकता। यदि हम कृषि को समाजवादी बनाना चाहते हैं तो राज्य द्वारा संचालित उद्योग धन्धों को प्रधानता देते हुए उन्हें एक शक्ति उद्योग धन्धे में हम विकसित करना होगा। जनता की जनतांत्रिक अधिनायकतावाले राज्य को क्रमशः देश के औद्योगीकरण की समस्या को हल करना होगा।

" 1924 ई. में कुओ मिन्ताग की प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस—जिसका नेतृत्व स्वयं सुन् यात सेन् ने किया था और जिसमें कम्युनिस्टों ने भी भाग लिया था—द्वारा स्वीकृत प्रसिद्ध घोषणापत्र में कहा गया था

" वर्तमान काल में भिन्न-भिन्न देशो में जो तथाकथित सार्वजनिक अधिकार-व्यवस्था प्रचलित है, वह अक्सर बूर्ज्वाजी की इजारादारी है, जो साधारण जनता के उत्पीडन का एक हथियार है लेकिन कुओ-मिन्तांग के जनताधिकार का सिद्धान्त सारी साधारण जनता के लिए है, वह कुछ लोगों की निजी सम्पत्ति नहीं है।"

" अगर राज्य को बूर्ज्वाजी की निजी सम्पत्ति नही बल्कि सारी जनता की सार्वजनिक सम्पत्ति होने देना है, और साथ ही मजूर-वर्ग का नेतृत्व भी रखना है, तो यही जनता की जनतान्त्रिक अधिनायकता की राज्य-व्यवस्था है।

" च्यांग काइ-शेक ने सुन यात-सेन् के सिद्धान्तों के साथ विश्वासघात किया। उसने चीन की साधारण जनता के उत्पीडन के लिए नौकरशाही पूँजीपति वर्ग और जमींदार वर्ग की अधिनायकता को हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया। यह क्रान्तिविरोधी अधिनायकता बाईस साला तक कायम रही। केवल आज ही हमारे नेतृत्व में चीन की साधारण जनता इसे उखाड फेंकने में सफल हुई।

" विदेशी क्रान्ति-विरोधी, जोकि हमारे ऊपर 'अधिनायकता और सर्वांगवाद' कायम करने का आरोप लगाते है—वही लोग है, जोकि स्वय अधिनायकता और सर्वांग कुशलता का व्यवहार कर रहे है। वह एक वर्ग की अधिनायकी-व्यवस्था, एक वर्ग की सर्वांगकुशलता, बूर्ज्वाजी की सर्वांगकुशलता को सर्वहारा वर्ग और जनता के दूसरे अशों के दबाने के काम में ला रहे है।

" यह वही लोग है, जिनका उल्लेख सुन यात सेन् ने आजकल के प्रत्येक देश में साधारण जनता के उत्पीडक बूर्ज्वाजी के तौर पर किया है। ऐसे ही प्रतिक्रियावादी गुट से च्याग काइ शेक ने सीखा कि अपनी क्रान्ति-विरोधी अधिनायकता को कैसे लागू किया जाय।

" सुग वंश (960-1279 ई.) के दार्शनिक चू शि ने बहुत-सी पुस्तके लिखी और बहुत सी बाते लिख छोडी है, उसे लोग भूल गये है। लेकिन उसकी एक कहावत अब भी याद है 'उसके साथ वैसा करो, जैसा कि वह दूसरा के साथ करता है।' ठीक यही बात हम कह रहे है। हम साम्राज्यवादियों और उनके गीदडों च्याग काइ शेक के प्रतिक्रियावादी गुट के साथ वही करते है, जैसाकि वह दूसरों के साथ करते है। बस यही।

" क्रान्तिकारी अधिनायकता और क्रान्ति विरोधी अधिनायकता अपने स्वभाव में एक दूसरे से बिल्कुल उलटी है, तो भी क्रान्तिकारी अधिनायकता ने क्रान्ति विरोधी अधिनायकता से सीख ली है। इस तरह की सीख लेना बहुत महत्त्व रखता है। यदि क्रान्तिकारी जनता क्रान्ति विरोधियों के ऊपर शासन करने के ढंगो में कुशल न हो, तो वह अपने राजनीतिक प्रभुत्व को कायम नही रख सकती, और उसे देशी और विदेशी क्रान्ति-विरोधी उखाड फेंकेगे। क्रान्ति विरोधी अपने शासन को चीन पर फिर से स्थापित कर देंगे, जिससे क्रान्तिकारी लोगों का सर्वनाश होगा।

" जनता की जनतान्त्रिक अधिनायकता का आधार है मजूर वर्ग, किसान वर्ग और नगर का निम्न मध्य-वर्ग (पेती बूर्ज्वाजी)। मुख्य तौर से वह मजूरों और किसानो के बीच की एकता है क्योंकि यह दोनों वर्ग मिलकर चीन की आबादी में 80 से 90 सैकडे तक हैं। साम्राज्यवाद और कुओ मिन्ताग के प्रतिक्रियावादी गुट को उखाड फेंकने के लिए मुख्य शक्ति यही दो वर्ग है। इन्ही दोनो वर्गो की एकता पर नवीन जनतन्त्रता से समाजवाद के रूप में परिवर्तित होना भी मुख्यत: निर्भर करता है।

" जनता की जनतान्त्रिक अधिनायकता को मजूर वर्ग के नेतृत्व की आवश्यकता है। वह इसीलिए कि मजूर-वर्ग अत्यन्त दूरदर्शी वर्ग है, क्रान्ति में वह अत्यन्त निःस्वार्थ, न्यायप्रवण, गम्भीर तथा स्थिर है। क्रान्ति का सारा इतिहास इसे सिद्ध करता है कि बिना मजूर वर्ग के नेतृत्व के क्रान्ति असफल होगी और उसके साथ होने पर क्रान्ति अन्त मे विजयी होगी। साम्राज्यवाद के युग मे किसी देश में कोई दूसरा वर्ग सच्ची क्रान्ति को विजय की ओर नही ले जा सकता। इसकी सत्यता का प्रमाण यह भी है कि चीन के निम्न-मध्यम-वर्ग और राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग ने कितने ही अवसरों पर क्रान्ति का नेतृत्व किया, लेकिन सभी का अवसान असफलता के साथ हुआ।

" वर्तमान अवस्था में राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग (बूर्ज्वाजी) का भारी महत्त्व है। अभी भी हम एक भयकर

शत्रु साम्राज्यवाद को अपनी बगल में खड़े देख रहे हैं। चीन के लिए बहुत समय लगेगा, जबकि उसे सच्ची आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी। यह तभी होगा, जबकि उसका उद्योग-धन्धा विकसित हो जायगा और आर्थिक तौर पर उसका दूसरे देशों पर भी निर्भर रहना खतम हो जायगा, तभी चीन पूर्ण और सच्ची स्वतन्त्रता अनुभव करेगा।... हमारी वर्तमान नीति है पूंजीवाद को खतम न करना, बल्कि उस पर नियत्रण करना। राष्ट्रीय पूँजीपति-वर्ग क्रान्ति का नेतृत्व नही कर सकता, उसे राज्य-प्रबन्ध मे प्रधान स्थान नही प्राप्त होना चाहिए। यह इसलिए कि राष्ट्रीय पूँजीपति-वर्ग की सामाजिक और आर्थिक स्थिति उसके स्वभाव मे निर्बलता पैदा करती है। उसके पास दूरदृष्टि और पर्याप्त साहस नही है। खास करके इस वर्ग के काफी व्यक्ति जनता से डरते है।

" सुन् यात्-सेन 'जनता-जागरण' अथवा 'कमकर-किसानों' को सहायता करने की बात मानते थे। लेकिन कौन उन्हे 'जाग्रत' करेगा, या कौन उनकी सहायता करेगा ? सुन् यात-सेन् की राय मे यह निम्न मध्यवर्ग और राष्ट्रीय पूँजीपति-वर्ग था। लेकिन वस्तुतः यह होनेवाली बात नही थी। सुन यात-सेन के 30 वर्ष के क्रान्तिकारी काम के असफल होने का क्या कारण था ? साम्राज्यवाद के युग मे निम्न-मध्यम वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति-वर्ग किसी सच्ची क्रान्ति को विजय की ओर ले जाने मे असमर्थ है, यही कारण था।

" हमारे 28 साल उससे बिलकुल भिन्न रहे है। हमारे पास बहुत-से मूल्यवान अनुभव है, जिनका सार निम्न तीन तथ्यों मे है : (1) प्रथम तथ्य है अनुशासनयुक्त पार्टी, जोकि मार्क्स, एगल्स, लेनिन और स्तालिन के सिद्धान्त द्वारा हथियारबन्द है, जो आत्मालोचना के तरीके को इस्तेमाल मे लाती तथा जनता के साथ घनिष्ठतया सम्बद्ध है, (2) ऐसी पार्टी के द्वारा सचालित एक सेना है, और (3) ऐसी पार्टी के नेतृत्व मे सभी क्रान्तिकारी पार्टियों और समुदायों का सयुक्त मोर्चा है। यह तथ्य हमारे पूर्वजो से हमे भिन्न बतलाते है। इन्ही तीन बातो के आलम्बन ने हमे मौलिक विजय प्राप्त कराया।

" कोई राजनीतिक पार्टी या व्यक्ति भूलों से बच नही सकता। लेकिन, हम इसकी माँग करते है कि भूलें कम से कम हो। जब कोई भूल हो गई, तो हम उसे ठीक करने की माँग करते है और वह जितना ही जल्दी तथा पूरी तौर से किया जाय उतना ही अच्छा।

" अपने अनुभवों को सक्षेप मे कहते और उन्हे गागर मे सागर के तौर पर रखते कहना होगा : जनता की जनतांत्रिक अधिनायकता का नेतृत्व कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा कमकर-वर्ग करता है, और वह कमकरो और किसानो की मैत्री पर आधारित है। इस अधिनायकता को सभी अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी शक्तियों के साथ एकताबद्ध करना होगा।

" सोवियत समाजवादी गणसघ की कम्युनिस्ट पार्टी हमारी सबसे अच्छी शिक्षक है, हमें उससे सीखना होगा। देश और विदेश की स्थिति हमारे अनुकूल है। हमे पूरी तौर से जनता की जनतांत्रिक अधिनायकता के हथियार पर भरोसा करते प्रतिक्रियावादियों को छोड़ मार देश की सभी जनता को एकताबद्ध करके दृढ़तापूर्वक अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना है। "

2. राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन

युद्ध के मैदान मे चीन के प्रतिक्रियावादी शासको को खदेड़ते हुए जिस तरह स्थान स्थान पर अस्थायी तौर से शासन तथा दूसरे प्रबन्धो को चलाने का काम माओ चे-तुग बड़ी योग्यतापूर्वक कर रहे थे, इसी तरह उनका ध्यान सारे देश के लिए एक सुव्यवस्थित सरकार के तैयार करने की ओर गया। इसी के लिए राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाया गया।

(1) सम्मेलन के प्रतिनिधि–प्रथम राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन मे 662 प्रतिनिधियों की निम्नलिखित संख्या बतलाती है कि देश मे उनका कितना महत्त्व है :

	नाम	प्रतिनिधि	विकल्प
1.	कम्युनिस्ट पार्टी	16	2
2.	कुओ-मिन्ताग क्रान्तिकारी कमेटी	16	2

3.	चीन जनतात्रिक लीग	16	2
4.	जनतांत्रिक राष्ट्रीय निर्माण एसोसियेशन	12	2
5.	अ-पार्टी जनतंत्रतावादी	10	2
6.	चीन जनतंत्रतावादी संवर्द्धन एसोसियेशन	8	1
7.	चीन किसान-कमकर जनतात्रिक पार्टी	10	2
8.	चीन जनता राष्ट्रीय मुक्ति एसोसियेशन	10	2
9.	चीन जनता-सिद्धान्त साथी एसोसियेशन	10	2
10.	चीन जनतत्रता संर्वद्धन कुओ-मिन्ताग एमोसियेशन	8	1
11.	चीन चीह कुंग ताग	6	1
12.	च्यू सान सभा	5	1
13.	ताइवान जनतात्रिक स्वायत्त सरकार लीग	5	1
14.	चीन नव-जनतात्रिक तरुण लीग	10	2
	पश्चिमोत्तर मुक्त क्षेत्र	15	2
	उत्तर चीन मुक्त क्षेत्र	15	2
	पूर्व चीन मुक्त क्षेत्र	15	2
	केन्द्रीय चीन मुक्त क्षेत्र	15	2
	दक्षिण चीन मुक्त क्षेत्र	8	1
	भीतरी मगोलीय स्वायत्त भू-क्षेत्र	6	1
	पेकिंग और तियान्-चिन् नगरपालिकाएँ	6	1
	अ-मुक्त क्षेत्रों के जनतात्रिक तत्त्व	7	1
	चीनी जन-मुक्ति-सेना हेडक्वार्टर	12	2
	जन-मुक्ति-सेना की प्रथम मैदानवाहिनी	10	2
	जन-मुक्ति-सेना की द्वितीय मैदानवाहिनी	10	2
	जन मुक्ति सेना की तृतीय मैदानवाहिनी	10	2
	जन-मुक्ति-सेना की चतुर्थ मैदानवाहिनी	10	2
	दक्षिण चीन जन-मुक्ति-सेना	8	1
	अखिल चीन मजूर-सघ	16	2
	मुक्त क्षेत्रों के किसान संगठन	16	2
	अखिल चीन जनतात्रिक महिला सघ	15	2
	अखिल चीन जनतात्रिक तरुण-सघ	12	2
	अखिल चीन जनतांत्रिक छात्र-सघ	9	1
	सारे चीन के औद्योगिक और व्यापारिक हलके	15	2
	शाघाइ जनता के सगठन	9	1
	अखिल चीन साहित्य-कला हलको के सघ	15	2
	प्रथम अखिल चीन प्राकृतिक विज्ञान कमकर सम्मेलन की तैयारी कमेटी	15	2
	अखिल चीन शिक्षा कमकर सम्मेलन की तैयारी कमेटी	15	2
	अखिल चीन सामाजिक विज्ञान कमकर सम्मेलन की तैयारी कमेटी	12	2

अखिल चीन पत्रकार एसोसियशन की तैयारी कमेटी	12	2
जनतान्त्रिक पेशेवर लीग	10	2
चीन के भीतर अल्पसंख्यक जातियां	10	2
विदेश के जनतान्त्रिक चीनी	15	2
जनतान्त्रिक धार्मिक हलके	7	1
विशेषतया निमंत्रित	75	
सर्वयोग	662	

(2) माओ का उद्घाटन-भाषण–सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में माओ चे तुंग ने कहा

" जाईगार प्रतिनिधियो

राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का–जिसकी ओर सारे देश के लोग टकटकी लगाये हुए थे–अब उद्घाटन हो रहा है।

' हमारे सम्मेलन में चीन की सभी राजनीतिक पार्टियां और समुदायों, सार्वजनिक संगठनों, जन मुक्ति सेना, भिन्न भिन्न भू क्षेत्रों, सभी जातियों और समुद्र पार के चीनियों के प्रतिनिधि हैं। यह बतलाता है कि हमारा सम्मेलन एक महान राष्ट्रव्यापी सार्वजनिक एकता का प्रतिनिधित्व करता है।

' इस प्रकार की सभी महान राष्ट्रव्यापी सार्वजनिक एकता इसीलिए प्राप्त हो सकी कि हमने कुओ मिन्तांगी प्रतिक्रियावादी सरकार को हरा दिया, जिसकी पीठ पर अमरीकन साम्राज्यवाद था। इस समय जन मुक्ति सेना की कई लाख वाहिनियां युद्ध को ताइवान, क्वांग तुंग, क्वांग सी, जचुआन और सिंग कियांग में पड़ोस में ले गई हैं और चीनी जनता का भारी भाग स्वतन्त्र हो चुका है। इस तीन वर्ष से कुछ अधिक समय में सारे देश की जनता ने अपने को एकताबद्ध किया, जन मुक्ति सेना को सहायता दी, अपने शत्रु का मुकाबला किया और मौलिक विजय प्राप्त की। इसी आधार के ऊपर जनता का राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाया गया है।

हमारे सम्मेलन का नाम राजनीतिक सलाहकार इसलिए रक्खा गया है कि तीन साल पहले च्यांग काइ शेक की कुओ मिन्तांग के साथ मिलकर हमने राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन किया था।

उस सम्मेलन के निर्णयों को च्यांग काइ शेक की कुओ मिन्तांग और उसके गुटवालों ने विफल कर दिया, लेकिन उसने जनता के ऊपर एक अमिट छाप छोड़ी।

चीनी जनता का वर्तमान राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन एक बिलकुल दूसरे नये आधार पर बुलाया गया है। यह सारे देश की जनता का प्रतिनिधित्व करता है। इसे उसका विश्वास और समर्थन प्राप्त है। इसलिए चीनी जनता का राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन घोषित करता है कि यह अखिल चीन जनता कांग्रेस के सभी अधिकारों और कर्तव्यों को स्वयरूप में परिणत करेगा।

माओ ने इस उद्घाटन भाषण में आगे कहा

चीनी जनता, जो सारे विश्व की एक चौथाई है–आज उठ खड़ी हुई है। चीन सदा से महान्, वीर और मेहनती राष्ट्र रहा है। अभी हाल ही की बात है, जबकि हमारा राष्ट्र पिछड़ गया। इस पिछड़ने का कारण मुख्यतः विदेशी साम्राज्यवाद और घर में प्रतिगामी सरकार का अत्याचार और शोषण है। एक शताब्दी से ऊपर तक हमारे पूर्वज–जिनमें हमारी चीन की आज की क्रान्ति के अग्रदूत तथा 1911 की क्रान्ति के नेता डा सुन् यात सेन भी सम्मिलित हैं–हमारे विदेशी और स्वदेशी उत्पीड़कों के साथ लगातार संघर्ष करते रहे। हमारे पूर्वजों ने हमें शिक्षा दी और हमसे आशा रखी कि हम उनकी वसीयत को पूरा करेंगे। उसे हम आज पूरा कर रहे हैं। जनता के मुक्ति युद्ध और जनता की महाक्रान्ति द्वारा हमने देशी विदेशी दोनों उत्पीड़कों को पछाड़ दिया है। हम चीनी जन गणराज्य स्थापना की घोषणा करते हैं। हमारा क्रान्तिकारी कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है। हमारी राज-व्यवस्था जनता की जनतान्त्रिक अधिनायकता है, जो जन-क्रान्ति की विजय के फलों की रक्षा और स्वदेशी तथा शत्रुओं के फिर से लौट आने के षड्यन्त्र के विरुद्ध भारी शक्तिशाली हथियार है। जनता

की जनतान्त्रिक अधिनायकता और अपने अन्तर्राष्ट्रीय मित्रो के साथ हमारी एकता हमारे निर्माण-कार्य मे जल्दी सफलता प्राप्त करने मे सहायक होगी। आज हमारे सामने सारे राष्ट्र मे आर्थिक निर्माण का कार्य उपस्थित है। इसके लिए हमारे पास अत्यन्त उपयुक्त साधन–47½ करोड जनता और 95,97,000 वर्ग-किलोमीटर राष्ट्र-क्षेत्र–है। हमारे सामने कठिनाइयॉ है और बहुत तरह की कठिनाइयॉ है, लेकिन हमारा दृढ विश्वास है कि सारे देश की जनता के वीरतापूर्ण प्रयत्न से सारी कठिनाइयॉ दूर हो जायगी।' घर और बाहर के प्रतिगामियो को हमारे सामने कॉपने दो। उन्हे लाछन लगाने दो कि हम इस या उस बात मे किसी काम के नही हैं।"

चीनी सविधान-सभा (चीनी जनता का राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन) ने 30 सितम्बर को घोषित किया–" सारे देश के देशभाइयो, चीनी जनता के सलाहकार सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन ने अपने कार्य को सफलतापूर्वक पूरा कर दिया। यह सम्मेलन सभी राजनीतिक पार्टियो और समुदायो, जन सगठनो, जन-मुक्ति-सभा, भिन्न-भिन्न क्षेत्रो, भिन्न-भिन्न जातियो, प्रवासी चीनियों एव सारे देश के देशभक्त जनतात्रिक तत्त्वों के प्रतिनिधियो से मिलकर बनाया गया था। यह सम्मेलन सारे देश की जनता की इच्छाशक्ति का प्रतिनिधित्व एव अभूतपूर्व महान् एकता को प्रदर्शित करता है। अमरीकन साम्राज्यवाद की सहायता-प्राप्त च्याग काइ-शेक की प्रतिगामी कुओ-मिन्ताग सरकार को हराकर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे चीनी जनता और जन मुक्ति-सेना के चिरव्यापी वीरतापूर्ण सघर्ष द्वारा यह महान् एकता प्राप्त हुई है। चीनी जनता ने अपने शत्रुओ को परास्त किया, चीन के रूप को बदल दिया और चीनी जन गणराज्य की स्थापना की। हम 47½ करोड चीनी जनता आज अपने पैरो पर खडे है और हमारे राष्ट्र का भविष्य असीम उज्ज्वल है। जननायक अध्यक्ष माओ चे-तुग के नेतृत्व मे हमारे सम्मेलन ने एक इच्छाशक्ति के साथ नवीन जनतन्त्रता के सिद्धान्तो के अनुसार अपना सविधान तैयार किया।

" सारे देश के देशभाइयो, चीनी जन गणराज्य की स्थापना उद्घोषित कर दी गई। अब चीनी जनता के पास अपनी केन्द्रीय सरकार है। यह सरकार चीन की सीमा के भीतर सामान्य प्रोग्राम (सविधान) के अनुसार जनता की जनतात्रिक अधिनायकता को कार्यरूप मे परिणत करेगी।

" सारे देश के देशभाइयो, हमे अपने को सगठित करना है। चीन की सर्वाधिक जनता का राजनीतिक, सैनिक, आर्थिक, सास्कृतिक तथा दूसरे सगठनो मे सगठित करके चीन की ढीलम ढाल तथा अस्त व्यस्त अवस्था को दूर करना है और एक स्वतन्त्र, जनतात्रिक, शान्तिपूर्ण, एकताबद्ध, समृद्ध और सबल नवीन चीन के निर्माण के लिए जनसाधारण की महती सामूहिक शक्ति के साथ जन सरकार और मुक्ति सेना की सहायता करनी है। अनन्त जय उन जन वीरो के लिए, जो जन मुक्ति युद्ध और जन क्रान्ति पर निछावर हुए।

" चिरजीव चीनी जनता की महान् एकता।

' चिरजीव चीनी जनगणराज्य।

" चिरजीव केन्द्रीय जन-सरकार। "

चीनी जनगणराज्य की केन्द्रीय जन सरकार के अध्यक्ष माओ चे तुग ने प्रथम अक्तूबर, 1949 को केन्द्रीय सरकार की स्थापना की घोषणा करते हुए पेकिंग मे कहा था–"साम्राज्यवादियो से मिलकर पितृभूमि के साथ विश्वासघात करते जब से च्याग काइ शेक की प्रतिगामी कुओ मिन्ताग सरकार ने क्रान्ति-विरोधी युद्ध छेडा, तब से चीन की जनता भीषण कष्ट और सकट मे पड गई किन्तु सारे देश की सहायता प्राप्त करके हमारी जन-मुक्ति सेना ने बडी बहादुरी और आत्म-त्याग के साथ लडते हुए पितृभूमि के प्रादेशिक सर्वप्रभुत्व की रक्षा, जनता के प्राणो और सम्पत्ति की सुरक्षा, जनता के कष्ट को दूर करने और उसके अधिकारो के लिए सघर्ष किया, प्रतिगामी सेनाओ को खतम कर दिया और राष्ट्रीय सरकार के प्रतिगामी शासन को उलट दिया।

" सारे देश की जनता की इच्छाशक्ति का प्रतिनिधित्व करते हुए चीनी जनता के राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के इस अधिवेशन ने चीनी जन-गणराज्य की केन्द्रीय जन-सरकार के मुख्य विधान का निर्माण किया, माओ चे-तुग को केन्द्रीय जन-सरकार का अध्यक्ष निर्वाचित किया तथा चीनी जन-गणराज्य की स्थापना को घोषित करते हुए निश्चय किया कि पेकिंग चीनी जन-गणराज्य की राजधानी होगी।

"चीनी जन-गणराज्य की केन्द्रीय जन-शासन-परिषद् ने इस राजधानी में कार्य-भार स्वीकार किया और यह भी कि परिषद् के सदस्यों में से लिन्-पां चु को केन्द्रीय जन-शासन-परिषद् महासचिव, चाउ एन्-लाइ को महामन्त्री तथा विदेशमन्त्री, चू-तेह को जन-मुक्ति-सेना का प्रधान सेनापति, शेन्-चुन्-जू को उच्चतम जन-न्यायालय का मुख्य न्यायाधिपति और लो-जुंग ह्लान को महान्यायाधिपति नियुक्त करते हुए इस काम का अधिकार दिया कि सरकार के कार्य का परिचालन करने के लिए भिन्न-भिन्न सरकारी अंगों का निर्माण करें।

" साथ ही केन्द्रीय जन-शासन-परिषद् ने निश्चय किया कि दूसरे सभी देशों को घोषित कर दिया जाय, *कि यही चीनी जन-गणराज्य की सारी जनता का प्रतिनिधित्व करनेवाली एकमात्र वैध सरकार है। यह सरकार ऐसी किसी भी विदेशी सरकार के साथ दौत्य सम्बन्ध स्थापित करने के लिए तैयार है, जो समानता, पारस्परिक लाभ, प्रादेशिक अविभक्तता तथा सर्वप्रभुत्व का ख्याल रखने के लिए तैयार है।* "

(3) महान् एकता और महाशक्ति—नवीन चीन का जन्म हो गया, और उसने अपने सभी बालग्रहों को पछाड़कर अपने अस्तित्व की घोषणा कर दी, लेकिन उसके बाहरी शत्रु अभी हार मानने के लिए तैयार नहीं हैं। अब भी वे चीन की महान् एकता और भीषण संघर्षों मे पैदा हुई महाशक्ति को छिन्न-भिन्न करने की आशा रखते हैं। यह निश्चित है, कि उनकी यह सारी आशा दुराशा-मात्र रहेगी। च्यांग से निराशा होने पर चीनी मुस्लिम तानाशाह मा पू-फांग पर उन्होंने आशा केन्द्रित की—डूबते को तिनके का सहारा। मा पू-फांग जन-मुक्ति-सेना के एक ही थपेड़े में मैदान छोड़कर अपने स्वामियों के पास कान्तन् पहुँचा और वहाँ से भी निराश हो बेचारे ने मक्का-शरीफ की शरण ली। उसने अपने अनुयायियों की तो क्या, अपने बेटे तक की भी खबर नहीं ली, जो आज मा पू-फांग की भगोड़ी सैनिक टुकड़ी के लिए पूर्व, पश्चिम और उत्तर में कोई रास्ता न देख दक्षिण की ओर भागने को सोच रहा था। तिब्बती शासक सारे विश्व के पास 'त्राहि माम् त्राहि माम्' की गुहार करते रहे। दुनिया के सारे प्रतिगामियों के स्वतः निर्वाचित अभिभावक इंग्लैंड और अमरीका गुहार को सुनकर अनसुनी नहीं करना चाहते थे और यह जानते हुए भी कि माओ चे-तुग की सरकार तिब्बत के तानाशाहों की सारी चिल्ल पों तथा उनके विदेशी अभिभावकों की वाचिक सहायता के होते भी तिब्बत को चीन से अलग नहीं होने देगी, वह विशाल चीनी जनता की भाँति तिब्वती जनता को भी खूनी संघर्ष में डालने के लिए कटिबद्ध थे। इंग्लैंड का वैदेशिक विभाग 1914 की अपनी सन्धि की दुहाई देकर तिब्बत की सर्वतन्त्र स्वतन्त्रता घोषित करना चाहता था। अमेरिका अपने भेदियों को भेजकर तिब्बत की पीठ ठोंक रहा था। हमें आशा थी कि भारत अमेरिका के बहुत नजदीक जाने की कोशिश करते हुए भी इस दुश्चेष्टा में सम्मिलित नहीं होगा, और ऐसा ही हुआ।

हमारे प्रधानमन्त्री ने नवीन चीन के प्रति रुख लिया, आशा है, वह स्थायी होगा। हमारी सरकार यह भी समझेगी कि तिब्बत के अलग अस्तित्व को स्वीकार करके हम नवीन चीन से अच्छा सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकते। तिब्बत की दक्षिणी और पश्चिमी सीमा के रूप में सदिया से लद्दाख तक हमारी सीमा चीन जनगणराज्य के साथ मिलती है। यदि हमारा सम्बन्ध चीन के साथ अच्छा नहीं हुआ, तो इस सारी सीमा पर पूरी सैनिक तैयारी रखने के लिए हमें अपने बजट का बहुत भारी भाग लगाना होगा। नेपाल-कुमाऊँ के सीमान्त से लद्दाख सिंग-क्यांग (चीनी तुर्किस्तान) के सीमान्त तक का हमारा और तिब्बत का सीमान्त किसी भी सरकारी नक्शे में चिह्नित नहीं है। तिब्बत के साथ ब्रिटिश सरकार का कोई सीमा-सम्बन्धी झगड़ा नही था। इस सीमान्त को जान-बूझकर अचिह्नित रखा गया, क्योंकि अंग्रेज पश्चिमी तिब्बत (मानसरोवर-प्रान्त) पर आँख गड़ाये हुए थे। वहाँ सतलज और सिन्धु के किनारों पर सोने की धुलाई देखकर उनके मुँह में पानी आ रहा था। यदि चीन के साथ हमारा सौहार्द स्थापित नही हुआ, तो ये अचिह्नित सीमाएँ भारी झगड़े का कारण बन जायँगी। अचिह्नित होने पर भी स्थानीय लोग जानते हैं कि अल्मोड़ा, गढ़वाल, टिहरी, सतलज-उपत्यका और लद्दाख में कहाँ तक हमारी भूमि है। साथ ही हमारी सीमा के भीतर बीसियो मीलों तक भारतीय नागरिक तिब्बती भाषाभाषी हैं, जिनको लेकर विवाद बढ़ सकता है।

(4) नई संस्कृति का उदय—'कम्युनिस्ट' कहने से कितने ही भोले-भाले लोगों को समझाया जाता है कि

उनका संस्कृति से कोई सम्बन्ध नहीं है, लेकिन यह बिल्कुल झूठा प्रोपैगैण्डा है। चीनी कम्युनिस्ट अपनी संस्कृति के शत्रु नहीं हैं और चीनी संस्कृति के साथ भारतीय सस्कृति का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। भारतीय देन को चीन कभी भुला नही सकता। हमारे दर्शन, कला और विज्ञान की जो रक्षा चीन ने की है, उसे हम नहीं भुला सकते। इसलिए भी यह आवश्यक है कि एशिया के इन दोनो देशो का सम्बन्ध भाइयों जैसा हो। नवीन चीन साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही पूँजीवाद का कट्टर शत्रु है, यह वह डके की चोट से घोषित करता है। वह इग्लैण्ड और अमेरिका के साम्राज्यवादियों से उनके मुँह पर सीधे थप्पड मारते हुए उनकी पिछली करतूतो को खुले शब्दो मे दोहराता है। विदेशी साम्राज्यवादियो को चेतावनी देते हुए प्रधान सेनापति चू-तेह ने कहा है—"सारे देश की जनता ने हमें सहयोग दिया, जिसके फलस्वरूप हमने जापानी साम्राज्यवादी आक्रमणकारियो को हराया, अमेरिकन साम्राज्यवाद की सहायता प्राप्त कुओ मिन्ताग सरकार के प्रतिगामी हमले को व्यर्थ किया और अब हम चीन को एकताबद्ध तथा मुक्त करने के महान् कार्य को पूरा करने के लिए बचे-खुचे शत्रुओ का सहार कर रहे हैं। हमारे सयुक्त प्रोग्राम की माँग है कि क्रान्तिकारी युद्ध को समाप्ति तक पहुँचाएँ और चीन के सारे भू भाग को मुक्त करे, जिसमे फारमूसा (ताइवान), खै-नान और तिब्बत भी सम्मिलित हैं।" यह कहते हुए सेनापति चू-तेह ने राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन को सम्बोधन करके कहा था—"आज मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हम इस कार्य को करके रहेगे।"

(5) सामान्य प्रोग्राम—चीन को सबल और समृद्ध सिर्फ बातो से ही नहीं बनाया जा सकता, इस बात को चीनी जननायक भलीभाँति समझते है। इसलिए अपने सविधान (सामान्य प्रोग्राम) की 60 धाराओं में से 15 उन्होने अपने अर्थनीतिक प्रोग्राम की रखी है, जिनमे से कुछ है

"26 चीनी जन गणराज्य के आर्थिक निर्माण का आधारभूत सिद्धान्त है वैयक्तिक और सार्वजनिक लाभ, श्रम और पूँजी दोनो के हित, नगर और देहात के बीच पारस्परिक सहयोग और देश तथा विदेश के भीतर माल के यातायात का खयाल रखते हुए उत्पादन का बढाना और आर्थिक समृद्धि लाना। सरकारी और सहयोगी उद्योगो, किसानो और दस्तकारो के वैयक्तिक व्यवसायो, निजी पूँजीवादी उद्योगो और राजकीय पूँजीवादी उद्योगो के सचालन, कच्चे माल की प्राप्ति, बाजार और मजूरो की स्थितियो, यान्त्रिक साधनो, राष्ट्रीय वित्त-सम्बन्धी नीति आदि को राज्य इस प्रकार एकताबद्ध करेगा कि सामाजिक अर्थनीति के सभी निर्माणक अग, सारी राष्ट्रीय अर्थनीति की अभिवृद्धि के लिए राज्य स्वामिक अर्थनीति के अधीन रहते, सहयोगिता, कार्य-विभाजन करते हुए अच्छी तरह अपना पार्ट अदा कर सके।"

"27. देश की उत्पादक शक्ति को बढाने और औद्योगीकरण के लिए किसानी सुधार सबसे आवश्यक शर्त है। उन सभी क्षेत्रो के किसानो के भूमि-स्वामित्व के अधिकार की रक्षा की जायगी, जहा किसानी सुधार हो चुके है। जहाँ अभी तक किसानी सुधार कार्यरूप में परिणत नही हुए है, वहाँ स्थानीय डाकुओ और स्वेच्छाचारी जमीदारो को हटाने, लगान तथा सूद के कम करने और खेतो के फिर से विभाजन द्वारा 'खेत किसानो को' के लक्ष्य को कार्यरूप मे परिणत करने के लिए किसान जनसाधारण को किसान सगठनो के रूप में सगठित होने के लिए प्रेरित किया जायगा।"

"28. राज्य-स्वामिक उद्योगो का स्वरूप समाजवादी है। देश के आर्थिक जीवन तथा जनता की जीविका के लिए जो उद्योग अनिवार्य है, वे राज्य के एकताबद्ध कार्य-सचालन के अन्तर्गत होगे। राज्य-स्वामिक सभी सम्पत्ति-स्रोत तथा उद्योग धन्धे सारी जनता की सम्मिलित सम्पत्ति है।"

"29 सहयोगी (को-आपरेटिव) उद्योगो का रूप अर्द्ध-समाजवादी है और वह सारी जनता के आर्थिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अग है। जनता की सरकार इसके विकास मे दत्तचित्त रहेगी और उसके साथ विशेष रियायत करेगी।"

"30. राष्ट्र के कल्याण और जनता की जीविका के लिए सरकार हितकारी सभी वैयक्तिक उद्योगो के क्रियात्मक सचालन को प्रोत्साहित करेगी और उनको बढाने मे सहायता देगी।"

"32. उत्पादन के प्रबन्ध मे मजूरो के भाग लेने की व्यवस्था को राज्य-स्वामिक उद्योगो मे कार्य-रूप मे

[illegible] किया जायगा और फैक्टरी-सचालन के नेतृत्व मे फैक्टरी-प्रबन्ध समितियाँ स्थापित की जायँगी। वैयक्तिक कारखानों में श्रम और पूँजी दोनों के हितकारी सिद्धान्त को कार्य-रूप मे परिणत करने के लिए मजूरों और कर्मियों की मजूर-सभाओ तथा उद्योगपतियो द्वारा सामूहिक समझौता हस्ताक्षरित किया जायगा। आजकल सरकारी तथा वैयक्तिक कारखानो मे आम तौर से 8 से 10 घटा काम करने का दिन रहेगा, किन्तु विशेष परिस्थितियो मे इसमें परिवर्तन किया जा सकेगा। जन-सरकार भिन्न-भिन्न स्थानो और व्यवसायो की स्थितियों के अनुसार अल्पतम मजूरी निश्चित करेगी।"

"33. जल्दी-से-जल्दी केन्द्रीय सरकार सारे देश की सार्वजनिक और वैयक्तिक अर्थनीतिक मुख्य-मुख्य शाखाओं के पुनर्वास और विकास के लिए एक सामान्य योजना बनायेगी। केन्द्रीय जन-सरकार के नेतृत्व में केन्द्रीय तथा स्थानीय सरकारो के भिन्न-भिन्न आर्थिक विभाग अपनी सृजनात्मक शक्तियो तथा वैयक्तिक प्रेरणाओ को पूरी तौर से काम मे लाने की सुविधा पाएँगे।"

"35. उद्योग–देश के औद्योगीकरण की नीव रखने के लिए खान, लौह-फौलाद, बिजली-शक्ति, मशीन-निर्माण, बिजली-सामग्री-निर्माण तथा मुख्य रासायनिक उद्योगो जैसे भारी उद्योगो को नियमपूर्वक पुनर्वास और विकास करने की केन्द्रीय योजना बनाई जायगी। साथ ही राष्ट्रीय कल्याण तथा जनता की जीविका के लिए हितकारी कपडा-उद्योग और दूसरे हलके उद्योगो को फिर से पूर्ववत् स्थापित कर दिया जायगा और उनके उत्पादन मे ऐसी वृद्धि की जायगी, जिसमे वे जनता के दैनिक उपभोग की आवश्यकता को पूरा कर सके।"

" 37. व्यापार–सभी तरह के वैध सरकारी और वैयक्तिक व्यापार की रक्षा की जाएगी।"

सामान्य प्रोग्राम की इन आर्थिक धाराओ को देखने से मालूम होगा कि नवीन चीन सिर्फ सैनिक और राजनीतिक क्षेत्र मे विजय प्राप्त करके ही सन्तुष्ट नही है। वह आर्थिक क्षेत्रों मे भी बडी दृढता के साथ आगे बढने के लिए तैयार है। भारत अभी वर्षो तक अपने औद्योगीकरण के लिए दूसरे का मुँह देखता रहेगा तब तक चीन अपने को मजबूत कर लेगा। बीस वर्ष से आगे ही बढती चली आती नफाखोरी और चोरबाजारी को नवीन चीन ने अपने देश मे छूमन्तर की तरह भगा दिया। आज वहाँ के सभी नर नारी नवनिर्माण के लिए कटिबद्ध हैं। इन नवनिर्माताओ मे चीन के किसान, मजूर और विद्यार्थी ही नही शामिल है, बल्कि निम्न-मध्य वर्ग, राष्ट्रीय मध्यवर्ग और देशभक्त जनतात्रिक समुदाय भी सम्मिलित हैं, जो मजूरो और किसानो की मैत्री के साथ कमकर वर्ग के नेतृत्व मे आगे बढ रहा है।

पाँच जातियो के प्रतीक पाँच पचको के तारोवाला लाल झण्डा चीन मे फहरा रहा है, जो नवीन चीन की अजेय शक्ति का परिचायक है। चीन के शत्रु इस झण्डे को देखकर माओ चे तुग के शब्दो मे भले ही काँपे, किन्तु भारत इतिहास के आरम्भ से चीन का सुहृद रहा है। आज भी उसे उस परम्परा को निभाना है। इतिहास की यही माँग है और हमारे वर्तमान तथा भविष्य के हित की भी यही माँग है।

3. नई सरकार के कुछ काम

अपनी स्थापना के तुरन्त बाद ही जनता की केन्द्रीय सरकार राष्ट्रीय अर्थनीति को–जिसे साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, नौकरशाही पूँजीवाद, युद्ध और प्राकृतिक प्रहारो ने पूरी तरह से नष्ट कर दिया था–फिर से अपने पैरो पर खडा करके और सुधारने के लिए बडी बडी योजनाओ को चालू कर दिया। कुओ-मिन्ताग की नौकरशाही पूँजी को जब्त करने के बाद जनता की केन्द्रीय सरकार ने समाजवादी स्वरूप के राजकीय अर्थतन्त्र का निर्माण किया, जिसने समूचे देश के अर्थतन्त्र को तेजी के साथ अपने मे ले लिया। राजकीय अर्थतन्त्र का बल पाकर जनता की केन्द्रीय सरकार ने तेजी के साथ और सफल रूप मे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को एकताबद्ध और सन्तुलित बना लिया। बीस सालो से चले आये, मुद्राप्रसार के सकट को खत्म किया और औद्योगिक तथा खेती की पैदावार को, रेल-डाक-तार की यातायात और व्यापार को, फिर से स्थापित करने के लिए क्रमबद्ध भारी योजनाओ को चालू कर दिया। बाजार खोलने और औद्योगीकरण के लिए धन जमा करने के लक्ष्य से जनता की केन्द्रीय सरकार ने अपने आर्थिक कामो मे खेती, हलके उद्योगो और घरेलू व्यापार को विकसित करने पर जोर देने

का फैसला किया और इसी के साथ-साथ राष्ट्र की रक्षा तथा बिजली-सम्बन्धी अनेक अत्यन्त जरूरी उद्योगों को कायम करने का फैसला। चूँकि समूचे देश के अर्थतन्त्र का नियन्त्रण असल मे राजकीय अर्थतन्त्र करता है, और चूँकि वह अत्यधिक केन्द्रित और एकाग्रित है, इसलिए व्यक्तिगत पूँजीवादी उद्योग और व्यापार को भी, धीरे-धीरे राजकीय अर्थतन्त्र की रहनुमाई को मजूर करने के पथ की ओर बढाया जा रहा है। इसी के साथ-साथ राजकीय अर्थतन्त्र के हितों के साधक एक राजकीय पूँजीवादी अर्थतन्त्र भी धीरे-धीरे विकसित हो रहा है। देश की जरूरतो को पूरा करने की दृष्टि से उद्योग और व्यापार का पुनर्गठन और पुनर्व्यवस्था, योजनाबद्ध औद्योगिक निर्माण की तैयारियों का एक बहुत जरूरी हिस्सा है।

जनता की केन्द्रीय सरकार समूची आर्थिक स्थिति को सुधारने और औद्योगिक निर्माण की तैयारी की दृष्टि से समूचे देश मे कृषि-सुधार चालू करने की शर्त को, मुख्य शर्तो मे गिनती रही। जून, 1950 मे जनता की केन्द्रीय सरकार ने चीनी जनता के गणराज्य भूमि-सुधार कानून को मजूर किया और 1950 के जाडो से लेकर 1951 के बसन्त तक नये आजाद हुए इलाको के कुल मिलाकर तेरह करोड देहाती आबादीवाले क्षेत्रों मे, भूमि-सुधार के काम को पूरा करने मे किसानो की अगुवाई की। चूँकि युद्ध मुख्य रूप से खतम हो चुका था, इसलिए धनी किसानो की जमीन की समस्या के बारे मे 1947 मे जारी किये गये कृषि-कानून के उस बुनियादी कार्यक्रम मे सशोधन कर दिया गया, जो चीनी जनता के गणराज्य भूमि-सुधार कानून मे दर्ज है। धनी किसानो के अतिरिक्त भूमि को जब्त करने की नीति की जगह पर इस भूमि-सुधार कानून ने धनी किसानो के अर्थतन्त्र की रक्षा करने की नीति को अपनाया—अर्थात् केवल खास परिस्थितियो मे ही धनी किसानो की जमीन के उस हिस्से को जब्त करना चाहिए, जिसे वह दूसरो को लगान पर देता है, बाकी हिस्से को हाथ नही लगाना चाहिए। यह नई नीति मझोले किसानो मे पैदावार बढाने मे उत्साह पैदा करने के लिए महत्त्वपूर्ण साधन है। अब तक कुल मिलाकर 29 करोड देहाती आबादीवाले क्षेत्रो मे—जिनमे मुक्त इलाके भी शामिल है—भूमि-सुधार का काम पूरा हो चुका है और एक-दो साल के भीतर ही देश के बाकी हिस्सो मे भी यह कार्य पूरा कर लिया जायगा। भूमि-सुधार ने, जनता के प्रतिनिधि सम्मेलनो के रूप मे समूचे देश मे अमली शक्ल दी जानेवाली राज्यसत्ता के निर्माण ने, और जनता के व्यापक समूहो की मदद से प्रतिक्रियावादियो और तोड-फोड की कार्रवाइयों का दमन करने के व्यापक आन्दोलन ने, जनता की (लोकशाही) अधिनायकता की नीव को मजबूत बनाने में भारी योग दिया है, इन नींवो के बिना योजनाबद्ध आर्थिक निर्माण असम्भव होता।

4. पार्टियाँ और संगठन

यह हम बतला चुके है कि चीन की सरकार वहाँ की कई पार्टियो की मिलीजुली सरकार है, जिसका नेतृत्व कम्युनिस्ट पार्टी करती है।

(1) कम्युनिस्ट पार्टी—चीनी कम्युनिस्ट पार्टी दुनिया की बहुत बडी पार्टी है, जिसके मेम्बरों की सख्या 1951 ई मे 58 लाख थी। दो वर्ष पहले पार्टी ने निश्चय किया कि पुराने मुक्त इलाको के देहाती जिलों में नये मेम्बरो की भरती को रोक दिया जाय और औद्योगिक मजूरों की भरती ज्यादा से ज्यादा की जाय। पार्टी के 30वें जन्मोत्सव के समय 1 जुलाई, 1951 को पार्टी के एक बडे नेता ल्यू शाउ ची ने कम्युनिस्ट पार्टी के बारे मे भाषण देते हुए कहा था :

"साथियो! आज चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना का 30वाँ वार्षिक दिन है। तीस साल पहले जब हमारी पार्टी की स्थापना हुई थी, उस समय चीन मे केवल थोडी-सी टोलियाँ थी, जिनके मेम्बरों की बहुत थोड़ी सख्या थी, जो मार्क्सवाद को पढते और प्रचार करते थे, लेकिन आज हमारी पार्टी बडी पार्टी के रूप मे विकसित हुई है, चीन की महान् जनता के गणराज्य का नेतृत्व करती है। इस समय हमारी पार्टी के 58 लाख जोकि मेम्बर हैं, जिनमे से 27 लाख सेना, शासन-विभागों, कारखानों, खानों और स्कूलों मे काम करते हैं, तथा 36 लाख से ऊपर सारे देहात मे फैले हुए हैं। पच्चीस वर्ष से कम उम्र के 6 लाख स्त्री, 12 लाख तरुण सदस्य है। इन मेम्बरो ने पार्टी के आधारिक सगठन के रूप में ढाई लाख पार्टी-शाखाएँ स्थापित

की हैं।"

साथी माओ चे-तुग ने 7वीं पार्टी-कांग्रेस के ममय पार्टी और पार्टी मेम्बरो के सम्बन्ध में जो कहा था, वह अब ठीक है :

"किसी भी दूसरी राजनीतिक पार्टी के मेम्बरों से हम कम्युनिस्ट कुछ विभिन्नता रखते हैं। हम जनता के सबसे बड़े भाग के साथ अपने को अत्यन्त घनिष्ठता के साथ सम्बद्ध पाते हैं। हृदय और मस्तिष्क से जनता के साथ एक क्षण के लिए भी अपने को अलग किये बिना जन-सेवा करना, अपने निजी या एक छोटी टोली नही, बल्कि जन-गण के हित के लिए हरेक बात करना, और जन-गण के प्रति अपनी जवाबदेही को समझना, यह हमारा आरम्भ-बिन्दु है। कम्युनिस्टो को हमेशा सत्य की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए क्योंकि सत्य हमेशा जनता के हितों के अनुकूल होता है। उन्हे हमेशा गलतियो को सुधाने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि गलतियाँ जन गण के हितो के लिए हानिकारक होती है। पिछले चौबीस वर्षो का अनुभव हमें बतलाता है कि किसी निश्चित देश या काल मे सभी ठीक कार्य, ठीक नीतियाँ और काम करने की अच्छी शैली सदा जनता की मांगो के अनुकूल होती है, और वह हमेशा हमे जनगण से घनिष्ठतया सम्बद्ध करती है। वह हमे यह भी बतलाते हैं कि सभी गलत कार्य, अशुद्ध नीतियाँ और काम करने के बुरे ढग जन-गण के हितो के अनुकूल नही होते, वह जन-गण मे हमे अलग करते है। मार्क्सवादी विचारधारा से हथियारबन्द हो चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने चीनी जनता के भीतर काम करने की एक नई शैली को पैदा किया है और वह काम करने की नई शैली मुख्यतः है सिद्धान्त के साथ प्रयोग (व्यवहार) की एकता स्थापित करना, जनता के समूह के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना और आत्मालोचना का व्यवहार करना।"

(2) अन्य पार्टियाँ और संगठन—कम्युनिस्ट पार्टी के अतिरिक्त चीन मे और भी बहुत-सी पार्टियाँ हैं, जो वहाँ के शासन मे हाथ बँटाती है।

चीन की पार्टियाँ और उनके मुख्य मुख्य नेता निम्न प्रकार है :

	नाम	नेता
1.	कम्युनिस्ट पार्टी (कुन्-सन् ताग)	माओ चे-तुग, चू-तेह, चाउ एन् लाइ, ल्यु शाओ ची
2.	कुओ-मिन्तागी क्रान्तिकारी कमेटी	ली ची-शेन्
3.	चीन जनतात्रिक लीग	चाग लान्
4.	चीन जनतात्रिक राष्ट्र-निर्माण मभा	ह्वाग येन्-पेइ
5.	चीन जनतन्त्रता सम्वर्द्धन मभा	मा शू लुन
6.	चीनी किसान कमकर जनतात्रिक पार्टी	चाग पो चुन्
7.	चीन चीह कुग ताग	चेन् ची यू
8	च्यु सान सभा	शू तेह हग
9.	ताइवान जनतात्रिक स्वायत्त शासन लीग	शीयेह सुयेह-हुग
10	चीन नव-जनतात्रिक तरुण लीग	फंक वेन पिन्

और जन-सगठनो तथा उनके अध्यक्ष निम्न प्रकार है

1.	अखिल चीन मजूर-सघ	ल्यू शाओ ची
2.	अखिल चीन जनतात्रिक महिला-सघ	सुग चिग-लिग (श्रीमती सुन् यात्-सेन्)
3.	अखिल चीन तरुण-सघ	ल्याउ चेग-चीह
4.	अखिल चीन छात्र-सघ	पियेन तेह-मिन्
5.	विश्व-शान्ति अमेरिकन-आक्रमण विरोधी चीन-लोक-समिति	कुओ मो-जो

6. चीन सोवियत मैत्री सभा — ल्यू शाओ-ची
7. विदेश कार्य लोक-प्रतिष्ठान — चाउ एन्-लाइ
8. अखिल चीन साहित्य-कला चक्र संघ — कुओ मो जो
9. रेडक्रास सभा — ली तेह-चुआन
10. चीन कल्याण प्रतिष्ठान — सुंग चिंग-लिंग

18

नवनिर्माण (1949-53 ई.)

जन-मुक्ति-सेना की सफलताओं और विजयों द्वारा सारे चीन के एकताबद्ध करने के बाद नहीं, बल्कि जैसे ही भिन्न-भिन्न भाग च्याग के हाथ से मुक्त होते गए, वैसे-ही वैसे वहाँ नव-निर्माण का काम शुरू कर दिया गया। यदि चीन के वीरपुत्र लड़ाई के मैदान में अपने कारनामे दिखलाते थे, तो पीछे रहनेवाले भी हाथ पर हाथ धरे कैसे बैठे रह सकते थे? पिछली मुक्ति के बाद तीन सालों में नये चीन ने क्या-क्या काम किये और क्या करने जा रहा है, इसका पता निम्न बातों से मालूम होगा

1. भिन्न-भिन्न क्षेत्रों मे सफलताएँ

(1) तीन वर्ष का लेखा-जोखा-गणराज्य के तीसरे वार्षिकोत्सव के समय पार्टी केन्द्रीय कमेटी के सदस्य पो यी-पो ने तीन वर्ष की सफलताओं के बारे में बतलाया था :

"चीन जन-गणराज्य की स्थापना के बाद चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और उसके प्रतिभाशाली नेता साथी माओ चे तुंग के नेतृत्व में एवं पिछले तीन सालों में सारे देश की जनता के प्रयत्नों द्वारा हम योजनाबद्ध बड़े पैमाने पर आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण के लिए आवश्यक स्थितियों को पैदा करने में सफल हुए हैं। इस प्रकार अपने देश के औद्योगीकरण में और भी लम्बा कदम रखने और उसके द्वारा समाजवाद की ओर अपने देश के दृढ़तापूर्वक बढ़ने की गारंटी कर सकते हैं।"

साथी पो ने आगे फिर बतलाया :

" जमीन-सुधार खास तौर से सारे देश में पूरा किया जा चुका है। अगस्त, 1952 तक पहले थोड़ा या बिलकुल भूमि न रखनेवाले 30 करोड़ किसानों और उनके परिवारों को जमींदार के हाथ की 470 लाख हेक्टर (1 हेक्टर = ढाई एकड़) जोती जमीन दी गई। चीन के देहातों से जमींदार वर्ग और सामन्ती व्यवस्थावाले भूमि-अधिकार को खतम कर दिया गया। जनता की जनतान्त्रिक व्यवस्था के प्रति चीनी जनता के सबसे अधिक भाग में सबसे अधिक संख्या रखनेवाले किसानों का स्नेह और समर्थन प्राप्त है। इस प्रकार चीन के उद्योगधन्धे के विकास के लिए प्रशस्त पथ खुल गया है।

" पिछले तीन सालों में हमने 20 लाख से अधिक डाकुओं को खतम किया और क्रान्ति विरोधियों और गुप्तचरों को बन्दीखाने और नियन्त्रण में डाल दिया। अब चीन में डाकुओं का कहीं अस्तित्व नहीं है, और हमारी सामाजिक स्थिति ऐसी हो गई है, जैसी कभी नहीं थी।

" 1951 के अन्त से जून, 1952 तक सरकारी कमकरों के भीतर 'सान्-फान्' आन्दोलन किया गया, जिसका काम था भ्रष्टाचार, खराबी और लाल फीताशाही को खतम करना। इसी तरह निजी उद्योग-धन्धों और व्यापार के खिलाफ 'वू-फान' आन्दोलन शुरू किया गया, जिसका काम था : (1) रिश्वत, (2) कर से बचना, (3) राज्य-सम्पत्ति की चोरी, (4) सरकारी ठेकों की ठगी और (5) निजी सट्टेबाजी के लिए सरकारी स्रोतों से आर्थिक सूचना चुराने के विरुद्ध काम करना। इन आन्दोलनों के दौरान में सरकारी कर्मचारियों में साढ़े चार सैकड़े भिन्न भिन्न मात्रा

मे रिश्वत, चीज की खराबी और लाल फीताशाही क दोषी पाये गये और उनको उसी के अनुसार दण्ड दिया गया। बहुत गम्भीर मामलो मे अदालतो मे दण्ड दिया गया। इसके द्वारा सरकारी सस्थाओ को बहुत शुद्ध कर दिया गया। अब जनता की सरकार और कमकर-वर्ग क बीच घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित है। सरकारी सस्थाओ मे अनुशासन और कार्यक्षमता बढी है और सरकार का खर्च काफी कम हो गया है। इसी के साथ इन आन्दोलनो द्वारा पेकिंग, शाघाइ, तियानचिन्, हागकाउ, कान्तन्, शेग याग (मुकदन) आदि नौ बडे-बडे शहरो के वैयक्तिक उद्योग तथा व्यापार के साढे चार लाख मे अधिक फर्मो की तहकीकात की गई, जिनमे से 76 सैकडे भिन्न-भिन्न प्रकार की गैर-कानूनी कार्रवाइया के दोषी ठहरे। भारी अपराधियो को अदालत से दण्ड दिया गया, साथ ही उद्योगपतियो ओर व्यापारियो क विरुद्ध ठीक कार्रवाई करके उन्हे कानून की पाबन्दी करना सिखलाया गया। इस प्रकार मजूर वर्ग के नतृत्व तथा सामान्य प्रोग्राम (सविधान) के प्रयाग द्वारा चीनी नौकरशाही की गैरकानूनी कामो को बहुत कम कर दिया गया और उनकी कार्रवाइया को सीमित कर दिया गया। 'सान्-फान्' और 'वू-फान्' आन्दोलनो न राज्य म मजूर वर्ग के नतृत्व को मजबूत कर दिया। "

पा ने सेना के बारे म अपने इसी भाषण म कहा

"पिछले तीन सालो के दौरान हमने अपनी राष्ट्रीय प्रतिरक्षाओ का सफलतापूर्वक मजबूत किया, ओर हमारे देश पर चढाई करने की अमरिकन साम्राज्यवादियो की योजना को बेकार कर दिया। कोरिया-युद्ध मे फूट पडने के बाद चीनी जनता ने अमरिकन आक्रमण विरोध और कोरिया सहायता के लिए लाखो कमकरो, किसानो और बुद्धिजीवियो ने ओर सेनार्थ अर्पित की एव सारे देश म जनता ने कृषि उद्योग और दूसर क्षेत्र म उत्पादन को आगे बढाकर आन्दोलन म बडे उत्साह के साथ भाग लिया। जनता ने स्वय सेवको के लिए 3 हजार 7 सौ विमान दान दिये।

देश के भिन्न भिन्न सगठनो के बारे म पा ने कहा

चीन की कमकर जनता राष्ट्रव्यापी पैमाने पर सगठित है। इस समय मजूर सघ के 73 लाख मेम्बर हैं, एव नव जनतात्रिक तरुण लीग के 63 लाख अखिल चीन छात्र सघ के 21 लाख 70 हजार अखिल चीन जनतात्रिक महिला-सघ की कार्रवाइयो म भाग लेनेवाले 7 करोड 67 लाख खरीद बेच सहयोग समितियो के । करोड 6 लाख, चीन सोवियत मैत्री सभा के 2 करोड 65 लाख सदस्य हे। पच शक्ति शान्ति समझौते पर हस्ताक्षर करनेवाले करीब 34 करोड है

'1949 म चीनी जनता का मुक्ति युद्ध सारे देश म विजयी हुआ, लेकिन जापानी साम्राज्यवाद के विनाशकारी कामो, कुओ मिन्ताग के क्षयकारी क्रूर शासन और अमरिकन साम्राज्यवाद की लूट के कारण राष्ट्रीय आर्थिक जीवन बिलकुल ध्वस्त हो गया था। देहात दिवालिया हो गया था, एक के बाद एक कारखाने और खान बन्द हो गई थी सट्टेबाजो की बन आई थी बाजार पूरी तरह से छिन्न भिन्न था जनता अपने दैनिक जीवन के लिए अत्यन्त कष्ट भोग रही थी।

अमेरिकन सियारा–कुओ मिन्ताग के प्रतिक्रियावादियो का उखाड फेकने के बाद हमने अपनी लुज हुई अर्थनीति की स्थिति मे उत्पन्न कठिनाइयो पर काबू पाने के लिए भारी कोशिश की। मजूर वर्ग और जनता के विस्तृत समूह की सहायता से कदम पर कदम हमने कृषि और उद्योग सम्बन्धी उपज को पुनःस्थापित कर दिया। मार्च, 1950 के बाद कितने ही सफल उपायो को काम मे लाकर हम बजट को सन्तुलित करने के नजदीक पहुँचे। हमने मुद्रास्फीति को रोक दिया और सौदे के दामो को नियत्रण के अनुसार कर दिया। आधे वर्ष के *समय मे बाजार की स्थिति बेहतर हो गई यद्यपि उसका आधार अभी भी मजबूत नही था और अब भी भले* [illegible]

' चीनी कम्युनिस्ट पार्टी काग्रेस के तीसरे विस्तारित अधिवेशन म जून, 1950 मे साथी माओ चे-तुग ने बतलाया था कि वित्त तथा अर्थ सम्बन्धी स्थिति का बहतर बनाने के लिए आधारित परिवर्तन होने मे करीब तीन साल का समय लगेगा। साथी माओ चे तुग के निर्देश और सारे देश की जनता के प्रयत्नो द्वारा हम तीन वर्ष से कम समय मे एस आधारभूत परिवर्तन को लाने म सफल हुए। कृषि और उद्योग सम्बन्धी उत्पादन

अब पूरी तौर से पुनःस्थापित हो गये हैं, बहुत-सी चीजें युद्धपूर्व के सबसे ऊँचे तल से भी आगे बढ गई हैं। राष्ट्रीय आय और व्यय पूरी तौर से सन्तुलित हो गया है, और सौदो की कीमतें स्थिर है।

"चीन की कृषि-सम्बन्धी उपज की पुनःस्थापना और विकास का पता निम्न आँकडो से मालूम होगा। यदि मुक्ति से पहले के भिन्न-भिन्न प्रकार की कृषि-सम्बन्धी उपजो के उच्चतम वार्षिक मान को 100 लिया जाय तो 1952 मे··· उपज है : खाद्यवस्तु 109, कपास 155, भॉंगडा 259, तम्बाकू 294 और कच्ची चीनी 113।

"कृषि-सुधार के आधार पर पार्टी और जनता की सरकार ने पिछले तीन वर्षो मे किसानों को हर सम्भव उपाय से उत्पादन बढाने में नेतृत्व और सहायता प्रदान की। स्वेच्छा सिद्धान्त के आधार पर भिन्न-भिन्न परस्पर-सहायता-सगठनों मे किसानो को सगठित किया। 1952 मे परस्पर-सहायता-टोलियो में जितने किसान सम्मिलित हुए, वह सारे देश के किसानो के 40 सैकडा थे–पुराने मुक्ति क्षेत्रो में वह 70 से 80 सैकडा तक थे। चार हजार से अधिक कृषि सम्बन्धी उत्पादन सहयोग समितियाँ और 10 से अधिक सामूहिक खेतियॉं–पारस्परिक सहायता टोलियो से और अधिक विकसित रूस के नमूने की योजनाएँ–बन चुकी है। सारे देश में कृषि-सम्बन्धी उपज के विषय मे पारस्परिक सहायता और सहयोग समिति आन्दोलन उठती हुई बाढ की तरह फैल रहा है। यह मुख्य दिशा है जिसकी ओर चीनी कृषि-सम्बन्धी उपज का विकास हो रहा है।

"इन तीन सालो मे जल सरक्षण की कितनी ही विराट योजनाओ का निर्माण हुआ है। इन योजनाओ मे 170 करोड घनमीटर मिट्टी निकाली गई है, जो कि पनामा नहर से खोदकर निकाली मिट्टी की दसगुना अथवा स्वेज नहर से 23 गुना अधिक है। 1952 मे जनता की सरकार ने जलसरक्षण-योजनाओं में जितना पैसा लगाया है, वह कुओ मिन्तांग के सबसे अधिक खर्चवाले वर्ष मे 52 गुना अधिक है। जल-सरक्षण के इन सुधारो और दूसरे प्राकृतिक सकटों की रोकथाम के लिए जो उपाय किये गये हैं, उनके कारण प्राकृतिक प्रकोप की शिकार होनेवाली जमीन का क्षेत्रफल बहुत कम हो गया है। 1949 मे प्राकृतिक प्रकोप की शिकार भूमि 80 हेक्तर (प्राय 2 करोड एकड) थी, जोकि 1950 मे 46 लाख और 1951 मे 14 लाख और 1952 मे और भी कम हो गई।"

पो ने औद्योगिक स्थिति के बारे मे बतलाया :

"चीन की औद्योगिक उपज भी उसी तरह आगे बढते हुए वेग से पुनः स्थापित और विकसित हुई है, इसका पता निम्न ऑकडों से लगेगा। मुक्ति से पहलेवाले औद्योगिक और खनिज उपज की भिन्न-भिन्न वस्तुओ की सर्वोच्च उपज तल को 100 लेने पर 1952 में उपज की प्रति सैकडा वृद्धि हुई है : कच्चा लोहा 104, फौलाद 155, कोयला 90, बिजली-शक्ति 115, पेट्रोल 136, सीमेन्ट 148 और लकडी 136। इससे मालूम होगा कि कोयला को छोडकर भिन्न-भिन्न प्रकार के आधारभूत उद्योगो की उपज चीन के इतिहास के सबसे ऊँचे तल से भी आगे बढ गई है। इसके साथ ही बहुत-सी दूसरी औद्योगिक उपजो जैसे उपभोग की वस्तुओं तथा दैनिक आवश्यकताओं की चीजों–के बारे मे भी आशा रखी जाती है कि 1922 में वह चीन के सारे इतिहास के सबसे ऊँचे ऑकडो से आगे बढ जायगी। उपरोक्त क्रम मे गणना करने पर हम प्रतिशत उपज को पाते है : कपास का सूत 144, कपास का कपडा 161, आटा 106, शोधित चीनी 100, कागज 234, सिगरेट 145, दियासलाई 111 इत्यादि।

"इन तीन वर्षों मे औद्योगिक विकास और उपभोग मे लगे धन के अनुपात में काफी परिवर्तन हुआ है। 1949 मे पूँजी-माल औद्योगिक उपज के सारे मूल्य का 32.5 सैकडा था, जबकि उपभोग माल 67.5 सैकडा। 1952 में पूंजी-माल मे लगा धन सर्वयोग का 43.8 सैकडा हो गया और उपभोग माल में कमी होकर वह 56.2 सैकडा रह गया।

"इन तीन वर्षों में राजकीय कारखानो, खानों और दूसरे उद्योग-धन्धों मे पूरी तौर से जनतान्त्रिक सुधार काम में लाये गये और राजकीय उद्योगो मे समाजवादी उत्पादन-सम्बन्धों के अनुकूल नई प्रबन्ध-व्यवस्था स्थापित की गई।"

लोगो की सुख-समृद्धि के बारे मे पो ने बतलाया :

" कमकरो और कर्मचारियो की मजूरी मे देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों मे 1949 की अपेक्षा 1952 में 60 से 120 सैकड़ा तक वृद्धि हुई है। कमकरो की मजूरी की आय आम तौर से जापानी आक्रमण प्रतिरोध-युद्ध के पहलेवाले तल पर पहुँच या उससे आगे बढ़ गयी। · जनता की क्रय-शक्ति बहुत बढ़ी है। 1950 की अपेक्षा 1951 में सारे देश मे जनता की क्रय-शक्ति करीब 25 सैकडा ऊपर थी।...

" 1950 की अपेक्षा 1951 में राज्य द्वारा बाजार मे लाया गल्ला 70 सैकडा अधिक था। 1952 मे वह परिमाण 1951 की अपेक्षा 59 सैकडा अधिक होने की आशा थी। "

शिक्षा के बारे में पो का कहना है :

" शिक्षा-सम्बन्धी काम मे सुधार और विकास हुए हैं। उच्च शिक्षा, टेकनिकल उच्च शिक्षा की सस्थाओं, टेकनिकल माध्यमिक स्कूलों, नार्मल स्कूलो, कमकरो और किसानों के थोडे समय के माध्यमिक स्कूलो के सभी विद्यार्थियो के लिए राज्य से जीविकार्य खर्च (वृत्ति) दिया जाता है। माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थियो को अब अधिक सख्या मे वृत्ति दी जाती है, जिससे किसानो और कमकरों के लडके भी उच्च अथवा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर पा रहे है।

" कुओ मिन्ताग-शासन की सबसे अधिक सख्यावाले वर्ष को 100 लेने पर विद्यार्थियो की सख्या निम्न प्रकार है · उच्च सस्थाओ (कालेजो और युनिवर्सिटियों) के विद्यार्थी 2 लाख 18 हजार अथवा 169.9 सैकडा, माध्यमिक स्कूल 30 लाख 70 हजार अथवा 163 9 सैकडा और प्रारम्भिक स्कूल के विद्यार्थी 490 लाख अथवा 207 सैकडा।

" सार्वजनिक स्वास्थ्य के काम में भी काफी विकास हुआ है। औद्योगिक तथा खानवाले क्षेत्रो एव देहात में क्रमशः चिकित्सा-व्यवस्था और सफाई का विस्तार किया गया है। 1951 के अन्त तक सारे देश के 91.2 सैकडा कमिश्नरियो* मे स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित हो गये है। "

2 अक्तूबर 1952 को ली फू चुन ने तीन वर्षों के औद्योगिक उपज के आंकडो को निम्न प्रकार दिया .

नाम	पूर्व का उच्चतम उत्पादन	949	1952 (आयोजित उत्पादन)
बिजली	100	72	115
कोयला	100	45	90
पेट्रोल	100	38	136
कच्चा लोहा	100	11	104
फौलाद	100	16	155
सीमेन्ट	100	31	148
कपास सूत	100	72	144
कपास कपडा	100	73	161
कागज	100	90	234
सिगरेट	100	83	145
दियासलाई	100	85	111
आटा	100	78	106

(2) जल सरक्षण मन्त्री फू चौ-यी ने 26 सितम्बर, 1952 मे सिचाई-योजना के विकास के बारे मे बतलाया था

* Counties

" मुक्त चीनी जनता ने अपनी सिचाई के विकास, उप की वृद्धि और अकाल के रोकने के काम के सम्बन्ध में बहुत काम किया है।

" पिछले तीन वर्षों में सारे देश में आधुनिक ढग की सिचाई की 358 योजनाएँ पूरी की गई, जोकि अकाल की गारंटी हैं। ह्वांग हो नदी के पानी को वेई नदी में मोड़ने की जन-विजय नहर के नाम से प्रसिद्ध योजना 480 हजार मौ जमीन को पानी दे रही है, और अदूर भविष्य मे वह 10 लाख मौ से अधिक की सिचाई करेगी। वेई नदी की पानी की कमी को पूरा करके शिन्-शियाग से तियानूचिन् तक की पूरी 900 किलोमीटर की जलधारा को वर्ष-भर के नौकाचालन के उपयुक्त बना दिया गया।

" तुग लियाओ नदी, पानशान, छहयाग और कुओचियेन्ची उत्तर-पूर्व की चार बडी सिचाई व्यवस्थाएँ इस समय 6 लाख मौ से अधिक खेतो को पानी देने मे समर्थ है और उन्हे 40 लाख मौ से अधिक के लायक बढाया जानेवाला है। सुइ-युवान् प्रदेश की हुवाग-यान् बाढ-नियत्रण-व्यवस्था ने ह्वाग-ची नहर, याग चिया नहर और उला नदी नहर को पानी पहुँचाने और नियत्रण का सुधार किया है। इस प्रकार केवल बाढो का डर ही नही हटा दिया गया, बल्कि क्रमशः सीची हुई भूमि को 10 लाख मौ से अधिक बढाया जा सकता है। चहार प्रदेश के सग-कान्, हुन् और यू नदियो की नहरो के निर्माण द्वारा बाढ के पानी को सिचाई के मतलब के लिए इस्तेमाल करने की सुविधा पैदा करके 3 लाख मौ से अधिक खेतो के सीचने का प्रबन्ध किया गया है, जिसे क्रमशः 980 हजार मौ तक बढा दिया जायगा। शान्सी प्रदेश मे हूतूऊ और शियाओ नदियो के नये बने जल-सरक्षण तथा चेताग नहर के निर्माण द्वारा 6 लाख मौ से अधिक खेत की सिचाई हो सकती है। शेन्सी प्रदेश मे चिग, वेइ, लो हान, पो और शू नहरो के नियत्रण और विस्तार करने के बाद सिचाई की भूमि 5 लाख मो से अधिक बढाई जायगी। सिग-कियाग (चीनी तुर्किस्तान) प्रदेश मे जन-मुक्ति सेना ने भूमि के कर्षण मे सक्रिय भाग लिया है। वहाँ सिचाई की योजनाओ ने और भी अधिक प्रगति की है। हु-आइ नदी पर उत्तरी क्याग-सू सिचाई नहर का मुख्य काम समाप्त हो गया है, लेकिन शाखा नहरे अभी बनाई नही जा चुकी है, इसलिए आधुनिक सिचाई निर्माण के उपरोक्त योग मे ये ऑकडे नही जोडे जा सके।

" इसी बीच मे बहुत सी स्थानीय जनता की सरकारो ने लोगो को छोटे पैमाने की सिचाई के साधनो–खन्दको, जलनिधियो, पानी जमा करने के लिए बाँधो आदि–की मरम्मत करने और बनाने के लिए उत्साहित किया है। जो प्रारम्भिक ऑकडे प्राप्त हुए है, उनसे मालूम होता है, कि इस तरह के कामो की सख्या 3,360 हजार स अधिक है।

" 6.668 हजार सिचाई के कुएँ या तो मरम्मत कर दिये गये है, या नये बनाये गये है, साथ ही भूमि-निहित जल को पूरी तौर स इस्तेमाल करने के लिए किसानो को 263 हजार रेहट उधार पर दिये गये हैं। "

कुओ मिन्तागी दुःशासन न जनता की आर्थिक स्थिति का चौपट कर दिया था। उसके अन्तिम दस वर्षो म कृषि की उपज 25 सैकडा कम हो गई, हल्के उद्योग की 30 सैकडा और भारी उद्योग की 70 सैकडा से भी अधिक घट गई। इसके साथ ही कुओ-मिन्तागी भ्रष्टाचार और लूट-खसोट के मारे चीजो का दाम बहुत बढ गया। कुओ-मिन्तागी नोट की दर तो अविश्वसनीय रूप मे गिर गई, यह इसी से मालूम होगा कि अगस्त 1937 से अगस्त 1949 के बीच के दस वर्षो मे चीजो का दाम साठ लाख गुना बढ गया, अर्थात् जितनी चीज के लिए पहले एक चीनी डालर देना पडता था, उसके लिए 60 लाख डालर का नोट देना पड़ता। 1948 के अगस्त म 'सुनहला युवान' डालर का नोट जो निकाला गया था, वह एक साल के भीतर ही रद्दी का टुकड़ा बन गया।

(2) कृषि में विकास–माओ चे-तुग ने जिस तरह देश की मुक्ति के लिए पथ-प्रदर्शन किया, उसी तरह हमने देखा, आर्थिक तौर से देश को स्वतत्र और समृद्ध करने का रास्ता भी उन्होने बतलाया। खेती यद्यपि अभी भी पुराने वैयक्तिक ढग म ही अधिक होती है, लेकिन उन्होंने धीरे-धीरे खेती के उत्पादन मे सामाजिक सगठन को महत्त्व देने का रास्ता बतलाया। इनमे पारस्परिक सहायता, सहयोग समिति और कुछ सामूहिक खेतियाँ भी होने लगी, जिनके बारे मे यहाँ कुछ अधिक विवरण देना है, विशेषकर इस ख्याल स भी इनके बारे मे

जानना आवश्यक है, क्योंकि भारत की भी खेती की समस्याएँ चीन जैसी ही हैं।

(1) पारस्परिक सहायता–यह आन्दोलन उत्तरी चीन में 1943 में आरम्भ हुआ। पारस्परिक सहायता टोलियों का संगठन स्वेच्छा के अनुसार किया गया। इस व्यवस्था में भूमि का स्वामित्व अपना-अपना रहता है, लेकिन श्रम सामूहिक रूप से किया जाता है। इसके अनुसार मौसमी पारस्परिक सहायता से सारे साल-भर के पारस्परिक सहायता तक कम किया जाता है। उत्तरी चीन में आजकल खेती के काम में तीन प्रकार की पारस्परिक सहायताएँ पाई जाती हैं :

(क) पहली सहायक सहायता कुछ उसी तरह की है, जैसीकि अंग्रेजी शासन के प्रभाव से पहले भारतीय गाँव के लोगों की पारस्परिक सहायता करनेवाली प्रवृत्ति जारी थी, और जिसके अनुसार किसान एक-दूसरे के यहाँ जाकर अगाऊ-काम या खेती के जानवरों की 'पैठ' करते थे। यह आम तौर से छोटे पैमाने पर होती है, और सो भी केवल फसल के समय। उत्तरी चीन में किसान वसन्त की बोआई, गर्मियों की जुताई और शरद की कटाई के समय अपने खेती के मुख्य कामों में मिलकर काम करते हैं। लेकिन जब फसल का समय नहीं रहता, तो वह अपने काम अलग-अलग और वैयक्तिक रूप से करते हैं।

(ख) दूसरे प्रकार की पारस्परिक सहायता टोली नियमपूर्वक पूरे वर्षभर की होती है। टोली के सदस्य प्रायः स्थायी होते हैं और वह एक दूसरे की वर्ष भर सहायता करते रहते हैं। इन टोलियों द्वारा खेती के उत्पादन की सीधी सीधी योजनाओं को वैज्ञानिक ढंग से कार्यरूप में परिणत किया जाता है। इसके द्वारा श्रम-विभाजन के परिणामस्वरूप श्रम की क्षमता बढ़ाई जाती है। इसमें कुछ और सहायक पेशों को भी हाथ में लेते हैं, और उनके द्वारा अपनी आय बढ़ाते हैं। कुछ टोलियाँ अपनी बढ़ी हुई आमदनी से खेती के हथियार, ढोर आदि जैसी सम्पत्ति को सम्मिलित खरीदती हैं, और इस प्रकार वह केवल श्रम ही नहीं, बल्कि आर्थिक सहयोग में सम्मिलित होती है।

(ग) केवल खेती के कामों में ही पारस्परिक श्रम का सहयोग न करके अपने सदस्यों को दूसरे सहायता पेशों में लगाकर सामूहिक आय का रास्ता निकालना तथा उसके द्वारा खेती के हथियार और ढोरों आदि के सामूहिक सम्पत्ति के रूप में खरीदना आदि तीसरी तरह की पारस्परिक सहायता है।

(2) सहयोगी खेती–पारस्परिक सहयोग का ही यह तीसरा ढंग है, यह पहली दोनों व्यवस्थाओं से अधिक उन्नत है। इसमें हरेक मेम्बर अपनी भूमि को अपने हिस्से के तौर पर प्रदान करता है और उसका प्रबन्ध केन्द्रबद्ध होता है। इस प्रणाली में बिखरे हुए छोटे छोटे खेत इकट्ठा कर दिये जाते हैं, और पारस्परिक सहायता भी सामूहिक रूप से दी जाती है। इस प्रणाली में वैज्ञानिक ढंग से खेती करने की सम्भावना बहुत अधिक है। सहयोगी खेतीवाले ज्यादा सुधरे हुए खेती के हथियारों को इस्तेमाल करते हैं, नये प्रकार के हलों से घोड़े जोतते हैं। श्रम का विभाजन और जुताई भूमि के गुण के अनुसार होती है। फसल के उत्पादन, सिंचाई, पशुपालन, जमीन की उर्वरता को बढ़ाने आदि के सम्बन्ध में अधिक विस्तृत योजना बनाई जाती है तो भी सहयोगी प्रथा में भूमि का स्वामित्व वैयक्तिक बना रहता है, जिसका अर्थ है हरेक आदमी को अपनी जमीन के अनुसार भी उपज में से कुछ मिलता है लेकिन साथ ही फसल की कटाई सम्मिलित होती है, और उसे भूमि के स्वामित्व के लिए कुछ भाग अलग करके श्रम के परिमाण के अनुसार बाँटा जाता है–उपज में से कुछ निश्चित परिमाण को सम्मिलित कोष के लिए अलग कर दिया जाता है। सहयोगी खेती में खेती के उत्पादन का सामाजिक रूप प्रकट होने लगता है, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। उत्तर चीन, होपेइ, शान्सी, चहार, पिंग-युआन्, सुइ-युवान के प्रदेशों में इस तरह के 6 हजार सहयोगी फार्म (खेतियाँ) हैं। भूमि के स्वामी किसानों को समाजवादी खेती की ओर खींचने के लिए यह प्रणाली चीन में बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुई है, और भारत में भी सिद्ध होगी।

1952 में उत्तर चीन के किसानों में से 32 सैकड़े किसी-न-किसी प्रकार की पारस्परिक सहायता प्रणाली की खेती में सम्मिलित थे, जिनकी संख्या 20 लाख के करीब थी, और जो उत्तरी चीन की किसानों की संख्या के आधे हैं।

(3) सामूहिक खेती–सोवियत रूस की सामूहिक या पचायती खेती–कलखोज के बारे में हमने सुना है।

अभी इस तरह की खेती का आरम्भ ही भर चीन मे हुआ है, लेकिन तो भी 1952 मे ऐसी खेतियों की संख्या दस थी, जो किसानों के सामने ऊँचे ढंग के उत्पादन का उदाहरण पेश कर रही थीं। ऐसे ही एक सामूहिक खेती का वर्णन एक चीनी लेखक ने किया है* :

"उत्तर-पूर्व चीन के चुग-कियान प्रदेश मे तुआन् शान् चे नामक सामूहिक खेती (फार्म) बडी सफलतापूर्वक काम कर रही है। चीन मे विद्यमान ग्यारह सामूहिक खेतियाँ अभी नमूने के तौर पर है, जिनमे से यह एक है। पॉच साल पहले शेन् चे-चुग नामक किसान के पास दो एकड से कम का ही अपना खेत था, जिसमें वह खेती करता था। इसके बाद वह परस्पर सहायता टोली मे सम्मिलित हो गया और बाद मे कृषि-सम्बन्धी सहयोगी समिति मे। शेन् को जल्दी ही अपने तजर्बों से मालूम हो गया, सामूहिक श्रम को कृषि मे जितना ही अधिक सगठित किया जाय, उतनी ही एकड पीछे, और परिवार पीछे उपज भी अधिक होती है। उसने भिन्न-भिन्न सालो की उपजो की तालिका बनाकर उसे निम्न प्रकार देखा :

सन्	ढंग	उपज (सेर) प्रति एकड़ उपज (सेर)	प्रति परिवार
1947	परिवार खेती	1,202	1,531
1948	परस्पर सहायक चार परिवार टोली	1,128	1,901
1949	परस्पर सहायक पॉच परिवार टोली	1,336	2,093
1950	चौदह परिवार सहयोग	1,514	4,915
1951	छत्तीस परिवार सामूहिक खेती	1,979	10,450

कहाँ अलग अलग पारिवारिक खेती मे परिवार को 1,513 सेर धान मिलता था और कहाँ सामूहिक खेती मे उसे 10,450 सेर मिलने लगा, और उपज भी प्रति एकड करीब करीब दुगनी हो गई। फिर लोगो का ध्यान इस ओर क्या न जाता ?

हेइ लुग-कियाग प्रदेश के कोशन जिले के शान्ति सामूहिक खेती को लीजिये। जापान के दीर्घकाल कब्जे के बाद अभी तीन साल भी नही हुए थे, जबकि 1947-48 मे यहाँ भूमि-सुधार को कार्यरूप मे परिणत किया गया। उसके तुरन्त ही बाद किसानों ने सहायता मण्डली सगठित कर ली और जनवरी 1952 मे इस गॉव मे दो सहयोगी खेतियाँ कायम हो गई। इससे पहले पास मे एक नये यन्त्रों से सुसज्जित राजकीय खेती कायम कर दी गई थी। किसानों ने अपनी आँखों खेती मे विज्ञान और नये यन्त्रों के प्रयोग का चमत्कार देख लिया था, इसलिए अप्रैल, 1952 मे दोनो सहयोगी खेतियो ने प्रस्ताव पास करके अपना शान्ति सामूहिक-फार्म संगठित कर लिया। फार्म के नियमानुसार 16 वर्ष से ऊपर के स्त्री या पुरुष उसके मेम्बर बन सकते है। प्रवेश के बाद उन्हे अपनी भूमि, खेती के जानवर, गाडी और बडे हथियार को फार्म को देना होता है, जो सबकी सम्मिलित सम्पत्ति हो जाते है। नये मेम्बर के पास दूसरे मेम्बरो की औसत भूमि से अधिक मूल्य की भूमि होने पर उसके लिए उसे दो वर्ष के भीतर दाम चुका दिया गया। यदि उसका देना कम है, तो वह दो साल के भीतर उसे पूरा कर देता है। अगर फार्म के नजदीक का किसान शामिल नहीं होना चाहता, तो उसे अपनी भूमि बदलावन मे देने के लिए कहा जाता है, जिससे कि फार्म के सारे खेत एक चक मे आ जायँ। यदि कोई मेम्बर सामूहिक फार्म से अलग होना चाहता है, तो उसे स्वतन्त्रतापूर्वक कर सकता है, और उसके लिए आवश्यक चीजों का तालमेल कर दिया जाता है। 'शान्ति-सामूहिक फार्म' के हरेक किसान के पास अपने परिवार के व्यक्तियो की सख्या के अनुसार एक खेत का टुकडा अपने पास रखने का अधिकार है—उदाहरणार्थ 6 व्यक्तियों का परिवार अपने इस्तेमाल की साग-सब्जी उगाने के वास्ते एक एकड जमीन निजी तौर से रख सकता है, वह एक गाय, एक बछडा, कितने ही सूअर, मुर्गियाँ और कुछ खेती के हथियार भी अपने पास रख सकता है।

सामूहिक फार्म का सगठन इस प्रकार है कि उसके सभी मेम्बर सामूहिक खेती के सर्वोपरि सगठन के

* China Reconstructs, 1953, No 2, PP 16-20

सामान्य सम्मेलन के मेम्बर हैं। यह प्रतिवर्ष चार बार बैठकर अपनी बडी-बडी नीति के बारे में फैसला करता है, एक अध्यक्ष, प्रबन्ध-समिति और निरीक्षण-समिति को चुनता है, भविष्य के लिए योजना बनाता है और नये मेम्बरों को स्वीकार करता है। प्रबन्ध-समिति सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति है, जो सम्मेलन के निर्णयों को कार्यरूप में परिणत करती है, इसकी बैठक प्रति सप्ताह होती है, जिसमे वह उत्पादन टोलियों का संगठन और उनमें काम का विभाजन करती है। निरीक्षण-समिति प्रति पाँचवें दिन इकट्ठा होकर किये हुए काम की जाँच-पडताल करती है, खर्च को देखती है और सार्वजनिक सम्पत्ति की देखभाल करती है।

'शान्ति-सामूहिक-फर्म' के पास 1680 एकड जमीन है, और उसमे 514 आदमियोंवाले 138 परिवार सम्मिलित हैं। इसकी सम्मिलित सम्पत्ति में 136 घोडे, 23 गाड़ियाँ और घोडों से चलनेवाली पाँच खेती की मशीने हैं। एक खास टोली इसके 139 ढोरों, 130 भेडों और 60 से अधिक ऊपर सुअरों की चरवाही करती है।

फार्म की वार्षिक आमदनी का तीन सैकडा रक्षित कोष के तौर पर, एक सैकडा जन-कल्याण और एक सैकडा फार्म के प्रबन्ध व्यय के लिए अलग रख दिया जाता है। फिर उत्पादन के खर्च, बीमा, करो को देने के बाद कुछ धन अगले साल की आवश्यकताओं के लिए भी रख दिया जाता है। बाकी बची हुई उपज को हरेक मेम्बर में काम के दिनों के अनुसार बाँट दिया जाता है। एक किसान साधारण तौर से एक दिन में कितना काम कर सकता है, उसी को एक काम का दिन गिना जाता है।

सामूहिक फार्म के स्थापित होने के बाद हरेक खेती की मेंड़ें तोड दी गई और बिना मेंडो के बडे-बडे चक बना दिये गये। खेत की अच्छी तरह देखभाल करके फसल बोने का निश्चय किया जाता है। ऊपर के सूखे चक में बाजरा और आलू जैसी चीजें बोई जाती हे, खलार (नीची जमीन) में गेहूँ, सोयाबीन और सन बोया जाता है। काम करनेवालो को भी ठीक तरह से संगठित किया जाता हे, हरेक आदमी को उसके अनुरूप काम दिया जाता है। सामूहिक फार्म का आदर्श वाक्य है : 'सब हरेक के लिए और हरेक सबके लिए।'

सिंग क्याग (चीनी तुर्किस्तान) में 'तिहुआ सामूहिक रूप फार्म' भी एक आदर्श खेती है। इसमें हान् (चीनी), हुई, उइगुर, कजाक और शिपो जैसी कई जातिया के मेम्बर है, जो सभी मिलकर एक परिवार की तरह काम करते हैं। हरेक परिवार गाँव में अपने जातीय और धार्मिक रीति-रवाजों का पालन करते शान्ति से रहता है। तिहुआ के किसान पहले सबसे गरीब किसानों मे से थे। अब उनके पास 3,300 एकड जमीन है, जोकि पहले निर्जन घास का मैदान था, जिसमे केवल जगली जानवर और चिड़ियाँ ही रहती थी। तिहुआ सामूहिक खेती के मेम्बरों ने काम करने की अपनी कई टोलियाँ संगठित की, जिनमें से कुछ सिंचाई का प्रबन्ध करती, और कुछ परती जमीन को आबाद करने मे लगी। बढ़ई और लोहार भी आकर इस फर्म में सम्मिलित हो गये। सबने मिलकर प्रति परिवार तीन एकड की खेती करनी शुरू की। जल्दी ही किसानों का अपने सामूहिक श्रम का फल मालूम हो गया। वह बडे आराम से रहते है। आज हेइलुग कियाग प्रदेश का 'नवजीवन सामूहिक फार्म', सिंग-क्याग प्रदेश का 'चिंगारी सामूहिक फार्म', या उत्तर पूर्व चीन का 'शान्ति सामूहिक-फार्म' जैसे एक दर्जन के करीब सामूहिक फार्म चीन में काम कर रहे है। पारस्परिक सहायता प्रणाली ने किसानों को रास्ता दिखला दिया है। वह समय दूर नहीं है, जबकि वहाँ भी खेती समाजवादी प्रणाली में होने लगेगी और किसानों का जीवन अधिक समृद्ध हो जायेगा।

2. प्रथम पंचवार्षिक योजना

रूसी क्रान्ति को भी गृहयुद्ध और विदेशी दखलदाजी से गुजरते हुए देश के खडस्फोट का पुनर्निर्माण करना पडा था। वहाँ क्रान्ति के पहले पाँच साल गृहयुद्ध मे बीते। उसके बाद के सात साल खडस्फोट के पुनर्निर्माण मे। चीन का गृहयुद्ध-काल, जहाँ तक कि कुओं मिन्ताग का सम्बन्ध है, बहुत लम्बा था, यदि 1937 मे च्याग काइ-शेक के प्रथम प्रहार से उसको गिना जाय। भीषण गृहयुद्ध, जिसमे अमेरिका ने खुलकर क्रान्ति के विरोध मे अपने सिपाही भेजे बिना सब तरह की सहायता दी, चार वर्ष तक रहा। फिर खडस्फोट की मरम्मत का मौका चीनी जनता को मिला और रूस की तरह सात वर्ष न लगाकर तीन वर्ष में ही माओ चे-तुग के नेतृत्व मे चीन ने

निर्माण और पुनःस्थापना का काम कर डाला। इसमें शक नहीं, ऐसा करने में लाल रूस का नमूना उसके सामने था। इसीलिए माओ हमेशा कहा करते हैं कि हमें सोवियत रूस और उसकी जनता से सीखना चाहिए। 1949-52 ई. तक खंडविस्फोट प्रतिसंस्कार का काम पूरा हो जाने पर चीन ने 1953 ई. के शुरू मे अपनी प्रथम पचवार्षिक योजना रक्खी, जो 1957 ई. के अन्त तक समाप्त हो गयी। जहाँ सोवियत उसको बिना यारोमददगार के सारा काम अपने आप करना था, वहाँ चीन गणराज्य अकेला नही है। रूस का विशाल तजर्बा उसके सामने है, रूस के मजूर और हर तरह के विशेषज्ञ बिना किसी लाभ या लोभ के दिल खोलकर अपने चीनी भाइयो को अपने जैसा बनाने के लिए तैयार है, साथ ही वह मशीन तथा दूसरे साधनों को बहुत भारी परिमाण मे चीन भेज रहे है। इसलिए इसमे शक नही कि रूस को जितना काम करने मे दस साल लगा था, माओ चे-तुग के नेतृत्व मे चीन को उससे आधा भी समय नही लगेगा।

(1) योजना का प्रथम वर्ष (1953)–अखिल चीन मजूर सघ के उपसभापति ल्यू निग यी ने योजना के प्रथम वर्ष के काम के बारे में एक बड़ा ही सारगर्भित लेख लिखा है* .

' पिछले तीन सालो मे और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और अध्यक्ष माओ चे तुग के नेतृत्व मे नवीन चीन की स्थापना के बाद से विशेष करके, मजूर जनता के अमर शिक्षक साथी स्तालिन के नेतृत्व मे सोवियत सरकार और सोवियत जनता की उत्साहपूर्ण और निःस्वार्थ सहायता से किसानो तथा दूसरे जनतान्त्रिक वर्गो से एकता स्थापित करके चीन मजूर वर्ग ने युद्ध के लम्बे सालो मे ध्वस्त राष्ट्रीय अर्थनीति को अत्यन्त शीघ्रता से पुनःस्थापित और विकसित किया। इस प्रकार हमारे देश को औद्योगिकीकरण के लिए एक अतिसुन्दर नीव रख दी गई।

" चीनी मजूर वर्ग और जनता ने औद्योगीकरण के सम्बन्ध मे लेनिन और स्तालिन की शिक्षा को अपने हृदय मे धारण किया और अध्यक्ष माओ चे तुग के शब्दो मे समझ लिया . "उद्योग के बिना न ठोस राष्ट्रीय प्रतिरक्षा हो सकती है, न जन-कल्याण, न राष्ट्रीय समृद्धि और शक्ति !" बहुत समय से, जबकि चीन अर्ध उपनिवेशी और अर्धसामन्ती देश था, चीनी जनता औद्योगीकरण का सपना देख रही थी। लेकिन, केवल अभी ही चीनी जन गणराज्य की स्थापना के साथ, चीनी जनता के अपने राज्य की स्थापना के साथ, वह स्वप्न बड़ी जल्दी के साथ सिद्ध हो सकता है।

" 1953 ई चीन की प्रथम पचवार्षिक योजना के प्रथम वर्ष के बजट के अनुसार सम्पूर्ण व्यय का 60 सैकडा आर्थिक और सास्कृतिक विकास के लिए अलग रक्खा गया है, और 44.34 सैकड़ा राष्ट्रीय आर्थिक निर्माण के लिए, जिसमे भी अधिक जोर भारी उद्योग पर है। इस साल के निर्माण के लक्ष्य है : लोहा-फौलाद, अलोह धातु और रसायन के 21 कारखानो की स्थापना और पुनर्नवीकरण, मशीन-निर्माण करनेवाले 24 बड़े-बड़े कारखानो, पनबिजली कारखानो के साथ 24 बिजली के कारखानो और 11 नई रेलवे लाइनो का निर्माण, जिसमे 600 किलोमीटर लाइन इसी साल खुल जायेगी। "

चीनी जनता बड़े उत्साह के साथ अपने नवीन समृद्ध जीवन के साकार निर्माण करने मे लगी हुई है। वह अपने शरीर और दिमाग से कितना उत्साह दिखला रही है, यह इसी से पता लगेगा कि 12 नवम्बर, 1952 को आनशान (मचूरिया) के लोह फौलाद कम्पनी के कमकरो ने 6 घंटे 9 मिनट मे इतना अधिक लोहा तैयार किया, जितना कभी तैयार नही हुआ था। 1953 के 12 अप्रेल को, काम चालू होने के केवल 35 दिनो बाद, सोवियत के स्वय-चालित नवीनतम मशीनो द्वारा फिर से निर्मित होने के बाद, आनशान के 8वे नम्बर के धौकूभट्टे ने नियत परिमाण से 1 81 सैकडा अधिक दैनिक उत्पादन शुरू किया। जापानियो के अधिकार मे रहते समय अधिकतम उपज से यह 78.29 सैकडा ऊपर था। इसी तरह पिगान (फूशिन, उत्तर-पूर्व चीन) के कोयला के खनको ने सोवियत की मशीन इस्तेमाल करते हुए सोवियत विशेषज्ञो की सहायता से एक महीने मे 74.28 मीटर की खुदाई की जोकि अंग्रेज खनको के रेकार्ड से बहुत आगे तथा सोवियत के नजदीक है। पेकिंग के पास शीह-चिग-शान् लौह-फौलाद कारखाने के कमकरो ने 14 मार्च को 42 दिन मे पुनर्नवीकृत होनेवाले धौकूभट्टे

* The People's China, 1653, No 2 PP 5-9

को 28 घंटे में तैयार कर दिया, 1951 में इस काम मे 53 दिन लगा था। शायद ही कोई दिन जाता हो, जबकि चीन के कमकर अपने कामो का नया रेकार्ड स्थापित न करते हो।

1952 में माओ चू-शी (अध्यक्ष माओ) ने कमकर जनता मे उत्पादन को बढ़ाने और मितव्ययता अर्थात् किसी भी तरह का अपव्यय न होने देने के लिए अपील की थी। उन्होंने बतलाया था कि लेनिन और स्तालिन ने राष्ट्रीय निर्माण के लिए कोष-सचय का यही रास्ता दिखलाया है। सचमुच ही पूँजीवादी औद्योगीकरण और समाजवादी औद्योगीकरण मे बहुत बडा अन्तर यही है कि जहाँ पूँजीवादी नेता, नौकरशाही और विशेषज्ञ बेदर्दी के साथ हर जगह गरीब जनता की कमाई को बरबाद करते हैं, जैसाकि कि भारत मे इस समय सर्वत्र देखा जा रहा है। वहाँ समाजवादी सरकार, कमकर, और विशेषज्ञ एक-एक कौडी को खर्च करने मे बडी सावधानी से काम लेते है। सभी जानते हैं कि बूँद-बूँद से समुद्र भर जाता है, इसलिए इस सर्वांगीण और सार्वत्रिक मितव्ययता से औद्योगीकरण के लिए बहुत भारी पूँजी जमा हो जाती है। चीन के कमकरो ने माओ चूशी की पुकार को बडे ध्यान से सुना और उस पर कडाई से अमल करना शुरू किया, और हर जगह अपव्यय को हटाया। श्रम ही वस्तुतः रूपान्तर मे पूँजी है, इसलिए श्रम की मितव्ययता के लिए उन्होने यन्त्रों में नये-नये सुधार और सुझाव पेश किये। आनशान के लौह फोलाद कारखाने के कमकरों ने 1952-1953 मे अपने श्रम की उपज को 5.35 सैकडा बढ़ाया, जिससे राज्य को 52 अरब 40 करोड युआन (डालर) की बचत हुई। 1952 मे शेन्याग इजीनियरी कारखाने के कमकरों ने मशीना मे 7,266 नये सुधार किये, जिनमे से केवल 156 ने ही 36 अरब 60 करोड युआन की अधिक सम्पत्ति पैदा की। 1952 मे कवल उत्तर, पूर्व, उत्तर पूर्व और पूर्वोत्तर और पश्चिमोत्तर प्रदेशो के ही सरकारी उद्योग धन्धों के कमकरो और कर्मचारियो ने 220 खरब युआन का अतिरिक्त उत्पादन किया। यह रकम 25 हजार किलोमीटर रेलवे लाइन तैयार करने के लिए काफी है। इस तरह का जोश साधारण कमकर से लेकर इजीनियर तक, साधारण ग्रामीण से लेकर राष्ट्र के नायको तक उसी देश मे पैदा हो सकता है, जहाँ लोगो को विश्वास है कि सभी पूरे जोश और निःस्वार्थ भाव से काम कर रहे है। च्याग काई शेक के चार परिवारोवाली लूट मे यह उत्साह कैसे पैदा हो सकता था ? हमारे यहाँ, जहाँ मुट्ठीभर सेठ और नौकरशाह करोडो का वारा-न्यारा कर रहे है इस तरह का उत्साह और स्वार्थत्याग दिखाना क्या मल्लू बनना नही है ? चीन मे भी अब रूस की तरह ऐसे श्रमवीर पैदा हो रहे है, जो महीने का काम पखवारो मे कर रहे है। वेइ यू शी का नाम आज सारे चीन मे प्रसिद्ध है। इस मिस्तरी ने 6 महीने के काम को 3 महीने मे किया। सैकडो बडे बडे कारखानो के मजूर आपस मे होड लगाकर अधिक काम और अधिक उत्पादन मे लगे हुए हैं।

(2) सोवियत-सहायता–नवीन चीन की स्थापना के लिए कुछ ही महीनो बाद दिसम्बर-फरवरी, 1950 मे अध्यक्ष माओ और प्रधानमन्त्री चाउ एन् लाइ ने मास्को मे जाकर मित्रता, सहकार और पारस्परिक सहायता के लिए चीन सोवियत सन्धि की, जिसके द्वारा सोवियत सरकार ने बहुत भारी परिमाण मे उधार पर सहायता देना स्वीकार किया। साथी माओ ने इस उदारता के बारे मे कहा था

"सोवियत सरकार और सोवियत जनता ने सच्ची और निःस्वार्थ भाव से जो सहायता दी है, वह नये चीन के आर्थिक पुनःस्थापना और विकास मे ही जल्दी नही कराएगी, बल्कि बडे पैमाने के राष्ट्रीय विकास की हमारी प्रथम पचवार्षिक योजना के पूरा करने मे भी भारी मदद करेगी।"

1953 के मार्च मे सोवियत-सघ और चीन के बीच व्यापार और उधार की मात्रा के बारे मे भी एक करारनामा हुआ, जिसके द्वारा चीन को नये बिजली के स्टेशनो तथा दूसरे कारखानो के बनाने मे सोवियत-सघ की सहायता मिल रही है। सोवियत ने धातु कारखानो, खानो, मशीन-निर्माण, रसायन, बिजली-शक्ति तथा दूसरे उद्योग-धन्धों के लिए सामान देना शुरू किया है। सोवियत की बनी हुई आधुनिकतम कृषि-मशीने वहाँ पहुँच रही है, नये आविष्कृत बीज और अच्छी नसल के ढोर और दूसरे पशु बडे भारी परिमाण मे चीन के कोनो-कोनो मे पहुँचाये जा रहे है। इस नये करारनामे की उपयोगिता के बारे मे चीनी पत्र 'जेनमिन् जिह पाओ' ने लिखा है :

"इस समय, जबकि हमारे देश ने आर्थिक विकास के बडे प्रोग्राम को हाथ मे लिया है, दोनो देशों के

बीच में व्यापार तथा हमारे राष्ट्रीय विकास में सहायता प्रदान करने के लिए सोवियत सरकार ने फिर चीन के साथ करारनामा और समझौता किया है। सोवियत संघ हमारे साथ अपने व्यापार को काफी बढ़ायेगा और हमारे आर्थिक विकास के लिए अपेक्षित बहुत तरह के साधनो और सामग्री को देगा।"

"केवल सोवियत-संघ ही नहीं, बल्कि चेकोस्लोवाकिया, पोलन्द और हुंगरी के नवीन जनतात्रिक गणराज्य भी पूरे उत्साह के साथ अपनी शक्ति के अनुसार चीन की सहायता कर रहे है। केवल व्यापार, साधन-सामग्री से ही सोवियत रूस चीन की सहायता नहीं कर रहा है, बल्कि उससे भी मूल्यवान उसकी सहायता है–अपने विशेषज्ञों को बडी भारी संख्या मे वहाँ भेजना। फिर यह विशेषज्ञ अमेरिकन विशेषज्ञो की तरह न थर्डक्लासी होते है, और न भारी खर्चीले, रोब गाँठनेवाले। सोवियत या पश्चिमी कम्युनिस्ट देशो के विशेषज्ञ अपने चीनी विद्यार्थियो को छोटे भाई की तरह बडी तत्परता और स्नेह से अपनी हरेक बात को सिखला रहे है। उन्हे चीन मे अपने माल के लिए हमेशा के वास्ते बाजार नही तैयार करना है, बल्कि उनका लक्ष्य है जल्दी से जल्दी चीन को अपने पैरो पर खडा कर देना। भला पूँजीवादी किसी दूसरे देश के साथ ऐसा करके अपने लाभ-शुभ को हानि पहुँचाते अपने पैरो मे स्वय कुल्हाडी मारने के लिए तैयार हो सकते है ?"

माओ चू-शी ने 'सर्वश्रेष्ठ मित्रता' के नाम से लिखे अपने लेख मे स्वीकार किया है : "चीनी कम्युनिस्ट और चीनी जनता अपने देश के निर्माण के लिए स्तालिन की शिक्षाओ, सोवियत के विज्ञान और टेकनीक को और भी तत्परता मे अध्ययन करेगी।" भारत मे राष्ट्रीय धन को वस्तुतः बढ़ानेवाले इजीनियर और टेक्नीक के जानकार जहाँ बेकारी के मारे भूखो मर रहे है, वहाँ चीन मे इतनी तेजी से हर जगह नव निर्माण का काम हो रहा है कि उसके लिए बहुत भारी सख्या मे इजीनियरो और टेकनीक-विशेषज्ञो की आवश्यकता पड रही है।

हमारे यहाँ बेकारी दूर करने के लिए आफिसो मे कलम घिसनेवाले बाबुओ और दस्तखत करनेवाले अफसरो की सख्या जहा दिल खोलकर बढाई जा रही है–और यह सभी को मालूम है कि ऊपर से नीचे तक सभी प्रभु लोग अपने भाई-भतीजे-भांजो को बैठाने के लिए नई-नई जगहे तैयार कर रहे है–वहाँ चीन उत्पादक कर्मियो की सख्या बड़ी तेजी से बढाते कागजी ही नही, बल्कि वास्तविक बडे पैमाने के निर्माण मे लगा हुआ है। केवल 1952 मे आनशान की लौह फौलाद कम्पनी ने 1093 ड्राफ्टमेन एकौटेंट, गोदाम रक्षक और 4,533 टेकनीशियन तैयार किये। अगले पांच वर्षो मे केवल आनशान 5,003 साधारण कमकरो को सिखाकर टेकनीशियन और 30,000 मिस्त्रियों को तैयार करेगा। फूशिन के कोयला केन्द्र मे बचे समय मे 4,500 कमकरो और आफिस-कर्मचारियों को सिखाने के लिए 12 स्कूल काम कर रहे है। चीन के मजूर सघो ने ऐसे 16,277 अवकाश समय के स्कूल खोले है, जिनमे 30 लाख 87 हजार कमकर शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

(3) योजना के काम के आँकड़े–प्रथम पचवार्षिक योजना के प्रथम वर्ष मे 1952 की अपेक्षा 41 सैकडा अधिक पूंजी का निर्माण-कार्य होगा। आधारित उद्योगो ओर मशीन निर्माण उद्योग मे 47 सैकडा और ईंधन उद्योग मे 86 सैकडा की वृद्धि होगी। विकास का काम सारे देश मे फैला हुआ है, लेकिन सबसे बड़े पैमाने पर वह पूर्वोत्तर चीन मे होगा, जहाँ इस साल के बसन्त मे ही 30 से 35 लाख वर्गमीटर फर्श भूमिवाले औद्योगिक मकानो और रहने के घरो पर काम शुरू हो गया है। इसके बाद सबसे भारी निर्माण का काम पश्चिमोत्तर चीन मे हो रहा है, जहाँ 1952 की अपेक्षा इस साल 6 गुना अधिक निर्माण काम होने जा रहा है, और एक ही साथ वहाँ 170 बडे-बड़े कारखाने बन रहे हैं। पश्चिमोत्तर चीन तो चीन का उराल बनने जा रहा है। दक्षिण-पश्चिम चीन मे 98 बडे-बड़े औद्योगिक कारखाने बन रहे है, जिनमे से अधिकाश 1953 के अन्त तक काम करने लगेंगे।

1953 मे मशीन-निर्माण, लौह-अलौह-रसायन उद्योग जैसे आधारभूत उद्योगो को सबसे पहले हाथ में लिया जा रहा है। अपेक्षाकृत 13 बडे-बड़े कारखाने फिर से टीक करके बडे बनाये जा रहे हे और 18 नये बन रहे है, जिनमे केन्द्रीय चीन में चीन का एक बडा लौह-फोलाद का कारखाना भी है। 15 मौजूदा मशीन निर्माण कारखाने फिर से बनाये और बढाये जा रहे हैं और 9 नये बन रहे है, जिनमे भारी मशीनों, बिजली सामान और मोटर कारखाने, जहाज कारखाने आदि सम्मिलित है।

जहाँ एक ओर इस तरह बड़े पैमाने पर भूमि मे छिपी सम्पत्ति को खोज निकालने के लिए देशभर मे भूतत्त्वीय पार्टियाँ छानबीन कर रही हैं, वहाँ पता लगते ही कितनी ही जगहो मे काम भी शुरू कर दिया गया है। पूर्वोत्तर चीन मे 14 कोयले की खाने और फूशिन के पास चीन की सबसे बडी खुले काटवाली कोयलाखान मे काम शुरू हुआ है। देश के दूसरे भागो मे बीस कोयले की खानो को फिर से खोला जा रहा है और कितनो मे पहले-पहल काम शुरू किया जा रहा है। ह्वाई नदी की कोयले की खान बडी समृद्ध मानी जाती है, जहाँ पर 1 अरब टन कोयले का जखीरा है, जिसमे 50 से 60 सैकडे तक प्रथम श्रेणी का कोक बनाने लायक है, यह हाल मे पता लगा है। याग ची नदी के दक्षिण क्याग मी प्रदेश मे पिगस्याग कोयले की खानो मे काम होने लगा है। 1952 की अपेक्षा पचवार्षिक योजना के प्रथम वर्ष उत्पादन किस तरह बढा है, इस निम्न आँकडे बतलाते है–

नाम	1952	1953
कच्चा लोहा	100	114
फौलाद	100	123
शक्ति	100	127
तेल	100	142
अलोह धातु	100	139 से 154
कारखाना और खान के साधन	100	253
मशीन टूल	100	134
सीमेन्ट	100	117
कपास सूत	100	19
कपास कपडा	100	116
कागज	100	106

उपज मे सबसे अधिक वृद्धि पश्चिमोत्तर चीन मे होगी जहाँ पर कि राजकीय तथा सम्मिलित उद्योग धन्धो मे पिछले साल की अपेक्षा 70 9 सैकडा अधिक होगी। 1952 की अपेक्षा 1953 मे पूर्वोत्तर चीन के बडे बडे सरकारी कारखाने के उत्पादन मे 23 सैकडे की वृद्धि होगी।

फूशिन की कोयले की खान दुनिया की सबसे बडी खानो मे है। कही कही इसमे कोयले की तह 60 मीटर तक मोटी है, और इसके ऊपर केवल 20 मीटर मोटा गिलाफ है। इस खान को खुले काटवाली प्रणाली से खोदा जायगा जिसके लिए 56 करोड घनमीटर मिट्टी और पत्थर ऊपर से हटाकर 10 किलोमीटर दूर फेका जायगा। लेकिन यह सारा काम सोवियत के बने हुए शक्तिशाली बिजलीवाले खनक यन्त्रो बुलडोजरो और बिजली के इजनो के सहारे किया जा रहा है। इन मशीनो के चलाने के लिए चीनी कमकरो को सोवियत विशेषज्ञो ने शिक्षित किया है। ऊपर की खाल को हटा देने के बाद कोयला निकालने का काम जुलाई 1953 से शुरू हो गया।

1950 से ताइवान मे भारी मशीनो के निर्माण का कारखाना बन रहा है। इसमे बहुत तरह की बडी बडी मशीने बनाई जायँगी ऐसी मशीने जिनमे से कितनी ही यूरोप के भी कितने ही उद्योग प्रधान देशो मे नही बनती। चीन मशीने और मशीनो के बनाने की मशीने अपने ही यहाँ बनाने की तैयारी मे लगा हुआ है। जिन चीजो के निर्माण का हमारे यहाँ अभी स्वप्न भी नही देखा जा रहा है वह दुरूह और बारीक मशीने प्रथम पचवार्षिक योजना की समाप्ति के समय 'चीन मे बनी' के रूप मे भारी परिमाणो मे देखी जाने लगी। पूर्व चीन का मशीन कारखाना पहले केवल मशीनो की मरम्मत किया करता था, अब वह खान की मशीने, मशीन-टूल (मशीन बनानेवाली मशीन) और दूसरी तरह की पचीदा मशीने बना रहा है। 1953 से वह भाप की बडी-बडी टरबाइने डीजलमोटर, भारी क्रेन तथा सूक्ष्म खराद तैयार करने लगा है। शाघाइ का एशिया फौलाद कारखाना अब ऊँचे दर्जे के फौलाद तैयार कर रहा है और ताई युआन का फौलाद कारखाना पतली चादरे बनाने लगा है। इस तरह हम देख

रहे हैं, दुनिया को अचम्भे में डालनेवाला नव-निर्माण का काम चीन मे भी बड़े उत्साह के साथ हो रहा है, जिसे कि सोवियत रूस ने अपनी पचवार्षिक योजनाओं के समय किया था। उद्योग के विशाल रूप में विकास करने के लिए रेलो की बड़ी आवश्यकता है, जिसकी ओर नवीन चीन का खास तौर से ध्यान है। पश्चिमोत्तर प्रदेश मे लनूचाउ नगर से ह्वाग हो के नये पुल तक 36 किलोमीटर रेलवे लाइन 1953 की प्रथम छमाही में बिछ चुकी थी। लानूचाउ सिगक्याग रेलवे के बनाने मे जोर-जोर से काम हो रहा है। इस साल तक 184 किलोमीटर रेल बन जायगी। हाल मे कान्तन् से पेकिग होते मास्को तक की ट्रेन जारी हुई है, जिसे साइबेरिया होकर जाना पडता है। वह समय नजदीक है, जबकि पेकिग से चीनी और सोवियत मध्य-एशिया होते मास्को जानेवाली एक दूसरी और कम दूरीवाली रेलवे लाइन तैयार हो जायगी। इसी तरह चेग तू-तियान् शुइ रेलवे लाइन के 118 मील पर भी काम होने लगा है। इस लाइन पर 1 जुलाई, 1952 में काम शुरू हुआ। लाइन के पूरा हो जाने पर चुग किग और चुग तू (जेचुआन) मे यातायात की आसानी के साथ साथ चीन के एक बहुत पिछले देश मे आधुनिक साधनों का प्रवेश होगा।

रेलों के अतिरिक्त मोटर की सड़क भी बड़ी तेजी से बन रही है। चिगहाइ के सीनिग शहर मे 1,130 किलोमीटर लम्बी चिगहाइ-सीनिग ल्हासा सड़क आधी बन चुकी है और उसस सीनिग से ह्वाग होयेन (ल्मू-दो) तक मोटरे चलने लगी है। इस सडक पर कही कही समुद्र तल मे 14,000 फीट की ऊँचाई से मोटर को गुजरना पडता है। चुग किग से चुग तू तक रलवे लाइन बन रही है और चुग तू से आगे तिब्बती भाषा भाषी स्वायत भूक्षेत्र (जेचुआन प्रदेश) मे अहपा तक मोटर की सडक बन रही है।

चीन के दुरारोह पर्वतों के बीच में जिस तरह चीनी मानव माओ त्से-तुग के नेतृत्व मे विशाल निर्माण का काम कर रहा है, वैसे ही रेगिस्तानों और निर्जन स्थानों मे भी वह अपना चमत्कार दिखाने लगा है। पश्चिमोत्तर प्रदेश के तिहुआ (उरूमची) नगरी से 15 किलोमीटर दक्षिण लालहस सरोवर (हुग यन् चीह) नामक आधुनिक ढग की जलनिधि तैयार की गई है, जिससे 1 मई, 1953 से 37 हजार एकड़ प्यासी जमीन को सीचना शुरू किया। यह उस योजना का एक अग है, जिसके द्वारा तिहुआ नगरी के आसपास की बेकार जमीन को अनाज की बखार बनाया जानेवाला है। इस योजना का आरम्भ सितम्बर, 1950 में शुरू हुआ था। सिचाई के अभाव के कारण तिहुआ नगरी और उसके आसपास का इलाका—जोकि हजारो वर्षो तक पशुपाल घुमक्कडों की विचरणभूमि रहा है—अनाज के लिए बिल्कुल परमुखापेक्षी था। अन्न पाँच हजार से अधिक किलोमीटर दूर से लाना पडता था, ओर यातायात का खर्च अनाज के दाम से दो से पाच गुना तक अधिक था। इस योजना के पूरा हो जाने के बाद 68 लाख एकड़ जमीन नहरो से सीची जाकर उर्वर खेती मे परिणत हो जायगी। लनूचाउ से इधर की ओर रेल बनने लगी है, इसका वर्णन हम अभी कर चुके है।

19

अल्पसंख्यक जातियाँ

चीन गणराज्य मे चीनियो के अतिरिक्त तिब्बती, मगोल, तुर्क आदि कितनी ही ओर जातियाँ भी बसती है, इसलिए वह बहुजातिक राष्ट्र है। बहुजातिक राष्ट्र होने मे उसी तरह उसे निर्बल होने का कोई डर नही, जिस तरह सोवियत रूस को। इसका कारण यही है कि माओ ने मार्क्स-लेनिन स्तालिन के बतलाये हुए रास्ते से जातियो की समस्या को बडी आसानी से हल कर दिया है। अपने गणराज्य मे बसनेवाली सभी जातियाँ भाई-भाई है, केवल दिखलाने और कहने के लिए नही, बल्कि आर्थिक, सास्कृतिक और राजनीतिक तौर से भी सभी जातियों को समान करने के लिए अनवरत कोशिश की जा रही है। जातियो के प्रति वहाँ जो नीति बरती जा रही है, उसका पता हमे प्रधानमन्त्री चाउ एन-लाई के भाषण से मालूम होगा।

1. अल्पमतों के बारे में चाउ एन्-लाइ का भाषण (1951 ई.)

23 अक्तूबर, 1951 को प्रधानमन्त्री चाउ एन्-लाइ ने राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की जातीय कमेटी के तीसरे अधिवेशन मे बोलते हुए चीन के भीतर की जातियो के पारस्परिक सम्बन्ध के बारे मे कहा था :

" जातीय अल्पमतो के बारे मे पहली बात, जिसका उल्लेख करना चाहता हूँ, वह है तिब्बत की शान्तिपूर्ण मुक्ति के लिए किया गया सुलहनामा अब कार्यरूप में परिणत किया जाने लगा है। जन-मुक्ति-सेना की टुकडियो के ल्हासा मे दाखिल होने के समय तिब्बती जनता ने बडे जोश के साथ स्वागत किया। जातियो के प्रति अध्यक्ष माओ चे-तुंग की नीति की यह एक बडी विजय रही।

" पिछले साल और पहले केन्द्रीय जन-सरकार ने अल्पमत जातियो के देश मे अपने प्रतिनिधि भेजे, और अल्पमत जातियों के प्रतिनिधि बैठको और दूसरे कामो के लिए पेकिंग आये। और यह इस तरह की दूसरी कार्रवाइयों ने केन्द्रीय जन सरकार और भिन्न-भिन्न जातियो के बीच नैतिक सम्बन्ध स्थापित करके मजबूत किया, और अपनी महान् मातृभूमि के प्रति जातियो के बीच सद्भाव पैदा करने मे प्रोत्साहन दिया।" भिन्न-भिन्न *जातियो के बीच चिरकाल से चली आती फूट और अतीत के विरोध अब स्वयं हटकर उनकी जगह एकता और सहयोग स्थापित हुआ।*

' राष्ट्रीय क्षेत्रो मे स्वायत्त शासन और राष्ट्रीय जनतान्त्रिक सम्मिलित सरकारो की स्थापना एक-एक करके होती जा रही है। भीतरी मंगोलिया को छोडकर 30 जातीय स्वायत्त सरकार और 51 जातीय जनतान्त्रिक सम्मिलित सरकारे स्थापित की जा चुकी है, जिनका दर्जा छोटे इलाके से शियान् (जिले) के बराबर तक है। इन सरकारो के काम सब मिलाकर बहुत अच्छे हुए है। "

प्रधानमन्त्री के इस कथन से मालूम है कि महान् चीन जाति के अतिरिक्त, 81 ऐसे भूक्षेत्र है, जहाँ दूसरी जातियाँ बसती हैं, और जिनके विकास तथा चीन के प्रति घनिष्ठतया सम्बन्ध स्थापित करने के लिए माओ चे तुग ने 81 स्वायत्त-शासित क्षेत्र बनाये है। हमारे यहाँ जब भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाली अपना विशेष व्यक्तित्त्व रखनेवाली जातियो के लिए स्वायत्त शासन की बात की जाती है तो हमारे राष्ट्रकर्णधारो का सिर घूमने लगता है, और वे इसमे राष्ट्र को टुकडे टुकडे होता देखते है।

आर्थिक, स्वास्थ्य, शिक्षा संस्कृति तथा दूसरे क्षेत्रो मे नवीन चीन किस तरह अल्पमत जातियो के प्रति बर्ताव कर रहा है, यह हमे चाउ एन् लाइ के भाषण से मालूम होता है

" राजकीय व्यापारिक संस्थाएँ भिन्न-भिन्न तरीको से अल्पमत जातियों के भूक्षेत्र मे अपने काम को बढा रही है। जिन जगहो मे राजकीय व्यापारिक संस्थाएँ कुछ काम करने योग्य है, वहाँ समान मूल्य या कही-कही सहायता देकर दामो को ठीक रखने की व्यापारिक नीति माल के भीतर आने के सम्बन्ध मे स्वीकार की गई है। इसके कारण स्थानीय उपजो के दाम कहीं कही तीन चार, बल्कि दस गुने तक बढ गये है।

" केन्द्रीय जन सरकार का स्वास्थ्य मत्रालय और भिन्न भिन्न स्थानीय जन-सरकारो ने अल्पमत जातिभूमियो मे काम करने के लिए डाक्टर तथा महामारी विरोधी टोलियो को भेजा अथवा जातीय अल्पमतो को अपना डाक्टरी तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी संगठन कायम करने मे सहायता दी। अल्पमत जातियों ने इन टोलियो का बडे उत्साह के साथ स्वागत किया।

" इस समय अल्पमत जातीय भूक्षेत्रो मे सास्कृतिक और शिक्षा-सम्बन्धी काम हमारी क्षमता के भीतर ही पुनःस्थापित और विकसित किया जा सकता है। लेकिन, तो भी केन्द्रीय जन-सरकारो ने अल्पमत जातियो के लिए कर्मियो को शिक्षित करने के लिए भारी प्रयत्न किया है। सारा समय देनेवाले 50 हजार अल्पमत जातियो के कर्मियो को उत्पादन के काम से हटाकर सारे देश मे हमने तैयार किया।

" इस समय अपने काम मे हमे निम्न बातो पर ध्यान देना होगा :

" (1) जनतान्त्रिक केन्द्रवाद पर आधारित सिद्धान्त और जनप्रतिनिधि सम्मेलन प्रणाली के अनुसार हमे ठीक तरह से गम्भीरतापूर्वक सभी जगह जातीय भूक्षेत्रीय स्वायत्त शासन की नीति को कार्यरूप मे

परिणत करना होगा और जातीय, जनतान्त्रिक सम्मिलित सरकारों को स्थापित करना होगा। जातीय स्वायत्त भूक्षेत्रों को कितनी मात्रा में स्वायत्त शासन के अधिकार होने चाहिए, इसकी ठीक से व्याख्या होनी चाहिए। जातीय स्वायत्त-शासन का आंगिक रूप भिन्न-भिन्न जातियों के आज के विकास के मुताबिक होना चाहिए, और हमें हान् (चीनी) लोगों की निवासभूमि की प्रणाली को अल्पमत जातियों की निवासभूमि में हूबहू स्थानान्तरित करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

" (2) अल्पमत जातिक भूक्षेत्रों के लिए व्यापार और स्वास्थ्य-रक्षा की सुविधाओं को बढ़ाने के काम में हमें अधिक ध्यान देना चाहिए।

" (3) हमें सभी अल्पमत जातियों के निवासवाले भूक्षेत्र में देशभक्ति की शिक्षा को बढ़ाने और गहरा करने तथा अमेरिकन आक्रमण का प्रतिरोध और कोरिया सहायता आन्दोलन को फैलाना और गहरा करना चाहिए, उनमें सांस्कृतिक शिक्षा-सम्बन्धी सुविधाओं को क्रमशः पुनःस्थापित और विकसित करना चाहिए, एवं केन्द्रीय स्थानों में योजना बनाकर समाचारपत्र और प्रकाशन की सुविधाओं को खास तौर से स्थापित और विकसित करना चाहिए।

" (4) हमे बड़े पैमाने पर सभी जगह अल्पमत जातियों के कर्मियों को शिक्षित करने की नीति को कार्यरूप में परिणत करते रहना चाहिए, और उनके राजनीतिक तथा विचार-सम्बन्धी शिक्षा तथा हमारी सरकारी नीतियों को बतलाने-समझाने को मजबूती से करना चाहिए, जिसमें कि वह नेतृत्व के काम को ठीक से कर सकें और रोज-रोज के अपने कर्तव्यों को योग्यतापूर्वक निभा सकें।

" (5) जातियों के भीतर उचित सुधारों की आवश्यकता है, जिनके द्वारा वह विकास और प्रगति करके अधिक उन्नत जातियों के समकक्ष पहुँच सके। लेकिन, यह सुधार तत्तद् जातियों के अनुसार होने चाहिए, उन्हें जातियों के जन-साधारण के बहुमत की इच्छा के मुताबिक होना चाहिए। इन सुधारों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए उचित तरीके अख्तियार करने चाहिए और उनके लिए तत्तद् अल्पमत जातियों के कर्मियों पर विश्वास करना चाहिए।

" (6) हमे हान् (चीनी) जनता और खास करके हान् कर्मियों को शिक्षा देते रहना चाहिए कि उन्हें हर तरह से उनकी रायों और अल्पमत जातियों के जनसाधारण के जातीय समानता के अधिकार को सच्चे अर्थों में सम्मान करना चाहिए, और महत्तर हान् जातीय अहंकार के भिन्न-भिन्न रूपों के प्रभाव को अपने मन से हटा देना चाहिए। इसके साथ ही स्वय अल्पमत जातियों को भी भिन्न-भिन्न प्रकार के जातीय अहंकार सम्बन्धी रवैयों को हटाना, हान् तथा दूसरी उन्नत जातियों से अपने काम में सहायता प्राप्त करना, उनके अनुभवों का अध्ययन करना चाहिए, और तत्तद् अल्पमत जातियों के लिए उनके कर्मियों को काम करने की प्रेरणा देनी चाहिए। "

प्रधानमन्त्री चाउ एन्-लाइ के इस भाषण से स्पष्ट हो जाता है कि नवीन चीन अपनी जातियों को किस दृष्टि से देखता है। इसमें शक नहीं, हमारे देश में भी ऐसी अल्पमत जातियाँ बहुत है, जिनमें आसाम में नागा और दूसरी जन-जातियों की तरह बहुत-सी पिछड़ी हुई भी है, उनके लिए हमें भी यही रुख अख्तियार करना पड़ेगा, तभी राष्ट्र का कल्याण हो सकेगा।

चीन गणराज्य की सभी अल्पमत जातियों के बारे में माओ चे तुग का नेतृत्व किस तरह काम कर रहा है, इसे सविस्तार यहाँ लिखना मुश्किल है, किन्तु चीन की मुस्लिम जातियों और तिब्बती जाति के बारे में कुछ कहने से इसके बारे मे हमें काफी पता लग सकता है।

2. मुस्लिम जातियाँ

मुहम्मद माकियेन चीनी मुसलमान नेता हुइ-हुइ जाति के है। उन्होंने मिस्र के कैरो के अजहर विश्वविद्यालय और कुल्लियात दारुल-उलूम में वर्षों तक अरबी भाषा, साहित्य और दर्शन का अध्ययन किया। वह आजकल पेकिंग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं और राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की जातीय कमेटी के एक सदस्य हैं।

उन्होंने कुरान और कितने ही दूसरे ग्रंथो का चीनी भाषा में अनुवाद किया है और अध्यक्ष माओ की पुस्तक 'जनता की जनतान्त्रिक अधिनायकता' का अरबी मे अनुवाद किया है, अरबी भाषा में, 'चीन में इस्लाम' पर पुस्तक लिखी है। हरेक चीनी मुसलमान के नाम की तरह चीनी भाषा मे उन्हें मा चियेन् के नाम से पुकारा जाता है। चीनी लिखावट में वर्ण अर्थात् उच्चारण के अनुसार अक्षर नही हैं, बल्कि हमारी गिनती के अंकों की तरह सिर्फ भावों के परिचायक सकेत है, इसीलिए उसमें उतने ही अक्षर है, जितने कि चीनी भाषा में शब्द। यही कारण है, जो नाम को भी लिखने के समय उच्चारण नही बल्कि उसके अर्थ को सकेत में प्रकट किया जाता है। इधर पूँजीवादी दुनिया और उनके पिट्टू भारत तथा पाकिस्तान मे गला फाड़-फाडकर कह रहे हैं कि चीन से इस्लाम को खतम किया जा रहा है। मुस्लिम जनता के खून चूसनेवाले धनी मुल्ले, जागीरदार और सौदागर चीनी तुर्किस्तान से भगाकर भारत और दूसरी जगहों में उसी तरह झूठी-झूठी बातें फैला रहे है, जैसाकि सोवियत रूस के विरुद्ध अक्तूबर-क्रान्ति के बाद मे ही सारी दुनिया से किया जाता रहा। मुहम्मद माकियेन ने अपने धर्मभाइयो की स्थिति के बारे में अपने एक लेख 'चीन में मुसलमान कैसे रहते है ?'* लिखा है :

" चीनी मुसलमानो की सख्या एक करोड है। उनके साथ कोई भी भेदभाव नही बरता जाता। चीन के जन-गणराज्य के 'सामान्य प्रोग्राम' (सविधान) ने उन्हे पूर्ण समानता और स्वतत्रता दे रक्खी है। चूँकि अधिकाश चीनी मुसलमान अल्पमत जातियों से सम्बन्ध रखते है, इसलिए उनके लिए यह खास तौर से आवश्यक है, कि सामान्य प्रोग्राम सभी धर्मो के लिए स्वतन्त्रता की गारन्टी देने तक ही अपने को सीमित न रक्खे, बल्कि हरेक जाति को अपनी भाषा या बोली को विकसित करने तथा अपनी परम्पराओं, रीति-रिवाजों और धार्मिक विश्वासो को अपने लोगों की इच्छा के अनुसार रक्षा करने या सुधारने का अधिकार दे। इस नीति को केन्द्रीय और स्थानीय दोनो सरकारों ने कार्यरूप मे परिणत किया है। जहाँ तक धर्म का सम्बन्ध है, सभी मस्जिदे तथा दूसरे धर्मों के पूजा-स्थान वास्तविक मिल्कियत के कर से मुक्त है, और उनमें जो ऐतिहासिक महत्त्व रखते है, उनकी मरम्मत सरकार के खर्च से होती है। 6 दिसम्बर, 1950 को केन्द्रीय जन सरकार ने एक विशेष फरमान निकालकर पैगम्बर के जन्मदिन और ईद तथा बकरीद के त्यौहारो के समय कुर्बानी किये जानेवाले गायो और भेडो के ऊपर से वध-कर उठा दिया है। त्योहार के समय सरकारी तथा सहयोगी व्यापारिक सस्थाएँ गो-मास, चावल, आटा, चाय, चीनी और कपडे जैसी चीजों के दाम में खास रियायत देती है। इसके साथ ही सरकार ने आज्ञा निकाली है कि कोई भी मुसलमान विद्यार्थी कमकर या सरकारी कर्मचारी से मुस्लिम त्योहार के दिनो में काम नही लिया जायगा। विशेष धार्मिक अवसरो पर पेकिंग तथा दूसरे स्थानों में मुसलमानों के भारी समागम के लिए सभास्थान प्रदान किये गये है। सभी राजकीय भोजों तथा प्रतिनिधि-सभाओं मे मुसलमानो के लिए हलाल भोजन तथा उपहारवाले खास मेज रक्खे जाते है। इस तरह के भोजन का कितने ही रेलवे स्टेशनो मे भी नियमित प्रबन्ध है।

" 1952 मे चीनी मुसलमानो की एक जमात हज के लिए मक्का रवाना हुई। यद्यपि उन्हे पाकिस्तान मे जाने की इजाजत नही मिली लेकिन वह सिंगापुर और पाकिस्तान मे कुछ समय तक रहकर अपने धर्मभाइयो से मिले। उनकी यात्रा ने मुस्लिम दुनिया को बतला दिया कि चीनी मुसलमान केवल अपने विश्वासो के लिए स्वतन्त्रता नही रखते, बल्कि दुनिया के दूसरे भागो मे वह अपने भाइयो से सम्बन्ध स्थापित करने की भी स्वतन्त्रता रखते है। हाल के एशिया और प्रशान्त सागर भूक्षेत्र के शान्ति-सम्मेलन मे भिन्न-भिन्न मुस्लिम देशों के प्रतिनिधि आये थे। वह स्वय पेकिंग, तियान-चिन्, शाघाइ, हाग चाउ, वूशिह, कान्तन् की मस्जिदों मे गये और नमाज मे भाग लिया। वह अपने अनुभव से इस बात की पुष्टि करेंगे कि उनके चीनी धर्मभाई अपने विश्वास के लिए पूरा अधिकार रखते है। मुहम्मद माकियेन ने कम्युनिस्ट चीन के मुकाबले मे च्याग के चीन का हवाला देकर बतलाया कि उस समय मुसलमानो पर कितना अत्याचार होता था। अक्सर मस्जिदों को भाड़े की सेनाएँ दखल कर लेती, जिनको इस्लाम के धार्मिक भावों के लिए जरा भी सम्मान नही था। वह वहाँ शराब पीते,

* China Reconstructs 1953, pp 13-91

जुआ खेलते, गन्दे गीत गाते और सूअर का मांस खाते–बल्कि आखुनों (मौलवियों) को भी इस्लाम द्वारा निषिद्ध भोजन चखने के लिए मजबूर करते। कुओमिंतांगियो ने पेकिंग में चाउ याग-मेन् के बाहर की मस्जिदों को गिरा दिया, तियान्-चिन् में मूचियाचुग-चे की मस्जिद को भी नष्ट कर दिया–ये दोनो घटनाएँ 1948 में हुई।

" कुओमिन्तागियो ने मुसलमानों के खून की नदी बहाई। 1941-43 में सिग क्याग (चीनी तुर्किस्तान) के गवर्नर शेंगे शी-चे ने उस प्रदेश के एक लाख से अधिक क्रान्तिकारी तरुणो का वध करवाया, जिनमे से अधिकाश मुस्लिम जातियो के पुत्र-पुत्रियाँ थी। 1928 ई. मे होचाउ (वर्तमान लिनूशिया जिला) के हुइ-हुइ लोगो ने कान्सू प्रदेश मे च्याग काइ-शेक के डाकुओं के दुःशासन के विरुद्ध हथियारबन्द विद्रोह किया, जिसको दबाने के लिए दस हजार से अधिक हुइ-हुइ (चीनी मुसलमान) लोगो को मार डाला गया, अनगिनत मकानो को जला दिया गया, सारे नग को लूट लिया गया। कान्सू में ही हाइ युआन् और कूयुआन जिलों मे अपने अधिकारो की माँग करने के लिए 1939 से 1941 के बीच हजारों मुसलमानो को मार डाला गया। यह लिखते वक्त दिल बहुत दुखी होता है कि स्वय हुइ-हुइ जाति के होने पर भी माँ परिवार के युद्धपतियो ने हुइ-हुइ और पश्चिमोत्तर की दूसरी मुस्लिम जाति तुग शियान् (तुगान्) के वध में भाग लिया। "

च्याँग काइ-शेक के दुःशासन की तुलना कम्युनिस्ट चीन से करते हुए प्रोफेसर मुहम्मद ने बतलाया है, कि किस तरह अब मुसलमानों को राजनीतिक, आर्थिक और सास्कृतिक विकास के क्षेत्र में समानता ही नही, बल्कि कितनी ही बातों में विशेष सुविधा प्राप्त है :

"मुसलमान धार्मिक नेताओ और गृहस्थो ने चीनी जनता के राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में भाग लिया, जिसने कि चीन की जनता के गणराज्य की स्थापना की और सामान्य प्रोग्राम को स्वीकार किया।" उनमें से बहुत-से स्थानीय जन-प्रतिनिधिसभाओ, केन्द्रीय जन-सरकार, प्रादेशिक सरकार, नगरपालिका, जिला और तहसील की सभाओं के सदस्य तथा सभी प्रकार की सरकारी नौकरियो मे है। सैफुद्दीन और ल्यु के-पिग दो मुसलमान केन्द्रीय जन-सरकार परिषद् के मेम्बर है। 13 जनवरी, 1953 की घोषणा से मालूम है कि सैफुद्दीन चीन जन गणराज्य की सविधान बनानेवाली कमेटी के मेम्बर है।, बुरखान सिग-क्याग प्रादेशिक सरकार के अध्यक्ष है। सेना में सभी तरह के दर्जे मुसलमानो के लिए खुले हुए है और उनकी धार्मिक उपासनाओ और भोजन के लिए विशेष प्रबन्ध किया गया है।"

प्रोफेसर मुहम्मद ने बतलाया है कि भिन्न भिन्न मुसलमान जातियो के अनेक स्थानो पर जातीय स्वायत्त सरकार स्थापित की गई है, कान्सू प्रदेश की तुग शियाग जाति, मुइयूआन् प्रदेश की हुइ-हुइ जाति की अपनी स्वायत्त सरकारे है। "जहाँ भी मुस्लिम जातियों की अपनी कोई विशेष भाषा है, उसे कचहरी की कार्रवाइयो और दूसरे प्रकार के सरकारी कामो मे चीनी भाषा के समान इस्तेमाल किया जाता है।" सिग क्याग मे–जो कि सारा मुस्लिम उइगुर जाति का घर है, और जहाँ के लोगों में उनका बहुमत है–जनबैक द्वारा निकाले हुए नोटो पर उइगुर अक्षर छपे रहते है। इन नोटो का चलन केवल स्थानीय नही, बल्कि सारे देश में वह कानूनी मुद्रा है। चीनी मुसलमान भी औरो की तरह अधिकतर किसान है, और भूमि-सुधारो द्वारा नये चीन में उनके लिए बहुत सुविधाएँ मिली है। प्रोफेसर मुहम्मद के अनुसार : "कान्सू के तुग-शियान् लोगो ने एक छोटे-से स्वायत्त इलाके में 53000 गरीब किसानों, खेत-मजूरों तथा कितने ही मझोले किसानों को भूमि, घर, किसानी के ढोर, हथियार और खाद्य-सामग्री दी गई। उदाहरणार्थ, 62 साल के वृद्ध गरीब किसान मा यिको के पास अपने जीवनभर एक फुट भी जमीन नही थी, जबकि भूमि-सुधार द्वारा उसे तीन कोठरिया का एक घर और एक पूरा खेत मिला। शातुग प्रदेश के चाग-कुआन् चेन गाँव में भूमि-सुधार द्वारा हुइ-हुइ लोगो के खेत प्रति व्यक्ति तिगुने हो गये। इस समय सिग-क्याग प्रदेश में भूमि सुधार का काम हो रहा है, जहाँ के निवासियों में बहुत भारी सख्या मुसलमानो की है। तिहुआ (सिग-क्याग की राजधानी उरुमची) का एक भेडिहर देशमुक्ति के पहले 221 सेर ऊन बेचकर एक थान कपास का कपडा पाता था। अब वह उतना 23 सेर ऊन मे पाता है।" 1952 मे 1949 की अपेक्षा 24 सैकडा अधिक खेत सिग-क्याग में था। उस प्रदेश मे कपास की फसल 26 सैकडा अधिक और दूसरी फसले 34 सैकडा अधिक हुई। सिग-क्याग मे अवस्थित जन-मुक्ति-सेना ने 15 बडी-बडी

[illegible] तथा 8 मई को बनाने मे स्थानीय जनता को सहायता दी। इसके साथ ही किसानों ने स्वयं छोटी-छोटी नहरों के जाल को फैलाया, जिसके परिणामस्वरूप 110 हजार एकड़ सींची भूमि बढ़ गई

" शिक्षा के क्षेत्र में भी जनता की सरकार ने भिन्न-भिन्न प्रदेशो के मुसलमानो के लिए बहुत भारी संख्या मे स्कूल स्थापित किये। शान्तुग प्रदेश मे कितने ही हुइ-हुइ लोगो की बस्तियो के इलाके थे, जहाँ एक भी आदमी लिखना-पढना नही जानता था, अब वही प्रत्येक गॉव मे कम-से कम एक प्रारम्भिक स्कूल है, आधे लडके स्कूल मे जाते हैं। हुइ हुइ विद्यार्थियो के लिए पेकिग मे एक खास कालेज स्थापित किया गया है, जिसमे एक हजार से अधिक विद्यार्थी हैं। निगम्या प्रदेश मे हुइ हुइ प्राइमरी स्कूलो की संख्या 14 से 22 और विद्यार्थियो की 1,288 से 8,863 हो गई है। मिग क्याग मे उच्च शिक्षा के लिए अपनी जातीय अकादमी कायम की गई है। वहाँ के तीन हाई स्कूलो मे 5,500 और 1950 मे प्रारम्भिक स्कूलो मे 2,59,500 विद्यार्थी पढते थे। वहाँ शिक्षा का माध्यम विद्यार्थियो की अपनी मातृभाषा है उदाहरणर्थ आनशान् तहसील मे 17 प्रारम्भिक और 1 हाई स्कूल की पढाई कजाक भाषा मे होती है।

कुओ मिन्तागी शासक सभी जातियो की संस्कृति को पैरो तले रौदते थे। यदि वह अध्ययन करना चाहे तो उन्हे हान् (चीनी) भाषा सीखने के लिए मजबूर करते थे। इसके विरुद्ध जन-सरकार केवल उनकी संस्कृतियो के प्रति सम्मान ही नही प्रदर्शित करती बल्कि उसे विकसित करने मे सहायता देती है। उइगुर भाषा मे तीन और कजाक भाषा मे पाच अखबार निकलते है।

प्रोफेसर मुहम्मद माकिन की इन पक्तियो से मालूम होगा कि नवीन चीन मे मुस्लिम जातियो को किस तरह आगे बढने के रास्ते खुल हुए है। चीन तुर्किस्तान (सिग क्याग) प्रदेश के निवासी प्राय सारे मुसलमान है। 1953 मे वहाँ की शिक्षा की अवस्था का पता इसी से लगेगा कि वहा के प्रारम्भिक स्कूलो मे 330 हजार विद्यार्थी पढते है जो देश मुक्ति की पहले की संख्या से 70 सैकडा अधिक है। हाई स्कूलो और शिक्षक विद्यालयो मे तो छात्रो की वृद्धि 221 सैकडा हुई है। 1953 की गर्मियो मे सिग क्याग के अल्पमत जातीय प्रतिष्ठान और शिक्षको तथा दूसरे कर्मियो के विद्यालयो से शिक्षा समाप्त करके 1,700 तरुण निकले। सिग क्याग के बहुत से विद्यार्थी चीन की दूसरी जगहो के विद्यालयो और कालेजो मे पढ रहे है। पिछले तीन वर्षो मे उइगुर कजाक, औरहान् जैसी सिग क्याग की जातियो के लिए उनकी अपनी भाषाओ मे हाई स्कूल और प्राइमरी पाठशालाओ के लिए 30 लाख पाठ्य पुस्तके छापी गईं।

3 नवीन तिब्बत

तिब्बत हमारा पडोसी है। तिब्बत के लोग हमारे यहा अक्सर तीर्थयात्रा या व्यापार के लिए आते जाते रहते है और तिब्बती भाषा भाषी एवरेस्ट विजेता शेर्पा तेनजिन नोर्ग्ये की तरह के कई हजार तिब्बत भाषाभाषी भारतीय नागरिक है। अल्पमत जातियो के प्रति जिस विशालहृदयता का परिचय माओ माओ चे तुग ने दिया है वह वहाँ के सब वर्गों को अपनी तरफ खीचने मे सफल हुई है। तिब्बत को चीन से अलग करने के लिए इग्लैड और अमेरिका के साम्राज्यवादियो ने क्या क्या नही किया ? भारी प्रलोभन देकर उन्होने अपनी सुलगाई आग मे भारत को झोकने की भी कोशिश की। लेकिन अन्त मे एक भी नही चली। 23 मई 1951 को केन्द्रीय जन सरकार और तिब्बत की स्थानीय सरकार के बीच मे शान्तिपूर्ण तरीके से तिब्बत के मुक्त करने के सम्बन्ध मे पेकिग मे समझौता हो गया। तिब्बत दुनिया की सबसे ऊँची भूमि है, जहाँ पर नदियाँ अक्सर 12,000 फीट से ऊपर बहती है। यद्यपि इसका क्षेत्रफल उतना है जितना जर्मनी और फ्रास दोनो को मिलाकर, लेकिन आबादी बहुत कम है। पश्चिम से पूर्व एक हजार किलोमीटर बहती ब्रह्मपुत्र (यालू चाग पो) तिब्बत को उत्तर और दक्षिण--दो भागो मे विभक्त करती है, जिसमे उत्तरी भाग दक्षिणी से बहुत अधिक बडा तथा एक तरह से निर्जन है। वहाँ कही-कही घुमक्कड पशुपाल अपने तम्बूओ को लगाये चराई करते रहते है। तिब्बत का सम्बन्ध उसी समय से चीन के साथ है जबसे कि उसका सम्बन्ध भारत के साथ हुआ। नेपाल की राजकन्या के ब्याहने के एकाध साल ही बाद 641 ई मे थाग-वश (618-907 ई) के सम्राट् ताइ चुग, 627-650 ई की कन्या वेग-चेग

का ब्याह तिब्बती सम्राट् स्रोङ्-चेन् गम्-पो से हुआ। तब से बराबर चीन और तिब्बत का [illegible] और अधिकांश समय तिब्बत चीन का एक भाग बनकर रहा। तिब्बती लोगों के हृदय में हमेशा चीन के प्रति मधुर भाव रहा। वर्तमान शताब्दी में चीन की कमजोरियों से फायदा उठाकर अंग्रेजों ने तिब्बत में टाँग फैलानी चाही। माओ के नेतृत्व में नये चीन को उठते हुए देखकर कोशिश की कि तिब्बत चीनी गणराज्य में सम्मिलित न हो। लेकिन, माओ ने बडी शान्ति से काम लिया। दूसरा कोई राष्ट्रनेता होता, तो तिब्बत के प्रतिक्रियावादी सामन्तो के रवैये को देख झुँझलाकर जल्दी कर बैठता और उसका फल भोलेभाले हजारो तिब्बतियो को प्राणों से हाथ धोना होता। माओ चे-तुग ने बडी सावधानी और ठडे दिल से काम लिया। अन्त मे षड्यंत्रियों को मुँह की खानी पडी और समझौता हो गया। जन-मुक्ति-सेना का ल्हासा मे बडा स्वागत हुआ, यह हम कह चुके है। तिब्बत के शासक दलाई लामा एक बडे धार्मिक नेता हैं, और धार्मिक नेता के तौर पर पण्-छेन लामा का भी वहाँ बहुत प्रभाव और सम्मान है। पिछले पण्-छेन् और दलाई लामा के बीच भयकर झगडा खडा हो गया, जिसमे अग्रेजो का कम हाथ नही था, और जिसके कारण पण् छेन् लामा को तिब्बत से भागकर चीन चला जाना पडा। दोनो लामाओ की जगह पर उनके नये उत्तराधिकारी बैठे, तो भी वह झगडा खतम होने का नाम नही लेता था। लेकिन, वह असम्भव काम नये चीन ने करके दिखाया। अप्रैल 1952 मे चौदहवे दलाई लामा ने ल्हासा के अपने पोतला प्रासाद मे दसवे पण् छेन् लामा का स्वागत किया। 28 वर्ष का वैमनस्य समाप्त हो गया। 28 वर्ष तक अपने लामा से सूना टशी ल्हुन्पो का मठ अब फिर अपने लामा को पाकर फूला नही समाता।

तिब्बत मे भी उसी तरह हर क्षेत्र में काम हो रहा है, जिस तरह सिंग-क्याग मे। तिब्बत मे अनाज की बहुत कमी है, और वहाँ बहुत सा अनाज अपने दक्षिणी पडोसी भारत और नेपाल मे जाता था। जन-मुक्ति-सेना ने वहाँ आते ही जहाँ अपने मेल और भाईचारे मे दिखलाया कि वह तिब्बत जनता के साथ कितना सद्भाव रखती है, वहाँ साथ ही उसने इस बात की सफल कोशिश की है कि स्वय अधिक अन्न उपजाकर अपना ही खर्च पूरा न करे, बल्कि लोगो का भी दे। खास करके नहरो और बाँधो के बनाने मे वह बहुत भाग ले रही है। स्वीकृत नीति के अनुसार चीन किसी प्रकार के सुधार को लादने की कोशिश नही कर रहा है, बल्कि वहाँ के लोगो मे शिक्षा और दूसरे तरीको से वैसे भाव भर रहा है। यद्यपि चीन के दूसरे भागो मे भूमि-सुधार का काम पूरा हो गया है—हान् जाति के भूभाग मे तो वह कब का पूरा हो गया—लेकिन, अभी तिब्बत मे उसे लागू नही किया गया, उसके बारे मे निर्णय करना तिब्बती लोगो के हाथ मे छोड दिया गया है। भूमि-सुधार हो करके रहेगा, इसमे शक नहीं, लेकिन उसके बारे मे चीन जल्दी नही करना चाहता। तिब्बती लोगों की शासन-व्यवस्था मे भी लोगो के भावो का ध्यान रक्खा गया है यद्यपि उसमें भ्रष्टाचार और रिश्वत को खतम कर दिया गया है। तिब्बती लोग अपने (बौद्ध) धर्म का पालन करने के लिए स्वतत्र है। अध्यक्ष माओ चे-तुग ने उस दिन 1400 वर्ष पुराने ल्हासा के प्रधान मन्दिर के लिए दो सोने के दीपक भेजे, जिसके लिए तिब्बती भिक्षु और लामा उनकी जय-जयकार करते नही थकते। वहाँ के मठो और मन्दिरो को सरक्षण दिया गया है, और वह अपने क्रियाकलाप को यथाविधि चला रहे है। जन-मुक्ति सेना तिब्बत मे आकर अपने नियम को पूरी तौर से पालन करती हुई एक सूई या धागा भी बिना दाम के लोगो से नही लेती। फसल के समय सैनिक किसानो के काम मे मदद देते है और उनके बदले मे कुछ नही लेते। बार-बरदारी या दूसरे काम के लिए बेकार उठा दी गई और हरेक काम के लिए पूरी मजूरी दी जाती है।

तिब्बत की आमदनी का एक सबसे बडा जरिया ऊन है, जिसे चीन के साथ समझौता हो जाने के बाद जिसे पुराने खरीदार—अमरिकन और अग्रेज—खरीदने से इन्कार करके लोगो को आफत मे डालना चाहते थे, लेकिन केन्द्रीय जन सरकार ने 1951 से सरकारी व्यापार कम्पनी द्वारा ऊन की खरीद का काम शुरू कर दिया। सरकारी कम्पनी ने विदेशियो की अपेक्षा दूना दाम दिया। इसके अतिरिक्त किसानो और ल्हासा के आसपास के 21 युन-चुग (जिलो) और शीये (इलाको) को बिना सूद का कर्ज दिया गया है। पिछले दो सालो मे ल्हासा, शिगर्चे और ग्याची के आसपास के इलाको मे 50 करोड युआन् कर्ज दिया गया है। 1953 मे यह रकम 390

[illegible] आयगा। चीन जन-बैंक की शाखाएँ ल्हासा, शिगर्चे और ग्यांची में खुल गई हैं। पहले तिब्बती व्यापार के लिए विदेशी, विशेषकर भारतीय सिक्के प्राप्त करना कड़ी समस्या थी, लेकिन अब बैंकों से सिक्के बहुत आसानी से मिल जाते हैं, जिसके कारण व्यापार में बहुत वृद्धि हुई है। चीन की चाय को तिब्बती लोग बहुत पसन्द करते थे और उसके न मिलने पर ही वह भारत की ओर हाथ फैलाते थे। तिब्बती व्यापारियों को चीन से चाय मँगाने का इतना सुभीता हो गया है, कि अभी ल्हासा तक ठेठ मोटर की सड़क न बन जाने पर भी चाय का मूल्य एक-तिहाई हो गया है। व्यापार के सौदे की मात्रा का परिमाण पहले से डेढ गुना है और व्यापारी 15 से 30 सैकड़ा तक लाभ उठाते हैं। नेपाली व्यापारियों का तो कहना है कि इतना लाभ का और सुरक्षित व्यापार बहुत वर्षो के बाद होने लगा है।

तिब्बत में स्वास्थ्य की ओर खास तौर से ध्यान दिया गया है। केवल ल्हासा शहर मे अगस्त 1952 से मार्च, 1953 तक वहाँ के नवस्थापित अस्पताल में 27 हजार रोगी गये और सलाह लेनेवाले 70 हजार से ऊपर थे। केन्द्रीय सरकार ने पिछले दो वर्षो मे तिब्बत में 13 करोड युआन् स्वास्थ्य पर खर्च किया। ल्हासा मे टीका देने के लिए सेरम बनाने की फैक्टरी खुल गई है। ल्हासा, शिगचे और ग्याची मे ही नही, बल्कि बहुत दूर-दूर के स्थानों में स्वास्थ्य-रक्षा का प्रबन्ध करते हुए वहाँ ओषधालय या अस्पताल खोले गये है। जहाँ जन-मुक्ति-सेना की छावनियाँ हैं, वहाँ जन-चिकित्सा का भी प्रबन्ध किया गया है।

तिब्बत शिक्षा मे बहुत पिछडा हुआ देश है। एक तरह से शिक्षा मठो मे लामाओ और सामन्त की ही इजारादारी थी। सामन्तो के घरों में प्राइवेट अध्यापक पढाया करते थे। मठों मे पुराने ढग की पढाई का इन्तजाम था। लेकिन अब शिक्षा-प्रचार के लिए काफी ध्यान दिया जाने लगा है। अगस्त 1952 में ल्हासा मे एक स्कूल खोला गया, जिसमें आठ महीनों के भीतर ही 619 लडके-लडकियाँ दाखिल हो गये। शिक्षा का माध्यम अध्यक्ष माओ की नीति के अनुसार विद्यार्थियो की मातृभाषा अर्थात् तिब्बती है। चाहे तो हान (चीनी) भाषा भी पढ सकते है। नये ढग की पाठय-पुस्तकों का तिब्बत मे पहले अभाव था। अब पुस्तके भी तैयार हो गई है। स्कूलों मे तिब्बत के बुद्धिजीवी और शिक्षित लामा (भिक्षु) शिक्षक का काम कर रहे है। स्कूल की तरफ दलाई-लामा का भी विशेष ध्यान है। अक्तूबर, 1952 में उन्होंने उसके लिए अपना एक निजी बगीचा तथा 20 करोड युआन् नगद दान दिया और स्कूलों के अध्यापकों के सम्मान मे एक भोज दिया। जन-मुक्ति-सेना के क्षेत्रीय हेडक्वार्टर ने तिब्बती भाषा के पढाने तथा हान् कमितीकी शिक्षा के लिए एक स्कूल खोला है, जिसमें अच्छे-अच्छे योग्य गेशे (आचार्य), छोय डग् (धर्मकीर्ति) जैसे अच्छे-अच्छे तिब्बती विद्वान् शिक्षक है। तिब्बती भाषा मे सचित्र मासिक पत्रिका भी निकलने लगी। मोटर की सडके पूर्वी और उत्तरी सीमान्त से मानसरोवर तक बडी तेजी से बन रही है, जिनके तैयार होते ही समाचार-पत्रो का प्रचार और भी बढ जायगा और डाक बडी तेजी से एक जगह से दूसरी जगह जाने लगेगी।

सभी जातियों की समानता की ओर अध्यक्ष माओ का उसी तरह ध्यान है, जिस तरह सोवियत रूस मे साथी स्तालिन ध्यान रखते थे। जन-मुक्ति-सेना मे अफसर और सैनिक सभी जातियो के एकसाथ रहते है, जिनमे कितने ही तिब्बती भाषा-भाषी भी है। उनका भाईचारे और समानता का भाव केवल सेनिकों तक ही सीमित नही है, बल्कि वह तिब्बती जन-साधारण के साथ बहुत घुले-मिले है। जाकर उनके साथ खेतो मे काम करते है, साथ फावडा चलाते, नहरे और बाँध बनाते है, उनके नाचो और उत्सवो मे भाई-भाई की तरह शामिल होते है और अपने आचरण से बतलाते है कि चीन गणराज्य की सभी जातियाँ एक समान है। जन-मुक्ति-सेना में दूसरे अफसरो के समान दो तिब्बती उपकमाण्डर बनाये गये हैं, और अफसरो की शिक्षा के लिए विशेष प्रबन्ध किया गया है।

जन-मुक्ति-सेना यही नही करती कि वह कोई चीज भी लोगो से विना दाम के नही लेती, बल्कि अपने खाने के लिए अनाज स्वय पैदा करना उसका ध्येय है। 1953 के आरम्भ तक उसने 30 हजार माउ (5 हजार एकड) जमीन अपने लिए नई आबाद की, और 120 ली (40 मील) लम्बी नहरे खोदी। उन्होंने ऐसी जगह अनाज और साग-सब्जी की बहुत भारी फसल पेदा की, जहाँ पहले कुछ नही होता या हो सकता था। तिब्बती

किसानों को वह खेती के नये-नये ढंग को सिखा रही है। जन-मुक्ति-सेना ने कितनी ही नई तरह की सब्जियाँ और फल लाकर तिब्बत में लगाई हैं। उनका अनुकरण करते तिब्बती किसान भी परती जमीन को आबाद करके फसल बढ़ाने लगे हैं। एक जगह उन्होंने 1 हजार माउ (167 एकड़) नये खेत आबाद किये।

चीन के भिन्न-भिन्न स्थानों में किस तरह जनता नव-निर्माण के विशाल काम में लगी हुई है, इसे देखने के लिए तिब्बती प्रतिनिधिमण्डल वहाँ आ-जा रहे हैं, उनमें से कितने ही पेकिंग जा चुके हैं। कुछ ने आकर भीतरी मंगोलीय स्वायत्त भूक्षेत्र के बड़े-बड़े निर्माणों को अपनी आँखों देखा—मंगोल लोगों के लिए ल्हासा काबा है, जहाँ सैकड़ों वर्षों से वहाँ के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाया करते थे, और तिब्बती भाषा जहाँ एक तरह से धर्मभाषा है, जिसके जाननेवाले हर जगह कुछ-न-कुछ मिल जाते हैं। तिब्बती लोग अब चीन गणराज्य के स्वतन्त्र नागरिक के तौर पर दुनिया के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ रहे हैं। दलाई लामा की बहन जेचुनमा वीना के विश्वशान्ति-सम्मेलन में शामिल हुई थी और लौटकर उसने कहा : "वीना से लौटने के बाद मुझे शान्ति और जनतन्त्रता के विश्व कैम्प की महान् शक्ति का पता लगा। मैं अपनी मातृभूमि को और भी अधिक प्यार करती हूँ। मुझे पूरी तौर से विश्वास है कि विश्वशान्ति की रक्षा के लिए मेरा देश निर्णायक पार्ट अदा करेगा।" स्तालिन के निधन के उपलक्ष्य में 1953 के मार्च में एक बड़ी प्रार्थना-सभा हुई थी, जिसमें दलाई लामा स्वयं शामिल हुए, उसमें 20 हजार लामाओं ने भाग लिया था।

इस प्रकार मालूम होगा कि नवीन चीन केवल महान् हान् (चीनी) जाति को ही आगे बढ़ाकर दुनिया के शक्तिशाली, समृद्ध और सुसंस्कृत जातियों की पहली पंक्ति में लाने की कोशिश नहीं कर रहा है, बल्कि वह तिब्बत जैसे पिछड़ी जातियों को आगे बढ़ा रहा है। इसमें शक नहीं, अगले दस वर्षों में तिब्बत भारत को बहुत-सी बातों में पीछे छोड़ जायगा। हमेशा से कैलास-मानसरोवर जाने के मुक्त रास्ते पर भारत सरकार अब निर्बन्ध लगा रही है, और तीर्थ-यात्रियों के जाने में हर तरह की अड़चन पैदा कर रही है; लेकिन जो लोग जाते हैं, वहाँ से दूसरा ही भाव लेकर आते हैं। 1952 की वर्षा में गये हुए कैलास-मानसरोवर के यात्रियों ने बतलाया कि वहाँ सैकड़ों एकड नंगी धरती में फसल की हरियाली लहरा रही है, जगह-जगह सड़कें और वैमानिक अड्डे बनाये जा रहे हैं, नये गाँव आबाद हो रहे हैं। मानसरोवर के एक विहार की सैकड़ों फीट ऊँची एक लाट गिर गई। उसके लिए पेड़ लाने के वास्ते मुक्ति-सेना के सैनिकों ने स्वयं काम किया। अव बैटरीवाले रेडियो इस दुनिया में 15,000 फीट ऊँची वस्तियों में दिखाई पड़ रहे हैं।

20

कोरिया-युद्ध, निर्वाचन और सरकार

1. कोरिया युद्ध में चीन क्यों ?

अमेरिकन साम्राज्यवाद सारी दुनिया में अपना पंजा फैलाये सारी दुनिया की जातियों को ग्रसने के लिए राहू बना हुआ है। चीन में उसने इसी के लिए च्यांग काइ-शेक की पीठ ठोकी, लेकिन उसे मुँह की खानी पड़ी। परन्तु, वह इससे हार माननेवाला नहीं है। जून, 1950 में चीन के ताइवान (फारमूसा) द्वीप पर उसने अपनी नौसेना के बल पर कब्जा कर लिया, और च्यांग काइ-शेक और उसके साथी भगोड़ों को वहाँ ले जाकर रक्खा है। कोरिया लड़ाई के समय से उत्तरी और दक्षिणी दो हिस्सों में बँटा है, जिसमें उत्तरी हिस्से में जहाँ बहुजनहिताय शासन हो रहा है, वहाँ दक्षिणी कोरिया में नाक तक भ्रष्टाचार में डूबे सिंगमन री और उसके गुर्गों का खूनी शासन चल रहा है। सिंगमन री ने अपने को च्यांग का छोटा भाई सावित किया। उसकी सेना ने कम्युनिस्ट युद्ध-बन्दियों के साथ इस तरह के बर्बरतापूर्ण खूनी काण्ड किये, जिसके कारण अनेक बार अंग्रेज पत्रों और

कितने ही वहाँ के राजनीति में नरम विचार रखनेवाले नेताओं को भी खुलेआम विरोध करने के लिए मजबूर होना पड़ा। जब तक ताइवान अमेरिका का सैनिक अड्डा बना हुआ है, तब तक चीन कैसे अपने को सुरक्षित समझ सकता है ? लेकिन इधर जब अमेरिका ने हथियार के बल पर उत्तर कोरिया के जनतान्त्रिक शासन को मिटाकर उसे भी सिगमन री के खूनी हाथो मे देने के लिए चीन की सीमान्त पर अवस्थित यालू नदी तक अपनी सेनाएँ भेज दीं, और अमेरिकन सैनिक विभागो ने चीनी सीमा के भीतर बसे शान्त गाँवों और नगरों पर बम गिराये, तो चीन का धैर्य टूट गया। अक्तूबर, 1950 मे अमेरिकनों ने उत्तरी चीन की राजधानी प्योंग-यांग पर अधिकार कर लिया, और यालू तथा तूमेन की सीमान्त नदियो पर अपने सैनिक भारी सख्या में पहुँचाए। खतरे को सामने देखकर जब चीन के नेताओं ने पुकार की तो जनता मे देशरक्षा के लिए अद्भुत जोश उमड़ पडा और धडाधड लोग कोरियन जन-सेना के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर अमेरिकन जगबाजो और उसके पिट्ठू री के साथ लडने के लिए स्वयसेवक सेना मे भरती होने लगे। उन्होने अमेरिकनो की खूब खबर ली और वह भागकर दक्षिणी कोरिया के भीतर घूमने के लिए मजबूर हुए।

कोरिया युद्ध के बारे मे चीन के जननायको के भाषणो से हम अच्छी तरह जान सकते हैं

(1) **माओ चे-तुंग का भाषण** (1951)–23 अक्तूबर, 1951 को राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की प्रथम जातीय कमेटी के तीसरे अधिवेशन मे भाषण देते हुए अध्यक्ष माओ ने कहा था* :

" इस बैठक मे जातीय कमेटी के सदस्यो के अतिरिक्त चीनी जनता स्वयसवेक और जन-मुक्ति-सेना के प्रतिनिधि, उद्योग और कृषि के आदर्श कमकर, पुराने क्रान्तिकारी, आधार-स्थानो के प्रतिनिधि, शिक्षा, साहित्य और कला के कर्मी, उद्योगपति और व्यापारी, भिन्न-भिन्न क्षेत्रो के विशेषज्ञ, भिन्न भिन्न धर्मो और अल्पमत जातियों के प्रतिनिधि, समुद्रपार के चीनियो, महिलाओ और तरुणों के प्रतिनिधि, प्रादेशिक और नगर-पालिकीय सलाहकार कमेटियो तथा दूसरे गिरोहो के प्रतिनिधि एव बहुत-से सरकारी कर्मचारी उपस्थित है।

" अमेरिकन आक्रमण-विरोध कोरिया-सहायता-आन्दोलन, भूमि-सुधार-आन्दोलन और क्रान्ति विरोधी-शमन-आन्दोलन–इन तीनो आन्दोलनों ने बडी सफलता प्राप्त की है। चीन के मुख्य भूभाग मे क्रान्ति-विरोधियो के अवशेषो की समाप्ति पूरी तौर से बहुत जल्दी होनेवाली है। कुछ अल्पमत जातियो को छोडकर बाकी सारे देश मे भूमि-सुधार आन्दोलन 1952 तक पूरी तौर से कार्यरूप मे परिणत हो जायगा। सारी चीनी जनता कभी इतनी एकताबद्ध नही हुई थी, जितनी कि अमेरिकन आक्रमण-विरोध-कोरिया-सहायता के आन्दोलन मे वह देखी जा रही है। चीनी जनता के स्वय सेवक अपनी जनता के जबर्दस्त सकल्प को प्रकट करते हुए कोरियन जनसेना के साथ मिलकर अमेरिका के कोरियन जनतान्त्रिक जनगणराज्य के आक्रमण करने की पागलपन की योजना तथा चीन की मुक्त भूमि के भीतर घुमने के प्रयत्न का मुँहतोड जवाब दे रहे है। उनकी कार्रवाइयो ने कोरिया, चीन और एशिया की जनता एव सारे ससार की शान्तिप्रिय दूसरी जनता के हृदय मे उत्साह पैदा कर दिया है, और उनके मन मे शान्ति रक्षा और आक्रमण-प्रतिरोध के विषय मे विश्वास जमा दिया है। हम उनका अभिनन्दन करते वीर चीनी जनता के वीर स्वयसेवको तथा कोरियन जन-सेना के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं।

" अमेरिकन-आक्रमण प्रतिरोध-कोरिया-सहायता का महान् सघर्ष इस वक्त लगातार जारी है। इसे तब तक जारी रखना होगा, जब तक कि सयुक्त राष्ट्र की सरकार समस्या का शान्तिपूर्वक हल करने के लिए तैयार नही होती। हम किसी देश की एक इच जमीन को दबाने की इच्छा नही रखते। हम केवल अपने देश के साम्राज्यावादी आक्रमण का प्रतिरोध कर रहे है। सभी जानते हैं, यदि अमेरिकन सेनाओ ने हमारे ताइवान (फारमूसा) पर कब्जा न किया होता, कोरियन जनतान्त्रिक जन-गणराज्य पर चढ़ाई न की होती, और अपने आक्रमण को हमारे उत्तरी-पूर्वी सीमान्त तक न पहुँचा दिया होता, तो चीनी जनता सयुक्त-राज्य की सेनाओ के साथ आज न लडती होती। किन्तु जब अमेरिकन आक्रमणकारियो ने हमारे ऊपर हमला कर दिया तो आक्रमण-प्रतिरोध का झडा उठाये बिना हम कैसे रह सकते है ? वैसा करना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक और पूर्णतया न्याय्य

* New China Forges Ahead pp 1-4

था। हमारा सारा देश इसे आवश्यक और न्यायोचित स्वीकार करता है।

" हमने बहुत पहले से कह रक्खा है कि कोरिया का प्रश्न शान्तिपूर्ण साधनो से हल किया जा सकता है। अब भी हम उस बात पर खड़े हैं। यदि संयुक्त राज्य की सरकार न्यायोचित तथा समझदारी के आधार पर इस प्रश्न को हल करने के लिए अपने को इच्छुक दिखलाएं, यदि वह अब तक के समझौते की बातचीत को रोकने या देर करने के हर तरह के सम्भव निर्लज्जतापूर्ण बातें करना छोड़ दे तो कोरिया का युद्ध-विराम-सम्बन्धी समझौता हो सकता है; नही तो वह असम्भव है।

(2) चू-तेह का भाषण–" यथार्थ मे ताइवान के विरुद्ध अमेरिकन साम्राज्यवाद का आक्रमण, हमारे देश के विरुद्ध हथियारबन्द आक्रमण अमेरिकन षड्यन्त्र का एक अग है। कोरिया के विरुद्ध अमेरिकन आक्रमण का वास्तविक लक्ष्य है, कोरिया से होकर हमारे उत्तर-पूर्व को खतरे मे डालना। जिस तरह पहले जापानी साम्राज्यवाद ने किया, उसी तरह वहाँ से अमेरिकन आक्रमणकारी सेना का हमारे देश पर हमला करना सम्भव है। अक्तूबर, 1950 मे कोरिया मे अमेरिकन आक्रमणकारी सेना ने हमारे देश की सीमा, यालू नदी के तट पर और तुमेन नदी के नजदीक तक बड़े भयकर रूप मे कूच कर दिया। अमेरिकन विमानो ने हमारे देश के उत्तर-पूर्वी सीमान्त पर बम बरसा हमारे देशबन्धुओं के जन-धन को हानि पहुँचाई। ऐसे भयकर खतरे के समय हमारे देश के लोग अमेरिकन आक्रमण के प्रतिरोध मे कोरिया की सहायता करने के लिए स्वयसेवक सेनाओ को बना हमारे घरो और हमारे देश की रक्षा करने एव अमेरिकन आक्रमणकारियो के विरुद्ध कोरियन लोक-सेना के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ना छोड़ और कुछ नही कर सकते थे।

" कोरिया के आक्रमण-विरोधी मोर्चे पर हमारी स्वयसेवक-सेनाएँ अत्यन्त वीरता और दृढ़ता का परिचय दे रही है। अमेरिकन आक्रमणकारियो के विमानो, टैको तोपखानो के बहुत अधिक शक्तिशाली होते, अमेरिकन वायुवाहिनी की क्रूरतापूर्ण बम-वर्षा द्वारा पैदा की गई कठिनाइयो के होते भी 25 अक्तूबर, 1950 से कन्धे से कन्धा मिला अगले पाँच अभियानो मे चीनी जन स्वयसेवक और कोरियन जन-सेना ने पाच बड़ी विजय प्राप्त की। उस समय से वर्तमान (1951 ई.) वर्ष के 3 जून तक कोरियन लोक-सेना और चीनी लोक स्वयसेवको ने 193 शत्रु सेना को नष्ट किया, जिसमे 89 हजार से अधिक आक्रमणकारी अमेरिकन सेनाएँ थी।

उत्तर कोरिया पर अधिकार करने और हमारे उत्तर-पूर्व पर चढ़ाई करने की अमेरिकन आक्रमणकारियो की दुरभिसन्धिपूर्ण योजना चूर-चूर कर दी गई, और प्राची मे आक्रमण नीतिक कुख्यात अमेरिकन महान अपराधी मैक आर्थर इस पराजय के बाद अपने पद से निकाल दिया गया। अमेरिकन आक्रमणकारी सेना के लिए कोरिया से हटाने के सिवा और कोई रास्ता नही है। चीन की वीर जनता आक्रमण को दूर हटाने के लिए कोरियन जनता की अवश्य सहायता करेगी, जिससे कि चीन के उत्तर पूर्वी सीमान्त की सुरक्षा हो सके। हम अवश्य इस यशस्कर कर्तव्य को पूरा करेंगे।"

(3) पेंग चेन् का वक्तव्य : कोरिया के संघर्ष के बारे मे चीन के जनमत को स्पष्टतया प्रकट करते हुए चीनी विश्वशान्ति कमेटी के उप-सभापति पेंग चेन् ने 24 अक्तूबर, 1951 को कहा था :

" 25 अक्तूबर, 1950 को चीनी जनता के स्वयसेवकों ने कोरिया मे लड़ना शुरू किया। मुक्ति युद्ध मे हमारी विजय और चीन के मुख्य भूभाग से अमेरिकन आक्रमणकारी सेनाओ के भगा देने के बाद साम्राज्यवादी प्रतिरोध के खिलाफ चीनी जनता की दूसरी बड़ी लड़ाई है यह संघर्ष।

" पिछले साल चीनी जनता के स्वयसेवकों ने कोरियन जन सेना के साथ मिलकर कोरियन मोर्चे पर वीरतापूर्वक युद्ध करके बड़ी-बड़ी विजय प्राप्त की है। अक्तूबर, 1950 से 10 अक्तूबर, 1951 तक हमारे सैनिको तथा कोरियन जन-सेना ने शत्रु के 387 हजार सैनिको को हताहत या बन्दी किया जिनमे 176 हजार अमेरिकन सैनिक भी हैं। उन्होंने 2,310 शत्रु-विमानो को गिराया, नुकसान पहुँचाया या अपने अधिकार मे कर लिया। शत्रु से भिन्न-भिन्न प्रकार के अनगिनत हथियारो को छीना। चीनी और कोरियन योद्धाओं के जबर्दस्त प्रहार के कारण अमेरिकन आक्रमणकारी तथा उसके पिट्ठू और गुड़िया सेनाएँ ढकेलकर वहाँ पहुँचा दी गई है, जहाँ से उन्होंने चढ़ाई शुरू की—अर्थात 38वी अक्षांश रेखा तक।

" कोरियन युद्ध में जो विजय प्राप्त हुई है, उन्होंने बतला दिया कि अमेरिकन साम्राज्यवाद बाहर से मजबूत किन्तु भीतर से कमजोर है। वस्तुतः वह केवल 'कागज का बाघ' है और उसके आक्रमण को असफल बनाया जा सकता है।

" पहली बात यह कि हमारी विजयों के कारण अमेरिकन साम्राज्यवाद को कोरिया में असाधारण रूप से अधिकाधिक हानि उठानी पड़ी है। 170 हजार से अधिक अमेरिकन सेना को युद्ध के लिए बेकार बना देने का अर्थ यह है कि एक साल से भी कम अर्से में अमेरिकन सेना को जितने परिमाण में बेकार किया गया, वह प्रशान्तसागर युद्ध के पहले साल की अमेरिकन सैनिक क्षति का तीन गुना है। 25 अक्तूबर, 1950 के आगे के पहले तीन महीनों में औसतन 21 हजार सेना की हानि शत्रु को प्रति मास उठानी पड़ रही थी। चौथे से सातवें महीने मे मासिक औसत बढ़कर 31 हजार हो गई। आठवें से ग्यारहवें महीने में यह औसत 40 हजार 6 सौ प्रति मास पहुँच गई। 10 अक्तूबर को समाप्त होनेवाले एक पखवारे में शत्रु की हानि 35 हजार तक पहुँच गई, जिसका अर्थ है कि पहले तीन महीने में औमत 3.3 गुना हो गया।

" दूसरी बात यह भी ध्यान में रखने लायक है, कि हमने शत्रु के सैनिक साधनों और अपने साधनों के बीच बहुत असमानता रहते भी यह विजय प्राप्त की है। यह सब होने पर भी हमारे स्वयसेवकों और कोरियन जन-सेना ने मैक-आर्थर की कमाड में लड़ती आक्रमणकारी फौजों को यालू नदी से ढकेलकर 38वी अक्षांश रेखा पर पहुँचा दिया है।... "

28 जून, 1950 को ही अध्यक्ष माओ चे-तुंग ने बतला दिया था : "कोरिया, फिलिपीन, वियतनाम और दूसरे देशों के भीतरी मामलों में दखल देने के लिए अमेरिका का कोई अधिकार नहीं है। सारे चीन की जनता तथा सारी दुनिया की जनता की भारी संख्या की सहानुभूति आक्रमण के शिकार होनेवाले लोगों की ओर होगी, वह हर्गिज अमेरिकन साम्राज्यवाद की ओर नही होगी।... "

अमेरिकन साम्राज्यवादियों का हौसला बहुत बढ़ गया था। वह समझते थे कि हम हर जगह की तरह चीन के साथ भी अपनी मनमानी कर सकते है। इस बात को च्याग काइ-शेक को हराकर चीनी जनता ने बेहूदा साबित कर दिया था, लेकिन ट्रूमन ने फिर भी कोरिया मे हस्तक्षेप करके चीनी सीमान्त तक पहुँचने में आनाकानी नहीं की। ट्रूमन और उसके साम्राज्यवादी सहकारियों ने जिस आततायीपन का परिचय हिरोशिमा और नागासाकी जैसे अशिक्षित नगरों की लाखों जनता के ऊपर अणुबम गिराकर दिया था, उसकी पुनरावृत्ति उन्होंने कोरिया और मचूरिया के कुछ स्थानों मे कीटाणु गिराकर की। उन्होंने समझा था कि इस प्रकार महामारी फैलाकर हम चीन को घुटने टेकने के लिए मजबूर करेंगे। लेकिन चीन सब तरह के हथियारों से अपनी प्रतिरक्षा कर सकता है, इसे उसने इन महामारी के कीटाणुओं को अपने उपायों द्वारा बेकार करके साबित कर दिया। अमेरिकन आततायी दुनिया के सामने खुलकर यह कहने की हिम्मत नही रखते : 'हाँ, हम सचमुच कीटाणुबम गिरा रहे हैं।' लेकिन उनके अपने अफसरों ने स्वीकार किया कि हमने अपने विमानों मे ढो-ढोकर कीटाणुबम गिराये हैं। अमेरिका और उसके पिट्ठू चाहे कितनी ही दुनिया की आँख मे धूल झोंकना चाहें, लेकिन दुनिया अब जानने लगी है, कि अमेरिकन साम्राज्यवाद और उसके थैलीशाह से बढ़कर मानवता का शत्रु 'न भूता न भविष्यति'। अब तक पश्चिमी साम्राज्यावादी देश एशिया को घास-मूल समझते थे, लेकिन उनके सरदार अमेरिका को नाकों चने चबवाकर चीन ने दिखला दिया कि अब वह एशिया नहीं है, जिसके साथ 'निर्बल की जोरू सारे गाँव की भाभी' जैसा बर्ताव कर सकते हैं। वियतमिन के वीर योद्धाओं ने भी इसी बात को फ्रान्स के सामने साबित कर दिखलाया है।

पिछले महायुद्ध से भी अधिक संख्या मे अपने पुत्रों को मारे जाते देखकर अमेरिका घबरा उठा है और घबराहट का परिणाम हुआ ट्रूमन को हराकर आइजनहावर का प्रेसीडेंट चुना जाना। आइजनहावर ने अपने निर्वाचन के व्याख्यानों में लोगों के सामने साफ कहा था कि हम कोरिया के युद्ध को बन्द करेंगे। लेकिन, दुनिया की सभी जोंकों की तरह निर्वाचन-भाषण केवल लोगों को धोखे में डालने के लिए होते हैं। आइजनहावर ट्रूमन से कम कसाई नहीं साबित हुआ। अब भी कोरिया में उसी तरह नृशंस काण्ड करते देखा जा रहा है। बेबस

अमेरिकन जनता छटपटा रही है, लेकिन उसके भीतर अभी यह हिम्मत नहीं कि आततायियों का शासन अपने देश में खतम करे।

(4) चाउ एन्-लाई का भाषण–दुनिया के साम्राज्यवादी हारी बाजी लड़ रहे है, यह इसी से मालूम होगा कि किसी जगह भी यह पहल नहीं कर पाते। आइजनहावर को अपनी प्रतिरक्षा भूलते और अमेरिकन जनता को लड़ाई की क्षति को देखकर घबराते पा यहाँ पर भी पहल चीन ने की; जबकि प्रधानमन्त्री चाउ एन्-लाई ने कोरिया में युद्ध बन्द करने के लिए अपना वक्तव्य 30 मार्च, 1953 को निकाला। सारी दुनिया बड़ी उत्सुकता के साथ प्रधानमन्त्री के वक्तव्य को पढने लगी, लाखों अमेरिकन घरो मे उसके कारण आशा का सचार हो गया और मुट्ठी-भर अमेरिकन कसाई साम्राज्यवादियों के घर मे उदासी छा गई। वह बहुतेरा चाउ के भाषण को टरकाने की कोशिश करते थे, लेकिन उनकी जनता नही, बल्कि कोरिया के कसाईखाने मे खून से हाथ रंगनेवाले इग्लैण्ड आदि जैसे अमेरिकन सहकारियो ने भी चाउ के भाषण का स्वागत करते हुए अमेरिका पर जोर देना शुरू किया, जिसके कारण समझौते के लिए फिर बात शुरू हुई। प्रधानमन्त्री चाउ ने कहा था :

" चीन जन-गणराज्य की केन्द्रीय जन-सरकार और कोरियन लोकशाही जन-गणराज्य की सरकार ने साथ मिलकर सयुक्त-राष्ट्र कमाड के मुख्य कमाडर जनरल मार्क क्लार्क के युद्ध के समय दोनो तरफ के लडाई के बीमार तथा घायल बन्दियों के विनिमय के सम्बन्ध में 22 फरवरी, 1953 के भेजे प्रस्ताव का अध्ययन किया और दोनो की इस बारे मे एक राय है कि 1949 के जेनेवा समझौते की 109 धारा के अनुसार यह प्रश्न समझदारी के साथ हल किया जाना बिलकुल सम्भव है। युद्ध के घायल और बन्दियो के विनिमय के प्रश्न का समझदारी के साथ हल होना युद्ध-बन्दियो के सारे प्रश्न का सुगमता से हल करने मे सहायक होगा। इसलिए हमारी राय है कि कोरिया में लडाई को बन्द करने तथा विराम-सन्धि करने के लिए युद्ध-बन्दियों के सारे प्रश्न के हल करने का ठीक समय आ गया है।

" ...दोनो सरकारे इस बात मे एकराय है कि युद्ध-विराम की बातचीत करने के लिए कोरियन जन-सेना तथा चीनी जनता के स्वयसेवको के प्रतिनिधियो और सयुक्त-राष्ट्र कमाड के प्रतिनिधियो को तुरन्त युद्ध विराम-सन्धि के बारे में बातचीत करनेवाले प्रतिनिधियो को लडाई के दौरान मे घायल और बीमार युद्धबन्दियो के विनिमय के प्रश्न पर तुरन्त बातचीत शुरू कर देनी चाहिए, और युद्धबन्दियों के सवाल के बारे मे सभी प्रकार के समझौतो का रास्ता ढूँढना चाहिए।

" पिछले एक साल से अधिक के समय मे कोरियन युद्ध-विराम समझौते की बातचीत कोरिया में युद्ध-विराम करने के लिए नीव रख चुकी है। कायेसांग और पुनमुनजान की बातचीत के दौरान मे दोनो ओर के प्रतिनिधि युद्धबन्दियो को छोडकर बाकी सभी प्रश्नो पर एकराय हो चुके है। पहली बात यह है कि कोरिया में लड़ाई बन्द करने के सवालो के बारे मे जिसकी सारी दुनिया को चिन्ता है–दोनो पक्ष स्वीकार कर चुके है कि इस युद्धविराम-सन्धि पर हस्ताक्षर होने के बारह घंटे बाद दोनो विरोधी पक्षो के कमाडर अपने अधीनस्थ सभी हथियारबन्द सेनाओ को स्थल, जल और वायु की सेनाओ की सभी इकाइयो और व्यक्तियो को लेते–कोरिया मे सभी तरह की विरोधी कार्रवाइयो को पूरी तौर से बन्द करने की आज्ञा देंगे और उसे कार्यरूप में परिणत करेंगे।

" दूसरी बात यह है कि दोनो पक्ष युद्ध-विराम की भिन्न-भिन्न महत्त्वपूर्ण शर्तो के बारे मे एकराय हो चुके है। सैनिक सीमारेखा के निश्चित करने और असैनिक भूमि के स्थापित करने के बारे में भी दोनो पक्ष एकराय हो चुके है, कि युद्ध-विराम-सन्धि के कार्यरूप मे परिणत होने के समय दोनो पक्षो के सम्पर्क की वास्तविक रेखा सैनिक सीमान्त रेखा होगी और यह कि उस रेखा से दो किलोमीटर पीछे दोनो ही पक्ष हटकर दोनो लडनेवाली सेनाओं के बीच मे असैनिक भूमि स्थापित करेंगे, जो कि फिर से झगडा होने के कारण होनेवाली दुर्घटनाओ को रोकने के लिए तटस्थ भूमि होगी। युद्ध-विराम-सन्धि के कार्यरूप में परिणत करने की देखरेख और युद्ध-विराम-सन्धि के तोडने के झगड़ों को ठीक करने के लिए दोनों पक्षो ने मजूर कर लिया है कि कोरियन जन-सेना के सर्वोच्च कमाडर तथा चीनी जनता के स्वयसेवको के कमाडर द्वारा नियुक्त पाँच ज्येष्ठ अफसरों,

एव संयुक्त राष्ट्र कमांड के कमाण्डर-इन-चीफ द्वारा नियुक्त पाँच ज्येष्ठ अफसरों का कमीशन युद्ध-विराम-सन्धि के कार्यरूप में परिणत करने के लिए देखरेख का जिम्मेदार होगा। उसी में युद्धबन्दियों के घर लौटाने की कमेटी की देखरेख और संचालन तथा युद्ध-विराम-सन्धि तोड़ने की किसी घटना का बातचीत द्वारा समझौता करने की कमेटी की देखरेख और संचालन भी शामिल होगा। दोनों पक्षों ने यह भी स्वीकार कर लिया है कि तटस्थ राष्ट्रों का एक निरीक्षक-कमीशन बनाया जायगा, जिसमें कोरियन जन-सेना सर्वोच्च कमांडर तथा चीनी स्वयं-सेवकों के कमांडर मिलकर पोलैन्ड और चकोस्लावाकिया के तटस्थ राष्ट्रों के प्रतिनिधि के तौर पर नियुक्त ज्येष्ठ अफसर एवं संयुक्तराष्ट्र कमांड के कमाण्डर-इन-चीफ द्वारा स्वीडन और स्विट्जरलैंड के तटस्थ राष्ट्रों के प्रतिनिधि के तौर पर नियुक्त दो ज्येष्ठ-अफसर होंगे। इस कमीशन के अधीन तटस्थ राष्ट्रों की निरीक्षण टोली बनाई जायगी, जो उपरोक्त राष्ट्रों द्वारा नियुक्त अफसरों की होगी। यह निरीक्षण टोलियाँ निम्न प्रवेश-बन्दरगाहों में रहेंगी : उत्तर कोरिया में सिनूइजू, चोंग जिन, हुग नाम, मनपो और सिनानजू एवं दक्षिणी कोरिया में इन्चोन, तयेगू, पूसान, कागनुग और कुनसान।" इनके अतिरिक्त दोनों पक्ष इस बात में भी सहमत हुए हैं कि दोनों पक्षों के सैनिक कमाण्डर इनके द्वारा अपने-अपने देशों की सरकारों के साथ सिफारिश करते हैं कि युद्ध-विराम-सन्धि पर हस्ताक्षर होने तथा अमल में लाये जाने के तीन महीने के भीतर दोनों पक्षों की ओर से नियुक्त किये हुए प्रतिनिधियों का उच्च स्तर पर एक राजनीतिक सम्मेलन कोरिया से सभी विदेशी सेनाओं के हटाने के सवाल पर बातचीत करके समझौता करने, कोरिया के प्रश्न को शान्तिपूर्वक सुलझाने के लिए होगा।

" कोरिया युद्ध विराम सम्बन्धी बातचीत करने के दौरान में केवल एक प्रश्न—युद्धबन्दियों का प्रश्न—कोरिया में सन्धि होने में रुकावट है। बल्कि इस प्रश्न के बारे में भी दोनों पक्ष युद्धबन्दियों को घर भेजने के सवाल को छोड़कर युद्ध विराम समझौते के मसौदे के युद्धबन्दी-सम्बन्धी प्रबन्धों के सम्बन्धी सभी निर्बन्धों पर एकराय हो चुके हैं। यदि कोरियन युद्धविराम की बातचीत पाँच महीने में टूट न गई होती, तो युद्धबन्दियों के घर लौटाने के इस प्रश्न पर भी बहुत पहले ही कोई हल प्राप्त हो गया होता।

" अब संयुक्त-राष्ट्र कमाण्डर ने जेनेवा समझौते की 109 धारा के अनुसार लड़ाई के दौरान में हुए बीमार और घायल युद्धबन्दियों के विनिमय के सवाल को हल करने के लिए प्रस्ताव किया है। इसके सम्बन्ध में हम समझते हैं कि बीमार और घायल युद्धबन्दियों के सवाल के ठीक से हल हो जाने के बाद युद्धबन्दियों के सारे प्रश्न का सुगमता से हल होना बिलकुल आसान हो जायगा, यदि दोनों पक्ष पारस्परिक दे-ले के देन भाव से कोरिया में युद्ध बन्द करने के लिए वास्तविक सद्भावना से प्रेरित हों।

" युद्धबन्दियों के प्रश्न के बारे में चीन जन-गणराज्य की सरकार और कोरिया जनतांत्रिक जन-गणराज्य की सरकार का हमेशा से यह विचार रहा है, और अब भी है कि 1949 के जेनेवा-समझौते, विशेषकर उसकी 118वीं धारा के अनुसार लड़ाई बन्द होने के बाद बिना देर किये युद्धबन्दियों को मुक्त कर देने और घर लौटा देने में ही वास्तविक हल प्राप्त हो सकता है, तो भी, यह बात सामने रखते हुए कि कोरिया में युद्ध-बन्द हुआ देखने के लिए एकमात्र बाधा अब इस प्रश्न के सम्बन्ध में दोनों पक्षों के बीच का मतभेद है और दुनिया की जनता की शान्ति की लालसा पूरी करने के लिए चीन जन-गणराज्य की सरकार और कोरिया जनतांत्रिक जन-गणराज्य की सरकार·· तैयार है। कोरिया में युद्ध बन्द होने के खयाल से इस प्रश्न के मतभेदों को हटाने के लिए कदम उठाने को तैयार हैं। इसी अभिप्राय से··· (दोनों सरकारें) दोनों दलों के सामने प्रस्ताव करती हैं कि समझौता शत्रुता बन्द होने के तुरन्त ही बाद अपने हाथ के उन सभी युद्धबन्दियों को देश लौटा दें, जो घर लौटना चाहते हैं, और बाकी युद्धबन्दियों को एक तटस्थ राज्य के हाथ में दे दें, जिसमें कि उनके घर लौटाने के सवाल का उचित हल निकाला जा सके।

" यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि इस प्रस्ताव को रखते हुए हम हर्गिज जेनेवा-समझौते की 118वीं धारा द्वारा बाद शत्रुता होने के बाद युद्धबन्दियों की मुक्ति और घर लौटाने के सिद्धान्त को हर्गिज तोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं, और न हम संयुक्तराष्ट्र कमाण्ड के इस दावे को स्वीकार करते हैं कि युद्ध-बन्दियों के भीतर ऐसे व्यक्ति हैं, जो घर लौटने से इन्कारी हैं।"

यह बम था जिसने साम्राज्यवादी कैम्प में खलबली मचा दी, और इच्छा न रखते हुए भी अमेरिकन थैलीशाहों के सरदार को फिर से समझौते की बातचीत करने के लिए मजबूर होना पड़ा। सारी बातें तै हो गईं और केवल समझौते पर हस्ताक्षर बाकी रह गया, जबकि अमेरिकन खूँखार दरिन्दों ने अपनी गुड़िया सिंगमन री को खड़ा कर दिया। वह समझौते को अव्वल तो किसी तरह मानने के लिए तैयार नहीं हुआ, और जब अमेरिकन जनता के जोर देने पर अमेरिकन तानाशाहों ने कुछ कड़ाई बरतनी चाही, तो भी सिंगमन री के साथ ऐसी शर्तों पर समझौता किया, जिसके कारण कोरिया में युद्ध बन्द होना फिर खटाई में पड़ गया। पर अन्त में विश्वमत के सामने सिर झुकाने के लिए मजबूर होना पड़ा, यद्यपि अमेरिकन जंगबाज भीतर से शान्ति को अपने लिए घातक समझते हैं।

2. सरकार का निर्वाचन

चीन जन-गणराज्य की जनप्रिय सरकार माओ चे-तुंग की अध्यक्षता में 1949 में ही स्थापित हो गई, यह हम बतला चुके हैं। यद्यपि उसमें जनता के हरेक पक्ष और हितों के प्रतिनिधि मौजूद हैं, और प्रतिनिधियों के पीछे भारी जनमत है, बहुत-से अपने-अपने स्थानों या इकाइयों द्वारा निर्वाचित भी हैं, लेकिन सारे देश में आम निर्वाचन द्वारा संसद् का चुनाव अभी नहीं हुआ था।

निर्वाचन के लिए चीन में बड़े जोर-शोर से तैयारी हुई है, और निर्वाचन का कानून बन चुका है।

(1) **निर्वाचन**–1 मार्च, 1953 को केन्द्रीय जन-सरकार परिषद् द्वारा स्वीकृत निर्वाचन-कानून को अध्यक्ष माओ चे-तुंग ने जारी कर दिया, जिसके कुछ मुख्य-मुख्य अंश है :

(1) जाति या नसल, स्त्री-पुरुष-भेद, पेशा, सामाजिक उत्पत्ति, धर्म, शिक्षा, सम्पत्ति के खयाल या निवासस्थान का बिना विचार करते अठारह वर्ष से ऊपरवाले सभी नागरिक वोट देने और चुने जाने का अधिकार रखते हैं।

(2) स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार हैं।

(3) निर्वाचक बहुमत वोट द्वारा अपने देपुतियों (संसद के सदस्यों) को लौटा सकते हैं।

(4) उम्मीदवारों को निर्वाचन के लिए खर्च नहीं करना होगा। सभी खर्च राज्य की ओर से दिये जाएँगे।

(5) शियाग (ग्राम समूह, तहसील या परगना) की सबसे छोटी सरकार से लेकर केन्द्रीय जन-सरकार तक सभी सरकारें निर्वाचित होंगी।

(6) चीन की जनसंख्या का करीब 14वाँ हिस्सा रखनेवाली अल्पमत जातियों के अखिल चीन जन-कांग्रेस (पार्लियामेंट में) 150 सदस्य होंगे, जो कि सारे पार्लियामेंट-सदस्यों का 7वाँ भाग है।

(7) समुद्रपार के चीनियों को पार्लियामेंट में 30 सीटें मिलेंगी।

इस निर्वाचन-कानून के जारी करने के साथ चीन मानव-इतिहास के सबसे बड़े निर्वाचन की तैयारी करने लगा। आज वहाँ की 50 करोड़ जनता अपने प्रतिनिधि चुन रही है।

यद्यपि पार्लियामेंट का देशव्यापी निर्वाचन अब होने जा रहा है, लेकिन निर्वाचन-प्रणाली वहाँ हमेशा से कम्युनिस्ट पार्टी अपनाये रही। गाँव से लेकर अपने सारे मुक्त क्षेत्र के लिए वह निर्वाचित सदस्यों की सरकार बनाया करती थी, जिसके कारण चीनी जनता निर्वाचन-प्रथा से पूर्णतया अभ्यस्त है। पिछले तीन वर्षों में सभी प्रदेशों, नगरों, जिलों, शियांगों (तहसीलों) में अपने-अपने सर्वमण्डल जन-प्रतिनिधि सम्मेलन निर्वाचित हुए थे। 1952 की रिपोर्टों के अनुसार सारे देश में 1 करोड़ 36 लाख 37 हजार निर्वाचन प्रतिनिधि थे, जिसमें 80 सैकड़ा तक जनता द्वारा सीधे निर्वाचित थे। शान्सी, होपेइ और शान्तुंग प्रदेश पहले मुक्त हुए थे, वहाँ 90 सैकड़ा तक प्रतिनिधि सीधे निर्वाचित हुए थे। कियांग-सी और जेचुआन जैसे बहुत पीछे मुक्त हुए प्रदेशों में भी 80 सैकड़ा प्रतिनिधि निर्वाचित थे।

देश के 29 प्रदेशों में से 20, 159 नगरों में से 109 और 2,129 जिलों में से 811 के अपने जन-प्रतिनिधि सम्मेलन शासन का काम करते हैं। 2 लाख 80 हजार शियांग (तहसील) में सारे देश के किसान प्रतिनिधि सम्मेलन

या जन-प्रतिनिधि सम्मेलन अपना काम करते है। अल्पमत जातियो के इलाको मं भी, जहाँ पिछड़ेपन के कारण बहुत-सी कठिनाइयाँ हैं, वहाँ के लोगों ने अपनी जन-सरकार परिषद् के लिए मेम्बर चुने।

6 जून, 1950 को पार्टी की 7वीं काग्रेस के तीसरे अधिवेशन मे भाषण देते हुए अध्यक्ष माओ चे-तुंग ने कहा था : "हमें सभी हलको के जन-प्रतिनिधि सम्मेलनो को सफलतापूर्वक बुलाना होगा, क्योंकि हमारे सम्मिलित काम को पूरा करने के लिए सभी तरह के लोगो को एकताबद्ध करने के ये सबसे अच्छे साधन हैं। जन-सरकार के सभी महत्त्वपूर्ण कामो को बहस और फैसले के लिए जन-सम्मेलनो के सामने रखना चाहिए। इन सम्मेलनो मे सम्मिलित होनेवाले सभी प्रतिनिधियो को उनमे बोलने के लिए पूरा अधिकार होना चाहिए। जन-प्रतिनिधियो के बोलने मे रुकावट पैदा करनेवाली हरेक कार्रवाई गलत है।" इससे मालूम होगा कि अखिल हलका जन-प्रतिनिधि सम्मेलन किस तरह हर जगह जनतान्त्रिकता दिखला रहे है। इन सम्मेलनो द्वारा जहाँ जनता का विश्वास प्राप्त करने मे बडी सफलता हुई है, वहाँ उनमे काम के लिए भारी उत्साह भी पैदा हुआ है। उत्तर-पूर्व चीन के आन्‌शान् मे 1953 मे जो सम्मेलन हुआ था, उसके परिणामस्वरूप वहाँ के सभी तरह के उत्पादन मे भारी वृद्धि हुई है, 42 हजार टन अन्न की जगह 68 हजार टन अन्न पैदा किया गया। चीन का निर्वाचन ऊपर से नीचे तक सभी जगह जनतान्त्रिक है, और वह राष्ट्र के नव-निर्माण मे भारी काम कर रहा है।

(1) **सरकार**–चीन जन गणराज्य के अध्यक्ष माओ चे तुग है, जिन्हे चीनी जनता माओ चू शी (अध्यक्ष माओ) के नाम से अधिक पुकारती है। शासन-यन्त्र की भिन्न भिन्न शाखाएँ निम्न प्रकार है :

3. शासन-यत्र

(2) **सरकारी संगठन**–चीनी जनता के राजनीतिक (सलाहकार) सम्मेलन मे 662 मेम्बर है, जो पार्लियामेट का काम कर रहा है। नये चुनावो के बाद इसका स्थान जन काग्रेस लेगी। सलाहकार सम्मेलन के सदस्यों का विवरण निम्न प्रकार है .

नाम	मेम्बर	अध्यक्ष
1 राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन	662	माओ चे-तुग
2. राजनीतिक जातीय कमीटी	198	माओ चे तुग
3 राजनीतिक स्थायी कमीटी	39	माओ चे-तुग
4. केन्द्रीय जन-सरकार	64	माओ चे-तुग
5 शासन प्रबन्ध परिषद्	22	चाउ एन् लाइ
6. विभाग कमीटियाँ	5	
(क) राजनीतिक और कानूनी विभाग कमीटी	5	तुग पी-वू
(ख) वित्त और आर्थिक विभाग कमीटी	4	चेन् युन्
(ग) संस्कृति और शिक्षा विभाग कमीटी	5	कुओ मो-जो
(घ) जन नियत्रण कमीटी	3	तान पिग-शान्
(ड) उत्तर चीन शासन-प्रबन्ध कमीटी	3	ल्यू लान् ताओ

(2) **मंत्रालय**–चीन सरकार के निम्न 26 मत्रालय है .

	नाम	मंत्री/उपमंत्री संख्या	मंत्री
1.	आन्तरिक	3	शियेह चूयेह-चे
2.	विदेश-विभाग	5	चाउ एन्-लाइ
3.	जन-सुरक्षा	3	ली जुइ-चिग
4.	भारी उद्योग	3	वाग हो-शाउ
5.	ईंधन उद्योग	3	चेन् यू
6.	कपड़ा उद्योग	4	चियांग कुआग नइ

7.	हल्का उद्योग	4	ह्वाग येन् पेइ"
8.	रेलवे	4	तेग ताइ युआन
9.	डाक-तार	2	चू शुयेह फान
10.	संचार	4	चाग पो चुन्
11.	कृषि	4	ली शू चेग
12.	वन	3	लियाग शि
13.	जल सरक्षण	3	फू चो यी
14.	श्रम	3	ली ली शान्
15.	सास्कृतिक विभाग	3	शंन् येन पिग
16.	शिक्षा	4	मा शू-लुन
17.	जन-स्वास्थ्य	4	ली तेह-चुआन्
18.	न्याय	2	शीह लियाग
19.	वैयक्तिक	4	आन चू-वेन्
20	विदेशी व्यापार	4	येह चि-चुआग
21.	व्यापार	4	चग शान्
22.	मशीन उद्योग (प्रथम)	3	ह्वाग चिग
23.	मशीन उद्याग (द्वितीय)	4	चाओ एई लू
24	गृह-निर्माण	3	
25.	भूतत्व मर्व	4	ली जू क्वाग
26	खाद्य	2	चाग नाइ ची

(3) अन्य सरकारी संगठन–मत्रालय के अतिरिक्त संना तथा दूसरं निम्न मरकारी विभाग

(क) जन-क्रान्तिकारी सेना परिषद्–यह परिषद् संना-विभाग की जगह पर है, जिसकं पदाधिकारी निम्न प्रकार

अध्यक्ष : माओ चे-तुग

उपाध्यक्ष : चू-तेह, चाउ एन्-लाइ, चेग चियंन, काओ काग, ल्यू शाआ-ची, पेग तेह-ह्वाइ, लिन् पियाओ

परिषद् के मंम्बर : हो-लुग, चेन्-यी, येह चितन्-यिग, सू यू, ल्यू पा पंग, शू शियाग-चियेन्, नियेह जुग चेन, चाग युन्-यी, तंग शियाओ-पिग, जाओ शू शीह, शी चुग-शुन, फू चो-यी, लुग युन्, ली शियन-नियेन, तेग चू-हइ, ला जुई-चिग, चाग चिह-चुग, चे तिग कै, ल्यु फेइ

(ख) अन्य विभाग

	नाम	उपाध्यक्ष संख्या	अध्यक्ष या सभापति
1.	विधान-विभाग कमीशन	3	चेन् शाओ यू (अध्यक्ष)
2.	जातियो के विभाग का कमीशन	4	ली-वेइ-ह्वान्
3	समुद्र-पार चीनी विभाग कमीशन	5	हो-शियाग-निग
4.	चीन अकादमी	6	कुओ मो-जो
5.	सूचना-प्रबन्ध	2	चौ ता-पंग (सचालक)
6.	आयातकर-प्रबन्ध	2	कुग युआन (सचालक)
7.	प्रेस-प्रबन्ध	3	हू चियाओ मू (सचालक
8.	प्रकाशन-प्रबन्ध	4	हू यू-चिह (सचालक)

9.	चीन जन-बैंक	2	नान् हान् चेन् (प्रबन्ध संचालक)
10.	सर्वोच्च जन-न्यायालय	18	शेन् चुन् जू
11.	जप महा प्रोक्यूरेटर कार्यालय	14	लो जुंग हुआन

(ग) शासन-प्रबन्ध-क्षेत्र—चीन गणराज्य के आठ शासन-प्रबन्ध क्षेत्रों के अध्यक्ष आदि निम्न प्रकार हैं :

नगर	अध्यक्ष-उपाध्यक्ष	संख्या-अध्यक्ष	केन्द्र नगर
1. उत्तर चीन	पेकिग के अधीन		पेकिंग
2. उत्तर पूर्व		4 काउ कांग	मुकदेन
3. पूर्व चीन		5 जाओ शू-शी	शांघाइ
4. केन्द्रीय और दक्षिण चीन		5 लिन पियाओ	हांग-कांग
5. उत्तर-पश्चिम		3 पेंग-तेह हुवाई	सियान्
6. दक्षिण-पश्चिम		7 ल्यू पो-चेंग	चुंगकिंग
7. भीतरी मंगोलिया स्वायत्त भूक्षेत्र		2 उलान फू	कलगन
8. तिब्बत		दलाई लामा	ल्हासा

4. उपसंहार

(1) **माओ त्राता**—चीन के इतने बड़े युगप्रवर्तन में माओ चे-तुंग का सबसे बड़ा हाथ है। मिट्टी, चक्का और डंडा के रहने पर भी उनसे अच्छे-अच्छे बरतन बनाने के लिए जिस तरह कुशल कुम्हार की आवश्यकता होती है, उसी तरह नवीन चीन की सारी सामग्री, देश मे मौजूद थी, लेकिन उनके उपयोग से जिस चीन को हम आज देख रहे हैं, वह स्वय नहीं बन सकता था। अन्य सामग्रियो के अतिरिक्त सबसे बड़ी परिवर्तनकारी मानव-सामग्री है, जो सारी कठिनाइयों को सहते सारी आफतों में जान गँवाते भी दुरूह पथ को आसानी से नही खोज निकाल सकती, और न विघ्न-बाधाओं को हटाते आगे बढ़ सकती है। चीनी जनता अच्छी तरह जानती है कि सदियों के सामन्तवादी शोषण और उत्पीड़न, तथा च्यांग काइ-शेक की कालरात्रि से सही-सलामत बाहर निकाल एक भव्य जीवन की ओर ले जाना माओ चे-तुंग का काम है। इसीलिए चीनी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-प्रतिष्ठान एव चीनी अकादमी के उपसभापति चेन् पो ता का कहना है :

"जैसाकि सभी जानते हैं, चीन मे प्रथम और अतिश्रेष्ठ प्रगति प्रतीक माओ चे-तुंग के सिवा और कोई नहीं है। साथी माओ चे-तुग की चीनी क्रान्ति के लिए सबसे बड़ी देन है, चीनी क्रान्ति के वास्तविक व्यवहार के साथ मार्क्सवाद के स्वतन्त्र सिद्धान्त का ठीक-ठीक और सजीव संश्लेषण, जिससे चीनी क्रान्ति की बहुत-सी समस्याओं का हल प्राप्त हुआ। उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विज्ञान को चीन और प्राची की स्थितियों में और आगे विकसित किया, और इस प्रकार चीनी क्रान्ति को विजय तक पहुँचाया।

"साथी माओ चे-तुंग कहते हैं : 'मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन का सिद्धान्त सब जगह उपयोग में आनेवाला सत्य है।…' तीस साल तक साथी माओ चे-तुंग ने पार्टी के बाहर की भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियावादी विचारधाराओं और पार्टी के भीतर नाना रूप अवसरवाद के विरुद्ध लगातार और दृढ़तापूर्वक संघर्ष किये : जैसे राष्ट्रवादियों के खिलाफ कुओ-मिन्तांग के भीतर के दक्षिणपक्ष और समझौतावादियों के खिलाफ, सिद्धान्तहीनों के खिलाफ, चेन-तू शिउवाद के और त्रोत्स्कीवाद के खिलाफ, बूर्ज्वाजी के दक्षिणपक्ष और निम्न-मध्यम वर्ग के भिन्न-भिन्न प्रकार के सुधारवादी मिथ्या विश्वासों, प्रतिक्रियावादी कुओ-मिन्ताग शासन के खिलाफ, पार्टी के भीतर अनेक बार उत्पन्न होनेवाले 'वाम' जूआ खेलने के… संघर्ष। इन संघर्षों के दौरान में साथी माओ चे-तुंग ने मार्क्स, एंगेल्स लेनिन और स्तालिन के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों के प्रचार और प्रयोग में अपने को महान् आचार्य सिद्ध किया।…"

पीछे की ओर घूमकर चीन के इतिहास को देखने पर माओ चे तुंग जैसा महान् पुरुष हमें कोई नहीं दिखाई पड़ता। वह तारों में सूर्य की तरह दिखाई पड़ते हैं, ऐसे सूर्य की तरह जो दूर और समीप दोनों से

देखने पर सबसे महान् हैं। माओ सूर्य की तरह तेजस्वी हैं, लेकिन उन्होंने ऐसा कोमल हृदय पाया है जिससे उनकी किरणें चन्द्रमा की तरह सुखद और शीतल मालूम होती हैं। माओ ने कवि की प्रतिभा के साथ कवि का कोमल हृदय पाया है। उन्होंने बहुत-सी कविताएँ लिखीं, लेकिन कहीं मुँहदेखी करनेवाले उनकी आवश्यक प्रशंसा न कर डालें, इसलिए वह उनको प्रकाशित कराने से भी हिचकिचाते हैं; यह बतलाता है कि माओ महान् होने के साथ-साथ कितने संकोचशील हैं। सादगी के तो वह अवतार हैं, जिसे कि उन्होंने अपने जन्म देनेवाले किसानों से सीखा। माओ की प्रतिभा अपने पूर्वगामी साम्यवाद के चार महान् मनीषियों जैसी ही सर्वतोन्मुखी है, इसलिए राजनीतिक, आर्थिक जैसे क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि सैनिक और साहित्यिक क्षेत्रों में भी उनका पथ-प्रदर्शन अपूर्व है।

माओ 60 वर्ष के हो चुके हैं। उनके नेतृत्व में समाजवादी निर्माण के भारी कार्य को करते हुए चीन को पूँजीवादी देशों के एक शताब्दी के विकास को दस वर्षों के भीतर करना है। एक वह भी समय था, जबकि मंचुओं और च्यांग का चीन विदेशी लुटेरों का अखाड़ा बना हुआ था, और पोर्तुगाल जैसे छोटे-छोटे देश भी वहाँ रियायती क्षेत्र प्राप्त कर सकते, बहिर्देशीय अधिकार जमा सकते थे। चीन की लस्टम-पस्टम सेनाएँ हर भिड़न्त में मानो केवल हारने के लिए ही पैदा हुई थीं। लेकिन, आज चीन का लोहा सारी दुनिया मान रही है। पूँजीवादी देशों के चुने हुए सैनिकों को वह कोरिया के मैदानों में अनेक बार पीछे खदेड़ चुका है, और बन्दर घुड़कियाँ देने तथा डींग मारने में अद्वितीय अमेरिकन थैलीशाहों की सेना को कई बार चारो खाने चित कर चुका है। आज से दस वर्ष पहले क्या कभी ऐसी आशा रक्खी जा सकती थी ? पूँजीवादी दुनिया के हाथ-पैर ठंडे हो रहे हैं। वह अकेले सोवियत रूस से ही परेशान थी, और अब देख रही है, उससे भी दूनी संख्यावाले महान् देश चीन् को विराट रूप में। माओ चे-तुग, नवीन चीन के निर्माता, शतायु हों, ताकि चीन ही नहीं, सारे एशिया के नवजागरण और नव-निर्माण का पथ-प्रदर्शन कर सकें।

(2) माओ-सम्बन्धी गीत–विजयी चीन की भिन्न-भिन्न जातियों ने अपनी-अपनी भाषाओं में अपने अप्रतिम नेता के गुणगान के लिए अनेक गीत बनाये हैं, जिनसे माओ चे-तुग के प्रति उनका क्या भाव है, यह अच्छी तरह मालूम होता है। 'माओ वान् स्वें' (माओ जिन्दाबाद) उनका जातीय जयघोष है, और अपने चूह शी (अध्यक्ष) की प्रशंसा में गद्गद हो वे गाते हैं :

(क) गीत (सली टी ची जे)–

> विजयी झंडा नभ पर फहरे
> कोटि-कोटि जनरव गर्जनसम,
> माओ चे-तुग पुकारे
> नभ में जैसे सूर्य प्रकाशे,
> लालध्वजा संगर में फहरे,
> चले सँभल जग एक मार्ग पर
> हम करते संघर्ष,
> सदा शान्ति, जनवाद के लिए
> सब जनता हो एक हृदय।

(ख) गीत (तुंग फांग होंग)–

> प्राची लाल, सूर्य उदय हुआ,
> है चीन में अध्यक्ष माओ चे-तुंग
> वह विलोकता जन-जीवन को
> वह है जनता का त्राता,
> सूर्य चमकता तहाँ प्रकाश
> मुक्ति तहाँ-तहाँ कम्युनिस्ट दल।

(ग) गीत (बोमन् छिंग छिंग ही श्याओ याओ)–

पंच-सितारा लाल ध्वजा के नीचे हम कूदे,
सुख से स्वागत करे सुन्दर वसन्त का,
सूर्य उदय से जैसे हटे शीत तम,
लावे माओ चे-तुग तथा सुख-उष्णता।

(घ) गीत–

देखो पच सितारा लाल ध्वजा ऊँजे फहराती,
साभिमान हम गाते जय के गीत
करे प्रशसा अपनी प्यारी मातृभूमि की,
जो प्रतिदिन होती समृद्धतर और बलवत्तर,
पर्वत और वादियों मे से,
बहती हाग हो ओ याग-ची,
महाविशाल ओ सुन्दर है,
हमारी मातृभूमि प्यारी
रहते वीर जन मुक्त यहाँ,
हैं दृढ़ता मे जैसे फौलाद।

(ड) चीन का राष्ट्रगीत–

उठो दासता मे इन्कार करनेवाले,
हमारे रक्त-मास से बनेगी एक दीवार,
सामना है चीन जाति का अति महान् सकट :
हर मुँह से आ रही जोर की पुकार,
उठो, उठो, उठो
शत्रु की ज्वाला मे से आगे बढ़ो,
शत्रु की ज्वाला मे से आगे बढ़ो
आगे बढ़ो, आगे बढ़ो।

।। इति ।।

परिशिष्ट

वर्षपत्र

1893	झाड़ा	माओ चे-तुंग का जन्म
1894		सुन् यात्-सेन का 'पुनरुज्जीवन संघ' स्थापित
1900		ई-हो-त्वान् (बाक्सर) विद्रोह
1901		पेकिंग-संधि, स्कूल में माओ का प्रवेश
1903		शांघाइ 'देशभक्ति क्लब' का विद्रोह, माओ की पहली असफल उड़ान
1905		सुन् यात्-संन् के संघ का नाम-परिवर्तन 'क्रान्तिकारी साथी दल'
1906		माओ पढाई छोड़ किसानी और बहीखाते में
1908		जापानी माल का बायकाट
1909		चू-तेह कुओ-मिन्तांग के सदस्य
1910		नकली मंचू पार्लियामेंट
1911		माओ चांगशा में
	अक्तूबर 10	माओ क्रान्ति-सेना मे, हान्काउ में विद्रोह
1912	फरवरी 12	मंचू पुइ गद्दी से उतरा
	फरवरी 14	सुन् यात्-संन की जगह युआन् शि-काइ राष्ट्रपति
1913		माओ चांगशा प्रादेशिक विद्यालय में
1915		जापान की इक्कीस माँगें
1917		माओ की माँ मरीं, युआन् शि-काइ मरा, माओ का देशभक्तों का आह्वान
	जुलाई 1	मचू पू-ई को फिर गद्दी पर बैठाने का प्रयत्न
	नवम्बर 7	महान् बोल्शेविक क्रान्ति (रूस)
1918		माओ की पढ़ाई समाप्त
1919		माओ पेकिंग और शांघाइ में प्रथम बार
	मई 4	'चतुर्थ मई-आन्दोलन'
	जून 3	'तृतीय जून-आन्दोलन'
	जून 5	शांघाइ में मजूरों की जबर्दस्त हड़ताल
	जून 28	पेरिस-सन्धि पर चीन ने हस्ताक्षर नहीं किया
1920		माओ शांघाइ में
	नवम्बर 7	रूसी-क्रान्ति का माओ के नेतृत्व में प्रथम वार्षिकोत्सव
1921	जुलाई 1	चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना

1922		चू-तेह का जीवन-परिवर्तन
	मई	पार्टी का घोषणापत्र
1923	फरवरी 7	'7 फरवरी हत्याकाड'
	मई 1	हूनान् मे मजूरो की सर्वहडताल
	जून	कान्तन् मं तीसरी पार्टी-काग्रेस
1924	जनवरी	कुओ-मिन्ताग की प्रथम राष्ट्रीय काग्रेस
1925		चू-तेह यूरोप से लौटे
	जनवरी	चतुर्थ पार्टी-काग्रेस
	मार्च 12	सुन-यात्-संन का निधन
	मई	शाघाइ-मजूरा की हड़ताल
	मई 30	शाघाइ-छात्रा का प्रदर्शन
1926	मार्च	च्याग का कान्तन् म हत्याकाण्ड
	जुलाई	राष्ट्रीय संना का उत्तरी अभियान
1927	मार्च	चाउ एन-लाई कं नंतृत्व मं शाघाइ पर मजूरां का अधिकार, राष्ट्रीय मेना शाघाइ मे
	अप्रैल 12	च्याग का शाघाइ मे हत्याकाण्ड
	अप्रैल 25	वूहान् में पॉचवी पार्टी-काग्रेस
	मई 24	क्रान्तिकारी सेना का नानकिग पर अधिकार
	जुलाई 11	चागशा युद्धपति के हाथ सं मुक्त
1927	अगस्त 7	अत्यावश्यक पार्टी कान्फ्रेंस, चेन् तु-श्यू का पतन और किसान-विद्रोह का आवाहन
	सितम्बर	माओ जल्लादों क हाथ मं बचे
	नवम्बर	चिंगकाग में प्रथम सोवियत की स्थापना
1928		छठी पार्टी-काग्रेस (जाडां मं)
	मई	चू-तेह माओ सं आ मिलं
	दिसम्बर	लालसंना की नवी पार्टी-काग्रेस
1929		लालसंना क्यागसी ओर फूकियान मे
1930		ली लि मान की भूला का मार्जन
	अप्रैल	यू चेन् लाल-राजधानी
	जून	लालसेना चागशा क पास
	नवम्बर	च्याग का प्रथम आक्रमण
1931	जनवरी	च्याग का प्रथम आक्रमण असफल
	फरवरी	च्याग का द्वितीय आक्रमण
1931	जुलाई	च्याग का तृतीय आक्रमण
	सितम्बर	मचूरिया पर जापानी अधिकार
	दिसम्बर 11	प्रथम सोवियत कांग्रेस
1932	जनवरी	शाघाइ मं जापान का आक्रमण और जबर्दस्त प्रतिरोध
	जून	च्याग का चतुर्थ आक्रमण
1933		जैहोल पर जापानी अधिकार
	मई	फेग यू-श्याग का कम्युनिस्टों से मंल
	अक्तूबर	च्याग का पॉचवॉ आक्रमण

1934	जनवरी	जुइचिन में द्वितीय सोवियत-कांग्रेस
	अक्तूबर 16	महान् अभियान का आरम्भ
1935		पूर्वी होपेइ पर जापान का अधिकार
	जनवरी	चू-नाइ पार्टी-कान्फरेस
	मई	लालसेना युन्नान् मे
	अगस्त	लालसेना ने तुग-पी सेना को हराया
1935	अक्तूबर 20	शेन्सी मे पहुँच अभियान का अन्त
	नवम्बर	कुओ-मिन्तागी सेना को लालसेना ने हराया
	दिसम्बर 9	पेकिग मे जापान-प्रतिरोध के लिए छात्रो का प्रदर्शन
	दिसम्बर 25	पार्टी राजनीति ब्यूरो की बैठक
1936		शरद् मे माओ की पुस्तक 'दॉव पेच' निकली
	अगस्त 13	जापान का शाघाइ पर आक्रमण और अधिकार
	दिसम्बर 1	तरुण-मार्शल के साथ कम्युनिस्टो का समझौता
	दिसम्बर 7	च्याग सियान् मे पहुँचा
	दिसम्बर 11	सियान् पर विद्रोहियो का अधिकार
	दिसम्बर 12	च्याग की गिरफ्तारी
	दिसम्बर 24	च्याग ने सयुक्त मोर्चा की बात मानी
1937	जून	कम्युनिस्ट नानकिग सरकार के साथ
	जुलाई	माओ की पुस्तक 'व्यवहार' निकली
	जुलाई 7	जापान का पेकिग पर आक्रमण और अधिकार
	अगस्त	माओ की पुस्तक 'विरोध' निकली
	सितम्बर	पिग शिग कुआन् की विजय
1938	मई	माओ की पुस्तक 'लम्बी लडाई' निकली
	अक्तूबर	माओ की पुस्तक 'नया दौर' निकली, कान्तन और वूहान् पर जापान का अधिकार
1939		द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्भ, हनान् पर जापान का अधिकार, वर्ष के अन्त मे च्याग का पहला कम्युनिस्ट-विरोधी जिहाद
1941		माओ की पुस्तक 'नया जनवाद' निकली, प्रशान्त सागर मे युद्ध आरम्भ
	जनवरी	'दक्षिणी अन् ह्वेइ घटना', च्याग का दूसरा जिहाद
	जून 22	हिटलर का सोवियत पर आक्रमण
1942	मई 2	माओ का भाषण 'कला और साहित्य की समस्याएँ'
1944		यनान् मे लाल राजधानी
1945	अप्रैल 24	यनान मे सातवी पार्टी कांग्रेस
	अगस्त 8	जापान के विरुद्ध सोवियत-रूस की युद्ध-घोषणा
	अगस्त 25	पार्टी घोषणा
	दिसम्बर	मास्को मे त्रिशक्ति-सम्मेलन
1946	जनवरी 10	च्याग का गृहयुद्ध
	जुलाई	च्याग का आक्रमण और जन-मुक्ति-सेना का जवाबी हमला
	अक्तूबर 10	जन-मुक्ति-सेना की च्याग के विरुद्ध घोषणा
	दिसम्बर	माओ की पुस्तक 'वर्तमान स्थिति और हमारे करणीय' निकली

1947	मार्च	लाल राजधानी येनान् च्यांग के हाथ में
	दिसम्बर	मंचूरिया पर जन-मुक्ति-सेना का प्रत्याक्रमण
1948		उत्तरी चीन च्याग के हाथो से मुक्त
1949	अप्रैल 21	यांग ची के दक्षिण जन-मुक्ति-सेना का प्रयाण
	अप्रैल 23	नानकिग पर लाल झडा
	अप्रैल 28	शाघाइ मुक्त
	जुलाई 1	माओ का भाषण 'जनता की जनवादी अधिनायकता'
	सितम्बर 21	पेकिग मे राजनीतिक-सलाहकार-सम्मेलन आरम्भ
	सितम्बर 23	निग स्या की राजधानी मुक्त
	अक्तूबर 21	माओ की अध्यक्षता मे चीन की केन्द्रीय सरकार का पहला अधिवेशन
	अक्तूबर 14	कान्तन् मुक्त
	अक्तूबर 20	सिगक्याग मुक्त
	नवम्वर 30	चुगाचग मुक्त
	दिमम्बर 9	युन्नान् और सीकाग मुक्त
	दिसम्बर 16	माआ मास्को मे
	दिसम्बर 27	जेचुआन राजधानी चेग तू मुक्त
1950		हेनान् द्वीप मुक्त
1950	जनवरी 20	चाओ एन्-लाई मास्को मे
	फरवरी 14	चीन-सोवियत-सन्धि पर हस्ताक्षर
	मार्च 4	माओ और चाउ एन्-लाई पेकिग लौटे
	अप्रैल 1	भारत से दौत्य-सम्बन्ध स्थापित
	अप्रैल 30	हनान् द्वीप मुक्त
	मई 17	चौशान द्वीपसमूह मुक्त
	जून 6	सातवी पार्टी-काग्रस
	जून 27	ताइवान (फारमूसा) पर अमेरिकन नियत्रण
	जून 30	भूमि-सुधार कानून लागू
	अक्तूबर 2	कोरिया मे अमेरिकन आक्रमणकारियो ने 38 अक्षाश पार किया
	अक्तूबर 25	चीनी स्वयसेवकों की कोरिया मे अमेरिकनो से प्रथम भिडन्त
1951	अप्रैल 21	कोरिया मे अमेरिकन आक्रमणकारी 38वी अक्षाश तक भगे
	मई 30	तिब्बत-चीन समझोता
	जुलाई 10	कोरिया मे समझौते के लिए बात शुरू
	अक्तूबर 12	'माओ सक्षिप्त ग्रथावलि' की प्रथम जिल्द प्रकाशित
1952		पुनर्निर्माण-कार्य
	मार्च 7	अमेरिका ने कीटाणु-युद्ध शुरू किया
1953	जनवरी 21	प्रथम पचवार्षिक योजना आरम्भ
	मार्च 1	'निर्वाचन कानून' स्वीकृत
	मार्च 30	कोरिया मे शान्ति की बात के लिए चाओ एन्-लाइ का वक्तव्य
		कोरिया सन्धि-वार्ता फिर आरम्भ
		कोरिया सन्धि, विराम-सन्धि पर हस्ताक्षर

पुस्तक-सूची

1 गाँधी, शान्ता : 'माओ चे-तुग' गुजराती, चेतन प्रकाशन, बम्बई 1951 ई.
2. च्याग काई-शेक : 'चीन का भाग्य' अनुवादक श्री कृष्णकिकर सिह, विश्वभारती, शान्तिनिकेतन 1948 ई
3. माओ चे-तुग : 'आत्मकथाएँ' मराठी लोक-साहित्य, बम्बई 1950 ई.
4. बेनीपुरी, रामवृक्ष · 'लाल चीन', ग्रथमाला कार्यालय, पटना 1939 ई.
5 मेहता, हुक्मराज . 'नया चीन', राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर 1951 ई
6. राय, सुप्रकाश . 'छोटे दर माओ चे-तुग' बगला, चक्रवर्ती ब्रदर्स, कलकत्ता 1951 ई
7. वर्मा, शिव 'माओ त्से-तुग' प्रभात प्रकाशन, लखनऊ 1951 ई.
8. साकृत्यायन, राहुल . 'आज की राजनीति' आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता 1951 ई
9. हू चियाओ मू : 'चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के तीस वर्ष', पी. पी. एच. बम्बई 1952 ई
10. Chen Po-Ta · 'Mao Tse-Tung on the Chinese Revolution', Foreign Language Press, Peking, 1953
11. 'China Reconstructs' (Journal) Peking, 1953
12 Chou En-Lai : 'Peoples New Literature', Cultural Press, Peking 1950
13. Chu Teh : 'On the Battlefronts of the Liberated Areas' F L. P. Peking 1945
    . 'The Great Victory of the Chinese People's Liberation Army ' F. L. P. 1952
14 Emi Sio : 'Mao Tse-Tung · His Childhood and Youth.'
15. Hsao Chien . 'How the Tillers win back their Land' F. L. P. 1951
16. Mao Tse-Tung : 'New China Forges Ahead' F. L P. 1952
    : 'New Economic Achievements' (1949-52) F. L. P. 1952
    : 'On Contradiction' F L. P. 1952
    : 'On People's Democratic Dictatorship' F. L. P 1952
    : 'On Practice' F. L. P. 1952
    : 'Problems of Arts and Literature' P. P. H. 1952
    : 'Strategic Problems of Chinese Revolutionary War' P. P. H. 1951
17. 'People's China' (Journal), Peking 1953
18. Tsui Chi : 'A Short History of Chinese Civilization', London 1945

□□